...and office of registration ... of the licence.	Nature of action taken if the appropriate current licence has not been produced.
...10 DRM ...18	checked & Deleted at 35 Wallagunj Lko & Roudget ri upto 73 गोदावरी का स्लाट नं. ~~82~~ 62

Wireless Licence Inspector
Wireless License Inspector II
....Lucknow 226001 P. O.

Postmaster

...ilomete...

ज्योतिषि कार्य को करने वाला या महाविद्या को उपासना करने वाला हो ११माल रोज ११दिन तक जपले। गुरु कवच पहले पढ़ले १०८ बार आहुति रोज घी गुगल की दे। झाऊ की लकड़ी में हवन करे फलियार खावे ब्रह्मचर्य रहे। इसी मन्त्र को १०० माला जपदे दस माला से हवन करदे दशांश तर्पण मार्जन १ब्राह्मण भोजन करवादे तो दुष्ट स्वप्न दीखना बन्द हो जाये।
मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं श्रौं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तम् सर्वतो मुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युंमृत्युं नमाम्यहम् श्रौं ह्रीं ऐं ॐ नमः।

५६५
१२३ परात रख[illegible] पीतल की।
४८२
४२ — कटोर दान हमने रख लिया
४३० देना है तुम्हें।

यह समान कुल ४३०) रु० का है।

ङ वर्णाक्षर में छोड़ दिया जाता है। कुल ५० अक्षर हैं। अ से लेकर क्ष परियन्त ५० वर्ण हुए ५० में १० मिला दो ६० घड़ियां हो जाती हैं। अ से लृ तक ६० घड़ी मानी जाती हैं। अ ए च त य रूप से कहते हैं ५ दिन में यह पूर्ण होता है। क्रम देख लो

प्रथम दिन में = अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ~~अं~~

दूसरे दिन में = ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ।

तीसरे दिन में = च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण।

चौथे दिन में = त थ द ध न प फ ब भ म।

पांचवे दिन में = य र ल व श ष स ह ळ क्ष।

मातृका वर्णाक्षर

घड़ी	वर्ण	घड़ी	वर्ण
(१)	अ	२८	ठ
२	आ	२९	ड
३	ई	३०	ढ
४	ई	३१	ण
५	उ	३२	त
६	ऊ	३३	थ
७	ऋ	३४	द
८	ॠ	३५	ध
९	लृ	३६	न
१०	ॡ	३७	प
११	ए	३८	फ
१२	ऐ	३९	ब
१३	ओ	४०	भ
१४	औ	४१	म
१५	अं	४२	य
१६	अः	४३	र
१७	क	४४	ल
१८	ख	४५	व
१९	ग	४६	श
२०	घ	४७	ष
२१	ङ	४८	स
२२	च	४९	ह
२३	छ	५०	ळ
२४	ज	५१	क्ष
२५	झ		
२६	ञ		
२७	ट		

काली कुल के बार			श्री कुल के बार		
संख्या	संज्ञा	बार			
१	अ	प्रह्लादानन्दनाथ	१		प्रकाशानन्दनाथ
२	[illegible]	सकलानन्दनाथ	२		विमर्शानन्दनाथ
३	क	कुमारानन्दनाथ	३		आनन्दानन्दनाथ
४	च	वशिष्ठानन्दनाथ	४		ज्ञानानन्दनाथ
५	ट	क्रोधानन्दनाथ	५		सत्यानन्दनाथ
६	त	सुरानन्दनाथ	६		पूर्णानन्दनाथ
	प	ध्यानानन्दनाथ	७		स्वभावानन्दनाथ
	य	बोधानन्दनाथ	८		प्रतिभानन्दनाथ
	श	शुकानन्दनाथ	९		सुभगानन्दनाथ

पंचाङ्ग में बार की जगह नाथ लिखा रहता है बार ७ होते हैं। ७ × ४ = ३६ तत्व होते हैं। ३६ दिन का एक मास होता है। १६ मास का एक वर्ष

(१२) ३६ तत्व ही ३६ दिन हैं लौकिक वर्षों की भांति लौकिक मासों की भांति इस में संख्या घटती बढ़ती नहीं है। जैसे (अधिक मास) (क्षय मास) (क्षय वर्ष) आदि १६ मास का एक वर्ष होता है। ५७६ दिन का एक वर्ष होता है। ३६ वर्षों की १ परिवृत्ति। एक परिवृत्ति में २०७३६ दिन होते हैं। ३६ परिवृत्ति का एक युग होता है। एक युग में १२९६ वर्ष होते हैं। एक युग में ७४६४९६ दिन होते हैं।

संख्या	अक्षर संज्ञा	तत्व के नाम
(१)	अ	शिव
(२)	क	शक्ति
(३)	ख	सदाशिव
(४)	ग	ईश्वर
(५)	घ	शुद्ध विद्या
(६)	ङ	माया
(७)	च	कला
(८)	छ	विद्या
	ज	राग
(९)	झ	काल
(१०)	ञ	नियति
(११)	ट	पुरुष
(१२)	ठ	प्रकृति
(१३)	ड	अहंकार
(१४)		
(१५)	ढ	बुद्धि
(१६)	ण	मन
(१७)	त	श्रोत्र
(१८)	थ	त्वचा
१९	द	चक्षु
२०	ध	जिह्वा
२१	न	घ्राण
२२	प	वाक्
२३	फ	हाथ
२४	ब	पांव
२५	भ	गुदा
२६	म	लिंग
२७	य	शब्द
२८	र	स्पर्श
२९	ल	रूप
३०	व	रस
३१	श	गन्ध
३२	ष	आकाश
३३	स	वायु
३४	ह	तेज
३५	ल	जल
३६	क्ष	भूमि

हर मन्त्र का निर्वाण मंत्र बनाने का तरीका। जैसे राम मंत्र है तो ॐ रां रामाय नमः ऐं आं ई ईं हं क्षं अं

जैसे शूलिनी मन्त्र है। तो (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा ऐं आं ई ईं हं क्षं अं) यह निर्वाण बन गया। एक अष्टोत्तरी जप करें।

आद्या	तारा	षोडशी	भुवनेश्वरी
शनि	सूर्य	सोम	गुरु
बगला	छिन्नमस्ता	धूमावती	
शुक्र	राहू केतु	मंगल है	

इनकी गणना शुक्ल परिवा से होगी क्रमशः

इनकी गणना शुक्ल पक्ष की परिवा से १-२-३-४-५-६-७-इस तरह होगी

काली मतानुसार नित्याओं के नाम	श्री विद्या मतानुसार नित्याओं के नाम	चन्द्र की कलाये	सदा शिव की कलाये
१) अं काली	१) कामेश्वरी १	अमृता कला अं १	निवृत्ति कला अं १
२) आं कपालिनी	२) भग मालिनी २	मानदा " आं	प्रतिष्ठा आं २
३) इं कुल्ला	३) नित्य क्लिन्ना ३	पूषा " इं	विद्या इं ३
४) ईं कुरुकुल्ला	४) भेरुण्डा ४	तुष्टि " ईं	शान्ति ईं ४
५) उं विरोधिनी	५) वह्निवासिनी ५	पुष्टि " उं	इन्धिका उं ५
६) ऊं विप्रचित्ता	६) महा वज्रेश्वरी ६	रति " ऊं	दीपिका ऊं ६
७) ऋं उग्रा	७) शिव दूतिका ७	धृति " ऋं	रेचिका ऋं ७
८) ॠं उग्रप्रभा	८) त्वारिता ८	शशिनी ॠं	मोचिका ॠं ८
९) लृं दीप्ता	९) कुल सुन्दरी ९	चन्द्रिका लृं	परा लृं ९
१०) लॄं नीला	१०) नित्या १०	कान्ती " लॄं	सूक्ष्मा लॄं १०
११) एं घना	११) नील पताका ११	ज्योत्सना एं	सूक्ष्मामृता एं ११
१२) ऐं बलाका	१२) विजया १२	श्री " ऐं	ज्ञाना ऐं १२
१३) ओं मात्रा	१३) सर्व मंगला १३	प्रीति " ओं	ज्ञानामृता ओं १३
१४) औं मुद्रा	१४) ज्वाला मालिनी १४	अंगदा " औं	आप्यायनी औं १४
१५) अं मित्रा	१५) चित्रा १५	पूर्णा " अं	व्यापिनी अं १५
१६) अः असिता	१६) त्रिपुर सुन्दरी १६ महा नित्या	पूर्णामृता अः	व्योमरूपा अः १६

संकल्प जप आदि पक्ष गणना से होगा

जैसे सावन शुक्ल प्रतिपदा है तो

इसकी पूजा करते समय उच्चारण अं अमृत कला श्रावण शुक्ल पक्ष से
(अं शुक्ल अमृत कलायै नमः) (आं शुक्ल मानदायै नमः) (इं शुक्ल पूषायै नमः
गन्धम् समर्पयामि) (अं कृष्ण पूर्णायै नमः) ( )

कृष्ण पक्ष में विलोम नित्या का नाम

(अं शुक्ल कामेश्वरी नित्यायै नमः) (आं शुक्ल ~~भगमालिनी~~ नमः) अं कृष्ण चित्रा नित्यायै नमः
आं शुक्ल भगमालिनी नित्यायै नमः।
कृष्ण चित्रा नित्यायै नमः)

मन्त्र के दस संस्कार करलेने से ५० दोष मिट जाते हैं।

जनन = संस्कार के लिये भोजपत्र पर चंदन गोरोचन कुंकुम चन्द भस्मो इनसे त्रिकोण यन्त्र बना कर ४९ कोष्ठ बनावे फिर इष्ट का ध्यान करके आवाहन करे पूजनके फिर मंत्र के एक २ अक्षर को प्रथक २ उस यन्त्र में उन्चासों कोष्ठ में लिखे फिर आवाहन इष्ट का करना चाहिये। शक्ती मंत्र में रोली से यन्त्र लिखे विष्णु मन्त्र में सफेद चंदन से शिव मन्त्र में भस्मी से अघोर मंत्र चिता भस्मी से यन्त्र लिखे।

दीपन = ॐ ह्रीं स्त्रीं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट स्वाह स्त्रीं ह्रीं ॐ।

१०८ बार जप करने से दीपन हो जायेगा मंत्र का

निर्वाण का जप नाभी स्थान पर मणिपूरक चक्र पर १२ बार किया जाता है। मुख शोधन कुल्लुका सेतु महासेतु के करने के बाद निर्वाण जप होता है।

बोधन = रं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट स्वाहा रं। ५० माला जप करे या कनेर के पुष्पों से १०८ बार हवन करे।

ताड़न फट् ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा फट्)
१ हजार जप से ताड़न हो जाता है।

ताड़न = मन्त्र के सब वर्णो को अलग २ लिख कर (यं) वायु बीज से उच्चारण करते हुये चन्दन जल से प्रत्येक को सौ सौ बार अथवा दस २ बार भी कर दे तो ताड़न हो जाता है। जैसे (यं ॐ यं) (यं ऐं यं) (यं ह्रीं यं) ((यं श्रीं यं) (यं दुं यं) (यं ज्वल यं) (यं ज्वल यं) (यं शू यं) (यं लि यं) (यं नी यं) (यं हुं यं) (यं फट यं) (यं स्वा यं) (यं हा यं)

अभिषेक = भोज पत्र पर वर्ण संख्या लिख कर रख ले १ हजार बार (रं) बीज से अभि मंन्त्रित करके हर वर्णाक्षर को कनेर के पुष्प से सिंचन करे मतान्तर से (रों हंसः ॐ) से अभि मन्त्रित जल कर दे। फिर पीपल के पत्ते से सिंचन करे।

विमलीकरण = (ॐ त्रों वषट् ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा वषट् त्रों ॐ) १ हजार जप करने से यह संस्कार होता है।

आप्यायन = ह्रौं ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा ह्रौं) एक हजार जप करने से यह संस्कार हो जाता है। मतान्तर से कुश अथवा पुष्पों से सभी मन्त्र के वर्णाक्षरों को आप्यायित करे

१ तर्पण = दूध घी जल इनमें से किसी वस्तु से मूल मन्त्र पढ़ कर सौ बार कर देना तर्पण संस्कार हुआ। जैसे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा तृप्यताम् यह मूल मन्त्र है

जीवन = ॐ से मूल मन्त्र पुटित करे। अथवा स्वधा वषट् से पुटित करे जैसे (स्वधा वषट् ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा वषट् (स्वधा। १ हजार जप करने से यह संस्कार पूरा होगा।

गोपन = हुं अथवा ह्रीं बीज से १०८ बार जप करने से संस्कार होगा (हुं ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनी हुं फट् स्वाहा हुं) इसी तरह ह्रीं से करदो

मन्त्र चैतन्य करने के लिये साधक पहले (क्लीं श्रीं ह्रीं) से सब अक्षरों को उच्चारण करे १०८ बार तो चैतन्य होवे जैसे
क्लीं श्रीं ह्रीं अं क्लीं श्रीं ह्रीं आं क्लीं श्रीं ह्रीं इं क्लीं श्रीं ह्रीं ईं क्लीं श्रीं ह्रीं उं क्लीं श्रीं ह्रीं ऊं क्लीं श्रीं ह्रीं ऋं ॠं लृं ॡं ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग से क्ष तक इसी तरह (क्लीं श्रीं ह्रीं लगा कर जप ले।

यह सब करके हर एक [illegible] कुल्लुका सेतु महा सेतु मुख सोधन नि[illegible] का जप करना चाहिये।
ब्राहम क्षत्री के लिये सेतु ओंकार है। वैश्य के लिये फट् सेतू है शूद्र के लिये ह्रीं। निर्वाण जप मणिपूरक चक्र में १२ बार करना चाहिये हर मंत्र का निर्वाण, प्रत्येक बना लिया जाता है।
बाकी महा सेतु स्त्रीं है।

त्रिपुर सुन्दरी का सेतु ह्रीं है। मंजु घोष की कुल्लुका ॐ अ र व च ल धीं।

कालिका का सेतु क्रीं

तारा का सेतु हूं। बाकी देवताओं का सेतु स्त्रीं है।

त्रिपुर सुन्दरी का मुख सोधन श्रीं ॐ श्री सौं ३। महासेतु ह्रीं

श्यामा का क्रीं ३ ॐ ३ क्रीं ३
तारा का ह्रीं हूं ह्रीं। महासेतु हूं
दुर्गा का ऐं ऐं ऐं। महा सेत दुं
बगला का ऐं ह्रीं ऐं
मातंगी का ॐ ऐं ॐ
लक्ष्मीजी का श्रीं श्रीं श्रीं
धूमावती का ॐ धूं ॐ

पहले कुल्लुका जप सिर पर १२ बार फिर सेतु १० बार महासेतु का जप १२ बार कंठ में हाथ रख के

शिव का षड़्क्षर मन्त्र ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं
एकाक्षर शिव का (हौं)

कालीजी की कुल्लुका क्रीं हूं स्त्रीं। महासेतु क्रीं
छिन्नमस्ता की ... श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं स्वाहा
त्रिपुर सुन्दरी की ... ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवती स्वाहा
भैरवी की कुल्लुका हसैं। बाकी सबकी ॐ हूं क्रीं है।
तारा की ..... ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं
भुवनेश्वरी की ..... ह्रीं
मातंगी ..... ॐ
सरस्वती की ..... ऐं ऐं ऐं
षोडषी की ..... स्त्रीं
महा लक्ष्मी की ..... श्रीं

पंच वटीस्थापना विधि:।।
पीपल का पेड़ पूरब में लगावे, बेल का पेड़ उत्तर में, वट का वृक्ष पश्चिम में, आंवला दक्षिण में, अशोक आग्नेय में मध्य में चार हाथ लम्बी चार हाथ चौड़ी वेदी बनावे।

॥ मन्त्र ही प्रतीकोपासना है ॥

॥ लेखक योगाभ्यासी श्री मदन मोहन जी वानप्रस्थी ॥

मन्त्र की उत्पत्ति :- श्वेतबाराह कल्प के आदि में क्षीर सागर में शयन किये हुये, श्री नारायण भगवान को देख कर श्री बृम्हा जी नें पूछा, कि आप कौन हैं। श्री भगवान बोले, हे पुत्र तुम्हारा कल्याण हो क्या तुम मुझको नहीं जानते हो, मैं ही संसार का कर्त्ता, भर्त्ता, हर्त्ता हूँ। ऐसा सुन कर बृम्हा जी नें कहा, यह मिथ्या बचन है। मुझको छोड़ कर कोई दूसरा संसार को उत्पन्न करनें वाला नहीं है, इस तरह जब दोनों का आपस में विवाद होनें लगा। तब तत्क्षण एक ज्योतिलिङ्ग प्रगट हुआ, जिससे स्फोट होकर बिन्दु और वर्णों के संकेत उत्पन्न हुये, ये संकेत बेद रूप में प्रगट हुआ, तथा वही ऋषियों के हृदय में नाद रूप में उत्पन्न हुआ, फिर उससे ध्वनि तथा वर्ण प्रगट हुये, इन्हीं वर्णों को मन्त्र की संज्ञा दी गई, अत: मन्त्र स्वत: सिद्ध होकर साधकों के हृदय में एक उपासना के रूप में प्रगट होगये। दूसरा पक्ष यह है, कि एक समय भगवान शंकर प्रसन्न होकर नृत्य कर रहे थे। और डमरु बजाते हुये, ताण्डव नृत्य में समाधिस्थ से होगये उस समय उनकी डमरू की ध्वनि से अ, इ, उ, ण, ऋ, लृ, क, ए ओ ङ इत्यादि, चौदह सूत्रों का प्राकट्य हुआ, इन्ही सूत्रों के आधार पर श्री पाणिनी मुनि नें व्याकरण शास्त्र का बिस्तार किया।

इन्हीं सूत्रों से मन्त्रों का उद्धार हुआ, अत: सिद्ध है, मन्त्रों के आदि भगवान श्री शंकर हैं।

—न्त्र के जाति भेद —: नारद पञ्चरात्र के द्वितीय रात्र में उसके सप्तम
—ध्याय में बतलाया गया है। कि मन्त्र तीन प्रकार के होते हैं।
सौरा: पुंदेवता: (२) सौम्या: स्त्री देवता: और (३) नपुंसक, जिस मन्त्र
अन्त में (हुँ फट् हो) वह पुरुष मन्त्र है। जिस मन्त्र के अन्त में
वषट् स्वाहा हो) वह मन्त्र स्त्री रूप है। जिस मन्त्र के अन्त में (हुँ नमः हो)
ह नपुंसक मन्त्र है। जाग्रत, सुषुप्त, मित्र, शत्रु, सौम्य, क्रूर, अतिक्रूर,
रुन्न, रुद्ध शक्तिहीन, पराङ्मुख, बधिर, नेत्रहीन, कीलित, शक्तिहीन,
ग्ध, त्रस्त, मलिन, मदोन्मत्त, मूर्छित, प्रध्वस्त, बालक, कुमार, युवा, प्रौढ़,
वृद्ध, केकर, तथा कूट ये मन्त्रों के भेद हैं। साधकों को चाहिये, कि दुष्ट
मन्त्रों का त्याग करें। क्यों कि वे सिद्धि दायक नहीं होते हैं। मन्त्र गृहण
करनें अथवा दीक्षा लेने के समय काल और देश का निर्णय करना अत्यावश
यक है। इनका ज्ञान हो जानें पर साधक को मन्त्र की सिद्धि शीघ्र प्राप्त
ती है। इसके लिये मन्त्र वेत्ताओं नें समय को इस प्रकार गृहण किया है।

—ास निर्णय—: चैत्र मास में दीक्षा गृहण करनें से पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं।
शाख में रत्नलाभ, ज्येष्ठ मास में मरण, अषाढ़ में बन्धुनाश, श्रावणमास
में दीर्घायु, भाद्रपद मास में संतानताश, आश्विनमास में रत्न संचय,
कार्तिक मास और अगहन मास में मन्त्र सिद्धि, पौषमास में शत्रु पीड़ा,
माघमास में मेधा वृद्धि तथा फाल्गुन मास में गृहण करनें से सकल
मनोरथ सिद्ध होते हैं।

वार निर्णय —: रविवार में मन्त्र ग्रहण करने से वित्त लाभ होता है। सोमवार में शान्ती, मंगलवार में आयुक्षय, बुधवार में सौन्दर्यलाभ, बृहस्पतिवार में ज्ञानवृद्धि, शुक्रवार को सौभाग्य लाभ, शनिवार में यश की हानि होती है।

तिथि निर्णय —: प्रतिपद तिथी में मन्त्र ग्रहण करनें से ज्ञान नाश, द्वितीया में ज्ञान वृद्धि, तृतिया में शुद्धता प्राप्ति, चतुर्थी में वित्तनाश, पञ्चमीं में बुद्धि की वृद्धि, षष्ठी में ज्ञान का क्षय, सप्तमीं में सुख लाभ, अष्टमीं में बुद्धिनाश, नवमीं में शरीर क्षय, दशमीं में राज सौभाग्य की प्राप्ती, एकादशी में पवित्रता, द्वादशी में सर्वकार्य सिद्धि, त्रयोदशी में दरिद्रता, चतुर्दशी में तिर्यग्योनि की प्राप्ति, तथा मास के अन्त (अमावास्या) में दीक्षाग्रहण करनें से कार्य की हाँनि होती है। पक्ष के अन्त पूर्णिमा में दीक्षा लेने से धर्म की वृद्धि हुआ करती है।

नक्षत्र निर्णय —: अश्विनी नक्षत्र में सुख लाभ, भरणीं में मरण, कृत्तिका में दुख, रोहिणी में विद्या प्राप्ती, मृगशिरा में सुख आर्द्रा में बन्धुनाश, पुनर्वसु में धन प्राप्ति, पुष्य में शत्रु का नाश, अश्लेषा में मृत्यु, मघा में दुख नाश, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी एवं हस्त में सौन्दर्य, ज्ञान तथा धन की प्राप्ति होती है।

योग निर्णय —: प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सुकर्मा, साध्य, शुभ, हर्षण, वरीयान्, शिव, सिद्धि, ब्रह्म, इन्द्र इन योगों में दीक्षा सफल होती है।

करणनिर्णय –: बव, बालव, कौलव, तैतिल, वनिज, इन करणों में दीक्षा मंगलकारिणी होती है।

लग्ननिर्णय –: वृष, सिंह, कन्या, धन और मीन इन पाँचो लग्नों में और चन्द्र तारा की अनुकूलता देख कर दीक्षा दान सफल होता है। मेष, वृश्चिक, सिंह और कुम्भ स्थिर लग्न है ये विष्णु मन्त्र गृहण में शुभ जनक है। मिथुन, कन्या, धन तथा मीन शक्ति दीक्षा में मंगलकारी हैं। मेष, कर्क, तुला और मकर ये लग्न शिव मन्त्र गृहण में मंगल कारी हैं। लग्न के तीसरे, छठे और एकादश स्थान में पापगृह हों तथा लग्न के चौथे, सप्तम, दशम, नवम और पञ्चम स्थानों में शुभ गृह हो, तो दीक्षा कल्याण कारिणी होती है।

पक्षनिर्णय –: शुक्ल पक्ष में दीक्षा शुभ और कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक दीक्षा शुभ होती है। सूर्यगृहण के समान उत्तम काल दीक्षा गृहण के लिये और कोई भी नहीं हो सकता।

दीक्षास्थान –: गोशाला में, गुरु के घर में, देवमन्दिर में, वन में, बगीचे में नदी के तीर, धात्री और बिल्ववृक्ष के समीप, पर्वत के ऊपर, और गुफा में, तथा गंगा तट पर गृहण की हुई दिक्षा कोटि-कोटि गुणित फल प्रदान करने वाली होती है।

मन्त्रनिर्णयविधि — ऋतम्भरा बुद्धि से लिये अथवा अनेकप्रकार के चक्रों की सहायता से मन्त्रों का निर्णय कराकर गुरुदेव से शिष्य को मन्त्र का उपदेश ग्रहण करना चाहिये, मन्त्र एकाक्षर, ससेतुक तथा शाखा पल्लव संयुक्त आदि अनेक प्रकार के होते हैं उन सब में से बिचार पूर्वक निर्णय कर लिया जाये, मन्त्र ग्रहण करने में कुलाकुल चक्र, राशिचक्र, नक्षत्रचक्र, ऋणधनीचक्र आदि अनेक प्रकार के चक्र सहायक होते हैं।

कुलाकुलचक्र — मन्त्रशास्त्रज्ञों के लिये कुलाकुल चक्र का वर्णन करते हैं।

वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ ॡ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	ळ	स	ह

साधक के नाम का पहला अक्षर और मन्त्र का पहला अक्षर एक कोष्ठ में आवे, तो स्वकुल जानना चाहिये, पृथ्वी का जल मित्र है। अग्नि का वायु मित्र है। पृथ्वी के वायु तथा अग्नि रिपु हैं। जल का अग्नि रिपु है। आकाश सबका मित्र है। रिपु होने पर मन्त्र ग्रहण नहीं करना चाहिये, स्वकुल और मित्र होने पर मन्त्र ग्रहण करना चाहिये, इस शास्त्र में गुह्यातिगुह्य विषय है। तथा तत्वज्ञान और भी गुह्यातिगुह्य है। अनुकूल मन्त्रों का तत्वज्ञान से निर्णय होता है। इसलिये कुलाकुलचक्र सिद्धिदायी कहा गया है।

तन्त्रान्तर का कुलाकुल चक्र विज्ञान — सृष्टि पञ्चभूतात्मक है।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, इन पाँच तत्वों से सृष्टि निर्मित है। इस कारण मनुष्य के लिये पञ्चदेवोपासना का विधान है। इसीलिये पञ्चतत्वरहस्य प्रकाशक कुलाकुल परम हितकर है। उससे मन्त्र का कुलनिर्णय और देवता का कुल निर्णय दोनों कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। यह चक्र सर्व साधकोपयोगी है।

राशि चक्र

वृष
उ ऊ ऋ

मेष
अ आ इ ई

मीन

अपनी राशि के अनुकूल मन्त्र ग्रहण करने से मंगल की प्राप्ति हुआ करती है। इसीलिये विज्ञजनों को उचित है, कि नाम का आदि वर्ण और मन्त्र का आदि वर्ण लेकर अपनी राशि से मन्त्र राशि तक गणना द्वारा राशि की शुद्धता का विचार अवश्य करें, इस प्रकार की गणना द्वारा छठे, आठवें, बारहवें राशि स्थित मन्त्र त्यागनें योग्य हैं। जन्म राशि स्थित मन्त्र से मन्त्र सिद्धि, धन स्थान से धन वृद्धि, भ्रातृस्थान से भ्रातृ वृद्धि, बन्धु स्थान से बन्धुप्रियता, पुत्र स्थान से पुत्रलाभ होते हैं। शत्रु स्थान से शत्रु की वृद्धि, कलत्र स्थान से मध्यम फल, मृत्युस्थान से मृत्यु, नवम स्थान से धर्म वृद्धि, कर्मस्थान से कार्य सिद्धि, आय स्थान से धन, आय वृद्धि, व्ययस्थान से संचित धन का नाश होता है।

अकथह चक्र

इस चक्र द्वारा सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, और अरि मन्त्र का ज्ञान होता है।

सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु
1 अ क थ ह	2 उ ङ प	3 आ ख द	4 ऊ च फ
5 ओ ड व	6 ऌ झ म	7 औ ढ श	8 ॡ ञ य
9 ई घ न	10 ॠ ज भ	11 इ ग ध	12 ऋ छ ब
13 अः त स	14 ऐ ठ ल	15 अं ण ष	16 ए ट र

सिद्ध मन्त्र, बान्धव, साध्य मन्त्र, सेवक, सुसिद्ध मन्त्र पोषक और शत्रु मन्त्र घातक होता है।

आसन —: शिवगीता में इस प्रकार वर्णन है। कम्बलासन पर बैठ कर मन्त्र जपनें से सर्व कामना सिद्ध होती है। कृष्णाजिन अर्थात काले हिरन की खाल पर बैठ कर जप करनें से मुक्ती होती है। व्याघ्र चर्म पर बैठ कर जप करनें से मोक्ष होता है। कुशासन पर बैठ कर जप करनें से ज्ञान प्राप्त होता है। पत्र के बनाये हुये आसन बैठ कर जप करने से दीर्घायु होती है। पत्थर पर बैठ कर जप करनें से दुख होता है। काष्ठ पर बैठ कर जप करनें से रोग होता है। वस्त्रासन पर बैठ कर जप करनें से स्त्री प्राप्ति होती है। भूमि पर बैठ कर जप करनें से मन्त्र सिद्ध नहीं होता, तृणासन से यश की हानिं और वंशासन से दरिद्रता होती है।

मन्त्र जप के स्थान का निर्णय —: पर्वत शिखर पर, नदी के किनारे, ह्रद के समीप, शिव मन्दिर में या विष्णु मन्दिर में, अपनें घर में अथवा जहाँ मन लगे, वहाँ बैठ कर जप करे, घर पर जप करनें से एक गुना, नदी किनारे पर दुगना, गंगा किनारे पर सौ गुना, अग्निशाला में इससे भी अधिक, और सिद्ध क्षेत्र में तथा विष्णु मन्दिर में जप करनें से कोटि गुना फल मिलता है।

मन्त्र जप करनें की विधि —: साधक स्नानादि से निवृत होकर स्वस्तिकासन लगा कर आसन पर बैठे। पश्चात् गुरुगणाधिपति को नमस्कार करे। उसका विधान इस प्रकार है।
ॐ श्री गुरुभ्यो नमः इस मन्त्र से मूर्धा का स्पर्श करे। गुं गुरुभ्यो नमः इससे दक्षिण कंधा का गं गणपतये नमः इससे वामस्कन्ध का दुं दुर्गायै नमः इससे वाम ऊरु स्थान का क्षेत्रपालाय नमः इससे दक्षिण ऊरु स्थान का और सं सरस्वत्यै नमः इससे मुँह का स्पर्श करे, फिर (ॐ सहस्रार हुं फट्) इस सुदर्शन मन्त्र से अङ्गन्यास करे, तत्पश्चात भुतसिद्धि एवं प्राणप्रतिष्ठा करके प्राणायाम करे, मूलाधार से कुण्डलिनी देवी को श्वास द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में लेजाकर मूलाधार में वापस ला कर स्थित कर दे, यह क्रिया गुरुगम्य है। बिना इस क्रिया के मन्त्र सिद्ध नहीं होता है।

मन्त्र पूजा —: साधक अपने अभीष्ट मन्त्र को ताम्रपात्र में अष्टगन्ध से लिखे। चारो तरफ कादि-हादि मन्त्र लिख कर सम्पुटित कर दे। कादि और [हादि] विद्या क्रमशः इस प्रकार है। (१) क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं। (२) ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं।

मन्त्र को षोडशोपचार विधि से पूजा —: प्रत्येक मन्त्र के देवता पृथक-२ होते हैं। अतः साधक नें जो मन्त्र गृहण किया हो, उस मन्त्र के देवता को वह इसमें भावना करे। इसको ही देव प्रतिमा समझकर श्रद्धा, भक्ती एवम दृढ भावना से मन को इसमें तन्मय करनें से प्रतीकोपासना।

सिद्ध मन्त्र, बान्धव, साध्य मन्त्र, सेवक, सुसिद्ध मन्त्र पोषक और शत्रु मन्त्र घातक होता है।

आसन—: शिवगीता में इस प्रकार वर्णन है। कम्बलासन पर बैठ कर मन्त्र जपनें से सर्व कामना सिद्ध होती है। कृष्णाजिन अर्थात काले हिरन की खाल पर बैठ कर जप करनें से मुक्ती होती है। व्याघ्रचर्म पर बैठ कर जप करनें से मोक्ष होता है। कुशासन पर बैठ कर जप करनें से ज्ञान प्राप्त होता है। पत्र के बनाये हुये आसन बैठ कर जप करने से दीर्घायु होती है। पत्थर पर बैठ कर जप करनें से दुख होता है। काष्ठ पर बैठ कर जप करनें से रोग होता है। वस्त्रासन पर बैठ कर जप करनें से स्त्री प्राप्ति होती है। भूमि पर बैठ कर जप करनें से मन्त्र सिद्ध नहीं होता, तृणासन से यश की हानिं और वंशासन से दरिद्रता होती है।

मन्त्र जप के स्थान का निर्णय—: पर्वत शिखर पर, नदी के किनारे, ह्रद के समीप, शिव मन्दिर में या विष्णु मन्दिर में, अपनें घर में अथवा जहाँ मन लगे, वहाँ बैठ कर जप करे, घर पर जप करनें से एक गुना, नदी किनारे पर दुगना, गंगा किनारे पर सौ गुना, अग्निशाला में इससे भी अधिक, और सिद्ध क्षेत्र में तथा विष्णु मन्दिर में जप करनें से कोटि गुना फल मिलता है।

मन्त्र जप करनें की विधि —: साधक स्नानादि से निवृत्त होकर स्वस्तिकासन लगा कर आसन पर बैठे। पश्चात् गुरुगणाधिपति को नमस्कार करे। उसका विधान इस प्रकार है। ॐ श्रीं गुरुभ्यो नमः इस मन्त्र से मूर्धा का स्पर्श करे। गुं गुरुभ्यो नमः इससे दक्षिण कंधा का गं गणपतये नमः इससे वामस्कन्ध का दुं दुर्गायै नमः इससे वाम ऊरु स्थान का क्षेत्रपालाय नमः इससे दक्षिण ऊरु स्थान का और सं सरस्वत्यै नमः इससे मुँह का स्पर्श करे, फिर (ॐ सहस्रार हुँ फट्) इस सुदर्शन मन्त्र से अङ्गन्यास करे, तत्पश्चात भूत सिद्धि एवं प्राणप्रतिष्ठा करके प्राणायाम करे, मूलाधार से कुण्डलिनी देवी को श्वास द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में लेजाकर मूलाधार में वापस लाकर स्थित कर दे, यह क्रिया गुरुगम्य है। बिना इस क्रिया के मन्त्र सिद्ध नहीं होता है।

मन्त्र पूजा —: साधक अपने अभीष्ट मन्त्र को ताम्रपात्र में अष्टगन्ध से लिखे। चारो तरफ कादि-हादि मन्त्र लिख कर सम्पुटित कर दे। कादि और हादि विद्या क्रमशः इस प्रकार है। (१) क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं। (२) ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं।

मन्त्र को षोडशोपचार विधि से पूजा —: प्रत्येक मन्त्र के देवता पृथक-२ होते हैं। अतः साधक नें जो मन्त्र गृहण किया हो, उस मन्त्र के देवता की वह इसमें भावना करे। इसको ही देवप्रतिमा समझकर श्रद्धा, भक्ती एवंम दृढ भावना से मन को इसमें तन्मय करनें से प्रतीकोपासना

सिद्ध हो जाती है। फिर पीठ पूजा इस प्रकार करे। ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधाम्बुधये नमः। ॐ सर्पिः सागराय नमः। ॐ मणिद्वीपाय नमः। ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः। ॐ श्मशानाय नमः। ॐ पारिजाताय नमः। ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ मणिपीठाय नमः। ॐ नानामुनिभ्यो नमः। ॐ शिवेभ्यो नमः। ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः। ॐ बहुमांसास्थिमोदमान शिवाभ्यो नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ सर्वतत्वात्मकपद्माय नमः। ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नमः। ॐ अर्कमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ महीमण्डलाय नमः। ॐ सत्त्वाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ ऐं परायै नमः। ॐ परापर्यै नमः। इस पूजा के पश्चात अभिषेक करे। कुम्भ घट को स्थापित करे, इसको सागर एवंम पवित्र नदियों के जल से भरे। इसमें अश्वत्य, पञ्चपल्लव, तुलसी, बिल्वपत्र, केला तथा नारिकेल के पत्तों से आच्छादित करके दशोपचार पूजा करे। फिर रुद्राभिषेक द्वारा मन्त्र का अभिषेक करे। इससे मन्त्रचैतन्य सिद्ध हो जाता है।

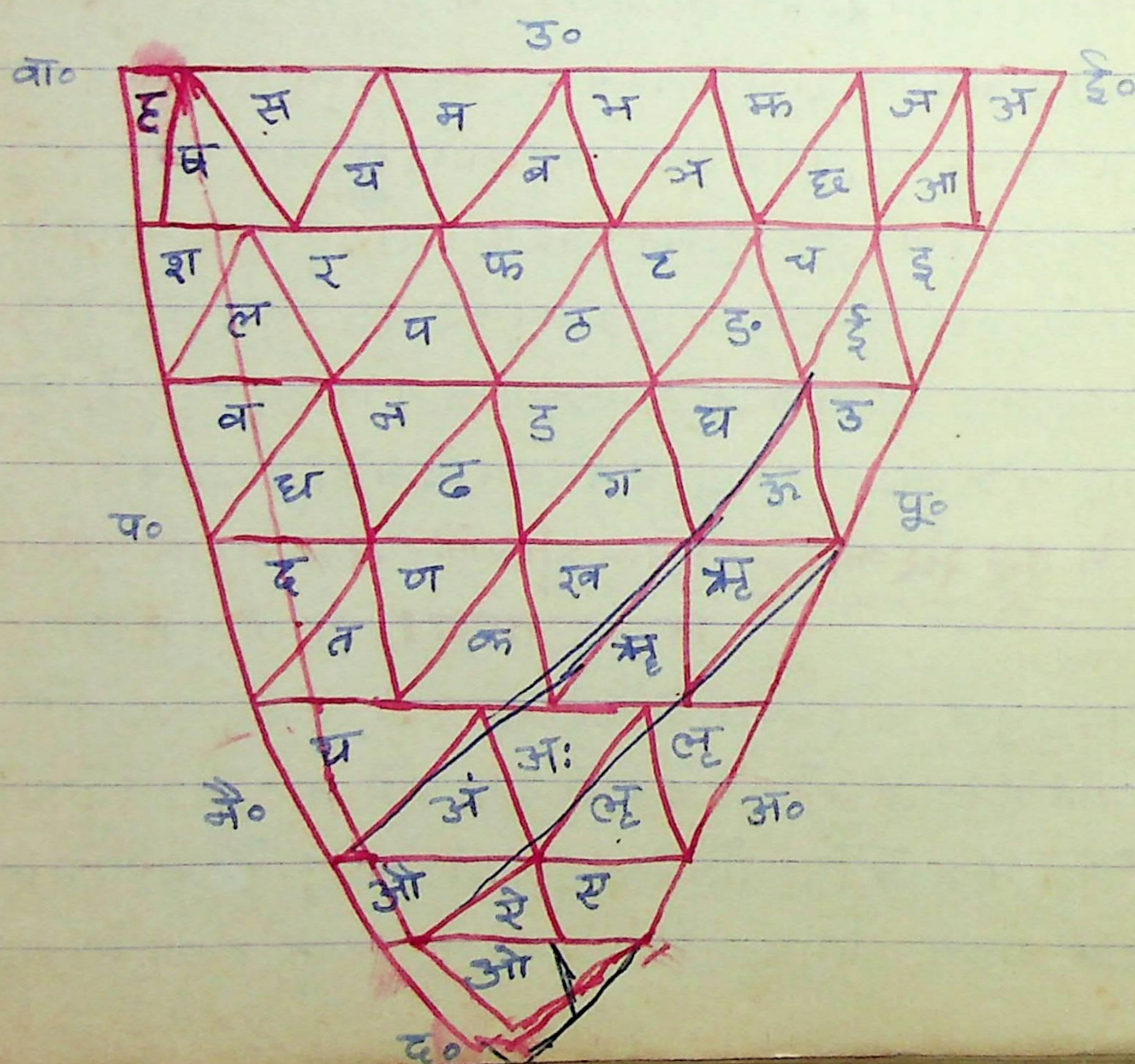
पुरश्चरण की संक्षिप्त विधि—: मन्त्र को संस्कारित करके फिर मन्त्र का पुरश्चरण करे। जितने अक्षर का मन्त्र होता है। उतने ही लक्ष जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। जप का दशांश हवन और उसका दशांश तर्पण मार्जन एवं ब्राम्हण भोजन कराने पुरश्चरण पूरा होता है। बिना पुरश्चरण किये, मन्त्र सिद्ध नहीं होता। जिस दिन से पुरश्चरण करना प्रारम्भ करे, संकल्प करे कि, आज से लेकर इस समय तक मन्त्र यज्ञ का आरम्भ करता हूँ। प्रतिदिन नियमित जप का संकल्प करे। सदैव समान संख्या का जप करे, न न्यून, न अधिक। प्रातः काल से अपराह्नकाल तक, रात्री में जप न करे, ब्रम्हचर्य का यम नियम का पूरा पालन करे, भूमि शयन करे, यवान्न तथा चावल आदि सात्विक आहार करे, तामसिक पदार्थ का त्याग करे। जप एक निश्चित स्थान पर करे। एक समय भोजन करे, परान्न को ग्रहण न करे, जप के पहले शताक्षरी जप करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होकर अभीष्ट फल प्रदान करता है। तन्त्रशास्त्र में बिस्तार बहुत है। किन्तु समयानुसार मन्त्र साधना का सूक्ष्म परिचय दिया है। ॐ शान्तिः।

मन्त्रों के दस संस्कार—: |लेखक| पं० श्री हरिराम जी शर्मा (मार्तण्ड) विद्वच्चुडामणि। कोई भी मन्त्र छिन्न, रुद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख, आदि पचास दोषों से बच नहीं सकता, सप्तकोटि मन्त्र हैं सभी इन दोषों में किसी न किसी दोष से दुष्ट पाये जाते हैं। इन दोषों की निवृति के लिये मन्त्र के निम्नलिखित दस संस्कार करने चाहिये। जनन, दीपन, बोधन, ताडन, अभिषेक, विमलीकरण, जीवन, तर्पण, गोपन, ~~[illegible]~~

शक्ति मंत्र में रोली से त्रिकोण पूर्ण यन्त्र जैसा नीचे लिखा है बनावे। विष्णु मंत्र से सफेद चन्दन से। शिव मंत्र में भस्मी से लिखे रुद्र मन्त्र में भैरव मंत्र में चिता भस्म से यन्त्र बनावे।

और आप्यायन ये दस संस्कार हैं।

(1) भोजपत्र पर गोरोचन, कुमकुम, चन्दनादि से आत्माभिमुख त्रिकोण लिखे, फिर तीनों कोणों में छः छः समान रेखा खींचे। ऐसा करने पर ४९ त्रिकोण कोष्ठ बनेंगे। उनमें ईशान कोण से मातृका वर्ण लिख कर (५६) देवता का आवाहन पूजन करके मन्त्र को एक-एक वर्ण का उद्धार करके अलग पत्र पर लिखे, ऐसा करने पर 'जनन' नाम का प्रथम संस्कार होगा।



मन्त्रोद्धार के अनन्तर यन्त्र को धोकर शुद्ध जल में डाल दें।

(२) हंस मन्त्र का सम्पुट होने से एक हजार जप द्वारा मन्त्र का दूसरा 'दीपन' संस्कार होता है। यथा - "हं सो रामाय नमः सोऽहम्।"

(३) हूं बीज सम्पुटित मन्त्र का पाँच हजार जप करने से 'बोधन' नामक तीसरा संस्कार होता है। यथा - "हूं रामाय नमः हूं।"

(४) फट् सम्पुटित मन्त्र का एक हजार जप करनें से 'ताडन' नामक चतुर्थ संस्कार होता है। यथा - "फट् रामाय नमः फट्।"

(५) भुर्जपत्र पर मन्त्र लिख कर "रां हं सः ॐ" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और एक हजार बार जपे हुए जल से अश्वत्थ (पीपल) पत्रादि द्वारा मन्त्र का अभिषेक करे। ऐसा करने पर "अभिषेक" नामक पाँचवाँ संस्कार होता है।

(६) 'ॐ त्रों वषट्' - इन वर्णों से सम्पुटित मन्त्र का एक हजार जप करनें से "विमलीकरण" नामक छठा संस्कार होता है। यथा "ॐ त्रों वषट् रामाय नमः वषट् त्रों ॐ।"

(७) स्वधा वषट् सम्पुटित मूल मन्त्र का एक हजार जप करनें से "जीवन" नामक सातवाँ संस्कार होता है। यथा - "स्वधा वषट् रामाय नमः वषट् स्वधा।"

(८) दुग्ध, जल, घृत से मूल मन्त्र के उच्चारण पूर्वक सौ बार तर्पण करना ही तर्पण संस्कार है।

(९) ह्रीं बीज सम्पुटित मन्त्र का एक हजार जप करनें से "गोपन" नामक नवम संस्कार होता है। यथा - ह्रीं रामाय नमः ह्रीं।"

(१०) ह्रौं बीज सम्पुटित मन्त्र का एक हजार जप करने से "आप्यायन" नामक दसवाँ संस्कार होता है। यथा -"ह्रौं रामाय नमः ह्रौं।"

इस प्रकार संस्कृत किया हुआ मन्त्र शीघ्र सिद्धि प्रद होता है। प्रसङ्गवशात् दीपस्थान (कूर्मचक्र) का भी निर्णय लिखते हैं। ऐसा कहा गया है।

"दीपस्थानं समाश्रित्य कृतं कर्म फलप्रदम्।"

जिस स्थान में, क्षेत्र में, नगर में या गृह में पुरश्चरण करना हो, उसके नौ समान भागों की कल्पना करके मध्य भाग में स्वर लिखे, और पूर्वादि क्रम से कवर्गादि लिखे, ईशान कोण में ल, क्ष लिखे - यथा -

जिस कोष्ठ में क्षेत्र का पहला अक्षर हो, उस कोष्ठ
के दोनों ओर के दो कोष्ठ भुजा, फिर दोनों ओर
दोनों ओर के दो कोष्ठ पैर, शेष कोष्ठ पुच्छ समझने
जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। भुजा में स्वल्प जी
पैरों में दुख, और पुच्छ में वध बन्धनादि पीड़ा होती है,

पूजा के विविध उपचार — संक्षेप और विस्तार के
प्रकार के उपचार हैं। चौंसठ, अठार
पंच।

चौंसठ उपचार — देवी की पूजा के चौंसठ उपचार यहाँ दि
मन्त्र से इनका समर्पण होता है, मानस पू
। वाग्बीज, मायाबीज और लक्ष्मीबीज के साथ भी इ
से पाद्य के समय " ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाद्यं कल्पयामि नमः
नाम जोड़ कर यही मन्त्र बोल सकते हैं। उपचारों के
=१= पाद्यम्, =२= अर्घ्यम् =३= आचमनम् =४= सुगन्
मज्जनशाला प्रवेशनम् =६= मज्जनमणि पीठोपवेशनम्
=उद्वर्तनम् =८= उष्णोदकस्नानम् =१०= कनक
नम् =११= धौतवस्त्रपरिमार्जनम् =१२= अरुणदुकू
अरुणदुकूलोत्तरीयम् =१४= आलेपमण्डप प्रवेशनम्
वेशनम् =१६= चन्दनागु ... मृग मद

(Edges of underlying/adjacent pages visible:) ठार, सोल, दस, पाँच; =स्वागत=२; =६=वस्त्र=; =दीप=१८=; प्रकार।; =३=आचमनी; न्ध=८=पुष्प; ल=१८=स्तव; =आचमनीय=; पुष्प=८=धूप=; =२=धूप=; चाहिये, छः पुष्पों से; मे श्यामा घास, दूब; जल और गन्ध,; सरसों देने चाहिये।; , लवंग और कङ्कोल

(३२)

१० ह्रौं बीज सम्पुटित मन्त्र क
दसवाँ संस्कार होता है।
इस प्रकार संस्कृत किय
जप स्थान (कूर्मचक्र)
दीपस्थानं समाश्रित्य
जिस स्थान में, क्षेत्र
भागों की कल्पना करें
वर्गादि लिखे, ईशा

= धूप मल्लिका मालती जातीचम्पका शोक शत पत्र
श्री सर्वर्तुकुसुममाला भूषणम् =१८= भूषणमण्डप प्रवेश
पवेशनम् =२०= नवरत्न मुकुटम् =२१= चन्द्रशकलम् =
म् =२३= तिलकरत्नम् =२४= कालाञ्जनम् =२५= कर्णपाल
भरणम् =२६= अधरयावकम् =२८= ग्रथनभूषणम् =
कम् =३०= महापदकम् =३१= मुक्तावली =३२= एकावली
=३४= केयूरयुगलचतुष्कम् =३५= वलयावली =३६= ऊ
मकटिसूत्रम् =३८= शोभाख्याभरणम् =३९= पादकट
नूपुरम् =४१= पादाङ्गुलीयकम् =४२= एककरे पाशः =
४४= इतरकरेषु पुण्ड्रेक्षुचापम् =४५= अपरकरे पुष्पबाण
पादुका =४६= स्वसमानवेशास्त्वावरण देवताभिः सह
८= कामेश्वरपर्यङ्कोपवेशनम् =४९= अमृतासनम् =५०
= कर्पूरवीटिका =५२= आनन्दोल्लास विलासहासः =
५४= श्वेतच्छत्रम् =५५= चामरयुगलम् =५६=
नम् =५८= गन्धः =५९= पुष्पम् =६०= धूपम्
म् =६३= पानम् =६४= पुनराचमनीयम्
नमस्कारम् इत्यादि, इन सब के साथ पूर्वोक्त बीज
नमः" कहना चाहिये, मानसपूजा में तो ये उपचार
ना में उपचारों का अभाव होने पर भी स्थिर भा

लेकिन इन मन्त्रों का पाठ कर लेने पर पूजा का ही फल मिलता है।

अठारह उपचार — अष्टादशोपचार ये हैं। =1= आसन =2= स्वागत =3= पाद्य =4= अर्घ्य =5= आचमनीय =6= स्नानीय =7= वस्त्र =8= यज्ञोपवीत =9= भूषण =10= गन्ध =11= पुष्प =12= धूप =13= दीप =14= नैवेद्य =15= दर्पण =16= माल्य =17= अनुलेपन =18= नमस्कार।

सोलह उपचार — षोड़शोपचार ये हैं। =1= पाद्य =2= अर्घ्य =3= आचमनीय =4= स्नानीय =5= वस्त्र =6= आभूषण =7= गन्ध =8= पुष्प =9= धूप =10= दीप =11= नैवेद्य =12= आचमनीय =13= ताम्बूल =14= स्तव पाठ =15= तर्पण =16= नमस्कार।

दस उपचार — दशोपचार ये हैं। =1= पाद्य =2= अर्घ्य =3= आचमनीय =4= मधुपर्क =5= आचमनीय =6= गन्ध =7= पुष्प =8= धूप =9= दीप =10= नैवेद्य।

पाँच उपचार — पञ्चोपचार ये हैं। =1= गन्ध =2= पुष्प =3= धूप =4= दीप =5= नैवेद्य।

आसन समर्पण में आसन के ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिये, छः पुष्पों से स्वागत करना चाहिये, पाद्य में चार फल, जल और उसमें श्यामा घास, दूब कमल और अपराजिता देनी चाहिये, अर्घ्य में चार फल, जल और गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, दूब, तिल, कुशा का अग्रभाग तथा श्वेत सरसों देनें चाहिये। आचमनीय में छः फल, जल और उसमें जायफल, लवंग और कङ्कोल का

चूर्ण देना चाहिये। मधुपर्क में कांस्यपात्र स्थित घृत, मधु, और दधि देना चाहि-
मधुपर्क के पश्चात् वाले आचमन में केवल एक फल विशुद्ध जल ही आव-
क होता है, स्नान के लिये, पचास फल जल का विधान है। वस्त्र बारह अंगुल से
ज्यादा, नवीन और जोड़ा होना चाहिये, आभरण स्वर्ण निर्मित हों, और उनमें
मोती आदि जड़े हों, गन्ध द्रव्य में चन्दन, अगर, कर्पूर आदि एक में मिला
गये हों, एक फल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है। पुष्प पचास से
अधिक हों, अनेक रंग के हों, धूप गुग्गुल का हो और कांस्यपात्र में निवे-
किया जाये, नैवेद्य में एक पुरुष के भोजन योग्य वस्तु होनीं चाहिये, चर्व्य,
चोष्य, लेह्य, पेय चारों प्रकार की सामग्री हो, दीप कपास की बत्ती से कर्पूर
आदि मिला कर बनाया जाय, बत्ती की लंबाई चार अंगुल के लग भग हो,
और दृढ़ हो, दीपक के साथ शिलापिष्ट का भी उपयोग करना चाहिये। इसे
कोस्त्री अथवा आक कहते हैं। जो आरती के समय सात बार घुमाया जाता
दूर्वा और अक्षत की संख्या सौ से अधिक समझनीं चाहिये, एक-एक साम-
अलग-अलग पात्र में रक्खी जाय, वे पात्र सोनें, चाँदी, ताँबे, पीतल या मि-
के हों, अपनीं शक्ति के अनुसार हो करना चाहिये, जो वस्तु अपने पास न
हो, उसके लिये चिन्ता करनें की आवश्यकता नहीं, और अपनीं शक्ती सा-
के अनुसार जो मिल सकती हों, उनके प्रयोग में आलस्य, प्रमाद और
संकीर्णता नहीं करनीं चाहिये।

न्त्र के पुरुष, स्त्री और नपुंसक तीन भेद— जिस मन्त्र के अन्त में (वषट्) और (फट्) आता हो, उसको (पुंल्लिंग) जिसके अन्त में (वौषट्) और (स्वाहा) आवे, उसको (स्त्रीलिंग) और जिसके अन्त में (नमः) आवे, उस मन्त्र को (नपुंसकलिंग) कहते हैं। इसी प्रकार जिसका अधिष्ठाता देवता पुरुष हो, उसको (मन्त्र) और जिस मन्त्र की अधिष्ठात्री देवता (स्त्री) हो, उस मन्त्र को (विद्या) कहते हैं। गुरु में मनुष्य, मन्त्र में अक्षर और प्रतिमा में प्रस्तर-बुद्धि रखनेवाला नरकगामी होता है। मन्त्र के अपने नामाक्षरों से ऋणि-धनी देख कर जप का आरम्भ करना चाहिये। स्त्री और शूद्रों के लिये, ॐकार रहित आठ अक्षरों वाला मन्त्र सिद्धि देने वाला होता है। जैसे— सकाम और निष्काम तथा नैतिक और नैमित्तिक भेद से मन्त्रों के दो प्रकार के पुरश्चरण होते हैं। मन्त्र पहले षट्चक्र से शोधन करके (अकडम) आदि चक्र से देखना चाहिये, कि वह सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और शत्रु आदि में से क्या है। इतना होने के पश्चात मन्त्र का दशसंस्कार करना चाहिये।

मन्त्र में पचास दोष होते हैं। =१= छिन्न =२= रुद्ध =३= शक्तिहीन =४= पराङ्मुख =५= बधिर =६= नेत्रहीन =७= कीलित =८= स्तम्भित =९= दग्ध =१०= स्रस्त =११= भीत =१२= मलिन =१३= तिरस्कृत =१४= भेदित =१५= सुषुप्त =१६= मदोन्मत्त =१७= मूर्च्छित =१८= हृतवीर्य =१९= हीन =२०= प्रध्वस्त =२१= बाल =२२= कुमार =२३= युवा =२४= प्रौढ =२५= वृद्ध =२६= निस्त्रिंश =२७= निर्बीज =२८= सिद्धि

२९= मन्द =३०= कूट =३१= निश्शङ्क =३२= सत्वहीन =३३= केकर =३४=
बीजहीन =३५= धूमित =३६= आलिंगित =३७= मोहित =३८= क्षुधार्त =३९=
अतिदृप्त =४०= अंगहीन =४१= अतिक्रुद्ध =४२= अतिक्रूर =४३= सव्रीड =
४४= शान्त मानस =४५= स्थानभ्रष्ट =४६= विकल =४७= निःस्नेह =४८=
अतिवृद्ध =४९= पीड़ित =५०= दण्ड। जो इन पचास दोषों को न जानते हुये
जप करता है। वह सिद्धि को प्राप्त नहीं होता है।

मन्त्र जप के अंग :- मन्त्र शिखा, मन्त्रचैतन्य, मन्त्रार्थ, मन्त्र भावना, गुरु
का ध्यान, इष्ट देव का ध्यान, कुल्लुका सेतु, महासेतु, कवचसेतु, निर्वाण,
न्धन, योनिमुद्रा, करन्यास, अङ्गन्यास, प्राणायाम, मुखशुद्धि, प्राणयोग,
पन, सूतकद्वयमोक्षण, दोनों भ्रुवों के मध्य दृष्टि, मूल मन्त्र का जप,
अकारादि से लेकर क्षकारपर्यन्त बिन्दुमातृकाक्षर से अनुलोम-विलोम-
कल्पित वर्णमाला, पुनः सेतुजप, प्राणायाम आदि मन्त्र जप के अंग हैं।
एक सहस्त्र से अधिक अक्षरों वाला मन्त्र (स्तोत्र) रूप हो जाता है। उपर्युक्त
दोषों से युक्त मन्त्र यदि सिद्ध न हो, तो उन दोषों के शमन के लिये योनि-
मुद्रा, वर्णमाला और कुछ बीज युक्त जप करने से अवश्य सिद्ध होता है।
सम्पूर्ण मन्त्रों की संख्या सात करोड़ कही गई है, ये सभी शिव के द्वारा
कीलित हैं। अतः सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्रोत्कीलन के पठन से ये उत्कीलित
होते हैं, पाठकों के लाभार्थ उत्कीलन यहाँ दिया जाता है। जैसे प्राचीन
ग्रन्थों में लिखा हुआ मिला है। वैसा का वैसा लिखा जा रहा है, पाठक इस पर

अवश्य विचार करेंगे।

अथ सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्रोत्कीलन प्रारम्भः — पार्वत्युवाच -

देवेश परमानन्द भक्तानामभयप्रद। आगमा निगमाश्चैव बीजं बीजोदयस्तथा ॥१॥ समुदायेन बीजानां मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता। ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम् ॥२॥ धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञानंच विकल्पनम्। निर्विकल्प विभागेन तथा षट् कर्मसिद्धये ॥३॥ भुक्तिमुक्तिप्रकारश्च सर्वं प्राप्तं प्रसादतः। कीलनं सर्वमन्त्राणां शंस यद् हृदे वचः॥४॥ इति श्रुत्वा शिवानाथः पार्वत्या वचनं शुभम्। उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवाम् ॥५॥

शिव उवाच — वरारोहे हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः। साक्षीभूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा ॥६॥ त्वया पृष्टं वरारोहे तद्वक्ष्याम्युत्कीलनम्। उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत् ॥७॥ पुरा तव मया भद्रे समाकर्षणवश्यजा। मन्त्राणां कीलिता सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः॥८॥ तवानुग्रह प्रीतत्वात्सिद्धिस्तेषां फलप्रदा। येनोपायेन भवे तं स्तोत्रं कथयाम्यहम् ॥९॥ शृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिलं जगत्। तस्य सिद्धिर्भवेत्तिष्ठ मया येषां प्रभावकम् ॥१०॥ अन्नं पानं हि सौभाग्य दत्तं तुभ्यं मया शिवे। संजीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्ध्रुवम् ॥११॥ यस्य स्मरणमात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा। अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं न संशयः ॥१२॥ ॐ अस्य श्री सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्राणाम् उत्कीलन

स्तोत्रस्य मूलप्रकृतिर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरञ्जनो देवता क्लीं बीजं ह्रीं शक्तिः ह्रः लौं कीलकं सप्तकोटि मन्त्र यन्त्र तन्त्रकीलकानां संजीवनसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथाङ्गन्यासः — ॐ मूलप्रकृतिर्ऋषये नमः शिरसि। ॐ जगतीच्छन्द नमः मुखे। ॐ निरञ्जन देवतायै नमः हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ हः लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः — ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।

अथ ध्यानम् — ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं ज्योतिः प्रकाशमनिशं महतो महान्तम्। कारुण्यरूपमतिबोधकरं प्रसन्नं दिव्यं स्मरामि सततं मनुजावनाय॥१॥ एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं तस्य सिद्धिरस्तु सर्वदा। वाञ्छितं फलमाप्नोति मन्त्रसंजीवनं ध्रुवम्॥२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्रादीनाम् उत्कीलनं कुरु-कुरु स्वाहा॥

मूलमन्त्र — ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट् पञ्चाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा॥
ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां संजीवनं कुरु-कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं शं षं सं हं ळं क्षं मात्राक्षराणां सर्वम् उत्कीलनं कुरु स्वाहा।

हमाणं चेतयन्तौ बिविधसुरनरांस्तर्पयन्तौ प्रमोदात्, ध्याने नो द्वीपयन्तौ निगमं
तु षटपदं प्रेरयन्तौ। सर्वान्देवान् जयन्तौ दितिसुतदमनी सप्यहंकार मूर्तिस्तुभ्यं तस्मै
प्यं स्मररचितं मंतु मोचये शापजालात् ॥१०॥ इदं श्री त्रिपुरा स्तोत्रं पठेद् भक्त्यातु यो नरः
११ बार सम्भो सर्वान् कामान् वाप्नोति सर्व पापद् विमुच्यते ॥११॥ सर्व मंत्र तंत्रो त्कीलन सम्पूर्णानि ॥

ॐ सोहं हं सो हं ११ ॐ जूं सों हं हंसः ॐ, ॐ ॥ हं जूं हं सं गं ॥ सोहं हं सो
ॐ लं ११ ॐ ११ यँ ११ ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तोत्रकवचादीनां संजीवय
संजीवनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥ ॐ सोहं हं सः जूं संजीवनं स्वाहा। ॐ ॐ
प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे। इं ईं शक्तिस्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च।
ऋं ॠं रंजितदीप्ताय ऌं ॡं स्थूलस्वरूपिणे। एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं
शिवाय च ॥२॥ कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुणगामिने। ङं चं श्रीचन्द्रभाला
ॐ जं जयकाय ते ॥३॥ झं ञं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च। थं दं ध
नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रमयाय च ॥४॥ बं भं मं बलवीर्याय यं रं लं यशसे
नमः। वं शं षं बहुवादाय सं हं लं क्षं स्वरूपिणे ॥५॥ दिशामादित्यरूपाय
तेजसे रूपधारिणे। अनन्ताय - अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥६॥
मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः। प्राणेशायै क्षीणदायै सं संजीव
नमो नमः ॥७॥ निरञ्जनस्य देवस्य नामकर्मविधानतः। त्वया ध्यातं च शक्त्या
तेन संजायते जगत ॥८॥ स्तुताहमचिरं ध्यात्वा मायाया ध्वंसहेतवे।
संतुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः ॥९॥ (ऊपर चार लाइन लिखा है

सूतक-द्वय-शमनोपाय -

अतः हे देवि- जप आरम्भ करने से पूर्व एक सौ
आठ बार या सात बार प्रणव से सम्पुटित प्रणव का (ॐ ॐ
का) जप करे, फिर मुख्य मन्त्र का जप पूरा करके अन्त में भी पूर्ववत्
सम्पुटित प्रणव का जप करे। इससे सूतकद्वय की निवृत्ति होकर धर्म, अर्थ,
काम और मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है।

प्रणव कहाँ लगाना है — गृहस्थों को चाहिये, कि मन्त्र के आदि में प्रणव ॐकार लगावें, उसके बिना उनका जप निष्फल होता है। वान प्रस्थी तथा संन्यासी महापुरुषों को जपनीय मन्त्र के आदि और अन्त में भी प्रणव अर्थात् ॐकार लगाना चाहिये।

किन बीजों के पहले ॐकार नहीं लगाया जाता है — वागबीज (ऐं) कामबीज (क्लीं) शक्तिबीज (ह्रीं) एवं श्रीबीज (श्रीं) को प्रणव कहते हैं। इसीलिये जिन मन्त्रों के आदि में ये बीज हों, उनमें प्रणव नहीं लगाना चाहिये।

किस देवता के ॐकार लगाना — वैष्णव मन्त्रों में पहले प्रणव, शिव मन्त्रों में शक्तिबीज, शक्तिमन्त्रों में कामबीज, एवंम गणेशजी के मन्त्रों में रमाबीज लगाना चाहिये, सूर्य तथा अन्य देवताओं के मन्त्रों में तीसरा अर्थात् शक्तिबीज लगाना चाहिये।

किस कर्म में क्या जोड़ना — वशीकरण, आकर्षण, संतापकरण, कर्म एवं होम में स्वाहा शब्द का प्रयोग करना चाहिये, क्रोध-शमन, शान्ति कर्म एवं पूजन में (नमः) शब्द का उच्चारण करे। सम्मोहन, उद्दीपन, पुष्टि एवं मृत्युंजय के लिये, किये जाने वाले कर्म में (वौषट्) तथा पारस्परिक प्रीतिभेदन, छेदन मारण के प्रयोग में (हुंकार) का प्रयोग करना चाहिये। उच्चाटन, विद्वेष तथा मानसिक विकारों के लिये, किये जाने वाले कर्म में (फट्) एवं विघ्नविनाश तथा ग्रहकृत पीड़ाशमन के

लिये (हुं फट्) का प्रयोग करना चाहिये। मन्त्रोद्दीपन एवं लाभ-हानि के कार्य में (वषट्) ऐसा उच्चारण करनें का विधान है। इस प्रकार क्रमानुसार तत्तन्मन्त्रों में उपयुक्त शब्दों के प्रयोग का विधान जानना चाहिये।

मानसिक जप में कोई नियम नहीं :- जो विद्वान् निरन्तर मन्त्रों के जप करनें का व्रत ग्रहण कर चुके हैं। उनके लिये, सोते-जागते चलते-फिरते, पवित्र तथा अपवित्र किसी अवस्था में, किसी देश या काल में मानसिक जप करनें में कोई दोष नहीं है, वे अपनें मानसिक जप का अभ्यास चालू रख सकते हैं। इस प्रकार निरन्तर जप परायण श्रेष्ठ द्विज समस्त यज्ञों के फल के भागी होते हैं।

पूजा के बिना जप नहीं करना चाहिये :- जप के अनुष्ठान में प्रतिदिन एक बार देवता का पूजन अवश्य होना चाहिये, बिना पूजन के जप कदापि न करे, जप के अन्त में पूजन हो, या पूजन के अन्त में जप किया जाय, यह साधक की इच्छा पर निर्भर है।

पञ्चशुद्धि अवश्य होनी चाहिये :- आत्मशुद्धि, स्थानशुद्धि, मन्त्रशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, और देवशुद्धि ये पाँच शुद्धियाँ आवश्यक हैं।

पूजा-जप में पवित्रीधारण :- जप, होम, दान, स्वाध्याय और पितृतर्पण के समय सुवर्ण, रजत और कुश-ये तीनों अथवा इनमें से अन्यतम किसी एक को हाथ में अवश्य धारण करें, हाथ को इनसे सूना न रक्खें

जप संख्या किससे :- हाथों की अंगुलियों के पर्व, अक्षत, धान्य, पुष्प, चन्दन, अथवा मृत्तिका से जप की गणना नहीं करे।

आसन लोमरहित हो :- लोमयुक्त आसन पर बैठनें से सारा अनुष्ठान नष्ट हो जाता है। क्योंकि लोम के स्पर्श मात्र से सिद्धि की हानि होती है।

स्तोत्र-पाठ के नियम :- स्तोत्रों का मानसिक पाठ न करे, मुख से उच्चारण कर सुमधुर स्वर से पाठ करना प्रशस्त है, स्तोत्र कण्ठस्थ न हो, तो पुस्तक के ऊपर पाठ करना चाहिये, अपनें हाथ से लिखे, एवं शुद्ध ब्राह्मणेतर शुद्रादि के लिखे, स्तोत्रों का पाठ न करे।

देव स्पर्श का अधिकार :- राजन् स्त्रियाँ, अनुपनीत अर्थात बिना यज्ञोपवीत के द्विजाति एवं शुद्र भगवान शंकर तथा विष्णुभगवान् की मूर्ति के स्पर्श करने के अधिकारी नहीं हैं।

घर में मूर्ति पुजा :- विद्वान अपनें घरों में अँगुठे के पर्व से लेकर एक वितस्ति (बित्ता) प्रमाण ही प्रतिमा बनवावें, इससे बड़ी प्रतिमा घर में प्रशस्त नहीं है। कल्याण चाहनें वाले गृहस्थी घर में एक ही मूर्ति की पुजा न करें। अनेक मूर्तियों की पुजा करनें से सब प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। घर में दो लिंग, दो शंख, दो सूर्य, दो शालग्रामशिला, द्वारका के दो चक्र, तीन गणेश, तीन शक्ति की पुजा नहीं करनी चाहिये, इनके पुजन से गृहस्वामी को उद्वेग की प्राप्ति

होती है। विद्वान टूटे-फूटे, विकलाङ्ग, कुष्ठरोगियों से संस्पृष्ट, दूषित भूमि पर पड़े देवताओं का पूजन न करें।

पुष्प-छिन्न-पत्र -: बिल्व, खदिर, आँवला तथा तमाल के पत्ते टूटने-फटने पर भी दूषित नहीं होते हैं, तुलसीदल एवं बिल्वदल सदा-सर्वदा शुद्ध ही रहते हैं। बिल्वपत्र, कुन्द, तमाल एवं अमाल की (आँवले) के पत्ते, श्वेतकमल (क) तुलसी, कमल, अगस्त्यपुष्प और जो कलिका स्वरूप हैं, ये सब पुष्प पर्युषित (बासी) नहीं होते हैं।

जप काल में -: विद्वान् को चाहिये, कि जपकाल में आलस्य, जँभाई, निद्रा, छींकना, थूकना, भय, गुह्यअंग का स्पर्श करना, क्रोध करना, पाँव फैलाना, दूसरों से बात करना, मिथ्या बोलना आदि का विशेषरूप से परित्याग कर दे।

मन्त्र शास्त्र और उपासना -: लेखक - डॉ० श्री गोपालप्रसाद जी (वंशी)

आज कल के नयी रोशनी वाले पढे लिखे, भारतीयों का मान्त्रिक विषयों पर विश्वास प्रायः नहीं है। और वे उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, इधर आस्तिक और भावुक वर्ग उन पर विश्वास तो अवश्य करता है, किन्तु वह तद्विषयक साधारण सिद्धान्तों को समझ लेने की परवा नहीं करता, ऐसी अवस्था में इस वर्ग के लोगों को कभी किसी मायावी या धूर्त के जाल में फँस जाने का भी प्रसंग आता है, उस समय मन्त्र-तन्त्र के विरोधियों को कुत्सित टीका-टिप्पणी करने को मनचाहा अवसर मिल जाता है। इस

परिणाम यह होता है। कि श्रद्धालु वर्ग को भी तन्त्र-मन्त्र पर अश्रद्धा हो जाना स्वाभाविक ही है। मन्त्र शास्त्र का विषय गहन और जटिल है, उसे समझ लेना साधारण बात नहीं, उसके सम्बन्ध में यहाँ तक लिखा है, कि - एतद् गोप्यं महागोप्यं न देयं यस्य कस्यचित्। तथापि इस विषय का जो विवेचन शास्त्र में किया गया है, वह अत्यन्त सुन्दर, बुद्धि पुरस्सर और मननीय है, उसे प्रगट कर देनें में कोई आपत्ति नहीं, इस लिये इस लेख द्वारा शास्त्र सम्मत बिचार प्रगट करनें का कुछ प्रयास किया जा रहा है। भारतीय वाङ्मय में मन्त्र विद्या का आसन बहुत ऊँचा माना गया है, वैदिक साहित्य, जैन साहित्य और बौद्ध साहित्य में इस विषय पर स्वतन्त्र चर्चा की गयी है, जैसे काव्य, कोश, अलंकार, व्याकरण, न्याय और छन्द आदि विषयों के स्वतन्त्र ग्रन्थ अलग-अलग हैं, वैसे ही मन्त्र विद्या के सैकड़ों स्वतन्त्र ग्रन्थ हैं, जैन साहित्य में नमस्कार मन्त्र कल्प, प्रतिष्ठा कल्प, चक्रेश्वरी कल्प, ज्वाला मालिनी कल्प, पद्मावती कल्प, सूरिमन्त्र कल्प, वाग्वादिनी कल्प, श्री विद्या कल्प, वर्द्धमान विद्या कल्प, रोगापहारिणी कल्प, आदि, अनेक कल्प ग्रन्थ विद्यमान हैं। इसी प्रकार बौद्ध साहित्य में तारा कल्प, वसुधारा कल्प, घण्टाकर्ण कल्प आदि - अनेक ग्रन्थ मौजूद हैं, वैदिक साहित्य में तो इस शास्त्र का एक अलग भण्डार ही है, उसमें कात्यायनी, निर्वाण, कुलार्णव आदि - अनेक-और-अपरिमित तन्त्र ग्रन्थ मौजूद हैं, उपरि निर्दिष्ट ग्रन्थों में कुछ छप भी गये हैं।

पर इस विषय के अधिकांश महत्वपूर्ण ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित हैं, और दिन प्रतिदिन दुर्लभ होते जा रहे हैं, पर इन तीनों साहित्यों के मन्त्र शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों की नामावली मात्र से ही यह बात प्रगट हो जाती है, कि किसी समय इस विषय की भारत में बड़ी उन्नति थी।

कल्प ग्रन्थ :- जिन ग्रन्थों में मन्त्र विधान, यन्त्र विधान, मन्त्र यन्त्रोद्धार, बलिदान, दीपदान, आवाहन, पूजन, विसर्जन, और साधन आदि विषयों का वर्णन किया गया हो, वे ग्रन्थ कल्प ग्रन्थ कहलाते हैं।

तन्त्र ग्रन्थ :- जिनमें गुरु शिष्य के संवाद रूप से तथा शिव-पार्वती के संवाद रूप से मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र और ओषधि वल्ली आदि द्रव्यों का वर्णन होता है, वे तन्त्र ग्रन्थ हैं।

पटल ग्रन्थ :- किसी एक देवता को आराध्य मानकर उसी देवता से सम्बन्ध रखनेवाली मन्त्र-यन्त्र आदि की साधन विधियाँ जिनमें लिखीं हों, तथा मानसिक भूमिकाओं का वर्णन भी हो, अनेक काम्यकर्मों में निष्णात होने की बातें वर्णित हों, वे पटल ग्रन्थ कहलाते हैं।

पद्धति ग्रन्थ :- जिन ग्रन्थों में अनेक देवी-देवों की साधना का प्रकार बताया गया हो, उन्हें पद्धति ग्रन्थ कहते हैं।

बीज कोश :- मन्त्रों के पारिभाषिक शब्दों को समझने को तथा एक-२ अक्षर तथा बीज की अनेक व्याख्याएँ जिन ग्रन्थों में लिखी हों, उन्हें मन्त्र कोश या बीज कोश कहते हैं। इस प्रकार कल्प, तन्त्र, पटल, पद्धति

और बीजकोश प्रभृति ग्रन्थों में-मन्त्र शास्त्र का साहित्य विभक्त है। और इसका यह क्रम वैदिक, जैन, और बौद्ध तीनों प्रकार के साहित्यों में विद्यमान है। मन्त्र साधन किस मार्ग द्वारा करना चाहिये, अर्थात मन्त्र किस मार्ग द्वारा सिद्ध हो सकता है, यह पहले जान लेना चाहिये, इस सम्बन्ध में-मन्त्र शास्त्र में तीन मार्गों का उल्लेख है, जो दक्षिण, वाम, मिश्र कहलाते हैं, सात्विक देवता की सात्विक उपासना, सात्विक मन्त्र और सात्विक सामग्री द्वारा करनें का जो मार्ग है, उसे दक्षिण मार्ग या सात्विक मार्ग कहते हैं, मदिरा, मांस, मीन, मांस और महिला आदि पाँच वस्तुओं से युक्त भैरव-भैरवी आदि तामस प्रकृति देवी-देवताओं की साधना और उपासना जिस मार्ग द्वारा हो, वह (वाम मार्ग) कहलाता है। इसी प्रकार जिस मार्ग में-मीन, मांस, मदिरा आदि पदार्थों को प्रत्यक्ष रूप में न ग्रहण कर उनके प्रतिनिधियों से इष्ट की साधना करते हैं, उसे (मिश्र मार्ग) कहते हैं। पर वास्तव में दक्षिण और वाम यही दो मार्ग हैं, वाम मार्ग प्रायः तन्त्र शास्त्र का विषय है, कल्प ग्रन्थों में इसका वर्णन नहीं है। वाम मार्गी प्रायः भैरव और काली आदि देवी-देवों के उपासक होते हैं, जो नाथों को गुरु मानते हैं, गुरु-चरण पादुका, श्रीचक्र तथा भैरवी चक्र की पूजा करते हैं। परन्तु मन्त्र शास्त्र के विषय में इतना कहना आवश्यक है। कि वाम मार्ग का प्रभाव मिश्र मार्ग पर तो पड़ा ही है। दक्षिण मार्ग पर भी इसका कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य है। इसी से दक्षिण मार्ग वाले भी तामस प्रकृति के देवताओं की आराधना करने लग गये।

पुरुषाकृति की आत्म शक्ती ही सच्ची शक्ति है। अतः आत्म वस्तु पर विश्वास रख कर, इसके प्रभाव को जान कर, मन्त्र साधना करनें वाला दक्षिण मार्ग का भी साधक (शाक्त) कहा जा सकता है, इसी लिये शाक्त कहलानें में वह संकोच नहीं करता, परन्तु वाम मार्गी तथा कौल अपनें को वाम मार्गी या कौल कहलानें में भय करते हैं, दक्षिण मार्ग सात्विक होने से प्रकट मार्ग है, और वाम मार्ग असात्विक होनें से गुप्त मार्ग है, (गोपनीयं-गोपनीयं-गोपनीयं प्रयत्नतः) की शिक्षा वे प्रथम से ही देते हैं, जो हो, वाम मार्ग का बल अधिक बढ़ जाने से ही सात्विक मन्त्रों और सात्विक देवताओं का भारतीयों द्वारा सिद्ध होना दुःसाध्य हो गया, जिससे कितनों का स्वयं मन्त्र शास्त्र से विश्वास उठ गया। वेदागम, बौद्धागम और जैनागम इस प्रकार मन्त्र शास्त्र के भीतर तीन आगम हैं, जैनागम दक्षिण मार्गावलम्बी और काश्मीर सम्प्रदाय प्रधान है, बौद्धागम वाम मार्गावलम्बी और गौड़ सम्प्रदाय प्रधान है, तथा वेदागम मिश्र मार्गावलम्बी और केरल सम्प्रदाय प्रधान है। वैदिक मतावलम्बी मान्त्रिक वर्ग वेदागम को (शैवागम) भी कहते हैं, इसका कारण यह बतलाते हैं, कि मन्त्र शास्त्र की उत्पत्ति शिव जी से हुई है, इसी लिये तन्त्र शास्त्रों में शिव-पार्वती के संवाद रूप से मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रों का वर्णन किया गया है। मन्त्र शास्त्र के सम्प्रदायों को चक्र पूजा भी मान्य है, जैनों के काश्मीर सम्प्रदाय में (सिद्ध चक्र) (नव पद मण्डल चक्र) की सात्विक पूजा का वर्णन है, केरल सम्प्रदाय में (श्रीचक्र) की पूजा की विधि है, और गौड़ सम्प्रदाय में (भैरवीचक्र) की पूजा का उल्लेख है।

भैरवीचक्र का पूजन करनें वालों का यह सिद्धान्त है, कि (प्राप्ते तु भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः) चक्र पूजा की कल्पना ब्रम्हाण्ड पूजा या विश्व पूजा, विश्वप्रेम और विश्व सेवा धर्म की सूचक है।

मन्त्र दीक्षा — गुरु के समीप यथा विधि मन्त्रोपदेश लेने को (दीक्षा) कहते हैं, जिस सम्प्रदाय की विधि के अनुसार मन्त्र दीक्षा ली हो, उसी के प्रकार से साधना करनें से मन्त्र सिद्ध होता है, अर्थात मन्त्र दीक्षा शिष्य की योग्यता को सूचित करती हैं।

मन्त्र पीठिका — मन्त्र शास्त्र में चार पीठिकाओं का वर्णन है, बिना पीठिका के मन्त्र नहीं सिद्ध हो सकता। श्मशान पीठ, शव पीठ, अरण्य पीठ, और श्यामा पीठ ये चार पीठिकायें हैं।

श्मशानपीठ — उसे कहते हैं, जिसमें प्रति दिन रात्रि में श्मशान भूमि में जाकर यथाशक्ति विधि से मन्त्र का जप किया जाता है, जितनें दिन का प्रयोग होता है, उतनें दिन तक मन्त्र का साधन यथाविधि किया जाता है, जैन ग्रन्थो में लिखा है कि श्री कृष्ण वासुदेव के लघु भ्राता गज सुकुमाल मुनीश्वर इसी पीठिका में परमेष्ठी महामन्त्र का साधन करते हुये, आत्म ज्ञान को प्राप्त कर सिद्धि और मुक्ति को पहुँचे थे, इसे प्रथम पीठिका कहते हैं।

शव पीठ — किसी मृतक कलेवर के ऊपर बैठ कर या उसके भीतर घुस कर मन्त्रानुष्ठान करना शव पीठिका है, यह पीठिका वाम मार्गियों की.

प्रधान पीठिका है। कर्ण पिशाचिनी, उच्छिष्ट गणपति, कर्णेश्वरी, उच्छिष्टचाण्डालिनी आदि-देवताओं की साधना तथा अघोर पन्थ वालों की साधनाएँ इसी पीठिका के द्वारा होती हैं।

अरण्य पीठिका :- मनुष्य जाति का जहाँ संचार न हो। सिँह, श्वापद, सर्प आदि हिंस्र पशु प्राणियों की जहाँ बहुलता हो, ऐसे निर्जन वन स्थान में किसी वृक्ष या शून्य मन्दिर आदि का आश्रय लेकर मन्त्र साधन करना और निर्भयता पूर्वक मन को एकाग्र रख कर तल्लीन हो जाना अरण्य पीठिका है। निर्वाण मन्त्र की विधि में लिखा है, कि (निर्वाण मन्त्रं यदि साधको जपेदरण्यभूमौ - शिवसन्निधौ स्थित:) अर्थात अरण्य में जाकर शिव मन्दिर में निर्वाण मन्त्र का जप करने से शीघ्र सिद्धि होती है, इतिहास से पता चलता है, कि प्रथम के ग्रन्थों में आत्मसिद्धि करने के लिये निर्जन वन में ही रहने की प्रथा थी। वे नगर, ग्राम आदि में या उनके समीप नहीं रहते थे, सदा एकान्त वन में ही रह कर आत्मध्यान किया करते थे, तब उनको अनेक सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती थीं, जब से त्यागी वर्ग वनवास त्याग कर नगर, ग्राम आदि का आश्रय लेकर रहने लगा, तभी से ये सिद्धियाँ नष्ट हो गयीं, और वे माया मोह में फँस कर-मारे मारे फिरने लगे, अर्थात त्यागी जीवन के लिये एकान्तवास ही श्रेष्ठ है।

श्यामा पीठिका :- यह कठिन से कठिनतर है, बिरला ही कोई महापुरुष इस पीठिका से उत्तीर्ण हो सकता है, एकान्त स्थान में सोलह वर्षीया, नवयौवन सुन्दरी स्त्री को वस्त्र रहित कर, सम्मुख बैठा कर साधक मन्त्र साधने में तत्

हो, और मन को कभी-भी यत्किञ्चित् भी विचलित न होनें दे, और कठोर ब्रह्मचर्य में स्थिर रह कर मन्त्र का साधन करे, इसे श्यामा पीठिका कहते हैं। जैन ग्रन्थो में लिखा है, कि द्वैपायन पुत्र मुनीश्वर शुकदेव, स्थूलीभद्राचार्य और हेमचन्द्राचार्य नें इस पीठिका का अवलम्बन किया था, और मन्त्र साधना करके वे विजेता हुये थे।

वैदिक, पौराणिक और वैष्णव आदि सात्विक मन्त्रों के साधन में इन पीठों की कोई आवश्यकता नहीं है, एकान्त, निरापद, पवित्र, अरण्य तो सभी के लिये उत्तम है, पर सात्विक मन्त्रों के अनुष्ठान, जप तीर्थ स्थानों में, गंगा आदि पवित्र नदियों के तट पर, देव मन्दिरों में और घरों में भी-भली - भाँति किये जा सकते हैं, श्रद्धा, विधि और संयम - नियम का पालन तो आवश्यक है ही। यह विषय व्यावहारिक नहीं है, इसका सम्बन्ध मन्त्र शास्त्र से है। मन की एकाग्रता पर इसकी नींव है, इन्द्रियों के विषयों की ओर से लक्ष्य हटा कर मन को एकाग्र कर मन्त्र साधन करनें से मन्त्र सिद्ध होता है। मन की चंचलता जितनी जल्दी हटेगी, उतनी ही जल्दी मन्त्र सिद्ध होगा। मन्त्र शब्द का शब्दार्थ भी महर्षियों नें यही किया है, कि (मननात् त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः) अर्थात 'म' कार से मनन और 'त्र' कार से रक्षण यानी जिन विचारों से हमारे कार्य सिद्ध हों, वह (मन्त्र) है। मन्त्र विद्या योग का उच्चकोटि का विषय है, यह मन की बेतार की तारबर्की है। हिप्नोटिज्म, मैस्मैरिज्म आदि इस विद्या के सम्मुख अत्यन्त तुच्छ हैं।

मन से वर्णोच्चारों का घर्षण होनें से एक दिव्य ज्योति प्रगट होती है। उन्हीं वर्णों के समुदाय का नाम मन्त्र है। इस विषय का इस लिये बिचार किया है, कि इस विषय का ज्ञाता सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। शास्त्रकारों नें मन्त्र शब्द का अर्थ बिचार किया है। राजनीति शास्त्र में इसी से लिखा गया है, कि जिन विचारों को गुप्त रखकर राज्य तन्त्र चलाया जाता है, वे मन्त्र है। इसी कारण राज्य तन्त्र के प्रधान संचालक को महामन्त्री और उसके साथ काम करनें वाले समूह को मन्त्रि मण्डल कहते हैं। प्रसिद्ध विद्वान हेमचन्द्राचार्य नें लिखा है। मन्त्र साधक की योग्यतानुसार ही सिद्ध होता है, इसी लिये मान्त्रिक कहा करते हैं। कि जपते ही चले जाओ, अवश्य सिद्धि होगी। मन की शुद्धि पर मन्त्र शास्त्र की नींव है। जब तक मनुष्य को विषय लालसा रहती है, तब तक बुद्धि निश्चयात्मिका नहीं होती, मन तल्लीन नहीं होता, वह विषयवासना से अशुद्ध रहता है। इसीलिये कहा है, कि यदि किसी कार्य को सिद्ध करना हो तो, वासना रहित होकर कार्य में तल्लीन हो जाना चाहिये, तब वह शीघ्र तर सिद्ध हो जाता है, मन्त्र का जप तल्लीन होकर करने से मन्त्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है। पर मन्त्र साधन के समय साधनीय कार्य की ओर ही लक्ष्य रहनें से मन्त्र में तल्लीनता नहीं हो सकती, बार-बार उस कार्य का स्मरण होता है, और बिना एकाग्रता के मन्त्र नहीं सिद्ध होता, यही मन्त्र शास्त्र का रहस्य है, और वासना रहित होकर एकाग्रता-तल्लीनता प्राप्त कर लेना सहज बात नहीं है, यह बड़ा ही कठिन है। अब यन्त्र साधन की बात लीजिये, अष्टगन्ध, सुरभि द्रव्य आदि की

स्याही बना कर भोजपत्र, कागज या स्वर्ण रजत, ताम्र आदि धातुपत्र पर षड्दल, अष्टदल, शतदल, सहस्त्रदल तथा त्रिकोण, चतुष्कोण या वर्तुल रेखाओं के भीतर अक्षर या अंकों में लिखना और उसका यथाविधि पूजन आदि कर साधन करना 'यन्त्र साधना' कहलाती है, सिद्ध चक्र यन्त्र, श्रीचक्र यन्त्र, भैरवीचक्र यन्त्र, ऋषिमण्डल यन्त्र, विजय यन्त्र आदि हजारों यन्त्र हैं। किसी-किसी स्थल पर मन्त्र-यन्त्र दोनों साथ-साथ करनें पड़ते हैं, और किसी-किसी स्थल पर ऐसा नहीं भी है, किन्तु यह यन्त्र विद्या भी मन्त्र शास्त्र का ही एक अंग है। वर्णों या अंकों को एकाग्रता पूर्वक लिखना ही इस साधना की मुख्य क्रिया है। औषधि द्रव्यों के द्वारा कार्य सिद्ध करना 'तन्त्र साधना' है, कितने तन्त्रों में औषधि द्रव्यों के मिश्रण के साथ मन्त्र-यन्त्र का भी उपभोग होता है, जड़ और चेतन शक्ति के संयोग द्वारा कार्य साधन करना ही तन्त्र साधना का विषय है, और मन्त्र-यन्त्र तथा तन्त्र का एक दूसरे के साथ प्रायः सर्वत्र उपयोग होता है। अतः तन्त्र साधन भी मन्त्रशास्त्र का एक अंग है।

स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिक और पौष्टिक इस प्रकार नौ प्रकार के मन्त्र के प्रयोग हैं। यह श्री भैरवा मि सूरिजी नें कर्मों के घात करनें के लिये विद्याप्रवाद पूर्व के तृतिय प्राभृत से उद्धृत किया है, किसी-किसी के मत से सान्तानिक दसवाँ प्रयोग भी माना जाता है। जिस मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र के करने से चोर, डाकू

सर्प, श्वापद और परचक्र (शत्रुसेना) के आक्रमण का भय मिट कर वह जहाँ का तहाँ अटक जाये, स्थगित रह जाये, उसे (स्तम्भन) प्रयोग कहते हैं। जिस प्रयोग के करनें से साधक किसी को भी अपनें वशीभूत कर ले उसे (मोहन) प्रयोग कहते हैं। राज मोहन, सभा मोहन और स्त्री पुरुष मोहन आदि मोहन प्रयोग के तीन प्रकार हैं। इन तीनों की साधनाएँ भी पृथक -पृथक हैं, जिस प्रयोग के करनें से विद्वेषी रोगाक्रान्त हो जाता है, उसका मन अस्थिर, उल्लास रहित तथा निरुत्साह हो जाता है, वह स्थान और पद से भ्रष्ट हो जाता है, उस प्रयोग को (उच्चाटन) कहते हैं। जिस प्रयोग के करनें से इच्छित पदार्थ साधक के पास स्वयं चला आये, यदि चेतन प्राणी हो, तो उसका विपरीत मन भी अनुकूल होकर साधक की शरण में आ जाय, उसे (वश्याकर्षण) कहते हैं। जिस प्रयोग के करनें से शत्रु आदि साधक से डरनें लग जायें, भय भीत हो जायें, काँपनें लग जायें, वही (जृम्भण) प्रयोग है। जिस प्रयोग बल से देश, कुटुम्ब, जाति या समाज में परस्पर विद्वेष-फूट-कलह - होनें लगे, उसे (विद्वेषण) कहते हैं। आततायी, अन्यायियों को आत्मशक्ति पूर्वक जिस मन्त्र प्रयोग द्वारा साधक प्राण दण्ड दे सके, उस प्रयोग का नाम मारण है। जिस प्रयोग के करनें से महामारी, राजभय, परचक्र आदि भय, रोग और विप्लवों की शान्ति हो जाय, उसे (शान्तिक) प्रयोग कहते हैं। वैद्यक शास्त्र में भी लिखा है, कि बिना औषध के मन्त्र प्रयोग करके रोगों को हटानें वाले जो वैद्य हैं। वे चारो प्रकार के वैद्यों में श्रेष्ठ और (सिद्ध वैद्य) कहलाते हैं। जिस प्रयोग के करनें से ऐश्वर्य बढ़े, सुख-प्राप्ति हो, देव दर्शन हो, शुभाशुभ

भविष्य प्रतीत हो, सब कामनायें सिद्ध हों, उसे (पौष्टिक) प्रयोग कहते हैं।
जिस प्रयोग के करने से वन्ध्या को भी पुत्र का लाभ हो जाय, वंश की वृद्धि
हो, उसे (सान्तानिक) प्रयोग कहते हैं। मृत-वत्सा रोग आदि का उपाय इसी
प्रयोग में है। इनमें मोहन, उच्चाटन, जृम्भण, विद्वेषण और मारण-तामसी
प्रयोग हैं, इन्हें श्रेय साधक को कभी नहीं करना चाहिये।
मन्त्र विद्या जैसी उपयोगी विद्या का पूर्ण ज्ञाता आज दृष्टिगत क्यों नहीं होता।
भारतीय सम्प्रदायों में जितने सम्प्रदाय हैं, उन सब में धर्म गुरु द्वारा मन्त्र
दीक्षा लेने की प्रणाली अभी तक मौजूद है, पर उन धर्म गुरुओं में और
उनके दिये हुये मन्त्रों में (कर्तुम कर्तुमन्यथाकर्तु) की सामर्थ्य नहीं है। बात
यह है, कि मन्त्रदाता गुरु और मन्त्र दीक्षा लेने वाला शिष्य कैसे होने चाहिये।
साधना किस प्रकार करनी चाहिये, आदि बातों को समझ कर दीक्षा आदि
होने से उसमें शक्ति आती है, केवल बाहरी दिखावे से कुछ नहीं होता,
अर्थात् गुरु अपने हित का विचार कर, शिष्य के हित को भी जान कर
निःस्पृह भाव से मन्त्र दान करे, किन्तु काञ्चन आदि के लोभ से न करे।
अर्थात जो चतुर, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, शान्त, अक्रोधी, सत्यवादी,
निर्लोभी, कपट, अहंकार और अभिमान से रहित, दयायुक्त, पर स्त्री त्यागी
जितेन्द्रिय और गुरु का भक्त हो, वही मन्त्र लेने योग्य शिष्य हो सकता
है, इस प्रकार और भी कई महत्वपूर्ण बातें हैं, जिनकी उपेक्षा से आज
मन्त्रशास्त्र की अवनति हो रही है। तन्त्र ग्रन्थों के कर्ता मान्त्रिकों ने

शिव जी से इस शास्त्र की उत्पत्ति बतलायी है। पर कल्प ग्रन्थों के कर्ता मान्त्रिकों ने (पूर्वधरों) से इसका विकास हुआ माना और इस विद्या का अधिकारी (त्यागी वर्ग) को ही कहा गया है। मन्त्र शास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत हैं, तथापि यह निर्विवाद सिद्ध है, कि भारत की उन्नति के पूर्ण विकास के समय यह विद्या प्रचलित थी। फिर बाद को यह विद्याधर आदि कुलो में भी पहुँची, तदानन्तर इसके अनेक रूपान्तर हुये और आज तो यह छिन्न-भिन्न दशा में बहुत ही कम अवशिष्ट रह गयी है। आज मान्त्रिक कहलानें वाले मन्त्राधिष्ठायक देवता के दास बन कर पूजा स्तुति भक्ति करते हैं, और देवता को प्रसन्न करना चाहते हैं, (वरं आज तो ऐसे लोग अधिक बढ़ रहे हैं, जो या तो मन्त्र शास्त्र पर बिश्वास ही नहीं करते, या अपनें को मन्त्रशास्त्र का ज्ञाता बता कर भोले श्रद्धालु नर-नारियों का तन-धन अपहरण करते हैं) पर त्यागी वर्ग ऐसा नहीं करता था। त्यागी मन्त्राक्षरों को जपते थे अवश्य, परन्तु मन्त्राक्षरों के सभी वर्णों को लोम-विलोम सन्निपात करके वे स्वयं मन्त्र रूप हो जाते थे, और तब उनकी तपश्चर्या तथा एकाग्रता से, आत्मिक रूप प्रगट हो जानें से, मन्त्राधिष्ठायक देवता स्वयं आकर उनकी सेवा-भक्ति करनें लग जाता था, और उनके अधीन बना रहता था, जिस कार्य के लिये उनकी इच्छा देखता था, वह कार्य उनके बिना कहे ही देवता स्वयं करनें लग जाता था, इसमें वह अपना सौभाग्य समझता था। कि आज मैं एक महात्मा की सेवा कर कृतकृत्य हुआ, यह विषय अत्यन्त उच्चकोटि का है

ऐसे महात्मा के लिये लिखा भी है, कि (देवाऽपि तं नमस्यन्ति यस्य धर्मः सहायकः।) इसी प्रकार तन्त्रों में भी लिखा है। देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः। ते मन्त्रा ब्राम्हणाधीनास्तस्माद् ब्राम्हणदेवताः।। इसका मतलब भी यही है, कि मन्त्र के आधीन मन्त्राधिष्ठायक देवता है, और वे मन्त्र ब्रम्ह ज्ञानी, आत्मज्ञानी, महापुरुषों के आधीन हैं। इसी लिये आत्मज्ञानी महापुरुष स्वयमेव साक्षात देव स्वरूप है। उसको दूसरे देवता की उपासना करनें का कोई प्रयोजन ही नहीं रहता, उपर्युक्त श्लोकों में जो (ब्राम्हण) शब्द आया है, वह हमारी धारणा में जातिवाचक नहीं है, गुण वाचक है। इसीलिये यहाँ (ब्राम्हण) शब्द का आत्मविद् अर्थ करनें से ही अर्थ की संगति लगती है, अतएव मन्त्र वही सिद्ध कर सकता है, जो अध्यात्म विद्या का ज्ञाता होता है, काश्मीर सम्प्रदाय के मान्त्रिक सरस्वती के उपासक होते हैं, (मुखे प्रसरणं यस्याः सा सरस्वती) यह (सरस्वती) शब्द की व्युत्पत्ति है, अर्हन्मुख पद्म में वास करनें वाली यानी भगवद्-वाणी का नाम ही सरस्वती है, यह सात्विक उपासना है, यह सिद्धि और मुक्ति की दाता है, राजस और तामस उपासना करनें से लौकिक कार्य हो भी जायँ, तो भी परलोक सिद्धि नहीं होती, इसी लिये ऐसी उपासनायें हेय तथा त्याज्य हैं, परन्तु कलि काल की महिमा अगम और अपार है, भारतीय सम्प्रदायों के आचार्यों नें भी मोह में फँस कर ऐसी उपासना करनीं प्रारम्भ कर दी

थीं। सर्व संगपरित्यागी संन्यासियों के आचार्यगण भी माया देवी की पूजा करने लग गये हैं। भारतीय जनता में मन्त्रशास्त्र का सच्चा स्वरूप जाननें वाले लोग बहुत ही घट गये हैं। और ऐहिक कामनाओं के अभिलाषी वर्ग की वृद्धि हो गयी है, मान्त्रिक स्वयं मन्त्र स्वरूप बन कर देवताओं को अपना आज्ञाकारि बनाना भूल गये हैं, और स्वयं आज्ञाकारी बन बैठे हैं, वरं आज तो दम्भियों और अश्रद्धालुओं की ही संख्या बढ़ी हुई है, यह दुर्भाग्य है।

जप माला

लेखक :- पं० श्री गोविन्द प्रसाद जी चतुर्वेदी, शास्त्री, धर्माधिकारी।

उपासना के क्षेत्र में जप का बड़ा महात्व है, श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने स्वयं श्रीमुख से कहा है। (यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि) (१०।२५) (यज्ञों में मैं जप यज्ञ हूँ) अतः स्पष्ट है, कि जप के द्वारा इहलौकिक सुख एवं पारलौकिक सद्गति की प्राप्ति ही नहीं, भगवत्प्राप्ति तक हो जाती है। व्याकरण के अनुसार (जप) धातु के (जप व्यक्तायाँ वाचि) तथा (जप मानसे च) दो अर्थ हैं, अर्थात स्पष्ट बोलना और मन से कहना जप कहलाता है, परन्तु उपासना ग्रन्थों में (जप मानसे) का महत्व विशेष बताया गया है। अर्थात विधि यज्ञ से (पूर्णिमा, अमावास्या आदि पर किये गये उत्तम यज्ञ - यागादि से) जप यज्ञ दशगुणा, उपांशु (जिस जप को कोई सुन न सके) सौ गुणा) एवं मानस जप हजार गुणा) पुण्यप्रद है, परन्तु इस विशेष पुण्य की प्राप्ति तभी होगी, जब जप विधिवत हो। इसके लिये कुछ नियम हैं, और उनके पालन न होने पर जप की सिद्धि नहीं होती, जप सिद्धि हेतु निम्न लिखित नियम आवश्यक हैं। जिनमें सर्व प्रथम (शिखा-बन्धन) कहा गया है। अर्थात (द्विजमात्र को) सदा जनेऊ पहनना चाहिये, तथा सदा ही (धार्मिक कार्यों में) शिखा में ग्रन्थि लगाये रहना चाहिये, इनके बिना जो कार्य किया जाता है वह सफल नहीं होता, अतः स्नान करके जप के पूर्व शिखा में गाँठ लगावें, शिखा के साथ ही आसन का भी जप में बड़ा महात्व है। बिना

आसन के जप नहीं करना चाहिये, और दूसरे के बैठनें के आसन पर भी बैठ कर जप नहीं करना चाहिये, (भूमि पर बैठ कर जप करनें से दुख) बाँस के आसन पर दरिद्रता) पत्थर पर बैठ कर जप करनें से व्याधि) छिद्र युक्त काष्ठ पर दुर्भाग्य) तृण पर धन एवं यश का नाश) तथा पत्तों पर बैठ कर जप करनें से चित में भ्रम होता है) (ब्रम्हाण्ड पुराण के) निम्नांकित वचन के अनुसार काम्य कर्म में कम्बल का आसन) और वह भी लाल हो तो श्रेष्ठ है) तथा कुशासन पर बैठ कर जप करनें से अवश्य सिद्धि की प्राप्ति होती है) इस प्रकार जिस निमित्त से जप किया जाय, उसके अनुसार उपयुक्त आसन पर बैठ कर पूर्व) या उत्तर) की ओर मुख करके जप करना चाहिये, उड्डीश तन्त्र में इसका भी नियम है। अर्थात (वशीकरण में पूर्व मुख) (धन प्राप्ति हेतु प्रयोग में पश्चिम को मुख) आयुरक्षार्थ शान्ति एवं पुष्टिकर्म में उत्तर) को मुख करके जप करे, जप करते समय पैर फैला कर बैठना) बीच-बीच में बातें करते-करते जप करना, नख काटना, रस्सी, तिनका या डोरा तोड़ना, शरीर कँपाना, बालों को बाँधना आदि कार्य निषिद्ध हैं (ऐसा भारद्वाज स्मृति) 1। 2। 8 में लिखा है,) उपयुक्त नियमों का पालन करते हुये, जप की संख्या (गिनती) रखते हुये जप करना चाहिये, इसके लिये माला आवश्यक है। अंगिरा-स्मृति में लिखा है। अर्थात बिना कुश के धर्म कार्य, बिना जल के दिया गया दान तथा संख्या हीन जप निष्फल हो जाता है। संख्या (गिनती) के लिये माला आवश्यक है। अतः माला से जप करना।

चाहिये, चाहे वह मणियों की हो, रुद्राक्ष की हो, या कर माला ही क्यों न हो। मणियों (गुरियों) की मालाओं में रुद्राक्ष माला का बड़ा महात्व है। इसके सम्बन्ध में (उड्डीश तन्त्र) में लिखा है रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करनें से सब फलों की प्राप्ति हो जाती हैं, शिव रहस्य के अनुसार रुद्राक्ष 1 से लेकर 14 मुख वाला तक होता है, जो इस श्लोक के अनुसार उत्तरोत्तर अधिकाधिक फल दायक है, रुद्राक्ष की माला के विषय में कहा गया है। रुद्राक्ष की माला 108 दानों की 54 दानों की अथवा 27 दानों की हो तो श्रेष्ठ है, इससे हीन अधम कही गई है। यद्यपि जप के लिये रुद्राक्ष माला श्रेष्ठ कही गयी है, तथापि कामना विशेष की सिद्धि के लिये कुछ विशेष वस्तुओं की मालायें भी उत्तम कही गई हैं, जैसे विद्या प्राप्त या सिद्धि के लिये किया जानें वाला जप स्फटिक या मोतियों की माला से सद्यः सिद्धि प्रद है, आकर्षण में मदमाते हाथी के दाँत की माला सिद्धि दायक है। कमलगट्टों की माला भी सब कार्यों में सिद्धि दायक है। वैष्णवों के लिये तुलसी की माला बड़ी ही उत्तम कही गई है। तथा जप में कुश ग्रन्थी की माला भी श्रेष्ठ मानीं गयी है, माला के प्रत्येक मणि के बीच में ग्रन्थि होनीं चाहिये, शान्ति तथा पुष्टि के लिये जप में अंगुठे के अग्रभाग से माला का चालन करना चाहिये, एक सौ आठ दानों से अधिक माला के जप में सुमेरु का उल्लंघन नहीं करना चाहिये, तथा माला को गोमुखी में डाल कर अथवा कपड़े से ही ढक कर जपना चाहिये, यदि माला उपलब्ध न

हो, तो कर माला से भी जप किया जाता है। इस जप में अनामिका के बीच के पोरवा से अनुक्रम से अनामिका के नीचे के पोरवा से तर्जनी के मूल के पोरवा तक दस. संख्या मानी गयी है, और करमाला में मध्यमा के बीच एवं मूल के पोरवा को सुमेरु माना गया है, अतः दूसरी बार जपते समय अँगूठे को उसके नीचे से ले जाते हैं, प्रातः काल जप करते समय हथेली सीधी रख कर, अँगुलियाँ ऊपर की ओर करके, मध्याह्न में हृदय के समीप हाथ टेढ़ा करके तथा सांयकाल हाथ को उलटा करके जप करना चाहिये, प्रातः काल में नाभि, मध्याह्न में हृदय और संध्या काल में नासिका के समीप हाथ रख कर जप करना चाहिये। जप का फल घर में बैठ कर करने से एक गुणा) गायों के पास जपने से सौ गुणा) उद्यान, वन या तीर्थ में हजार गुणा) पर्वत पर दस हजार गुणा) नदीतट पर लक्ष गुणा) देवालय में कोटि गुणा) तथा शिव के समीप में अनन्त गुणा फल प्रद होता है) इन सब नियमों के साथ संकल्प करके तथा न्यास-ध्यान के साथ जपारम्भ करना चाहिये, और अन्त में भी न्यासादि करके आसन के नीचे जल छोड़ कर मृत्तिका सहित उस जल को मस्तक से लगाना चाहिये, अन्यथा जप के फलों को इन्द्र ले लेते हैं। इस प्रकार उपयुक्त विधि से किये गये जप से निश्चित सिद्धि होती है, परन्तु सिद्धि के लिये यह भी अत्यावश्यक है, कि मन्त्र गुरु के द्वारा दिया गया हो, क्योंकि शिव जी का वचन है, अर्थात पुस्तक में लिखी विद्या मनुष्यों को सिद्धि नहीं देती, तन्त्रशास्त्र में बिना गुरु के उपदेश के किसी प्रकार के कार्य का अधिकार नहीं है। अतः जब उपासना की इच्छा जाग्रत हो, तब किसी सद्गुरु

से विधिवत मन्त्र की दीक्षा लेकर जप करना चाहिये।

सेवापराध और नामापराध

सेवापराध :- =१= सवारी पर चढ़ कर अथवा पैरों में खड़ाऊँ पहन कर श्री भगवान के मन्दिर में जाना। =२= रथ यात्रा, जन्माष्टमी आदि उत्सवों का न करना या उनके दर्शन न करना =३= श्री मूर्ति के दर्शन करके प्रणाम न करना =४= अशौच अवस्था में दर्शन करना =५= एक हाथ से प्रणाम करना =६= परिक्रमा करते समय भगवान के सामने आकर कुछ न घूम कर फिर परिक्रमा करना अथवा केवल सामनें ही परिक्रमा करते रहना =७= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें पैर पसार कर बैठना =८= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें दोनों घुटनों को ऊँचा करके उनको हाथों से लपेट कर बैठ जाना। =९= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें सोना =१०= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें भोजन करना =११= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें झूठ बोलना। =१२= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें जोर से बोलना, =१३= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें आपस में बातचीत करना =१४= श्री भगवान् के श्री विग्रह के सामनें चिल्लाना =१५= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें कलह करना =१६= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें किसी को पीड़ा देना =१७= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें किसी पर अनुग्रह करना =१८= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें किसी को निष्ठुर बचन बोलना =१९= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें कम्बल से सारा शरीर ढक लेना =२०= श्री भगवान के

श्री विग्रह के सामने दूसरे की निन्दा करना =२१= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें
दूसरे की स्तुति करना =२२= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें अश्लील शब्द बोलना
=२३= श्री भगवान के श्री विग्रह के सामनें अधोवायु का त्याग करना =२४= श्री
भगवान के श्री विग्रह के सामनें दूसरे किसी को भी प्रणाम करना =२५= शक्ती
रहते हुये भी गौण अर्थात सामान्य उपचारों से भगवान की सेवा पूजा करना =२६=
श्री भगवान को निवेदन किये बिना किसी भी वस्तु का खाना पीना =२७= जिस
ऋतु में जो फल हो, उसे सबसे पहले श्री भगवान को न चढ़ाना =२८= किसी
शाक या फलादि के अगले भाग को तोड़ कर भगवान के व्यञ्जनादि के लिये
देना =२९= श्री भगवान के श्री विग्रह को पीठ देकर बैठना =३०= गुरुदेव की
अभ्यर्थना, कुशल प्रश्न और उनका स्तवन न करना =३१= अपनें मुख से
अपनीं प्रसंशा करना =३२= किसी भी देवता की निन्दा करना ॥[illegible]= श्री वाराह
पुराण में ३२ सेवापराधों का वर्णन नीचे लिखे अनुसार किया गया है।
१= राजा के अन्न का भक्षण करना =२= अँधेरे में श्री विग्रह का स्पर्श करना =
३= नियमों को न मान कर श्री विग्रह का स्पर्श करना =४= बाजा या ताली बजाये
बिना ही मन्दिर के द्वार को खोलना =५= अभक्ष्य वस्तुयें निवेदन करना =६=
पादुका सहित भगवान के मन्दिर में जाना =७= कुत्ते की जूठन का स्पर्श करना
=८= पूजा करते समय बोलना =९= पूजा करते समय मल त्याग के लिये जाना =
१०= श्राद्धादि किये बिना नया अन्न खाना =११= गन्ध और पुष्प चढ़ाने के पहले
धूप देना =१२= निषिद्ध पुष्पों से भगवान की पूजा करना =१३= दँतुवन किये

ना श्री विग्रह की पूजा या उनका स्पर्श करना =१४= स्त्री सम्भोग करके
भगवान के श्री विग्रह की पूजा या उनका स्पर्श करना =१५= रजस्वला स्त्री का
स्पर्श करके श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =१६= दीप का स्पर्श
करके श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =१७= मुर्दे का स्पर्श कर
के भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =१८= लाल वस्त्र पहन कर श्री
भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =१९= नीला वस्त्र पहन कर श्री
भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२०= बिना धोया वस्त्र पहन
कर श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२१= दूसरे का वस्त्र पहन
कर श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२२= मैला वस्त्र पहन
कर श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२३= शव को देख कर
श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२४= अधोवायु का त्याग कर
के श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२५= क्रोध करके श्री भगवान
की पूजा या उनका स्पर्श करना =२६= श्मशान में जाकर श्री भगवान की पूजा
या उनका स्पर्श करना =२७= खाया हुआ अन्न पचने से पहले खाकर श्री
भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२८= पशुओं का मांस खाकर
श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =२९= पक्षियों का मांस
खाकर श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =३०= गाँजा आदि
मादक द्रव्यों का सेवन करके श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =
३१= कुसुंब साग खाकर श्री भगवान की पूजा या उनका स्पर्श करना =

=२२= शरीर में तेल मल कर भगवान के श्री विग्रह की पूजा या उनका स्पर्श करना। गंगा स्नान करनें से, यमुना स्नान करनें से, भगवान की सेवा करनें से, प्रति दिन गीता का पाठ करनें से, तुलसी के द्वारा श्री शालग्राम जी की पूजा करनें से, द्वादशी के दिन जागरण करके तुलसी का स्तवन करनें से, भगवान की पूजा करनें से और भगवान के नाम का आश्रय लेकर नाम कीर्तन करने से सेवापराध छूट जाते हैं, भगवान के नाम से सारे अपराधों की क्षमा हो जाती है। श्री भगवान स्वयं कहते हैं, इस संसार में जो पुरुष श्रद्धापूर्वक मेरे नामों का कीर्तन करता है मैं उसके करोड़ों अपराधों को क्षमा कर देता हूँ, इसमें कोई संदेह नहीं है।

नामापराध—: =१= सत्पुरुषों की निन्दा करना =२= शिव और विष्णु के नामों में ऊँच, नीच की कल्पना करना =३= गुरु का अपमान करना =४= वेदादि शास्त्रों की निन्दा करना =५= भगवान के नाम की जो इतनी महिमा कही गई है, यह केवल स्तुति मात्र है, असल में इतनी महिमा नहीं है, इस प्रकार भगवान के नाम में अर्थवाद की कल्पना करना =६= भगवान के नाम से पापों का नाश होता ही है, पाप करके नाम लेनें से पाप नष्ट हो ही जायेंगें, पाप हमारा क्या कर सकते हैं? इस प्रकार भगवान के नाम का आश्रय लेकर नाम के बल पर पाप करना =७= यज्ञ, तप, दान, व्रत आदि शुभ कर्मों को नाम के समान [illegible] मानना =८= श्रद्धा रहित और सुनना न चाहनें वाले व्यक्ति को उपदेश करना =९= नाम की महिमा सुन कर भी नाम में प्रीति न करना और =१०= मैं और मेरे के फेर में पड़कर विषय भोगों में आसक्त होना, इन दस नामापराधों

से भी छुटकारा नाम के जप कीर्तन से ही मिलता है। नामापराध युक्त पुरुषों का पाप नाम ही हरण करता है, और निरन्तर कीर्तन किये जाने पर वह सारे मनोरथों को पूरा करता है।

श्री राममन्त्रोपासना की एक विशेष विधि :-

लेखक :- पं० श्री रमणलाल कृष्णराम शास्त्री भागवत भूषण, साहित्य रत्न ॥

मन्त्र स्वरूप :- रां रामाय नमः। यह छः अक्षर का मन्त्र है।

विनियोग :- अस्य श्री षडक्षर श्री राममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री रामो देवता, रां बीजम्, नमः शक्तिः, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः। इसे पढ़ कर भूमि पर जल छोड़ दे।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि। इसे पढ़ कर दाहिने हाथ की अँगुलियों से सिर का स्पर्श करे। ॐ गायत्री छन्दसे नमः, मुखे। इसे पढ़ कर दाहिने हाथ की अँगुलियों से मुख का स्पर्श करे। ॐ श्री राम देवतायै नमः, हृदि। इसे पढ़ कर दाहिने हाथ की अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करे। ॐ श्री रां बीजाय नमः, गुह्ये। इसे पढ़ कर दाहिने हाथ की अँगुलियों से गुदा का स्पर्श करे (हाथ धो ले)। ॐ नमः शक्तये नमः, पादयोः। इसे पढ़ कर दाहिने हाथ की अँगुलियों से पैरों का स्पर्श करे। ॐ विनियोगाय नमः, सर्वांगे। इसे पढ़ कर सिर से लेकर पैरों तक के सारे अंगों का स्पर्श करे।

करन्यास :- ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श करे। ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः। दोनों अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श करे। ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। दोनों अँगूठों से दोनों मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श करे। ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अँगूठों से दोनों अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करे। ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों अँगूठों से दोनों कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श करे। ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथों की हथेलियों एवं उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे।

हृदयादिन्यास :- ॐ रां हृदयाय नमः। दाहिने हाथ की अँगुलियों से हृदय का स्पर्श। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। दाहिने हाथ की अँगुलियों से सिर का स्पर्श। ॐ रूं शिखायै वषट्। दाहिने हाथ की अँगुलियों से शिखा का स्पर्श। ॐ रैं कवचाय हुम्। दाहिने हाथ की अँगुलियों से बायें कंधे का स्पर्श, बायें हाथ की अँगुलियों से दाहिनें कन्धे का स्पर्श। ॐ रौं नेत्रत्याय वौषट्। दाहिनें हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों एवं ललाट के मध्य भाग का स्पर्श। ॐ रः अस्त्राय फट्। इसे पढ़ कर दाहिनें हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजा दे।

मन्त्रावर्णन्यास :- ॐ रां नमः ब्रह्मरन्ध्रे। कपाल का स्पर्श करे। ॐ रां नमः भ्रुवोर्मध्ये। दोनों भौंहों के बीच का स्पर्श करे। ॐ मां नमः हृदि। हृदय का स्पर्श। ॐ यं नमः नाभौ। नाभि का स्पर्श। ॐ नं नमः लिंगे। लिंग का स्प. (हाथ धोले)

ॐ यं नमः पादयोः। पैरों का स्पर्श। इस प्रकार मन्त्राक्षर न्यास करके भगवान राघवेन्द्र श्रीराम एवं भगवती सीता जी का ध्यान करे।
बांये कर कमल को घुटने पर रख कर दाहिने से ज्ञानमयी मुद्रा धारण किये, अविरत वीरासन से विराजमान, श्यामल बादल के समान मंजुल कान्ति, मुकुट अंगद आदि विविध वेश भूषा विभूषित, देदीप्यमान, दिव्यांगधारी भगवान राघवेन्द्र श्रीराम एवं उनके पार्श्व में समासीन हो निर्निमेष नेत्र से उन्हीं को निहारती हुई, बिजली के समान द्युतिवाली, कर कमल धारिणी, धरानन्दिनी भगवती श्री सीता का हम भजन करते हैं।
इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में (ॐ मं मण्डूकादिपरतत्वा-न्तपीठदेवताभ्यो नमः) इस मन्त्र से पीठ देवताओं की पूजा कर नौ पीठ शक्तियों की पूजा करे।
पूर्वादि दिक्-क्रम से जैसे — ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगायै नमः। ॐ प्रह्वयै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानायै नमः। मध्य में ॐ अनुग्रहायै नमः।
इस तरह पीठ शक्तियों की पूजा कर (स्वर्ण आदि निर्मित यन्त्र या मूर्ति को अग्नि पर चढ़ा कर पुनः उतार कर (ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोग पद्मपीठात्मने नमः) इस मन्त्र से पुष्प आदि आसन देकर पीठ के मध्य भाग में संस्थापित करे, फिर प्राण प्रतिष्ठा करके ध्यान आवाहन आदि पुष्पांजलि पर्यन्त सर्वोपचार

से पूजन कर आवरण पूजा के लिये, अनुज्ञा प्राप्त कर आवरणपूजा प्रारम्भ करे। अंजलि में पुष्प लेकर इसे पढ़े। (ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय अनुज्ञां देहि मे राम परिवारार्चनायते ॥) यह पढ़ कर पुष्पांजलि चढ़ा दे, और अनुज्ञा प्राप्त कर आवरण पूजा प्रारम्भ करे।

प्रथमावरण पूजन ÷ देव के वाम भाग में —१= सीतायै नमः। सीता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =२= अग्नि कोण में - शार्ङ्गाय नमः। शार्ङ्ग श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३= दक्षिण भाग में - शराय नमः। शर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =४= वाम भाग में - चापाय नमः। चाप श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =●= ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणा पूजन ÷ षट्कोण केसरों में - =५= अग्नि कोण में - ॐ रां हृदयाय नमः। =६= नैर्ऋत्य कोण में - ॐ रीं शिर से स्वाहा। =6= वायव्य कोण में - ॐ रूं शिखायै वषट्। =८= ऐशान्य कोण में - ॐ रैं कवचाय हुम्। =९= पूज्य-पूजक के मध्य में - ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। =१०= देव पश्चिम भाग में - ॐ रः अस्त्राय फट्। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

तृतीयावरणा पूजन ÷ षट्कोण केसरों से बाहर अष्टदल में पूज्य-पूजक के मध्य पूर्व दिशा की कल्पना कर पूर्वादि दिक्-क्रम से —=११= ॐ हनुमते नमः। हनुमच्छ्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

=१२= ॐ सुग्रीवाय नमः। सुग्रीव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
=१३= ॐ भरताय नमः। भरत श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=१४= ॐ
विभीषणाय नमः। विभीषण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=१५= ॐ लक्ष्मणाय
नमः। लक्ष्मण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=१६= ॐ अंगदाय नमः। अंगद
श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=१७= ॐ शत्रुघ्नाय नमः। शत्रुघ्न श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः।=१८= ॐ जाम्बवते नमः। जाम्बवत श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

चतुर्थावरणपूजन अष्टदल के आगे ÷ =१९= धृष्टये नमः। धृष्टि श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः।=२०= ॐ जयन्ताय नमः। जयन्त श्री पादुकां पूज
यामि तर्पयामि नमः।=२१= ॐ विजयाय नमः। विजय श्री पादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।=२२= ॐ सुराष्ट्राय नमः। सुराष्ट्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।=२३= ॐ राष्ट्रवर्धनाय नमः। राष्ट्रवर्धन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
=२४= ॐ अकोपाय नमः। अकोप श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=२५= ॐ
धर्मपालाय नमः। धर्मपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।=२६= ॐ
सुमन्ताय नमः। सुमन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अभीष्टसिद्धिं
मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

पंचमावरण पूजन ÷ भूपुर यन्त्र प्रवेश द्वार में पूर्वादि दिक्-क्रम से-
=२७= ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

=२८= ॐ रं अग्नये नमः। अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =२९= ॐ मं यमाय नमः। यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३०= ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३१= ॐ वं वरुणाय नमः। वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३२= ॐ यं वायवे नमः। वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३३= ॐ कुं कुबेराय नमः। कुबेर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। =३४= ॐ हं ईशानाय नमः। ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इन्द्र ईशान के मध्य में — =३५= ॐ आं ब्रम्हणे नमः। ब्रम्ह श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वरुण निर्ऋति के मध्य में — =३६= ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्॥

षष्ठावरण पूजन ÷ यन्त्र प्रवेश द्वार से बाहर पूर्वादि दिक्-क्रम से — =३७= ॐ वं वज्राय नमः। =३८= ॐ शं शक्तये नमः। =३९= ॐ दं दण्डाय नमः। =४०= ॐ खं खड्गाय नमः। =४१= ॐ पं पाशाय नमः। =४२= ॐ अं अंकुशाय नमः। =४३= ॐ गं गदाये नमः। =४४= ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। =४५= ॐ पं पद्माय नमः। =४६= ॐ चं चक्राय नमः। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणपूजनम्॥ इस तरह आवरण पूजा कर निम्न लिखित प्रार्थना करे।

प्रार्थना

रामाय, राम भद्राय, रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय, नाथाय, सीतायाः पतये नमः॥ श्री राम, राम, रघुनन्दन, राम, राम, श्री राम, राम रणकर्कश राम, राम श्रीराम, राम शरणं भव राम, राम॥ श्री रामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि, श्री रामचन्द्र चरणौ वचसा गृणामि। श्री रामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि, श्री रामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये॥ मन्त्र का पुरश्चरण छः लाख मन्त्रों का जप एवं उन - उनके दशांश से होम, तर्पण, मार्जन, ब्राम्हण भोजन करना कराना है। इस विधि से मन्त्र सिद्ध होता है।

वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांश सरोरुहैः। जुहुयादर्चिते वह्नौ ब्राम्हणान् भोजयेत्ततः॥ एवं पूजादिभिः सिद्ध मन्त्रो कर्माणि साधयेत। जातीप्रसूनै जुहुयाच्चन्दनाम्भः समुक्षितैः ॥ राजवश्याय कमलैः धन धान्यादि सम्पदे। नीलोत्पलानां होमेन वशयेदखिलं जगत॥ बिल्वप्रमाणे जुहुयादिन्दिरावाप्तये नरः। दुर्वा होमेन दीर्घायु र्भवेन्मन्त्री निरामयः॥ मेधा कामेन होतव्यं पालाशकुसुमैर्नवैः। तज्जप्तमम्भः प्रपिबन् कविर्भवति वत्सरात्। तन्मन्त्रितान्नं भुञ्जीत महदारोग्यमाप्नुयात्॥

मन्त्राक्षर संख्या छ के बराबर अर्थात छः लाख मन्त्रों का जप, उसके दशांश छः हजार (अभाव में शतांश छः हजार) समर्चित एवं समिद्धतम वह्नि में कमल पुष्पों से हवन, तद्दशांश छ हजार तर्पण, तद्दशांश छ सौ मार्जन कर उसके दशांश साठ ब्राम्हणों को भोजन करावे, इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने पर कर्म साधना करे। राजा को वश में करना हो, तो,

चन्दन जल से तर चमेली पुष्पों से, धन धान्यादि सम्पत्ति की चाह हो तो कमलों से, अखिल विश्व-वशीकरण की इच्छा हो तो नीले कमलों से, लक्ष्मी प्राप्ति की कामना हो तो बिल्वों से, दीर्घायु एवं आरोग्य, लाभ अभिलाषा हो तो दुर्वादलों से, स्मृति शक्ति की अभिवृद्धि भावना हो तो, नवीन पालाश पुष्पों से हवन करे। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल निरन्तर एक वर्षतक पान करने से कवि बन जाता है। और अभिमन्त्रित अन्न भोजन करने से निरवच्छिन्न आरोग्य लाभ होता है।।

श्री कृष्ण मन्त्र :=१= **अष्टादशाक्षर मन्त्र** ÷ ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

=२= **दशाक्षर मन्त्र** ÷ ॐ क्लीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

=३= **गोपाल गायत्री** ÷ ॐ कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

श्री राधा मन्त्र ÷ १= ॐ ह्रीं श्री राधिकायै नमः। **श्री राधा गायत्री** ÷ २ = ॐ ह्रीं राधिकायै विद्महे गान्धर्विकायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्।।

कातर प्रार्थना

मन्त्रहीनं, क्रियाहीनं, भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव : परिपूर्णं तदस्तु मे।। यद्दत्तं भक्ति मात्रेण पत्रं, पुष्पं, फलं, जलम्। आवेदितं निवेद्यान्तं तद् गृहाणानुकम्पया।। त्राहि मां पापिनं घोरं धर्माचार विवर्जितम्। नमस्कारेण देवेश दुस्तराद्भवसागरात्।। दैन्यार्णवे निमग्नोऽस्मि मन्तुग्राव भरार्दितः दुष्टे कारुण्यपारीण मयि कृष्ण कृपां कुरु।। अज्ञानादथवा ज्ञानादशुभं

यन्मया कृतम्। क्षन्तुमर्हसि तत्सर्वं दास्येनैव गृहाण माम्॥
आधारोऽप्यपराधानाम विवेकहतोऽप्यहम् ।त्वत्कारुण्य प्रतीक्षोऽस्मि प्रसीद मयि माधव॥ युवतीनां यथा यूनि यूनांच युवती यथा। मनोऽभिरमते तद्वन्मनो मे रमतां त्वयि॥ नाथ योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्। तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि॥ या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनपायिनी। त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्नापसर्पतु॥ न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये। मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि॥

श्री

श्री हनुमान जी की उपासना के कुछ मन्त्र और संक्षिप्त अनुष्ठानविधि:

सनत्कुमार जी कहते हैं, विप्रवर, अब हनुमान् जी के मन्त्रों का वर्णन किया जाता है, जो समस्त अभीष्ट वस्तुओं को देने वाले हैं, और जिनकी आराधना करके मनुष्य हनुमान जी के ही समान आचरणवाले हो जाते हैं। (हौं ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह् स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः।) यह बारह अक्षरों वाला महा मन्त्रराज कहा गया है। इस मन्त्र के श्री रामचन्द्र जी ऋषि हैं, और जगती छन्द कहा गया है, इसके देवता हनुमान जी हैं, (ह्सौं) बीज है, (ह्स्फ्रें) शक्ति है, छः बीजों से षडंगन्यास करना चाहिये। मस्तक, ललाट, दोनों नेत्र, मुख, कण्ठ, दोनों बाहु, हृदय, कुक्षि, नाभि, लिंग, दोनों जानु, दोनों चरण, इनमें क्रमशः मन्त्र के बारह अक्षरों का न्यास करे, छः बीज और दो पद - इन आठों का क्रमशः मस्तक, ललाट, मुख, हृदय, नाभि, ऊरु, जंघा, और चरणों में न्यास करे, तदान्तर अंजनीनन्दन कपीश्वर हनुमान जी का इस प्रकार ध्यान करे। इस प्रकार ध्यान करके जितेन्द्रीय पुरुष बारह हजार मन्त्र जप करे, फिर दही, दूध और घी मिलाये हुये धान की दशांश आहुति दे, फिर वैष्णव पीठ पर मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके उसमें हनुमान जी का आवाहन स्थापन पूर्वक पाद्यादि उपचारों से पूजन करे, केसरों में हृदयादि अंगों की पूजा करके अष्टदल कमल के आठ दलों में हनुमान जी के निम्नांकित आठ नामों की पूजा करे। रामभक्त, महातेजा, कपिराज, महाबल, द्रोणाद्रिहारक, मेरुपीठार्चनकारक, दक्षिणाशाभास्कर तथा सर्व विघ्न विना-

रामभक्ताय नमः, महातेजसे नमः, कपिराजाय नमः, महाबलाय नमः, द्रोणाद्रिहारकाय नमः, मेरुपीठर्चनकारकाय नमः, दक्षिणाशाभास्कराय नमः, सर्वविघ्न विनाशकाय नमः,) इस प्रकार नामों की पूजा करके दलों के अग्रभाग में क्रमशः सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान्, नल, सुषेण, द्विविद तथा मैन्द की पूजा करे, ऐसा करनें से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जो मानव लगातार दस दिनों तक रात में नौ सौ मन्त्र जप करता है, उसके राजभय और शत्रुभय नष्ट हो जाते हैं। एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित किया हुआ जल विष का नाश करनें वाला होता है, भूत अपस्मार (मिरगी) और कृत्या (मारण आदि के प्रयोग) से ज्वर उत्पन्न हो तो उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म अथवा जल से क्रोध पूर्वक ज्वर ग्रस्त पुरुष पर प्रहार करे, ऐसा करनें पर वह मनुष्य तीन दिन में ज्वर से छूट जाता है। और सुख पाता है, हनुमान जी के उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित औषध या जल खा पीकर मनुष्य सब रोगों को मार भगाता है, और तत्क्षण सुखी हो जाता है। उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म को अपनें अंगों में लगा कर अथवा उससे अभिमन्त्रित जल को पीकर जो मन्त्रोपासक युद्ध के लिये जाता है, वह शस्त्रों के समुदाय से पीड़ित नहीं होता, किसी शस्त्र से कट कर घाव हुआ हो, या फोड़ा फूट कर बहता हो, लूता (मकरी) रोग फूटा हो तो तीन बार मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित किये हुये भस्म से उन पर स्पर्श कराते ही वे सभी घाव सूख

जाते हैं, इसमें संशय नहीं है। ईशान कोण में स्थित करंज नामक वृक्ष की जड़ को ले आकर उसके द्वारा हनुमान जी की अँगुठे बराबर प्रतिमा बनावे, फिर उसमें प्राण प्रतिष्ठा करके सिन्दूर आदि से उसकी पूजा करे, तत्पश्चात उस प्रतिमा का मुख घर की ओर करके मन्त्रोच्चारण पूर्वक उसे दरवाजे पर गाड़ दें, तो उससे ग्रह, अभिचार, रोग, अग्नि, विष, चोर तथा राजा आदि के उपद्रव कभी उस घर में नहीं आते, और वह घर दीर्घकाल तक प्रतिदिन धन, पुत्र आदि से अभ्युदय को प्राप्त होता रहता है। विशुद्ध अन्तःकरण वाला पुरुष अष्टमी या चतुर्दशी को मंगलवार या रविवार के दिन किसी तख्ते पर तैल युक्त उड़द के बेसन से हनुमान जी की सुन्दर तथा समस्त शुभ लक्षणों से सुशोभित एक प्रतिमा बनावे, वाम भाग में तेल का और दाहिने भाग में घी का दीपक जला कर रक्खे, फिर मन्त्रज्ञ पुरुष मूल मन्त्र से उक्त प्रतिमा में हनुमान जी का आवाहन करे, आवाहन के पश्चात प्राण प्रतिष्ठा करके उन्हें पाद्य, अर्घ्य आदि अर्पण करे। लालचन्दन, लाल फूल तथा सिन्दूर आदि से उनकी पूजा करे, धूप और दीप देकर नैवेद्य निवेदन करे, मन्त्रवेत्ता उपासक मूल मन्त्र से पूआ, भात, साग, मिठाई, बड़े, पकौड़ी आदि भोज्य पदार्थों को घृत सहित समर्पित करके फिर सत्ताईस पान के पत्तों को तीन तीन आवृत्ति मोड़कर उनके भीतर सुपारी आदि रख कर मुख शुद्धि के लिये मूल मन्त्र से ही अर्पण करे, मन्त्रज्ञ साधक इस प्रकार भली भाँति पूजा करके एक हजार मन्त्र का जप करे, तत्पश्चात विद्वान पुरुष कपू

की आरती करके नाना प्रकार से हनुमान जी की स्तुति करे, और अपना अभीष्ट मनोरथ उनसे निवेदन करके विधि पूर्वक उनका विसर्जन करे। इसके बाद नैवेद्य लगाये हुये अन्न द्वारा सात ब्राम्हणों को भोजन करावे, और चढ़ाये हुये पान के पत्ते उन्हीं को बाँट कर दे दे, विद्वान पुरुष अपनी शक्ती के अनुसार उन ब्राम्हणों को दक्षिणा देकर बिदा करे, तत्पश्चात इष्ट बन्धु जनों के साथ स्वयं भी मौन होकर भोजन करे, उस दिन पृथ्वी पर शयन और ब्रम्हचर्य का पालन करे। जो मानव इस प्रकार आराधना करता है, वह कपीश्वर हनुमान जी के प्रसाद से शीघ्र ही सम्पूर्ण कामनाओं को अवश्य प्राप्त कर लेता है) भूमि पर हनुमान जी का चित्र अंकित करे, और उनके अग्रभाग में मन्त्र का उल्लेख करे, साथ ही साध्य वस्तु या व्यक्ति का द्वितीयान्त नाम लिख कर उसके आगे (विमोचय) (विमोचय) लिखे, लिख कर उसे बांये हाथ से मिटा दे, उसके बाद फिर लिखे, इस प्रकार एक सौ आठ बार लिखकर उसे पुनः मिटाता है, ऐसा करने पर महान कारागार से वह शीघ्र मुक्त हो जाता है) ज्वर में दुर्वा, गुरुचि, दही, दुध अथवा घृत से होम करे, शूल रोग होने पर करंज या वातारि (एरंड) की समिधाओं को तेल में डुबो कर उनके द्वारा होम करे अथवा शेफालिका (हरसिंगार) की तैल सिक्त समिधाओं से प्रयत्न पूर्वक होम करना चाहिये, सौभाग्य सिद्धि के लिये चन्दन, कपूर, रोचना, इलायची और लवंग की आहुति दे। वस्त्र की प्राप्ति के

गये सुगन्धित पुष्पों से हवन करे, विभिन्न धान्यों की प्राप्ति के लिये उन्हीं धान्यों से होम करना चाहिये। धान्य के होम से धान्य प्राप्त होता है। और अन्न से अन्न की वृद्धि होती है, तिल, घी, दुध और मधु की आहुति देनें से गाय, भैंस की वृद्धि होती है, अधिक कहनें की क्या आवश्यकता है। विष और व्याधि के निवारण में, शान्ति कर्म में, भूत जनित भय और संकट में, युद्ध में, दैवी क्षति प्राप्त होनें पर, बन्धन से छूटनें में, और भटान वन में पड़ जानें आदि सभी में ये सिद्ध किया हुआ मन्त्र मनुष्यों को निश्चय ही कल्याण प्रदान करता है) द्वादशाक्षर मन्त्र में जो अन्तिम छः अक्षर (हनुमते नमः) हैं, इनको और आदि बीज (हौं) को छोड़ कर शेष बचे हुये पाँच बीजों को (ह्स्फ्रें ह् ख्फ्रें ह् स्त्रौं ह् स्ख्फ्रें ह् सौं) जो पंचाक्षर मन्त्र बनता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों को देनें वाला है। इसके श्री रामचन्द्र जी ऋषि, गायत्री छन्द और हनुमान देवता कहे गये हैं। सम्पूर्ण कामनाओं की प्राप्ति के लिये इसका विनियोग किया जाता है, इसके पाँच बीजों तथा सम्पूर्ण मन्त्र से षडंगन्यास करे (रामदूत) (लक्ष्मण प्राणदाता) अंजनीसुत, सीताशोकविनाशन तथा लंका प्रासाद भंजन ये पाँच नाम हैं। इनके पहले (हनुमत्) यह नाम और है, हनुमत् आदि पाँच नामों के आदि में पाँच बीज और अन्त में ङे विभक्ति लगायी जाती है। अन्तिम नाम के साथ उक्त पाँचों बीज जुड़ते हैं। यही षड़ंगन्यास के छः मन्त्र हैं। इनके ध्यान पूजन आदि कार्य पूर्वोक्त द्वादशाक्षर मन्त्र के समान ही हैं। यह ग्यारह अक्षरों का [illegible] (ॐ ऐं,

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं) मन्त्र सम्पूर्ण सिद्धियों
को देने वाला है। इसके भी ध्यान पूजन आदि सब कार्य पूर्ववत होते हैं।
इस मन्त्र की आराधना की जाय तो, यह समस्त अभीष्ट मनोरथों को दे
वाला है। (नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा) यह अठारह अक्षर
का मन्त्र है। इसके ईश्वर ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, पवनकुमार हनुमान
देवता, हं बीज और स्वाहा शक्ति है, ऐसा मनीषी पुरुषों का कथन है।
(आञ्जनेयाय नमः) का हृदय में (रुद्र मूर्तये नमः) का सिर में (वायुपुत्राय
नमः) का शिखा में (अग्निगर्भाय नमः) का कवच में (राम दूताय नमः)
का नेत्रों में (ब्रह्मास्त्राय नमः) का अस्त्रस्थान में न्यास करे। इस प्रकार
न्यास विधि कही गई है। यथा:— (ह्स्फ्रें हनुमते नमः, हृदयाय नमः।
ह्ख्फ्रें राम दूताय नमः, शिर से स्वाहा। ह्स्रौं लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः, शि
खाये वषट्। ह्स्ख्फ्रें अंजनीसुताय नमः, कवचाय हुम्। ह्सौं सीता
शोक विनाशाय नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्रौं ह्सौं ह्स्ख्फ्रें
लंकाप्रासाद भंजनाय नमः, अस्त्राय फट्।

-सर्वश्रेष्ठ उपासना - नामोपासना-

लेखक :- श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज -

अनादि काल से नामोपासना को ही सर्वोच्च स्थान दिया जाता आ रहा है। वास्तव में नामोपासना ही सच्ची ईश्वरोपासना है, वर्तमान काल में भी यह इतनी सर्वलोक प्रियता प्राप्त कर चुकी है, कि इसकी उपेक्षा करना असम्भव नहीं तो कठिन तो है ही, यह उपासना अत्यन्त ही प्रभावशाली, शक्तिशाली और उपयोगी है, इस उपासना के लिये दीक्षा - दक्षिणा और पुरश्चर्या की भी कोई आवश्यकता नहीं है। क्यों कि यह स्वतन्त्र सत्य साधना है, चैतन्य चरितामृत में भी इसकी पुष्टि इस प्रकार की गई है। (नो दीक्षां न च दीक्षां न च पुरश्चर्यां मनागीक्षते। मन्त्रोऽयं रसनास्पृशेव फलति श्री कृष्णनामात्मकः।) यदि कोई उपासक केवल नामोपासना का ही आश्रय पूर्ण रूपेण ले लेता है। तो उसकी सभी इच्छायें पूर्ण हो जायेंगी, वह कृतकृत्य हो जायेगा, और वह ईश्वर के राज्य में पहुँच जायेगा, जहाँ असीम आनन्द का स्रोत बह रहा है। नामोपासना में साधकों को एक सुविधा यह है, कि इसमें किसी विशेष नियम का पालन करना अनिवार्य नहीं है, जैसे सामगान करने में यदि छन्दोभंग दोष या व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ आ जायँ तो उल्टा परिणाम भोगना पड़ता है, वैसा नामगान में नहीं है। यहाँ तो (मरा-मरा) करने वाला उपासक भी ब्रह्म के समान हो जाता है, जैसे-तैसे शुद्ध या अशुद्ध नामोपासना करते चले जाना चाहिये, लाभ तो होगा ही। नामोपासक को नामापराधों से बचने के लिये सावधान रहने का

आदेश शास्त्रों में अवश्य है। इससे बचनें का प्रयत्न अवश्य ही करना चाहिये, परन्तु यदि बचना कठिन हो तो चिन्ता नहीं करनीं चाहिये, नाम जप ही नामापराध को दूर कर देगा। उपासना का अर्थ होता है, निकट रहना। उपास्य और उपासक एक हो जायँ यही सच्ची उपासना है। नाम जपते-जपते इतनें तल्लीन हो जायँ, कि अपनें तन, मन, धन की भी सुधि नहीं रहे। हमारे रोम-रोम से नाम जप होनें लगे। सोते जागते भी नामोच्चारण होता रहे। नाम ही सुनें और नाम ही बोलें। बस यही नामोपासना है। यदि आप सत्य की सिद्धि चाहते हैं, तो नामोपासना कीजिये। यदि आप कुविचारों से अपनें मन को मुक्त करना चाहते हैं, तो नामोपासना कीजिये। यदि आप दुरभिलाषाओं को दूर करना चाहते हैं, तो नामोपासना कीजिये। यदि आप अध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो नामोपासना कीजिये। यदि आप भगवान का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो नामोपासना कीजिये। बस नामोपासना ही कीजिये। जो कुछ मिलेगा, नामोपासना से ही मिलेगा। नामोपासना एक देशिक नहीं, सार्वभौम है। हिन्दू, मुसल्मान, ईसाई, और यहूदी सभी किसी न किसी रूप में नामोपासना का महत्व स्वीकार करते ही हैं। सभी साधनों से जितनें लाभ हो सकते हैं। वे केवल निरन्तर नामोपासना से ही सुलभ हैं, सन्त तुलसी भी स्वीकार करते हैं। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू। सभी प्रकार के पाप, ताप

संताप, अपराध और बन्धनों से मुक्त होने के लिये, नामोपासना से बढ़ कर अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है। नामोपासक के लक्षण बताते हुये श्री मद्गोस्वामी लिखते हैं। सकल कामना हीन जे, राम भगति रस लीन।
नाम सुपेम पियुष हृद, तिनहुँ किए मन मीन॥
मछली की उपमा भी कितनी अच्छी उपमा है मछली जल से प्रेम करती है, एकांगी प्रेम तो है ही, जल भले ही मछली की परवा नहीं करे, पर मछली तो जल के बिना क्षण भर भी जी नहीं सकती, इसी लिये मछली के प्रेम को सच्चा प्रेम कहा गया है।

मकर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह।
तुलसी एकहि मीन को है साँचिलो सनेह॥

मानस भर में दशरथ जी के प्रेम को ही (सत्य प्रेम) कहा गया है।

सत्य प्रेम नेहि राम पद।

क्यों नहीं? दशरथ जी नें मनु रूप में यही वरदान तो माँगा था।

मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना।
मम जीवन तिमि तुम्हहिं अधीना॥

मुसल्मान भक्त रहीम भी मछली की प्रशंसा करते-करते अघाते नहीं।

मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास।
रहिमन प्रीति सराहिये मुएहु प्रीति की आस॥
प्रीतम प्रीति न छाड़हीं होत न पन से हीन।
मुए पेड़हु उदर में जल चाहत है मीन॥

…पासक भी अपनें मन को मीन बना कर राम प्रेम पयोधि में डुबो …देवें तो कहना क्या है। बेड़ा पार हो जाय। विशेष कर इस कलि काल …ती और कोई साधना बनती ही नहीं, एक नामोपासना ही उपासक को …म प्रेम देनें में समर्थ है। आइये, हम आप भी नामोपासना का आश्रय …कर सारे विश्व को पाप, ताप और संताप से मुक्त कर दें।

माता की उपासना

लेखक — पं० श्री मूलनारायण जी मालवीय।

…यानादि द्वारा अपनें इष्ट देवता का चिन्तन, सेवा, पूजा, भजन, कीर्तन और …आराधना को ही 'उपासना' कहा जाता है। अधिकतर यह देखा गया है, कि …संसार में जो भी महापुरुष हुये हैं, वे सभी ईश्वर के उपासक थे, वास्तव में मनुष्य के लिये सुख और शान्ति प्राप्त करनें का सरल सिद्ध मार्ग केवल भगवान की उपासना ही है। परम हंस श्री राम कृष्ण जी का कहना है, कि ईश्वर के नाम और भजन के भाव अनन्त हैं। उनमें से जिस मनुष्य को जो नाम तथा भाव पसन्द है। वह उसीसे उसको पुकारता तथा उसका ध्यान करता है, और वह उसी से ईश्वर को पाता है। कुछ वर्षों की बात है। रात्रि के शान्त वातावरण में त्रिवेणी तट पर मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नें माता की उपासना के सम्बन्ध में अपनें विचार प्रगट किये थे। उसी के आधार पर कुछ लिखनें की चेष्टा करता हूँ। यद्यपि माता के अनेक नाम और रूप हैं, किन्तु महा लक्ष्मी, महा सरस्वती और महाकाली का ध्यान भक्त इस प्रकार से किया करते हैं। जगज्जननी त्रिगुण

मयी माता के राजसी रूप में महालक्ष्मी, सात्विकी रूप में महासरस्वती और तामसीरूप में महाकाली के दर्शन होते हैं, महालक्ष्मी सत्-रूपा, महासरस्वती चित्-रूपा और महाकाली आनन्द रूपा मानी गयी हैं। माता भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी भी हैं, इसी लिये श्री सुन्दरी देवी का भक्त है। उपासना हर दृष्टियों से लाभकारी सिद्ध हुई है, चाहे निष्काम हो या सकाम, दुखी द्रौपदी का कहना था, भारी विपत्ति पड़ने पर भगवान हरि का स्मरण करना चाहिये। शंकराचार्य जी महाराज माता की प्रार्थना इस प्रकार करते हैं, आपत्ति में मग्न रहने पर यदि आप का स्मरण किया जाता है, तो यह मेरी कोई शठता नहीं है, क्यों कि जब बालक भूखा और प्यासा होता है। उस समय वह माता का ही स्मरण करता है, उशना कवि बड़ी नम्रता से माता से कहते हैं। कि आधुनिक युग के संस्कृत के महान विद्वान काशी के पं० शिवकुमार शास्त्री नें माता अन्नपूर्णा के सामनें खड़े हो कर स्पष्ट शब्दों में प्रार्थना की, कि भले ही दूसरे देवता मेरी अवहेलना करें, किन्तु माता तू मेरी उपेक्षा न करना। महामना मालवीय जी की ईश्वर नाम पुस्तिका में आया है, कि घट-घट व्यापक उस परमात्मा की विमल भक्ति के साथ उपासना करनी चाहिये, विश्वरूप से माता की उपासना का उपदेश नीचे लिखी हुई इन पंक्तियों में इस प्रकार से होता है। (सर्वदेवमयी देवी सर्वदेवीमयं जगत। अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम्॥) ऐसे माता के सुन्दर स्वरूपों का ध्यान अनेक प्रकार से किया जाता है।

उनकी मंजुल मूर्ति के दर्शन कर हृदय आह्लादित हो उठता है, किन्तु
-1 समय हम शंकराचार्य जी की आनन्द लहरी(3) का यह श्लोक पद
माता की उपासना करते हैं, उस समय मन में अनिर्वचनी सुख का
भव होता है। माता दुर्गा जी का उपासक इस प्रकार से धारणा करता
कि सब मन्त्रों में (मातृका) मुलाक्षर रूप से रहनें वाली, शब्दों में अर्थ
प से रहनें वाली, ज्ञानों में चिन्मयातीता, शून्यों में शून्य साक्षिणी तथा
नसे परे और कुछ नहीं है, वही माँ दुर्गा है। ऐसी ही दुर्विज्ञेय, दुर्गम,
चार विनाशिनी, संसार सागर से तारनें वाली भगवती दुर्गा को मैं
भीतजन प्रणाम करता हूँ। मैं तो प्रातः नित्य प्रति नीचे लिखी हुई इस
विता का पाठ करता हूँ।

मातः भव्य भावना भर दे।
काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष हृदय से हर दे॥
चित चंचल चहुँ ओर फिरत है, चरण कमल में कर दे।
मुख से निकले मधुर बचन माँ, ऐसा सुन्दर स्वर दे॥
नित प्रति तेरी दया दृष्टि हो, यही एक अब वर दे।
मैया मेरी नत मस्तक हूँ, बरद हस्त सिर धर दे॥

नवग्रह उपासना

लेखक – पं० श्री मक्खन लाल जी मिश्र, ज्योतिषाचार्य।

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनी, राहु एवं केतु को नवग्रह कहते हैं, ज्योतिषशास्त्र के मतानुसार रवि-चन्द्रमा को नक्षत्रों का स्वामी, मंगल को पृथ्वीपुत्र, बुध को चन्द्रमा का पुत्र, बृहस्पति को देवगुरु, शुक्र को दैत्य गुरु, शनि को सूर्यपुत्र, एवं राहु-केतु को पृथ्वी का छायापुत्र माना गया है। भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है, जितना कि भगवान विष्णु, शिव तथा अन्य देवोपासना का, जन्म से लेकर उपनयन, विवाह आदि संस्कारों में नवग्रह पूजन का विशेष महत्व है। यज्ञानुष्ठान की क्रिया नवग्रह स्थापन के बिना अपूर्ण ही रहती है। क्योंकि यज्ञ रक्षा नवग्रहों द्वारा ही होती है। अतः रक्षा विधान के लिये शास्त्रीय आदेश है, कि गणेश, सरस्वती, क्षेत्रपाल की स्थापना के साथ-साथ नवग्रहों की भी स्थापना करनी चाहिये, और उन्हें पूजन करके प्रणाम करना चाहिये। [illegible] गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं [illegible] भक्त्या सरस्वतीम्।। स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् [illegible] धर्म सम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्। दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं [illegible] म। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।। जीवन का सम्[illegible] लाभ हानि और जय पराजय आदि विषय इन नवग्रहों [illegible]त होता है। इसका कारण २७ नक्षत्रों और बारह राशियों [illegible]

मास की गणना
वैसाख से
योग की गणना
विशकुंभ से
ऋतु की गणना
बसन्त ऋतु से
वार की गणना
इतवार से
लगन की गणना
मेष से
तिथि की गणना
परीवा से किन्तु अंक
इसका सदैव १६ होगा।

=

र उनकी मंजुल मूर्ति के दर्शन कर हृदय आह्लादित हो उठता है, किन्तु
स समय हम शंकराचार्य जी की आनन्द लहरी(३) का यह श्लोक पढ़
र माता की उपासना करते हैं, उस समय मन में अनिर्वचनी सुख का
नुभव होता है। माता दुर्गा जी का उपासक इस प्रकार से धारणा करता
, कि सब मन्त्रों में (मातृका) मूलाक्षर रूप से रहनें वाली, शब्दों में अर्थ
प से रहनें वाली, ज्ञानों में चिन्मयातीता, शून्यों में शून्य साक्षिणी तथा
जनसे परे और कुछ नहीं है, वही माँ दुर्गा हैं। ऐसी ही दुर्विज्ञेय, दुर्गम,
राचार विनाशिनी, संसार सागर से तारनें वाली भगवती दुर्गा को मैं
व भीतजन प्रणाम करता हूँ। मैं तो प्रात: नित्य प्रति नीचे लिखी हुई इस
कविता का पाठ करता हूँ।

मात: भव्य भावना भर दे।
काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष हृदय से हर दे॥
चित चंचल चहुँ ओर फिरत है, चरण कमल में कर दे।
मुख से निकसे मधुर वचन माँ, ऐसा सुन्दर स्वर दे॥
नित प्रति तेरी दया दृष्टि हो, यही एक अब वर दे।
या मेरी नत मस्तक हूँ, वरद हस्त सिर धर दे॥

नवग्रह उपासना

लेखक – पं० श्री मक्खन लाल जी मिश्र, ज्योतिषाचार्य।

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनी, राहु एवं केतु को नवग्रह कहते हैं, ज्योतिषशास्त्र के मतानुसार रवि-चन्द्रमा को नक्षत्रों का स्वामी, मंगल को पृथ्वी पुत्र, बुध को चन्द्रमा का पुत्र, बृहस्पति को देवगुरु, शुक्र को दैत्य गुरु, शनि को सूर्यपुत्र, एवं राहु-केतु को पृथ्वी का छाया पुत्र माना गया है। भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है, जितना कि भगवान विष्णु, शिव तथा अन्य देवोपासना का, जन्म से लेकर उपनयन, विवाह आदि संस्कारो में नवग्रह पूजन का विशेष महत्व है। यज्ञानुष्ठान की क्रिया नवग्रह स्थापन के बिना अपूर्ण ही रहती है। क्यों की यज्ञ रक्षा नवग्रहों द्वारा ही होती है। अतः रक्षा विधान के लिये शास्त्रीय आदेश है, कि गणेश, सरस्वती, क्षेत्रपाल की स्थापना के साथ-साथ नवग्रहों की भी स्थापना करनी चाहिये, और उन्हे पूजन करके प्रणाम करना चाहिये। ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणीगर्भ सम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्। दैत्याचार्य नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥ जीवन का सम्पूर्ण सुख दुख, लाभ हानि और जय पराजय आदि विषय इन नवग्रहों पर आधारित होता है। इसका कारण २६ नक्षत्रों और बारह राशियों पर

ये ग्रह सतत भ्रमण करते रहते हैं, जिससे ऋतुएँ, वर्ष, मास और दिन रात बनते हैं।

भ्रमण कोष्ठक

नाम ग्रह	रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
भ्रमण समय १ राशि पर	१ मास	२¼ दिन	१½ मास	१ मास	१३ मास	१ मास	३० मास	१८ मास	१८ मास

इस प्रकार अपनी-अपनी गति के अनुरूप ये ग्रह मन्द अथवा तीव्र चाल से एक-एक राशि को पार करते रहते हैं, जब ये सप्त ग्रह सूर्य के समीप अंशों में एक ही राशि पर होते हैं, अस्त माने जाते हैं। इन राशियों के नाम =१= मेष =२= वृष =३= मिथुन =४= कर्क =५= सिंह =६= कन्या =७= तुला =८= वृश्चिक =९= धन =१०= मकर =११= कुम्भ और =१२= मीन हैं। नाम के अनुसार इन्हीं राशियों पर स्थित ग्रहों की चाल देखकर बताया जाता है कि अमुक व्यक्तियों के लिये अमुक समय अच्छा नहीं है। बारह राशियों हेतु नवग्रहों को इनका स्वामी चुना गया है। जैसे मेष वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष तुला का शुक्र, कन्या मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धन मीन का गुरु, और मकर कुम्भ का स्वामी शनी को माना गया है, मनुष्य की आयु एक सौ बीस

वर्ष मानी गयी है, जिसमें सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, राहु की १८ वर्ष, बृहस्पति की सोलह वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की सत्तरह वर्ष, केतु की सात वर्ष, और शुक्र की बीस वर्ष तक क्रमानुसार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती हैं। जब जन्म कुण्डली अथवा वर्षकुण्डली में कोई ग्रह खराब स्थान में बैठा हुआ अपना अच्छा असर नहीं करता, तब कहा जाता है, कि अमुक ग्रह खराब है, इसके लिये दान, पुण्य, आराधना कराओ। किस ग्रह की शान्ति के लिये क्या पाठ, जप, श्रवण करना है, किन वस्तुओं का दान करना चाहिये, तथा कौन सा रत्न धारण करना चाहिये। इसकी तालिका नीचे दी जा रही है।

ग्रह	आराधन	धारण	दान
सूर्य	हरिवंशपुराण श्रवण	माणिक्य नग	कमल लाल चन्दन गेहूँ, गाय, गुड़, ताँबा, सोना, लाल वस्त्र दान।
चन्द्रमा	शिवस्तुति	मोती	चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चाँदी, शंख, वंशपात्र गाय सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, ~~वृषभ~~, दधि, मोती बांस की पिटारी चावल भरके घड़ा जल भरके दान
मंगल	"	प्रवाल	ताँबा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, ~~पृथ्वी~~, लाल विद्रुम मूंगा तांबा
बुध	अमावास्या व्रत	पन्ना नग	काँसे का पात्र हाथीदाँत, हरा वस्त्र, मूँग, पन्ना, सुवर्ण, ~~दासी~~, कपूर शस्त्र, फल, षट् रस भोजन, घृत, सर्व पुष्प। नीलफूल
गुरु	"	पुखराज	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, [illegible], ~~सफेद चन्दन~~, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, ~~पुस्तक~~, मधु, लवण शर्करा, भूमि, छत्र।
शुक्र	गोपूजा	हीरा	चाँदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गन्ध द्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।
शनि	मृत्युंजय जप	नीलम नग	तिल, उरद, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण।
राहु	"	पिरोजा नग	अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्तधान्य उरद, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा, खड्ग।
केतु	"	लहसुनिया नग	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैदूर्य, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।

मंत्र दोनों भांति के लिखे हैं वैदिक तांत्रिक जिससे करना हो पूजन करे।

पूजनविधि— बाये हाथ में अक्षत ले दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र बोलकर अक्षत छोड़े।

① **सूर्य** (मण्डल के मध्य में लाल, गोलाकार)

मन्त्र— ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ (ऋग्० १।३५।२; यजु० ३३।४३) ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः ॥

बीजमन्त्र— ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (ॐ घृणिः सूर्याय नमः) वैदिकमंत्र

जप— ७०००, समय उदयकाल। कलियुग में चौगुना जपतब फलहोवे

② चन्द्रमा (अग्निकोण में श्वेत, अर्धचन्द्र)

मन्त्र— ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रममुष्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राम्हणानाꣳ राजा ॥ (यजु० ९।४०) ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। सोमाय नमः। (ॐ सों सोमाय नमः) वैदिक

बीजमन्त्र— ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रसे नमः।

जप— ११०००, संध्याकाल। चौगुना जपे

③ **मंगल** (दक्षिण में लाल, त्रिकोण)

मन्त्र— ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥ (ऋग्० ८।४४।१६; यजु० १३।१४) ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ। भौमाय नमः। (ॐ अं अंगारकाय नमः) वैदिक

बीज मन्त्र— ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (ॐ अं अंगारकाय नमः)

जप— १००००, समय घड़ी २।

④ बुध (ईशान कोण में हरा, बाण)

मन्त्र— ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयं च अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ (यजु० १५।५४) ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ। बुधाय नमः॥

बीज मन्त्र— ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (ॐ बुं बुधाय नमः) वैदिक

जप— १६०००, समय घड़ी ५।

⑤ गुरु (उत्तर में पीला, अष्टदल)

मन्त्र— ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्० २।२३।१५; यजु० २६।३) ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ। बृहस्पतये नमः॥ (ॐ बृं बृहस्पतये नमः) वैदिक मंत्र है)

बीज मन्त्र— ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

जप— १६०००, समय संध्याकाल।

⑥ शुक्र (पूर्व में श्वेत, पञ्चकोण)

मन्त्र— ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु॥ (यजु० १९।७५) ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ

इह तिष्ठ। शुक्राय नमः॥ (ॐ शुं शुक्राय नमः) वैदिक मंत्र है।

बीजमन्त्र— ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जप— १६०००, समय सूर्योदय।

⑥ शनि (पश्चिम में काला, मनुष्य)

मन्त्र— ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥ (ऋग्० १०।९।४; यजु० ३६।१२) ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ। शनैश्चराय नमः॥ (ॐ शं शनैश्चराय नमः) वैदिक मंत्र

बीजमन्त्र— ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

जप— २३०००, समय संध्या।

⑧ राहु (नैर्ऋत्य कोण में काला मकर)

मन्त्र— ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वे० ४।३१।१, यजु० २७।३९) ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ। राहवे नमः॥ (ॐ रां राहवे नमः) वैदिक मंत्र है।

बीजमन्त्र— ॐ ~~भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः~~। भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

जप— १८०००, समय रात्रि। गुरुवार के दिन

⑨ केतु (वायव्य कोण में काला ध्वजा)

मन्त्र— ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्० १।६।३; यजु० २९।३७) ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ, इह तिष्ठ। केतवे नमः॥ (ॐ कें केतवे नमः) वैदिक

(सूर्यास्त के बाद दान करें) (मंगल)

बीजमन्त्र – ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः।
जप – १६०००, समय रात्रि।

शनैश्चर	बीजमन्त्र	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः।	जप	२३०००, संध्या
राहु	बीजमन्त्र	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः।	जप	१८०००, रात्रि
केतु	बीजमन्त्र	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः।	जप	१६०००, रात्रि

उपर्युक्त रीति के अनुसार ग्रह शान्ति हेतु उपासना के लिये मण्डल बनाकर, वहाँ आकृति करके (जैसा कि सूर्य-हेतु लाल, गोलाकार, मण्डल के मध्य भाग में पूर्व वर्णित है) नवग्रहों को प्रतिष्ठित कर अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्यादि से पूजन करना चाहिये, निर्दिष्ट वस्तु का दान करें जो भी प्राप्त हो, तथा जिस ग्रह की शान्ति की आवश्यकता हो, उसी वार का व्रत एवं जागरण करना अत्युत्तम है। फिर प्रत्येक ग्रह शान्ति हेतु सत्य नारायण का व्रत या प्रदोष व्रत, गोपूजन सर्व श्रेष्ठ बताया गया है, बीज मन्त्रों के जप भी अपना महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाते हैं/ समस्त मन्त्रों की सुगमता एवं ग्रहों की शान्ति हेतु यत्र तत्र उल्लेखनीय है॥

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरांतकारी, भानुः, शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

अर्थात ब्रह्मा, बिष्णु, शिव के साथ समस्त ग्रह, रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु हमारी शान्ति करें। सबल शरीर, आयु, यश एवं ऐश्वर्य प्राप्ति तथा दुःस्वपन नाश और विघ्न दुःख नाश के लिये श्रीमद् वेदव्यास जी द्वारा वर्णित नवग्रह स्तोत्र का नित्य पाठ अत्यन्त लाभ दायक है, आशा है, कि पाठकगण अवश्य ग्रहण करेंगे।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नम् प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्॥ प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकस्य तं नमामि बृहस्पतिम्॥ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्। सिंहिकागर्भ सम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रह मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टि वर्धनम्॥ ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्क

रश्चाग्नि

रोगाग्नि समुद्भवाः। ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥

सर्वसुलभ परीक्षित उपासना — गायत्री मन्त्र [ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयत्] का निरन्तर जप एवं निम्न लिखित सूर्य यन्त्र धारण।

ॐ

६	१	८
७	५	३
२	९	४

रविवार के दिन भोजपत्र पत्र पर लाल चन्दन से लिख कर ताँबे के ताबीज में डाल कर सूर्य की पूजा करके तथा धूप देकर पुरुष को दाहिनी भुजा में और स्त्री की बायीं भुजा में बाँध दे।

सूफियों की उपासना का रहस्य प्रेम:— सूफी संत सरमद नें सूफी उपासना का रहस्य बता दिया। इन शब्दों में कहता है वह, जब तक तेरे दिल में बाहरी चिन्तायें भरी हैं। झूठी भावनायें भरी हैं, तब तक यह कैसे मुमकिन है कि तेरा यार, तेरा प्रेमास्पद ब्रम्ह - तुझे मिल जाये, जब तक तेरे दिल में ये दूसरी चीजें भरीं हैं, तब तक यार से कैसे मिल सकेगा, तेरे और उसके बीच में यही तो पर्दा है। मतलब अपनें प्रेमास्पद को छोड़ कर किसी का चिन्तन न करना, दिल में उसके सिवा और किसी को न ठहरनें देना, किसी ख्वाहिश, किसी इच्छा, किसी कामना को न पनपनें देना बस, इतनी सी ही तो उपासना है। इन प्रेम मार्गी साधकों को, वे कहते हैं।

जिसे इश्क का तीर कारी लगे, उसे जिन्दगी जग में भारी लगे।
न छोड़े मोहब्बत दमे मर्ग तक, जिसे यार जानीसूँ यारी लगे।
न होवे उसे जग में हर्गिज करार, जिसे इश्क की बेकरारी लगे।
हर इक वक्त मुझ आशिके ज़ार कूं, पियारे तेरी बात पियारी लगे।
(वली) कूं कहे तू अगर एक बचन, रकीबों के दिल में कटारी लगे।

सूफी मत की, तसव्वुफ की जान है प्रेम, एक सूफी नें बड़े अच्छे शब्दों में उसका वर्णन किया है। अगर इश्क न होता, इन्तजाम आलम में सूरत न पकड़ता। इश्क के बगैर जिन्दगी बवाल है। इश्क को दिल दे देना कमाल है। इश्क बनता है, इश्क जलता है। दुनियाँ में जो कुछ है,

इश्क का जलवा है। आग इश्क की गर्मी है। हवा इश्क की बेचैनी है। पानी इश्क की रफ्तार है। खाक इश्क का कयाम है। मौत इश्क की बेहोशी है। जिन्दगी इश्क की होशियारी है। रात इश्क की नींद है। दिन इश्क का जागना है। नेकी इश्क की कुरबत है। गुनाह इश्क से दूरी है। बिहिश्त इश्क का शौक है। दोज़ख इश्क का जौक़ है। सूफी मत में ऐसा माना जाता है। कि सारी सृष्टि में उस अल्लाह की ही झाँकी दिखाई पड़ रही है। जिधर नजर ड़ालते हैं, अल्लाह ही अल्लाह है। उसे पाने का एक ही रास्ता है। और वह है, प्रेम, इश्क, मोहब्बत। सूफी साधना की चार हालतें मानी गयी हैं। शरीअत, तरीक़त, मारिफ़त और हकीकत।

1= शरीअत– किसी भी उपासना पद्धति में आचार और विचार मुख्य होते हैं। सूफी लोग विचार पर, हृदय की शुद्धि पर सबसे ज्यादा जोर देते हैं। फिर भी वे इस्लाम के इन चार आचारों को छोड़ते नहीं, ये आचार हैं। 1= सलात (प्रार्थना, नमाज) =2= ज़कात (दान) =3= सौम (उपवास-रोजा) और =4= हज (तीर्थ यात्रा) शरीअत में ये चारों आचार निभाने पड़ते हैं। कुरान शरीफ का पाठ –(तिलवत) करना होता है। रोज पाँच दफा नमाज पढ़नी होती है। चुनी हुई कुछ आयतों का पाठ करना पड़ता है। इसे कहते हैं (अवराद) अल्लाह का जिक्र। उसका स्मरण करना पड़ता है। जिक्र के कई भेद हैं– जैसे, जिक्रे जली, में अल्लाह शब्द का जोर से उच्चारण किया जाता है। (जिक्रे खफी) में मन्द स्वर से मुँह बन्द

करके नाम लिया जाता है (मुराकबा) में साधक अल्लाहो हाजिरी, अल्लाहो नाजिरी, अल्लाहो सहीदी, अल्लाहो माई आदि का उच्चारण करके अल्लाह का ध्यान करता है। (मुजाहिदा) में साधक चित की वृत्तियों को रोकता है। उसे आँख रहते हुये न देखनें का, कान रहते हुये न सुनने का, मुँह रहते हुये न बोलनें का, जीभ रहते हुये स्वाद न लेने का अभ्यास करना पड़ता है। अल्लाह की फिक्र भी करनी होती है, उसके गुणों का चिन्तन करना पड़ता है। अल्लाह का (नाम) उसके नाम का कीर्तन भी करना होता है। (हू अल्लाह हू) सूफियों का परम प्यारा मन्त्र है।

२= तरीक़त — शरिअत के नियमों का पालन करनें से साधक गुरु-दीक्षा पानें का अधिकारी बनता है। उसे गुरु की आज्ञा पालन करनें की कसम लेनी पड़ती है। मुर्शिद — गुरु मुरीद — साधक को रास्ता बता कर उसमें अल्लाह के इश्क की चिनगारी सुलगा देता है। बाहरी क्रियाओं से ऊपर उठ कर हृदय की शुद्धता द्वारा अल्लाह का ध्यान करना तरीक़त है। तरीक़त में साधक को अहंभाव छोड़नें का और इन्द्रियों पर अधिकार करनें का अभ्यास करना पड़ता है। इसके लिये उसे भूख प्यास सहनी पड़ती है। मौन रहना पड़ता है, और एकान्त में रह कर साधना करनीं पड़ती है।

३= मारिफ़त — मारिफ़त कहते हैं परम ज्ञान को, पर वह कोरा-ज्ञान नहीं होता है। उसमें अनुभूति भरी रहती है। इसी का नाम है इश्क, मोहब्बत प्रेम। इसी को (वस्ल) कहते हैं, इसी को (वज्द)। साधक उसमें डूब कर

दुनियाँ को नहीं, अपने आप को भूल जाता है।

सात मुक़ाम — परन्तु मारिफ़त की चढ़ाई आसान नहीं होती, उसके लिये इन सात मुकामों से गुजरना होता है। तौबा (प्रायश्चित अनुताप) ज़हद (अपनी इच्छा से दारिद्रय को अपनाना) सब्र (संतोष) शुक्र (अल्लाह के प्रति कृतज्ञता) रिज़ाज़ (दमन) तवक्कुल (अल्लाह की दया पर) उसके रहम पर पूरा भरोसा) और रजा (अल्लाह की मर्ज़ी को अपनी मर्ज़ी बना लेना)। तौबा कहनें को तो छोटा सा शब्द है पर है वह गुरु गम्भीर। अबू बकर केतानी कहता है, कि उसके भीतर ये छः भाव भरे पड़े हैं। =१= पहले किये गये पापों के लिये खेद। =२= फिर से पाप की तरफ झुकाव न हो, इसकी सावधानी =३= अल्लाह के लिये किये जाने वाले कामों की कमियाँ दूर करना। =४= दूसरों के प्रति जो गलत व्योहार हो गया हो, उसका बदला चुका देना। =५= गलत भोगों से बढ़ा हुआ शरीर का खून-मांस सुखा देना, उसे कम कर देना। और =६= जिस मन नें पाप का मजा चखा है, उसे साधना की कडुवाहट का भी मज़ा चखाना। तौबा से पीड़ित मानव ही भोगों से विरत हो सकता है, यह अनुताप यदि भयजनित हो तो भी काम करता है, पर जब वह प्रेम जनित होता है, तो वह ज्यादा अच्छा ठहरता है।

ज़हद — स्वेच्छा - दारिद्रय से साधना शीघ्र फलवती होती है। ग़रीबी अपनाना, ग़रीबों से तादात्म्य स्थापित करना और अपनी जरूरतों को कम

Rx

1. Inj Sioneuron
or
Inj Neurobion
1 amp IM

1 amp IM

2, Tab. HERBOLAX
या 2 गोली
Tab Dulcolax 2 गोली | रात को सोते समय
(पेट साफ करने के लिए)

3. Cap Bc cosules
या
Becomplex capsules | भोजन के बाद सुबह शाम एक-एक कैप्सूल

शेष सब ठीक है, आपके आशीर्वाद की सदैव आकांक्षा रखता हूं।

[illegible]

...स हालत में
...स्वामी तुलसी दास जी)
...म गड्डे में
...ध्यान रहने
...जरूरी है)
...में खुरा
...एक फकीर
...के बाद हलुवा
...दमत में हाजि
...थी, इसी
...कहा-वापस
...र हलुवा
भरा थाल लेकर फकीर को खिदमत में हाजिर ... रने टहेले
कर बड़े प्रेम से खाया। चलने लगा तो वह शख्स पूछ ही तो बैठा, —

ॐ

कारागढ़ी
१६-१०-८४

परम पूजनीय माताजी
सादर चरणस्पर्श।

आपके आशीर्वाद से सकुशल हूँ।
आपका पत्र पढ़ने को प्राप्त हुआ, मन आह्लादित हो इस बात से आनन्द कि आपको अपने [illegible] आती है। मेरा मुझसे [illegible] [illegible] होना हो सकता है।

① शरद पूर्णिमा मनाती के रहा है।
② इन्जेक्शन जो आपको नहीं मिल रहा है की जगह दूसरा इन्जेक्शन [illegible] [illegible] रहा हूँ (नम्बर एक)
③ कमजोरी की दवा जो [illegible] [illegible]
④ [illegible] - - की जाँच कराते रहे

अपनाना, गरीबों से तादात्म्य स्थापित करना और अपनी जरूरतों को कम

से काम पर ले आना ज़रूरी है।

सब्र-संतोष। जो मिल जाय, जैसा मिल जाय, जब मिल जाय, चाहे जिस हालत में रहना पड़े, प्रसन्नचित्त से स्वीकार करना (सब्र) है।

शुक्र- अल्लाह के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते रहना (शुक्र) है।

पल-पल के उपकार रावरे, समुझि सोचि जिय नीके।
मिथ्यो न कुलिसहुँ तें कठोर हिय, कबहुँ प्रेम सिय पीके। (गोस्वामी तुलसी दास जी)

रियाज़- इन्द्रियों का दमन। बेलगाम की इन्द्रियाँ मनुष्य को हरदम गड्ढे में ढ़केलने को तैयार रहती हैं। साधक को उनसे कदम-कदम पर सावधान रहने की तो जरूरत है ही, हर वक्त उन पर नियन्त्रण रखना भी बहुत जरूरी है।

तवक्कुल- मालिक की कृपा पर-पूरा भरोसा।

रिज़ा- सुख, दुख, हर्ष, शोक में समानता रखना, मालिक की मर्जी में खुश रहना, भूल कर भी कोई शिकवा-शिकायत न करना। कहते हैं, कि एक फकीर कई दिनों से भूखा था। दिल में इच्छा पैदा हुई कि इस समय कोई हलुवा लाता, थोड़ी ही देर में एक आदमी हलुवा से भरा थाल लेकर खिदमत में हाजिर हुआ। फकीर नें पूछा क्यों लाये? बोला आप की मिन्नत मानी थी, इसी लिये लाया हूँ। फकीर नें सिर हिला कर उसे वापस कर दिया, कहा-वापस ले जाओ। हमारे काम का नहीं है। एक पहर बाद वही आदमी फिर हलुवा भरा थाल लेकर फकीर की खिदमत में हाजिर हुआ। फकीर नें उसे ले कर बड़े प्रेम से खाया। चलनें लगा तो वह शख्स पूछ ही तो बैठा,—

हुजूर-हलुवा तो वही था, पहले आपनें इसे लौटा दिया था, बाद में इसी को कबूल कर लिया, आखिर ऐसा क्यों? । फकीर हँसा-बोला बेटे उस वक्त मेरे मन में ये ख्वाहिश पैदा हुई थी, कि कहीं से हलुवा आये तो खाऊँ। नफ्स की ख्वाहिश से कोई चीज मिले, तो उसे हर्गिज नहीं लेना चाहिये, वर्ना गुनहगार बनना पड़ता है। बाद में जब यह थाल तू दुबारा लाया, तो मेरी पहले की ख्वाहिश मर चुकी थी। मैं समझ गया, कि मालिक नें इसे भेजा है। इसको लौटाना गुनाह होता है, इसीलिये मैंनें मजे से लेकर उसे खाया। यह है तवक्कुल और यह है रज़ा। इन सात मुकामों को पार करके मुरीद मारिफ़त पाने का अधिकारी बनता है। इसके आगे की मंजिल है। हक़ीक़त।

हक़ीक़त — साधन नहीं, साधक की परम अनुभूति है। यहाँ पहुँच कर साधक संसार के सुख, दुख से मुक्त हो जाता है। अल्लाह के सिवा उसे कुछ नहीं सुहाता।

किसको शादी, किसका ग़म।
हू अल्लाहू, दम पर दम।

सूफी साधना में प्रेम की ही बलिहारी है। रात दिन प्रेमास्पद का चिन्तन करना, उसी की लौ लगाये रहना, साधक का काम रहता है। प्रेमी जब प्रेम रस में डूब जाता है, तो सारी दुनियाँ अलग खड़ी रहती है। सारे भेद-भाव डूब जाते हैं। न किसी की चिन्ता, न किसी की फिक्र, न किसी का डर,

न किसी से कोई वास्ता। उसे तो घट-२ में उसी प्यारे की, उसी प्रियतम की झाँकी दीख पड़ती है। आशिकों को इम्तियाज़े, दैरो काबा कुछ नहीं।
उसका नक्शे पा जहाँ, देखा वहीं सर रख दिया॥
सूफी उपासना में प्रेम ही मूल मन्त्र है। उस प्रेम की प्राप्ति के लिये हृदय को शुद्ध बनाना पड़ता है। तौबा से शुरूआत होती है।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई। (मीरा बाई)
यह प्रायश्चित्त, यह तौबा दिल से होता है, दिखावटी नहीं, यह शेख साहब का वह तौबा नहीं, जिसके लिये कहा है।
रात को मय खूब सी पी, सुबह को तौबा कर ली।
रिन्द के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गयी॥
दिखावटी तौबा इस रास्ते में काम नहीं करता, यहाँ तो सच्चे तौबा से प्यारे के मिलने का दरवाज़ा खुलता है। हृदय शुद्धि के बाद ही तो—
दिल के आईने में है, तस्वीरे यार।
जब ज़रा गर्दन झुकाई, देख ली॥
प्रेम का यह मार्ग भारतीय उपासना में भी वैसा ही है। जैसा सूफी उपासना में है। इसके लिये सर्वस्व त्याग करके आगे बढ़ना होता है।
प्रेम न बाड़ी नीपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जिहि रुचै, सीस देय लै जाय॥
सूफी भी कहता है।

तरीके फ़नामें क़दम रख के पूछो,
मुहब्बत की रस्में, मुहब्बत की राहें।

प्रधान मुद्रायें—
खेचरीमुद्रा की साधना— इन सब मुद्राओं में दस मुद्रा ये हैं। १= मूलबन्ध =२= उड्डीयान बन्ध= ३= जालंधर बन्ध =४= महाबन्ध =५= महावेध =६= महामुद्रा= ७= विपरीतकरणी =८= वज्रोली =९ खेचरी =१०= शक्तीचालिनी ही प्रधान मुद्रायें हैं, शेष सब गौण वा उप मुद्रायें हैं। वज्रोली मुद्रा का पर्याय है, योनि मुद्रा, शिवसंहिता में कहा है।

शक्ति चालिनीमुद्रा तथा खेचरी मुद्रा की महत्ता— यदि सभी मुद्राओं का अन्तर्भाव केवल दो ही मुद्राओं में करना हो तो शक्ति चालिनी मुद्रा तथा खेचरी मुद्रा को ही चुनना पड़ेगा। यदि एक ही मुद्रा में सभी मुद्राओं का समावेश करना हो, तो केवल शक्तिचालिनी मुद्रा को ही पसन्द करना पड़ेगा। कभी-कभी ऐसा होता है, कि केवल हठ योग यानी प्राणायाम के सम्यक अनुष्ठान से ही इष्ट देव सहित सभी देव देवियों का साक्षात्कार हो जाता है। किन्तु उपासक यदि शक्तिचालिनी मुद्रा के रौद्र स्वरूप से भयभीत हो जाता है, तो वह परा भक्ति से वंचित रह जाता है। शक्तिचालिनीमुद्रा का अवलम्बन करने वाला निर्भीक साधक ही आगे चल कर

निर्बीज समाधि सिद्ध करके ब्रम्ह साक्षात्कार भी कर लेता है। तत्पश्चात ब्रम्ह स्वरूप हो जाता है, यह है शक्तिचालिनी मुद्रा की महत्ता। दूसरे शब्दों में ऐसा भी कह सकते हैं, कि शक्तिचालिनी मुद्रा को सिद्ध करने वाला साधक उत्तरायण का यात्री और इससे भय भीत होकर अन्य मार्ग का अवलम्बन करनें वाला साधक दक्षिणायन का यात्री है। सृष्टि रूप जो वीर्य है, वह एक ही है, खेचरी मुद्रा भी एक है, तद्वत् निरालम्ब ईश्वर और मनोन्मनी अवस्था भी एक ही है। ये है खेचरी मुद्रा की महत्ता। बिना शक्ति चालिनी मुद्रा के खेचरी मुद्रा की उत्पत्ति ही नहीं होती है। यदि कोई साधक येनकेन प्रकारेण रसना को कपालकुहर में ठूँस भी दे, तो इससे न समाधि लाभ होगा, न सिद्धि लाभ। हाँ रामजप, प्रणवजप, अजपाजप, स्वर साधना, आसन, मुद्रा, प्राणायाम, ध्यान – इनमें से किसी एक का अनन्य आश्रय ग्रहण करनें वाला साधक खेचरी मुद्रा के समीप तो आ सकता है, किन्तु शक्तिचालिनी मुद्रा का प्रादुर्भाव होते ही वह भय भीत हो जाता है, और उसके अनुष्ठान का साहस ही नहीं कर पाता, सन्त श्री चरणदास जी महाराज ने कहा है।

योगेश्वर अरु देवता, मुनी ऋषीश्वर जान।
रखवारे वाके घने, करन न देवैं ध्यान॥
टेक गहै सो जापिये, और करै आँ ध्यान।
यती सती अरु गुरु मुखी, जाको ऐसी आन॥

मुद्राओं का रहस्य और इनके आद्य प्रवर्तक

—— पृथ्वी पर जितनें जीव जन्तु हैं, उतनें ही आसन हैं। प्राचीन काल में भगवान शिव नें सर्वप्रथम उनकी संख्या चौरासी लाख कही है। भगवान शिव नें चौरासी लाख आसन कहे हैं, उनमें मुद्राओं का भी समावेश हो जाता है। मुद्रा आसन का उत्कृष्ट स्वरूप है। भगवान श्री भालचन्द्र जी का एक नाम है, नटेश्वर, और भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी का एक नाम है, नटवर, दोनों के ये एकार्थी नाम सार्थक हैं। उभय नृत्यकार भी हैं, और संगीतकार भी। भगवान शिव जी का ताण्डव नृत्य और भगवान श्यामसुन्दर जी का रास नृत्य सुप्रसिद्ध है। इतना ही नहीं, दोनों आद्य योग प्रवर्तक भी हैं। इन दोनों के संगीत की संज्ञा है, (स्वयम्भू नृत्य) या (नैसर्गिक नृत्य)।

नाद दो प्रकार के हैं — १= अनाहत =२= आहत। आघात से उत्पन्न होनें वाले नाद को आहत और बिना आघात से उत्पन्न होनें वाले नाद को अनाहत कहते हैं। अनाहत नाद को केवल योगीजन ही जानते हैं। भक्ति सागर में संत श्री चरणदास जी महाराज कहते हैं। सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, नारद, शुकदेव, इत्यादि असंख्य ऊर्ध्वरेता योगियों नें स्वयम्भू नृत्य और अनाहत गान द्वारा ही परमात्म प्राप्ति की है। महर्षि विश्वामित्र जी (सबीज समाधि) की भूमिका में ही मेनका से विचलित हुये थे। मुनिवर शुकदेव जी

को निर्बीज समाधि की भूमिका से च्युत करने के लिये रम्भा ने पूर्ण प्रयत्न किया था, पर उसे हताश होना पड़ा था।

खेचरी मुद्रा का स्वरूप — तालु के मध्य में जो छिद्र यानी गड्ढा है, जिसको योग की परिभाषा में अमृतकूप, कपालकुहर, कपालविवर, दशमद्वार, भृकुटिगुहा, व्योमचक्र, या ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं। उसमें जब उल्टी हुई जिह्वा प्रवेश करती है, और उसके साथ दृष्टि भी भ्रूमध्य में स्थिर हो जाती है, तब खेचरी मुद्रा बनती है, यानी उसी अवस्था को खेचरी मुद्रा कहते हैं। शिवसंहिता, घेरण्ड संहिता, इत्यादि योगग्रन्थों में भी खेचरी मुद्रा का वर्णन इसी प्रकार किया गया है। केवल शब्दों में अन्तर है, भाव में नहीं।

छेदन, चालन और दोहन — जिह्वा के नीचे - उसके बीच में आयी हुई नस को शिराबन्ध कहते हैं। आधुनिक शरीर विज्ञान उसी को Sublingual gland कहता है) इस शिराबन्ध के कारण जिह्वा उलट कर कपाल कुहर में नहीं जा सकती है, इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये छेदन, चालन और दोहन का आश्रय लेना पड़ता है। (हठयोगप्रदीपिका) में इसकी विधि इस प्रकार दिखलायी गई है। छेदन, चालन और दोहन से जिह्वा को बन्धनमुक्त, कोमल और लम्बी बना लेना चाहिये। जब वह भ्रूमध्य का स्पर्श करने लग जाये, तब यह जानें, कि खेचरी मुद्रा सिद्ध हुई है। थुहड़ (सेंहुड़) के पत्ते के समान अत्यन्त तीक्ष्ण निर्मल एवं चिपकने वाले शस्त्र से

जिह्वा के अधोभाग के मध्य आयी हुई नाड़ी को रोममात्र छेदन करदे। तदनन्तर पीसे हुये सैंधव और हरड़े से जिह्वा मूल को भली प्रकार सात दिनों तक घिसे। तत्पश्चात रोम मात्र छेदन करे। इस प्रकार छः मास तक छेदन, चालन और दोहन करनें से जिह्वा के मूल में जो शिराबन्ध है, वह भली भाँति नष्ट होजाता है। जिह्वा के अधोभाग के बीच जो शिराबन्ध है उसे काट दे, तदनन्तर जिह्वा को निरन्तर मुँह में इधर-उधर घुमाया करे, उसे नवनीत से दुहे और दोनों हाथों के अँगूठों और तर्जनियों से खींचा करे। इसमें यह नहीं दिखाया गया है, कि शिराबन्ध को किस शस्त्र से काटे, कितना काटे, और किस क्रम से काटे। (गोरक्षपद्धति) और (शिव संहिता) में भी शिराबन्ध को काटनें के लिये शस्त्र का संकेत नहीं किया है। बिना किसी शस्त्र प्रयोग के शिराबन्ध कैसे काटा जायेगा।

कुछ समय पूर्व एक अनुभवी योगी संत के पास उनके एक वृद्ध शिष्य के साथ एक शिक्षित तरुण आया था, उस समय खेचरी मुद्रा की चर्चा चल रही थी। उस तरुण ने उन योगी संत से कई प्रश्न पूछे थे। वे सभी प्रश्नोत्तर सर्वोपयोगी प्रतीत हुये थे, अतः उन्हीं प्रश्नों को इस लेख में उपस्थित किया जा रहा है। उसका पहला कारण साधक स्वयं शिराबन्ध काट नहीं सकता। उसमें अन्य व्यक्ति की सहायता लेनी ही पड़ेगी, यह अभिप्रेत नहीं है। दूसरा कारण मान लीजिये कि शिराबन्ध को रोममात्र

काट लिया अथवा कटवा लिया, किन्तु साधक उसे कितनी देर तक घिसेगा। वह घिसने की रीति भी तो नहीं जानता। तदुपरान्त जिह्वा चालन किस प्रकार करना — यह भी तो एक समस्या है। तीसरा कारण साधक खेचरी मुद्रा का अधिकारी है या नहीं, यह भी तो जानना चाहिये। मान लिया, कि साधक खेचरी मुद्रा का अधिकारी है, किन्तु जब तक वह ब्रह्मग्रन्थि सहित मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूर चक्र, अनाहत चक्र और विशुद्धाख्य चक्र का भेद नहीं कर पायेगा, तब तक उसके लिये शिराबन्ध का छेदन निषिद्ध है।

उसी समय जिज्ञासु को एक बात का स्मरण हो आया, वह बोला, गुरुदेव सुना है, जिह्वा के तीन प्रकार हैं— नागजिह्वा, हस्तिजिह्वा, और धेनुजिह्वा, इनमें हस्तिजिह्वा तथा धेनुजिह्वा ह्रस्व और नागजिह्वा स्वभाव सिद्ध दीर्घ होती है। यदि किसी योग साधक को नाग जिह्वा प्राप्त हो तो क्या उसको भी छेदन की आवश्यकता पड़ेगी? संत- हाँ भैय्या! उस जिह्वा के शिराबन्ध का भी छेदन करना ही पड़ेगा। हमारे प्राचीन योग ग्रन्थों में यह आदेश नहीं पाया जाता, कि जिह्वा का शिराबन्ध न काटने से भी चल सकता है। यह सुन कर जिज्ञासु संतुष्ट हुआ, किन्तु उसकी विचार धारा न रुक सकी। उसने अपनी उलझन प्रस्तुत की, जिह्वा के अधोभाग में आयी हुई नस काटने का कोई और हेतु भी है क्या? संत — बतलाता हूँ। हमारे प्राचीन तत्वदर्शी ऋषि मुनियों ने योग द्वारा तीन ग्रन्थियों का परिचय प्राप्त

किया है। इन ग्रन्थियों के नाम क्रमशः — 1= ब्रम्हग्रन्थि =2= विष्णुग्रन्थि= 3= रुद्रग्रन्थि तमोगुण की ग्रन्थि है। ब्रम्हग्रन्थि की सीमा मूलाधार से लेकर मणिपुर चक्र तक, विष्णु ग्रन्थि की सीमा अनाहत चक्र से लेकर विशुद्धाख्य चक्र तक, तथा रुद्र ग्रन्थि की सीमा आज्ञाचक्र से लेकर सहस्त्र दल चक्र तक पहुँती हुई है। गुह्येन्द्रिय को ब्रम्हग्रन्थि कहते हैं। उसका स्थान हृदय में है। योगीन्द्रों ने तीन हृदयों को स्वीकृत किया है। पहला हृदय मूलाधार में, जिसमें ब्रम्ह ग्रन्थि अवस्थित है, दूसरा हृदय को फेफड़ों के बीच में और तीसरा हृदय मस्तक में आया हुआ है। तीसरे हृदय में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का निवास है। जिह्वा को विष्णु ग्रन्थि कहते हैं। उसका स्थान विशुद्धाख्य चक्र में है। लम्बिका (यह तालु के अन्त में है) uvula को रुद्रग्रन्थि कहते हैं, योगिराज श्री गोरक्षनाथ जी ने जिह्वा के अधोभाग के मध्य आयी हुई नस के लिये उचित ही कहा है। समस्त शरीरों का कारण वीर्य है। इस वीर्य का एक नाड़ी केन्द्र जिह्वा के निम्न भाग के मध्य में विद्यमान है। वही आपादतलमस्तक यानी सम्पूर्ण शरीर को समृद्ध करता है। जब कुण्डलिनी ब्रम्हग्रन्थि का भेद करके चक्रों का उत्क्रमण करती हुई विष्णु ग्रन्थि में आती है। तब वह नाड़ी केन्द्र प्रज्वलित हो उठता है, और उसका स्वाभाविक भेद हो जाता है। इससे वीर्य के ऊर्ध्वग मन का मार्ग निर्बाध हो जाता है। रजोगुण तथा तमोगुण निर्बल और सत्वगुण प्रबल हो उठता है। रुद्रग्रन्थि के भेद के

पश्चात सत्व संशुद्धि का क्रम अति प्रबल हो जाता है, और निर्बीज समाधि सिद्ध होनें पर योगी त्रिगुणातीत हो जाता है। दक्षिणायन में अमृत प्राप्ति होती है। किन्तु उसमें तीन ग्रन्थियों का भेद नहीं होता। ग्रन्थियों के भेद न होनें के कारण साधक ऊर्ध्वरेता नहीं बन पाता, भगवान श्री कृष्ण चन्द्र नें सत्य ही कहा है (अव्यक्त) अक्षर इस प्रकार कहा गया है। उसी को परम गति कहते हैं, तथा जिसको प्राप्त होकर योगी वापस नहीं लौटते हैं। वह मेरा परम धाम है। क्या आप की जिह्वा इतनीं लम्बी होगई है, कि वह भ्रूमध्य को छू लेती है? (नहीं) मेरी जिह्वा केवल नासाग्र को ही छू लेती है, फिर भी वह कपाल कुहर में खड़ी रह कर उसके मध्य भाग को, जिसे योगीन्द्र (भ्रूमध्य) कहते हैं, अत्यन्त सरलता पूर्वक छू लेती है। इतना ही नहीं, छत के किसी भी भाग को सुगमता से छू सकती है। और क्या चाहिये? यदि जिह्वा नासिका के दूसरे छोर तक, जिसे सामान्यतः भ्रूमध्य कहते हैं, पहुँच जाती तो वह कपाल कुहर में टेढ़ी हो जाती। वह गड्ढा इतना गहरा नहीं है, जो इतनीं लम्बी जिह्वा को अपनें में अवकाश दे सके। यदि कोई साधक जिह्वा को छेदन, चालन और दोहन से लम्बी बना कर नासिका के दूसरे छोर तक पहुँचा देगा, तो वह जिह्वा किसी भी कार्य के योग्य नहीं रहेगी। उसकी समस्त शक्तियाँ विनष्ट हो जायेंगी।

खेचरीमुद्रा का स्वानुभव — यह सुनकर अतीव प्रसन्नता हुई। जब आप मेरी जिज्ञासा को संतृप्त करनें के लिये उत्सुक हैं। फिर संकोच किस

किये? आप किस योग की उपासना कर रहे हैं।?
मैं शरणागत योग की उपासना कर रहा हूँ। उसी को मैं अनुग्रहयोग, समर्पणयोग, बुद्धि योग, निष्काम कर्म योग, सांख्य योग, प्रेमयोग, अनन्य भक्ति योग, पूर्णयोग, अष्टाङ्ग योग और राजयोग कहता हूँ। मैं एकेश्वरवादी हूँ। मेरे उपास्य भगवान (राधा पुरुषोत्तम) हैं। मेरा स्वाध्याय का ग्रन्थ श्रीमद्‌भगवद्‌गीता है। मेरी सुदृढ़ मान्यता है, कि राजयोग का मूलाधार है (हठयोग)। बिना हठयोग के तन-मन की संशुद्धि नहीं हो सकती और प्रत्याहार भी सिद्ध नहीं हो सकता। राज योग के अन्तर्गत समस्त योगों का समावेश हो जाता है। अतः राज योगी सम्पूर्ण योगों का ज्ञाता होता है। प्रत्याहार रहित राजयोग का अनुष्ठान विफल ही रहता है। नाद योग और मन्त्रयोग का सम्बन्ध हठयोग के साथ और लय योग का सम्बन्ध राज योग के साथ है। हठयोग के ज्ञाता को तन्त्रों के लिये पृथक् उपासना नहीं करनीं पड़ती, क्योंकि तन्त्रोपासना हठयोग पर अवलम्बित है। आप साधक योगी हैं या सिद्ध? भाई जी अभी तो दिल्ली बहुत दूर है। सामान्य साधक ही हूँ। आप उपासना में प्रतिदिन कितना समय व्यतीत करते हैं? चार बैठक में कुल दस घंटे। यह क्रम कितनें वर्षों से चल रहा है? पूरे सत्रह वर्ष से। आपनें खेचरी प्रारम्भ कब किया था? योगारम्भ के पश्चात चौथे मास में। तो क्या उसका अभ्यास अब तक समाप्त नहीं हुआ? नहीं।

क्या आप उसका अभ्यास सत्रह वर्ष से निरन्तर करते आ रहे हैं? हाँ। बड़े आश्चर्य की बात है। आप यदि अपना खेचरी मुद्रा विषयक अनुभव सविस्तर कहेंगे, तो उच्चकोटि के योग साधकों का साधना पथ प्रशस्त हो जायगा। प्रयत्न करूँगा, जब मैं १९ वर्ष का नव युवक था, तब श्री सद्गुरु देव प्रणवानन्द जी महाराज ने मुझे योग दीक्षा देकर (योगाचार्य की) संज्ञा प्रदान की थी, और कहा था। बेटा - भविष्य में तू संन्यासी बनकर कुछ वर्ष पश्चात योगोपासना करेगा। उन्होंनें मुझे केवल पाँच योगयुक्तियाँ सिखला कर आशीर्वाद दिया था। इन योग युक्तियों की सहायता द्वारा तू समस्त योगों का ज्ञाता बन सकेगा। उस समय उन्होंनें मुझ से पूछा था, क्या तुझे पद्मासन आता है? मैंनें हकारात्मक सिर हिलाया था। और उनकी आज्ञा होते ही पद्मासन रचकर दिखलाया था। उसको देख कर वे बोले थे - चलेगा। साम्प्रत में एक ही आसन पर्याप्त है। भविष्य में जब तू संन्यासी बन कर योगोपासना करेगा, तब तेरे योग मार्ग में अचानक मुद्राओं सहित असंख्य आसन उपस्थित होंगें। जिज्ञासु अधीरता से बीच में ही बोल पड़ा, गुरुदेव हम बालक को क्षमा कीजियेगा। बीच में ही बोलता हूँ। क्या आप को परम गुरुदेव नें अष्ट प्रकार के कुम्भक सिखलाये थे? नहीं। नासाग्र ध्यान हठयोग की मर्यादा में और भ्रूमध्य ध्यान राजयोग की मर्यादा में आता है। भ्रूमध्य के नीचे का सारा शरीर हठयोग का प्रदेश है। इसको माया का प्रदेश भी कह सकते हैं। इसमें मूलाधार से ले

दशमद्वार तक के चक्र और तीन ग्रन्थियों का समावेश होता है। नासाग्रध्यान द्वारा सबीज या सविकल्प समाधि सिद्ध होती है। समाधि तो एक ही है। किन्तु इसकी अवस्थायें असंख्य हैं। इनको भी समाधि संज्ञा प्राप्त है। समाधि के प्रधान दो भेद हैं।(सविकल्प या सबीज) और निर्विकल्प या निर्बीज। सबीज समाधि में मन का अस्तित्व बना रहता है। और निर्बीज समाधि में उसका विलय हो जाता है। निर्बीज समाधि की अपरिपक्व अवस्था को ही सबीज समाधि और सबीज समाधि की परिपक्व अवस्था को ही निर्बीज समाधि कहते हैं। भ्रूमध्य के ऊपर का भाग आधा मस्तक, दोनों कानों के ऊपर का खोपड़ी का आधा भाग राजयोग का प्रदेश है। इसमें आज्ञाचक्र और सहस्त्र दलचक्र का समावेश होता है। इस प्रदेश को (प्रभु का प्रदेश) भी कह सकते हैं। ध्यान योग के अधिकारी बनने के लिये, शारिरिक एवं मानसिक संशुद्धि अनिवार्य है। इसके लिये साधक को वर्षों पर्यन्त तपश्चर्या करनी पड़ती है। यह तपश्चर्या बिना प्रपत्ति के शक्य नहीं है। श्री परम गुरुदेव नें आप को कौन सा मन्त्र प्रदान किया था? (ॐ नमों भगवते वासुदेवाय)। हमारी गुरु परम्परा एकेश्वरवादी होने के कारण उसमें ब्रम्हचारी को गायत्री मन्त्र (शक्ति मन्त्र) गृहस्थ को द्वादशाक्षर मन्त्र (विष्णु मन्त्र) और संन्यासी को पंचाक्षर-ॐ नमः शिवाय। मन्त्र (शिव मन्त्र) प्रदान करनें की परिपाटी है। इनमें से किसी भी एक मन्त्र की सिद्धि होने पर शेष दो मन्त्र भी अनायास

हो सिद्ध हो जाते हैं। ऐसी हमारी गुरुपरम्परा की मान्यता है। इसका अर्थ यह हुआ, कि जिस प्रकार तीन प्रधान देवों में अभेद माना गया है। अब मैं एक बात की स्पष्टता कर देता हूँ। श्री स … त योगयुक्तियों के सम्यक् अनुष्ठान से ही मैं हठयोग, मन्त्रयोग … लययोग, राजयोग इत्यादि सम्पूर्ण योगों की समस्त प्रक्रियाओं … का हूँ, क्योंकि उन सभी प्रक्रियाओं ने मेरे उपासना मार्ग में … आकर मुझको मार्ग दर्शन दिया है। दूसरे शब्दों में, मैंने … गों का ज्ञान सम्प्राप्त किया है। और शास्त्रों में उसी को … प्त अनुभव और योगशास्त्रों के उपदेश में साम्य पाकर ईश्व … द्गुरु में मेरी श्रद्धा अविचल होगई है। परम गुरुदे … अधिक बल देते थे। … ने प्रभु भक्ति, प्रभु प्रार्थना, … गुरु भक्ति, गुरु सेवा, ध्यान, प्राणायाम, सदाचार ब्रह्मचर्य, … हार, चित्त शुद्धि, सतसंग, स्वाध्याय, व्यायाम, सरलत … न्त, वैराग्य, नियमितता और निश्चय पर अधिक बल देते थे … धना के प्रसंग पर आ जाता हूँ। विक्रम संवत् १९६६ में मैंने … ल वाले उदासीन मुनि श्री शान्तानन्द जी महाराज से संन्यास दीक्षा ली थी। विक्रम संवत् २००६ की आषाढ़ शुक्ल एकादशी को रात को सोते समय मैं श्री सद्गुरु देव प्रणवानन्द जी महाराज की प्रार्थना कर रहा था, बीच में ही मैं भावातिरेक से रुदन करने लगा। मुझे दिव्य आदेश मिला, रो मत! अवसर आ गया

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुर पू…
नमस्ते गड़ाकड़ कोलासुर भयंकरो ॥
यशोदा नन्दन नं…
भगवती ट्रान्सपोर्ट
सदर बाजार हल्द्वानी (नैनीताल)
दूरभाष : निवास ७३२
दुकान ५६१



दशमद्वार तक के चक्र और तीन ग्रन्थियों का समावेश होता है। नासग्रध्यान
द्वारा सबीज या सविकल्प समाधि सिद्ध होती है। समाधि तो एक ही
है। किन्तु इसकी अवस्थायें […] हैं। इनको भी समाधि संज्ञा प्राप्त
है। समाधि के प्रधान दो […] विकल्प या सबीज) और निर्विकल्प
या निर्बीज। सबीज समा[…] का अस्तित्व बना रहता है।
और निर्बीज समाधि में […] लय हो जाता है। निर्बीज समाधि
की अपरिपक्व अवस्था के […] समाधि और सबीज समाधि की
परिपक्व अवस्था को ही […] कहते हैं। भ्रूमध्य के ऊपर का
भाग आधा मस्तक, दोन[…] र का खोपड़ी का आधा भाग
राजयोग का प्रदेश है। इस […] र सहस्त्र दलचक्र का समावेश
होता है। इस प्रदेश को प्रभु […] सकते हैं। ध्यान योग के
अधिकारी बनने के लिये, […] मानसिक संशुद्धि अनिवार्य है।
इसके लिये साधक को बड़ी […] करनी पड़ती है। यह तपश्चर्या
बिना प्रपत्ति के शक्य न[…] देव ने आपको कौन सा मन्त्र
प्रदान किया था? (ॐ […] शिवाय)। हमारी गुरु परम्परा
एकेश्वरवादी होने के कारण उसमें ब्रह्मचारी को गायत्री मन्त्र (शक्ति मन्त्र)
गृहस्थ को द्वादशाक्षर मन्त्र (विष्णुमन्त्र) और संन्यासी को पंचाक्षर-
ॐ नमः शिवाय। मन्त्र (शिव मन्त्र) प्रदान करने की परिपाटी है। इनमें
से किसी भी एक मन्त्र को सिद्धि होने पर शेष दो मन्त्र भी अनायास



ही सिद्ध हो जाते हैं। ऐसी हमारी गुरुपरम्परा की मान्यता है। इसका अर्थ यह हुआ, कि जिस प्रकार तीन प्रधान देवों में अभेद माना गया है। अब मैं एक बात की स्पष्टता कर देता हूँ। श्री सद्गुरु प्रदत्त योगयुक्तियों के सम्यक् अनुष्ठान से ही मैं हठयोग, मन्त्रयोग, नादयोग, लययोग, राजयोग इत्यादि सम्पूर्ण योगों की समस्त प्रक्रियाओं को जान सका हूँ, क्यों कि उन सभी प्रक्रियाओं ने मेरे उपासना मार्ग में आकस्मिक आकर मुझको मार्ग दर्शन दिया है। दूसरे शब्दों में, मैंने योग से ही योगों का ज्ञान सम्प्राप्त किया है। और शास्त्रों में उसी की चर्चा पढ़ी है। प्राप्त अनुभव और योगशास्त्रों के उपदेश में साम्य पाकर ईश्वर, शास्त्र एवं सद्गुरु में मेरी श्रद्धा अविचल होगई है। परम गुरुदेव किस बात पर अधिक बल देते थे? । वे प्रभु भक्ति, प्रभु प्रार्थना, रामजप, प्रणवजप, गुरु भक्ति, गुरुसेवा, ध्यान, प्राणायाम, सदाचार ब्रह्मचर्य, आहार शुद्धि, मिताहार, चित्त शुद्धि, सतसंग, स्वाध्याय, व्यायाम, सरलता, स्नेह, मौन, एकान्त, वैराग्य, नियमितता और निश्चय पर अधिक बल देते थे। अब मैं खेचरी साधना के प्रसंग पर आजाता हूँ। विक्रम संवत् १९९६ में मैंने हरिद्वार मुनि मण्डल वाले उदासीन मुनि श्री शान्तानन्द जी महाराज से संन्यास दिक्षा ली थी। विक्रम सवंत् २००६ की आषाढ़ शुक्ल एकादशी को रात को सोते समय मैं श्री सद्गुरु देव प्रणवानन्द जी महाराज की प्रार्थना कर रहा था, बीच में ही मैं भावातिरेक से रुदन करनें लगा। मुझे दिव्य आदेश मिला, रो मत! अवसर आगया

अब तू योगारम्भ कर दे। मैंने दूसरे ही दिन योगारम्भ कर दिया।

तान्त्रिक उपासना और ज्योतिष शास्त्र — ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ३, ५, ९ में शुभ ग्रह होनें से साधक सात्विक देवताओं का उपासक होता है, तथा पाप ग्रह होनें से क्षुद्र देवताओं – यक्षिणी, भूत प्रेतादि की उपासना करता है, तथा अति पाप विद्ध होनें से तो उपासना का विरोधी भी होता है। संहिता ग्रन्थों में अनेक प्रकार की उपासनाओं के मुहूर्त भी निर्दिष्ट हैं। मोक्ष साधना, भोगसाधना, शान्ति, पौष्टिक, अभिचार एवं क्रूर कर्म सिद्धि आदि के लिये, अलग-अलग देश काल मुहूर्त निर्दिष्ट हैं। इनका कुछ वर्णन तन्त्र ग्रन्थों में भी आता है। जैसे विवाह के पूर्व शतपदचक्रादि द्वारा नक्षत्र मेलन (कुण्डली मिलान) होता है वैसे ही इष्ट मन्त्र देवता के साथ भी अकडमचक्र, अकथहचक्रादि से गणना की जाती है। यदि मेलापक मिल जाता है, तो उपासना शीघ्र सिद्ध होती है। अन्यथा विलम्ब या असफलता भी मिलती है।

पुष्य नक्षत्र की महत्ता — ज्योतिष में एक सिद्ध काल भी है। सिद्धियोग, सर्वार्थ सिद्धि योगों के अतिरिक्त पुष्य नक्षत्र का नाम भी सिद्ध नक्षत्र कहा गया है। इस तरह पुष्य, धातु तथा (सिध्) धातु में (क्यप्) प्रत्यय करनें से एक ही अर्थ में (पुष्य) एवं (सिध्य) ये दोनों शब्द बनते हैं। इस प्रकार अत्यन्त प्रसिद्ध होनें से व्याकरण

एवं तन्त्र ग्रन्थों में भी इसको सुस्पष्ट चर्चा - वर्णन प्राप्त है। यदि गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, तो पूर्ण सिद्धि योग होता है। पता नहीं पुष्य नक्षत्र से ही पौष्टिक (शान्ति) शब्द चला, अथवा पहले से हो रहा। वाल्मीकि रामायण, महाभारत, पुराणों तथा अन्यत्र भी पुष्य नक्षत्र की महत्ता विख्यात है। महाकवि श्री भट्ट कहते हैं, कि सर्वार्थसिद्धि प्रद पुष्य नक्षत्र के समान ही जो विख्यात योगसिद्धा तथा सर्वसिद्धा थी, उस शबरी के पास लक्ष्मण जी के साथ प्रभु श्री राम जा पहुँचे। आप यज्ञों में अश्वमेध, युगों में सत्य युग, नक्षत्रों में पुष्य एवं तिथियों में अमावास्या हैं (अमावास्या शिव जी की तिथि है)। पुष्य नक्षत्र में प्रायः सभी शान्ति पौष्टिक, सौभाग्य एवं वशीकरण प्रयोग सिद्ध होते हैं। तन्त्र ग्रन्थों के अनुसार पुष्य नक्षत्र में गोजिह्वा (बनगोभी) तथा अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ उखाड़ कर मस्तक पर धारण करने से सभी वाद विवादियों में विजय प्राप्त होती है। इसी नक्षत्र में श्वेत विकिरण (कटैया) का मूल उखाड़ कर दाहिने बाहु पर बाँधने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। (ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व क्रोधो पशमनी स्वाहा) इस मन्त्र को २१ बार जप कर मुँह धो लेने से पुनः उस पर किसी को भी क्रोध नहीं आता। (ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा) इसे पढ़ कर एक छोटा कंकड़ या पत्थर बाँध कर फेंक दें, तो व्याघ्र स्तम्भन हो जायगा। न तो बाघ मुँह नीचे, ऊपर हिला, डुला सकता है, और न चल ही सकता है।

1= पुष्य नें ब्रम्हा जी पर स्वनक्षत्र में मदन पुष्प छोड़ कर व्यथित किया, अतः अति कामद होनें से विवाहवर्ज्य होने का उन्होनें इसे शाप दिया। अथवा मदन नें पुष्य नक्षत्र में ही ब्रम्हा जी पर पुष्प बाण छोड़ा, और पुष्य नक्षत्र नें इसमें अपनी पूरी शक्ति लगा कर उसे असह्य बना दिया।

2= इसी प्रकार अन्य योग नक्षत्रों पर अनुसंधान किया जा सकता है। पुष्य नक्षत्र यदि रविवार को पड़े, तो मधुयष्टि की जड़ उखाड़ कर सभा में फेंक देनें से सभा के सभी सदस्यों का मुँह बन्द हो जाता है। यदि गुरुवार को या दशमी को वह पड़े तो सारे मणि मन्त्र, ओषधि, शिल्प, कला, ज्ञान, विद्या तथा अनुष्ठित समस्त शान्ति, पौष्टिक कार्यों को सिद्धि करनें वाला होता है। पुष्य नक्षत्र में किये गये श्राद्ध से पितरों को भी अक्षय तृप्ति होती है। कर्ता को भी धन, पुत्र की प्राप्ती होती है। यदि पुष्य नक्षत्र दशमी को पड़े, तो (अमृत) नामक योग होता है। जो व्यक्ति उस दिन श्राद्ध करता है, उसके वे पितर नित्य तृप्त तथा प्रसन्न रहते हैं। बुध कष्ट प्रद हो तो विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ निर्दिष्ट है। शुक्र हो तो दुर्गा पाठ करना चाहिये। चन्द्र-मंगल में रुद्राभिषेकादि उपाय निर्दिष्ट हैं।

नया संसार — एक नया संसार बसा ले, एक नया सुन्दर संसार।
जहाँ न ईर्ष्या राग द्वेष हो, जहाँ न माया का अभिसार।
अंहकार पाखंड, स्वार्थ का, जहाँ न हो कुछ भी संचार॥
जहाँ न उठता यौवन सरिता में, पशुता का विषमय ज्वार।
जहाँ न दानवता करती है, छिप कर मानवता संहार॥
जहाँ न जीवन कलुषित हो, मादक हृद्वीणा की झंकार।
वहीं बना ले ज्ञान रश्मि से, नया एक मधुमय संसार॥

२
जहाँ प्रेम का अटल राज है, इस अज्ञात सिन्धु के पार।
कर्मज्ञान सुरभित सुमनों का, स्वर्ण सूत्र में गूँथा हार॥
भक्ति प्रपत्ति त्याग सेवा का, लहराता है उज्वल धार।
जहाँ विषय वासना सर्पिणी करती, नहीं विषम फुफकार॥
जहाँ समझते मानव को मानव, अपना बान्धव परिवार।
वहीं बना ले मन मोहन [illegible], निकट एक नूतन संसार॥

३
श्री देवी की स्वर्ण रश्मि से, आलोकित मणि-मण्डप द्वार।
मानवता की विजय जहाँ है, भाष्यकार की जय-जयकार॥
उपनिषदों का, ब्रम्ह सूत्र का, गीता का होता गुंजार।
जहाँ न घर है रोग गरीबी का, कंटकमय कारागार॥
शरणागत वत्सल चरणों की, अमर ज्योति की झलक अपार।
प्रियतम पद जल से प्रक्षालित, एक बना अनुपम संसार॥

४

श्री भागवत धर्म का, झंडा जहाँ सदा फहराता है।
सत्य-अहिंसा, सदाचार का, उदधि जहाँ लहराता है॥
जहाँ न जीवन में दानवता की, छाया दिखलाती है।
जहाँ अविद्या जीवन रस का, पान नहीं कर पाती है॥
आर्य, सनातन, वैदिक, पावन, मोक्ष धर्म का है आधार।
एक नया संसार बना ले, भगवत्सेवा का आगार॥

5

शरणागत हैं सब नर नारी, सब करते भगवद्गुण-गान।
करते हैं कैंकर्य सभी, रखते हैं श्री चरणों का ध्यान॥
दिव्य प्रबन्धों का चिन्तन हो, नर का है उद्देश्य महान।
प्रति दिन होता गायत्री का, पुरुष सूक्त का अनुसंधान॥
रंग नाथ के पद पराग से, सुरभित चलती मधुर बयार।
भगवत्सेवा से धवलीकृत, एक बना अभिनव संसार॥

6

जहाँ समझते सभी नागरिक, गगन बरसता मंगल नीर।
हरि मन्दिर है नर नारी का, पावन सेवा योग्य शरीर॥
ईश्वर अंश जीव हैं जिनमें, वे सब हैं ईश्वर के रूप।
उनकी सेवा ही भगवत्सेवा का, है आधार अनूप॥
सीय राम मय सब जग जानी, सबको सब करते हैं प्यार।
करना है निर्माण वहीं पर, एक नया अद्भुत संसार॥

जहाँ न करता मतवाला हो, जालिम, सबल, असुर चीत्कार।
अबला नारी और गरीबों पर, दुर्बल पर अत्याचार ॥
नव संवत् के नव प्रभात में, नव किरणों का ले उपहार।
उपासना के रजत तार में, नव प्रसून का रस संचार ॥
श्री मन्नारायण चरणों से, ज्योति निकलती बारम्बार।
वहीं बना ले मधुमय सुन्दर, एक नया सुरभित संसार ॥

हनुमान जी की उपासना और अचूक सिद्धि — एक दिन मैं शाम के समय मन्दिर में गया, और हनुमान चालीसा का उच्च स्वर से पाठ करने लगा, लग भग ग्यारह बजे के समय मुझे कुछ प्रकाश दिखाई पड़ा पुनः हनुमान जी की विशाल आकृति दिखलाई दी, उस समय मुझे मन्दिर की प्रस्तर प्रतिमा नहीं नजर आरही थी, मैंने अपना पाठ जारी रखा, और मुझे यह अनुभव हुआ, कि अब मुझ पर हनुमान जी की कृपा होगई है। तदनन्तर तदनन्तर मूर्ति लुप्त हो गई, और वही प्रतिमा शेष रही, मेरा पाठ पूर्ण होगया, और मैं घर लौटते समय (दुर्गम काम जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥) की पुनरावृति करता रहा, और मुझे पूर्ण शान्ति प्राप्त होगई, इसके पहले भी कई वर्ष से मेरा नित्य प्रति मन्दिर में जा कर हनुमान जी का दर्शन करने का तथा हनुमत्कवच, और हनुमान चालीसा करने का नियम बराबर चल रहा था, उन्हीं की कृपा से मेरे

कई असम्भव कार्य स्वतः सिद्ध होगये। अतः मेरा ये निवेदन है कि श्रद्धा विश्वास पूर्वक श्री हनुमान जी की सेवा करके लाभ उठावें। क्योंकि दुनियाँ में कोई ऐसी वस्तु नहीं है। जो इनकी कृपा से न सिद्ध हो सके, कृपा के समुद्र श्री हनुमान जी स्वयं अपनें भक्तों की कामनाओं को पूर्ण कर दिया करते हैं।

दस हजार बार से सिद्ध

प्रेत बाधा के लिये मन्त्र — ॐ दक्षिण मुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः सकल भूतप्रेत दमनाय स्वाहा। यह मन्त्र कम से कम दस बार जप करनें पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र जाप के बाद अष्टगन्ध से हवन करना चाहिये।

२= विष उतारनें के लिये — ॐ पश्चिम मुखाय गरुडाननाय पंचमुख हनुमते मं, मं, मं, मं, मं सकल विषहराय स्वाहा। यह मन्त्र दीपावली के दिन अर्द्धरात्रि में घी का दीपक जला कर हनुमान जी को साक्षी करके दस हजार जप लेनें से सिद्ध हो जाता है। पुनः बिच्छू, बरैं आदि विषधारी जीवों द्वारा त्रस्त होनें पर इस मन्त्र को उच्च स्वर से उच्चारित करते हुये, उस अंग का स्पर्श करे। कई बार ऐसा करनें पर विष उतर जाता है।

३= शत्रु संकट निवारण के लिये — ॐ पूर्वकपि मुखाय पंचमुख हनुमते टं, टं, टं, टं, टं सकल शत्रु संहरणाय स्वाहा। इस मन्त्र के सिद्ध कर लेने पर शत्रु भय दूर हो जाता है। यह

१५०००० मन्त्र जप से सिद्ध होता है। आवश्यकता है विश्वास और श्रद्धा की।

४= महामारी, अमंगल तथा ग्रह दोष एवं भूत प्रेतादि नाश के लिये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी, यक्षिणी, पूतना-मारी-महामारी, राक्षस, भैरव-वेताल-ग्रहराक्षसादिकान्-क्षणेन-हन-हन-भञ्जय-भञ्जय-मारय-मारय-शिक्षय-शिक्षय महामाहेश्वर रुद्रावतार ॐ हुँ फट स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्ट जन मुखस्तम्भनं कुरु-कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूंः ठं ठं ठं फट स्वाहा। यह मन्त्र मंगलवार को दिन भर व्रत रहने के बाद अर्ध रात्रि में हनुमान जी के मन्दिर में सात हजार जाप से सिद्ध हो जाता है सिद्धि के बाद हनुमान जी के समक्ष दशांश हवन करना चाहिये।

विशेष— हनुमान जी के साधकों को चाहिये, कि उपर्युक्त मन्त्रों में जिसको सिद्ध करें। उसे तत्क्षण भोज पत्र पर लालचन्दन या लाल स्याही से लिख कर पुनः उसे अभिमन्त्रित कर ताबीज में भर कर धारण करें। यदि यह काम विश्वास और श्रद्धा से किया गया, तो अवश्य ही रामबाण सिद्ध होगा।

५= विद्यार्थी के लिये हनुमान् जी की सिद्धि सहज है। विद्यार्थियों पर मारुति शीघ्र कृपा करते हैं। उनसे पवित्रता तथा श्रद्धा की अपेक्षा की जाती है।

२- शनीवार के दिन हनुमान जी को तेल चढ़ानें से शनैश्चर का प्रकोप शान्त हो जाता है। शनि की कुदृष्टि से ग्रस्त महानुभाव अवश्य इसका सेवन करें। उपर्युक्त सभी सिद्धियाँ मेरे स्वतः अनुभव की हैं। इनसे मुझे जो शान्ति प्राप्त हुई है, वह असीम है।

प्रदक्षिणा तथा स्वस्ति का रहस्य —— दैवी शक्ति और उसका तेजो वलय (ज्योतिर्मण्डल) स्वभावतः ही दक्षिणवर्ती होते हैं, अर्थात भाव यह है, कि उस मण्डल की दिव्य प्रभा सदैव ही दक्षिण दिशा की ओर से गतिमान् होती है। दिव्यत्व या देवत्व ही श्रेष्ठत्व होनें से दायाँ हाथ या दक्षिणावर्तन श्रेष्ठ है। इसी कारण दिव्य लहरियों का दक्षिण की ओर गतिमान होना स्वभाविक है। जिस स्थान पर देवता की प्रतिष्ठा भली भाँति करके प्रतिमा अवस्थित है, उस स्थान के मध्यबिन्दु से अर्थात देव प्रतिमा से कुछ दूरी तक उस देवता की दिव्य प्रभा बिखरी रहती है। जो निकट में कुछ गहरी और आगे क्रमशः कम और विरल होती जाती है। सूर्य तथा चन्द्रमा की ओर ध्यान से देखनें पर इस तथ्य को हम देख सकते हैं। उस देवता के चारों ओर घूमने या इस तेजोमण्डल में से निकलनें पर वे दिव्य कण हमारे चारों ओर चिपक जाते हैं। तेज की इन लहरियों की गति की दिशा में हमारे गतिमान् होने अथवा चलनें से उस देवता के ज्योतिर्मण्डल के अन्तर्गत विद्यमान दिव्य कणों, सत्त्वगुण के परमाणुओं तथा पवित्र गुणों की प्राप्ति सहज ही हो सकती है। इसी लिये देवता

का तेज दक्षिणवर्ती होनें से उसकी प्रदक्षिणा भी उसी के अनुरूप गति की दिशा में करना शास्त्र सम्मत है। दक्षिण वर्ती या दाहिनें हाथ की ओर घूमना यही (प्रदक्षिणा) शब्द का अर्थ है। इसी लिये जितनी अधिक प्रदक्षिणा की जाये, उतनी ही अधिक दिव्यता के पुट हमारे व्यक्तित्व को प्राप्त होगें। और व्यक्तित्व का वलय उससे पुनीत होकर स्वच्छ होगा। क्या यह तर्क शुद्ध तथा विज्ञान सम्मत निष्कर्ष नहीं है? धर्म शास्त्र का स्वरूप अधिकतर आधिदैविक है। इसी कारण हमारी ग्रहण शक्ति या प्रज्ञा को यदि उसी के अनुरूप हम दिव्य बना सकें, तो शास्त्रों में वर्णित सभी तत्व तर्क, विज्ञान तथा प्राकृतिक नियमों इत्यादि पर आधारित दिखाई देंगें। और हम उन्हे शास्त्रीय तथा शास्त्र सम्मत कह सकेंगे। देवी आभामण्डल की गति दक्षिण वर्ती होती है। उसके विरुद्ध अपनी गति होनें पर अर्थात वामवर्ती प्रदक्षिणा करनें से हमारे अन्दर जो दिव्य परमाणु पहले से हैं, उनमें तथा ज्योतिर्मण्डल की गति में संघर्ष निर्माण होगा, उसमें उनका अपव्यय होकर वे नष्ट हो जायेंगें। दिव्य या पुण्य कणों का नाश होना एक प्रकार से पाप ही है। इसके विपरीत दिव्य परमाणुओं का संचय पुण्य है। इसी लिये वामवर्तिनी परिक्रमा पाप रूप है तथा वर्जित है। दक्षिणवर्तिनी परिक्रमा पुण्यरूप होनें से ग्राह्य एवं विहित समझी जाती है। कार्य-कारण का इस प्रकार विवेचन करनें से यह पता चलता है, कि यह परम्परागत

अन्ध विश्वास न होकर विज्ञान सम्मत तथ्य है। परिक्रमा के योग्य विभूतियों की परिक्रमा न करने से हम अपने ही हित का तथा कल्याण का नाश कर देते हैं। इस प्रकार पाप के भागी बनते हैं। इसका एक उत्तम दृष्टान्त इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न होने वाले महाराज दिलीप का है, स्वर्ग से पृथ्वी पर लौटते समय उन्हें मार्ग में देवताओं की दिव्य गौ कामधेनु दिखाई दी, पर राजा दिलीप ने उस ओर दुर्लक्ष्य किया और उसकी परिक्रमा नहीं की, इस पर गो माता क्रुद्ध हो गयीं। उसका परिणाम यह हुआ, कि परिक्रमा करने से उन्हें जिन पुण्य कर्मों का लाभ हुआ होता और उसके कारण उनके पूर्व जन्मों के पाप के फल स्वरूप संतान न होने में जो बाधा थी, उसका नाश होगया होता, जिससे आगे चल कर संतान की प्राप्ति हो सकती थी। परन्तु दिलीप के ऐसा न करने के कारण वह बाधा ज्यों की त्यों बनी रही। उन्हें निःसन्तान रहने का दुख भोगना पड़ा। परन्तु कुछ काल के बाद ऋषि वसिष्ठ को अपनी दिव्य दृष्टि से राजा के इस पूर्व के प्रमाद का पता चला, उसके परिमार्जन के लिये, प्रायश्चित के रूप में राजा को कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गौ की दीर्घ काल तक सतत और निरलस होकर सब प्रकार की सेवा करनी पड़ी। इस सेवा से परिक्रमा न करने के पाप से राजा के शुद्ध होने पर, नन्दिनी एवं स्वयं कामधेनु ने राजा पर प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया, जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। यह कथा जान कर लोगों को भली भाँति

ज्ञात है। तात्पर्य यह है, कि विभूति की परिक्रमा न करना प्रमादमात्र है। केवल महादेव जी के बारे में तेजो लहरी की गति केवल दाहिनी ओर नहीं है, अतः अरघे (जलहरी) के निचले भाग के कोनें तक जाकर यह पुनः वापिस लौटती है। इस कारण उनकी परिक्रमा विशिष्ट प्रकार से दोनों ओर करनें का विधान है। अर्थात इस कारण का भी आकलन किया जा सकता है। परन्तु इसको विज्ञान सिद्ध कार्य-कारण परम्परा का विवेचन करने से विषय विस्तार का भय है, इसी लिये इस लेख में हमनें केवल इसका उल्लेख मात्र कर दिया है। देवता के चारो ओर घूमनें वाले आभामण्डल का चिन्ह ही (स्वस्तिक) होनें के कारण तथा वह देवता का प्रतीक होनें के कारण शास्त्र में उसे शुभ माना गया है, तर्क से भी इसे सिद्ध किया जा सकता है। इसे यों देखिये — दिशायें मुख्यतः चार हैं। खड़ी तथा सीधी रेखा खींच कर जो धन चिन्ह (+) जैसा आकार बनता है, वह आकार चारों दिशाओं का द्योतक (प्राचीन तथा अर्वाचीन समय में और पूर्वी तथा पश्चिमी देशों में) सर्वत्र तथा सदैव यही माना गया है। तेजो लहरी चारों दिशाओं में अर्थात सभी दिशाओं में दाहिनी ओर से गतिमान है, यह प्रदर्शित करनें के लिये उसका रेखा चित्र किस प्रकार बनाया जा सकता है। इसका सीधा सरल उत्तर है, कि धन चिन्ह के आकार की चारों भुजाओं के कोनें से ९० अंश का कोण बनानें वाली एक रेखा दाहिनी ओर खीचनें से यह पूरा कार्य हो जाता है। इसका प्रारम्भ ऊपर वाली भुजा

से करना स्वाभाविक ही है। प्रथमतः आकार को जो ऊपर की भुजा है। वहाँ दाहिनी दिशा में एक रेखा खींची जाय। उसके बाद उस पूरे आकार को उस रेखा की दिशा में अर्थात दाहिनी ओर घुमानें से पूर्वी दिशा के बायीं ओर की भुजा चक्रगति से ऊपर की ओर आजायेगी। अब दाहिनी ओर रेखा खींचनें से और इस प्रकार सब मिला कर चार बार करनें से जो चिन्ह बनता है, वह दाहिनी ओर की गति अर्थात दक्षिणवर्ती गति का प्रतीक है (तेजोवलय के दाहिनी ओर से गतिमान होनें के कारण पर्याय से तथा इस रेखा चिन्ह को देवता के तेज का ही प्रतीक मानना होगा। देवता का तेज कल्याण कारक होता है, यह उपासकों के लिये श्रेष्ठ है। इसी लिये हम तेज की गति के अनुरूप गति को स्वीकार करते हैं अर्थात परिक्रमा करते हैं। उसी प्रकार कल्याणकारी गति के चिन्ह को (स्वस्तिक) कहा जाना उचित ही है। (स्वस्ति) का अर्थ है — क्षेम, मंगल इत्यादि प्रकार की शुभता एवं (क) अर्थात कारक या करनें वाला। इसी लिये देवता का तेज शुभ करनें वाला — स्वस्ति करनें वाला है, और उसका गति सिद्ध चिन्ह (स्वस्तिक) कहा गया है। परिक्रमा के विवेचन में यह थोड़ा सा विषयान्तर दिखाई पड़ सकता है, तो भी स्वस्तिक के चिन्ह का रहस्य भी परिक्रमा के रहस्य के समान किस प्रकार है। इसका सहसा ध्यान आनें के कारण तथा इस चिन्ह के सम्बन्ध में काफी साधकों में जिज्ञासा होनें के कारण इसका विवेचन किया गया है। उपासना का

रहस्य जानने के लिये इच्छुक जिज्ञासुओं को यह उपयोगी सिद्ध होगा। ऐसी आशा है। सारांश यह है, कि देवता के तेज की गति और उसके पुण्य कारक प्रभाव में परिक्रमा तत्व का शास्त्रीय रहस्य निहित है। यह विचार वान् लोगों के ध्यान में अब सहज ही आजायेगा।

उपासना का मनोवैज्ञानिक आधार — योगसूत्र में बताया गया है, कि मनुष्य जो कुछ भी सोचता है, वह तदनुरूप हो जाता है। भगवद्गीता में कहा है। कि प्रत्येक मनुष्य की लगन उसके स्वभाव के अनुसार ही होती है। यह उसका सत्व है, इसी के अनुसार वह अपने मित्रों को, गुरुओं को, देवी देवताओं को चुनता है। और उन पर अपनी श्रद्धा और भक्ती प्रकाशित करता है। यह एक सामान्य मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। मनुष्य की जैसी श्रद्धा होती है, उसी के अनुसार उसका व्यक्तित्व बन जाता है, जैसी जिसकी भावना वैसी उसको सिद्धि। आधुनिक मनोविज्ञान ने अचेतन मन की कुछ गूढ़ क्रियाओं की खोज करके यह बताया है, कि मनुष्य अपनी आत्मा का साक्षात्कार अनेक प्रकार की गुप्त चेष्टाओं के द्वारा करता है। इस प्रकार की चेष्टाओं में एक चेष्टा अन्तरीकरण अथवा आत्मीकरण की चेष्टा है। जो बात हमारा भीतर मन चाहता है, उसके अनुरूप वह किसी बाहरी आदर्श अथवा व्यक्ति का ध्यान करने लगता है। जब यह ध्यान बहुत अधिक बढ़ जाता है। तब ध्याता और ध्येय में सम्पूर्ण एकत्व स्थापित हो जाता है।

तादात्मीकरण की सामान्य स्थिति को हम किसी ड्रामा अथवा खेल देखनें वाले दर्शकों की मनोवृत्ति में देखते हैं। बिना तादात्मीकरण के होने वाली घटनाओं का आनन्द ही नहीं लिया जा सकता। साहित्य निर्माण और साहित्य रसास्वादन में भी अचेतन मन की यही तादात्मीकरण की प्रक्रिया काम करती है। इसे साहित्य समाज आलोचकों नें काल्पनिक तादात्मीकरण (इमैजिनेटिव आइडेन्टीफिकेशन) कहा है। इस तादात्मीकरण की पराकाष्ठा हम उपासक की मनों वृत्ति में देखते हैं। उच्च कोटि की उपासना में मनुष्य स्वयं को खो देता है। और केवल उपास्य उसके लिये रह जाता है। थूलेसने अपनी (साइकोलॉजी ऑफ रिलीजन) नामक पुस्तक में यह बात बताई है, कि सेन्ट कैथेरा इन एक विशेष समय पर, जब कि हजरत ईसा क्रासपर कीले से ठोंके गये थे, अपनें शरीर के विभिन्न स्थलों में उसी प्रकार की पीड़ा का अनुभव करती थीं, जिस प्रकार की पीड़ा शरीर में कील ठोंकने से होती है। ऐसी अवस्था में एक डाक्टर उनकी देख भाल करते थे। उन्होनें कैथराइन की पीड़ा को वास्तविक अनुभूत पाया। कहा जाता है, कि मीरॉं भगवान श्री कृष्ण के प्रेम में इतनीं डूब जाती थी, कि श्री कृष्ण रूप ही बन जाती थी, और जब वह मरी तो द्वारिकाधीश में ही समा गयी।

उपासना की आवश्यकता — 'उपासना' शब्द का अर्थ ईश्वर के समीप बैठना है।

बौद्ध धर्म में उपासना — उपासना दो प्रकार की होती है, लौकिक और अलौकिक। लौकिक उपासना का अर्थ होता है (अभ्यास) उद्योग किसी चरम उद्देश्य की सिद्धि के लिये लगातार प्रयत्न। अलौकिक उपासना कहते हैं, उन आध्यात्मिक या मानसिक साधनाओं को, जो योग अथवा तन्त्र की प्रक्रिया से अलौकिक सिद्धियों की अथवा मुक्ति की प्राप्ति के लिये की जाती है। बौद्धों की तान्त्रिक उपासनाओं में सर्व प्रथम आवश्यकता होती है, एक सुसंस्कृत साधक की, जिसकी परिक्षा किसी अधिकारी गुरु के द्वारा की जा चुकी हो, तथा जिसे तान्त्रिक उपासना के योग्य करार दिया जा चुका हो। जिस प्रकार तान्त्रिक उपासना के अनेक भेद हैं, उसी प्रकार उपासना की कठिनता एवं सुगमता के अनुसार अनेक श्रेणियाँ होती हैं। तन्त्रों की भी चार श्रेणियाँ हैं।

१= क्रिया तन्त्र =२= चर्यातन्त्र =३= योगतन्त्र =४= अनुत्तर योगतन्त्र।

और इन चार प्रकार के तन्त्रों से सम्बन्ध रखने वाले उपासक भी चार श्रेणियों में विभक्त हैं। वज्रयानीय बौद्ध धर्म का मुख्य गढ़ इस समय महाचीन (तिब्बत) है। वज्रयान का गायत्री-तुल्य उपासना का मुख्य मन्त्र (ॐ मणि पद्मे हुम्) इन्हीं बोधिसत्व अवलोकितेश्वर का षड़क्षरी महामन्त्र है।

उपासना का सार — उपासना शब्द बहुत प्रचलित है। इसके अर्थ के सम्बन्ध में कोई विशेष वैमत्य नहीं है। अपने उपास्य या आराध्य के निकट श्रद्धालु अथवा मुमुक्षु के रूप में बैठना ही उपासना है। (उप + आसना)। पारलौकिक कल्याण के हेतु भगवान की उपासना ही वास्तविक शास्त्र सम्मत उपासना है। यों लौकिक कल्याणार्थ - शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों की उपासना भी छोटे पैमाने पर सर्वत्र व्यवहृत है। यह निम्न कोटि की उपासना है, तथा शास्त्र विगर्हित है। उपासना में उप और आसना ये दो शब्द हैं। उप का अर्थ समीप और आसना का अर्थ स्थिति है। अर्थात अपने उपास्य (इष्टदेव) के प्रति अनुराग होने पर उनका श्रद्धा भक्ति से जो चिन्तन, अर्चन, पूजन किया जाय, उसे 'उपासना' कहते हैं। प्रत्येक जाति और प्रत्येक सम्प्रदाय में किसी न किसी रूप में उपासना प्रचलित है। उपासना के बिना कोई भी जाति और सम्प्रदाय आत्मोन्नति नहीं कर सकता। अतः प्रत्येक जाति और प्रत्येक सम्प्रदाय में उपासना की विशेष आवश्यकता है। विचार करने से सिद्ध होता है, कि उपासना ही मनुष्य का मुख्य आहार है। उसके बिना उसको आत्म संतुष्टि नहीं हो सकती। सविता (सूर्य) से सम्बन्ध होने के कारण इसको 'सवित्री' कहते हैं। ब्रम्ह (वेद) से सम्बन्ध रखने तथा ब्राम्हणों की उपास्या होने से इसको (ब्रम्ह गायत्री) कहते हैं। उपनयन के समय

द्विज बालक को गुरु के द्वारा गायत्री मन्त्र का उपदेश होने के कारण इसको (गुरु मन्त्र) कहते हैं। वेदो की जननी होने के कारण इसको (वेद माता) कहते हैं।

उपासना का मूल— उपासना का अर्थ है उप (पास) आसन (बैठना) पास बैठना। हम जिसकी उपासना करते हैं, उसके पास बैठ जाते हैं। परमात्मा की उपासना के समय परमात्मा के पास आसन जमा लेते हैं। शास्त्रों में इसी अवस्था को (सामीप्य) मुक्ति के नाम से पुकारा गया है। इसके पहले (सालोक्य) होता है। तदनन्तर (सारूप्य) और (सायुज्य) की उपलब्धि होती है, अर्थात उनके (स्वरूप) को (आत्मसात) करते हैं। अन्त में वही-वही है, दूसरा नहीं।

है, कहूँ तो है, नहीं, नहीं कहूँ तो है।
है अरु नाहि के बीच में, जो कछु है सो है॥

भाव और अभाव का आधार जो स्वभाव है, वही (सत) है, और वही उपासना का मूल है। उस सत के चार पैर हैं। सत्य—ज्ञान—प्रेम और आनन्द। जो चित्त, बुद्धि और अहंकार तथा मन के द्वारा व्यक्त होकर सारे लोक में विचरण करता रहता है। (भ) यानी (भवन) (उत्पत्ति) (ग) यानी (गमन) (प्रलय) जिस (सत) के आधार पर चलता है। वही भगवान है, और उसी के समीप रहना उपासना का तात्पर्य

प्रश्न· चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय।

कमाल का
जवाब = चलती चक्की देख कर, हँसे कमाल ठठाय।
(कीली) से लागा रहे तो, वह दाना बच जाय॥

जो दाना उस मूल (तत्) (सत्) से लगा रहता है, वह बचता है। नहीं तो (दो पाटन के मध्य में, साबित बचा न कोय) कौन चक्र से बच सकता है, यदि चक्र के (मूल) की शरण ग्रहण नहीं की जाय।

इस्लाम धर्म में उपासना —— मुसलमानों का गायत्री मन्त्र कलमा है। कल में दो दिल से मानना और जुबान से कहना चाहिये, कल में पाँच हैं। १= कलमा पाकी का है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, हजरत मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

२= कलमा गवाही का। मैं गवाही देता हूँ, कि अल्लाह के सिवा गवाही के लायक कोई नहीं है। वह एक है, और उसका कोई शरीक नहीं है। और मैं इकरार करता हूँ, कि हजरत मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

३= कलमा बुजुर्गी का। अल्लाह पाक है, और तमाम तरीफ अल्लाह के लिये है। और नहीं है कोई मअबूद सिवा अल्लाह के, और अल्लाह बहुत बड़ा है, और नहीं है ताकत गुनाहों से बचने और नेकी करने की, मगर अल्लाह की मदद से, जो आलीशान और बुजुर्गी वाला है।

६= कलमा एकपनें का। नहीं कोई लायक इबादत के सिवा अल्लाह के, और नहीं है कोई शरीक उसका, उसी की तमाम बादशाही है। और उसी के लिये तमाम तारीफें हैं। वही जिन्दा करता है और वही मारता है। उसी के हाथ में भलाई है और वह हर चीज पर कादिर है।

५= कलमा कुफ्र को दूर करनें का। मैं बख्शिश माँगता हूँ अल्लाह से, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। हमेशा जिन्दा और कायम रहनें वाला है। और मैं तोबा करता हूँ उसी की तरफ।

इसके सिवा नमाज़ के अजाँ मन्त्र सात हैं। नमाज के लिये सात शर्तें कही गयी हैं। खुदा की इबादत (उपासना) करनें की एक तरकीब है, जिसको अल्लाह नें अपनें पैगम्बर के मारफत बन्दों को सिखाया है। नमाज़ गुजार जन्नती है। और नमाज़ छोड़नें वाला सख्त गुनाहगार है। पैगम्बर नें फर्माया है कि नमाज दीन का सूतून (खाम्बा) है, और नमाज़ मेरी आँखों की ठंडक है। अजाँ के मानें खबर करनें के हैं। लेकिन नमाजों के लिये खासे अल्फाज से खबर करनें को अजाँ कहते हैं। अजाँ कहना सुन्नत है। अजाँ हर नमाज के वक़्त में कहना चाहिये, अगर वक्त से पहले कह दें तो वक्त आनें पर दुबारा कही जाय। अजाँ का कहना औरतों के लिये सुन्नत नहीं है। अजाँ यह है।

१= अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर (दो बार कहें) अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है।

२= अशादु अल्-ला इलाह इल्लल्लाह (दो बार कहें) मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा दूसरा कोई इबादत के लायक नहीं है।
३= अशहदु अन्न मुहम्मदुर रसूलुल्लाह् (दो बार कहें) मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।
४= हय्य अलस्सोलात (दो बार बांये तरफ मुँह करके कहें) नमाज के लिये आओ।
५= हय्य अलल् फलाह् (दो बार दांये तरफ मुँह करके कहें) नेक काम के लिये आओ।
६= अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर (अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है।)
७= ला इलाहा इल्लल्लाहु (अल्लाह के सिवा दूसरा कोई मअबूद नहीं।

सुबह की अजाँ में नं॰ ५ और ६ के बीच दो बार यह कहना। अजाँ- (अस्सोलातु खैरुम् मिनन्नौम) नींद से नमाज अच्छी है। नमाज इस्लाम धर्म की मुख्य उपासना है। इस्लाम धर्म में ही सूफी नामक एक पन्थ है, उसका उपासना मार्ग थोड़ा सा भिन्न होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता अनुष्ठान— श्रीमद्भगवद्गीता सुप्रसिद्ध धार्मिक आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यह साक्षात् भगवान की दिव्य वाणी है। भगवान श्री शंकराचार्य जी, स्वामी श्री रामानुजाचार्य जी, स्वामी श्री निम्बार्काचार्य जी तथा स्वामी रामानन्दाचार्य जी प्रभृति सभी आचार्य महानुभावों ने इसको वेदान्त की प्रस्थानत्रयी में माना है। और अपनी-२ अनुभूति के अनुसार इस पर व्याख्या टीका आदि प्रस्तुत की है, गीता मन्त्रमयी है। इसके दिव्य श्लोकों के अनुष्ठान अमोघ फल प्रद हैं। मेरा स्वयं अनुभव है, उन अनुष्ठान के मन्त्रों में से कुछ सविधि नीचे लिखे जा रहे हैं। किन्हीं महानुभाव ने कहा है।
(यंत्र मंत्र सगुनौती जेती। गीता महँ जानो सब तेती॥)
नीचे जो मंत्र लिखे जाते हैं, उनमें से जिसका अनुष्ठान करना हो, उसके पहले तीन हजार जप कर ले, इससे वह सदा के लिये सिद्ध हो जाता है। फिर चाहे जब, चाहे जितनी बार उसका अनुष्ठान किया जा सकता है। अनुष्ठान में साधक की धारणा, श्रद्धा और पवित्रता अपेक्षित है। साधक जितना ही अधिक श्रद्धावान और पवित्र धारणायुक्त होगा, उतना ही शीघ्र या विलम्ब से उसे अनुभव होगा। इसके साथ एक गीता यन्त्र दिया जाता है, उसका पूजन करके मन्त्र सिद्ध और मन्त्र जप करने से विशेष फल लाभ होता है। यन्त्र का अलग भी अनुष्ठान किया जाता है। इस पर अन्त में लिखा जायेगा।

मन्त्र

१= कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः, पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढ़चेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥
(गीता २।७)

मन में किसी विषय का कोई प्रश्न हो या किसी सद् वस्तु को प्राप्त करनें की आकांक्षा हो, तो उपर्युक्त श्लोक का देवशयनी (आषाढ़ शुक्ल ११) एकादशी से प्रारम्भ कर देवोत्थानी (कार्तिक शुक्ल ११) एकादशी तक प्रत्येक एकादशी को रात्रि के समय पवित्र वस्त्र धारण कर तथा पवित्र शय्या पर बैठ कर मन में श्रद्धा युक्त भाव से भगवान का स्मरण करते हुये एक सौ आठ बार पाठ करे। ऐसा करने पर किसी भी एकादशी को स्वप्न में भगवान प्रगट होकर उसके प्रश्न का उत्तर देंगें, साधन बतायेंगे या किसी ऐसे व्यक्ति का नाम बतायेंगे, जिसके पास जानें से प्रश्न का उत्तर मिले या अभिष्ट की सिद्धि हो।

२= स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥
(गीता ११।३६)

इस श्लोक के द्वारा जल को या विभुति को अभिमन्त्रित करके पिला देने से भूत, प्रेत बाधा का निवारण होता है। रोगी को देनें से रोग नाश होता है। गौ आदि पशु किसी रोग से पीड़ित हो तो एक लोटा जल इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सानी के साथ मिला कर या ऐसे ही पिला देनें से पशु रोग मुक्त हो जाता है।

३= त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण, स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम्, त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥(गीता ११।३८)
इस श्लोक से झाड़ देने पर भी प्रेत बाधा का निवारण होता है। कुश से या नीम की डाल से झाड़ना चाहिये।

४= वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः, प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः, पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥ (गीता ११-३९)
इस श्लोक के प्रति दिन कम से कम एक सौ आठ बार जप करने से दरिद्रता दूर होती है।

५= नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं, सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥ (गीता ११।४०)
इस श्लोक के प्रति दिन कम से कम एक सौ आठ बार जप करने से लक्ष्मी की वृद्धि और कार्य की सिद्धि होती है।

६= यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि, विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं, तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥
इसके अनुष्ठान से नाराज हुये पुरुष प्रसन्न हो जाते हैं।

७= पितासि लोकस्य चराचरस्य, त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो, लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ (गीता ११।४३)
इसके अनुष्ठान से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

८= तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं, प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः, प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त, मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन, सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते॥ (गीता ११।४४।४६)
इन दो श्लोकों के अनुष्ठान से बड़े से बड़ा अपराध क्षमा हो जाता है।

९= अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा, भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं, प्रसीद देवेश जगन्निवास॥ (गीता ११।४५)
इस श्लोक के अनुष्ठान से भगवान की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

१०= न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानै, र्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके, द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर॥
मा ते व्यथा मा च विमूढभावो, दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं, तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य॥
इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा, स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं, भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा॥ (११।४८।५०)
इन तीन श्लोकों के अनुष्ठान से भगवान की प्रसन्नता और उनके दर्शन प्राप्त होते हैं।

११= नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा॥ (११।५३)
इसके अनुष्ठान से भगवान की परम प्रसन्नता होती है।

ऊपर तीन हजार जप करके मन्त्र सिद्ध करने की बात लिखी गयी है। तीन हजार जाप के आदि अन्त में समग्र गीता का पाठ और मध्य में ११वें अध्याय के ११ पाठ नौ दिनों तक कर लेने से विशेष सिद्धि होती है।

कुछ और प्रयोग — गीता के पन्द्रहवें अध्याय का भोजन करने से पूर्व पूरा पाठ कर लिया जाय, उसके बाद भोजन किया जाय तो दारिद्रय का नाश और सर्व समृद्धि का लाभ होता है।

श्लोक — शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत्॥
यतो-यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्॥ (६।२५।२६)

इन दोनों श्लोकों के अनुष्ठान से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

परमार्थनिष्ठ साधकों के लिये तो गीता परम अक्षय अनुपम धन है ही, सकाम भाव से अनुष्ठान करनें वालों के लिये भी वह दिव्य कल्पवृक्ष के समान है। ताम्र (ताँबे) के पतरे पर एक षट्कोण खुदवा लिया जाय अथवा काष्ठपीठ पर चन्दन से प्रतिदिन लिख कर पूजन किया जाय। षट्कोण यन्त्र के बीच में (ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय।) यह द्वादश अक्षर मन्त्र लिखे और षट्कोण के एक कोने में (अर्जुनाय नमः) दूसरे में (भीष्माय नमः) तीसरे में (युधिष्ठिराय नमः) चौथे में (द्रोणाचार्याय नमः) पाँचवें में (व्यासाय नमः) छठे में (संजयाय नमः) लिखा जाय

इस चक्र के बाहरी भाग को बारह ॐकार लिख कर घेर दिया जाय। तदनन्तर अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, चन्दन, तुलसी, पुष्पादि, धूप दीप, नैवेद्य, शुद्धाचमन तथा ताम्बूलादि अर्पण करके नौं दिनों तक गीता का पाठ भक्ति-श्रद्धापूर्वक किया जाय। इससे सर्व कार्यों की सिद्धि होती है।

मंगला = शुभ १ वर्ष

ॐ ह्रीं मंगलायै स्वाहा। ॐ
ॐ मं मंगलायै स्वाहा।

भद्रिका = शुभ ५ वर्ष

ॐ भद्रिके भद्र
देहि अभद्र
नाशय स्वाहा

पिंगला = अशुभ २ वर्ष

ॐ ग्लौं पिंगले
वैरि कारिणि प्रसीद
फट स्वाहा

उल्का = अशुभ ६ वर्ष

ॐ उल्के मम
रोगं नाशय जृं
भय स्वाहा

धान्या = शुभ ३ वर्ष

ॐ श्रीं धनदे
धान्ये स्वाहा

सिद्धा = शुभ ७ वर्ष

ॐ ह्रीं सिद्धे मे
सर्व मानसं साधय
स्वाहा

भ्रामरी = अशुभ ४ वर्ष

ॐ भ्रामरी जगत
मधीश्वरी भ्रामरी
क्लीं स्वाहा

संकटा = अशुभ ८ वर्ष

ॐ ह्रीं संकटे मम
रोगं नाशय
स्वाहा

शाक्त तन्त्रों में उपासना — इससे स्पष्ट हुआ, कि छायाविनिर्मित स्वंय महाकाल ही जब मानसिक शिव हैं, तो उस शिव तत्व से उत्पन्न समस्त सृष्टि ही काल्पनिक है। एवं मूल भूत केवल शुद्ध शिव तत्व ही सर्वत्र स्वयं ही विराजमान है। जैसे सप्तशती वर्णन करती है। साधना में आसनादि सर्व प्रथम सामग्री है। यदि ये चैतन्य हैं, तो अन्य कार्य स्वयं होते जाते हैं। वास्तव में जब तक कुण्डलिनी चिर निद्रा में है, तब तक जीव बहिर्मुखी है। इसके अन्तर्मुखी होने का केवल मात्र उपाय कुण्डलिनी का जागरण है, जिससे अन्तर्मुखी होने का उत्पन्न हो। तन्त्र शास्त्र क्रियात्मक है। इसमें प्रत्यक्ष प्रयोगों का वर्णन है। शक्तिपात से कुण्डलिनी का चैतन्य तथा साधनों से ऊर्ध्वगमन तथा ग्रन्थि भेद सम्भव है। वस्तुतः मूलाधार में कुण्डलिनी का जागरण अर्थात् शक्ति पात एवं सहस्त्रार में महाशिव महाकाल पर स्थित होना ही शाक्त उपासना का सार है। अर्थात न्यास, मुख्यतया महाषोढ़ा, महाशक्ति न्यास, महाचक्र न्यास आदि शरीर को वज्रवत बनाते हैं, तथा कवच (शरीर कवच) हृदय (मित्र) स्तोत्र (सहचर) शतनाम (अङ्गरक्षकदल) तथा सहस्त्रनाम (सेना) हवन (पताका) तर्पण (पर्जन्यास्त्र) आदि-आदि से शरीर साक्षात्कार एवं अध्यात्म स्फोटादि के समय स्थित रह सकता है। एवं मूल मन्त्र का पुरश्चरण निर्मलत्व प्रदान कर साधन के योग्य बनता है। किन्तु सर्वथा ही यह अत्यन्त

आवश्यक है कि सबसे आवश्यकीय नियमों का पूर्णरूपेण प्रतिपालन हो। नियमों में त्याज्य हैं, परान्न, प्रतिग्रह और पर स्त्री आदि। पराये अन्न से जीभ जल चुकी, प्रतिग्रह-ग्रहण से हाथ जल गये, पर स्त्री से मन दग्ध होगया, तब कापि सिद्धि कहाँ से हो। तन्त्र मनुष्य योनि ही नहीं, वरं पशुयोनि को आपन्न स्त्री जाति का भी समुचित आदर करता है। यद्यपि तन्त्र के लिये, जिसनें जैसा चाहा वैसा अपवाद आरोपित किया, पर तन्त्र इन अपवादों का खण्डन करनें में मौन रहा। कारण कि (कौलोपनिषद्) की उक्ति है। यथा- अर्थात तर्कशास्त्र पारंगत होते हुये भी अन्यायारोपण का प्रतिकार न कर उसे सहन करे और स्वधर्म का प्रतिपादन कर उसे महत्व न दे। इस कारण तन्त्र के किसी भी आचार्य नें आज तक अपवाद सहन कर वस्तुस्थिति समझानें का प्रयत्न नहीं किया, सप्तशती में भी उल्लिखित है। यथार्थ में साधक की सफलता उसके - (जिह्वोपस्थ परित्यागी) होनें में है। (कुलार्णव) इङ्गित करते हैं। व्यवहार में भी तन्त्र के सभी कर्म मन्त्र युक्त तथा तादात्म्यभाव प्राप्ति के लिये व्यवहृत हैं। वदन-प्रक्षालन के लिये भी निम्न विधान है। यहाँ कीट भृङ्ग न्याय से विचार किया जा सकता है, कि सहज स्वभाव में ही देवताभाव का स्फुरण स्थायी होनें लगता है। पूर्व वर्णित क्रमदीक्षा उपासना का अधिकार प्राप्त करनें के लिये सोपान

रूप है। शास्त्र निर्देश है, कि मुखशुद्ध्यर्थ वाला षोड़शाधार, शरीर शुद्ध्यर्थ पञ्चदशी तथा बिना श्री विद्या-दीक्षा के मनुष्य अदीक्षित ही माना जाता है कारण कि श्री विद्यान्तर्गत सभी विषय भूत शुद्धि, न्यास जाल, तत्त्वशुद्धि अन्तर्याग, अन्तर्बहिर्यजन के पूर्ण विस्तार युक्त पूजन में मनुष्य को दक्ष होना चाहिये। शास्त्र लिखते हैं — जिसकी पुष्टि (कौलोपनिषद्) भी करता है। यथा — इस प्रकार पूर्णक्रम को समाप्त करने पर पूर्णाभिषेचन और पूर्ण दीक्षा सम्पन्न होती है, जहाँ कि तन्त्र के चार महावाक्य प्रदान होते हैं। ये ही आधार भूत महावाक्य समस्त क्रिया कलाप, कर्म काण्ड, अन्तर्याग या ज्ञान काण्ड में सर्व संशयछेत्ता हैं, तथा अन्तक्रिया में तर्पित-पूजित होते हैं। यह साधक को पूर्ण शिशुत्व-अवस्था प्रदान करते हैं। जिससे वह श्रीमदाद्या के दिग्वस्त्र-ध्यान का अधिकारी बनता है। वयस्क बालकों के सम्मुख माँ वस्त्राभरण से सज्जित रहती हैं। पूर्ण अबोध शिशु संसार के ज्ञान से परे (भेद बुद्धि रहित) है, उसके समक्ष केवल करकाञ्ची ही पहिने है। वहाँ के आभूषण विचित्र ही हैं, और चिद्-विभूति के द्योतक हैं। यथा — उपासना का दैनिक कार्यक्रम निद्रात्याग से पुनः शयन तक मुख्य रूप में निम्न हैं। प्रातः वन्दन — जो अधिकारी भेद से गुरु, देवता, आत्मा से प्रारम्भ होते हैं, ने [illegible]- २ प्रकार के हैं। इसी प्रकार स्नान भी अधिकारी भेद से अनेक प्रकार के हैं। यथा — इसके उपरान्त मन्त्र पूजन करना चाहिये, जिसके विषय में शास्त्र

इङ्गित करता है/ ऐसे मन्त्र पूजन के पूर्व यह अत्यन्त आवश्यक है, कि उपासक निम्न विषयों में पूर्ण प्रकारेण दक्ष हो। यथा- द्वारयजन के उपरान्त विघ्नशान्ति निम्न अस्त्रों द्वारा सम्भव है। यथा- अनन्तर भूतशुद्धि, न्यास जाल, तन्मुद्रा तथा जीवनाशविद्या, कामधेनु विद्या, अन्तर्याग आदि में पूर्णरूप से निष्णात व्यक्ति ही (समय) प्राप्त कर सकता है, जिससे कि वह अन्तर्याग रूप जप में गुरु दीक्षित मार्ग से ध्यानस्थ तन्मयता प्राप्त कर सके। ~~पंचा~~ पंचाङ्ग, सप्ताङ्ग, एकादशाङ्ग पुरश्चरणों में अनुभव प्राप्त कर उन अनुभवों के फल स्वरूप अपना स्थूल-सूक्ष्म कारण शरीर, अहंता-ममताभाव भी देव पर पूर्ण बलिदान रूप से न्यौछावर कर तादात्म्यभाव युक्त अवस्था प्राप्त होती है। उपासक के अनुभव उसे स्वयं प्रतीति दिलाते हैं, कि वह अब साधक पद के योग्य हुआ। सिद्धों, जाग्रत्स्थानों अथवा विशेष पर्व या विशेष रात्रि के लिये उसे पूछना नहीं पड़ेगा। षट्चक्रस्थ स्पन्दन उसे स्वयं सम्मुख उपस्थित पदार्थ की वस्तु स्थिति का परिचय दे देगा। उपासना पद्धति के लिये निम्न पुस्तकें जैसे- उदयाकर पद्धति, सौभाग्यरत्नाकर, रत्नमाला, अष्टादशचीन अथवा राघवभट्ट प्रणीत पद्धति आदि इनका पर्याप्त वर्णन देते हैं। वास्तव में अनुशीलन किया जाय तो ज्ञात होता है, कि शाक्त उपासना में बहिरंग तथा अन्तःपूजन में किञ्चिन्मात्र भी

भिन्नता नहीं है। प्रायः समस्त क्रियायें एक सी ही हैं। इस प्रकार मनुष्य साधक सोपान में आरोहण करने पर साधना का अधिकारी बनता है। जिसके लिये शास्त्र लिखते हैं। साधनावस्था के सात कक्ष हैं।

1 = मृदु = 2 = कोमल = 3 = चूड़क - अचूड़क = 4 = श्मशान = 5 = चिता = 6 = पञ्चमुण्ड = 7 = मुण्डदुर्ग अथवा शव। मुण्डदुर्ग से यहाँ १००८ मुण्ड गृहीत हैं। शास्त्रों में निर्दिष्ट है। यथा — साधना का मुख्य उद्देश्य प्रत्यक्ष दर्शन है। जैसा कि (सिद्ध मत रहस्य) वर्णन करता है। यदि पूर्ण प्रकारेण देखा जाय तो कारण शरीर अथवा मेरुदण्डान्तर सुषुम्नान्तर में स्थित शक्ति क्या बाह्यबल (आसन-प्राणायामादि) से जागृत हो सकती है? कदापि नहीं। गोस्वामी कृत रामायण (बाल०) में जिसके लिये लिखा है।

(भव-भव-विभव पराभव कारिनि, विश्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥)

ऐसी कारण शरीर रूप तिमंजल में रहने वाली त्रिपुरा को क्या बल प्रयोग या बाह्यशरीर के तोड़ मोड़ से उठाया जा सकता है? कुण्डलिनी का विषय केवल त्रैपुर अर्थात् तन्त्र का विषय है। तन्त्रशास्त्र, जिसके लिये कुलार्णव में कहा गया है। (गुप्ता कुलवधूरिव।) कहते हैं। तन्त्र का परम रहस्य यही है, कि किसी भी आन्तरिक कूट विषय पर पूर्ण प्रकाश नहीं डाला गया है। कुंजी केवल श्री गुरु कृपा ही है, और श्री गुरु इसका उपाय केवल मात्र वीर साधन ही बताते हैं। (कुल) शब्द का अर्थ (शक्ति)

अथवा (कुण्डलिनी) है। (अकुल) शब्द का अर्थ शिव, अर्थात् आदिनाथ महाकाल है। इस कुलाकुल मार्ग में विहारशील — साधक की पदवी (कौल) है। पर केवल मात्र इसका पथ वीर साधन ही है। अन्य प्रकार से यह कदापि सम्भव नहीं। प्रसङ्गवश लिखना पड़ता है, कि जो अत्यन्त कायर हैं, वृकोदर हैं, उनसे यह कार्य — असम्भव है। जिह्वोपस्थ-त्याग से ही तीव्राति तीव्र संवेग साधना में सहायक होता है। वीर सम्पत्ति, आसन, माला, कङ्कण और पात्र कहे जाते हैं। ये भी उसी के अनुरूप होनें चाहिये। यथा — इस प्रकार अन्तिम तीसरी अवस्था, जिसे सिद्धावस्था कहा गया है। अथवा दिव्यभाव से भी जिसका निर्देश किया गया है। उसके लिये वर्णन है। अर्थात् फिर पुनर्जन्म का प्रश्न नहीं उठता। वह निष्पाप शरीर अन्नादि के दूषित अहार से निवृत्त हो, केवल उत्तम तत्व शुद्ध जल अथवा प्राण आदि पर ही टिक सकता है। जिस प्रकार रसायन शास्त्र में यह पूर्ण रूपेण प्रगट नहीं किया जा सकता कि किस प्रकार रासायनिक क्रिया से नयी वस्तु उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार वीर साधन से किस प्रकार कुण्डलिनी प्रबुद्ध हो, कुलपथारोहण पूर्वक ग्रन्थि भेद सम्पन्न करती है। इस आधार क्रिया का पदनिच्छेदन सम्भव नहीं है। पर फल अवश्यम्भावी है। संक्षेप में मृदु, चूड़क शक्ति संचालन, श्मशान प्रबुद्ध बनाने में तथा चिता-चैतन्य, मुण्ड

ऊर्ध्वचालन, पञ्चमुण्डी ग्रन्थिभेद पूर्वक आज्ञाचक्र की प्राप्ति कराती है। ग्रन्थों में लिखा है। साधन कार्य की पूर्ति पर शेष विदेह जीवन रसास्वादन में यापन किया जा सकता है। यथा— शाक्तोपासना के विभिन्न तीन स्तरों (निम्न, साधक, सिद्ध) का किञ्चित दिग्दर्शनमात्र कराने का प्रयास किया गया है। इसमें प्रत्येक विषय विस्तृत विवेचना की अपेक्षा रखता है। वस्तुतः इन विषयों में प्रयोगात्मक कार्य ही वाञ्छित है। समय के प्रभाव से नैष्कर्म्यरूप उपदेश सर्वत्र लभ्य हैं, कि उग्र साधन एवं सिद्धियों से दूर रहो, किन्तु यथार्थतः स्वानुभव रूप सिद्धि ही कुल पथ के निर्देशक रूप मणि के पत्थर हैं। अपना सर्वस्व भी बलिदान कर आगे बढ़ने वाले साधक का नाम ही वीर साधक है। यदि वह यथोक्त प्रकार से आगे बढ़ रहा हो तो क्या वह सिद्धि प्राप्त कर नित्य लीला में सम्मिलित हो, जीवन को धन्य नहीं कर सकता? ज्ञात होता है और शास्त्र भी कहते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों द्वारा ही इस सिद्धमार्ग का अवरोध हुआ। सिद्ध-अवस्था के संकेत-वाक्य निम्न हैं— सुमेरु ऊर्ध्वाम्नाय, पद विज्ञान, सम्प्रदाय काश्मीर, क्षेत्र कैलाश, देवता निरंजन, तीर्थ मानसर, महाविद्या श्री दीक्षणी, महावाक्य मन्त्रिणी चतुर्महावाक्यम्, पारवेत्ता स्वयं महाकालश्री आदिनाथ शिव हैं। यह शक्ति-उपासना (शक्तियोग) शब्द से व्यवहृत है। तन्त्रवचन है।

अथवा (कुण्डलिनी) है। (अकुल) शब्द का अर्थ शिव, अर्थात् आदिनाथ महाकाल है। इस कुलाकुल मार्ग में विहारशील – साधक की पदवी (कौल) है। पर केवल मात्र इसका पथ वीर साधन ही है। अन्य प्रकार से यह कदापि सम्भव नहीं। प्रसङ्ग वश लिखना पड़ता है, कि जो अत्यन्त कायर हैं, वृकोदर हैं, उनसे यह कार्य – असम्भव है। जिह्वोपस्थ-त्याग से ही तीव्राति तीव्र संवेग साधना में सहायक होता है। वीर सम्पत्ति, आसन, माला, कङ्कण और पात्र कहे जाते हैं। ये भी उसी के अनुरूप होनें चाहिये। यथा – इस प्रकार अन्तिम तीसरी अवस्था, जिसे सिद्धावस्था कहा गया है। अथवा दिव्यभाव से भी जिसका निर्देश किया गया है। उसके लिये वर्णन है। अर्थात् फिर पुनर्जन्म का प्रश्न नहीं उठता। वह निष्पाप शरीर अन्नादि के दूषित आहार से निवृत्त हो, केवल उत्तम तत्व शुद्ध जल अथवा प्राण आदि पर ही टिक सकता है। जिस प्रकार रसायन शास्त्र में यह पूर्ण रूपेण प्रगट नहीं किया जा सकता कि किस प्रकार रासायनिक क्रिया से नयी वस्तु उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार वीर साधन से किस प्रकार कुण्डलिनी प्रबुद्ध हो, कुलपथारोहण पूर्वक ग्रन्थि भेद सम्पन्न करती है। इस आधार क्रिया का पदविच्छेदन सम्भव नहीं है। पर फल अवश्यम्भावी है। संक्षेप में मृदु, चूड़क शक्ति संचालन, श्मशान प्रबुद्ध बनाने में तथा चिता-चैतन्य, मुण्ड

ऊर्ध्वचालन, पञ्चमुण्डी ग्रन्थिभेद पूर्वक आज्ञाचक्र की प्राप्ति कराती है। ग्रन्थों में लिखा है। साधन कार्य की पूर्ती पर शेष विदेह जीवन रसास्वादन में यापन किया जा सकता है। यथा—शाक्तोपासना के विभिन्न तीन स्तरों (निम्न, साधक, सिद्ध) का किञ्चित दिग्दर्शनमात्र कराने का प्रयास किया गया है। इसमें प्रत्येक विषय विस्तृत विवेचना की अपेक्षा रखता है। वस्तुतः इन विषयों में प्रयोगात्मक कार्य ही वाञ्छित है। समय के प्रभाव से नैष्कर्म्यरूप उपदेश सर्वत्र लभ्य हैं, कि उग्र साधन एवं सिद्धियों से दूर रहो, किन्तु यथार्थतः स्वानुभव रूप सिद्धि ही कुल पथ के निर्देशक रूप मणि के पत्थर हैं। अपना सर्वस्व भी बलिदान कर आगे बढ़ने वाले साधक का नाम ही वीर साधक है। यदि वह यथोक्त प्रकार से आगे बढ़ रहा हो तो क्या वह सिद्धि प्राप्त कर नित्य लीला में सम्मिलित हो, जीवन को धन्य नहीं कर सकता? ज्ञात होता है और शास्त्र भी कहते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों द्वारा ही इस सिद्धमार्ग का अवरोध हुआ। सिद्ध-अवस्था के संकेत-वाक्य निम्न हैं—सुमेरु ऊर्ध्वाम्नाय, पद विज्ञान, सम्प्रदाय काश्मीर, क्षेत्र कैलाश, देवता निरंजन, तीर्थ मानसरस, महाविद्या श्री दीक्षणी, महावाक्य मन्त्रिणी चतुर्महावाक्यम्, पारवेत्ता स्वयं महाकालश्री आदिनाथ शिव हैं। यह शक्ति-उपासना (शक्ति योग) शब्द से व्यवहृत है। तन्त्रवचन है।

शक्तितत्व और शक्ति साधन — जिस प्रकार विष्णु और शिव एक हैं, उसी प्रकार शक्ति भी उनसे अभिन्न है। एक ही परम तत्व के विभिन्न नाम हैं। शास्त्र में कहा है। जैसे शिव हैं, वैसे ही दुर्गा हैं, और जो दुर्गा हैं, वही विष्णु हैं। इनमें जो भेद मानता है, वह दुर्बुद्धि मनुष्य मूर्ख है। देवी, विष्णु और शिव आदि में एकत्व ही देखना चाहिये। जो इनमें भेद करता है, वह निःसन्देह रौरव नरक में जाता है। जिस प्रकार शिव और विष्णु को विभिन्न शास्त्रों में परब्रह्म, परमात्मा, सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापी बतलाया है, इसी प्रकार से शक्ति को भी बतलाया है। देवताओं ने एक बार जाकर भगवती से पूछा, हे महादेवि आप कौन हैं? भगवती ने उत्तर दिया, मैं ब्रह्मरूपिणी हूँ, प्रकृति-पुरुषात्मक जगत मुझसे ही उत्पन्न हुआ है। श्री देवीभागवत में कहा है। मैं और परमात्मा शिव में सदा एकत्व है। भेद कभी नहीं है। जो वह है सो मैं हूँ और जो मैं हूँ सो वह है। भेद भ्रान्ति से कल्पित है, वस्तुतः नहीं है। इसी प्रकार असंख्य प्रमाण हैं, जिनसे भगवती का निर्गुण परब्रह्मस्वरूप और उनका सगुण निराकार सृष्टि कर्ता स्वरूप सिद्ध है। ये ही भगवती विभिन्न साकार रूपों में लीला करती हैं। भगवती के असंख्य रूप हैं। इनमें नौ दुर्गा दश महाविद्या आदि प्रसिद्ध हैं।

नौ दुर्गा हैं — शैलपुत्री, ब्रम्हचारिणि, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री।

दश महाविद्या हैं — काली, तारा, षोड़शी (त्रिपुर सुन्दरी) भुवनेश्वरी, (राजेश्वरी, श्री विद्या, ललिता) छिन्नमस्ता, भैरवी (त्रिपुर भैरवी) धूमावती (अलक्ष्मी) बगला (बगलामुखी) मातंगी और कमला (लक्ष्मी)। इनमें काली के शिव हैं— महाकाल, तारा के अक्षोभ्य, षोड़शी के पञ्चवक्त्र, भुवनेश्वरी के त्र्यम्बक, छिन्नमस्ता के कबन्ध, भैरवी के दक्षिणामूर्ति, बगला के एकमुख महारुद्र, मातंगी के मतंग, और कमला के सदाशिव श्री विष्णु। धूमावती विधवा मानी गयी हैं। इन सबके अलग-२ ध्यान, मन्त्र, यन्त्र, कवच आदि हैं। तीन महादेवियाँ हैं। महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती। इनके ध्यान क्रमशः इस प्रकार हैं।

महाकाली — विष्णु भगवान् को योगनिद्रा की स्थिति में ब्रम्हाजी नें जिनकी स्तुति की थी, उन खड्ग, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परिघ, शूल, भुशुण्डी, कपाल और शंख को धारण करनें वाली, सम्पूर्ण आभूषणों से विभूषित, नील मणि के समान कान्तियुक्त, दस मुख और दस चरणवाली महाकाली का मैं ध्यान करता हूँ।

महालक्ष्मी — अपनें कर कमलों में अक्षमाला, परशु, गदा, बाण, वज्र, कमल, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, चर्म (ढाल)

शंख, घण्टा, सुधापात्र, शूल, पाश और सुदर्शनचक्र धारण करने वाली, कमल पर स्थित महिषासुर मर्दिनी प्रसन्नवदना श्री महालक्ष्मी का हम ध्यान करते हैं।

महासरस्वती— अपने करारविन्दों में घण्टा, त्रिशूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करने वाली, गौरी देह से उत्पन्न, शरत् काल के अत्यन्त प्रकाशमान चन्द्रमा के समान प्रभा वाली, तीनों लोक की आधार भूता, शुम्भादि दैत्यों का दलन करनेवाली महासरस्वती को हम नमस्कार करते हैं।

अष्टादशभुजा महिषमर्दिनी— देवताओं के द्वारा तेज, शक्ति, आयुध आदि लेकर सर्वशक्तिमती महिषासुर मर्दिनी महाशक्ति दुर्गा भगवती को इस रूप में देखा गया था। यह बड़ा सुन्दर ध्यान है। देवी के सम्पूर्ण अंग आभूषणों से सुशोभित हैं, समस्त रत्न समूह उनके शरीर की शोभा बढ़ा रहे हैं। उनका दिव्य रूप बड़ा ही चित्ताकर्षक है। वे न मानवी जान पड़ती हैं न असुरी ही, इन श्रेष्ठ देवी के अठारह भुजायें हैं। हाथों में अस्त्र, शस्त्र लिये वे विशाल सिंह पर सवार हैं। उनके अंग-२ से अभिमान टपक रहा है। और वे गर्जना करती हुई दिखाई देती हैं। देवी का सिद्ध मन्त्र है। (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।) यही प्रसिद्ध निर्वाणमन्त्र है। मार्कण्डेय पुराण के तेरह अध्याय में श्री दुर्गा सप्तशती है। इसमें भगवती शक्ति के स्वरूप,

रित्र, उपासना और साधनाओं का बड़ा सुन्दर वर्णन है। विधि पूर्वक दुर्गा सप्तशती का पाठ, नवार्ण मन्त्र का जप, पंचांग पुरश्चरण सहित करनें से सारे मनोरथ सिद्ध होते हैं। श्री भगवती की कृपा से अचल भक्ति और परम शान्ति की प्राप्ति होती है। भगवती की आराधना किसी अनुभवी पुरुष से जान कर करनी चाहिये।

श्री शतचण्डी विधि और सप्तशती-महायन्त्र — किसी शिवालय अथवा दुर्गा मन्दिर के निकट एक सुन्दर मण्डप बनावे, जिसमें — दरवाजा और वेदी भी बनी हो। उसके चारो ओर तोरण (बन्दनवारे) लगावे और ध्वजारोपण भी करे। मण्डप के अन्तर्गत पश्चिमभाग या मध्य भाग में होमकुण्ड बनावे। स्नान और नित्य क्रिया से निवृत हो दस उत्तम ब्राम्हणों का वरण करे। वे ब्राम्हण जितेन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी तथा बोध युक्त हों। साथ ही सलज्ज (अवैध कर्म करनें में सदा ही लज्जा करनें वाले) दयालु और प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती का पाठ करनें वाले हों। उन्हें विधि पूर्वक (पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय के अनन्तर) मधुपर्क निवेदन करके सुवर्ण वस्त्रादि दान पूर्वक जप के लिये आसन और माला दे तथा हविष्य भोजन अर्पण करे। वे विचार शील ब्राम्हण हविष्यान्न भोजन तथा भूमि पर ही शयन करें और मन्त्रार्थ चिन्तन में चित्त लगाये हुये पृथक-२ मार्कण्डेयपुराणोक्त चण्डिका स्तव का दस दस बार पाठ करें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को एक-२ हजार नवार्ण

मन्त्र का जप करना चाहिये। यह जप सम्पुट पाठ से पृथक् करना उचित है। एक सहस्त्र जप प्रत्येक ब्राम्हण के लिये अनिवार्य है। शक्ति सम्प्रदाय वालों का कथन है, कि शतचण्डी का आरम्भ ऐसे समय से करना चाहिये, जिससे कि कुल सौ पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा इन्हीं तिथियों में समाप्त हों। इस अनुष्ठान में यजमान को नौ कुमारियों का पूजन करना चाहिये, जो कि दो वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की उम्र वाली हों। उनके नाम क्रमशः निम्न प्रकार से हैं।

१= कुमारी =२= त्रिमूर्ति =३= कल्याणी =४= रोहिणी =५= कालिका ६= शाम्भवी =6= दुर्गा =८= चण्डिका =९= सुभद्रा। इन्हीं नाम मन्त्रों से इनकी पूजा करनी चाहिये। इनमें हीनांगी, अधिकांगी, कुष्ठ और फोड़ेवाली, अन्धी, कानी, कुरूपा, केकरी (ऐंचा तानी) कुबड़ी, अधिक रोमवाली, दासी से उत्पन्न हुई तथा रोगिणी — ये कन्यायें वर्जित हैं। अपनें सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिये ब्राम्हण कन्या का, यश के लिये क्षत्रिय कन्या का, धन के लिये वैश्य कन्या का और पुत्र के लिये शूद्र कन्या का पूजन करना चाहिये। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य, भोज्य तथा वस्त्राभरणों से अपनी शक्ति के अनुसार कन्याओं का पूजन करे। दो वर्ष की उम्र वाली कन्या कुमारी कही गयी है। तीन वर्ष वाली त्रिमूर्ति, चार वर्ष वाली कल्याणी, पाँच वर्ष वाली रोहिणी छः वर्ष वाली काली, सात वर्ष वाली चण्डिका, आठ वर्ष वाली शाम्भवी,

नौ वर्षवाली दुर्गा, और दस वर्ष की उम्रवाली सुभद्रा कहलाती है। नाम मन्त्रों से ही इनकी पूजा करनी चाहिये। इनका आवहन करने के निमित्त शंकर जी का कहा हुआ मन्त्र बतलाया जा रहा है। (मैं मन्त्राक्षरमयी) 'लक्ष्मीरूपिणी, मातृरूपधारिणी तथा साक्षात् नव दुर्गास्वरूपिणी कन्या का आवाहन करता हूँ' इस समय कुमारी आदि कन्याओं के पूजन का मन्त्र बतलाता हूँ। 'हे कौमारि! हे जगदम्ब। तुम जगत की पूजनीया, वन्दनीया और सर्वशक्तिस्वरूपिणी हो। मेरी की हुई पूजा को अंगीकार करो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। मैं त्रिपुर रूपिणी, त्रिपुर की आधार भूता, तीन वर्ष की अवस्थावाली, ज्ञानमयी, त्रिभुवन वन्दिता भगवती त्रिमूर्ति की पूजा करता हूँ। जो कालरूपिणी होने पर भी कलातीत हैं। उस करुणाभरे हृदय वाली शिवारूपा कल्याणजननी भगवती कल्याणी का मैं पूजन करता हूँ। अणिमा आदि गुणों की आश्रयभूता, अकारादि अक्षरमयी, अनन्तशक्तिसम्पन्ना, लक्ष्मीरूपा रोहिणी की मैं आराधना करता हूँ। जो इच्छानुसार विचरण करने वाली, सुन्दरी, कान्तिमती, कालचक्रमयी, काम दायिनी और करुणा करने में उदार है, उस कालिका भवानी की मैं पूजा करता हूँ। जो अत्यन्त कुपित, वीरभाव से युक्त, चण्ड, मायाविनी, तथा चण्ड मुण्ड नामक दैत्यों का नाश करने वाली हैं, उस प्रचण्ड पराक्रम वाली चण्डिका देवी की मैं अर्चना करता हूँ। सदा आनन्द देने वाली, शान्तिमयी, सर्वदेववन्दिता, सर्वभूतमयी,

लक्ष्मीरूपा, शाम्भवी की मैं आराधना कर रहा हूँ। दुर्गम और दुस्तर कार्य में सांसारिक कष्टों को नष्ट करने वाली, दुर्गतिनाशिनी दुर्गा को मैं भक्ति पूर्वक पूजा करता हूँ। जिसकी सोने की सी आभा है, जो परम सुन्दरी तथा सुख सौभाग्य को देने वाली है, उस कल्याणजननी सुभद्रा देवी की मैं पूजा करता हूँ।' इन पुराणोक्त मन्त्रों द्वारा कन्याओं का पूजन करना चाहिये। (इति कुमारी पूजा)॥

अथ महायन्त्रादि पूजन प्रकार— वेदीपर सुन्दर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उस पर विधिपूर्वक कलशस्थापन करे और कलश के ऊपर भगवती पार्वती जी का आवहन करे। उनके समक्ष में नाना उपचारों द्वारा कन्याओं, ब्राम्हणों तथा नवार्णमन्त्र द्वारा आवरण देवताओं का पूजन करे। फिर सम्प्रदाय के अनुसार ॐकार पीठ, पूर्णपीठ, और काम पीठ का अर्चन करे। पीठ की पूर्वादि दिशाओं में गणेश आदि चार की स्थापना करे। उनके नाम ये हैं। गणेश, क्षेत्रपाल दो पादुकायें और तीन बटुक। आग्नेय आदि चारों कोणों में जया, विजया, जयन्ती और अपराजिता, इन चार देवियों की आराधना करे। उपर्युक्त यन्त्र में पूर्वकोण में सरस्वती सहित ब्रम्हा, नैऋत्य में श्री सहित विष्णु और वायव्य में उमासहित शिव की स्थापना करे। षट्कोण चक्र के मध्यवर्ती मध्यबीज में 'श्री महा लक्ष्मी' और दायीं बायीं ओर क्रमशः (क्लीं महाकाली) तथा 'ऐं महा लक्ष्मी' का आवाहन करे

उत्तर दिशा में सिंह और दक्षिण में महिष का स्थापन करे। छहों कोणों में पूर्वादि क्रम से नन्दजा, रक्तदन्तिका, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा और भ्रामरी को स्थापित करे। इनकी पूजा आदि कार्यों में इनके नामों के अनुस्वार सहित प्रथम वर्ण और प्रणवविशिष्ट नाम मन्त्रों को ग्रहण करना चाहिये। जैसे भ्रामरी की पूजा में (ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः) इत्यादि रूप से सर्वत्र समझ लेना चाहिये। फिर अष्टदलों में क्रमशः ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री और चामुण्डा की पूजा भी पूर्वोक्त रीति से नाम मन्त्रों द्वारा ही करे। तदनन्तर अष्टदल कमल के किञ्जल्कों में पूर्वादि क्रम से विष्णुमाया आदि चौबीस देवियों की आराधना करे। प्रत्येक दल में तीन किञ्जल्क समझे।
1= विष्णुमाया =2= चेतना =3= बुद्धि =4= निद्रा =5= क्षुधा =6= छाया =
7= शक्ति =8= तृष्णा =9= क्षान्ति =10= जाति =11= लज्जा =12= शान्ति =13=
श्रद्धा =14= कान्ति =15= लक्ष्मी =16= धृति =17= वृत्ति =18= स्मृति =19=
दया =20= तुष्टि =21= पुष्टि =22= माता =23= भ्रान्ति =24= चिति।
ये ही चौबीस देवियाँ हैं। सप्तशती स्तोत्र के पाँचवें अध्याय में इन चौबीस देवियों का पाठ नहीं है, ऐसा समझने की भूल नहीं करनी चाहिये। क्योंकि ऐसा करने से कात्यायिनी तन्त्र से विरोध पड़ता है। कमल नाल के मूल में माधव आदि चार की पूजा करके आधार, कूर्म, शेष और पृथ्वी की भी पूजा करे। गृहकोणों में गणेश, क्षेत्रपाल, बटुक

तथा योगियों की और पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि देवताओं की पूजा करनी चाहिये। इसी प्रकार चार दिनों तक करे। इनमें भी प्रथम दिन सप्तशती स्तोत्र का एक पाठ, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन और चौथे दिन चार पाठ प्रत्येक ब्राम्हण करे। पाँचवें दिन हवन होना चाहिये।

होम द्रव्य— विधिपूर्वक स्थापित हुए अग्नि में तीनबार मधु से भिगोये हुए हविष्य, द्राक्षा, केला, मातुलिंग, ईख, नारियल, तिल, जातिफल, आम तथा अन्य मधुर द्रव्यों से दस आवृत्ति सप्तशती के प्रत्येक मन्त्र पर हवन करे और एक सहस्त्र नवार्णमन्त्र से भी हवन करे। फिर आवरण देवताओं के लिये उनके नाम मन्त्रों द्वारा हवन करके यथोचित रूप से पूर्ण आहुति दे। तत्पश्चात ब्राम्हणवृन्द देवताओं सहित अग्नि का विसर्जन करके यजमान को कलश के जल से अभिषिक्त करें। यजमान प्रत्येक ब्राम्हण को एक-२ अशर्फी अथवा सुवर्ण यथा शक्ति दक्षिणारूप में दान करे। फिर नाना प्रकार के भक्ष्य भोज्यों द्वारा सौ ब्राम्हणों को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा दे कर आशिर्वाद ले। इस प्रकार करनें पर जगत अपनें वश में होता है, और सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। (इति शतचण्डी विधिः।) कल्याण के पाठकों और अधिकारी साधकों के समक्ष (श्री सप्तशती महायन्त्र) का शुद्ध स्वरूप निवेदन करनें के प्रयोजन से साथ में विधानरूप से शतचण्डी विधि का प्रयोग ऊपर दे दिया गया है।

त ये है कि ऋग्वेदीय (ब्रम्हकर्मसमुच्चय) नामक ग्रन्थ (निर्णयसागर
न्नालय) को देखते हुये हमारी दृष्टि में मुद्रित (दुर्गासप्तशती महायन्त्रा
का चित्र आया, और पूरी तरह देखनें पर उसमें कई दोष अवगत हुये, क्यों
कि (शतचण्डीविधि) के वर्णन तथा अन्य तन्त्र सिद्ध महापुरुषों के दिव्य
अनुभव से उस मुद्रित यन्त्र में कुछ दोषपूर्ण भेद था। जैसे सबसे अन्दर
के छोटे त्रिकोण में महाकाली आदि तीन महाशक्तियों के जो तीन बीज
कोणों में रक्खे हुये हैं, वे अलग-२ निज शक्ति के कोण अन्तर्गत न होकर
एक ही पंक्ति में उस मुद्रित यन्त्र में थे, और इस पर भी (श्रीं) के स्थान
पर (क्लीं) बीज अप्रासंगिक रूप से था। इसके अतिरिक्त कुछ और भी
अशुद्धि थी। तन्त्र में किसी भी बात का इधर से उधर हेर फेर होना
अथवा जरा सा भी अन्यथा रूप से प्रयुक्त होना महान् दोष माना गया है।
सब किया कराया एकदम व्यर्थ हो जाता है। इन भावों की प्रेरणा से
(सप्तशती महायन्त्र) का शुद्ध रूप कल्याण पाठकों के सामनें उपस्थित
किया गया है। इसकी अनिवार्यता (शतचण्डी) के अनुष्ठान में होती
है। जिसकी शास्त्रीय विधि ऊपर अंकित है। (शतचण्डी) श्री दुर्गा
सप्तशती का परम अस्त्र है, और उसकी शक्ति तथा प्रयोग संनिहित
हैं। इस महायन्त्र में। साधन सिद्ध गृहीता के पास इस महायन्त्र का
होना अखिल ब्रम्हाण्ड को अपनें हस्तगत करना है। इस महायन्त्र नें
ब्रम्हाण्ड की प्रत्येक बात को पूर्णता के साथ अपने अन्तर्गत रख छोड़ा है

और इस प्रकार उस साधक का जीवन दिव्य और पूर्ण हो जाता है। पूर्ण इस लिये कि इस छवि में समस्त भागवत शक्तियों का समावेश है। माँ की समस्त शक्तियों में भगवती दुर्गा का स्वरूप प्रत्येक भाव से पूर्ण है। किसी एक दिशा अथवा स्तर के भाव में माँ दुर्गा सीमित नहीं हैं। केवल ज्ञान, केवल बल अथवा केवल प्रेम से वे बँधी हुई नहीं हैं। वे हैं अखण्ड रूप में समस्त भावों को धारण किये हुये। इसी से वे दुर्गा हैं, दुर्गमनीया। पूर्णा हैं, समस्त संख्याओं को परम शिरोमणि अखण्ड नौरूप से अपनें को यन्त्र, तन्त्र, विस्तृत किये हुये हैं। (नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।) माँ की ही करुणा एवं कृपा का बल — अपने अहंकार का नहीं, साधक की उचित अग्रगति करता है। उपर्युक्त यन्त्र को साफ कागज पर अन्तरस्थ छोटे सम त्रिकोण से बनाना आरम्भ करे। पूर्व दिशा अपनें सामनें रहे। उसके ~~सामने~~ बाद बाह्य षट्‌समकोण बना कर (रक्तवर्ण) चारों ओर कृष्णवर्ण का घेरा खींच कर उसके बाहर अष्ट कमलदल लाल रंग से बनावे और तदनन्तर घेरे के बाहर चौबीस कमलदल बना कर और प्रतिकोण तथा कमलदल के अन्दर लिखित शक्तियों को साथ ही साथ भर कर बाहर चारों द्वार युक्त पीले रंग के चतुरस्र से वेष्टित कर दे। ऋष्यादिन्यास, करन्यासादि, जिन पूरा विधान तन्त्र ग्रन्थों में है, करके अनुष्ठान को आरम्भ करना चाहिये। भोजपत्र पर यदि अंकित करना हो तो. केसर युक्त चन्दन

से बिल्व - लेखनी द्वारा अंकित करना चाहिये। सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिनका स्वरूप है, तथा जिन देवी नें अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रक्खा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीया उन जगदम्बा को हम भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हम लोगों का कल्याण करें।

जीवन में स्वरोदय की महत्ता — १=षण्मुखी मुद्रा एवं तत्वों के बीज मन्त्र — तत्वों के ज्ञान के लिये षण्मुखी मुद्रा का अभ्यास आवश्यक है। योगाभ्यासी इसी मुद्रा के आश्रय से तत्वों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। षण्मुखी मुद्रा का अभ्यास बिना गुरु की सहायता से सहज सुलभ नहीं है। इसका अभ्यासी तत्व ज्ञान में ही मस्त रहता है। और उसे मुद्रा ज्ञान से अन्तरात्मा का प्रकाश मिलता है, तथा बाह्य विश्व अन्धकारमय प्रतीत होता है। श्वास का स्तम्भन होनें लगता है। बाह्य शब्दों का संचार अन्तरात्मा में नहीं होता। सूर्य की किरणें प्रवेश नहीं कर पातीं, वायु का अवरोध हो जाता है। यह षण्मुखी मुद्रा पहले तो उकताहट पैदा करती है। किन्तु धीरे-२ अभ्यास से ब्रह्म ज्ञान का एक विचित्र आनन्द प्राप्त होता है। मन एकाग्र होकर अन्धकार में व्याप्त विश्वात्मा की खोज करनें में तन्मय हो जाता है, और अभ्यास दृढ़ होनें पर कभी आनन्दमयी ज्योति का अनुभव होता है, और कभी भगवान के दर्शन भी हो जाते हैं। योगाभ्यासी षण्मुखी मुद्रा का आश्रय लेकर ही तत्व निर्णीत स्वर

ज्ञान के प्रवाह में सच्चिदानन्द ब्रम्ह के, अपनी अन्तरात्मा में ही दर्शन करनें में सदा सफल होते थे, और यही था ब्रम्ह का साक्षात्कार। षण्मुखी मुद्रा बड़ी ही सहज साध्य है। दोनों कानों में दोनों हाथ के अंगूठे, दोनों नासिका छिद्रों में दोनों हाथ की मध्यमिकाएँ, होठों के मध्य में दोनों हाथ की अनामिकाएँ और दोनों आँखों में दोनों हाथ की तर्जनियाँ और तर्जनियों के ऊपर छिंगुलियाँ रख कर कान, नाक, मुख और आँख के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं, और मन को इन्हीं बन्द द्वारों में लगा दिया जाता है। वह कभी कान के बन्द द्वार तक होकर लौटता है और कभी अन्य इन्द्रिय के। इस तरह मन जब कान, नाक, मुख और आँखों का द्वार बन्द पाता है, तब वह उस अन्धकार युक्त ब्रम्हाण्ड में किसी और ही शक्ति की खोज करनें में लग जाता है, और इस तरह धीरे-२ अभ्यास से उसे परमब्रम्ह परमात्मा के दर्शन उसी अन्धकार युक्त ब्रम्हाण्ड में हो जाते हैं, और तब स्वर साधना तथा तत्वज्ञान की उपासना सफल हो जाती है। पहले षण्मुखी मुद्रा के अभ्यास में तत्वों के रंग दर्शन होते हैं, अर्थात कभी पृथ्वी तत्व का पीला रंग, कभी जल तत्व का सफेद रंग, कभी अग्नि तत्व का लाल रंग, कभी वायु तत्व का नीला रंग और कभी आकाश तत्व का मिश्रित (अनेक मिले हुए) रंग अन्तदृष्टि में प्रतिभासित होते हैं। जब बाह्य आँखें बन्द कर ली जाती हैं, तब अन्तदृष्टि खुलनें लगती है

और उसी में ये रंग प्रतिभासित होते हैं। इसी प्रकार कानों का द्वार बन्द हो जानें से अन्तरात्मा से उठती हुई शान्ति ध्वनि आनन्द दायिनी और ब्रम्ह वाणी ही होती है, जिससे जीवन को भावी प्रगति का संकेत मिलता है। नाक के छिद्रो के बन्द हो जानें से प्रथमतः अन्दर समायी हुयी वायु बाहर निकलनें का प्रयास करती है, जिससे पेट फूलनें लगता है, फेफड़ों में तनाव आजाता है, और दम घुटनें जैसा अनुभव होनें लगता है। किन्तु धैर्य के साथ उस वायु को शान्त करनें से उसकी प्रगति ब्रम्हाण्ड की ओर होनें लगती है। और अभ्यास से वायु का स्थान जब ब्रम्हाण्ड में बन जाता है, यानी वायु कुछ क्षणों के लिये ब्रम्हाण्ड में रुकनें लगती है। तब ब्रम्हनाड़ी जाग्रत हो उठती है। ब्रम्हनाड़ी के जाग्रत होनें पर वायु का प्रतिगमन स्तम्भित हो जाता है, और इसतरह श्वास प्रश्वास की बाह्य क्रिया अवरुद्ध हो जाती है, तब लौकिकता से समाधि अवस्था का उद्भास हो जाता है। मन की गति स्थिर हो जाती है। और जीव ब्रम्हमय हो जाता है। षण्मुखी मुद्रा में पहले तत्वों के बीज मन्त्र का अन्दर ही अन्दर जाप करनें और अन्धकार युक्त ब्रम्हाण्ड में मन अवस्थित होनें से क्रमशः योगाभ्यासी लौकिकता से दूर अलौकिकता का अनुभव प्राप्त करनें लगता है। पञ्च तत्वों के बीज मन्त्र इस प्रकार हैं।

तत्व	बीजमन्त्र	ध्यान का स्वरूप	रंग
पृथ्वी	लं	चतुष्कोण	स्वर्णिम पीला

तत्व	बीजमन्त्र	ध्यान का स्वरूप	रंग
जल	वं	अर्धचन्द्राकार	सफेद
अग्नि	रं	त्रिभुजाकार	लाल
वायु	यं	गोलाकार	नीला
आकाश	हं	निराकार	बहुरंगी

पृथ्वी तत्व का ध्यान करनें से योगाभ्यासी देह हलकी हो जाती है, और कभी-२ समाधि अवस्था में शरीर पृथ्वी से ऊपर उठ जाता है। जल तत्व का ध्यान करनें से भूख प्यास जाती रहती है, और जल के भीतर डूब कर रहनें की शक्ति प्राप्त हो जाती है। अग्नि तत्व का ध्यान करनें से अपरिमित भोजन करनें और घड़ों जल पी लेनें की शक्ति प्राप्त हो जाती है, साथ ही कठिन धूप और आग की लपटों से अभ्यासी का शरीर कष्ट का अनुभव नहीं करता। वायु तत्व के अभ्यासी को तीनों काल का ज्ञान प्राप्त होनें के साथ-२ अणिमादि आठों सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इस तरह षण्मुखी मुद्रा के अभ्यास से अनेक अलभ्य शक्तियों का लाभ होता है। किन्तु यह अभ्यास एक लम्बी अवधि में परिपक्वावस्था को प्राप्त होता है।

२= छाया-पुरुष और मृत्यु-ज्ञान — स्वरसाधना में छाया पुरुष का महत्वपूर्ण स्थान है। अभ्यास से यह प्रत्यक्ष होकर अनेक दुर्लभ ज्ञान का सन्देश देता है। स्वर ज्ञान के आदि उपदेशक भगवान् शंकर हैं। छाया पुरुष के रूप में भगवान शंकर के ही दर्शन होते हैं, और उन्हीं से अभ्या

साधक जीवन मरण का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करता है। इसके अभ्यास का प्रकरण इस प्रकार है। अभ्यासी को बस्ती से दूर किसी निर्जन एकान्त स्थान पर सूर्य की ओर पीठ करके बैठ जाना चाहिये और छाया पुरुष भगवान शंकर का स्मरण कर धूप में पड़ती हुई कण्ठ भाग की छाया को ध्यान पूर्वक देखनें और उसी पर अपनी दृष्टि जमानें का अभ्यास करना चाहिये। ऐसा कम से कम सात दिनों तक प्रति दिन दो घन्टे तक अभ्यास होना आवश्यक है। अवकाश होनें पर इससे अधिक समय तक भी अभ्यास किया जा सकता है। ऐसा करनें से दृष्टि नियमित हो जाती है, और मन कण्ठ भाग की छाया में केन्द्रित हो जाता है। इसके अनन्तर आठवें दिन से आकाश की ओर दृष्टि जमा कर मन ही मन (ह्रीं परब्रम्हणे नमः) मन्त्र का प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। जब तक मन्त्र का जप पूरा न हो जाय, तब तक एक निष्ठ होकर आकाश की ही ओर देखते रहना चाहिये। ऐसा करनें से छः महिने के अन्दर ही भगवान शंकर के विभिन्न रूप आकाश में दृष्टि गोचर होनें लगते हैं। लगातार यह अभ्यास दो वर्षों तक यदि अबाध गति से होता रहा तो शिवत्व की भावना स्वंय अभ्यासी में जाग्रत हो जाती है। अभ्यास में उस समय अवरोध पैदा हो जाता है, जब कि आकाश मेघाच्छन्न रहता है, किन्तु यह अवरोध केवल दृष्टि का बाधक अवश्य होता है, अभ्यास में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इस

तरह अभ्यास पूरा हो जानें पर वाणी में सिद्धि आजाती है। यदि ये अभ्यास तपस्या के रूप में चलता रहा, तो अभ्यासी त्रिकालदर्शी होजाता है, संसारिकता से दूर वह ब्रह्ममय हो जाता है। भूख प्यास की आँकांक्षा शान्त हो जाती है। मन निश्चल होकर सर्वदा भगवान् शंकर के प्रत्यक्ष दर्शन करनें का अभ्यासी होजाता है। यदि प्रथमतः अभ्यास में भगवान शंकर के दर्शन चमकते हुये स्फटिक मणी की तरह होते हैं, तो वह व्यक्ति अपनें अभ्यास में सफल होता है। और उसको मृत्यु उसकी इच्छा पर निर्भर रहती है। यदि निर्मल आकाश में भगवान शंकर का रूप श्यामवर्ण का दिखलाई पड़ता है, तो अभ्यास सिद्ध नहीं होता और अभ्यासी रोगग्रस्त हो जाता है। लाल रंग का रूप प्रदर्शित होनें पर अन्तरात्मा में भय पैदा होता है, साथ ही अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न होती हैं, जिससे अभ्यासी अपनें अभ्यास में सफल नहीं होता। यदि भगवान शंकर के दर्शन विभिन्न रंगों में होते हैं, तो योगी का अभ्यास पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होता है। भगवान शंकर का यह दर्शन स्थायी भी होता है, और अभ्यासी जो चाहता है, माँग सकता है, बात कर सकता है, और वह स्वंय शिवरूपता को प्राप्त हो जाता है। छाया पुरुष का अभ्यास और ध्यान सदा शुद्ध मन और पवित्रता से ही करना चाहिये और सदा शिवचरणों में अभ्यासी का चित्त केन्द्रित होना चाहिये, ब्रह्मचर्य का विशेष रूप से पालन किया जाना चाहिये, संसारिकता में होते

हुये भी संसारिकता में लिप्त नहीं होना चाहिये। जीवन रक्षा के लिये एक बार स्वल्पाहार ही करना चाहिये। इस तरह इसके लिये मन और शरीर दोनों की साधना परमावश्यक है। छाया पुरुष की सिद्धि का अभ्यासी अपनें को सम्पूर्णरूप से भगवान शंकर के चरणों में अर्पण कर देता है। मन, कर्म और वचन से शुद्ध हो जानें पर सिद्धि प्राप्त हो जाती है। छाया पुरुष से मृत्यु ज्ञान का भी सन्देश प्राप्त होता है। यदि अभ्यासी को छाया पुरुष (भगवान शंकर) के पाँव-पेट न दिखलायी पड़े और भुजायें कटी हुई प्रतीत हों, तो अभ्यासी अल्पायु होता है, और उसका अभ्यास सफल नहीं होता। यदि दाहिनी भुजा भर ही कटी हुई दिखलायी दे तो बन्धु का नाश और बायीं भुजा कटी हुयी प्रदर्शित हो तो स्त्री का मरण अवश्यम्भावी होता है। दोनों भुजायें कटी हुई प्रतीत होनें पर वह स्वयं उसकी मृत्यु का सूचक है, इसी तरह छाया पुरुष के कान, कंधा ~~का~~ या अन्य कोई अंग स्पष्ट न दिखलायी पड़ें, तो भी अभ्यासी अल्पायु होता है।

समय और पञ्चतत्व — यह तो सभी लोगों को विदित है कि निमेष पल, मिनट, घंटा, प्रहर, दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु, अयन और वर्ष सब समय के ही अन्तर्गत हैं। समयचला जा रहा है। इसकी गणना नहीं है। जो अनन्त काल से निरवच्छिन्न अप्रतिहत गति से भ्रमण कर रहा है, और भविष्य में भी न जानें कितने काल तक भ्रमण करता रहेगा। असीम है इसकी गति। इस समयचक्र में ही सम्पूर्ण स्थावर जंगम, प्राणियों के जन्म, वृद्धि, मरण आदि होते रहते है। यह स्थिति अटूट है। इसी को समय काल कहते हैं। इस समय को ही परिवर्तनशील संसार कहा गया है। अर्थात काल ही परिवर्तन करता है।

महालक्ष्मी – ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमही तन्नो देवि प्रचोदयात ।

गणेश गायत्री – ॐ तत्पुरुषा च विद्महे वक्रतुंडाय धीमही तन्नो गणपति प्रचोदयात

काली गायत्री – ॐ महाकाल्यै च विद्महे शमसान वासिन्यै श्च धीमही तन्नो घोरे प्रचोदयात

महादेव गायत्री – ॐ तत्पुरुष च विद्महे महादेवाय च धीमही तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

नरसिंह गायत्री – ॐ क्ष्रौं प्रौं ह्रौं रौं ब्रौं ज्रौं नमः स्वाहा ॐ वज्र नखाय विद्महे तीक्ष्ण दंष्ट्राय धीमही तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

गुरु गायत्री – ॐ गुरुदेवाय च विद्महे तत्पुरुषाय धीमही तन्नो गुरुः प्रचोदयात्

गायत्री – ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेणियम भर्गो देवस्य धीमहि धीयो योनः प्रचोदयात् ॥

नारायणास्त्रम्

हरि ॐ नमो भगवते श्री नारायणाय नमो नारायणाय विश्व मूर्तये नमः श्री पुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णम पंच्च विषुचिकां हन हन ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय चतुर्शीति बातानष्टादश कुष्ठानष्टादशक्षय रोगान हन हन सर्व दोषान् भंजय २ तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ शत्रून्मारय २ उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय २ स्तम्भय २ निवारय सर्व विघ्नैर्हन हन दह दह मथ २ विध्वंसय २ चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छ गच्छ चक्रेणहत्वा पर विद्यां छेदय २ भेदय २ चतुःशीतानि बिस्फोटय २ अर्श बात शूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद पद्बाह्यान्दिवि भुव्यं तरिक्षे अन्येपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन २ विद्युन्मेघ नदी पर्वतारवो सर्वस्थान रात्रि दिन पथ चौरान वशं कुरु २ हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः ॥इतिनारायणास्त्रमंत्रः

॥ विधानम् एवं माहात्मं ॥

एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते असुराञ्जितवान्सर्वा (?) च्छक्रस्तु बल दानवान ॥१॥ यः पुमान पठेत्भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना। तस्य सर्वाणि सिद्ध्यन्ति यच्च दृष्टिं गतंविषम्

उच्चाटन हे । है । ... हवन योजनों बना करे ...

॥२॥ अन्य देह विषम चैव न देहे सक्रमेद्ध्रुवम्। संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयते क्षणात् ॥३॥ अतः सद्योजयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते। किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा॥४ लभते नात्र संदेहो नान्यथा तु भवेदिति। गृहितो यदि वा येन वालिना विविधैरपि ॥५॥ शीतं समुष्णतां याति चोष्णाम् शीतलतां व्रजेत्। अन्यथा न भवेद्विद्यां यः पठेत् कथितां मया ॥६॥ भूर्ज पत्रे लिखेन् मंत्रं गोरोचन जलेन च। इमां विद्यां स्वके बद्ध्वा सर्व रक्षां करोतु मे ॥७॥ पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्ध्वा विचक्षणः। विद्रवान्ति च विघ्नानि न भवंति कदाचन ॥८॥ न भयं तस्य कुर्वन्ति गगने भास्करादयः। भूत प्रेत पिशाचाश्च ग्रामगृहितु डाकिनी ॥९॥ शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः। राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा वालिनो हिये ॥१०॥ असुराश्च सुराश्च चैव अष्ट योनिश्च देवता सर्वत्र स्तंभिता तिष्ठन्मंत्रोच्चारणा मात्रतः ॥११ सर्वकुलतिनिलयाः सर्वरोगाविनश्यन्ति सर्व हत्याः प्रणश्यन्ति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥१२॥ उच्चाटने ऽपराह्णे तु संध्यायां मारणे तथा। शान्ते चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्व कामिकः ॥१३॥ इदं मंत्र रहस्यं च नारायणास्त्र मेव च त्रिकालं जपेत नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥१४॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमम्। चिन्तितार्थं सुख प्राप्तिं लभते नात्रसंशयः ॥१५

अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥१॥ जले रक्षतु नन्दीशः
स्थले रक्षतु भैरवः । अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शंकरः॥२॥
अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः । विभत्सुर्विजयः
कृष्णाः सव्यसाची धनंजयः ॥३॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य
दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति
निष्फलः ॥४॥ कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः ॥ इति
पठित्वा शयनं कार्यं तेन चोरो निष्फलो गच्छति ॥

१२पाठ २ अष्टोत्तरी हवन
॥ पाठविधि । १२पाठ जरूर करो।
यदि एक पाठ करो तो पूरा
माहात्म सहित पढ़ो । यदि तुम्हें
ज्यादा करना हो तो इति नारायणास्त्रं
तक पढ़ो आखिरी मे खतम करने
पर महात्म तक एक पाठ करलो

शब्द - अर्थ
निवारय २ - छुड़ाओ २
चतुर्शीति तीन - चौरासी प्रकार के घाव
अर्शी - बवासीर
बिसूचिका - चेचक
विस्फोटय २ - फोड़दो २
अपसारय २ - भगाओ २
निवारय २ - शांत करो २
प्रज्वल २ - जलाओ २
आगच्छ २ - आओ २
आवेशय २ - क्रोध करो २

शब्द - अर्थ
प्रवेशय २ = घुसो २
स्फुर २ =
प्रस्फुर २ =

...पहले हवन योजना बना कर करे...

पहले न्यास करलेना चाहिये अगले पेज में न्यास लिखा है। ॥ पाशुपतास्त्र ॥ सौ पाठ करे तो दस पाठ से हवन करदे दस बार तर्पण मार्जन
पंचोपचार से पूजन करदे॥ ॥ विधि ॥

सौ पाठ असाध्य कार्य में दस पाठ से घी गूगुल से हवन दशांश तर्पण मार्जन करे।

॥ ईश्वरोवाच ॥

ॐ नमो भगवते महा पाशुपताय फट् स्वाहा। ॐ अतुल बल वीर्य पराक्रमाय फट् स्वाहा। ॐ त्रिपंच नयनाय फट् स्वाहा। ॐ नाना रूपाय फट् स्वाहा। ॐ नाना प्रहरोद्यताय फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्ग रक्ताय फट् स्वाहा। ॐ भिन्नाञ्जनचय प्रख्याय फट् स्वाहा। ॐ श्मशान प्रियाय फट् स्वाहा। ॐ वेताल प्रियाय फट् स्वाहा। ॐ सर्व विघ्नानि कृन्तनाय फट् स्वाहा। ॐ सर्व सिद्धिप्रियाय फट् स्वाहा। ॐ भक्तानुकम्पिने फट् स्वाहा। ॐ असंख्य वक्त्र भुजपादाय तस्मिन्सिद्धाय फट् स्वाहा। ॐ वेताल चित्रासने फट् स्वाहा। ॐ शाकिनि क्षोभ जनकाय फट् स्वाहा। ॐ व्याधि निग्रहकारिणे फट् स्वाहा। ॐ पाप भंजनाय फट् स्वाहा। ॐ सूर्य सोमाग्नि नेत्राय फट् स्वाहा। ॐ वज्र हस्ताय फट् स्वाहा। ॐ यम दण्ड वरुण पाशाय फट् स्वाहा। ॐ रुद्रशूलाय फट् स्वाहा। ॐ ज्वल जिह्वाय फट् स्वाहा। ॐ सर्व रोग विद्रावणाय फट् स्वाहा। ॐ ग्रह निग्रह कारिणे फट् स्वाहा। ॐ दुष्ट नाशक्षय कारिणे फट् स्वाहा। ॐ कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा। ॐ हुंकारास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ वज्र हस्ताय फट् स्वाहा। ॐ शक्तये फट् स्वाहा। ॐ दण्डाय फट् स्वाहा। ॐ यमाय फट् स्वाहा। ॐ खड्गाय फट् स्वाहा। ॐ नैऋत्याय फट् स्वाहा। ॐ वरुणाय फट् स्वाहा। ॐ पाशाय फट् स्वाहा। ॐ ध्वजाय फट् स्वाहा।

(ॐ अंकुशाय फट् स्वाहा)(ॐ गदायै फट् स्वाहा)(ॐ कुबेराय फट् स्वाहा)(ॐ त्रिशूलाय फट् स्वाहा)(ॐ मुग्दराय फट् स्वाहा)
(ॐ चक्राय फट् स्वाहा)(ॐ पद्माय फट् स्वाहा)(ॐ नागास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ ईशानाय फट् स्वाहा)(ॐ खेटकास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ मुण्डास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ कंकालाय फट् स्वाहा)
(ॐ पिच्छिकास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ क्षुरिकास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ ब्रह्मास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ शक्तियास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ गरास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ पिलीपिच्छिकास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ गन्धर्वास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ पूर्वास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ दक्षिणास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ वामास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ पिच्छिकास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ मन्त्रास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ शाकिन्यास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ योगिन्यास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ दण्डास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ महादण्डास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ शिवास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ ईशानास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ पुरुषास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ अघोरास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ सद्योजातास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ हृदयास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ महास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ गरुणास्त्राय फट् स्वाहा)
(ॐ राक्षसास्त्राय फट् स्वाहा)(ॐ दानवास्त्राय फट् स्वाहा)

ॐ क्ष्रौं नरसिंहास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ वज्रास्त्राय फट् स्वाहा।
ॐ सर्वास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नः फट् स्वाहा। ॐ वः फट् स्वाहा।
ॐ पः फट् स्वाहा। ॐ फः फट् स्वाहा। ॐ मः फट् स्वाहा।
ॐ श्रीः फट् स्वाहा। ॐ फेः फट् स्वाहा। ॐ भुः फट् स्वाहा।
ॐ भुवः फट् स्वाहा। ॐ स्वाः फट् स्वाहा। ॐ महः फट् स्वाहा।
ॐ जनः फट् स्वाहा। ॐ तपः फट् स्वाहा। ॐ सर्व लोक फट् स्वाहा।
ॐ सर्व पाताल फट् स्वाहा। ॐ सर्व तत्व फट् स्वाहा। ॐ
सर्व प्राण फट् स्वाहा। ॐ सर्व नाड़ी फट् स्वाहा। ॐ सर्व कारण
फट् स्वाहा। ॐ सर्व देव फट् स्वाहा। ॐ ह्रीं फट् स्वाहा। ॐ श्रीं
फट् स्वाहा। ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ स्त्रूं फट् स्वाहा। ॐ स्वां फट् स्वाहा।
ॐ लां फट् स्वाहा। ॐ वैराग्य फट् स्वाहा। ॐ मायास्त्राय फट् स्वाहा।
ॐ कामास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ क्षेत्र पालास्त्राय फट् स्वाहा।
ॐ भास्करास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ चन्द्रास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ
विघ्नेश्वरास्त्राय फट् स्वाहा। ॐ ख्रौं ख्रौं फट् स्वाहा। ॐ ह्रौं ह्रौं
फट् स्वाहा। ॐ भ्रामय २ फट् स्वाहा। ॐ छादय २ फट् स्वाहा।
ॐ उन्मूलय २ फट् स्वाहा। ॐ त्रासय २ फट् स्वाहा। ॐ
संजीवय २ फट् स्वाहा। ॐ विद्रावय २ फट् स्वाहा। ॐ सर्व
दुरितं नाशय २ फट् स्वाहा।

पाशुपतास्त्र द्वारा शान्ति जप पूजा न्यास विधान
११ पाठ करके १ बार हर मंत्र से हवन करे

पहले पाशुपति जी को पंचोपचार से कनेर के पुष्पों से पूजन कर ले यंत्र बना के
फिर पैर से लेकर ऊपर के हर अंगों का न्यास करे। जैसे। शुरु में फट् लगाता जाये
पैर का अंगुठा स्पर्श कर के (ॐ अंगुष्ठाभ्यां फट्)(ॐ पादयो फट्)(
ऊर्वो फट्)(ॐ जान्हवो फट)(ॐ जंघयो फट)(ॐ गुहजे फट्)(
लिंगे फट्)(ॐ कटि देशे फट्)(ॐ नाभौ फट्)(ॐ हृदये फट्)(ॐ
कनिष्ठयोः फट्)(ॐ अनामिकयोः फट्)(ॐ मध्यमयोः फट्)(ॐ तर्जन्यो
(ॐ अंगुष्ठयोः फट्)(ॐ करतलयोः फट्)(ॐ करपृष्ठयोः फट्)(ॐ मणिब
फट्)(ॐ कूर्परयोः फट्)(ॐ हृदयाय फट्)(ॐ शिरसे फट)(ॐ शिखायै फट
(ॐ कवचाय फट)(ॐ नेत्रत्रयाय फट)(ॐ अस्त्राय फट)(ऐसा क
कर चुटकी बजा दे सब दिशाओं में संकेत करके॥ पश्चात्
पाठ करे लगा ले। पश्चात् हवन हर मंत्र के सामने आदि में ॐ अंत में फट स्वाहा
फट स्वाहा। जहां पाठ में फट नहीं लगा है वहां लगा के हवन करे।
क्रम पीछे लिख दिया है। जहां फट् लगा है वहां फट् स्वाहा
लगेगा। इसमें पाठ के अंत में लिखा है। एक बार पाठ करने से
विघ्न दूर होते हैं। सौ बार पाठ करने से उत्पात दूर होते हैं। यु
में विजय होती है। सौ पाठ से यदि घी गुगल से ढाक की लकड़ी में हव
करदे तो असाध्य कार्य भी हो जाते हैं। रोज पाठ से सर्व शा
होती है। दिन में १२ बजे के पहले हवन योजना बना कर करे
उच्चाटन है[illegible]

सूर्यास्त के पहले चौथी बेला में हवन करने से मारण होता है। रात को १२ बजे हवन करने से शान्ति होती है। बाकी कार्यों के लिये अर्ध में रात को साढ़े ११ से १२ या एक तक करें। तीनो टाइम पाठ करने से आयु यश विद्या विजय ऐश्वर्य मनोनकूल फल मिले।

शब्द – अर्थ

अवगुण्ठन – अपनी तर्जनी को कलस के अन्दर घुमादें। इसी को अवगुण्ठन कहते हैं।

गुह्ये – गुदा
ऊर्वो – बजरबुरी
जान्हवो – पिण्डली
जंघयो – जांघ
सकृदावर्तनं – एक बार
पोत्पातान – उत्पातमें
शतावर्तन – सौ बार
पार्श्वो: – दोनों बगल
मणिबन्धयो – दोनो पहुंचा हाथ का
कूर्परयो: – दोनो हाथ की कोन्हो।
उपनयन – जनेऊ
चूडाकरण – मुंडन

पाठ क्रम

॥ ईश्वरोवाच ॥

वक्ष्ये पाशुपतास्त्रेण शान्ति जापादि पूर्वतः। पादतः पूर्वन्यासो
हि फडंतं चापदादिनुत। ॐ नमो भगवते महा पाशुपताय,
अतुल बल वीर्य पराक्रमाय त्रिपंच नयनाय नाना रूपाय,
नाना प्रहरोद्यताय, सर्वाङ्ग रक्ताय, भिन्नाञ्जन चय प्रख्याय,
श्मशान वैतालप्रियाय, सर्व विघ्नानिकृन्तनाय, सर्वसिद्धि
प्रदाय, भक्तानुकम्पिने, असंख्य वक्त्र भुज पादाय, तस्मिन्
सिद्धाय, वैताल चित्रासिने, शाकिनी क्षोभ जनकाय, व्याधि
निग्रह कारिणे, पाप भंजनाय, सूर्य सोमाग्नि नेत्राय, वज्र
हस्ताय, यम दण्ड वरुण पाशाय, रुद्र शूलाय, ज्वलजिह्वा
सर्व रोग विद्रावणाय, ग्रह निग्रह कारिणे, दुष्ट नाशक्षय
कारिणे
१ ॐ कृष्ण पिंगलाय फट्। हुंकारास्त्राय फट्। वज्र हस्ताय फट्
शक्त्यै फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैऋत्याय
फट्। वरुणाय फट्। पाशाय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्
गदायै फट्। कुबेराय फट्। त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्
चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय
फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डास्त्राय फट्। कंकालाय
फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय
फट्। शक्तियास्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। पिलीपिच्छ
...स्त्राय फट्।

गन्धर्वास्त्राय फट्। मूर्वास्त्राय फट्। दक्षिणास्त्राय फट्।
वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मंत्रास्त्राय फट्। शाकिन्या
स्त्राय फट्। योगिन्यास्त्राय फट्। दंडास्त्राय फट्। महा
दण्डास्त्राय फट्। शिवास्त्राय फट्। ईशानास्त्राय फट्। पुरुषा
स्त्राय फट्। अघोरास्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदया
स्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुणास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय
फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौं नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रास्त्राय
फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। वः फट्। पः फट्। फः फट्। मः
फट्। श्रीः फट्। फेः फट्। भुः फट्। भुवः फट्। स्वाः फट्। महः फट्
जनः फट्। तपः फट्। सर्वलोक फट्। सर्व पाताल फट्। सर्व तत्व
फट्। सर्व प्राण फट्। सर्व नाडी फट्। सर्व कारण फट्। सर्व देव
फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। ॐ ह्रूं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्य फट्
मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्।
हुंकारास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्।
ह्रीं स्वां फट्। ह्रौं ह्रीं फट्। भ्रामय २ फट्। छादय २ फट्।
उन्मूलय २ फट्। त्रासय २ फट्। संजीवय २ फट्। विद्रवय
विद्रावय फट्। सर्व दुरितं नाशय नाशय फट्।

विधानम्

सकृदावर्तनादेव सर्वविघ्नानि विनाशयेत। शतावर्तन
चोत्पातान रणादौ विजयी भवेत्। घृत गुगुल होमाद्ध्यर्य प्रसाध्या
नपि साधयेत॥ पठनात सर्व शान्तिस्या शस्त्रस्तु पाशुपतस्य

दुर्गा स्तोत्र महाभारतका

॥ संजयवाच॥

धार्तराष्ट्र बलं दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् अर्जुनस्य हितार्थाय
कृष्णो वचन मब्रवीत॥१॥

॥ कृष्णोवाच॥

शुचिर्भूत्वा महा बाहो संग्रामाभि मुखे स्थितः। पराजाय शत्रूणां
दुर्गास्तोत्र मुदीरय॥२॥ ॥सञ्जयवाच॥

एवमुक्तोर्जुनः संख्ये वासुदेवेन धीमता। अवतीर्य रथात्पार्थः
स्तोत्रं महा कृताञ्जलिः॥३॥ ॥ प्रार्थना॥
नमस्ते सिद्ध सेनानी आर्ये मन्दरवासिनी। कुमारी कालि
कापालि कपिले कृष्ण पिंगले॥४॥ भद्रकाली नमस्तुभ्यं
महा काली नमोस्तुते। चण्डी चण्डे नमस्तुभ्यं तारिणी वर
वर्णिनी॥५॥

कात्यायनी महाभागे करालि विजये जये। शिखिपिच्छध्वज
धरे नानाभरण भूषिते ॥६॥ अट्ट शूल प्रहरणे खड्ग खेटक
धारिणी। गोपेन्द्रस्यऽनुजे ज्येष्ठे नन्दगोप कुलोद्भवे ॥७॥
महिषासृक प्रिय नित्यं कौशिकी पीतवासिनी। अट्टहासे
कोकमुखे नमस्तेऽस्तु रणप्रिये ॥८॥ उमे शाकम्भरी श्वेते कृष्णे
कैटभ नाशिनी। हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तुते ॥९॥
वेद श्रुति महा पुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि। जम्बू कटक
चैत्येषु नित्यं सन्निहितालये ॥१०॥ त्वं ब्रह्म विद्या विद्या
नां महा निद्रा च देहिनाम्। स्कन्ध मातर्भगवती दुर्गे
कान्तार वासिनी ॥११॥ स्वाहा कारः स्वधा चैव कला काष्ठा
सरस्वती। सावित्री वेद माता च तथा वेदान्त उच्यते ॥१२॥
स्तुतासि त्वं महा देवि विशुद्धे नान्तरात्मना। जयो भवतु मे नित्यं त्वत्
प्रसादाद् रणाजिरे ॥१३॥ कान्तार भय दुर्गेषु सु भक्तानां चाऽऽलयेषु च।
नित्यं वसत पाताले युद्धे जयसि दानवान् ॥१४॥ त्वं जम्भनी मोहिनी च
माया ह्रीः श्रीस्तथैव च। सन्ध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा ॥१५॥
तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्य विवर्धिनी। भूतिर्भूतिमतां संख्ये
वीक्ष्यसे सिद्ध चारणैः ॥१६॥ ॥संजय उवाच॥
ततः पार्थस्य विज्ञाय भक्तिं मानव वत्सला। अन्तरिक्ष गतो वाच
गोविन्दस्याग्रतः स्थिता ॥१७॥

" देव्युवाच "

स्वल्पे नैव तु कालेन शत्रुञ्जेष्यसि पांडवा। नरस्त्वमसि दुर्धर्ष
नारायणसहायवान ॥१८॥ अजेयस्त्वं रणोऽरीणामपि वज्रभृतः
स्वयम्। इत्येवमुक्त्वा वरदा क्षणेनान्तरधीयत ॥१९॥ लब्ध्वा
वरं तु कौन्तेयो मेने विजयमात्मनः। आरुरोह ततः पार्थो रथम् परम
सम्मतम ॥२०॥ कृष्णार्जुनावेकरथौ दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः। यः इदं
पठते स्तोत्रं कल्य उत्थाय मानवः ॥२१॥ यक्षरक्षःपिशाचेभ्यो
न भयं विद्यते सदा। न चापि रिपवस्तेभ्यः सर्पाद्या ये च दंष्ट्रिणः
॥२२॥ न भयं विद्यते तस्या सदा राज्यकुलादपि। विवादे जयमाप्नोति
बद्धो मुच्येत् बन्धनात् ॥२३॥ दुर्गं तरति चाऽवश्यम् तथा चौरैर्विमुच्यते
। संग्रामे विजयेन्नित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति केवलाम् ॥२४॥ आरोग्यबल
सम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं तथा। एतत दृष्टं प्रसादात्तु मया व्यासस्य
धीमतः ॥२५॥ मोहादेतौ न जानन्ति नरनारायणवृषी। तव पुत्रा दुरात्मानः
सर्वे मन्युवशानुगाः ॥२६॥ प्राप्तकालमिदं वाक्यं कालपाशेन
गुण्ठिताः। द्वैपायनो नारदश्च कण्वो रामस्तथाऽनघः ॥२७॥
अवारयस्तवसुतं न चाऽसौ तद् ग्रहीतवान। यत्र धर्मो द्युतिः
कान्तिर्यत्र ह्रीः श्रीस्तथा मतिः ॥२८॥ दुर्गा स्तोत्रं शुभं समाप्त

पंच गव्य में १ तोला गाय के गोबर का रस २ तोला मूत्र तीन तोला दही ४ तोला दुध ५ तोला गाय का घी एक में मिला कर पीले

॥ क्षेत्र कीलन् विधि ॥

जहां जप का स्थान चुने पुरश्चरण के लिये वहां १ वित्ता की पीपल की डन्डी १० लाकर १०८ बार (ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्) इस मन्त्र से अभिमान्त्रित करके अपने बैठने की जगह के सर्वतरफ दशो दिशा में गाड़ ले॥ फिर कहे॥ ॐ ये चात्र विघ्न कर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगा: विघ्न भुताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्यसिद्धिषु ॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरित: ॥ अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥२॥ इति मंत्रद्वयेन १० दिक्षु कीलान्निखनेत् फिर। ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट् ॥ इति मंत्रेण प्रत्येकं कीलं संपूज्य (पंचोपचार से कील का पूजन करे) फिर दिक्पालों को क्षेत्रपाल गणपति को पंचोपचार से बलि दे। पंचमहाभूतो को बलि दे आगे बलि विधि बटुक, योगिनि, क्षेत्रपालों, को गणपति को, पंचमहाभुतों को, सबको लिखी है॥

॥ आसुरी कल्पः ॥
पूजा विधान

रक्त वस्त्र परीधानां रक्ता लंकार भूषितां, रक्त पुष्पैश्च संपूज्य
रक्त चन्दन चर्चितां॥
नमस्त्वामासुरि अम्बे रक्त नेत्रे ॥ प्रार्थना ॥
नमस्त्वामासुरी अम्बे रक्त नेत्रे कामार्चिते । रक्त वास
परीधाने रक्त मल्यानुलेपने ॥१॥ सिद्धासने चतुर बाहू
नाना युध विधारिणी ॥२॥ शरणा गत दीनार्त परित्राण
परायणी । सर्वस्यार्त हरे देवि नारायणी नमोस्तुते ॥

॥ प्रयोग विधि ॥
चतुष्कोणम् चतुर्द्वारम् मध्ये नरमुद्दारयेत् । हस्तौ
पादौ च माया त्रिसंल्लिखेश्चैव सर्वदा ॥१॥ एकं शिरसि
प्रदातव्यं गुह्यमेकं लिखेत्पुनः । चतुर्द्वारेषु वेदाश्च
मध्य मेकं लिखेत्तथा ॥२॥ तत्रै वामुकं वश्य मानयेति
माया यंत्रं प्रतिष्ठितम ॥ नामौ ह्रीं बीजं सहितं मिति
यंत्रस्य लक्षणम ॥३॥ लेखनस्यै व द्रव्याणि अष्ट गंध
मता परम् ।

॥ कार्तिके उवाच ॥
कैलाश शिखरासीनं देव देवं शिवम् । स्कन्धः पृच्छा
पृच्छति तत्कर्म सत्वरं वद मे प्रभो । वश्याकर्षण
विद्वेषण मारण स्तम्भनास्तथा शत्रोरुच्चाटनम्ब्रूहि

त्रैलोक्येषु गतारिणम् ॥२॥ सर्वकामसुखार्थं चानिग्रहार्थं
प्रकल्पयेत् ॥ ब्राह्मणा क्षत्रिया: वैश्या: शूद्राश्चैवान्त्य
जातय: ॥३॥ शीघ्रं स्यात्र तद्ब्रूहि कृपया परया विभो॥

॥ ईश्वरोवाच ॥

श्रुणु वत्स्य महामंत्रं मासुरी विधि पूर्वकम् । देहन्यासं
करन्यासं हृदयान्यासं समान्वितम ॥४॥ ततो ध्यात्वां जपे
द्यस्तु तस्य सिद्धिरनेकधा ॥ सर्वे च वशमायान्ति देव
गन्धर्व पन्नगा ॥५॥ ॥ कार्तिके उवाच ॥
विधिं कथय मे तात ग्मासुरी कल्प मुत्तमम् ॥
का तिथि: किं च नक्षत्रं को मासा कस्या वासरः ॥६॥
किं हि वर्षं च का बेला किं ध्यानं कश्य पूजनम्

॥ इश्वरोवाच ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं न मासो नैव वासर: ॥ न योगो
न ऋतुश्चैव न बेला न विधिस्तथा न दिवा न रात्री
-र्वा न पक्षो न मुहूर्त कम् ॥७॥ हन्तु कामस्त शत्रुणां
क्रोधो रेवाहि कोररााम्

११० अक्षर का मंत्र है। यहां

आसुरी कल्प प्रयोगः

मंत्र महोदधौ वक्ष्याम्यथर्व वेदोक्त मासुरी विधि मुत्तमम् ॥

तारोदरासुरी मंत्रो दशोत्तर शताक्षरः ॥१॥ मन्त्रो यथा=(ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्त वाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोर कर्म कारिके (अमुकस्य) गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हूं फट् स्वाहा

॥ इति दशोत्तरशताक्षरी मंत्रः ॥

॥ अस्य विधानम् ॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ अंगिरा ऋषिः विराट् छंदः, आसुरी देवता, ॐ बीजम् । स्वाहा शक्तिः हुं कीलकम् । ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

॥ ऋषियादि न्यासः ॥

ॐ अंगिरा ऋषये नमः (शिरसि) विराट् छंदसे नमो मुखे। आसुरी देवतायै नमो हृदि। ॐ बीजाय नमो लिंगे। ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। ॐ हुं कीलकाय नमो नाभौ। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ इति ऋषयादि न्यासः ॥

॥ कर न्यासः ॥

ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा (अंगुष्ठाभ्यां नमः) ॐ सुभगे आसुरि हुं फट् स्वाहा (तर्जनीभ्यां नमः) ॐ रक्ते रक्त वाससे हुं फट् स्वाहा (मध्यमाभ्यां नमः) ॐ अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा (अनामिकाभ्यां नमः) ॐ अघोरे अघोर कर्म कारिके हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः)

ॐ (अमुकस्य) गतिं दह दह उपविष्टस्य गुह्यं दह दह सुप्तस्य मनो दह२ प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः॥

॥ हृदयादि षडङ्गन्यासः ॥

ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा (हृदयाय नमः) ॐ सुभगे आसुरी हुं फट् स्वाहा (शिरसे स्वाहा) ॐ रक्ते रक्तवाससे हुं फट् स्वाहा (शिखायै वषट्) ॐ अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा (कवचाय हुं) ॐ अघोरे अघोर कर्म कारिके हुं फट् स्वाहा (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ (अमुकस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुह्यं दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच ताव द्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा (अस्त्राय फट्) इति हृदयादि षडङ्गन्यासः॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ शरच्चन्द्र कांतिर्वराभीति शूलं सृणि हस्त पद्मैर्दधानां बुजस्था विभूषां वराड्याहि यज्ञोपवीता भूदेऽथर्व पुत्री करोत्वासुरी नः॥१॥ इति ध्यात्वा पंचोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्॥ -॥ विधान ॥

अस्य पुरश्चरणम युत जपः। घृताक्त राजिकया सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगा— साधयेत्। तथा च अयुतं प्रजपेन्मंत्रं जुहुयात्दशांशतः। घृताक्त—

राजिकं वह्नौ ततः सिद्धो भवेन्मनुः॥ धृत्वा सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्ट सिद्धये॥ पंचांग मासुरीं मंत्री गृहीत्वा मंत्रयेच्छतम्॥ तया धूपित मात्मानं योजिद्येत्स वशो भवेत्॥ मद्यवक्त्रा मासुरीं हुत्वा सहस्रं वशयेज्जगत्॥ राजिका प्रतिमां कृत्वा दक्षांघ्रे मस्तकावधि॥ अष्टोत्तर शतं खंडान् जुहुयाद सिना कृतान्॥ नार्याः प्रति कृतेरेवम् पदादि हवनं चरेत्। एवं कुर्यात्स सप्ताहं राजों चिते ऽनले॥ स सप्तनोऽपि मृत्युं तं दासो जायेत मंत्रिणा॥ स्त्री लिंगोहः प्रकर्तव्यो मंत्रे नारी वशी कृतौ॥ अन्यः कल्पः॥ कटु तैलान्वितां राजीं निंब पत्र युतां रिपोः॥ नाम युङ् मनुवा हुत्वा ज्वरिणं कुरुते रिपुम्॥ एवं राजी सलवणां हुत्वा स्फोटो भवेद्धरेः॥ अन्य कल्पः॥ साधको राजिकां हुत्वा ब्राह्मणं वशयेद् ध्रुवम्॥ क्षत्रियं तु गुडाभ्यक्तां वैश्यम् सेंधा नमक राई सहित दधि युतां च ताम्॥ च॥ शूद्रं लवण संयुक्तां हुत्वा तां साष्टकं शतम्॥ आसुरी सभिधं हुत्वा मद्यवक्त्रां लभते निधिम्॥ च॥ ॥ अन्य कल्पः॥ तोय पूर्ण घटे मंत्री राजिका पल्लवान्विते॥ आवाह्य तां पूजयित्वा शतं मूलेन मंत्रयेत॥ १०॥ तेनाभिषिक्तं मनुजेना लक्ष्मी राध्यो रुजः॥ उपसर्गाः पलायंते परित्यज्याति दूरतः॥ अन्य कल्पः॥ आसुरी कुसुमं शीतं प्रियंगु नाग केसरम्। मनः शिला च तगर मेतत्सर्वं विचूर्णितम्॥ १२॥ शताभि मंत्रितं साध्य मूर्ध्नि क्षिप्तं वशमवृतम्॥ १३॥

अन्य कल्पः ॥ निम्ब काष्ठे समिद्धे ऽ ग्नावासुरीं सर्षपान्विताम् ॥
अष्टोत्तर शते हुत्वा सप्ताहं दक्षिणामुखः ॥१४॥ विद्ध्याद्वैरिणश्छत्रुं
सूर्य सुनु गृहातिथिम् ॥१५॥ किं कुर्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्युरिब्रो
कुर्युः रिपवोऽखिलाः ॥ क्रुद्धा कालोऽपि किं कुर्य्याद्दासुरी चेद्
पालिता ॥१६॥ ग्रन्थान नेक नालोक्य मंत्रा गुप्ततमा मया ।
हिताय सुधियां ख्याता विस्तराद् उपरम्यते ॥१७॥ इति आसुरी कल्पः ॥

चौगुना जपे दस हजार का विधान है ४० हजार जपले । ४ हजार मंत्र मंत्र से हवन ४ सौ तर्पण ४० मार्जन

शब्द — अर्थ	शब्द
	घृताक्त = घी में बोर बोर कर हवन करे
आसुरी कुसुम - राई का फूल	मधुवक्तां - मधु राई से
शीतं चंदनम् - सफेद मलयागिरि चंदन	योजिघ्रेत - सूंघना
सर्षप - सरसो	कटुतैलान्वितां राजी - कड़ुवा तेल और राई
प्रियंगु - काकुन	निंब पत्र - नीम के पत्ते
सूर्यसुनु - यमराज के घर जाय	नामयुङ् मनुवा हुत्वा - जिसके नाम से हवन कर दे
विचूर्णितम् - पीस लो	राजीं सलवणां हुत्वा - राई सेंधे नोन से हवन करदे ।
शताभि मंत्रितं - १०८ मंत्र से अभिमंत्रित करलो	अर्क दुग्धाक्त हद्धो - मानेत्रे - मदार को दूध राई सान कर हवन करे तो नेत्र चले जाते हैं
साध्य मूर्द्धि - सिरपर डालो	
राजिकया काष्ठ - राई की लकड़ी	अर्क दुग्ध - मदार का दूध (अकवन का दूध)
चितागो - चिता की आग में	एकभुक्त: - एक बार खाये
आक्रम्य - काटना	

पुरुष का करना हो तो स्त्री

दशांघ्रेर्मस्तकावधि = दाहिने पांव से शुरू करके मस्तक तक प्रतिमा के १०८ टुकड़े करे चाकू से या तलवार से। और सात दिन

हुत्वा - हवन। ।चिता की अग्नि में हवन करे। स्त्री का करना हो तो बांये पांव से मस्तक तक १०८ टुकड़े कर डाले

मृत्यंतम्	आजीवन	रविकाष्ठ	मदार (आकवन) की लकड़ी
मंत्री	साधक	ब्रह्म वृक्ष	पीपल
अयुतं	दश हजार	अश्वत्थ	पीपल
पंचांग	जड़ शाखा पत्ता फूल फल	गर्दभ	गदहा
आसुरीं	राई	अभ्युक्ष	जल से भिगाना
राजिकाम	राई	सिद्धार्थ	पीली सरसों
उपसर्गाः	उपद्रव	सर्प	घी
गुड़युक्तां राजीं	गुड़ और राई से	शततं	सदा
पुष्कर मूल	अंडी की जड़	पलास	ढाक की लकड़ी।
मृत माल्य	मुर्दे पर चढ़ी वस्तु	हाथीमद	जड़ी
विस्फोट	चेचक	अर्श	बवासीर
ह्रीः	लज्जा	विसूचिका	चेचक
श्रीः	शोभा	अष्टाविंशति	अट्ठाइस हजार
कान्तार	जंगल	पंचाशति	५० हजार
विदयेस	देखना	अष्टशीति	८८ हजार
बज्रयुतः	इन्द्र	सहस्त्र संख्याकं	एक हजार
कल्यं	प्रात काले	क्षीर खण्ड ज्य मधुना	दूध घी खांड मधु
		प्रयच्छमें	हमें दो
		विलयं	भाग जाय
		ब्रजे	जाओ
		स्नात्वा	स्नान

अघोर मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोर अघोरतर तर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रकट प्रकट कह कह शम शम जात जात दह दह पातय पातय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरास्त्राय फट्। अघोर मंत्र वेदोक्त

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः

अस्य बिधानम् = शमशान में सवा लाख अर्द्ध रात्री में मौन होकर जपे।

यदि ब्राह्मण वश करे तो उसकी प्रतिमा बना कर उसके नाम से प्राण प्रतिष्ठा करे और फिर पूजन कर ढाक या पीपल की लकड़ी में १०८ टुकड़ा करके प्रथम दिन हवन कर दे फिर सात माला रोज जपे। तो वश होवे। यदि ढाक के फूल राई दूध की खीर एक एक टुकड़े के साथ हवन करे तो वेद पारंगत भी वश होवे।

मारण - मोहन - वशीकरण - उच्चाटन - विद्वेषण - में अथवा अंधा करने में या = अच्छा करने में या = मिर्गी या = चेचक या = घाव या - कोढ़ी करने में या = पागल = करने में तथा अच्छा करने में राई के चूर्ण की प्रतिमा चाहे स्त्री की हो, या पुरुष की, प्रयोग के अनुसार नारी नर के चिन्ह की प्रतिमा बना कर पहले प्राण प्रतिष्ठा करे। जिसके ऊपर करना हो, उसके नाम से प्रतिष्ठा करे, फिर पंचोपचार से पूजन करके एक चाकू से नर हो तो दाहिने पांव से, सिर तक, नारी हो तो बांये पांव से सिर तक, १०८ टुकड़े करके घी में बोर २ कर हवन मूल मंत्र पढ़ता हुआ मदार की लकड़ी में हवन कर डाले। फिर सात माला रोज करे। एक टाइम खाये शुद्धि से रहे जमीन पर सोये ब्रह्मचर्य रहे

अभ्युक्ष - जल से भिगाना
प्रकल्प - निश्चय
नद्यादौ - नदी
गोधूमचूर्ण - गेहूं का आटा
प्रभक्षयेत - पकावे
रम्ये - रमणीक
सर्वसंगविवर्जिता - अकेला रहे
कुटीरे - कुट और बाग
कृष्णागुरु - अगर
चन्दनागुरु - सफेद चंदन
प्रजपेन्मंत्रराजं - मंत्र जपे
कुलालखर्परे - कुम्हार के सिकोरे में
समादाय - लाकर
यावन्धनं - जब तक
लूतादि - कीड़े
मनुनवेष्टितम् - मंत्र पढ़ता हुआ
जातिजातया - चम्पा की कलम
अतिविषा - अतीस
अधः पुष्पी - अंधा हूली

राजवृक्ष - पीपल
करवीर पुष्प - कनेर के फूल
अपामार्ग - लटजीरा, ओंगा
अमृता - मालकांगनी
कुकुट - सतावर
कुमारिका - क्वार गंदल
क्षारं - नौसादर
दौद्र - चम्पक
उन्मत्त या कनक - धतूरा
अरिष्ट - अरीठा
अर्क - मदार, आकवन,
उदुम्बर उडम्बर - गूलर
एला - इलाइची
कणा - पीपर
कण्टक - कांटा भी बांस भी
कर्कटी - ककड़ी
कलक - बहेड़ा
क्षीरणी - थूहर
घनसार - कपूर
चित्रक - चिता जो कुष्ठ में लगे
सुरामासी - बालछड़
जया - जयन्ती

ब्रह्मवृक्ष - ढाक
द्वीपचर्म - हाथी का
खरचर्म - गदहा का
अजा, बकरी
मेष, बकरा
छागल - बकरा
दाड़िम - अनार

गिरिकर्णिका = कालाजीरा
जाति - = जायफल
मद्रक = बघारा
मधुक = महुवा
मातुलुंग = नीबू
तुष = बहेड़ा
मासी = बाल क्षग
राजिका = राई
धात्री = तालिस
नागदमनी = चिन्दार
लक्ष्मणा = कण्टकारी
निर्मोकि = केंचुली सांप की
लज्जा = लाजवन्ती
नीप = हल्दू
लोहं = गजवेल
हरिद्रा = दारु हल्दी
सुश्रामना = गोरोचन
न्यग्रोध = वरगद (बट)
वार्ताक = बैंगन
पलास = ढाक (टेसू)
वास्तुक = बथुवा
बिभीतक = बहेड़ा
विष = बछनाग

भद्रमुस्त = नागरमोथा
भल्लातक = भिलावां
शतपुष्पिका = सोया
शम्बुबीजं = शिवलिंगी
श्रृंगवेर = अदरख
शशी = कपूर
श्वेत = फिटकरी
रवि काष्ठ = मदार
आत्मानं = अपने को
मंत्रयेच्छतम् = सौबार मंत्रित करे
जुहुयाद्दासना - हवन करे
हवनं चरेत =
मंत्रयेच्छतम = सौबार मंत्रित करे
अष्टोत्तर = १०८ बार
चिताऽनले = चिताअग्नि में
छेदयकृति: = टुकड़ा करो
दक्षिणांपादमारभ्य - दाहिने पांव से शुरू करो

सिद्धि करने के समय और प्रयोग के समय एक प्रतिमा बनेगी राई की फिर उसके आकार में एक माया बीज सिर पर ~~एक माथे पर~~ एक नाभी में १ हृदय में एक योनी में, दोनों हाथ में दोनों पैर में २-२ ~~एक योनी में~~। और पुरुष पर प्रयोग में दोनो अंडकोषों में १ लिंग में और चारों द्वार पर एक एक बीज १ बीच में बीज लिखा जायेगा। नारि प्रयोग में योनी में लिखो।

॥ आसुरी कल्प सिद्धि ॥ और प्रयोग। पुरुष प्रयोग में दोनों अंड कोशों १ लिंग में लिखो

आसुरी जप ४० हजार जप करके घी और राई मिला कर आसुरी की लकड़ी में दशांश हवन चार हजार मंत्र से करे चार माला से तर्पण ४० बार मार्जन ४ ब्राह्मण खिला दे। फिर आसुरी की जड़ शाखा फूल पत्ता फल सब मिला कर सौ बार मंत्रित करके धूप दे कर अपने को सुंघा ले सब धुंआ फिर जो उसके पास से निकले वश हो जाय। यदि शहद राई मिला कर १ हजार बार हवन कर दे तो जहां जाय लोग वश हो जायेंगे। मारण करने में यदि राई की प्रतिमा बना कर प्रतिष्ठा शत्रु नाम से यदि पुरुष हो तो दाहिने पांव से, मस्तक तक के १०८ टुकड़े तलवार से करके सात दिन चितागिन में हवन करे तो वह पुरुष मरे। यदि स्त्री का मारना हो तो बांये पांव से मस्तक तक उसके १०८ टुकड़े तलवार से कर के चिताग्नी में हवन करे तो मरे ॥१॥ यदि स्त्री पुरुष दोनों को वश में करना हो तो भांगर की या अंडी की जड़ और राई के फूल मोर का मांस सब सम भाग ले कर १०८ बार इसी चूर्ण से हवन करदो। कुछ चूर्ण बचा लो १०८ बार आसुरी मंत्र से अभिमंत्रित करके दोनों के सिर पर छिड़क दो। यदि यह पदार्थ हवन के वास्ते न मिले तो राई का पंचांग नागेन्द्रमद नाम की जड़ी के चूर्ण से हवन करदे या काकुन मैंसिल तगर नाग केसर का चूर्ण करके हवन करदे। अंजन बनाना हो तो राई का फूल पत्ता बाय बिडंग केसर सौवीर अंजन

गल कर पीस कर खूब महीन कर अंजन बना लोइसो से हवन भी करो।
जो देखे वश होवे (यदि राई में शूकरी का मांस मिलाकर हवन करदे
तो राजा पर्जा सब बश में होवें। लकड़ी मदार की होना चाहिये इस
प्रयोग में।। यदि राई की लकड़ी के १०८ टुकड़े करके मधु और घी
लपेट कर मदार की लकड़ी में मूलमंत्र से सात दिन १ माला से हवन करे तो निधि
प्राप्त हो।। यदि मधु-घी-राई-दही- मिला कर राई की लकड़ी
में सात दिन यों ही हवन १०८ बार करदे तो मां खुश होवे। दस हजार जप करे तो १ हजार बार
सात दिन में हवन करे १०८ मंत्र से तर्पण, दस बार मार्जन, १ ब्राह्मण भोजन,
करादे तो सौ वर्ष जीवे। और यदि जिस राजा का राज्य चला गया हो वो वापस लौटे।
लौटाना हो तो, दस लाख बार मंत्र को जपे। एक लाख मंत्र से सात दिन में हवन करे।
दस हजार तर्पण, १ हजार मार्जन करे। जिस राजा को राज्य लौटाना
हो उसके नाम से संकल्प जरूर करलेना पहले।। यदि राजगद्दी
हाथी आदि सब लौटाने की इच्छा हो तो (मधु घी शक्कर) मिलाकर
राई की लकड़ी में सात दिन में एक लाख आहुति दे। दस लाख मंत्र जपे
दस हजार तर्पण करे। एक हजार मार्जन करे १०० ब्राह्मण
खिलावे तो लौटे।। यदि दरिद्रता दूर करनी हो तो जल में
खड़ा होकर राई के फूल से मूल मंत्र से १ हजार अंजुलि दे रोज
सात दिन तक और राई से १०८ मंत्र से हवन करदे।। यदि दुष्ट ग्रह दूर करने हों

अन्य प्रयोग:

तो राई के (पत्ते, फूल, शहद, घी) से सात दिन तक नित्य १०८ बार हवन करदे राई की लकड़ी में और सात माला रोज जप करदे तो दुष्ट गृह दूर हो जाते हैं॥ यदि ज्वर उतारना हो तो योजना बनाकर नाम से १ लाख मंत्र जपे। चौथइया उतारना हो तो एक हजार मंत्र जपदे। जिसका ज्वर उतारना हो या गृह हटाना हो, उसकी राई की प्रतिमा बनाके, प्राण प्रतिष्ठा उसके नाम से करके, पंचोपचार से पूजन करके, प्रतिमा के १०८ टुकड़े चाकू से करके, जिस बस्तु से जिस लकड़ी में हवन करना हो उस वस्तु में १-१ टुकड़ा मिला कर हवन पहले दिन ही कर दे फिर जप करे। हर कार्य प्रतिमा बना कर होगा। यह ध्यान रक्खे। यदि किसी को अंधा करना हो तो उसकी राई की प्रतिमा बना कर हृदय में उसका नाम लिखदे। और सब जगह बीज लिख कर प्राण प्रतिष्ठा उसके नाम की करके पंचोपचार से पूजन करके चाकू से १०८ टुकड़े करके राई मिला २ कर आक वन की लकड़ी में हवन कर दे सात माला रोज सात दिन जपे। यदि उसे अच्छा करना हो तो प्रतिमा वाला क्रम करके राइ दूध में पका कर बरगद की लकड़ी में हवन कर दे सात दिन १ माला बराबर तो ठीक हो जायेगा।

॥ उच्चाटन प्रयोग॥

यदि उच्चाटन करना हो तो प्रतिमा राई की बना कर उसी क्रम से बिधान करके हर टुकड़े को घोड़े गदहे कुत्ते के रोम से एक माला से रोज सात दिन तक हवन करदे फिर सात दिन जप करे उच्चाटन होवे

जिसके ऊपर जो विधान करना हो उस कार्य का उसके नाम से संकल्प पहले करलेना चाहिये। प्रतिमा के हृदय में उसी का नाम लिख दे। इस प्रयोग से उच्चाटन का संकल्प होगा तो उच्चाटन होगा। ज्वर का या मिर्गी का या पागल का या घाव का या चेचक का जिसका संकल्प करलोगे वही हो जायेगा॥ जब अच्छा करना हो तो राई को गो दुध की खीर से सात दिन मदार की लकड़ी में हवन करदे तो शान्ति हो जाय। बीमार डालना हो तो उसी विधान को करके राई और सेंधे नोन से पीस कर अकवन की लकड़ी में हवन करदे॥ पागल करना हो तो चिता भस्म राई जन मांस मुर्दे की चढी वस्तु फूलादि सब भाग ले के जिसके नाम से संकल्प करके मदार की लकड़ी से हवन करे और उसी बचे चूर्ण को १०८ बार मंत्रित करके उसके ऊपर डाल तो फौरन विकल हो जाय॥ यदि विस्फोट करना हो तो राई नीम के पत्ते कडुवा तेल से सात दिन उसके नाम से संकल्प करके हवन करदे॥ अच्छा करना हो राई की खीर से अकवन की लकड़ी से हवन ७ दिन करदे।

विप्र वश्य प्रयोग॥

यदि ब्राह्मण वश में करना हो तो उसकी प्रतिमा बना कर उसके नाम से प्राण प्रतिष्ठा करके फिर वश में करने का संकल्प

करके फिर पूजन करके १०८ टुकड़े करके घी राई और एक एक वह टुकड़ा मिला कर हवन करदे पीपल या मदार की लकड़ी में तो वश हो यदि आक के फूल राई को खीर से हवन कर देतो वेद पारंगत पंडित भी हो तो वश होवे। सात दिन सात माला रोज जप जरूर करना होगा॥

स्त्री वश करना हो तो राई गुण घी से आक या पीपल की लकड़ी में हवन करदे १२ दिन में वश में हो जायेगा।

यदि कृष्णा पक्ष की चौदस से तीन दिन राई से सुबह दुपहर शाम रात चारों पहर १-१-माला से हवन करदे तो वैश्य वश में हो जावे

यदि तीन दिन बराबर घी में बोर २ कर राई से हवन करे और तीनों काल १-१-माला रोज ३० दिन जपे तो तीन दिन में या एक मास सात दिन में वश होवे।

मारण में नीम के पत्ते राई कड़ुवा तेल मिला कर नीम की ही लकड़ी में हवन करदे। प्रतिमा के हर टुकड़े मिला लो। फिर सात दिन सात माला रोज जपकरे जिस पर मारण करे उसकी प्रतिमा बना कर नाम [illegible] में लिख उसके नाम से प्राण प्रतिष्ठा पूजन करके मारण का संकल्प करके टुकड़े चाकू से कर डाले फिर हवन कर के जप करे। यदि आसुरी में मदार का दूध मिला कर मदार की लकड़ी में कृष्णा पक्ष की अष्टमी को रात को हवन करदे। फिर सात दिन तक जप करे सात माला रोज तो सात दिन में

मरे

संकल्प योजना रोगी के नाम से पहले करले तब प्रयोग करे
होली दिवाली शिवरात्री या ग्रहण में १० माला से घी गुगुल से हवन करके जगाले
तभी प्रयोग करना शुरू करे॥ ग्रह एवं बाधा दूर करने का सावेरा मंत्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल किल नखाय रौद्र दंष्ट्रा कराल
वक्त्राय त्रिनयनाय धग धगितं पिशंग ललाट नेत्राय तीव्र कोपान
लामित तेजसे पाश शूल खड्ग डमरुक धनुर्वाण मुद्गराभय दण्ड त्रास
मुद्राव्यय दसं यदाइदण्ड मंडिताय कपिल जटाजूटार्द्ध चन्द्र धारिणे
भस्म राग रंजित विग्रहाय उग्रफणि काल कटा टोप मंडित कण्ठ सर्प
देशाय जय जय भूत नाथामरात्मन् रूपं दर्शय २ नृत्य २ चल २
पाशेन बंध २ हुंकारेण त्रासय २ बज्र दंडेन हन २ निशित खड्गेन
छिन्धि २ शूलाग्रेण भिन्धि २ मुद्गरेण चूर्णय २ सर्व ग्रहानावेशया
वेशय स्वाहा ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय ठः ठः ॥ इति मन्त्रः ॥
अस्य विधानम्॥ गुगुल मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत् । मंत्रेण तेन
हरीत तर्जयेद् ग्रह पीडितम् ॥१॥ ग्रहा विष्टेन चेतस्मये दीयते
बलि सत्तमः ॥ मुक्तो भवति तस्माद्ध संशयो नास्ति तत्र च ॥२॥
प्रयोगविधि॥ जिस को बाधा दूर करनी हो उसके नाम से संकल्प करके
उस बाधा का अथवा ग्रह का ध्यान करे फिर यदि
ग्रह बाधा हो तो खीर केवल बलि में दो भूत प्रेत पिचाश जिंद लगा हो तो साग पूड़ी
मद्य मांस मीन मिठाई एक लाल वस्त्र या काला हो एक थाल में रखकर १
कोठरी में २४ घंटे को बन्द करदो। और निशा में १ हजार मन्त्र से
घी गुगुल से हवन करदो। भूतेश्वर भगवान को पंचोपचार से
पूजन करदो॥ यदि ब्रहम राक्षस हो तो हवन करके तर्पण करदो १०८
(ब्रहम देवाय तृप्यताम)
... दूर करना हो तो खीर लड्डू रखें। भूत प्रेत दूर करने में मीन मांस मद्य भोज

॥ साबर नृसिंह मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोर रौद्र महिषासुर रूपाय त्रैलोक्याडंबराय रौद्र क्षेत्रपालाय ह्रों ह्रौं क्रौं क्रौं क्रौमिति ताडय २ मोहय २ द्रंभि २ क्षोभय २ फ़ाभि २ साधय ह्रीं २ हृदये फ़ां शक्तये प्रीति ललाटे बंधय २ ह्रीं हृदये स्तम्भय २ किलि २ ई ह्रीं डाकिनी प्रच्छादय २ शाकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ प्रभूतं प्रच्छादय २ स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय ब्रह्म प्रच्छादय सिंहिनी पुत्रं प्रच्छादय २ डाकिनी गृहं साधय २ शाकिनी गृह साधय २ फ़नेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाचा ऐकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंच वातक पैत्तिक श्लेष्मिक सान्निपातकेसरि डाकिनी ग्रहादीन्मुंच स्वाहा गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥

॥ विधान ॥

लोहे की शैलसे या छप्पर की तीली से २१ बार झार दे तो उन्मादादिक बाधा दूर हो॥ डाकिनी से बालक छुड़ाने का मन्त्र

ॐ काला भैरव कपिली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भैरव भस्म मुसाण जेहि मांगू सो पकड़ो फ़ान डंकिनी संखिनी पटसिहरी जरख चढ़न्तो गोरख मारो छोड़ छोड़ रे पापिनी बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया। विधान तीर से झाड़ दे या मंत्र पढ़ कर पानी पिला दे ठीक हो जायेगा।

चौथे अध्याय में ३४ से ३७ श्लोक तक १२५००० मंत्र विधि-पूर्वक जपने से फौरन कार्य सिद्ध होंगे॥

॥ संकल्प योजनायें ॥

हर कार्य करने का पहले संकल्प करलो तब इस तरह जपो।

जहां देवदत्त है उसकी जगह नाम बोला जायेगा) जैसे गर्भ स्तंमन करना है किसी का (ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मालती ब्राह्मणिया: गर्भ सतंम्भन कुरु २ स्वाहा ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा) अथवा किसी स्त्री को बुद्धि स्तमन करना हो तो॥ अमुकी देव्या: बुद्धि स्तम्भय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा॥ इसी तरह सब समझो उच्चाटन मारण मोहन आकर्षण में यदि कोई भूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी राक्षसी आदि बाधा निवारण करना हो तो पूरा संकल्प का मंत्र विशिष्टायां तक पढ कर के कहो स्त्री हो तो जैसे रानी का हटाना है। तो रानी देव्यै क्षत्राणिया: समस्त बाधा निवारण हेतवे आद्यारम्य चत्वारिंशति पीरयन्तम अमुक दुर्गा मन्त्र) या नारायणास्त्र मंत्र) या हनुमान स्तोत्र) या भूतेश्वर सावर मंत्र जो हो कह कर जितना हजार जपना हो जैसे दस हजार जपना हो तो (शत सहस्रं) संख्याकं परीमितम् दशांश हवनं दशांश तर्पण मार्जनं ब्राह्मणभोजनं कार कमला [illegible] नामाहं अच्युत गोत्रकं जपं करिष्यामि॥

दुर्गा सप्तसती के इन ४ श्लोकों को पढ़ कर हवन न करे। कात्यानी तन्त्र में लिखा है इससे देह का नाश होता है। जहां यह श्लोक आवें (ॐ नमश्चांडिकायै स्वाहा पढ़ कर कर आहुति डाल देना चाहिये॥ (यह श्लोक है। शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके) यह आधा श्लोक है। (प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां) (सौम्यानि यानि रुपाणि) (खड्ग शूल गदादीनि) यही संकेत श्लोकों का है दुर्गासप्तसती में पूरे श्लोक लिखे हैं चौथे अध्याय में पीछे की तरफ हैं।

नवार्णमन्त्र के
॥ दुर्गा कल्पद्रुम के प्रयोग ॥

॥ वशीकरण ॥

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुक नामाख्यं) वषट् मे वश्यं कुरु २ स्वाहा

॥ उच्चाटन ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (देवदत्तं) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा

॥ मोहन ॥

क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (देवदत्तं) क्लीं क्लीं मोहनं कुरु २ क्लीं क्लीं स्वाहा॥

॥ मारण ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (देवदत्तं) रं रं खें खें मारय २ रं रं शीघ्रभस्मी कुरु २ स्वाहा

॥ स्तम्भनम् ॥

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (देवदत्तं) ह्रीं वाचमुखम पदम स्तंभय २ ह्रीं जिह्वां कीलय २ ह्रीं बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा॥

॥ आकर्षण ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (देवदत्तं) यं यं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा

॥ यह नवार्णमन्त्र के प्रयोग है॥

हर कार्य में न्यास करके बैठे सवा लाख जप ले पंचोपचार से पूजन करले

पूजन मंत्र पंचभूतों के॥ (ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि) ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि) ॐ यं वाय्वात्मने धूपं समर्पयामि) ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं समर्पयामि) ॐ वं अमृतात्मने अमृत नैवेद्यं समर्पयामि

आधा शीशी जाय।

१२५००० मन्त्र यथा विधि जप के फूंक मारदे दूर हो जाय॥

ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः

॥ दुर्गा कल्पद्रुम ॥
॥ के प्रयोग ॥

ॐ अस्य श्री शूलिनी दुर्गा महा मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि: गायत्री छंद: श्री शूलनी दुर्गा परमेश्वरी देवता हुं बीजं मं शक्ति: स्वाहा कीलकं मम शूलिनी दुर्गा प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोग: ॐ शूलिनी वरदे देव सिद्धि सुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि वरदे देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट्
ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि युद्ध प्रिये देव सिद्ध सुपूजित नन्दी रक्ष रक्ष महा योगेश्वरी हुं फट् ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि महिषासुर मर्दिनि देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट्
ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि विन्ध्य वासिनि यन्त्र मन्त्र तन्त्राकर्षिणि देव सिद्ध सु पूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि सर्व सिद्धि प्रदायिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्र: करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: । इति करन्यास: ॥ एवं हृदयादिन्यास: ॥ ॐ श्री शूलिनि वरदे देव सिद्ध सुपूजित नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रां हृदयाय नम: ॥ ॐ श्री शूलिनि वरदे देव सिद्ध सु पूजित नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ श्री शूलिनि युद्धप्रिये देव सिद्ध सु पूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ श्री शूलिनि

ॐ

उत्तरन्यास का मतलब आदि अंत दोनों में न्यास होंगे

आदि करके अंगन्यास करन्यास सहित अंत में फिर अंगन्यास करन्यास होगा

इति जपं निवेद्य उत्तरन्यासं कृत्वा यथा शक्त्या प्रजप्य स्तुवीत॥

॥ दुर्गा कल्पतरु का प्रयोग ॥

यदि दुशमन पर प्रयोग करे
बबूर की लकड़ी में हवन करे।
गुड़ घी मधु से हवन करे।
रक्षा में ढाक की लकड़ी से हवन
केवल घी से हवन करे दे।
यदि युद्ध में विजय पाना हो तो।
ढाक की लकड़ी से हवन करे
घी तिल पीली सरसों से १लाख
मन्त्र से हवन करे दशांश तर्पण दशांश
मार्जन दशांश ब्राह्म भोजन करावे
और विधि वत यन्त्र पूजन करे ६००
माला प्रयोग करने के पहले हाथ में
लोहे का तीर लेकर जप डाले तब युद्ध में
प्रवेश करना चाहिये।

यदि ~~मू~~ विष किसी जहरीले जीव का
उतारना हो तो काटी हुई जगह को स्पर्श
करके। अमुकस्य शर्मणः विष शान्तिं कुरु २
हुं फट् स्वाहा। पढ़ कर पूरा माला मन्त्र पढ़ना
चाहिये २१ बार पढ़ने पर विष उतर
जाता है।

यश की इच्छा हो तो पीपल या
मदार की लकड़ी से हवन करे दे
घी मधु तिल से हवन होगा रोज
दस माला से हवन होगा।
भूत बाधा या गृह बाधा किसी
को लगी हो तो एक माला से
सिर्फ १०८ बार हाथ में कुश ले के
रोगी के सिर पर रख कर झाड़ दे।
वशी करण में ढाक की लकड़ी में
या बेल या मदार में हवन करे घी मधु चावल से हवन करे
दशांश तर्पण दशांश मार्जन
दशांश ब्राह्मण भोजन
करावे। कमल की माला से जपे
आकर्षण में भी इसी समिधा
इसी द्रव्य से इसी माला से जपे
मुख पश्चिम रहे। वसन्त ऋतु
शुक्ल पक्ष, शिवालय में बैठ कर
या जंगल में बैठ कर जपे। गुरुवार
सोमबार के दिन सिद्ध योग में
४-८-६-१३ तिथि हो मृगचर्म
पर बैठ कर जपे। ढाक की सुरवा
हवन में बनवा ले। पैंती कुश
की पहन ले तब हवन यन्त्र पूजा
करके करे न्यास सब करले पहले।

वशीकरणमें : अमुकस्य मे वश्यं कुरु २ हुं फट् स्वाहा।

शिखायै वषट् ॥ ॐ श्रीं शूलिनि महिषासुरमर्दिनि देव सिद्ध सुपूजिते
नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् हैं कवचाय हुम् ॥ ॐ श्रीं शूलिनि
विन्ध्य वासिनि यन्त्र मन्त्र तन्त्रात्मिके देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २
महायोगेश्वरी हुं फट् हौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ श्रीं शूलिनि सर्व सिद्धि
प्रदायिनि देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुं फट् हः
अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् - बिभ्राणा शूल बाणास्य भयवर गदा
चाप पाशान्कराग्रै र्मेघश्यामा किरीटोल्लसित शशिकला भूषणा ॥
भीषणास्या ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढा चतंसृभिर चतं खेटकं बिभ्रतीभिः
कन्याभिर्भिन्न दैत्या भवतु भव भयध्वंसिनी शूलिनि नः ॥१॥ **संहार** मुद्रा
प्रदर्श्य = योनि मुद्रां प्रणमेत् । भोमितिश्च पूजा ॥ अथ मंत्रः ॥ पीछे पेज में

श्री शूलिनि मंत्र १५ हजार जप करके घी चावल से आम या ढाक की लकड़ी में हव
दशांश तर्पण दशांश मार्जन दशांश ब्राह्मण भोजन करोदे। अथ मन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वलज्वलय शूलिनि
हुं फट् स्वाहा। प्रयोगविधि यदि किसी दुष्ट का मारण करना हो तो इसी मंत्र में
अमुकं त्रासय २ हुं फट् स्वाहा लगा कर जपना चाहिये) (यदि रक्षा करना हो तो
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल ज्वलय शूलिनि अमुकस्य रक्ष २ हुं फट् स्वाहा।
अमुकस्य उच्चाटन कुरु २ हुं फट् स्वाहा। ग्रह निवारण के लिये अमुकस्य दुष्ट ग्रहान हुं फट् स्वाहा
१५ हजार जप का दशांश १५०० डेढ़ सौ मार्जन १५ तर्पण १ ब्राह्मण
दुश्मन के प्रयोग में बबूर की लकड़ी का प्रयोग करे (गुणची मधु) त्रिमधु कहलाता
इससे हवन करें। रक्षा में केवल घी से पलास की लकड़ी में

॥ विधि ॥

शूलिनि मंत्र प्रयोग- में आठ दल का कमल बना कर आठों देवी स्थापित करे। पूर्व से दाहिनी तरफ स्थापित करता जाय। जैसे पहले दल में दुर्गा २ काली, ३ वरदा विन्ध्यवासिनि ४ सुरमर्दिनि ५ युद्धप्रया ६ सिद्ध पूजिता ७ नन्दिनि ८ महा योगेश्वरी स्थापित करके दुर्गा काली के बीच कोण में ॐ चक्राय नमः लिखो फिर दूसरे कोण में ॐ शंखाय नमः, तीसरे कोण में ॐ खड्गाय नमः, चौथे कोण में ॐ गदायै नमः, पांचवें कोण में ॐ चापं नमः, छठे कोण में ॐ शूलाय नमः, सातवें में ॐ बाणाय नमः, आठवें कोण में ॐ पाशाय नमः। अस्त्रों को स्थापित करके सब की प्रतिष्ठा करके पंचोपचार से पूजन करके १ हजार आठ बार तिल काले और मधु से नित्य हवन करे शूलिनि मंत्र से फिर जप करे और दशांश हवन, दशांश मार्जन, दशांश तर्पण, दशांश ब्राह्मण भोजन, करावे तो अभिमानुष शक्ति प्राप्त होवे। यदि रोज केवल १०८ बार घी से हवन करके दशांश मार्जन, तर्पण, ब्राह्मभोजन, करावे, मनवांछित यदि वस्तु प्राप्त होवे। एक हाथ मे तलवार लेकर मंत्र जपे पीपल या मदार की लकड़ी में हवन करे। घी मधु तिल से तो सर्वत्र जयशील प्राप्त होवे। काली जी का प्रेम से ध्यान करे। यदि जिसे ग्रह या बाधा लगी हो तो उसे स्पर्श करता हुआ जप करे तो ग्रह वा बाधा भाग जाये, यदि १०८ बार जप दे उसे छूकर। जिसे सांप चूहा विच्छू का बिष चढ़ आया हो तो उसे स्पर्श करके विधिवत मन्त्र २१ बार जप दे। यदि युद्ध में जय पाना हो तो अपने बांये हाथ में लोहे का तीर लेकर जपे, काली जी का ध्यान करे तब युद्ध में

प्रवेश करे परन्तु इसके लिये घी तिल पीली सरसों से १ लाख बार हवन यथाविधि करे ॥ किसी को वश करना हो तो दस हजार जप दशांश हवन मार्जन तर्पण करे ब्राह्मण खिलावे। जिसे वश करना हो उसके नाम से संकल्प की योजना सुनुकूल समय में करे। यदि विद्वेषण करना हो गौ के गोबर की शुद्ध गोली बना कर सुखाले, फिर सात दिन उसी से हवन कर दे। जिसके नाम का संकल्प करके तो विद्वेषण हो जाता है। यदि उच्चाटन करना हो तो बाँये हाथ में गोबर की सूखी गोली ले के किसी पेड़ पर बैठकर के तीन हजार जप कर दे फिर उस गोली को जिसके घर में गाढ़ दे उसका उच्चाटन हो जाता है॥ इस मंत्र के प्रताप से सब कुछ हो जाता है।

॥ दुर्गा स्तोत्र पढ़ो एकबार ॥

अंगूरी के पुत्र का कार्य राजी खुशी हो जाने के निमित्त संकल्प पं जी ने लिख कर ता. ८-११-७६ को दिया। अष्टमी रविवार को लग जाने के बाद काम करने को आरम्भ करा दिया।

श्री मंगल मूर्तये नमः। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्री ब्रह्मा ब्रह्मणे द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेत बाराह कल्पे बैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे काले प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतवर्षे भारत वर्षान्तर्गत कुमारिके खण्डे श्री लक्ष्मणपुर नगरे गोयल गोत्रस्य राजकुमार गुप्तस्य (अमुक) कर्मणि जैसे सुभासचन्द्रस्य गुप्तस्य आपत्ति वारण हेतवे सकल विघ्न शान्तयर्थे श्री शूलिनी दुर्गा अमुक मंत्रस्य पंचदश सहस्त्र संख्याकं अच्युत गोत्रोत्पन्नं कमलासरकार नामाहं कृष्ण पक्षे सप्तम्यां तिथौ तदुपरान्ते अष्टम्यां तिथौ काल भैरव उत्पत्ति दिवसे रवि वासरे आरम्भ्य सप्तदिवस पर्यन्तं जपं तत दशांश हवनं तर्पण मार्जनं ब्राह्मण भोजन करिष्यामि

॥ संकल्प योजना ॥
विधि

यदि तुम्हें किसी दूसरे के लिये जप करना हो तो यो कहो हाथ में जल फूल अक्षत लेकर ॥

ऊँ विष्णु ३ नमः परमात्मने, श्री श्वेत बाराह कल्पे, बैवश्वत मन्वन्तरे, कलियुगे, कलि प्रथम चरणे, जम्बू द्वीपे, भरत खंडे, भरत खंडान्तर्गते लक्ष्मण पुरी नगरे कुमारिका खण्डे, सूर्य सौम्यायने अथवा याम्यायने जो हों अमुक ऋतौ (अमुक मासे) (अमुक पक्षे) (अमुक तिथौ) (जप शुरू करते समय जो तिथि मौजूद हो वही कहो जो बीत गई हो उसे न कहो अमुक तिथि तदुपरि अमुक तिथौ) (अमुक वासरे) (अमुक नक्षत्रे) (यदि सुबह नक्षत्र जो था वह बीत गया हो कहो अमुक नक्षत्रे तदुपरि अमुक नक्षत्र) (अमुक राशि स्थिते सूर्ये) उस टाइम पत्र में देख लो सूर्य किस राशि पर है वही कहो) (गुरु गोचर में पत्र में जिस अंक के साथ हो उसी राशि पर (अमुक राशि स्थिते देवगुरु शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा स्थान स्थितेषु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां तक कह कर यदि किसी पुरुष को उसकी स्त्री के वश में करवाना हो तो ऐसे कहो यदि वैश्य हो तो ॥ मुन्ना लाल नाम है जैसे पुरुष का स्त्री का सरोज बाला है तो (मुन्नालाल गुप्त नामनं गोयल गोत्रकं सरोज बाला गुप्तायै आकर्षण हेतवे अद्यारम्य मास परियन्तं अमुक आकर्षण मंत्रस्य) जो मंत्र जपना हो पुरा मंत्र बोलो ॥ जितनी संख्या जप करना हो सो पुरी संख्या कहो सवा लाख करना हो तो (सपाद लक्ष संख्यां के परिमितम् कमला वैशाव नामाहं जपं करिष्ये मि

यदि अपने लिये जप करना हो तो विशिष्टायां तक बोलकर आत्मन:
(अमुकमन्त्र
मनोभिलाषित कार्य सिद्धयर्थं अयुत जपं (अमुक मन्त्रं)(अद्यारभ्य
जितने दिन के अन्दर जपना है सो कहो जैसे ग्यारह दिन के अन्दर जप
करना है तो एकादशदिवसपरियन्तं शाम्भवगोत्रकं कौल जातं
कमलादेवी अथवा (कमला सरकार) जो कहो (नामाहं जपं करिष्ये) कहो

मध्ये कहो या
यदि दस दिन के अन्दर पूरा करना हो तो (दसं दिवस पर्यन्तं कहो
यदि ग्यारह दिन के अन्दर पूरा करना हो (तो एकादशं दिवस मध्ये)

यदि बीस दिन में	एकविंसति दिवस पर्यन्तं
यदि पच्चीस दिन में	(पंचविंसति पर्यन्तं
यदि चालीस दिन में	(चत्वारिंशति पर्यन्तं
अस्सी दिन मे	(अष्टाशीति दिवस मध्ये)
सवालाख	(सपाद लक्ष
१ हजार	(सहस्त्र मंत्र जापं करिष्ये

आरम्य मान आज से । परिमितम् माने इतने हजार जप करिष्यामि माने करूंगा

यदि स्त्री बनिया हो तो गुप्तायै ॥ यदि गुरु शुक्र बुध अस्त हों तो कोई शुभ काम न करे

" पुरुष बनिया हो तो गुप्त या गुप्तस्य | अमुकस्य पुरुष के वास्ते आता है

बनिया स्त्री को अमुकी वैश्यायाः) | अमुक्याः नारी के वास्ते आता है

क्षत्राणी स्त्री को अमुकी क्षत्राणियाः (पुरुष को वर्मणाः) अमुकं वर्मणः)

ब्राह्मणी स्त्री को अमुकी ब्राह्मणियाः (पुरुष को अमुकं शर्मणाः)

शुद्र स्त्री को अमुकी शुद्रायाः (पुरुष को अमुकं दासस्य)

स्त्री को अमुकी देव्याः पुरुष के लिये अमुकं लालस्मात

दूसरे का काम शुरु करने में करिष्यामि

अपने काम के करने मे करिष्ये कहा जाता है ॥

अमुक्यार्थं माने उसके काम के लिये जैसे अमुकं (नाम.) पराज्यार्थं अमुकमंत्रं

आरम्य एकादिवस मध्ये अच्युत गोत्राहं वैष्णव जातं कमलासरकार

नामाहं सपादलक्ष मंन्त्र जपं करिष्यामि ॥ यदि कन्या भोजन हवन

पाठ भी करना हो उसके काम के निमित्त तो ॥ कहो कन्या भोजनं हवनं

जितने पाठ करने हो । जैसे सात पाठ करना हो तो (सप्त पाठं कहो ।

आसुरी कल्प के प्रयोग में यदि स्त्री पर प्रयोग करना हो तो भगं दह २

जैसे कामिनी पर करना है तो (कामिनी शुद्रायाः) तैलिन गतिं दह २ उपविष्टस्य

भगं दह सुप्तस्य मनो दह २ अगो इत्यादि २ सब कहो ॥ यदि पुरुष के ऊपर

करना है राचन्दर तैलेन दासस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह इत्यादि २ कहो

आसुरी कल्प की योजना जब बनाओ तो जितना कार्य मां से लेना है उतना कहो जैसे उसमें इतने कार्य हैं अलग अलग समझो।

(गोतं दह)(उपविष्टस्य दह दह)(गुं दह दह २)(भगं दह २ स्त्रिवास्ते)(सुप्तस्य मनो दह २)(प्रबुद्धस्य हृदयं दह २)(हन हन पच २ भषमीकुरु २)(ताव दह ताव त्पच यावन्मे वशमायाति) आसुरीमें हुं फट् स्वाहा। यदि ग्रह निवारण करना है बाधा निवारण करना हो। आंख फोड़ना हो। ज्वर करना हो। यानी करना है उसका संकल्प करके मंत्र के बीच में हुं फट् स्वाहा कहे॥ इस प्रकार भी होता है

संकल्प

ॐ तत् सत् ॐ ह्रींकार मूर्त्यै नमो नमः श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती स्वरूपिण्या त्रिगुणात्मिकाया: मणि द्वीपाधिवासिन्याः ह्रींकार मूर्त्याः श्री भुवनेश्वर्या आदि शक्ति दुर्गायाज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेत बाराह कल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्या वर्तान्तर गत (ब्रह्मावर्तैक देशे) पुण्य प्रदेशे (अमुक नगर जैसे (काशी खण्डान्तर गते राम नगरे) पश्चात॥ बौद्धावतारे (अमुक संवत्सरे) अमुक मासानां मासोत्तमे आश्वीन मासे) या जो मास हो (अमुक पक्षे) (अमुक तिथौ)(अमुक वासरे)(अमुक नक्षत्रे)(अमुक राशिस्थिते सूर्ये नवग्रहाः कश्यप गोत्रोत्पन्नः कमला नामाहं अमुक गोत्रे (अमुक गोते) ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे आद्या प्रीत्यर्थे (अमुक मंत्र अद्यारभ्य एकादश दिवस पर्यन्तम सपाद लक्ष जप करिष्ये

॥ हनुमतस्तोत्र ॥

ॐ नमो भगवते बिचित्र वीर हनुमते प्रलय दावानल कालाग्नि हनुमत प्रभा प्रज्ज्वलित प्रलापे बज्र देहाय अंजनी गर्भ सम्भूतये प्रगटविक्रमे वीर दैत्य ग्रह बंधनाय, दानव ग्रह बंधनाय, राक्षस ग्रह बंधनाय, भूत ग्रह बंधनाय, प्रेत ग्रह बंधनाय पिशाच ग्रह बंधनाय, शाकिनी ग्रह बंधनाय, डाकिनी ग्रह बंधनाय, ब्रह्म राक्षस ग्रह बंधनाय, जिन्द ग्रह बंधनाय एहि २ एहि एहि आगच्छ २ आविशय २ (अमुकं) हृदयं प्रवेशय २ स्फुरय २ प्रस्फुरय २ सत्यं कथय २ व्याघ्र मुख बंधनम् नरमुख बंधनम् राजमुख बंधनम् सर्व मुख बंधनम् (अमुकं) वशमानय २ ह्रीं क्लीं राज वशमानय २ क्लीं ह्रीं श्रीं शत्रूनां मर्दय २ चूर्णय २ सर्वप्रभु रामचन्द्राय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ हुं फट स्वाहा ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः विचित्र वीर हनुमत मम शत्रु (अमुकं) भस्मं कुरु कुरु हन हन ॐकार स्वाहा ॥ ॥अथस्य विधानम् ॥

१ पाठ रोज और घी गुगुल की धूनी १ बार हनुमान मंत्र पढके डाल दे अग्नी में " लड्डू का नैवेद्य पंचोपचार से अग्नी में ही हनुमान जी का पूजन कर दे। पूजन द्रव्य पीला सिन्दूर जिससे हनुमान जी को चोला चढ़ता है वह या लाल चन्दन अक्षतें- लाल फूल माला- धूप- दीप- बेसन का लड्डू या गुड़ चना नैवेद्य में दे फिर पांच बार घी गुगुल को हवन करे फिर पाठ करे। हनुमत जयन्ती के दिन १०८ पाठ कर ले रात में ११ से १२ बजे तक पूजन कर ले।

संकल्प को योजना बना लेना जिस कार्य को हो यह मारण, मोहन उच्चाटन-विद्वेषण- वशीकरण - आकर्षण - मारण - ग्रह निवारण सब काम करने वाला स्तोत्र है। जैसे उच्चाटन करना है किसी को तो ऐसे

ॐ नमो भगवते विचित्रवीर हनुमते प्रलयदावानल कालाग्नि हनुमत प्रभा प्रज्वालि प्रलापे वज्र देहाय अंजनी गर्भ सम्भूताये प्रगट विक्रम वीर ऐहि २ आगच्छ २ आवेशय २ (रामचन्द्र तेलोने हृदयं प्रवेशय २) उच्चाटय २ श्रीराम चन्द्र महाराज आज्ञाय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ हुं फट स्वाहा ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रैं ह्रौं ह्रः विचित्र वीर हनुमंत मम शत्रुन उच्चाटनम् कुरु २ हन २ ॐ कार स्वाहा।

भूत योजना विधि

भूत खिलाने के लिये पूरा ऊपर से सत्यं कथय २ तक बोल कर अमुक की जगह नाम जिस पर भूत हो उसका लेलेना, स्त्री हो तो नाम के बाद देव्या:, वैश्याया:, कह देना यदि बनिया हो तो, या जो जात की हो, वह कहो। या पुरुष जो जात का हो केवल लालस्मात नाम के अन्त में जोड़ देना जैसे बुद्धू लालस्मात या जो नाम हो जात कहो इसी प्रकार फिर सत्यं कथय २ क्लीं ह्रीं श्रीं, शत्रुनां मर्दय २ मारय २ चूर्णय २ सर्वेषु रामचन्द्राज्ञा मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ हुं फट स्वाहा ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः विचित्र वीर हनुमंत मम शत्रुन भस्मं कुरु २ हन २ ॐ कार स्वाहा) जिस पर भूत हो उसे पास बैठाले फिर रोज १०८ या २१ पाठ करता जाय लोहे की छड़ी से मारता जाय। चाहे जितने दिन लगे ११ दिन के बाद तो रह नहीं सकता है

लंकाप्रासाद माने लंका की अटारी तोड़ने वाले

हनुमतस्तोत्र

ॐ नमो भगवते विचित्रबीर हनुमते, प्रलय कालानल कालाग्नि हनुमते प्रभा प्रज्ज्वलितनाप्रताप बज्र देहाय, अंजनी गर्भ सम्भूताय, प्रगट विक्रम वीर, दैत्य दानवयक्षराक्षसोंको ग्रह वंधनाय दानव ग्रह बंधनाय, यक्ष ग्रह वंधनाय, राक्षस ग्रह बंधनाय, भूत ग्रह वंधनाय, प्रेत ग्रह वंधनाय, पिशाच ग्रह बंधनाय, शाकिनी ग्रह बंधनाय, डाकिनी ग्रह बंधनाय, काकिनी ग्रह बंधनाय, राकिनी ग्रह वंधनाय, याकिनी ग्रह बंधनाय, ब्रह्म ग्रह बंधनाय, ब्रह्म राक्षस ग्रह वंधनाय, चोर ग्रह बंधनाय, मारी ग्रह बंधनाय, ऐहि २ ऐहि २ आगच्छ २ आवेशय २ मम हृदयं प्रवेशय २ स्फुरय २ प्रस्फुरय सत्यं कथय, व्याघ्र मुख वंधनम् सर्प मुख वंधनम्, राज मुख बंधनम् नर मुख बंधनम् नारी मुख बंधनम् सभा मुख वंधनम् शत्रु मुख बंधनम् सर्व मुख वंधनम् (अमुकं) मे वश मानय लंकाप्रासाद भंजनं क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं राजानं वश मानय श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीं आकर्षय आकर्षय शत्रूनां मर्दय २ मारय २ चूर्णय २ रवे रवे श्रीरामचन्द्राज्ञाय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट स्वाहा विचित्र वीर हनुमत मम सर्व शत्रून भस्मं कुरु २ हन २ हुं फट् स्वाहा ॥ दिग्बन्धन करके बैठना ॥

१ ३० a

यदि बाधा खिलाना हो तो जिस पर बाधा हो उसका नाम जात दोनों जब पाठ करते २ अमुकं हृदयं प्रवेशय २ बाधाम वाचय २ कहो फिर शत्रूनां मर्दय २ चूर्णय २ खे खे श्री रामचन्द्राज्ञाय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ ऊं हां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्राः हुं फट स्वाहा ।। यदि भगाना हो तो अपसारय २ अपसारय २। शान्त करना हो निवारय २ ।। भस्म करना हो तो भस्मं कुरु २ ।। जलाना हो तो ।। प्रज्वल २ ।। बुलाना हो अमुको बाधां आगच्छ २ ।। जैसे

उदाहरणाँ

जैसे नाम मालती है जात शूद्र है तो

पाठ करते २ जहां हृदयं प्रवेशय २ है तहां कहो, मालती देव्याः शूद्रायाः हृदयं प्रवेशय प्रवेशय, बाधाम अपसारय २ मर्दय २ चूर्णय २ खे खे श्री रामचन्द्राज्ञाय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ ऊं हां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्राः हुं फट स्वाहा इसीतरह सब योजना बनालो जो करना हो।

प्रवेशय २ के बाद स्फुरय २ प्रस्फुरय २ सत्यं कथय २ फिर बाधाम् अपसारय २ मर्दय २ चूर्णय २ खेखे श्रीरामचन्द्राज्ञाय मम कार्याणि सिद्धिं कुरु २ ऊं हां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्राः हुं फट स्वाहा॥ कहो (सोते समय चौकी

चौकी

हृदय मेरे हरि बसो माथे बसो अनन्त, जिय को जाने जानकी या उनके श्री कंत। रक्षा मेरे राम की चौकी श्री हनुमान की॥ भरत शत्रुहन लखन चहुं दिशि रक्षा करें सर्व दिशा को।।

सुग्रीव मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्य पुत्राय अमित तेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सन्निपातकं सन्तत ज्वरं तत्क्षरा षाणमासिकं सांवत्सरिकं सर्वान् छिन्धि २ भिन्धि २ किर २ सर्वान ज्वरान् ग्रस २ पिब २ ब्रह्मज्वरं भीषय वैष्णु ज्वरं त्रासय २ माहेश्वर ज्वरं निघातय भूत ज्वर प्रेतज्वर अपस्मारादि महा व्याधि नाशय नाशय सर्वान् दोषान् घातय २ महावीर वानर ज्वरान् बन्ध २ ह्रों ह्रीं हुं हुं फट स्वाहा ॥ विधि ॥

अस्य विधानम्। १०८ बार दिवाली में जपलो सिद्ध हो जायगा। फिर ३६ बार पढ कर झार दो कुशा से, और शमशान विभूति माथे पर लगादो कैसा भी बुखार हो भाग जायेगा। ६ महीने तक अर्जुनारिष्ट अमृती करणा करके रोगी को पिलाओ। ॥ अमृती करणा मंत्र ॥

ॐ अमृतं अमृतं जुहोमि स्वाहा २१ बार अर्जुनारिष्ट पर कटछप धेनु मुद्रा बना कर हाथ रख कर जपे। थोड़ी सी शराब एक तोला करीब मिला दे। फिर जपे। अमृती करणा मंत्र १०८ बार होली या दिवाली या गृहण में जपले तब प्रयोग करे। यदि रोगी को फिट आता हो उन्माद हो जाता हो तो २ गोली रोज दुध से सर्प गन्धा वटी साम सुबह खिलादे ६ मास तक॥

हनुमत साबर मंत्र

ॐ हं हनुमते नमः ॐ महावीर हनुमँता ॐ काला टेक हनुमँता ॐ रक्षा हनुमंता ॐ चल २ अंजनी पुत्र गृह चल हांक देत हँके कूद हनुमंत लंक जारी, पवन पुत्र अंजनी आनन्द कारी, राम दूत हनुमंत खं खं खं, षट ग्रह हं हं हंकार, भाजि २, शाकिनी डाकिनी भूत प्रेत पिशाच बंध, ब्रह्म राक्षस, जिन्द वैताल बंध, बंध वीर हनुमंत, ढाल बंध, तलवार बंध, तीर बंध, तुपक बंध, नेजा बंध, फरसा बंध, बाण बंध, बन्दूक बंध, चण्ड वांरा बंध, कुहक वांरा बंध, रथ बंध, पृथ्वी बंध, आकाश बंध, पाताल बंध, फौज बंध, पत्थर बंध, कंकर बंध, अग्नी बंध, जल बंध, वीर हनुमंत जो न बांधो तो माता अंजनी की दुहाई सीता माता की दुहाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा: ॥ ॥ अस्य विधानम् ॥

दिवाली में हनुमत जयन्ती के दिन १०८ पाठ रात को करले घी गुगल की आहुति देता जाय। आम की लकड़ी में हवन करे। पंचोपचार से पुजन करे श्री हनुमान जी का अग्नी में ही ध्यान करले हर मंगल ११ आहुति घी गुगल की इस मंत्र से दे दिया करे।

(ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा) एक माला जप रोज करले

मन्त्रमहार्णव का

शाबर

॥ प्रेत और रोग से छुड़ाने का मंत्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को धोर २ इन धोर काजी की किताब धोर मुल्ला की बांग धोर रैगर की कुण्ड धोर धोबी की कुण्ड धोर पीपल का पान धोर देव की दिवाल धोर आपकी धोर बिखेरता चल पर की धोर बैठता चल बज्र का किवाड़ तोड़ता चल सार का किवाड़ तोड़ता चल कुन २ सो बन्द करता चल भूत को पलीत को देव को दानव को दुष्ट को मुष्ट को चोट को फेंट को मेले को घरेले को उल्के को बुल्के को हिडके को भिड़के को ऊपरी को पराई को भूतनी को पलीतनी को डाकिनी को स्यारी को भूचरी को खेचरी कलुवे को मलुवे को उनको मथवा को मंगरा को पीड़ा को पेट की पीड़ा को सांस को कांस को मरे को मुसाण को कुण कुण सा मुसाण काचिया मुसाण मुकिया मुसाण किटिया मुसाण चौडी चौप का मुसाण नुह्या मुसाण इन्हों को बन्द कर एडी को एडी बंध के करि पीड़ा को पीडी बन्द जांघ की जाडी बन्द करि कटयां की कड़ी बंद करि पेट की पीड़ा बंद करि छाती की शूल बंद करि के सर की सीस बंद करि चोटी की चोटी बन्द कर नौ नाड़ी बहत्तर कोठा रोम रोम में घर पिंड में दखल कर देश बंगाला का मन से मसे बड़ा आकर मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरु उस्ताद से लाजै सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा:

अस्य विधानम् ॥ मद्य मांस छछरील का इतर तेल का दीपक
भांग सुलफा दे ॥ चोडना सिद्ध हो जायेगा। हर इतवार को दो।
फिर सात बार पढ़ कर इतवार को ही झाड़दो।

॥ नजर झारने का मंत्र ॥

१०८ पाठ दिवाली या होली गृहण में करले गोबर चौका लगा कर बैठे

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु को ॐ नमो नज़र जहां पर पीर न जानी
बोले छल सो अमृत बानी, कहो नजर कहां ते आई, यहां की ठौर
तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी, कहां ठाम तेरा, किस की बेटी, कहा
तेरो नाम, कहां से उड़ी, कहां को जायगी, अबही बस करले अपनी
माया, मेरी जात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय तेलन
मोलन चुहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी मेहेतरानी
जा की रानी को माय को बाप को भाई को भौजाई को नानी को
ना को मामा को मामी को मौसा को मौसी को बूआ को फुफा को
ड़ को पड़ोस को जाको दोष ताही के सिर पड़े जहार पीर नज़र
रक्षा करें गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा:

॥ प्रयोग ॥

पंख से इतवार मंगल झार दे शाम या सुबह को।
गा हो तो पलीता यन्त्र बना कर आग लगा कर सुघावे
ब कुरे जो पूछे सो बतावे।

॥ पलीता यन्त्र ॥

द	मू	सि	ज	जं	त्र	ठ	०	०
अ	च	जा	पै	नो	ख्यै	०	०	०

लाल चन्दन या नीली स्याही से लिख के पंचो पचार से पूजा करके आग लगा दे। तब सुंघावे

ॐ नमो महाकाली योगिनी योगिनी पार शाकिनी कल्पवृक्षिय वृष्टि योगिनी सिद्ध रुपाय काल दंडेन साधय २ मारय २ चूरय २ अपहर हर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूं हूं हैं हौं हुं फट स्वाहा॥ इस मंत्र से गुगुल पढ़ कर सात बार औरवली में कूटे तो डाकिनी के चोट लगे। इस मंत्र को पढ़ कर अपना पुरैल घुटना मोड़े तो उसका सिर मुड़ेगा। इस को किसी वस्तु पर पढ़ कर जिसके घर फेंको उसके द्वार में जाकर बोलेगी।

॥ डाकिनी भगत मंत्र ॥

ॐ डाकन सिहारी भैरों यती के चक्र मारी अन्न पान खाय परायातके तिस पापन मंडारा फूटे नरसा टूटे पाप न छूटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचः॥ इससे सात बार झाड़ दे तो डाकिनी के खाये को आराम होवे।

॥ मन्त्र महार्णव से॥

॥ डाकिनी दूः

ॐ नमो आदेश गुरु को डाकिनी सिहारी किन्ने मारी यती हनुमान ने मारी कहां जाय दबकी किन देखी यती हनुमान ने देखी सातवें पाताल गई, सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया, यती हनुमंत पकड़ लाया, एक ताल दे एक कोठा तोड़ा, दो ताल दे दो कोठा तोड़ा, तीन ताल दे तीन कोठा तोड़ा, चार ताल दे चार कोठा तोड़ा, पांच ताल दे पांच कोठा तोड़ा, छै ताल दे छै कोठा तोड़ा, सात ताल दे सातवां कोठा खोल देखे तो कौन खड़ी है डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चले यती हनुमंत से रे झाड़ सुं चले ॐ नमो आदेश गुरु का, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा:

विधान यह है मोर पंख या लोहे की सलाका से झाड़ दे रविवार मंगल को॥ पहले दिवाली होली गृहण शिवरात्री में शमशान में १०८ बार पाठ कर ले सिद्ध हो जायेगा।

गुरु गायत्री - ॐ गुरुदेवाय च विद्महे तत्पुरुषाय धीमही तन्नो गुरु प्रचोदयात्

।। मन्त्रमहार्णव से ।।

डाकिनी भूत भगाने का मंत्र

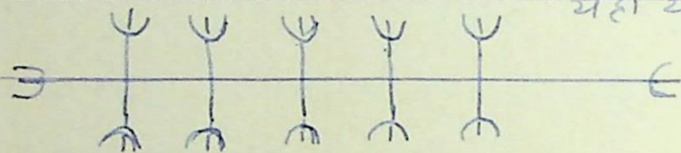
ॐ नमो आदेश गुरु का गिरह बाज नटनी जाया चलती बे कबूतर खाया पीवे दारु खाय जो मांस रोग दोष को लावे कांस कहां कहां से लावेगा गुदर में सुवावेगा बोटी बोटी में से लावेगा चाम चाम में से लावेगा नौनाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा मार मार बन्दी कर २ लावेगा न लावेगा तो अपनी माता की सेज पर पग धरेगा मेरा भाई मेरा दिखवा दिखलाया तो गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा:।। विधान यह है कि दीपावली या होली या शिवरात्रि को रात में शमशान में जाकर १०८ बार रात को १२ बजे तक जपले फिर रविवार मंगल को मोर परवा से झाड़ दे। सा बार सातरवि

डाकिनी से बात करने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का ॐ नमो जय नरसिंह तीन लोक चौदह भुवन में हाथ चाबो और होठ चाबो नयन लाल लाल सर्व बैरी पछाड़ मार भक्त को प्राण राख आदेश आदि पुरुष को।। विधान इसका यह है कि नरसिंह जयन्ती पर नरसिंह जी की पूजा करके १०८ बार घी गुगल से आम की लकड़ी में हवन करदे सिद्ध हो जायेगा फिर जिस पर डाकिनी लगी हो उस इक्कीस बार पानी को अभिमंत्रित कर के पिलावे फिर बात पूछे तो बतायेगी

इस यन्त्र को कागज पर स्याही से लिख कर पूजन करके लोबान की धूप देकर खोरवलो या इमाम दस्ता में धर कर मूसली से कूटे तो डाकिनी के माथे में चोट लगे और ठीक२ बोले

यही यत्र कागज पर लिखे



॥ भूत प्रेत बाधा हरन मंत्र ॥

ॐ नमो नरसिंहाय हिरणयकशिपु वक्षःस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्त दोषान हरहर विसर २ पच २ हन कंपय २ मथ २ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।

धूप भूत को सुंघाने को = शमी (छोंकरे) के पत्ते जयनी के पत्ते पीस कर सुंघादे ॥ या गूगल लहसुन घी सांप की केंचुल बानर का बाल मुर्गा कबूतर की विष्ठा सब मिला कर रख ले वही सुंघादे ॥ तो भागे

अवगुण नाश वास्ते

ॐ ह्रौं ॐ नमो भगवते नृसिंहाय मम दोषं प्रचण्ड चक्रेण जहि २ स्वाहा

॥ विघ्न नाशनार्थे ॥

ॐ नमो भगवते महा नृसिंहाय करालवदन दंष्ट्राय मम विघ्नान पच२ स्वा[hā]

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय ॐ ह्रौं क्रौं आं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं रां स्फें ब्लुं यं रं लं वं स्यां फट् स्वाहा। अभय के लिये १०० माला जप ले नृसिंह जी का पूजन के

(1) आसन बिछा कर स्वयं शुद्धि
मन पवमानेव
(2) संकल्प - सुख प्रदाय गुप्तरूप गृह सहलदेव बाधा निवारणार्थे, सकल पाप निवारणार्थे, सकल अरिष्ट निवारणार्थे, सपरिवारं सकल रोग निवारणार्थे, सकल शाप निवारणार्थे, उत्तरा स्नान करिष्ये

गंगे च जमुने चैव, गोदावरी सरस्वती
नर्मदे सिंधु कावेरी जले स्मिन
संन्निधिं कुरु

सनातन

ब्रम्हपुत्र सुनक, सनन्दन, सनद कुमार सदैव "हरि शरणम" का जाप करते रहते थे।

लाल [illegible], तस्वीर,

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय ॐ ह्रां [illegible] १०० माला जप के नृसिंहजी का पूजन और
वं छं रूत्रां फट् स्वाहा। प्रमय के लिये

॥ उच्चाटन प्रयोग २॥

उच्चाटन

वीरभद्र तन्त्र में = (ॐ ऌं ध्रिं ऌं ध्र स्वाहा) इस मंत्र से पीपल की जड़ की एक कील सात बार अभिमंत्रित कर के शत्रु के द्वार पर गाड़दे जिस दिन यत्रा में सुर्य भाद्र पद नक्षत्र पर स्थित हो उसी दिन गाड़े। द्वितिय मंत्र (ॐ ह्रीं दण्डिन् दण्डिन् महा दण्डिन नमोस्तुते॥ विधान = मंगल रवि शनिवार को नर की हड्डी की कील चार अंगुल की लाकर जिसके द्वार गाड़ दे भाग जाये।

दत्तात्रेय का तन्त्र उच्चाटन = (ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय (अमुकं) सपुत्रम् बांधवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रमुच्चाटय हुंफट् स्वाहा)) ४ माला होली दिवाली ग्रहण शिवरात्री में जप लो शमशान में रात को बैठकर। प्रयोग जब करे शिव लिंग पर चिताभस्म राई ब्रह्म दण्डी पीसकर प्रातः मले ५ मिनट तक फिर उसी मली वस्तु को ले आवे शत्रु के घर डाले। यह प्रयोग शनिवार को करे।

॥ उच्चाटन लोकतन्त्र॥

यदि मंगल को १२ बजे दुपहर को जहां गदहा लोटे उस जगह की धूल अपने बांये पैर के अंगूठे में भर कर उठालावे और उसी दिन सिर पर या देह पर या घर पर डाल दे॥ (रविवार को काक पंख में शत्रु का नाम लिख कर जहां जिस घर में शत्रु हो डाल दे। या उल्लू की विष्ठा राई मिला का जिसके सिर पर डाले तो भी उच्चाटन होवे

आकर्षण

ॐ नमः आदि रूपाय (अमुकस्या) कर्षणं कुरु २ स्वाहा ॥
श्मशान में १२ बजे सिद्ध रात्रियों में ४ माला जप ले सिद्ध होवे
प्रयोग = काले धतूरे के पत्ते का रस गोरोचन हो या हल्दी
श्वेत कनेल की कलम से भोजपत्र पर मंत्र लिखे और
जिसे आकर्षण करना हो बीच में उसका नाम लिखे फिर
उस यन्त्र को कत्थे की लकड़ी की आग में तपावे यदि
अनामिका के रक्त से यन्त्र लिखे पीछे शत्रु का नाम लिखे
शहद में उसे डुबो दे तो आकर्षित होवे ॥ जब आ जाय तो
निकल दे कन्या को बताशा पेड़ा खवा दे ॥
यदि नर कपाल में इसी मंत्र को गोरोचन या हल्दी से लिख
कर कत्थे की लकड़ी पर उस कपाल को रोज १० मिनट
तक तपावे तो उर्वशी भी चली आवे ॥

॥ वीरस्तम्भनं ॥

ॐ कां लिं लिं पुंसः पुत्रदापय दापय स्वाहा ॥ पहले दिवाली होली १०० माला
जपले शंकरजी के मंदिर में या श्मशान में।
प्रयोग = सूकर की दाहिनी डाढ़ का अग्रभाग लाकर पुरुष भोग के समय बांध ले
या तुलसी के बीज को पान में रख कर मुंह में रख ले चूसे धीरे २ ॥

॥ जमीन से निधि निकाल लेने का उपाय ॥

(ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शन कुरु २ स्वाहा) दस हजार जप ले पहले फिर जहां निधि हो उस जगह इस धूप को सुलगा दिया करे। सरसैया बृक्ष का पंचांग को कड़ुवे तेल में पकावे बिष और धतूरे के बीज मिलावे केवाज कनेर का पंचांग सफेद घुंघची उल्लू की विष्ठा गन्धक में सिल सब कूट कर रख ले जहां निधि हो धूनी आग में इसको दे दे तो भूत प्रेत राक्षस देव दानव नाग पन्नग बैताल सब भाग जायेंगे तब निकाल लेना।

॥ बाजी करण ॥

ॐ नमो परब्रह्म परमात्मने मम शरीरे रक्षां कुरु २ स्वाहा॥ दस हजार जप ले। प्रयोग – इतवार के दिन भिन्डी के फल को लाकर छाया में सुखा ले फिर असगन्ध मूसरी गोखरु भांग के बीज सम भाग लेकर पीस कर चूर्ण बना ले चार मासे तीन दिन दूध के साथ फांक कर सुबह शाम पी ले। तब भोग करे। और कपूर सुहागा पीपर जिमीकन्द धतूरे का फल शुद्ध करके पीस कर लिंग पर लेप कर ले तीन दिन तक पहले।

॥ मृतवत्सा सुत जीवन प्रकाश॥

ॐ नमो परब्रह्म परमात्मने दीर्घजीवी सुतं कुरु २ स्वाहा॥ रोज ११ माला जप ले। जब तक पुत्र होवे॥ हस्त नक्षत्र या कोई शुभ दिन के शुभ नक्षत्र में लटजीरे की जड़ लक्ष्मणा की जड़ सम भाग लेकर पीस ले चार मासे रोज गाय के दूध में फांक ले चार दिन या दूध या पानी एक सेर लेकर उसमें पकावे एक छटांक रह जाय तब पांच दिन तक चौथे दिन से पीवे और रोज भोग करे

दूसरा उपाय= कुशमाण्डी की जड़ को भंगरा के रस में पीस ले पानी न डाले फिर ऋतु काल में चौथे दिन से पांच दिन तक एक छटांक चम्मच में चार मासा तक चाट ले ऊपर से दूध पीले। तब रोज भोग करे॥

तीसरा उपाय= अगहन या जेठ की पूर्णिमा के दिन घर लीपे या धोवे नया कलश मिट्टी का लाकर सुगन्धित जल से भरे उस कलश को आम या केले के पत्तों से युक्त करके सोना डाले उसमें रुपया डाले फिर षट कोण बना कर उसपर रक्खे। फिर उस पर छैओं देवियों का पूजन करे। देवियों के नाम ब्राह्मी - ऐन्द्री - वाराही - माहेश्वरी - कौमारी = वैष्णवी - इनको हर कोण में स्थापन करे फिर आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा करे पंचोपचार से पूजन करे आठ दिन तक पूजन करे जप करे। आठवें दिन एक लड़का नौ कन्यायें भोजन करवा कर पान दक्षिणा दे पूजन भी उनका करे प्रणाम करे पुष्पांजलि दे तब ~~कलश~~ कलश को देवियों का पूजन करके पुष्पांजलि देकर विदा करे और कलश को नदी में विसर्जन करे फिर औषध पान करके चौथे दिन से पांच दिन तक भोग करे। दिन पांचवां, सातवां, नवां, ग्यारहवां, तेरहवां १५वां १७वां हो तो पुत्र होवे, बार रवि, मंगल, गुरु हो तो ठीक रहेगा।

वन्ध्या के वास्ते उपाय

नाग केसर का चूर्ण गाय के दूध के साथ सात दिन पीवे दूध घी का सुन्दर भोजन करे। या गोरखरू के बीजों का चूर्ण निर्गुण्डी के रस में पीस कर पांच दिन चौथे दिन से पीवे काले धतूरे का फूल बतासे में रख कर चौथे दिन से पांच दिन खाये ऊपर से दूध पीले। तब उसी दिनों भोग करे

॥ कई कोस चलने का मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत बैताल त्रासनाय शंख चक्र गदा धारय २ हन २ महते चन्द्रामुताय हुं फट स्वाहा॥

विधान = दस हजार श्मशान में जप ले॥ फिर कौवे का हृदय नेत्र जीभ मैन्सिल मालती विदारी कन्द सम भाग पीस कर जाते समय पैर के तलुवे में लगाले परन्तु १०८ बार अभिमन्त्रित करके तब मले। या ऊंटनी के दूध में सफेद काक जंघा गोंध की चर्बी अगस्त्य सम भाग पीस कर अभिमन्त्रित १०८ बार करके तलुवे में मल ले

॥ धन साधन ॥

ॐ ऐं ह्रीं धनं धनं कुरु स्वाहा॥ अस्य विधानं = बेल या पीपल के पेड़ के नीचे ११ माला रोज जप करे। रोज मांस मदिरा पास रख ले वाले देने को जिस दिन आवे और खावे चाहे जिस रूप में भगावे नहीं जप करता रहे डरे भी नहीं जब कहे वर मांग तो ११ माला पूरी हो जाय तब भी बोले जो मन हो मांग ले। पर जब तक जप करे तीन कन्या रोज खिलाता रहे॥ वर में चाहे आयु मांगे चाहे धन या यश या कान में बात बताने का वर मांगे या विद्या या नाच दिखाना या गाना सुनाने का या भोग करवाने का वर मांगे एक ही बात मांगे यह ध्यान रक्खे। स्थाई धन रखने के लिये वट के नीचे सवा लाख जपे

(ॐ ह्रीं क्लीं महा लक्ष्म्यै नमः)

ऊं ऐं जया यक्षण्यै सर्व कार्य साधनं कुरु स्वाहा।। मदार की जड़ पर बैठ कर सवा लाख जपे।। ।।दूसरे प्रकार का धन साधन मंत्र।।
(ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु २ स्वाहा)। मतांतरे (ऊं ऐं क्लीं धनं कुरु २ स्वाहा)
(ऊं ह्रां ह्रां श्रीं क्लीं नमः) इस मंत्र को १२८ हजार जपे
अस्य विधानं दो मंत्र ऊपर वाले पीपल के बृक्ष पर बैठ कर एकाग्रचित से ४० हजार जप ले।। पास में रोज लड्डू खिलाने के वास्ते रखले। एक टाइम भोजन करले खीर खाय पान ऊपर से खाले। तीन कन्या रोज खिलाता रहे। जिस रूप से आकर नैवद्य भगवती खाने लगे टोके न बोले न हटाये जप पूरा करले तब यदि कोई बुलाये तो बोले बीच में न बोले। और तीसरा मंत्र १२८ हजार जप करले विधान यही रहेगा। नित्य श्री कुबेर जी की मूर्ती बना कर मिट्टी की प्राण प्रतिष्ठित करले रोज पूजा पंचोपचार से पूजा करा करे। जब तक जप करे यह विधान करता रहे।।

।। बेल के बृक्ष पर साधन धन का।।

ऊँ क्लीं ह्रीं ऐं प्रां श्रीं महायक्षण्ये सर्वैश्वर्य प्रदात्र्यै नमः) श्रीं क्लीं ऐं श्रीं स्वाहा
अस्य विधानं (~~श्रीं क्लीं ऐं श्रीं स्वाहा~~) इस मंत्र को पहले बेल के बृक्ष के नीचे बैठ कर दिन में ५० माला जपले।। एक टाइम खीर खाये जमीन पर सोये ब्रह्मचर्य रहे
ऊं त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ५ माला पहले दिन में इसे जप डाले ध्यान रक्खे।
फिर एक मास तक ३० माला रोज जपे पेड़ पर बैठ कर के (ऊं क्लीं ह्रीं ऐं श्रीं श्रीं महा यक्षण्ये सर्वैश्वर्य प्रदात्र्यै नमः) जप यह मूल मंत्र है।

जब साधक के गुरु शुक्र बुध उदय हों पत्रा में देखले चंद्रबल देखले अपनी राशी पर चन्द्र हो। ३-६-७-१०-११-वें स्थान पर हो या शुक्लपक्ष की नौमी से कृष्णपक्ष अष्टमी तक के चन्द्र को शुभ माना जाते हैं इन तिथियों के चन्द्र जब हो तब शुभ रहेगा। या पूर्णिमा का चन्द्रमा हो तो चाहे अपनी राशी से नवीं पांचवी राशी हो पर चन्द्र क्यों न हो तो भी शुभ होगा" श्रावण कृष्णपक्ष की पड़िवा से शुरु करे। परन्तु मृत्युञ्जय मन्त्र की ५ माला रोज वेल के पेड़ के नीचे बैठ कर जपले तब शुरु करे अपना अनुष्ठान। मूल मन्त्र ३० दिन तीस माला रोज करनी पड़ेगी। १२ बजे रात को बैठे नित्य मद्य मांस की सकोरे में बलि रक्खे पता नहीं कब इष्ट बलि ग्रहण करले। रोज नित्य नया ताजी बलि रक्खे पहले दिन की श्वान को खिलादे। जब आवाज आवे वर मांगलो मन माना वर मांग ले। चाहे - यश - विद्या - बल - धन - भोग - कान में बात बताने को कहे - नाच दिखाने को - राजा को वश करने को - किसी को पलंग सहित उठालाने को - इन वरों में से जो चाहे एक मांग लो।

॥ पुत्र के वास्ते आम के पेड़ का साधन ॥

(ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु २ स्वाहा) इसे ४० हजार जपे मौन रहे बृत करे खीर खाय। पेड़ा मद्य बरा नैवेद्य इसका सकोरे में रोज रक्खे।

मृगी (नृसिंह)

॥ मृगी का मन्त्र ॥

ॐ रां उठ उठ धनुष चढ़ाव मृग मार मार ॐ ठः ठः स्वाहा ॥

अस्य विधानम् = होली दिवाली गृहण शिवरात्री में रात को ११ बजे से एक बजे तक जपले मंदिर में या गुरु के पास करे। जब प्रयोग करे तब ऐसा करे इतवार या मंगल के दिन का मारा हुआ जो सुअर हो उसकी हड्डी लाकर १०८ बार अभिमंत्रित करके कार्तिक की मावस या दशहरे या दिवाली के दिन जिसे मिर्गी आती हो दाहिने हाथ में बांध दो।

स्वप्न शान्ती वास्ते

ॐ उग्र वीरं महा विष्णुं ज्वलंतम सर्वतो मुखम् नरसिंह भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाम्यहम् ॥ अस्य विधानम् एक माला रोज घी गुगल से आम की लकड़ी में दस दिन जिसे स्वप्न खराब आते हों हवन करदे। स्वप्न गंदे बन्द हो जायेंगे।

॥ मुकदमे में विजय हेतु मोहन सवा लाख जपो

ॐ नरसिंहाय सर्व दुष्ट विनाशनाय सर्व जन मोहनाय (जज का नाम) में वश्यम् कुरु कुरु ~~स्वाहा~~ स्वाहा। ~~हन स्सस स्वल र कम्पय र मथ र हुं फट् ठः ठः~~

॥ वाक्य सिद्धि हेतु ॥ दस हजार जपो

ॐ नमो नृसिंहाय कपिलाय कपिल जटाय अमोघ वाचय सत्यं २ बृतं महोग्र प्रचण्डरूपाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ॐ हूं हूं हूं ॐ क्षां क्षां फट् स्वाहा।

॥ शरीर रक्षा हेतु ॥

ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्य कश्यप वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी कुलोन्मूलनाय मम शरीर स्थोद्भवसमस्त दोषान हन २ सर २ चल २ कम्पय २ मथ २ हुं फट् ठः ठः ॥

प्रयोग विधान = नृसिंह जयन्ती या होली दिवाली ग्रहण में १०८ बार घी गुग्गुल से आम्र लकड़ी में हवन करदे और नृसिंह भगवान की मूर्ती प्राण प्रतिष्ठित करके पंचोपचार से पूजन करदे। फिर जब कहीं भूत प्रेत का काम करना हो या जहां डर भय लगे इस मन्त्र को १०८ बार उच्चारण करले तब बैठे। तो नृसिंह जी रक्षा करेंगे।

॥ भूत बाधा वास्ते नृसिंह मंत्र ॥

ॐ नमो नृसिंहाय कपिलजटाय मम सर्व रोगान् बन्ध २ सर्व महान बंध २ सर्व दोषादीन बंध २ वृश्चिकादीनां विष बंध २ सर्व भूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी यन्त्र मन्त्रादीन बंध २ कीलय २ चूर्णय २ मर्दय २ ऐं ऐं एहि एहि मम विरोधिनस्तान् सर्वान सर्वतो हन २ दह २ मथ २ पच २ चक्रेण गदा बज्रेण भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ह्रीं क्ष्रौं क्ष्रौं क्ष्रौं नृसिंहाय नमः स्वाहा ॥ प्रयोग विधानम् ॥

१०८ पाठ होली ग्रहण या नृसिंह जयन्ती शिवरात्री में करले १०८ बार घी गुग्गुल से चिता में या आम्र की लकड़ी में रात को १२ बजे हवन कर लो तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर रोगी पर बाधा हो इस मंत्र से मोर पंख से झा

मारणा

ॐ नमो नृसिंहाय नृसिंह राजाय नर केशाय नमो नमस्ते ॐ नमः कालाय काल दंष्ट्राय कराल बदनाय च ॐ उग्राय उग्रवीराय उग्रविकटाय उग्र बग्राय बज्र देहिने रुपाय रुद्र घोराय भद्राय भद्र कारिणे ॐ क्ष्रौं ह्रीं नृसिंहाय नमः स्वाहा ॥ अस्य विधान = घी गुगल से १०० माला से हवन करें नृसिंह जी की मूर्ति बना कर प्राण प्रतिष्ठि करके पंचोपचार से पूजन करके हवन करे।

॥ नृसिंह जी का प्रयोग ब्रह्माजी ने बताया है ॥

ब्रह्मोवाच = अनेक मंत्र कोटीशो नृसिंहारव्यां समुच्चरेत् अनेकविध रक्षायां विषरोग निवारणाम् ॥

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्री लक्ष्मी नृसिंह कवच महा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री नृसिंह देवता ॐ क्ष्रौं बीजम ॐ रौं शक्तिः ॐ ऐं क्लीं कीलकम् मम सर्व रोग शत्रु चोर पन्नग व्याघ्र वृश्चिक भूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी यन्त्र मन्त्रादि सर्व विघ्न निवारणार्थे नृसिंह कवच महा मन्त्र जपे विनियोगः

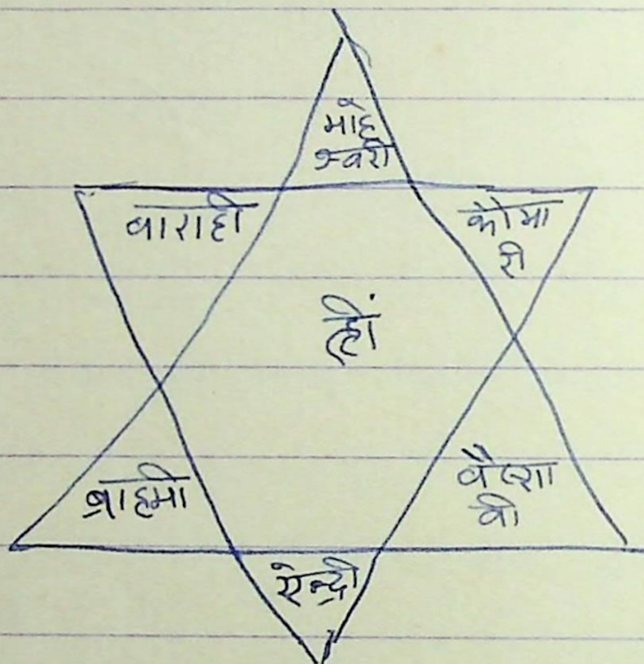
॥ अथ ऋषियादि न्यासः ॥

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः (शिरषि) ॐ अनुष्टुप छन्दसे नमो (मुखे) श्री लक्ष्मी नृसिंह देवतायै नमो (हृदये) ॐ क्ष्रौं बीजाय नमो (नाभ्याम्) ॐ रौं शक्तये नमः (कटिदेशे) ॐ ऐं क्लीं कीलकाय नमः (पादयो) ॐ नृसिंह कवच महा मन्त्र जपे विनियोगः ॥

॥ सर्वाङ्ग अथ कर न्यासः ॥

ॐ द्रौं (अंगुष्ठाभ्यां नमः) ॐ प्रौं (तर्जनीभ्यां नमः) ॐ ह्रौं मध्यमा
भ्यां नमः - ॐ ब्रौं (अनामिकाभ्यांनमः) ॐ स्त्रौं (कनिष्ठिकाभ्यांनमः
ॐ त्रौं करतल कर पृष्ठाभ्यांनमः।। ।।अथ हृदयादिन्यासः।।
ॐ द्रौं (हृदयाय नमः) ॐ प्रौं (शिरसे स्वाहा) ॐ ह्रौं (शिखायै वषट्)
ॐ रां (कवचाय हुं) ॐ ब्रौं (नेत्रत्रयाय वषट्) ॐ त्रौं (अस्त्राय फट्)
ध्यान = ॐ सत्य ज्ञान सुख स्वरुप ममलं क्षीराब्धि मध्ये स्थितम्
योगा रुढ़ मति प्रशान्नवदनम् भूषा सहस्रोज्ज्वलम्। तीक्ष्णं
चक्रपिनाक सायक बरान् बिभ्राण मर्कच्छवि क्षत्रीभूत फणीन्द्र
मिन्दु धवलं लक्ष्मी नृसिंह भजे।।१।। कोपादो लोलजिह्वं विवृत
निज मुखं सोम सूर्याग्नि नेत्रं पादादा नाभि रक्तं प्रभमुपरिसितं
भिन्न दैत्येन्द्र गात्रम। शंखं चक्रं च पाशांकुश कुलिश गदा
दारुणान् युद्ध हेतं भीमं तीक्षणाग्र दंष्ट्र माणिमय बिविधा कल्प
भीडे नृसिंहम्।।गर्जन्तं गर्जन्तं शिरोन्तम् क्रन्दन्तं रोषयन्तं
दिशि दिशि सततं पूरयन्तं करोन करशोर्तिदिव्यं सिंह
नमामि।। पूजन पंचोपचार से कर के जप।

षट देवी का पूजन



प्रतीच्यै नमः

वायव्यै नमः | पश्चिम | नैऋत्यै नमः

उदीच्यै नमः उत्तर | | दक्षिण अवाच्यै नमः

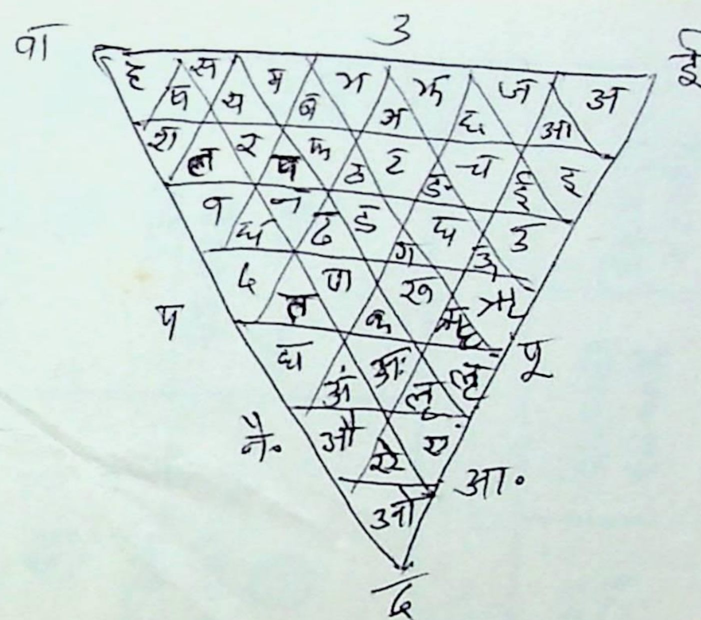
साधक का आसन

प्राच्यै नमः

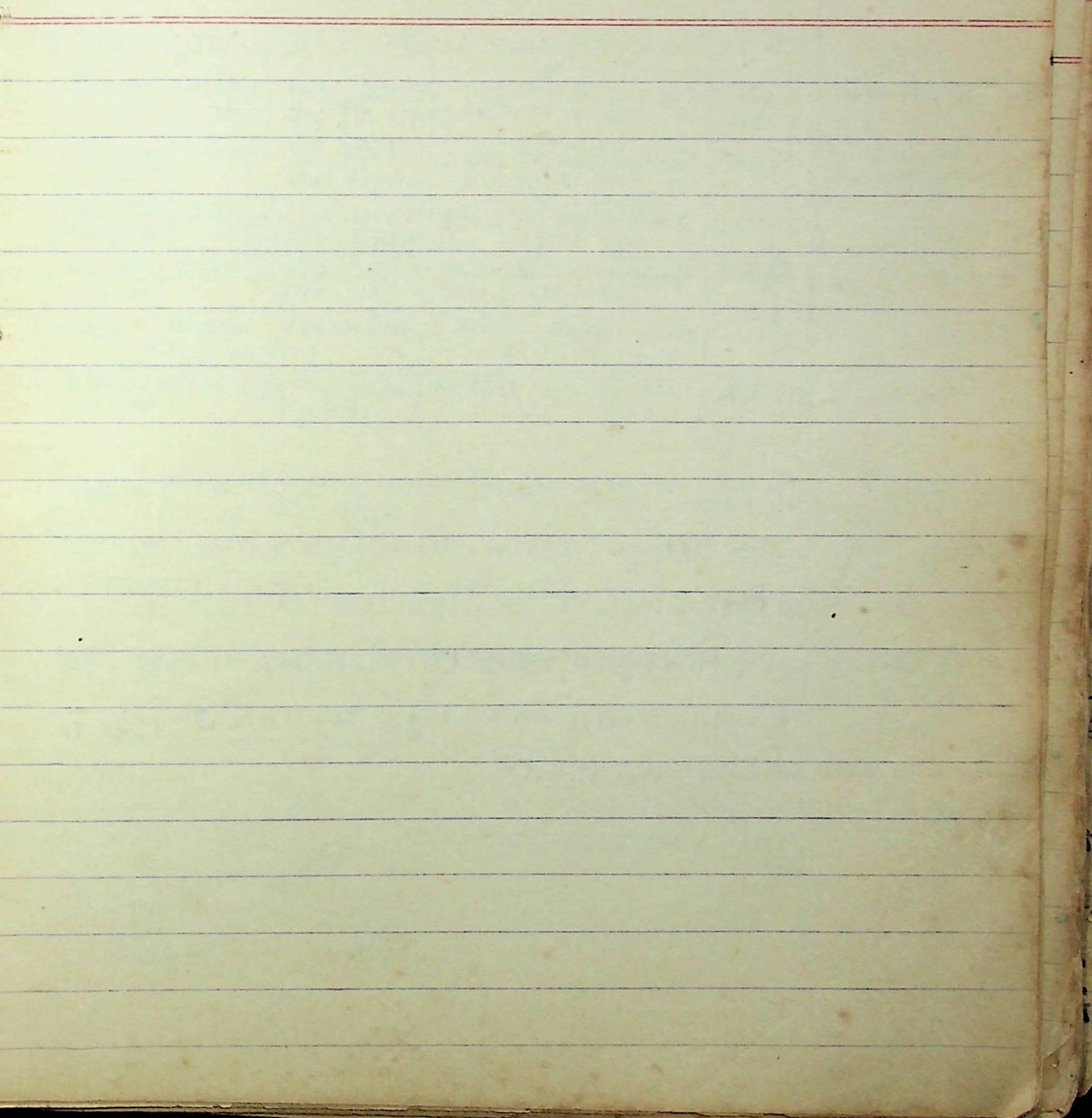
पूर्व

ईशान्यै नमः | | आग्नेयै नमः

आसन



(10) 1350 SF 35′ 45′
(11) 1360 SF 45′
(7) 1350 SF 30′
(8) 1350 SF
12′
(3) 1800 SF 200 SY 60′
(4) 1800 SF 200 SY 60′
(5) 1350 SF 150 SY 60′



शराव = सरह्या

	ऋतु	पक्ष	तिथि	स्थान	आसन	बार	दिशा	माला
शान्तिकर्म वास्ते	हेमन्त वसन्त	शुक्ल	२-७ ५-३	काली दुर्गा मंदिर	गोचर्म मृग चर्म	बुध गुरु	पश्चिम उत्तर	शंख की
वशीकरण वास्ते आकर्षण में एको	वसन्त	शुक्ल	४-७ ६-१३	शिवालय अरण्य	मृगचर्म कालाऊनी	गुरु सोम	पश्चिम	कमलके।
स्तम्भन में	शिशिर	कृष्ण।	८।१५	कोई जगह	गजचर्म कम्बल	रवि. मं शनि	पूर्व मे	नीम के बीज को
विद्वेषण में	ग्रीषम	शुक्ल	८-७ १०-११	श्मशान	सियार का चर्म	शनि शुक्र	नैऋत्य	नीम का बीज
उच्चाटन में	वर्षा में	कृष्ण।	१-४-८	अरण्य देवालय	बकरे का चर्म	रवि शनि	वायव्य अग्नि कोण	नीम बीज
मारण में	शरद में	कृष्ण।	८-१५	श्मशान	भैंसा चर्म	रवि मं शनि	दक्षिण	घोड़े के दांत

पंचपल्लव. पीपर पाकर बरगद आम गूलर या पलास का पत्ता हो

पंचगव्य - गाय का दूध दही घी गोबर (मुत्र २ तोला गोबर का रस १ तोला ३ तोला दही ४ तोला दूध ५ तोला घी गाय का

चौदह रत्नों के नाम = लक्षमि चन्द्रमा कामधेनु कौस्तुभमणि सुधा विष ऐरावत अपसरायें कल्पवृक्ष धन्वतरि उच्चैःश्रवा पारिजात सुरा अमृत

त्रिलोह (सोना चांदी तांबा)

उड़द घीसे बकरी के मांस के अभाव में हवन — आम के पत्ते पलास के पत्ते को।

अंगुली	यन्त्र लेखन पत्र	द्रव्य	लेखनी	वृत्तकुण्ड	हवन द्रव्य	स्त्रुवा	काष्ठ आम को	अग्नी
बीचकी	भूर्जपत्रम्	चन्दन	चांदीसोना गुलाबकी	पश्चिममें	श्वसकी घीसे	सोनेकी ढाक काष्ठ की	बेल मदार ढाक पीपर बट पाकर	साधारण काष्ठ को
बीचकी	भूर्जपत्रम्	लाल चन्दन	पीपरकी	पद्माकार उत्तर में	बकरीका मांस घी	पलास को	बेल मदार या ढाक	साधारण
अनामिका के बीचपोर	हाथी या शेर के चमड़े पर काबल	हल्दी लसौड़ा	बेल की कलम	चतुष्कोण पूरव में	घी पीपर की काष्ठ	पलास	ढाक बेल मदार	घर के धुंवे से
बीचकी	गदहे का चर्म	नीम रस धतूरा	करंज के वृक्षकी	त्रिकोण नैऋत्य में	धतूरा काठ अलसी तेल	पलास	नीम कुचला	बरगद मुर्दे का कोयले को
बीच की	ध्वज बासः	स्याही	करंज की	षटकोण वायव्य में	सरसों के तेल से	पलास	आम की लकड़ी	चिताग्नि
कनिष्ठका	मुर्दे का कपड़ा	धतूर का रस	लोहे की	चन्द्राकार	कड़ुवा तेल	लोहे की	कत्थे की	चिताग्नि

साधक को ऋणि धनी का विचार करना हो तो इसतरह करे अपना नाम अक्षर और मंत्र का पूरा अक्षर, या देवता के नाम का पूरा अक्षर अलग २ दो से गुणा करो जैसे श्रीराम, कमला सहचरी है तो तीन अक्षर श्रीराम का हुआ सात अक्षर मेरा हुआ तो अलग २ दो से गुणा करके एक दूसरे में नामाक्षर संख्या जोड़ दो फिर ८ से भाग दे दो जिसका ज्यादा बचे वह ऋणि जिसका कम बचे धनी।

कमला सहचरी | श्रीराम

७ × २ = १४ | ३ × २ = ६

१४ + ३ = १७ | ६ + ७ = १३

८) १७ (२ — १६ — १ धनी

८) १३ (१ — ८ — ५ ऋणि

॥ दुर्गा सप्तशती का प्रकरण है यह ॥

दुर्गा महा विद्या प्रक्रमः॥ पहले दिन १ - २ - ३ चरित्र पढ़े
दूसरे दिन १ - ३ - २ पाठ पढ़े। तीसरे दिन १ - २ - ३ पाठ पढ़े
चौथे दिन २ - १ - ३ पाठ पढ़े। पाँचवे दिन ३ - २ - १ पाठ पढ़े
इसको मृत्यु संजीवनी महा विद्या कहते है। छठे दिन ३ - २ - १
पाठ करे। फिर नवार्ण मंत्र मे कार्य योजना लगाकर ९ हजार
जप यदि पाठ न करना हो तो। इसी से कार्य होगा। जैसे
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकस्य) उन्मत्त नाशं कुरु कुरु स्वाहा, फिर
सप्तशती का पहला श्लोक फिर ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुकस्य
उन्मत्त नाशं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोग = संकल्प, अंगन्यासः, हृदयन्यासः करन्यासः, जप एक माला
फल को बोल प्रतिज्ञा करके दे। फिर पाठ को तीन आवृति करे
एक माला आदि में नवार्ण की एक माला, अन्त में करदे स
गृह शान्ती करने के लिये ५, आवृति करे। महा भय हो तो सात पाठ
करे। यदि ८ पाठ रोज करे तो एक वाजपेय यज्ञ हो जाता है।
राजा वश करने के लिये ११ पाठ रोज। कामना सिद्धि के लिये
१२ पाठ करे। (स्त्री वा) शत्रु को वश करने के लिये १४ पाठ। सर्व सुख वास्ते १५
पाठ करे इससे लक्ष्मी घर आवे। १६ पाठ करने से पुत्र पौत्र सब मिले

दुशमन के उच्चारन वास्ते १८ पाठ करे। कर्जा से मुक्त होने के लिये २० पाठ करे व्याधि नाश वास्ते धन रोकने वास्ते २५ पाठ करे। दैविक दैहिक भौतिक उत्पात में तथा महा पाप निवारण में १०० पाठ करे। असाध्य रोग में कुलनाश होने में आयु नाश हो रही हो तो भी १०० पाठ करे

॥ विधि प्रकार।

महाविद्या के २१ पाठ रोज करने पर सब २१ दिन करने पर सब गृह शान्ति होते हैं एक कलश प्रधान होता स्थापित होता है जिसमें मां का आवाहन और प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। एक शान्ति कलश मिट्टी का होता है जिसमें कार्य का संकल्प किया जाता है इसमें पंच पल्लव डाले जाते हैं सतावर जायफल डाली जाती है। प्रधान कलश में पंचरत्न डाले जाते हैं। मां का षोडसोपचार से पुजन करना चाहिये। और देवताओं का पंचोपचार से पुजन करदे। फिर हवन इष्ट मंत्र से करदे। फिर पाठ २१ करदे। ऐसा करने से सब काम हो जाता है।

इष्टमंत्र जो भी हो

जिस बीज से घट स्थापित किया हो वही बीज लगा कर जपे॥

यह महा मृत्युञ्जय है।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ॥ संकल्प में नाम योजन करलेना चाहिये॥

॥ यह त्र्यम्बकम मन्त्र है॥

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। इसके भी जप में संकल्प में नाम योजना करले।

॥ यह मृत संजीवनी मृत्युञ्जय कहलाता है॥

ॐ जूं सः (अमुकं) पालय २ सः जूं ॐ। इसमें नाम योजना की जरूरत नहीं है

॥ लघु मृत्युञ्जय यह है॥

ॐ ह्रौं जूं सः॥ इसके जप में योजना संकल्प की करले।

यह ~~त्र्यक्षरी~~ मन्त्र है। (ॐ जूं सः) इसमें भी नाम की योजना करले।

महामृत्युंजय

अायु के लिये

महामृत्युञ्जय तीन प्रकार से जपा जाता है।

(ॐ जूं सः अमुकं पालय पालय सः जूं ॐ। यह मृत संजीवनी मृत्युञ्जय कहलाता है

(ॐ जूं सः) त्रिक्षरी मंत्र है।) (ॐ हौं जूं सः) लघु मृत्युंजय।

महामृत्युञ्जय :- (ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ)

॥ संकल्प ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमो परब्रह्म परमात्मने पुराण पुरुषोत्तमाय अाद्या श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्ते (अमुक नगरे) (अमुक) मासे (अमुक पक्षे) (अमुक वासरे) (अमुक तिथौ) (यजमानस्य वा शरीरे उत्पन्नोत्पत्स्यमानाः अखिलारिष्ट निवृत्ये श्री मृत्युञ्जय मन्त्र, सपाद लक्ष चत्वारिंशत दिवस पर्यन्तम् अहं कमला नामहं कश्यप गोत्रकं अमुक जातं जपं करिष्यामि।" यजमान के लिये करिष्यामि। अपने लिये करिष्ये।

चत्वारिंशत दिवस = चालीस दि

।। ऋषियादि न्यासः ।।

वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयः मूर्धिन् ।। पंक्ति गायत्र्योऽनुष्टुप छन्दांसि वक्त्रे ।। सदाशिव महामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि ।। ह्रीं शक्त्ये नमः लिङ्गे ।। श्रीं बीजाय नमः पादयोः ।। इति ऋषयादिन्यासः ।। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवःस्वःरो जूंसः ह्रौं ॐ। ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगानुष्टुपछन्दांसि सदाशिव महामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभिष्ट सिद्धये जपे विनियोग

षडंग न्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा (शिखायै वौषट्) ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्त ह्रां ह्रौं कवचाय हुं ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाम मन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट् ।। इति षडङ्न्यासः ।।

॥ पदन्यासः ॥

त्रियम्बकं शिरसि ॥ यजामहे भ्रुवो ॥ सुगन्धिं नेत्रयो ॥ पुष्टिवर्धनम् मुखे ॥ ऊर्ध्वारुक गंडयो ॥ मिव हृदये ॥ बन्धनात् जठरे ॥ मृत्यो लिङ्गे मुक्षीय ऊर्वोः ॥ मां जान्वो ॥ अमृतात् पादयो ॥ इति पदन्यासः ॥ मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् ॥ ॥ अथ ध्यानम् ॥

हस्तांभोज युगस्थ कुम्भयुगलाद्दुधृत्य तोयं शिरः । सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ । अक्षस्रग्मृग हस्तम्बुजगतं, मूर्द्धस्थ, चंद्रस्त्र, वत्पीयुषोत्रतनुं भजे, सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्रयम्बकम् ॥१॥ चन्द्राब्जासितमूर्द्धजं, सुरपतिं, पीयुष पात्रं, वहद्धस्ताब्जेन, दधत्सुदिव्य ममलं हास्यस्य पंकेरुहम् ॥ सूर्येन्द्वाग्निविलोचनं करतलः पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं, विश्वतमक्षयं पशुपतिं, मृत्युञ्जयं संस्मरेत् ॥२॥ इति ध्यात्वा ॥ मान्सोपचारैः संपूज्य, ऊं लं

॥ पंचोपचार पूजन ॥

ऊँ लं प्रथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॥ ऊँ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ॥ ऊँ यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि ॥ ऊं रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि ॥ ऊं वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ॥ ऊं सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पं समर्पयामि मन्त्रं जपेत् ॥ ऊं हौं ऊं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं ऊर्ध्वारुक मिव बन्धनान्मृत्यो ~~मुक्षि~~ मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ऊँ ॥ ततो जपान्तरं देव दक्षिण करे जपं समर्पयेत् ॥ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं

॥ ऋषियादि न्यासः ॥

वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयः मूर्धिन् ॥ पंक्ति गायत्री अनुष्टुप छन्दांसि वक्त्रे ॥ सदाशिव महामृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि ॥ ह्रौं शक्त्यै नमः लिङ्गे ॥ श्रीं बीजाय नमः पादयो ॥ इति ऋषयादिन्यासः ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षिय मामृतात् भूर्भुवः स्वः रों जूं सः ह्रौं ॐ। ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य ~~वामदेवकहोल~~ वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांसि सदाशिव महामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रौं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभिष्ट सिद्ध्यर्थे जप विनियोग

षडंग न्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा (शिखायै वौषट्) ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रौं ह्रौं कवचाय हुं ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षिय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाम मन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ॥ इति षडङ्गन्यासः ॥

॥ पदन्यासः ॥

त्रियम्बकं शिरसि ॥ यजामहे भ्रुवो ॥ सुगन्धिं नेत्रयो ॥ पुष्टिवर्धनम् मुखे ॥ उर्वारुकं गंडयो ॥ मिव हृदये ॥ बन्धनात् जठरे ॥ मृत्यो लिङ्गे मुक्षीय ऊर्वोः ॥ मां जान्वो ॥ अमृतात् पादयो ॥ इति पदन्यासः ॥ मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् ॥ ॥ अथ ध्यानम् ॥

हस्तांभोज युगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ। अक्षस्रग मृग हस्तम्बुजगतं, मूर्द्धस्थ, चंद्रस्त्र, वत्पीयुषोत्रतनुं भजे, सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥१॥ चन्द्राद्ब्यासितमूर्द्धजं, सुरपतिं, पीयूष पात्रं, वहद्धस्ताब्जेन, दधत्सुदिव्य ममलं, हास्यस्य पंकेरुहम् ॥ सूर्येन्द्वाग्निविलोचनं करतलः पाशाक्ष सूत्राकुशाम्भोजं, विश्वतमक्षयं पशुपतिं, मृत्युञ्जयं संस्मरेत् ॥२॥ इति ध्यात्वा ॥ मान्सोपचारैः संपूज्य, ॐ लं

॥ पंचोपचार पूजन ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गंन्धं समर्पयामि ॥ ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ॥ ॐ यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि ॥ ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि ॥ ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ॥ ॐ सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पं समर्पयामि मन्त्रं जपेत् ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्यो ~~मुक्षि~~ मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवःस्वरों जूं सः हौं ॐ ॥ ततो जपान्तरं देव दक्षिण करे जपं समर्पयेत् ॥ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं

(पूजन विधि क्रम इसपेज़ में)

जपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥२॥ जपं परम् महामृत्युञ्जय जपाख्येन कर्मणा श्री महामृत्युञ्जयः प्रीयतां नमम ॥ इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकम् ॥ जपसांगता सिद्ध्यर्थं यथा कामना द्रव्येण तद्दशांश दुग्धाज्य समिक्ता पामार्ग समिस्त्र होमः ॥ तद्दशांश तर्पणाम् ॥ तद्दशांश मार्जनम् ॥ तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं कारयेत् ॥ इति ॥

पूजन विधि क्रम शुरू से इस विधि करे॥

प्रथम

स्नान ब्राह्म महूर्त में = स्नान मंत्र = पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः स्सरितस्तथा आगच्छन्तु पवित्राणि स्नान काले सदा मम ॥ त्वं राजा सर्व तीर्थानां त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहि मे तीर्थं, तीर्थ राजा नमोस्तुते ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती । नर्वदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधं कुरु ॥ कुरुक्षेत्र गया गंगा प्रभास पुष्कराणि च । एतानि पुण्य तीर्थानि भवन्तु त

॥ गंगा स्तुति ॥

विष्णु पादाब्ज सम्भूते गंगे त्रिपथ गामिनी, धर्म द्रवेति विख्याते पापं हर मे जाह्नवी ॥१॥ गंगा गंगेति यो ब्रूयात योजनानां शतैरपि मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोक सगच्छति ॥२॥

॥ गंगा तर्पण ॥

यन मया दूषितं तोयं मल: शरीर सम्भवै। तस्य पापस्य शुद्धयर्थं चक्षमो तर्पयाम्यहम्॥ ॥ पवित्री करण मंत्र॥

ऊं अपवित्र: पवित्रो वा सर्वा वस्थितां गतोपि वा॥ य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षम स: वहाम्यान्तर: शुचि: ॥ आसन का विनियोग॥

ऊं प्रथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता आसनोपवेसने विनियोग:॥ ॥ प्रथ्वी की प्रार्थना।

प्रथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारयते माम देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ ॥ आचमन॥ प्राणायाम॥

ऊं केशवाय नम:॥ ऊं नारायणाय नम:॥ ऊं माधवाय नम:॥ ऊं हृषि: हृषि: केशवाय नम:॥ ॥ चन्दन लगाने का मन्त्र॥

ऊं चन्दनस्य महत्पुण्यम पवित्रं पाप नाशनम॥ आपदा हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥ सूर्य मन्त्र।

ऐहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो रासी जगत पते। अनुकम्पय माम भक्त्या गृहाणार्घ दिवा करा सर्व देवताओं को अर्घ्य दो इन मंत्रों से

ऊं श्री गणेशाय नम:॥ ऊं सत्य नारायणाय नम:॥ ऊं ब्रह्मणे नम:॥ ऊं विष्णवे नम:॥ ऊं रुद्राय नम:॥ ऊं दिव्यै नम:॥ ऊं नवग्रहेभ्यो नम:॥ ऊं इष्ट देवताभ्यो नम:॥ ऊं कुल देवताभ्यो नम:॥ ऊं ग्राम देवताभ्यो नम:॥ ऊं पंचलोक पालेभ्यो नम:॥ ऊं दश दिक्पालेभ्यो नम:॥

नीराजन में (आरती में) ४ बार माता के चरणों में करे २ बार नाभि में १ बार मुख मण्डल पर ७ बार पूरे शरीर में उतारे

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः ॥ ॐ अष्ट कुल नागेभ्यो नमः ॥ ॐ अष्ट वासु देवताभ्यो नमः ॥ ॐ पंच भूतेभ्यो नमः ॥ ॐ भूरादि लोकेभ्यो नमः ॥ ॐ साक्षीभूताय नमः ॥ ॐ धर्मराजाय नमः ॥ ॐ चित्राय नमः ॥ ॐ चित्रगुप्ताय नमः ॥ ॐ श्रवण देवताभ्यो नमः ॥ ॐ मित्राय नमः ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥

॥ शान्ती पाठ ॥

॥ गणेशपाठ॥

ॐ गजाननम् भूत गणादि सेवितम् कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम् ॥
उमा सुतं शोक विनाश कारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

संकल्प

॥ ऋषि: न्यास: ॥

॥ षडङ्गन्यासः ॥

॥ पदन्यासः ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

॥ पँचोपचार पूजन ॥

एक हजार गायत्री मंत्र जप पहले करले

सवा लाख मृत्युञ्जय का मंत्र जप दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज

प्रार्थना - पुष्पांजलि फिर बाद में। शिव पूजन। फिर १ माला गायत्री मंत्र से हवन करे

फिर दस हजार मंत्र मृत्युंजय के से हवन करे।

॥ प्रार्थना ॥

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहिमाम् शरणागतं जन्म मृत्युजरा रोगैः पीड़ित कर्म बन्धनैः

॥ पुष्पांजलि ॥

अनेन महा मृत्युञ्जय जपाख्येन कर्मणा श्रीमहा मृत्युञ्जय प्रीयताम् नमः

॥ हवन ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।

॥ अथ काली साधन ॥ कालिका

ॐ अस्य श्री कालिका कवचस्य भैरव ऋषि: गायत्री छन्द: श्री कालिका देवता सद्य: शत्रु संहारनार्थे विनियोग:॥ ॥ ध्यान ॥

ध्यात्वा कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्। चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्। नीलोत्पल दलश्यामां शत्रु सङ्घ विदारिणीम् नर मुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा॥२॥ विभ्राणां रक्त वसनां घोरदंष्ट्र स्वरूपिणीम्। अट्टाट्टहास निरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥३॥ सवाशन स्थितां देवीं मुण्डमाला विभूषिताम्॥ इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवच पठेत

॥ कवच ॥

ॐ कालिका घोर रूपाढ्या सर्व कमप्रदाम् शुभां। सर्व देवस्तुता देवी शत्रु नाशं करोतु मे॥४॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रूं ह्रूं संगिनी तथा। ह्रौं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रु नाशिनी॥५॥ श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्ध विमोचनी। यथा शुम्भो हतो दैत्य निशुम्भश्च महासुरा:॥६॥ वैरी नाशाय वन्देतां कालिकां शंकर प्रियाम्। ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नरसिंहिका। कौमारी श्री श्चामुंडा खादयन्तु मम द्विषान्॥ सुरेश्वरी घोर रूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी॥७॥ मुण्डमाला वृतांगी च सर्वत: पातु माम्: सदा ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोर दंष्ट्रे रुधिर प्रिये॥ रुधिरा पूर्णवक्त्रे च रुधिराविवस्तिनी मम शत्रून खादय २ हिंसय २ मारय २ भिन्दि २ छिन्धि २ उच्चाटय २ द्रावय २ शोषय २ यातुधाने चामुण्डे

॥ मन्त्र ॥

ह्रां ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्व शत्रून समर्पयामि स्वाहा।
ॐ जोह २ किटि २ किर २ कटु २ मर्दय २ मोहय २ हर २ मम रिपून
ध्वंसय २ भक्षय २ त्रोटय २ यातुधानिका चामुण्डे सर्व जनान् राज
पुरुषान् राजश्रियं देहि २ नूतनं २ धान्यं जक्षय २ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः
स्वाहा॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं तव सुन्दरि ॥ ये पठन्ति सदा भक्त्या
तेषां नश्यन्ति शत्रुवः ॥१॥ वैरिणाः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्च भवंतिहि ॥ धन
हीनाः पुत्र हीनाः शत्रुवस्तस्य सर्वदा ॥ २॥ सहस्त्र पठनात्सिद्धि कवचस्य
भवेत्तथा ॥ ततः कार्याणि सिद्धियन्ते यथा शंकर भाषितम् ॥३॥
शमशानांगार मादय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ पादोदकेन पिष्ट्वा चालिखे
ल्लोह शलाकया ॥ भूमौ शत्रुन्हीन रुपान् उत्तराशिरस्तथा ॥ हस्तं दत्वा
तद्धृदये कवचं स्वयं पठेत् ॥५॥ प्राण प्रतिष्ठा वै कृत्वा तथा मंत्रेण
मंत्रवित् ॥ हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रोश्च कण्ठ मक्षयम् ॥६॥ ज्वलदंगार
लेपेन भवति ज्वरितो भृशं॥ प्रोक्षणैर्वाम पादेन दरिद्रो भवति ध्रुवं॥७॥
वैरी नाश करं प्रोक्तं कवचं वश्य कारकम् परमैश्वर्यदं चैव पुत्र पौत्रादि
वृद्धिदम् ॥८॥ प्रभात समये चैव पूजा काले प्रयत्नतः ॥ सायं कालेतथा

प्राणात् सर्व सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥९॥ शत्रु उच्चाटनं याति देशाद्वै विच्युतो भवेत ॥ पश्चात्किंकरतामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥१०॥ शत्रुनाशंकरं देवी सर्व सम्पत्तिकरं शुभम सर्व देवस्तुते देवी कालिके त्वां नमाम्यहं ॥

वार्ता = इस कवच से सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते है। शंकर जी ने कहा है मारण में चिता के पास जाकर समसान का कोयला लाकर पीसो पीसने के समय उसमें जल जो डालो पांव से वर्तन में भर कर उंडेलो सिल पर तब पीसो फिर उसी स्याही से लोहे की कलम से शत्रु का आकार बनाओ, फिर उस का शिर उत्तर की तरफ करो हृदय पर शत्रु का नाम लिखो फिर हृदय पर दाहिना हाथ रख कर कवच पढ़ो मंत्र से प्राण प्रतिष्ठित पहले मूरति बना कर करलो फिर कवच पढ़ो फिर एक हजार बार शत्रु के गले पर प्रहार करके सिर काट डालो तो मरेगा। यदि उस शत्रु के मुख पर अंगार चिताग्नि का फेरो तो ज्वर होवे,

प्रात समय सायं समय पाठ करने से सर्व सिद्धि प्राप्त होवे॥

॥ गुरु स्तुति ॥

ब्रह्मानन्दम् परम सुखदम् केवलं ज्ञान मूर्तिम् द्वन्द्वातीतं गगन सदृशम तत्वमस्यादिलक्षणम् ॥ एकं नित्यं विमल मचलं सर्वधी साक्षिभूतम् भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तम् नमामि॥

॥ गुरुस्तव ॥

॥ गुरु का ध्यान ॥

शरच्चन्द्र समाभासं शरत्पंकज लोचनम् ॥ द्विभुजास्यं शान्तियं पूर्णेन्दु सदृशाननम् ॥ दिव्यस्रगम्बरधरं दिव्य गन्धनुलेपनम् ॥ सरक्त शक्ति संयुक्तं बामभाग मनोहरम् ॥ बराभय कराम्भोजं सर्वलक्षण लक्षितम् ॥

॥ गुप्त साधन तन्त्र १ पटल ॥

ॐ ब्रह्मस्थान सरोज मध्य बिलसच्छीतांशु पीठ स्थितम् स्फूर्यत्सुरुचिं बराभयकरं कर्पूर कुन्दोज्वलम् ॥ श्वेतः स्रग वसनानुलेपन युतं विद्युद्रुचा कान्तया ॥ संश्लिष्टार्द्ध तनु प्रसन्न बदनं बन्दे गुरुं सादरं ॥१॥ मोहध्वान्तमहान्ध विग्रहवतां चक्षुंषि चोन्मीलयन् शाचक्रे रोचराणितानि दयया ज्ञानाञ्जनाभ्यञ्जनैः वयासं यन्महसा जगत्त्रयमिदं तत्व प्रबोधोदयं ॥ तं बन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम् ॥ ॥२॥ मातंगी भुवनेश्वरी च बगला धूमावती भैरवी ॥ तारा छिन्न शिरोधरा भगवती श्यामा रमा सुन्दरी । ॥ दातुं नः प्रभवन्ति वांछित फलं यस्य प्रसादं बिना ॥ तं बन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥४॥ काशी द्वारवती प्रयाग मथुरा योध्या गया वन्तिका ॥ माया (हरिद्वार) पुष्कर कांञ्चि कोत्कल गिरिः श्री शैल विंध्यादयः ॥ नैते तारयितुं भवन्ति कुशलः यस्य प्रसादं बिना तं बन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम ॥५॥ रेवा सिन्धु सरस्वती त्रिपथगा सूर्यात्मजा कौशिकी गंगा सागर संगमाद्रि तनया लौहित्य शोणादयः ॥ नैते तारयितुं भवन्ति कुशलः यस्य प्रसादं बिना तं बन्दे शिव निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम ॥

।तं वन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम्

॥६॥ सत कीर्ति विमलं यशः सुकविता पांडित्य मारोग्यता ॥ वादे वाक्य पटुता कुले चतुरता गाम्भीर्य मक्षोभिता प्रागल्भ्यं प्रभुता गुरौ निपुणता यस्य प्रसादाद्भवेत् ॥ तं वन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम्

॥७॥ लोके शौहरि रम्बिकास्मर हरो मातापिताभ्यागताः ॥ आचार्याः कुल पूजिता प्रतिवरा वृद्धस्तथा भिक्षुका । नैते यस्य तुलां ब्रजन्ति कलया कारुण्य वारां निधे तं वन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥८॥

ध्यानं दैवत पूजनं गुरु तपो दानाग्नि होत्रादयः पाठो होम निषेवनं पितृम् स्वाद्धा भ्या गतार्चा तति: ॥ एते व्यर्थ फला भवन्ति नियतं यस्य प्रसादं बिना ॥ तं वन्दे शिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम् ॥९

पूर्वा शाभि मुखः कृतांञ्जलि पुटः श्लोकाष्टं यः पठेत् । पौरश्चर्य विधिं विनापि लभते मन्त्रस्य सिद्धिं प्रदाम् ॥ नो विघ्नै परि भूयते प्रतिदिनम् प्राप्नोति पूजा फलम् ॥ देहान्ते परमं पदं नि त्विषते यद्योगिनां दुर्लभम् ॥१०

॥ वाम केश्वर तन्त्रे पार्वतीश्वर संवादे गुरुस्तव राज सम्पूर्णम् शुभं भूयात्

भगवती दुर्गे देवि मूलं अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले भक्त्या समर्पये तुभ्यं गुरु पंक्ति प्रपूजनम् ॥ अनेन पुष्पांजलि: क्षिपेत् ततोग्रेपि ॥

॥ काली कवच रुद्रयामलोक्त ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ कैलाशशिखरासीनं शंकरं वरदंशिवं॥ देवी पप्रच्छ
सर्वज्ञ देवदेवं महेश्वरम् ॥१॥ देव्युवाच ॥ भगवन्देव देवेश देवानां
मोक्षद प्रभो ॥ प्रब्रूहि मे महाभाग गोप्यं यद्यपि च प्रभो ॥२॥ शत्रूणां येन
नाशः स्यादात्मनो रक्षा भवेत् ॥ परमैश्वर्य मतुलं लभेद्येन हितं वद ॥३॥
भैरव उवाच ॥ वक्ष्यामि ते महादेवि सर्व धर्म्म हिताय च ॥ अद्भुतं कवचं
देव्यास्सर्व रक्षाकरं नृणाम् ॥४॥ सर्वारिष्ट प्रशमनं सर्वोपद्रव नाशनम् ॥
सुखदं भोगदं चैव वश्याकर्षणमद्भुतम् ॥५॥ शत्रूणां संक्षयकरं भोग मोक्षप्रदं
चैव कालिका कवचं पठेत् ॥ शत्रवस्तस्य नश्यन्ति · · ॥ विनियोगः ॥
ॐ अस्य श्री कालिका कवचस्य श्री भैरव ऋषिः गायत्री छन्दः श्री कालिका
देवता ममाभिष्ट सिद्धये पाठे विनियोगः ॥ ॥ ध्यान ॥
ॐ ध्यायेत्कालीं महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् ॥ चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्ण
चन्द्रनिभाननां ॥ नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् ॥ चा नरमुण्डं
तथा खड्गं कमलं च वरं तथा ॥ बिभ्राणां रक्तवसनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ॥
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥ शवासनास्थितां देवि मुण्डमाला
विभूषिताम् ॥ इति ध्यात्वा महादेवीं पुनस्तु कवचं पठेत् ॥ ॐ कालिका घोर
सर्व कामप्रदां शुभां ॥११॥ सर्व देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ ह्रीं ह्रीं
स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं हुं रूपिणी तथा ॥१२॥ ह्रीं ह्रीं क्षें क्षौं स्वरूपा सा सदा
शत्रून्विदारयेत् ॥ श्रीं ह्रीं ऐं स्वरूपिणी देवी भवबन्ध विमोचिनि ॥१३॥

हसकल ह्रीं ह्रीं रिपून्साहस्तु देवी सर्वदा ॥ यथाशुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ॥१४॥ वैरिनाशाय वन्देतां कालिकां शंकरप्रियाम् ॥ ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका ॥१५॥ कौमार्यैन्द्री च चामुण्डाखादयन्तु मम द्विषः ॥ सुरेश्वरी घोर रूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनि मुण्ड माला वृतांगी च सर्वतः पातु माम सदा ॥ ह्रीं ह्रीं कालिके घोर दंष्ट्रे रुधिरप्रिये रुधिर पूर्णा वक्त्रे रुधिरावृतस्तनि मम शत्रून्खादय खादय हिंसय हिंसय मारय२ भिन्द्धि २ छिंधि २ उच्चाटयोच्चाटय द्रावय २ शोषय २ स्वाहा ह्रीं ह्रीं कालिकायै मदीय शत्रून्समर्पयामि स्वाहा ॐ जय २ किर २ किर २ कुट२ कटू २ मर्दय २ मोहय २ हर२ मम रिपून्ध्वंसय २ भक्षय त्रोटय २ यातुधानि चामुंडे सर्व जनान् राज पुरुषां (स्त्री) योषाः रिपून् मम वश्यान् कुरु२ कुरु २ धान्यं धनमश्वान् गजान् रत्नानि दिव्य कामिनीः पुत्रपौत्रान् राजश्रियं देहि २ रक्ष २ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ॥ इत्येतत्कवचं कथितं शम्भुना पुरा ॥१६॥ ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः ॥ प्रलयः सर्वधीनां भवतीह न संशयः ॥१८॥ धन हीना पुत्र हीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥ सहस्त्र पठनात्सिद्धि कवचस्य भवेत्तथा ॥१९॥ ततः कार्याणि सिद्ध्यन्ति यथा शंकर भाषितम् ॥ श्मशानांगार मादय चूर्णी कृत्वा प्रयत्नतः ॥२०॥ पादोदकेन पिष्ट्वा लिखेल्लौह शलाकया ॥ भूमौ शत्रून् हीनरूपान् उत्तरा सिरस्तथा ॥२१॥

हस्तं दत्वातद्हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥ शत्रोः प्राण प्रतिष्ठान्तु
कुर्यान्मन्त्रेण मंत्रवित् ॥२२॥ हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रुर्गच्छेद्
यमालयम् ॥ ज्वलदंगारतापेन भवन्ति ज्वरिणोऽरयः ॥ २३॥
प्रोञ्छनौ वाम पादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम ॥ बैरिनाश करं प्रोक्तं
कवचं वश्य कारकम् ॥२४॥ परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादि वृद्धिदम्
। प्रभात समये चैव पूजा काले प्रयत्नतः ॥२५॥ सायंकाले तथा पाठात्
सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ शत्रुउच्चाटनं याति देशाद्वा विच्युतो भवेत् ॥
॥२६॥ पश्चात्किंकरतां याति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ शत्रुनाश करं
देवि सर्व संपत्प्रदे शुभे ॥ २७॥ इति रुद्रयामले काली कवचं सम्पूर्णं
जगदम्बार्पणमस्तु ॥

॥ ब्रह्मरूप कालो जी की स्तुति ॥

ॐ अचिन्त्यामिताकार शक्ति स्वरूपा प्रतिव्यक्ति अधिष्ठान सत्व एक मूर्ति। गुणातीत निर्द्वन्द्व बोध एक गम्य, त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥१॥ यदा नैव धाता न विष्णुर्न रुद्रो न कालो न वा पंचभूतानि नाशः। तदा कारनो भूत सत्व एक मूर्ती त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥२॥ न मिमांसका नैव कावादि तर्का न सांख्या न योगा न वेदान्त वेदा। विशुद्धे निराकार भावंम स्वरूपा त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥३॥ न बाला न च त्वं न व्यस्था न बृद्धा न च स्त्री न संडो पुमा नैव च त्वं, न च त्वं सुरा न/सुरा कि अरावा त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥४॥ न ते नाम गोत्रो न ते धाम चेष्ठे, न ते जन्म मृत्युर्न ते दुःख सुःखा। न ते शत्रु मित्रो न ते बन्ध मोक्षो त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥५॥ जले शीतकत्वं शुचौ दाहकत्वं बिधौ निर्बलत्वं रवौ ताप कत्वं त्वमेव अम्बिके यस्य कस्यापि शक्ति त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥५॥ कराला करन्त्या नान्या सुरन्ती करे शस्त्र बाहुल्य मित्थं बहन्ती। नास्ति पालनाया सुराना बधाय, त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥६॥ महा चण्ड योगेश्वरी गुह्य कालो करालो महाडामरो चण्ड हंसः जगत ग्रसिनी चंडिका पालिनी च त्वमेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ॥७॥ रमान्ति शिवाभिर बहन्ती कृपाण जयन्ती सुरारिम दमन्ती प्रमत्ता न नटन्ती पटन्ती चलन्ती हसन्ती त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धा ॥८

॥ कालीजी का स्तवन पुष्पों से ॥

नमः पुष्कर नेत्रायै पुष्पांजलि समर्पयामि। इसी तरह सब नामों में। (जगद्धात्र्यै) नमोस्तुते॥ माहेश्वर्यै॥ महादिव्यै॥ महामंगल मूर्तयै॥ परमा पाप हन्त्री॥ च परमार्ग प्रदायीनि॥ परमेश्वरी॥ प्रजोत्पत्तिः॥ परब्रह्म स्वरूपिणी॥ मददात्री॥ मदोन्मत्ता॥ मान गम्या॥ महोन्नता॥ मनस्विनि॥ मुनिध्येया॥ मार्तण्ड सहचारिणी॥ जय लोकेश्वरि॥ प्राज्ञे॥ प्रलयाम्बुद्॥ सोन्निभे॥ महामोह विनाशनार्थय पूजितासि सुरासुरैः॥ यम लोका॥ भावकर्त्री॥ यम पूजा॥ यमाग्रजा॥ यम निग्रह रूपा ~~पूजा च~~ जयनिय नमोनमः॥ समस्वभावा सर्वेशी॥ सर्व संग बिवर्जिता॥ संग नाश करी॥ काम्यरूपा॥ कारुण्य रूपा विग्रह॥ कंकालरूपा कामाक्षी॥ मीनाक्षी॥ मर्म भेदनी॥ माधुर्य रूप शीला च॥ मधुर स्वर पूजिता॥ महामंत्र वती॥ मंत्र गम्य॥ मंत्र प्रियंकरी॥ मनुष्य मानस् गमा॥ मन मन्धार प्रियंकरी॥ अश्वत्थ बट॥ निम्बाम्र कपित्थ॥ नद्दरी गते॥ पनसार्के॥ करीरादि॥ क्षीर वृक्ष स्वरूपिणी॥ दुग्ध बल्ली॥ निवासोहे॥ दयनीय॥ दयाधिके॥ दाक्षिण्य॥ करुणास्वरूपे॥ जय सर्वज्ञ बल्लभे॥

॥ सिद्ध ॥

॥ कुञ्जिका स्तोत्र ॥

परमेश्वरि।

सर्व रूप मई देवी, सर्व देवी मयं जगत, अतोऽहं विश्वरूपा तां नमामि ।

॥ शिव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिका स्तोत्र मुत्तमम् । येन मन्त्र प्रभावेण चण्डी
जापः शुभो भवेत् ॥१॥ न कवचं नार्गला स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् । न
सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥ कुंजिका पाठ मात्रेण दुर्गा
पाठ फलं लभेत् । अस्त गुह्यतरं देवि देवा नामपि दुर्लभं ॥३॥ गोपनीयं
प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती । मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठ मात्रेण संसिद्धियेत् कुंजिका स्तोत्र मुत्तमम ॥४॥

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय २ ज्वल २
प्रज्वल २ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ज्वल हं सं लं क्षं फट स्वाहा
॥इति मंत्रः ॥ नमस्ते रुद्र रूपिण्यै नमस्ते मधु मर्दिनि, नमः कैटभ हारिण्यै
नमस्ते महिष मर्दिनि ॥१॥ नमस्ते शुम्भ हन्त्र्यै च निशुम्भासुर
घातिनि ॥२॥ जाग्रतंहि महा देवि जप सिद्धिं कुरुष्व मे । ऐंकारी सृष्टि
रूपायै, ह्रीं कारी प्रति पालिका ॥३॥ क्लीं कारी काम रूपिण्यै, बीज रूपे
नमोस्तुते ॥ चामुण्डा चण्ड घाती च यैं कारी वरदायिनि ॥४॥ विच्चे चा
भयदा नित्यं नमस्ते मंत्र रूपिणी ॥५॥ धां धीं धूं धुर्जटेः पत्नि वां
वीं वूं वागधीश्वरि ॥ क्रां क्रीं क्रूं कालिके देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु
॥६॥ हुं हुं हुंकार रूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनि ॥ भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी

भक्ते भवान्यै तै नमोनमः ॥ ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं वीं जुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं २ त्रोटय २ दीप्तं कुरु २ स्वाहा ॥ पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खुं खेचरी तथा ॥ ८ ॥ सां सीं सूं सप्तसती देव्या मन्त्र सिद्धिं कुरुष्व मे ॥ इदं तु कुंजिका स्तोत्रं मन्त्रं जागर्ति हेतवे ॥ अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती ॥ यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ॥ ॥ न तस्य जायते सिद्धिरण्ये रोदनं यथा ॥

॥ इति श्री रुद्रयामले गौरी तन्त्रे शिव पार्वती सम्वादे ॥ कुंजिका स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॐ तत्सत ॥

॥ उत्कीलन ॥

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलनम् २ ठः ठः ॥ एक माला

पुस्तक पूजन = ॐ नमः पिशाचिनी करंकिनी त्रिशूल खड्ग हस्ते सिंहारुढे ऐ ह्येहि ह्येहि अआगच्छ २ इमां पूजां गृहाण २ स्वाहा श्री सरस्वती स्वरूपिण्यै ह्रीं चंण्डिकायै नमः ॥

॥ शापोद्धार ॥

ॐ ह्रीं क्लीं क्रीं २ चंडिका देव्यै शाप नाशानुग्रह कुरु कुरु स्वाहा ॥

॥ अमृत संजीवनी विद्या ॥

ॐ ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनी विद्यामृत मुत्थापयो थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ॥

॥ चण्डी कवच का विनियोगः॥

ॐ अस्य श्री चण्डी कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री चामुण्डा देवता अंगन्यासोक्त मातरो बीजं दिग्बन्ध देवास्तत्वं श्री जगदम्बा प्रीतियर्थे जपे विनियोगः

॥ अर्गला कीलक विनियोगः॥

ॐ अस्य श्री अर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य विष्णु ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री महालक्ष्मी देवता श्री जगदम्बा प्रीतियर्थे अर्गला पाठांगे जपे विनियोगः॥

॥ कीलक मन्त्र का विनियोग॥

ॐ अस्य श्री कीलक मन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री महासरस्वती देवता श्री जगदम्बा प्रीतियर्थे कीलक पाठांगेन जपे विनियोगः॥

॥ नवार्ण मन्त्र का न्यास॥

ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्रा ऋषियः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांसी श्री महा काली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता नन्दा शाकम्भरी भीमा शक्तयः रक्त दन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि अग्नि वायु सूर्यास्तत्वानि ऋग यजुः वेदा ध्यानानि श्री महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती प्रीतियर्थे जपे विनियोगः॥

॥षडङ्गन्यासः॥

ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि॥ ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्देभ्यो नमो मुखे॥ ॐ श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि॥ ॐ ऐं बीजाय नमो गुह्ये॥ ॐ ह्रीं शक्तिये नमः पादयो॥ ॐ क्लीं कीलकाय नमो नाभौ॥ (हाथ धोकर करन्यास करो॥

॥ करन्यासः ॥

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

॥ हृदयादिन्यासः ॥

ॐ ऐं हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिखायै वौषट् ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ३॥

॥ अक्षरन्यासः ॥

ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमो वाम नेत्रे ॥ ॐ चां नमो दक्षिण कर्णे ॥ ॐ मु नमो वाम कर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिण नाशायां ॥ ॐ ऐं नमो वाम नाशायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमो मुखे ॥ ॐ उच्चे नमो गुदे ॥

आठ बार व्यापक न्यास करे॥

॥ अथ दिग्न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यै नमः ॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं प्रतिच्यै नमः ॥ ॐ क्लीं वायव्यै नमः ॥ ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः ॐ चामुण्डायै ईशान्यै नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ॥

॥ प्रार्थना ॥

ॐ खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघां शूलं भुशुण्डीं शिरः ॥ शंखं सन्दधतीम् करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकाम् ॥ यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

ऊं अक्षस्त्रक परशुं गदेशु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां ॥ दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलम् पाश सुदर्शने च दधतीं हस्ते प्रवाल प्रभाम् सेवे सैरिभ मर्दिनि मिह महालक्ष्मीं सुरोजोद्भवाम् ॥ घण्टा शूल हलानि शंख मूसले चक्रं धनु: सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छितांशु तुल्यप्रभाम् ॥ गौरी देह समुद्भवाम् त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥ ऊं बाल रवि द्युति मिन्दुकिरीटां तुङ्ग कुचां नयन त्रय- युक्ताम् स्मेर मुखीं वरदांकुश पाश भीति करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

ग्यारहवें अध्याय के पाठ से हवन करने के बाद आहुति मन्त्र ॥

क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़ वाहिन्यै नारायणी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा ॥ (पान, शाकल्य, कमल गट्टा, घी, सुपारी लौंग, इलाइची, गूगल, कनेर का फूल खीर। स्रुवा पर रख कर दें॥

प्रथम अध्याय के पाठ से हवन करने पर आहुति मन्त्र॥

दुर्गा कल्पद्रुम के अचूक प्रयोग

(ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा) यह नर्वाण मंत्र जपो

इन हर प्रयोगों के करने के पहले नवार्ण मन्त्र के न्यास करके नवार्ण मन्त्र सवा लाख जप करले। दशांश तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करादे। सवा लाख जप करने से इसी में दशांश हवन हो जाता है जैसे एक लाख जपोगे तो दस हजार मन्त्र हवन के निस्पत का जप हो गया। और दश हजार का एक हजार मार्जन के निस्पत का जप होगा १ सौ तर्पण का जप होगा। इस प्रकार जप के द्वारा ही सब होगा इसीलिये सवा लाख जप करले। फिर प्रयोग शुरु करे।

॥ वशीकरण ॥

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुक नामाख्यं) वषट् मे वश्यम कुरु कुरु स्वाहा॥

॥ (उच्चाटन मंत्र)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुक नामाख्यं) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा॥

॥ मोहन ॥

क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुक नामाख्यं) रं रं खें खें मारय मारय रं रं शीघ्र भस्मी कुरु कुरु स्वाहा॥

॥ स्तम्भनम् ॥

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकस्य) ह्रीं वाचम मुखम पदम् स्तम्भय २ ह्रीं जिह्वां कीलय २ ह्रीं बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा॥

॥ आकर्षण ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुक नामाख्यं) यं यं शीघ्रमाकर्षय माकर्षयम् स्वाहा॥

यह प्रयोग जब करे दुर्गाजी का पंचोपचार से पूजन करलेना, हर काम जब करोगे तो एक लाख पच्चीस हजार मंत्र जपना होगा। यदि गर्भ स्तम्भन करना हो तो (ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मालती ब्राह्मणायाः गर्भस्तम्भनम् कुरु २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा॥

यदि बुद्धि स्तम्भित करना हो तो जिस नाम को करना हो जिस जात को करना हो जैसे शूद्र आदमी है तो (ॐ ठं ठं ऐं ह्रींक्लीं चामुण्डायै विच्चे रामु दासस्य बुद्धि स्तम्भय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा॥ यदि नवार्ण मन्त्र से भूत प्रेत बाधा हटानी हो तो संकल्प योजना बनाकर १ लाख कोई भी दुर्गा मन्त्र जप दो या नारायणास्त्र या हनुमत पंजर या हनुमान स्तोत्र जपदो

॥ दुर्गाकल्पद्रुम का शूलिनी प्रयोग ॥

ॐ अस्य श्री शूलिनी दुर्गा महा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्री शूलिनी दुर्गा श्री परमेश्वरी देवता हुं बीजं मं शक्तिः स्वाहा कीलकं मम शूलिनी दुर्गा प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।) ॐ श्री शूलिनी वरदे देवि सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुं फट् ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः) ॐ श्री शूलिनी वरदे देवि सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुं फट् ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः) ॐ श्री शूलिनी युद्धप्रिये देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुं फट्) ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ श्री शूलिनी महिषासुर मर्दिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुं फट् ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः) ॐ श्री शूलिनी विन्ध्यवासिनी यन्त्र मन्त्र तन्त्र कार्बिणी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुं फट् ह्रौं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः) ॐ श्री शूलिनी सर्व सिद्धि प्रदायनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् हः (करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः) हृदयादिन्यासः = ॐ श्री शूलिनी वरदे देवि सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ श्री शूलिनी वरदे देवि सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेस्वरी हुं फट् ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ श्री शूलिनी युद्धप्रिये देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरि हुं फट् (ह्रूं शिखायै वषट्) ॐ श्री शूलिनी महिषासुर मर्दिनी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रैं नेत्रत्रयाय वौषट्)

ॐ श्री शूलिनी विन्ध्य वासिनी यन्त्र मन्त्र तन्त्राकर्षिणी देव सिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रौं कवचाय हुं ॐ श्री शूलिनी सर्व सिद्धि प्रदायिनी देवसिद्ध सुपूजिते नन्दी रक्ष २ महायोगेश्वरी हुं फट् ह्रः अस्त्राय फट् ।। ध्यान ।। ॐ विभ्राण शूल वाणस्य भय वर गदा चाप पाशान्करागै र्मेघ श्यामा किरीटोल्लशित कला भूषण भीषणस्य सिंहस्कन्धाधि रुढः चतं सृभिरचतं खेटकं विभ्रतीभिः ।। कन्याभिर्भिन्न देत्या भवतु भव भय विध्वंसिनी शूलिनी नः ।।१।। संहारमुद्रा दिखाओ। योनीमुद्रा से प्रणाम करो। पंचोपचार से पूजा करो आदि और अन्त दोनों में न्यास करना चाहिये। यदि दुर्गा जी की मूर्ति न हो तो अष्ट दल का कमल बनाकर आठों देवी की पूर्व से आग्नेय की तरफ होता हुआ क्रमशः (दुर्गा)(काली)(विन्ध्य वासिनी) (सुमर्दिनि)(युद्धप्रिया)(सिद्धपूजिता)(नन्दिनि)(महायोगेश्वरी) इन आठों की पूजा करे। फिर दुर्गा काली के बीच सन्धि में चक्र की दूसरी सन्धि में क्रमशः शंख-खड्ग-गदा-चाप-शूल-बाण-पाश की पूजा करे। मंत्र योजना बना ले। जैसे (ॐ चक्राय नमः) यह हर एक का नाम लेकर योजना बना के पूजा करे। फिर १०००८ मंत्र से काले तिल मधु से आम की लकड़ी से हवन करे। १५ हजार शूलनि मंत्र जप कर दशांश घी से हवन करे। आम की लकड़ी में। दशांश तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करावे तो अमानुषि शक्ति प्राप्त होवे। मन वांछित यश प्राप्त होवे। जिसे गृह बाधा भूत बाधा हो तो स्पर्श करके १०८ बार कुश से मंत्र पढ़ के मार दे।
विष उतारना हो तो २१ बार मंत्र पढ़के मार दे

॥ माला मंत्र ॥

ॐ नमो भगवती कंकाल रात्री हुं दुर्गे शुं शूलिनी वं बटुक भैरवी अर्ध रात्र विलासिनी प्रताप कौलिनी महाज्ञान

ज्ञान धारिणी

धारिणि सर्व भूत प्रेत पिशाच मद भीषमा कर्षय माकर्षय आवेश्य आवेश्य केलय केलय भाषय भाषय महा बटुक भैरवी हुं फट् स्वाहा ॥१॥ ॐ नमो भगवती भद्र काली कास कूट मोहिनि ऐं ह्रीं श्रीं इष्ट कामार्थ सिद्धि प्रदायिनी सकल ज्ञापिनी संक्रामिणि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी चामुण्डा भैरवी आकर्षय २ आवेश्य २ केलय २ भाषय २ ऐं ह्रीं श्रीं हन २ सप्तमातृके हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवती ह्रीं ज्वल २ शूलिनी संहार काली अष्टभुजा शालिनी ऐहि २ आगच्छ २ आवेश्य २ सकल केलय २ भाषय २ बन्धय २ घातय २ छिन्धि २ रारारारा गृह्य सकल ग्राहान् संहारय २ भूत गृह प्रेत गृह पिशाच गृह ब्रह्मराक्षस गृह डाकिनी गृह शाकिनि गृह काकिनी गृह राकिनी गृह हाकिनी गृह याकिनी गृह काल निग्रह महा काल निग्रहावेश, सर्व ग्रहानावेश, गृह स्वप्न गृह भोग ग्रहाऽपस्मार गृह नित्य गृह सर्व गृहान् संहारय २ उच्चाटय २ नाशय २ मारय २ शोषय दह २ पच २ भक्षय २ खण्डय २ खड्गेन छिन्धि २ शूलेन ताडय २ पाशेन बन्धय २ अनलेन दह दह ह्रीं दुर्गे बटुक महा भैरवी सकल ग्रह संहार कारिणि, भूत ज्वर प्रेत ज्वर पिशाच ज्वर राक्षस ज्वर पित्त ज्वर वात ज्वर श्लेष्मिक ज्वर सान्निपात ज्वर ऐकाहिक ज्वर द्व्याहिक ज्वर त्र्याहिक्य ज्वर चातुर्थिक्य ज्वर पक्ष

१५ हजार का प्रमाण है ६० हजार जप करे तो ६०० मन्त्र से हवन ६० मन्त्र से तर्पण ६ बार मन्त्र पढ़ के मार्जन १ ब्राह्मण भोजन करवादे।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं दुं ज्वल ज्वलय शूलिनि हुं फट् स्वाहा।

सर्वप्रकारेन दुष्ट बाधा निवारय २

मासज्वर त्रिमासज्वर षण्मासज्वर सांम्वत्सरिकज्वर सर्व ज्वरान् भंजय २ कटि शूल कुक्षिशूल अंग शूल पार्श्व शूल पृष्ठ शूल शिर: शूलादि सर्व रोगान संहारय २ ह्रीं दुर्गे परमन्त्र पर यन्त्र परतन्त्र विद्यास्तम्भनि स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्वतन्त्र विद्या विवर्द्धिनि ॐ ह्रां ह्रीं हूं हुं फट् स्वाहा॥ अमुकस्य आत्म रक्षा परोक्ष रक्षा प्रत्यक्ष रक्षा वायु रक्षा उदक रक्षा अग्नि रक्षा सर्व तोभावेन रक्ष २

गुह्यातिगुह्य गोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम। सिद्धिर्भवतु मे देवि सर्व काम फलप्रदा २। (जब किसी का काम करना हो तो विनियोग न्यास करके यह माला मन्त्र पढ़कर १५ हजार जप करले फिर १५ सौ तर्पण। १५ बार मार्जन १ ब्राह्मण भोजन करादे॥ परन्तु चौगना जप करदे

यदि किसी दुष्ट का मारण करना हो तो इसी मंत्र में इस तरह बीज पल्लव लगेगा जैसे॥ जिस मनुष्य के लिये करना है तो पहले नाम की योजना बनाओ। जैसे श्याम... पर करना है

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं दं ज्वल ज्वलय शूलिनी (श्यामलाल गुप्तस्य नाशय २ हुं फट् स्वाहा। यदि रक्षा करना हो तो इसी में

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं दुं ज्वलज्वलय शूलिनी श्यामलाल गुप्तस्य रक्ष २ हुं फट् स्वाहा

यदि उच्चाटन करना है तो इसी मन्त्र से उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं दुं ज्वल ज्वलय शूलिनी (श्यामलाल गुप्तस्य) दुष्ट ग्रहान् हुं फट् स्वाहा॥ दुश्मन के प्रयोग में हवन द्रव्य घी गुड़ मधु होगी बबूर की लकड़ी हवन की होगी।। रक्षा के प्रयोग मे केवल घी से होगा हवन और लकड़ी ढाक की लगेगी। यदि सर्वत्र विजय की इच्छा हो

यशकोइच्छा होतो ॥ १०८ मंत्र से ॥
बौर पीपल या मदार को लकड़ी में। घी मधु तिल से हवन करेरोज।
१ हजार मंत्र जप करे ॥ दशांश हवन दशांश तर्पण दशांश मार्जन
१ ब्राह्मण नित्य जिमोदे॥ नित्य कालीजी का ध्यान करे॥ स्तुति करे
यदि किसी को भूतबाधा या ग्रहबाधा लगी हो तो रोगी को कुश से
स्पर्श करके १०८ बार मंत्र और माला मंत्र पढ़ कर झार दे॥ जिसे
सांप बिच्छू चूहा छिपकली आदि विषैले जिव ने काट लिया हो तो
२१ बार मंत्र और माला मंत्र साथ ही जपता जाय जहां काटा हो उस
स्थान को स्पर्श करता रहे। तो बिष उतर जायेगा॥
यदि कहीं युद्ध में जाकर जय पाना हो तो (घी तिल पीली सरसों से
पलास की लकड़ी में एक लाख मन्त्र से हवन दशांश
तर्पण दशांश मार्जन ब्राह्म खिलादे॥ और विधिवत
यन्त्र पूजनादि करके ६० हजार मन्त्र हाथ में तलवार या तीर
लोह का हाथ में लेकर जप कर डाले तब युद्ध में प्रवेश करे।
जिसे वश में करना हो दस हजार जप दशांश हवन घी मधु चावल
से करके दशांश तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करादे॥ नाम की योजना
जरूर करले जैसे॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्वल ज्वलय शूलिनी ~~दुष्ट ग्रहान्~~
हुं श्यामलाल गुप्तस्य मे वश्यम् कुरु हुं फट् स्वाहा॥ या संकल्प में योजना
करे जैसे॥

दुष्ट गृह दशा दूर करने के वास्ते योजना संकल्प को बनो

ॐ तत्सद्द्या परब्रह्म परमात्मने अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासेर अमुक नक्षत्र अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरु शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा स्थान स्थितेषु एवं गृह गुण विशेषण विशिष्टायां कश्यप गोत्रोत्पन्नः कमला नामाहं अच्युत गोत्रे बैष्णव जाते (श्यामलालस्य गुप्तस्य दुष्टगृह ~~निवारणार्थे~~ शूलनी मन्त्रम् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वलशूलनी दुष्ट ग्रहान् हुं फट् स्वाहा। अद्यारम्भ्य एकादिवस पारियन्तम् अयुतं जपं ~~कमला सरकार नामाहं~~ जप करिष्ये ॥ (यह योजना संकल्प को बनो इस प्रकार संकल्प करके शूलनी मंत्र जपो दस हजार ॥ यदि १ लाख २५ हजार यन्त्र पूजन विधिवत पूजन करके जप करे और फूंक मारदे। आधा शीशी जाय।

यदि विद्वेषण करना हो तो गोबर को ५५६ गोली बना कर सुखाले १०८ मंत्र से रोज शूलिनी मंत्र पढ़कर हवन करदे। बबूर की लकड़ी में यदि उच्चाटन करना हो तो, संकल्प उसके नाम से करके बायें हाथ में एक सूखी गोली लेके किसी पेड़ पर बैठ कर ३० माला जप करदे फिर उस गोली को जिसे उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़दे या गढ़वादे ॥ यह तो साधारण बात है इससे सभी काम संकल्प योजना करके करने से हो जाते हैं। भूतप्रेत बाधा हटाने के लिये हवन बेर की लकड़ी में कड़वा तेल मिर्च से १०८ बार अर्ध निशा में करदे ॥ और १०८ बार झाड़दे कुशा से या मोर पंख से झारदे या तीर से झारदे ॥

दुर्गा स्तोत्र पढ़ो

प्रथम फट् मन्त्र से वामहस्त से संमर्घ में फूल डालें फिर दाहिने हस्त से (ॐ) मन्त्र पढता हुआ शिर पर घुमावे और यह पढे
ह्रौं ऊँ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः। मृत्यु रोग भयं क्लेशाः पतन्तु रिपु मस्तके ॥ इति पठित्वा॥
नाराचमुद्रा = एक फूल संमर्घ से उठा कर दोनों हथेली से मसल कर (फट्) मन्त्र पढ़कर ईशान कोंण में फेंक दे।
प्राणायाम करे = वायु बीज को वाम नाशा छिद्र से १६ बार जपे (धूम्रवर्णहै। पूरक में इसका बीज (यं) है। ६४ बार कुम्भक में वायु बीज जपे। ३२ बार दाहिने नाशा छिद्र से रेचक करे। फिर अग्नि बीज (रं) को दाहिने नाशा छिद्र से उसी प्रकार जपे १६ बार ६४ बार कुम्भक में जपे ३२ बार बाई नाशा छिद्र से रेचक करे। इसका रंग लाल है॥ फिर चन्द्र बीज (ठं) को वाम नाशा छिद्र से १६ बार जपे २४ कुम्भक ३२ बार रेचक करे। इसका रंग शुक्ल है। ललाट में ध्यान होता है सहस्रदल कमल कर्णिका में। फिर (वं बीज) को जो वरुण बीज है उसे १६ बार दाहिने से पूरक में २४ बार कुम्भक में ३२ बार रेचक में (रंग स्वेत है फिर (लं) बीज जो पृथ्वी बीज है १६ बार बायें नाशा छिद्र से जपे २४ बार कुम्भक में जपे। ३२ बार रेचक में दाहिने नाशा छिद्र से जपे। फिर हृदय पर सीधा हाथ रखकर हंसः - इसको जपे १०८ बार॥ या ऐं ह्रीं क्रों हंसः सोहं
प्राणस्थापनं कृत्वा स्वहृदि॥

ॐ आं सोऽहं मम प्राणा इह स्थिता: ॐ आं सोऽहं मम जीव इह जीव इह ~~स्थित~~ स्थित:, ॐ आं सोऽहं मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षु: श्रोत्र जिह्वा घ्राणानि इहा गत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

मातृका न्यासं कुर्यात्।। ॐ अस्य मातृका सरस्वती मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वरा: शक्तयो व्यक्तय: कीलकानि शरीर शुद्धि पुर: सरमाभीष्टसिद्धयर्थे लिपिन्यासे विनियोग:।। ।। बद्धाञ्जलि बना वे ।।

ब्रह्मणे ऋषये नम: शिरसि। गायत्री छन्दसे नम: मुखे। मातृका सरस्वत्यै देवतायै नम: हृदि। हलभ्यो बीजेभ्योनम: गुह्ये। स्वरेभ्य: शक्तिभ्यो नम: पादयो। व्यक्तिभ्य: कीलकेभ्योनम: सर्वाङ्गेषु। लिपिन्यासे विनियोग: ।। इति बद्धांजलि

करन्यासौ =

" ब्रह्मोपासना "

ब्रह्म की सायुज्य प्राप्ति के अर्थ साधक इस प्रकार भावसहित उपासना करे। पहले विनियोग = अस्य ब्रह्ममन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सर्वान्तर्यामि देवता चतुर्वर्ग फलावाप्तये विनियोगः।। पश्चात् करन्यास करे फिर अंगन्यास फिर प्राणायाम करे फिर स्तोत्र फिर कवच

करन्यास = ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। सत् तर्जनीभ्यां स्वाहा। चिन्मध्यमाभ्यां वषट्। एकम अनामिकाभ्यां हुम्। ब्रह्म कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ सतच्चिदेकं ब्रह्म करतल कर प्रष्ठाभ्यां फट्।

अंगन्यास = ॐ हृदयाय नमः। सत् शिरसे स्वाहा। चित् शिखायै वषट्। एकं कवचाय हुम। ब्रह्म नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सतच्चिदेकं ब्रह्म अस्त्राय फट्।

प्राणायाम = दहिने नाशापुट से ८ बार स्वांस ऊपर पूरक में मंत्र जपे १६ बार बाईं नासा पुट से मंत्र जप कर स्वांस उतारे। ३२ बार मंत्र कुम्भक में जपना चाहिये।

ध्यान = हृदय कमल मध्ये निर्विशेषं निरीहं, हरिहर विधि वेद्यं योगिभिर्ध्यानगम्यम्। जन्म मरणा भीति भ्रंशि सच्चित्स्वरूपं, सकलभुवन बीजं ब्रह्म चैतन्यमीडे।

मानसिक पूजा = भूत तत्व (पृथ्वी) को गंध रूप में, आकाश तत्व को पुष्प रूप में, वायु तत्व को धूप रूप में, तेज तत्व को दीप रूप में। जल तत्व को नैवेद्य रूप में ब्रह्म को समर्पण करे। फिर मन्त्र जपे (ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म) १० माला रोज करे। फिर ब्रह्म को इस मन्त्र से जपफल अर्पण कर दे।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना।

स्तोत्र = ॐ नमस्ते सते सर्व लोकाश्रयाय नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय। नमो अद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय। नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय। त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं। त्वमेकं जगत कारणं विश्वरूपम्।

त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ । त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।
भयानांभयं भीषणं भीषणानां । गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं । परेषां परम रक्षकं रक्षकाणाम् ।
परेशं प्रभो सर्वरूपा प्रकाशिन्न, निर्देश्य सर्वेन्द्रिया गम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त तत्त्व, जगद्भासकाधीश पायाद पायात् ।
तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामस्तदेकं, जगत्साक्षि रूपं नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्ब मीशं । भवाम्भोधि पोतं शरण्यं ब्रजामः ।
पञ्चरत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मणः परमात्मनः यः पठेत्प्रयतो भूत्वा ब्रह्मसायुज्य माप्नुयात् ॥ प्रदोस के दिन यह स्तोत्र अवश्य पाठ करें यूं तो रोज करें ।
जगन्मङ्गलनामक कवच = और विनियोग । ऋषि बिन्यासः ।
परमात्मा शिरः पातु हृदयं परमेश्वरः कण्ठं पातु जगत्पाता वदनं सर्वदृग्विभुः करौ मे पातु विश्वात्मा पादौ रक्षतु चिन्मयः सर्वाङ्गं सर्वदा पातु परं ब्रह्म सनातनम् ॥

अस्य श्री जगन्मङ्गलनामक कवचस्य सदा शिव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः परब्रह्म देवता धर्मार्थ काम मोक्षवाप्तये श्री जगन्मङ्गलाख्यकवच पाठे विनियोगः । शिरसि सदा शिवाय ऋषये नमः । मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः । हृदि परब्रह्मणे देवतायै नमः । धर्मार्थ काममोक्ष वाप्तये श्री जगन्मंगलाख्य कवच पाठे विनियोगः ॥ पश्चात् । नमस्ते परब्रह्म नमस्ते परमात्मने । निर्गुणाय नमस्तुभ्यं सद्रूपाय नमोनमः । ऋषिन्यास करके कवचपाठ करें ।
यदि यह कवच भोज पत्र पर लिख कर सोने के तावीज़ में भरकर कंठ में पहने रहे तो सर्व कार्य सिद्ध हों ।

इसमें देश काल आवाहन विसर्जन नहीं है। पवित्र अपवित्र जूठी सच्ची सामिग्री का कोई विचार नहीं। जाति पांति का विचार नहीं। चाहे जैसा पदार्थ हो ब्रह्म को निवेदित करके पाले। चाहे चाण्डाल हो लाया हो चाहे कुत्ते के मुख से निकला हुआ हो वह अतिशय पवित्र समझना।

ब्रह्म निवेदित प्रसाद करोड़ों तीर्थ का फल देने में समर्थ है। चाहे सहस्त्र करोड़ जीभ हो जायं तो भी उस प्रसाद का महात्म नहीं कह सकता।

मन्त्र शक्ती रुप बनाना हो तो (ऐं सच्चिदेकम ब्रह्म) (ह्रीं सच्चिदेकं ब्रह्म)

(श्रीं सच्चिदेकं ब्रह्म) इस तरह जपो।

सिद्ध सरस्वती स्तोत्रम्

विनियोग = ॐ अस्य सरस्वती स्तोत्र मन्त्रस्य मारकण्डेय ऋषि: स्रगधराऽनुष्टुप छन्द: सरस्वती देवता ऐं बीजम् वद वद शक्ति: स्वाहा कीलकम् मम वाक् सिद्धयर्थं जपे विनियोग:॥

करन्यास = ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नम:। ॐ धीं मध्यमाभ्यां नम:। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नम:। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ श्रीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नम:। हृदन्यास: = ॐ ह्रीं हृदयाय नम:। ॐ ऐं शिरसे स्वाहा। ॐ धीं शिखायै वषट्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सौं कवचाय हुम्। ॐ श्रीं अस्त्राय फट्। ध्यान = शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमां माद्यां जगद् व्यापिनीं, वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदाम् शारदाम्॥१॥ दोर्भिर्युक्तैश्चतुर्भि: स्फटिकमणि निभां भासमाना समाना सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥२॥ या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता, या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माऽच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवै: सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड्यापहा॥३॥

मंत्र = ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नम:।

ॐ श्रीं सौं ह्रीं क्लीं धीं महालक्ष्म्यै महा सरस्वत्यै नम:। यह रुद्रयामल का है दशों महा विद्या का।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैक बीजे [illegible] शोभे भव्ये भव्यानु
कूले शुभ मति वरदे विश्व वन्द्याङ्घ्रि पद्मे। पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत
जन मनो मोद सम्पादयित्रि प्रोत्फुल्ले ज्ञान कूले हरिहर नमिते देवि!
संसार सारे ॥१॥ ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिम रुचि मुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्। विद्ये वेदान्तवेद्ये
श्रुति परिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गातीत स्वरूपे भव मम वरदे
शारदे शुभ्र हारे ॥२॥ धीं धीं धीं धारणाख्ये धृति मति नुतिभिर्नामभिः
कीर्तनीये नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिजन नमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्य प्रभावे हरिहर नमिते पूर्ण तत्त्व स्वरूपे मातर्मात्रार्थतत्त्वे!
मति मति मति दे! माधव प्रीति नादे ॥३॥ क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे
दह दह दुरितं पुस्तकं व्यग्रहस्ते सन्तुष्टा कार चित्ते स्मित मुखे
सुभगे जृम्भणि स्तम्भनीये। मोहे मुग्ध प्रबोधे मम कुरु कुमति ध्वान्त
विध्वंसमीड्ये गीर्गौर्वाग्भारती त्वं कवि धृत रसने सिद्धिदे सिद्ध
साध्ये ॥४॥ सौं सौं सौं शक्ति बीजे कमल भव मुखाम्भोज भूति स्वरूपे
रूपे रूप प्रकाशे सकल गुण मये निर्गुणे निर्विकल्पे। न स्थूले
नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित विभवे जाप्य विज्ञान तुष्टे विश्वे विश्वा
न्तराले सकल गुण मये निष्कले नित्य शुद्धे ॥५॥ क्रीं क्रीं क्रीं
स्तौमि त्वाऽहं मम खलु रसनां मा कदाचित् त्यजत्वं मा मे बुद्धि
र्विरुद्धा भवतु मम मनो पातु मां देवि! पापात् मा मे दुःखं कदाचित्
क्वचिदपि विषये पुस्तके नाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु
मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाऽपि ॥६॥ इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रति
दिन मुषसि स्तौति यो भक्ति नम्रो वाणी वाचस्पते रप्यविदित

विभवो वाक्यतत्त्वार्थवेत्ता। सिद्धेरिष्टार्थलाभो सुतमिव सततं पातु तं सा च देवी, सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरतु कविता विघ्नमस्तं प्रयातु ॥८॥ निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाऽऽशुग्रन्थ प्रबोधः कीर्तिस्त्रैलोक्य मध्ये निवसति वदने शारदा तस्य सक्षाद्) दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकल गुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो वाग्देव्याः सम्प्रसादात् त्रिजगति विजयो जायते तस्य साक्षात् ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां महर्निशाम्। सरस्वतीजनः पाठाद् भवेदिष्टार्थलाभवान् ॥९॥ पक्षद्वये त्रयोदश्यामेका विंशति संख्यया। अविच्छिन्नं पठेद्यस्तु सुभगो लोकविश्रुतः। वांछितं फलमाप्नोति षण्मासेनाऽत्र संशयः ॥१०॥

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं वद वद वाग्वादिन्यै स्वाहा। त्वं माले! सर्वदेवानां सर्वकामप्रदा मता। तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर नमोस्तुते। इत्यर्पणम्। इति सनत्कुमार संहितायां सिद्ध सरस्वती स्तोत्रं समाप्तं॥

सरस्वती स्तोत्रम् =

वृहस्पतिरुवाच = सरस्वतीं नमस्यामि चेतनां हृदि संस्थिताम्।
कण्ठस्थां पद्मयोनिं त्वां ह्रींकारां सुप्रियां सदा ॥१॥ मति दां वरदां चैव
सर्व काम फलप्रदाम्। केशवस्य प्रियां देवीं वीणा हस्तां वरप्रदाम् ॥२॥
मन्त्रप्रियां सदा हृद्यां कुमति ध्वंस कारिणीम्। स्वप्रकाशां निरालम्बाम
ज्ञानतिमिरापहाम् ॥३॥ मोक्षप्रियां शुभां नित्यां सुभगां शोभन प्रियाम्।
पद्मोपविष्टां कुण्डलिनीं शुक्ल वस्त्रां मनोहरम् ॥४॥ आदित्य मण्डले
लीनां प्रणमामि जलप्रियाम्। ज्ञाना कारां जगद्दीपां भक्त विघ्नविनाशि
नीम् ॥५॥ इति सत्यं स्तुता देवी वागीशेन महात्मना। आत्मानं दर्शयामास
शारदिन्दु समप्रभा ॥६॥ श्रीसरस्वत्युवाच = वरं वृणीष्व भद्रत्वं यत्ते मनसि
वर्तते। वृहस्पतिरुवाच = प्रसन्ना यदि मे देवि परज्ञानं प्रयच्छ मे ॥७॥
श्री सरस्वत्युवाच = दत्तं ते निर्मलं ज्ञानं कुमति ध्वंस कारकम्। स्तोत्रेणाऽ
नेन मां भक्त्या ये स्तुवन्ति सदा नराः ॥८॥ लभन्ते परमं ज्ञानं मम तुल्य
पराक्रमाः। कवित्वं मत्प्रसादेन प्राप्नुवन्ति मनोगतम् ॥९॥ त्रिसन्ध्यं
प्रयतो भूत्वा यस्त्विमं पठेत् नरः। तस्य कण्ठे सदा वासं करिष्यामि न
संशयः ॥१०॥ इति रुद्रयामले वृहस्पति विरचितं सरस्वती स्तोत्र समाप्तम्

॥ गुरु प्रसाद की कुण्डली ॥

श्री शुभ सम्वत् ॥२०३४॥ शाके ॥१८९९॥ तत्र भास्करे दक्षिणायने॥ शरद् ऋतु:॥ मासानां मासोत्तमे मासे महा मंगलप्रद मासे कार्तिक मासे॥ शुक्लपक्षे। जन्म तिथौ सप्तम्याम्॥ ३७।१८ तदुपरि अष्टम्याम् तिथौ॥ गुरुवासरे॥ श्रवण नक्षत्रे॥ ३८।४३॥ तदुपरि धनिष्ठा नक्षत्रे॥ २६।२४ वृद्धि योगे॥ ३७।२२॥ तदुपरि ध्रुव योगे॥ गर करणे॥ ७।३२॥ तदुपरि वव करणे॥ ३७।७ तदुपरि वृष्टि योग। करणे। एवं परि शोधित ऋषिकेशोपाध्या पञ्चाङ्ग शुद्धौ॥ तत्र दिनप्रमाणम् २६।५४॥ रात्रि प्रमाणम्॥ ३३।६॥ अहर्निशं प्रमाणम्॥ ६०।०॥ तत्र धन चालनम्॥ ० ।५६।५७।३०॥ सूर्य गति:॥६०।४५॥ सूर्यास्त तत्र सं वृश्चिकाऽर्क: गतांशा:॥७।१।२८।२०॥ सूर्योदय:॥ तत्रादिनम् ६।३७। सूर्यास्त॥ ५।२३॥ सूर्योदयादिष्टम् घटी॥ ५६।५७।३०॥ तत समये वृश्चिक लग्नोदये तस्यांशा:॥ ५६।५८ ॥ भयातम्॥२०।१४॥३० माना।२०।१५ भभोग:॥ ६६।४१॥ तत् श्री पांडेय वंशोद्भवाय पं राजाराम तस्यात्मज केदारनाथ पांडेय गृहे भार्यायां दक्ष कुक्षौ पुत्र रत्न प्रसूत:॥ धनिष्ठा नक्षत्रे तृतिय चरणे जन्म:। होडा चक्रानुसारेण शुभ राशी नाम गुरु प्रसाद नाम्न: प्रसिद्धा:॥ जन्म राशी कुम्भ। स्वामी शनि। वर्ण शूद्र। गण राक्षस। योनि गज। संज्ञा मानव। नाडी मध्य। वर्ग मारजार॥ इत्यादि वर्ग: विवाह समय परिचिन्त नीयम् तदनुसार जन्म तारीख १८-११-१९७७॥

अंग्रेजी तारीख रात को १२ बजे बदल गई थी इसलिये १८ तारीख में जन्म माना।

पे ढंग से पंडित जी ने बताया
बीते १२ घंटा जो जोड़
नहीं करना पड़ा।

गुरुप्रसाद कुण्डली साधन

६।३८ पर शुक्रवार को सूर्योदय हुआ इसके १ मिनट पहले व आने बजे हुआ है
६।३७ – पर जन्म सुबह होते होते हुआ यह गुरुवार की रात्री ही थी १४।३०
०। १ × २।३०
०। २
०। ३०
०। २। ३०। दो पल ३ विपल शेष रात्री रह गई थी इसी पल विपल को

इष्ट काल इस प्रकार भी निकल आता है मिनट घटादे गई पर हुआ, में चौथे पहर में जन्म होता है तब। करो। घटाती इष्ट काले निकलेगा

६० दंड में
०।२।३० घटादिया शेष रात्री जितनी रह गई थी
५९।५७।३० इष्ट काल हुआ
५९।५८ मान लो, इष्ट काल को तीस पल को छोड़ दो
३९।४३ – बीता नक्षत्र
२०।१५।– भयात मतलब जन्म नक्षत्र इतना बीत गया जन्म समय तक

(४) ५६।४१(१४६
५६
×
(४) ४१(१० पल
४०
१२६०
(४) ६०(१५ वि
६०
×

६० दंड में से
३९।४३ – बीता नक्षत्र घटाया
२०।१७
२६।२४ + जन्म नक्षत्र जोड़ा
५६।४१ भभोग

१४।१०।१५ प्रथम चरण
२×
२८।२०।३० दूसरा चरण
१४।१०।१५
३×
४२।३०।४५ तीसरा च०

तीसरे चरण में जन्म हुआ चूंकि भयात २०।१५ ही है

धनिष्ठा के तीसरे चरण में जन्म हुआ
राशी नाम गुरु प्रसाद

श्री शुभ सम्वत् ॥२०३४॥ शाके॥ १८९९ ॥ तत्र भास्करे दक्षिणायने॥
शरद् ऋतु:॥ मासानां मासोत्तमे मासे महा मंगलप्रद मासे कार्तिक
मासे॥ शुक्लपक्षे। जन्मतिथौ सप्तम्याम् ॥ ३७।२९ तदुपरि
अष्टम्याम् तिथौ॥ गुरुवासरे॥ श्रवण नक्षत्रे ॥३६।४३॥ तदुपरि
धनिष्ठा नक्षत्रे॥ २६।२४ वृद्धि योगे॥ ३७।२२॥ तदुपरि ध्रुव योगे॥ गर
करणे॥ ७।३२॥ तदुपरि वव करणे ॥ ३७।७ तदुपरि वृष्टि योग। करणे।
एवंपरि शोधित ऋषिकेशोपाध्या पञ्चाङ्ग शुद्धौ ॥ तत्र दिनप्रमाणम्
२६।५४॥ रात्रिप्रमाणम्॥ ३३।६॥ अहर्निश प्रमाणम् ॥६०।०॥
तत्र घन चालनम् ॥ ० ।५६।५७।३०॥ सूर्य गति:॥६०।४५॥ सूर्य स्पष्ट
तत्र सं वृश्चिकाऽर्कः गतांश:॥७।१।३६।२०॥ सूर्योदय:॥ तत्रादिनम्
६।३७। सूर्यास्त् ॥५।२३ ॥सूर्योदयादिष्टम् घटी॥५६।५७।३०॥ तत
समये वृश्चिक लग्नोदये तस्यांश:॥ ५६।५८ ॥ भयातम्॥२०।१४॥३० माना
।२०।१५
भभोग:॥६६।४१॥ तत् श्री पांडेय वंशावतंस पं राजाराम
तस्यात्मज केदारनाथ पांडेय गृहे भार्यायां दक्ष कुक्षौ पुत्र
रत्न प्रसूत:॥ धनिष्ठा नक्षत्रे तृतियचरणे जन्म:। होडा चक्रानुसारेण
शुभ राशी नाम गुरु प्रसाद नाम्न: प्रसिद्धा:॥ जन्म राशी कुम्भ।
स्वामी शनि। वर्ण शूद्र। गण राक्षस। योनि गज। संज्ञा मानव।
नाडी मध्य। वर्ग मारजार॥ इत्यादि वर्गः विवाह समय परीचिन्त
नीयम् तदनुसार जन्म तारीख १८-११-१९७७॥
अंग्रेजी तारीख रात को १२ बजे बदल गई थी इसलिये १८ तारीख में जन्म माना।

गुरुप्रसाद कुण्डली साधन

६।३८ पर शुक्रवार को सूर्योदय हुआ इसके १ मिनट पहले जन्म हुआ।
६।३७- पर जन्म सुबह होते होते हुआ यह गुरुवार की रात्री ही समझो

०। १ x २।३०
०।२
०।३०

इष्ट काल इस प्रकार भी निकल आता है। जब रात्री में चौथे पहर में जन्म होता है तब।

०।२।३०। दो पल ३ विपल शेष रात्री रह गई थी इसी पल विपल को ६० दंड से घटा दो इष्ट काल निकलेगा

६० दंड में
०।२।३० घटा दिया शेष रात्री जितनी रह गई थी
५९।५७।३० इष्ट काल हुआ
५९।५८ मान लो, इष्ट काल को तीस पल छोड़ दो
३९।४३- बीता नक्षत्र
२०।१५। भयात मतलब जन्म नक्षत्र इतना बीत गया जन्म समय तक
६० दंड में से
३९।४३- बीता नक्षत्र घटाया
२०।१७
२६।२४+ जन्म नक्षत्र जोड़ा
४६।४१ भभोग

(४) ५६।४१(१४ दं
५६
(४) ४१(१० पल
४०
१ x ६०
(४) ६०(१५ वि
६०
x

१४।१०।१५ प्रथम चरण
२x
२८।२०।३० दूसरा चरण
१४।१०।१५
३x
४२।३०।४५ तीसरा च.

तीसरे चरण में जन्म हुआ चूंकि भयात २०।१५ ही है

धनिष्ठा के तीसरे चरण में जन्म हुआ
राशी नाम गुरु प्रसाद

"गुरु प्रसाद कुंडली साधन"

वार । चालन धन सूर्य गते
० । ५६ । ५७ । ३० × ६० । ४५
० । ३५४० । ३४२०
० । २६५५ । २६१०

० । ३५४० । ६१२५ । २६१०

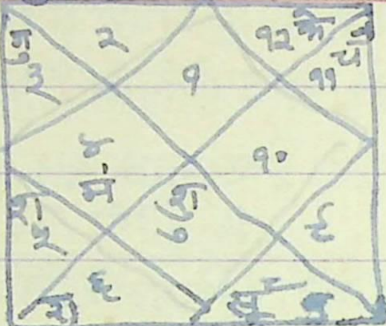
११ । ० । ४२ । ५८ । ३०

७ । ० । ३७ । ३८
 १ । ० । ४२ +

७ । १ । १ । ३८ । २० सूर्य सपस्ट

पत्रा के सूर्य सपस्ट
७ । ० । ३७ । ३८ है ७ । १ । १ । ६ । ०
सपस्ट करने पर

गुलिक लगन



६ । २६१० । ४३
२४०
२१०
१८०
३०

६१३५
४३ +

६० । ६१७६ । १०२
६०
१७६
१२०
५६

३३६०
१०२ +

६० । ३६४२ । ६०
३६०
४२

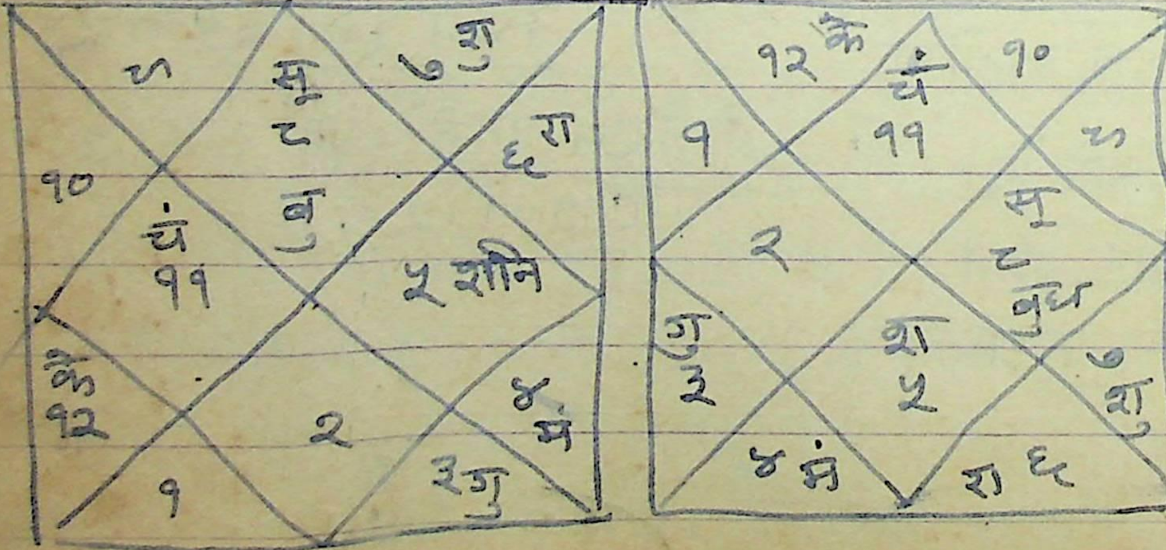
६०) ६० (१
६०
०

सात के सामने दूसरे अंश के नीचे
४० । २२ । ६
५६ । ५७ । ३० + इसे जोड़ा चालन धन था
४० । १९६ । ३६
४० १० । ३६ - ४ एक अंश के नीचे
० । ६ । ० सात के सामने की
 संख्या यह है।

रा । अं । क । वि.
७ । १ । ७ । ० लगन हुई ७ । १ । ४० । ११

जन्म कुण्डली गुरु प्रसाद की

चन्द्र लगन



ब्रा शोहे
के पाये हुआ

इष्ट साधन करना अब नये ढंग से पंडित जी ने बताया

इसमें १२ बजे के बाद जन्म होने पर बीते १२ घंटा जो जोड़ कर फिर सूर्योदय घटाया जाता था सो नहीं करना पड़ा।

यदि बालक २ बजे के ३० मिनट पर हुआ हो तो जितने बजे हुआ है उसमें से सूर्योदय उस दिन का घटा दो। जैसे ढाई बजे हुआ तो १४।३० बजे समझो हुआ, तो १४ घं ३० मिनट से सूर्योदय का घंटा मिनट घटादे जैसे आज ५।४६ पर सूर्योदय हुआ व आज ढाई पर हुआ, तो घटाओ ५।४६ को, फिर २।३० से गुणा करो। इष्ट काल बन जायेगा। अब लग्न निकालो तो पत्रा के सूर्य सपष्ट को सपष्ट करो पहले फिर उससे लग्न बनाओ तो सही बनेगी।

घं । मि॰
१४।३० जनम टाइम
५।४६ – सूर्योदय
८।४४ × २।३०
१६।८८
२४०।१३२०
१६।३२८।१३२०
२१।५०। ० इष्टका॰

एक उदाहरण देखो जैसे जातक सप्तमी की रात में सुबह सुर्योदय के पहले जन्मा केवल ३२ मिनट पहले तो इसका इष्ट काल बनाया इस ढंग से कि ५ बजके २५ मिनट पर जन्मा, ५।५७ पर सूर्योदय हुआ तो तो ५।५७ से, ५।२५ घटाया, ३२ मि॰ बचा तो समझो ३२ मिनट सूर्योदय होने में बाकी रहा। इसे ही २।३० से गुणा कर दिया, १।२०।० रहा तो समझो १ दंड २० पल सूर्य, उदय होने में बाकी रहा इसके बाद रात्री का मान निकाल लिया। ३०।१६ दिन का मान था। ६० दंड में से इसने दिन का मान घटा दिया, २९ दं। ४४ प॰ रहा इसमें १ दंड २० पल जो सूर्योदय के होने में बाकी रहा था, उसे जोड़ दिया २८।२४ आया, इसमें दिन मान जोड़ दिया, ५८।४० इष्ट काल निकला। अब क्रिया करके दिखाते हैं दूसरे पेज पर पन्ना पलटो देखो शुरु से क्रिया कैसे की गई है

वार दं । प॰ गति सूर्य की है
०। २१ । ५०। × ५८।१८

गुलिक लग्न बनाने का तरीका

६०
२६।५४ दिन मान घटाया
३३।६ रात्रीमान

८।३३।६।४६
३२
१×६०
६०
६८
८६६६।८५
६४
२×६०
८१२०।१५वि॰
१२०
×

दं॰ प॰ वि॰
४।८।१५
६० × ध्रुवा है
२४।८८।३० इष्ट
४०।१०।३५ लग्न सारिणी
५।०।६
१ ५ ३/२

०।१७।०।१२
गुलिक लग्न बनी

५।५७ पर सूर्योदय होगा
५।२५- पर रात में जन्मा तो
घटा कर देखा
१।३२ मिनट पहले जन्म हुआ
सौ मिनट में गुणा करदो समझो
३२ × २।३०

६४। संख्या रखने का भी ढंग देखो।

१।७६०
६४।७६०
११।२० ६०

१ दंड २० पल रात्री शेष रही तब जन्म हुआ, निकल आया।
अब रात्री का मान निकाला
६०।० दंड पूरे रात दिन के मान होते हैं।
२०।१६- दिन मान घटा दिया तो
२७।४४ रात्री का मान इससे निकला
जो था सो
१।२०- रात्री शेष का मान घटाया
जो जन्म समय बीतना बाकी रहा था।
२८।२४ घटा कर आया यह, इसमें
३०।१६+ दिन मान जोड़ दिया
५८।४० इष्ट काल हुआ

इसी पर लगन ४।२५।१०।२० बनी
कर्क गत
विषम लगन सिंह लगन में जन्मा, १५ अंश बीत चुका, इसलिये चन्द्र के होरा में जन्मा, विषम लगन का पहला होरा सूर्य का दूसरा चन्द्र का होरा होता है (यह जातक ज्येष्ठा नक्षत्र के किस नाड़ी के किस अंश में जन्मा ज्येष्ठा नक्षत्र की नाड़ी के दश अंश किये, भयात के दंड पल में दस से भाग दे दिया तो प्रथम खण्ड निकला, उसी में गुणा कर कर के दश खंड बनाया दशवां खण्ड ४७।५७ है नवां खण्ड ४४।५७।६ है तो दशवें खण्ड में जन्मा यह मालूम हुआ।

५८।४० इष्ट काल है तो
२।४२- बीता नक्षत्र का मान घटाया।
४७।५७ भयात बीत गया मानो इतना
६०। दंड में से
२।४२- बीता नक्षत्र मान घटाया
५७।१८ शेष रहा इतना
४।२८+ जन्म नक्षत्र का मान जोड़
५५।४६ भभोग। भोगना है मानो इतना
दं. पल
भयात के दंड पल में १० से भाग दिया
जन्म नक्षत्र के दस खण्ड हमने किये
१०) ४७।५७ (४ दं
४०
७×६०
५४०+५७
१०) ५९७ (५९ प०
५०
९७
९०
७×६०
१०) ५४० (५४ वि.
५०
४०
४०

४।५९।५४ प्रथम खण्ड है यह
७× नवां जानना है।
४४।५७।६ नवां खण्ड बन गया

समझो भयात के दंड पल इससे ज्यादा हैं तो दशवें अंश में यह बालक जन्मा, किस खण्ड में जन्मा इसको जानकारी के वास्ते दशों खण्ड बना कर देखलो भयात के दंड पल के अन्दर खण्ड बैठे। यहां भयात ४७।५७ है। नवां खंड ४४।५७ ही है तो ४४ के ऊपर दंड पलों में जन्मा इसलिये दशवां अंश में जन्म माना। जिस खण्ड को जानना हो, प्रथम खण्ड में उतने से गुणा कर के देखलो जैसे तीसरा खंड जानना है ३ से गुणा करदो ती। खंड बनेगा

६०) ७६० (१६ + ६४
७६०
०
८०
६०) ८०(१
६०
२० बचा
११
१६
८
लब्धी बगल में दंड को जा
६०) ११७३ (१९
६०
५७३
५४०
३३
३६५७
१७+
६०) ३६७६ (६१
३६०
७६
६०
१६
६०) ६१(१
६०
१

नक्षत्र की नाड़ी (दंड पल) के खण्ड करने से पता लगाता है जातक नाड़ी के किस अंश में हुआ फिर फल देख लिया जाता है। दशों खण्ड के अलग अलग फल शास्त्र ने बताया है। आगे मूल विचार=में लिख दिया है। कि मूलों में किस चरण अथवा अंश में क्या होगा।

यह घंटा मिनट के हिसाब से इष्ट काल बनाया गया।

आज गुरु जी ने बताया किसी का जन्म ~~दिन~~ दिन में जैसे ढाई बजे हुआ तो हमने यहां १४।३० लिखो
घं. मि.
१४।३० बजे जन्म हुआ समझो। १२ के बाद एक न गिन कर १३-१४-१५-१६ गिनो इस हिसाब से १४।३० पर जन्म हुआ। सो १४।३० में से सूर्योदय घटाया है। बात एक ही है। हम बीता घंटा जोड़ देते थे तब सूर्योदय घटाते थे।

५।४६ - सूर्योदय हुआ घटादो
८।४४ पर समझो
८।४४×२।३०
१६।८८
२४०।१३२०
१६।३२८।१३२०
२१।५०। ० इष्ट

गृह लाघव के पत्रे में चालन सदा धन ही माना जाता है।
इष्ट को चालन मान लिया बार की जगह ० रखो

सूर्यास्त के बाद जन्म हो तो सूर्यास्त घटा कर २।३० से गुणा करें दिन मान जोड़ दे इष्ट काल निकल आवेगा। जैसे
रात में ३।५ पर जन्म हुआ तो, समझो १५ बजकर ५ मि. पर हुआ। इसमें से से ६।१४ सूर्यास्त का घं मि घटादो

घं मि.
१५।५ जन्म टाइम रेलवे का
६।१४ - सूर्यास्त के घंटा मिनट। घटाया॥
८।५१×२।३०
१६।१०२
२४०।१५३०
१६।३४२।१५३०
२२।७।०
३१।१० + दिन मान
५३।१७। ० इष्ट.

इस क्रिया में रात का बीता घंटा नहीं जोड़ा जन्म तो रात में १२ बजे के बाद तीन पर हुआ था।

४।१७।१८।४० पत्रा के सूर्य सपस्ट हैं घं
बार०।५३।१७×५८।११ सूर्य गति
०।३०७४।७८६
०।५८३।१८७
०।३६५७।११७३
१।१।१६।३३
४।१७।१८।४० पत्रा के सूर्य
१। १।१६+
४।१८।१९।५६ सूर्य सपस्ट हुये

६५
१४-
५१
६०)१५३०(२
१२०
३३०
३००
२४२
२५
६०)३६(०
३६

इस सूर्य सपस्ट से लग्न साधन अब करो। ४ राशी के सामने १८ अंश पर देखो।

चरण निकालने की रीति यह है कि भभोगपलदंड जो हों उसमें ४ से भाग दे दो शेष जो आता जाय ६० से गुणा करते जाओ जैसे भयात ६।४ है भभोग के दं. पल ५८।५२ है तो तुम भभोग के दंड पल में ४ से भाग दो जैसे देखो

भभोग के दं. पल ये हैं

४) ५८।५२ (१४
५६
२×६०
१२०
५२+
४) २३२ (५८
२०
३२
३२
×

दं	प.	
१४	५८	प्रथम चरण हुआ इसमें २ से गुणा करो
	२×	
२९	५६	दूसरा चरण
१४	५८	
	३×	
४४	५४	तीसरा चरण
१४	५८	
	४×	
५९	५२	चौथा चरण

६०) ११६ (१
६०
५६

६०) १७४ (२
१२०
५४

६०) २३२ (३
१८०
५२

अब देखो भयात के दंड पल को अन्दर कौन चरण है इसमें भयात के दंड ६ ही हैं प्रथम चरण के १४ दंड हैं तो इसको प्रथम चरण में जन्म हुआ इस बालक का

" इष्टकाल "
" निकालना "

यदि सूर्यास्त के बाद जन्म हो तो सूर्यास्त के घंटा मिनट घटा दो फिर २।३० से गुणा करदो दिनमान के घंटा मिनट जोड़ दो इष्टकाल हो जायेगा। फर्ज करो रात को १२ बजे के बाद बालक जन्मा है तो बीता १२ घंटा जोड़ दो तब सूर्यास्त घटा दो। फिर २।३० से गुणा करो दिनमान जोड़ दो। फर्ज करो रात को २।४५ पर बच्चा हुआ तो

गणित गलत है।

२ में से ६ नहीं घट सकता तो २ बजे को १४ बजे भी कहते हैं।

२।४५ जन्म टाइम रात का
१२+ बीती रात का १२ बजे तक का जन्म बाद को है।
२।५७
६।४५ - पर सूर्यास्त हुआ
८।१२ × २।३०
१६।२४
२४।३६०
१६।२६४।३६०
२२।३०।
२८।५०। + दिनमान जोड़ दिया
५१।२०।० इष्टकाल हो गया

२।४५
१२ +
१४।४५

६०)३६०(६
३६०
×
२४८
६+
६०)२७०(
२४०
३०

मानलो रात को ६ बजे दिन निकलने के पहले मतलब सूर्योदय के पहले किसी का जन्म हुआ हो तो उस बालक का जन्म पहले ही दिन का (सोम को) सुमार (सोम को) समझो, सूर्य ६।२२ पर उदय हुआ तो दूसरा दिन ६।२२ पर ही माना जायेगा। अक्सर यह गलतियां होती हैं। मूढ़ लोग कहते हैं सवेरे ६ बजे जनम हुआ है तो बार भी अगले दिन का मान लेते हैं। मंगल को सुबह ६ बजे बतायेंगे सोम को रात को ६ बजे हुआ यह नहीं कहेंगे।

यदि किसी जातक का इष्ट २५ दंड ५५ पल जैसे है और सूर्य ग्रह सपस्ट करना है। तो तुम ग्रह लाघव से बने पत्रे के हिसाब से बार की जगह ० रख दो २५।५५ दंड पल रख दो फिर सूर्य की गति से गुणा कर दो जैसे ५८।११ गति है तो उससे गुणो गुणा करने पर जो फल आया है उसे जन्म दिन के जो सूर्य सपस्ट हों उसमें से इस फल को बाँये हाथ की तरफ की तीन संख्या नीचे। जैसे ढंग से घटाई गई है उसी तरह रख कर जोड़ दो चूंकि चालन धन है। यदि ऋण चालन हो तो घटा देना चाहिये। अब सूर्य सपस्ट करने के बाद इसी सूर्य सपस्ट से लग्न बनाओगे तो सुद्ध लगन बनेगी। जैसे इसमें ४।१८।४१।५३ सूर्य सपस्ट हुये तो ४ रासी के सामने १८ सवें अंश के नीचे की संख्या में इष्ट के दंड पल २५।५५ जोड़ो फिर देखो यह संख्या किस अंश के नीचे किस रासी के सामने मिलेगी तो ८ के सामने देखा १० अंश के नीचे ५२।३१।१ मिला तो ५२।३३।३७ में से इसे घटा दो तो ५२।२।३६ रहा तो तुम समझो

बार। दं। प।   सूर्य की गति
०।२५।५५ × ५८।११

०।१४५०।३१८०।
  ०। २८५। ६०५

०।१४५०।३४६५। ६०५

०।२५ । ७ । ५५ । ५ इस फल को संख्या जोड़ी नीचे

रा अं कं वि
४।१८।१६।२६ पत्रा की सूर्य संख्या में
  ०।२५।२७ +

४।१८।४१।५३ यह अब सूर्य सपस्ट हुये

~~८।१०।२१।५२ बने हुआ~~

रा अं क वि प्र
८।१०।२।३६। लग्न हुई समझो मकर लगन में मंगल के नवांश में जन्म हुआ श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हुआ जानो जैसे नौ चरण की एक रासी होती है, उसी तरह १ रासी में ९ नवांश होते है। इस कारण नवांश के टुकड़ों की जानकारी से नक्षत्र चरण रासी गण वर्ण सब जानकारी हो जाती है। गृह सपस्ट से गृह किस के नवांश में है इसकी जानकारी भी हो जाती है।

जैसे ४ के सामने १८ अंस के नीचे लगन सारिणी में
क। वि। प्रवि। है इसमें इष्ट जोड़
२६।३८।३६
२५।५५ + इष्ट काल

५२।३३। ३७ अब इसे सारिणि में देखो किस अंश के नीचे किस रासी के सामने यह संख्या मिलेगी। देखा १० अंश के नीचे ८ रासी के सामने
  १३१।०१-   ५२।३१।१ मिली तो इसे ठीक किया घटा कर

५२। २।३६ हुआ   ५२।२।३६ बना

८।१०।२।३६ लगन हुई। समझो धन गत मकर लगन मे मंगल के नवांश में जन्म हुआ।
जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ।

॥ लगन बनाने का तरीका ॥

लगन बनाने का तरीका यह है कि लगन बनाने के पहले पत्रा मे देखो जन्म दिन का सूर्य सपस्ट कि कितनी रासी अंश कला विकला पर है फर्ज को उसी दिन उस जन्म तिथि बार के दिन सूर्य ११ रासी २६ अंश ४२ कला २६ विकला पर है। (सूर्य सपस्ट संख्या) ११।२६।४२।२६। तो तुम ११ रास के सामने २७ सवें अंश पर देखो पत्रा के पीछे लगन सारिणी में सब लिखा रहता है। तो फर्ज करो देखा २।२७।५ लिखा है इस संख्या को इष्ट काल में जोड़ दो। फर्ज करो इष्टकाल २६।३७।३० है तो जोड़ो २९।४।३५ हुई।

२६।३७।३० इष्टकाल
२।२७।५ + सत्ताइसवें अंस के नीचे की संख्या
२९।४।३५
१।२२ – घटा कर देख लो।
३।१३ इसमें से

अब इसे देखो उसी लगन सारिणी में कि यह संख्या २९।४।३५ कहां है, यदि हू बहू यह न मिले तो कुछ कम सही ज्यादा वाली नहीं

२।८।३।१३ लगन हुई

अब हमने तो २ रासी के तो सामने आठवें अंश के नीचे २९।१।२२ मिला तो तुम २ रासी ८ अंश ३ कला १३ विकला लगन हुई २ माने वृष लग्न तो वृष तो बीत गई सो वृष गत मिथुन लगन हुई जन्म समय बस गोचर बना लो इसी तरह प्रश्न लगन भी, यात्रा लगन भी, बनाई जाती है। यात्रा के समय का टाइम देख लो घड़ी में फिर पत्रा मे सूर्योदय या सूर्यास्त देख कर बना लो। पहर देख लो कौन सा है।

४ २ ५ ३ १ ६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

॥ दिन के नत बनाने की रीति ॥

दशम लगन बनाने के लिये ग्रह लाघव से बने हुये पत्र में नत बनाने की जरुरत नहीं होती है। नत बनाने का ढंग यह है कि जन्म दिन के दिन मान में दो से भाग दे दो। फर्ज करो दिन मान ३१।१५ है।

घ । प
२) ३१ । १५ (१५
३०
१×६०
६० + १५
२) ७५ (३७
७४
१×६०
२) ६० (३०
६०
×

घ - प - वि
१५ । ३७ । ३० यह अर्ध दिन मान हुआ
१० । ३७ । ३०
५ । ० । ० दिवा पूर्व नतं हुआ यदि इष्टकाल ज्यादा हो अर्ध दिन मान से न घटे तो इष्ट से अर्ध दिन मान घटा दो तो वह पर नतं हो जायेगा।

हमेशा दिन हो या रात में १२ बजे के पहले दिवा पूर्वनतं रात्री में १२ से पहले हो जन्म तो रात्री पूर्व नतं १२ बजे के बाद परं नतं ही होगा। अब सूर्य सपस्ट उस दिन का देखो ११।२६।४२।२६ (रा अं क वि) है। अब तुम ११ के सामने २७ सवें अंस के नीचे पत्रा में दशम सारिणी में देखो ८।२१।३५ (क वि प्रति-वि) है। नत ५ है घटा दो क्यों की चालन ऋण है धन होता है तो जोड़ दिया जाता है नत को

अं क - वि
८।२१।३५ सताइसवें अंश के नीचे की संख्या
५। ०। ० नत घटाया

३।२१।३५ अब इस संख्या को लगन की तरह फिर देखो दसम सारिणी में देखो १७ सवें अंश के नीचे ६ रासी के सामने यह ३।२१।२० (क - वि - प्रति वि) मिलो तो समझो ६।१७।२१।२६ (रा अं क वि) दशम लगन हुई। कन्यागत तुला दशम लग्न हुई। ६ मान कन्या लगन राशी अंश तो वह रक्खे कला विकला नत घटा कर जो कला विकला आये है। रात को दशम लगन बनाओ तो सूर्य स्पष्ट में रासी में ६ जोड़ दो फिर देखो।

चन्द्रसपष्ट भयात भभोग [illegible] रीति।।
पलों से किया जाता है। जैसे उदाहरण देखो।।

८।३३ भयात है भभोग ५७।४९ जन्मनक्षत्र २६वां है ६० से गुणा किया

६०×
४८०
३३+
५१३
६०
३०७८० पल

५७।४९
६०×
३४२०
४९
३४६९ पल

२६×६०
१५६० पल

घ. प. वि
८।५२।२२
१५६०।+
१५६८।५२।२२
२×
(९) ३१३६।१०४।४४ (३४८ रा
२७
४३
३६
७६
७२
४×६०
२४०
१०४+
९) ३४४ (३८ कला
२७
७४
७२
२×६०
१२०
४४+ (१८ विकला
९) १६४
१६२
२ त्याज्यं

रासी
३०) ३४८ (११ रासी
३३०
१८ अंस बना

३४६९) ३०७८० (८
२७७५२
३०२८
६०×
३४६९) १८१६८० (५२प
१७३४५
८२३०
६९३८
१२९२
६०×
३४६९) ७७५२० (२२वि.
६९३८
८१४०
६९३८
१२०२

चन्द्र सपष्ट हुए
११।१८।३८।१८

यह तरीका चन्द्र सपष्ट करने का वास्तविक है।

समझे धन गत मकर के लगन मे [illegible] है।

रात्री के नत बनाने की
।। रीति ।।

ग्रहलाघव से बने पत्र में

~~मकरन्द से बने पत्र में चालन~~ बनाना पड़ता है इष्टकाल को चालन मान लेते हैं। सदैव चालन रहता है।

रात्री का पूर्व नतं या पर नतं बनाना हो तो ६० में से दिनमान के घ.प. घटा दो फिर रात्री का मान निकल आयेगा। पश्चात् २ से भाग दे दो और रात्रेष्टम बनाओ। रात्री के जन्म का इष्टकाल बनाओ दिनमान जोड़ने के पहले का फल रात्रेष्टम कहलाता है।

६०। ० दंड पूरा मान
३१। १५-दिनमान
२) २८। ४५ (१४
२८
०×६०
०
४५
२) ४५ (२२
४४
१×६०
२) ६० (३०
६०
×

पर
१०। ५ जन्म ज्ञातक का
६। ४५ - सूर्यास्त
३। २० × २। ३०
६। ४०
० । ६० ०
६। १३ ०। ६ ० ०
८। २० । ० रात्रेष्टम हुआ

६० ६०० (१०
६००
×
१३०
१० +
६०) १४० (२
१२०
२०

दं। प। वि।
१४। २२। ३० अर्ध रात्रीमान
८। २०। ०-रात्रेष्टम घटाया
६। २। ३० यह रात्री पूर्व नतं हुआ

हमेशा ध्यान रहे दिवा के नत बनाने में इष्टकाल घटाया जाता है। रात्री के नत बनाने में रात्रेष्टम घटाया जाता है। यह जब रात्री को दशम लग्न बनाते हैं तब रात्री का। रात्रीपूर्व नतं रात्री पर नतं काम आता है। मकरंद से बने पत्र में नत बनाने की जरुरत नहीं पड़ती नत साधन करके दसम सारिणी बनी रहती है। बार की जगह ० रख देते हैं ग्रह स्पष्ट करने में।

X

जिसबार में बालक का जन्म हुआ हो वह बार सँख्या पहले लिखलो जो रवि बार को जन्म हो तो शुरु में १ संख्या लिखलो इसी तरह सोम को जन्म हो तो २ संख्या, मंगल को हो तो ३ बुध को हो तो ४, गुरु वार को हो तो ५ शुक्र को हो तो ६, शनि को हो तो ७, संख्या लिखी जाती है। रवि को हो फिर १ यह क्रम बार संख्या लिखने का है। फिर मिश्रमान की संख्या कला विकला लिखी रहती हैं पत्रे में। फर्ज करो शुक्र बार का जन्म हुआ है ६ संख्या लिखो देखो उदाहरण की इष्ट संख्या ६।१०।३२।३० तो मिश्रमान से इष्ट घटा दो यदि घट जाय तो ऋण चालन हुआ। यदि न घटे तो इष्ट संख्या से मिश्र मान घटा दो तो इस प्रकार घटने से धन चालन हो जाता है।

मिश्रमान संख्या

बार	कला	वि.	प्रति.वि.
६	४६	४२	०
६	१०	३२	३० इष्ट
०	३६	४	

इष्ट संख्या तुम प्रति विकला ३० है इसलिये इधर ३६ विकला को ३२ विकला मान लो ३० छोड़ो आधे पर या आधे से ज्यादा हों तो ऐसा मान लेते है इसी तरह विकला ३० से ऊपर हो तो कला १ मान लेते है। जो तुम ऐसा रखो

।३६।४। चालन है

ऋण चालन है।

	बार	कला	विकला
मिश्र	६	४६	४२
इष्ट	६	१०	३२ घटाया
		३६	४

यह घट गया तो समझो ऋण चालन है।

लाघव से बने पत्रे में चालन नहीं बनाना पड़ता है इष्ट काल को ही चालन मान लेते है। बार को जगह ० रख देते हैं। फिर गृहों को गति से गुणा करके गृह सपष्ट कर लेते हैं। गुणन फल को राशी अंश कला तीनों को, पत्रा में जो गृह सपष्ट को संख्यायें होती हैं, उसमें से गुणन फल घटादो। यदि ऋण चालन हो तो घटा दो। धन चालन हो तो गुणन फल जोड़ दो। यदि गृह मार्गी अथवा बक्री हों तो धन चालन हो ऋण करदो, ऋण हो जोड़ दो। पत्रा में देखलो

(चालन मिथ्या उसमें धन माना जाता है।)

जब गृह सपस्ट करना हो तो जिस दिन जन्म हो उस दिन के सूर्य सपस्ट की संख्या में से पहले तुम जो दिन बीत चुका है जन्म के पहले दिन दिन को सूर्य सपस्ट की संख्या घटा दो जन्म दिन वाली संख्या में से। उदाहरण देखो।

११ । २६ । ४२ । २६ पत्रा के सूर्य
ऋण चालन है घटाया ० । ६ । ३ —।
११ । २६ । ३६ । २३ सूर्य सपस्ट हुऐ।

रा	अं	क	वि	
११	२६	४२	२६	सूर्य स्प.
०	६	३	३५ -	गुरान कल
११	२०	३८	५१	

गृह सपस्ट हुआ यह

रासी । अंश । कला । विकला।

११ । २६ । ४२ । २६ जन्म दिन की सूर्य सपस्ट संख्या
११ । २५ । ४३ । ३३ - जन्म दिन के पहले दिन की सूर्य सपस्ट संख्या घटा दी।

० । ० । ५८ । ५३ यह सूर्य की चाल निकली

५८ से पहले ६ को गुणा किया फिर १० को फिर ३७ को अब ५३ से ६ को फिर १० को फिर ३७ को गुणा किया।

बार चालन गति
६ । १० । ३७ × ५८ । ५३
३४८ । ५८० । २१४६
३१८ । ५३० । १९६१
३४८ । ८९८ । २२२६ । १९६१

६ । ३ । ३५ । ३७ । १
६ । ३ । ३५ । ३७ । १

४२ २६
६० ६
१०२ ८६
४३ ३३
५८ ५३

५३
३७ ×
४०६
१५९
२१४६
५३
३७ ×
३७१
१५९
१९६१

६०) १९६१ (३२
८९८
६०) ८९८ (१४
२२२६
३१ +
६०) २२५७ (३७
३०) ६१० अंश
६
३४८
१४
६०) ३६२ (६ अंश
कला

X

॥ गृह सपस्ट करने की रीति ॥

गृहों की चाल ज्यादा तर पत्रे में नीचे गोचर के ऊपर (सूर्योदय सपस्ट गृहा:) ऐसा लिखा रहता है फिर उसी के नीचे एक लकीर खींच कर चाल हर गृह की हर गृह के रासी अंश कला के नीचे चाल भी लिखी रहती है। कला विकला के रूप में, बस जातक के जन्म दिन का जो चालन हो और जो बार हो उस बार संख्या को गृह की चाल से गुणा कर दो। जैसे शुक्र वार है तो गिने। रवि १ सोम को २ मंगल को ३ बुध को ४ गुरु को ५ शुक्र को ६ संख्या हुई तो ६ बार की जगह शुरु में रक्खो। जिस गृह को सपष्ट करना हो उसकी चाल से चालन को गुणा कर दो। पहले ५८ को ६ से गुणो फिर १० से फिर ३६ से गुणो। फिर

बार।	चालन जैसे।	गृह की चाल है	
६	१०।३६ ×	५८।५३	
३४८	५८०	२१४०	
	३१८	५३०	१९०६१
३४८	८९८	२६७०	१९६६१
५।६।३	४३	२	४१

जैसे सूर्य सपस्ट पत्रा में जन्म दिन के
११।२६।४२।२६ हैं
०। ६। ३ + धन चालन है इसलिये जोड़ दिया
११।२६।४८।२७
यह लग्नको सूर्य सपस्ट हो गये। सूर्य कुम्भ गत मीन रासी पर सूर्य हैं
२६ अंश ४८ कला २७ विकला पर।

५३ से ६ को १० को ३६ को गुणो। गुणा करने पर सब जोड़ कर नीचे भारी संख्या आई इसे छोटी करो ६० से भाग दे दे कर पश्चात जो आखीरी में लब्धी अंश रूप में है उसे ३० से भाग कर के रासी बनालो जैसे ६ बची लब्धी ३० से भाग दिया तो नहीं गया तो ० रासी हुई अंश ६, यों का यों रहा तो तुम ०।६।३ बस इतनी ही संख्या पत्रा में सूर्य सपस्ट में यदि ऋण चालन हो घटा दो धन चालन हो तो जोड़ दो। हमेशा ध्यान रक्खो ५९ से ज्यादा कला विकला प्रति विकला के नीचे नहीं रक्खा जाता है अंश के नीचे ३९ से ज्यादा न हो रासी के नीचे १२ से ज्यादा न हो

यदि गृहों की चाल के बनाने में [illegible] घटाने में बच जाय तो नियम देखो। जैसे जन्म के दिन के पहले वाले सूर्य के रासी अंश कला विकला घटाना है तो देखो यह जन्म दिन के सूर्य की संख्या है जैसे

११।२७।२७।५ जन्म दिन वाले सूर्य
११।२६।२०।१५ – पहले दिन को है
१।२।४५

१ बचा अंश तो इसे ६० से गुणा करो तो ६० हुआ २ कला बगल की जोड़ी ६२ कला ४५ विकला चाल हुई

६२ कला हुई ४५ विकला
क. वि.
६२।४५
सूर्य की गति हुई इसी से वार चालन को गुणो

वार संख्या है
६
५८×
६०)३४८(५ लब्धी
३००
४८×
५८
५ + लब्धी
६५
५८×
१२०
६५
६०)८७०(१४
६४०
३०

वार संख्या
६
५८×
३४८
६०
५८×
५२०
५७०
५८×
२६०
१२५
२१४०

वार
६
५३×
३१८
१०
५३×
५३०
३६
५३×
१११
१२५
१२६६१

६०)१२६६१(३२ लब्धि
१२०
६६१
१२०
४१ बचा
६०)२५७०(
३२+ लब्धि जोड़ो ऊपर की
६०)२६०२(४५ अंश हैं।
२४०
३०२
३००
२
२६८
४५+ लब्धी जोड़ी
६०)३१३(१५ अंश है
३००
४३
३४८
१५+ लब्धी जोड़ी
६०)३६३(६ अंश है
३६०
३
अंश को ३० से गुणो
३०)६६(० नहीं गया तो ० रासी हुई ६० अंश रहा

यदि रासी के नीचे १२ अंक से ज्यादा हो तो १२ से भाग दे कर छोटी संख्या कर दो

अंश के नीचे ३० से ज्यादा हो तो ३० अंश की एक रासी होती है तो ३० से भाग दे कर छोटी कर लो

कला के नीचे ६० से ज्यादा हो तो ६० से से भाग दे कर छोटी कर लो।

इसी तरह यदि उधार रासी से ली जाती है संख्या तो ३० लिया समझो चूंकि १ रासी में ३० अंश होते हैं तो अंश में ३० जोड़ दो फिर घटा लो यदि अंश से कला या विकला को उधार लेना है तो ६० जोड़ कर घटाओ चूंकि १ अंश में ६० कला होती हैं। एक कला में ६० विकला होती हैं। यह ध्यान रक्खो। यदि रासी कम हो तो १२ जोड़ कर घटा दो।

X

॥ भयात् भभोग निकालने की रीति ॥

साधारणतया भयात् भभोग निकालने की रीति है यदि जातक के जन्मदिन वाले दिन पूरे २४ घंटे एकही नक्षत्र रहे तो ६० दंड का जो कि २४ घंटा होता है इसलिये ६० दंड में से पहले दिन का नक्षत्र का मान घटा दो

भयात संख्या ज्यादा हो ६० से भाग देकर छोटा करो
६७ से ज्यादा भभोग हो तो ६० से भाग देना चाहिये

ये दंड है
६० । पल
२० । २७ - जन्म से पहले दिन का मान
३९ । ३१ घटा कर आया इसमें
३७ । १० । ३० + इष्टकाल जोड़ दो इसमें
७६ । ४१ । ३० यह भयात निकल आया
भयात १६ । ४१ । ३० यानी इतने दंड पल विपल जन्म समय तक जन्म नक्षत्र के बीत गये

यह जो ६० दंड से घटकर संख्या आई है उसमें से
३९ । ३१ (दं । प)
२५ । ४७ + जनम नक्षत्र का घड़ी पल है इसे जोड़ दो
६५ । २०
६५ । २० भभोग हुआ
यानी इतना घड़ी पल तक जन्म नक्षत्र और भोग करेगा

~~[illegible]~~ भभोग में संख्या ~~६० से~~ भाग देकर छोटे ~~[illegible]~~ के नहीं रक्खे जाते हैं।

६०) ८० (१
६०
२०

८

जब जन्म दिन वाले दिन दो नक्षत्र स्पर्श करें तो इस प्रकार भयात भभोग निकालो। इष्ट काल में से जो नक्षत्र जन्म के समय से पहले बीत गया हो उसका मान घटा दो भयात् निकल आयेगा। पश्चात्

६० दंड में से
३।१६ – दंडपल जो बीता नक्षत्र का मान है घटा दिया
५६।४४ इस संख्या में जन्म समय के नक्षत्र का जितना मान पत्रा में हो जोड़ दो
५।५५+ दंडपल जन्म समय के मानो नक्षत्र का मान है तो इसे जोड़ दो
६२।३९ भभोग समझो निकल आया

यदि एक ही नक्षत्र तीन दिन भोग करता हो तो उसकी प्रक्रिया यों है।

जैसे किसी जातक का जन्म मंगल वार की रात में सबेरे ५ बज के १६ मि. पे हुआ और सूर्य ५ बज के ५२ मिनट पर उदय हुआ तो ~~तुम~~ तुम जन्म का ~~समय~~ बार मंगल ही समझो। जातक का चौथे चरण में जन्म समझो। मूर्ख अज्ञानी जन बच्चे की पैदाइस बुध के सबेरे समझ लेंगे पर ज्योतिष मत में सूर्योदय के बाद दूसरा बार मानते हैं। यह ध्यान रहे।

दंड में से
६०।०
५८।३१ – बीते नक्षत्र का मान पहले घटाओ ६० से ५८ घटाओगे तो १ बचेंगे एक — १।२९
१।२९ इसमें तुम दूसरे दिन का मान २४ घंटे का जोड़ो | केवल नीचे रख दो १ पल को उधार दे दो
६०+ | ६० पल एक दंड में हुये ६० से ३१ घटाओ
६१।२९ इसमें तीसरे दिन का मान जोड़ो
६+ नक्षत्र का जितना मान हो जोड़ दो
६१।३५ यह भभोग हुआ इसमें इष्ट काल जोड़ दो भयात् निकल आवेगा
७।३७।३० इष्ट काल
६९।१२।३० भयात

×

भयात् का मतलब यह है जातक जिस नक्षत्र में जन्मा है वह नक्षत्र जन्म समयतक कितना बीत चुका है कितने टाइमतक और वह नक्षत्र रहेगा जो बीत गया उसे भयात् कहते हैं। जो बीतेगा उसे भभोग कहते हैं।

और जब तीन नक्षत्र एक दिन में भोग करते हैं तब इस क्रम से निकालो जैसे किसी का जन्म रात को ८ बजे हुआ दिन गुरुवार है और गुरुवार को सूर्योदय के बाद जैसे पूर्वा. षा. केवल २ दंड ४५ पल तक रहा इसके बाद उत्तराषाढ लग गया यह भी रात को ११ बजके १६ मिनट पर बीत गया इसके बाद श्रवण नक्षत्र लग गया। तो समझ लो जन्म दिन वाले वार में तीन नक्षत्र भोग कर रहे हैं। तो भयात् भभोग यों निकालो'

पहले उत्तराषाढ से पूर्वा षाढ का मान घटादो। जैसे उत्तराषाढ का मान

५८।४० उत्तरा. षाढ
२।४५ - पूर्वा षाढ का मान घटादो

५५।५५ यह भभोग निकला चूंकि जन्म समय उत्तराषाढ नक्षत्र था यह नक्षत्र ११ बज के १६ मि. तक रहा जन्म ८ बजे ही हो गया था। तो जन्म तो उत्तराषाढ में हुआ समझो। इसलिये समझो जन्म नक्षत्र ने जन्म के बाद ५५ दंड ५५ पल भोग किया

३३।८।३० इष्ट काल है जैसे
२।४५। - बीता नक्षत्र का मान है घटाया
३०।२३।३० यह बचा भयात् यह निकला

तब इष्ट काल के मान से पूर्वा षाढ का जितना मान बीत चुका जन्म के पहले वाले नक्षत्र का उसे घटा दो। जैसे भयात् निकल आयेगा।

X

यदि जातक रात को १२ बजे के बाद सबेरे सूर्योदय के कुछ ही दंड पल के पहले जन्मा हो तो ६० दंड में से जन्म समय के पहले जो नक्षत्र बीत चुका हो उसे घटा दो फिर जो घट कर आवे उसमें इष्ट काल जोड़ दो भयात् निकल आवेगा। भभोग निकालने के लिये ६० में से बीता नक्षत्र का मान जो घट कर आवे संख्या उसमें जन्म नक्षत्र का मान पूरा जोड़ दो भभोग निकल आवेगा।

जब इष्ट काल कम हो तो इसी प्रकार क्रिया करो जैसे नीचे की है।

जब एक दिन में दो नक्षत्र स्पर्श करे तो इस प्रक्रिया से भयात् भभोग निकालो। जैसे शुक्रवार का जन्म है तो शुरु में दिन में हस्त नक्षत्र था पर जब जातक जन्मा तब चित्रा नक्षत्र लग चुका है तो तुम अब इस प्रकार करो।

६० में से
५८।४० - हस्त नक्षत्र जो बीत चुका है उसे घटादो
१। २० इसमें इष्ट काल जोड़ दो जैसे इष्ट ३३।८।३० है तो जोड़ो १।२० में
३३। ८।३०+इष्ट काल की संख्या है।
३४।२८।३० भयात् यह निकला

फिर १।२० जो ऊपर की संख्या हस्त नक्षत्र घटा कर आई थी उसमें जन्म नक्षत्र का जो चित्रा का मान है उसे जोड़ दो भभोग निकल आयेगा। इस में ३३।२८ इष्ट है बहुत कम है। बीता न. ज्यादा है।

३३।८
५८।४० घटाओ बीता न. नहीं घटा

५८।४० बीता नक्षत्र है इससे ही
३३।८ - इष्ट काल घटादो
२५।३१ भयात निकल आयेगा

यदि इष्ट काल के दंडपलों से बीते नक्षत्र के दंडपल कम हों तो तुम
इष्ट काल में से बीते नक्षत्र के दंड पल घटा दो, तो भी भयात् का
मान निकल आयेगा। यदि बीते नक्षत्र के दंड पल इष्टकाल की संख्या से
ज्यादा हों तो ~~६० में से~~ बीते नक्षत्र के दंड पल (से इष्ट) घटा ~~और जो संख्या आवे~~
~~इष्ट काल में जोड़ दो तो भयात्~~ (भयात) निकल आयेगा। और ६० में से
बीता नक्षत्र का मान घटा कर जो संख्या आई हो उसमें जन्म नक्षत्र
का मान जोड़ दो भभोग निकल आवेगा। अब देखो जैसे एक का
जन्म २६ नवम्बर सन १८०० में शनिवार को कृष्ण परेवा के दिन हुआ।
रात को ४ बजके ३० मिनट पर इसका इष्टकाल ५४।३० हुआ
जन्म दिन नक्षत्र लगे सुबह रोहिणि रात को १ बजे के बाद मृगसिरा
लग गया। तो इस प्रकार भयात् भभोग निकालो॥ यह क्रिया भी देखो।

५४।३० इष्ट काल है
४६।२६ - बीता नक्षत्र है
८।४ भयात् हुआ

६० में से
४६।२६
१३।३४
५२।५६ + जन्मसमय के नक्षत्र का कुल मान है
६६।३० भभोग हुआ

इसमें इष्ट काल कम है बीता नक्षत्र ज्यादा है। जैसे इष्ट
दं। प।
३३।८ इष्ट है
५८।४० - नक्षत्र बीता है।

५८।४० बीता नक्षत्र
३३।८ - इष्ट का
२५।३१ भयात् हुआ

६०।०
५८।४० -
१।२०
५२।५६ + जन्म नक्षत्र
५४।१६ भभोग है

x

यदि एक नक्षत्र ही तीन दिन स्पर्श करे तो इस प्रकार निकालो
जैसे जातक तीज को रविवार के दिन रात को सुबह सूर्योदय के
पहले कुछ मिनट ही पहले पैदा हो गया मानो ४ पल ही सूर्योदय में
बाकी रह गया हो तभी जन्म हो गया हो, तो उस समय जो नक्षत्र होगा
पत्रा में जातक का जन्म उसी नक्षत्र में माना जायेगा। इसमें संख्या
छोटी नहीं की जाती है। चाहे भयात हो चाहे भभोग हो

दं · प·
६० । ० से
५८ । ३१ – बीता नक्षत्र घटा दो जो जन्म के पहले बीत चुका हो।

१ । २९ इसमें दुइज का मान पूरा ६० दंड जोड़ो
६० । + दुइज का मान है यह
६१ । २९ इसमें फिर जन्म नक्षत्र का जितना मान हो जोड़ो
६ +

६१ । ३५ यही भभोग हुआ यह समझो यह जन्म नक्षत्र परिवा
~~+~~ की रात से लगा दुइज को सारे दिन रात रहा तीज़ को
~~[illegible]~~ सूर्योदय के बाद ६ पल और रहा तो तीन दिन यह
४६ । ५६ । ३० । भयात् नक्षत्र स्पर्श किया। अब इसी १।२९ में इष्टकाल
की संख्या जोड़ दो भयात् निकल आवेगा

६०
५८ । ३१ – पिछले दिन के नक्षत्र का मान घटाया
१ । २९ यह घटी हुई संख्या है इसमें
४५ । २७ । ३० + इष्टकाल की संख्या जोड़ दी।
४६ । ५६ । ३० भयात्

~~भभोग में चाहे इष्ट जोड़ दो~~
~~६१ । ३५~~
~~४५ । २७ । ३० +~~
~~[illegible]~~

यदि किसी का जन्म दिन में १० बजे हुआ, इसके पहले कोई नक्षत्र था जन्म समय दूसरा लग गया हो, तो, इष्ट काल से बीता नक्षत्र का मान घटा दो भयात् निकल आवेगा। जन्म समय के नक्षत्र का जितना मान हो उसमें से बीता नक्षत्र घटा दो तो भभोग का पता लग जायेगा। इसका मतलब जन्म समय जो नक्षत्र है उसके इतने दंड पल बाकी हैं इसका नाम भभोग है। कोई २ नक्षत्र एक ही तीन दिन स्पर्श करता है कभी १ दिन रात में तीन नक्षत्र स्पर्श हो जाते हैं।

यदि रात का १२ बजे के बाद जन्म हो और भयात् भभोग निकालना हो तो ऐसे निकालो जैसे रात को २।२० पर जन्म हुआ हो इष्ट काल ४८।३२ आया हो तो देखो किया एक नक्षत्र ६ घड़ी २ पल बीत गया, दूसरा लग गया, और वह जन्म तक के बाद तक रहा, तो ६० में से ६।२ पल निकाल दो

दं
६०
६।२- बीता नक्षत्र घटाया
५३।५८
१०।५५+ जन्म नक्षत्र का कुल मान जोड़ा
६४।५३ भभोग निकल आया

६०
६।२- बीता न.
५३।५८
४८।३२+ इष्ट
४२।३० भयात्

एक तरीका भयात के निकालने का यह है। दूसरा तरीका नीचे है

और भयात् यूं भी निकल आयेगा चाहे इष्ट के दंड पल से बीते नक्षत्र के दंड पल घटा दो। भ.

४८।३२ इष्ट में से चाहे
६।२- बीता न. घटा दो
४२।३० भयात् निकल आयेगा

X

यदि एक नक्षत्र ही तीन दिन स्पर्श करे तो इस प्रकार निकालो जैसे जातक तीज को रविवार के दिन रात को सुबह सूर्योदय के पहले कुछ मिनट ही पहले पैदा हो गया मानो ४ पल ही सूर्योदय में बाकी रह गया हो तभी जन्म हो गया हो, तो उस समय जो नक्षत्र होगा पत्रा में जातक का जन्म उसी नक्षत्र में माना जायेगा। इसमें संख्या छोटी नहीं की जाती है। चाहे भयात हो चाहे भभोग हो

दं . प.
६० । १० से
५८ । ३१ - बीता नक्षत्र घटा दो जो जन्म के पहले बीत चुका हो।

१ । २७ इसमें ~~[illegible]~~ दुइज का मान पूरा ६० दंड जोड़ो
६० । + दुइज का मान है यह

६१ । २७ इसमें फिर जन्म नक्षत्र का जितना मान हो जोड़ो
६ +

६१ । ३५ यही भभोग हुआ यह समझो यह जन्म नक्षत्र परिवा की रात से लगा दुइज को सारे दिन रात रहा तीज़ को सूर्योदय के बाद ६ पल और रहा तो तीन दिन यह नक्षत्र स्पर्श किया। अब इसी १।२७ में इष्टकाल की संख्या जोड़ दो भयात निकल आवेगा

~~[illegible] +~~
~~[illegible]~~

४६।५६।३०। भयात्

६०
५८ । ३१ - पिछले दिन के नक्षत्र का मान घटाया
१ । २७ यह घटी हुई संख्या है इसमें
४५ । २७ । ३० + इष्टकाल की संख्या जोड़ दी।

४६ । ५६ । ३० भयात्

~~भभोग में चाहे इष्ट जोड़ दो~~
~~६१।३५~~
~~४५।२७।३०+~~
~~[illegible]~~

२

यदि किसी का जन्म दिन में १० बजे हुआ, इसके पहले कोई नक्षत्र था, जन्म समय दूसरा लग गया हो, तो, इष्ट काल से बीता नक्षत्र का मान घटा दो भयात् निकल आवेगा। जन्म समय के नक्षत्र का जितना मान हो उसमें से बीता नक्षत्र घटा दो तो भभोग का पता लग जायेगा। इसका मतलब जन्म समय जो नक्षत्र है उसके इतने दंड पल बाकी हैं इसका नाम भभोग है। कोई २ नक्षत्र एक ही तीन दिन स्पर्श करता है कभी १ दिन रात मे तीन नक्षत्र स्पर्श हो जाते हैं।

यदि रात का १२ बजे के बाद जन्म हो और भयात् भभोग निकालना हो तो ऐसे निकालो जैसे रात को २।२० पर जन्म हुआ हो इष्ट काल ४८।३२ आया एक नक्षत्र ६ घड़ी २ पल बीत गया, दूसरा लग गया, और वह जन्म तक के बाद तक रहा, तो ६० में से ६।२ पल निकाल दो
होतो देखो क्रिया

दं
६०
६।२-बीता नक्षत्र घटाया
५३।५८
१०।५५+जन्म नक्षत्र का कुल मान जोड़ा
६४।५३ भभोग निकल आया

६०
६।२- बीता न.
५३।५८
४८।३२+ इष्ट
४२।३० भयात्

एक तरीका भयात के निकालने का यह है। दूसरा तरीका नीचे है

और भयात् यूं भी निकल आयेगा चाहे इष्ट के दंड पल से बीते नक्षत्र के दंड पल घटा दो। भ.

४८।३२ इष्ट में से चाहे
६।२- बीता न. घटा दो।
४२।३० भयात् निकल आयेगा

आज पं० जी ने भयात भभोग चन्द्र स्पष्ट किया ता० ... १०-७७ को सुबह इस रीति से जातक कार्तिक शुक्ले दशमी को हुआ पूर्वा भाद्र नक्षत्र था यह नक्षत्र तीन दिन रहा सो शतभीषा का मान पहले ६० में से घटाया शतभीषा का मान ५६।३८ था ३।२२ बचा उसमें इष्ट का मान जोड़ दिया भयात् निकला फिर ३।२२ में जो बीता नक्षत्र से घट कर संख्या आई थी उसमें जन्म दिन का पूरा मान जोड़ा फिर जितना मान जन्म नक्षत्र का दूसरे दिन रह गया था वह जोड़ा भभोग निकला फिर भयात के पलों में भभोग के पलों से भाग दे दिया तीन बार तक भाग दिया जाता है केवल देखलो २७।१०।१८, आया इसमें नक्षत्र के पल बना कर जोड़ा दो से गुणा किया। ९ से भाग दे दिया, अंशों में ३० से भाग दे कर राशी बनाया

६०
५६।३८ — बीता न० शतभीषा का मान
३।२२
२६।३३ + इष्ट
२९।५५ भयात्

भयात संख्या
२९।५५
६०x
१७४०
५५+
१७९५
६०
१०७७००

३९६४ | १०७७०० | २७ अं
७९२८
२८४२०
२७७४८
६७२
६०x
३९६४ | ४०३२० | १० क
३९६४
५८०
६०x
३९६४ | ३४८०० | १८ वि
३१७१२
३०८८

अब
३।२२ में
६० + जन्म दिन का नक्षत्र पूर्वा भा. का मान था
६३।२२
२।४२ + अगले दिन भी जन्म नक्षत्र का मान था
६६।४ भभोग हुआ
६०x
३९६०
४+
३९६४ भभोग पल बनाये

अं. क. वि.
२७।१०।१८
१४४० + नक्षत्र संख्या
१४६७।१०।१८
२x
९ | २९३४।२०।३६ | ३२६ अं
२७
२३
१८
५४
५४
९ | x२०।२ क
१८
२x६०
१२०
३६+
९ | १५६ | १७ वि.
९
६६
६३
३

३।३२६ | १० रा
३०
२६ अं

जन्म पूर्वा भाद्र में हुआ है शतभीषा तक गिना २४ वां नक्षत्र हुआ हमेशा गत नक्षत्र तक गिना जाता है ध्यान रक्खो

२४ वां नक्षत्र है उसमें साठ से
६०x
१४४०

चन्द्र स्पष्ट
१०।२६।२।१७

समझे धन गत मकर के लग्न में ... हुआ। ... है।

दिन को
× ॥ दशम लगन बनाने की रीति॥

याद रखने की बात है गृह लाघव से बने हुये पत्रे में नत बनाने की जरूरत नहीं पड़ती है। दशम लगन सारिणी में पत्रे के पीछे नत साधन करके दशम लगन लिखी रहती है। मकरन्द से बने पत्रे में बनानी पड़ती है। उसका क्रम देखो जनम दिन के दिन मान के दंड पलों में दो से भाग दे दो। अर्ध दिन मान निकल आयेगा तो देखो नीचे जैसे हमेशा दिन में १२ बजे के पहले जन्म हो किसी का तो दिवा पूर्व नतं समझो १२ बजे के बाद जन्म हो तो परनतं समझो इसी भांति रात्री १२ के पहले जन्म हो तो रात्री पूर्व नतं बाद में रात्री पर नतं समझो। अच्छा जब नत बन जाय तब तुम सूर्य सपस्ट जन्म दिन का पत्रा में देखो ११।२६।४२।२। है जैसे लगन की तरह देखो दशम सारिणी में ११ से सामने २७ सवें अंश के नीचे कौन संख्या है।

दिनमान दं० पल
२)३१।१५(१५दं ३० १×६० ६० १५+ २)७५(३७ पल ७४ १ ६०× २)६०(३० ६० ×

१५। ३७।३० अर्ध दिनमान
१०। २७।२० इष्टकाल
५ । ० । ० दिवा पूर्व नतं बना यदि अर्ध दिनमान से न इष्ट घटे तो इष्टकाल से अर्ध दिन मान घटा दे उसे परनतं दिन का माना जाता है।

दशम सारिणी में देखा २७ सवें अंश के नीचे
८।२१।५३।
५। ०। ० दिवा पूर्व नतं घटा दिया चूंकि चालन ऋण है
३। २१। ५३ यदि चालन धन होता है तो नत जोड़ दे

अब ३।२१।५३ को दशम सारिणी में देखो यह संख्या किस राशी के सामने किस अंश के नीचे लिखी है देखा तो ६ राशी के सामने १० सवें अंश के नीचे ३।२१।२०। मिली संख्या तो समझो ६।१०।२१।५३ पर यानी ६ माने कन्या राशी तो कन्या गत तुला पर २० अंश २१ कला ५३ विकला पर दशम लगन है। मतलब लगन मकर होगी समझो तब तो तुला दशम बैठी।

गृह लाघव के बने पत्र में नत जोड़ने घटाने की जरूरत नहीं पड़ती है। केवल सूर्य सपस्ट में ६ जोड़ दे रात की दशम लगन बनाने में फिर दशम सारिणी में लगन की तरह देखें

×

यदि रात्री में जन्म हो और दशम लग्न बनाना है तो जातक के जन्म दिन के सूर्य सपस्ट में ६ जोड़ दो पहले रासी के नीचे जोड़ने पर १७ आया तो १२ से भाग देकर छोटी संख्या कर के रासी के नीचे रक्खो, क्यों कि रासी के नीचे १२ से ज्यादा संख्या नहीं रक्खी जाती है। अब तुम ५ रासी के सामने पर २७ सवे अंश के नीचे देखो की कितनी संख्या है। जैसे ध्यान रहे २६ अंश तो बीत चुके है सत्ताइसवे अंश के नीचे की संख्या ये

८।२१।५३। है तो इसमें रात्रेष्टम जोड़ो यदि पर नत हो तो, पूर्व नत हो तो घटा दो

० ।४५। ०-रात्रेष्टम घटा दिया चुं कि यहां रात्री पूर्व नत है। जब अर्ध रात्री

७ ।३६ ।५३ अब इस। के मान से रात्रेष्टम घट जाय तो रात्री पूर्व नत हुआ समझो संख्या को दशम सारिणी में देखो कहां है। यदि न घटे तो अर्ध रात्री के मान को रात्रेष्टम से घटा दो। उसे रात्री पर नत समझो, पर नत जोड़ा जाता है, पूर्व नत सारिणी के कला वि: में घटाया जाता है ध्यान रहे।

रा।	अं।	कला।	वि.	
११।	२६।	४२।	२६	सूर्य सपस्ट पत्रा के है ये
६+				रासी जोड़ दी
५	२६।	४२।	२६	

रा।	अं।	क।	वि।	प्रति वि.	
६।	१८।	७।	३६।	२०	दशम लगन बन गई।

१२) १७ (१
 १२
 ५
 २१
 ६०
 ८१२
 ४५
 ३६

इष्ट काल जब बनाओगे तो रात्रेष्टम् बनेगा जैसे अब रात्रेष्टम तुम्हारा १३।३७।३० है दशम सारिणी की २७ सवें अंश के नीचे १२ रासी के सामने जो ८।२१।५३ देखा था, उसमें रात्रेष्टम् जोड़ो अथवा घटाओ रात्री पूर्व नत था, इस लिये घटा दिया, ७।३६।५३ आया, घटा कर, अब इसे दशम सारिणी में देखो, किस रासी के सामने किस अंश के नीचे यह संख्या है। देखा ६ रासी के सामने १८ सवे अंश के नीचे यह संख्या है।

६।७।३६।२०। तो तुम समझो कन्या गत ८ वें अंश २० कला पर दशम लगन है
६।१८।७।३६।२० दशम लगन बन गई।

समझे धन गत मकर के लगन में ... है। ... हुआ।

संख्या छोटी की

११।५० का रात का जन्म है इष्ट काल बनाओ
५।३५-सूर्यास्त है
६।१५ × २।३०
१२। ३०
६०।४५०
१२।७०।४५०
१३।३७।३० रात्रेस्टम्
३१।१५+ दिन मान जोड़दे
२६।५२।३० यह रात्री के जन्म का इष्टकाल बना

६०) ४५०(७
४२०
३०
७०
७+
६०) ७७(१
६०
३७
१२
१
१३

दंड में से दिन मान घटा दो रात्री मान निकाल लो
६०।
३१।१५
२) २८।४५ यह रात्री का मान निकल आया २८।४५
२८ १४
××
शेष बचे तो ६० से बराबर गुणों तब भाग दे।
२) ४५(२२
४४
१
६०×
२) ६०(३०
६०
×

द. प. वि.
१४।२२।३० रात्री का अर्ध भाग है
१३।३७।३०-रात्रेस्टम घटाया
०।४५।० चूंकि रात्री पूर्व नतं था ३० से ३० घटा ० बचा

४५।० रात्री पूर्व नतं है यह समझो

२२ से ३७ नहीं घटता है तो १ दंड उधार लिया ६० पल उसमें हुआ तो ६० में २२ जोड़कर घटा दो

६०
२२+
८२
३७-
४५

पृ० ६६ पृष्ठ में देखो

चन्द्रसपस्ट करने की बिधि

चन्द्र सपस्ट करने में याद रक्खो जन्म नक्षत्र के पहले जो नक्षत्र घटाया जाता है उसी तक नक्षत्र गिना जाता है जैसे स्रवण में जन्म हुआ तो धनिष्ठा तक गिनो तेइसवां नक्षत्र हुआ।

चन्द्र सपस्ट करने के लिये भयात के दंड पलों को ६० से गुणा करके पल बना लो दोबार साठ से गुणा करो भयात में उसकी क्रिया देखो जैसे भयात इतना है। फिर भभोग के दंड पलों के पल बना लो इसमें केवल एक बार ६० से गुणा किया जाता है।

७।२५ है
६०×
४२०
२५+
४४५
६०×
२६७००

भभोग
द. प. वि
५३।४२।८
६०×
३१८०
४२+ विकला छोड़ दो
३२२२

३२२२) २६७०० (८ पं.
२५७७६
९२४
६०×
३२२२) ५४४४० (१६ क.
५१५५२
२८८८
६०×
३२२२) १७३२८० (५४ वि
१६१११०
१२१७०
१२८८८
२८८२

८।१६।५४
१३२० + नक्षत्र की संख्या
१३२८।१६।५४
२×
२६५६।३३।४८

नक्षत्र तेइसवां है मानो
२३
६०×
१३८०

अब दो से गुणा करने पर जो बांये हाथ की संख्या है उसमें ७ से भाग दे दो।

७) २७७६ (३०८ अं
२१
६७
६३
४
६०×
७) २४० (३४ क
२१
३०
२८
२
६०×
७) १२०० (१७१ वि.
७
५०
४९
१०
७
३

३०) ३८० (१२ रा
अंशो में
३०
८०
६०
२० अंश

८।१६।५४
१३२० + नक्षत्र संख्या
१३२८।१६।५४
२
२७७६।३२।१०८
२७७६।३३।४८

गलत यह सही है

११८
६०
५८

रा . अं . क . वि.
१२।२०।३४।१७१

चन्द्र सपस्ट हुये।

॥ चन्द्र सपस्ट करने की विधि ॥

इसमें भयात भभोग के पल बना लिये जाते हैं। फिर भयात के पलों में भभोग के पलों से भाग दे दिया जाता है फिर। जिस नक्षत्र में बच्चा पैदा होता है उसकी संख्या को ६० से गुणा करके भागफल में जोड़ दो। जैसे बालक शतभीषा नक्षत्र में पैदा हुआ तो अश्वनी से धनिष्ठा तक गिनो केवल जन्म दिन वाला नागिनो २३ को ६० से गुणा करदो केवल १३८० संख्या होगी इसे भागफल में जोड़ दो।

भयात संख्या है।

द. प. वि.
७।२४।३८
६०×
४२०
२४+
४४४
६०×
२६६४०
३८+
३२२२) २६६७८ (

२३ वां जन्म नक्षत्र
६०×
१३८०

सही यह संख्या हो गई

भभोग की संख्या इसमें केवल एक बार ६० से गुणा करते हैं विकला छोड़ देते हैं।

द। प। वि।
५३।४२।८।
६०×
३१८०
४२+
३२२२

३२२२) २६६७८ (८ दं भागफल
२५७७६
७०२
६०×
३२२२) ५४१२० (१६ प. भागफल
५१५५२
२५६८
६०×
३२२२) १५४०८० (४७ वि. भागफल
१२८८८
२५२००
२२५५४
२६४६

द। प। वि
८।१६।४७ भागफल में
१३८० + नक्षत्र को गुणा करके आई संख्या।
१३८८।१६।४७
२×
२७७६।३३।३४

इस संख्या को ७ से भाग दो
पहले १६ को भाग दो ७ से
शेष को ६० से गुणा ३३ जोड़ो
फिर ७ से भाग दो

६०) २७७६ (४६
२४०
३७६
३६०
१६

~~चन्द्र सपस्ट~~
०।१।२३।४६
~~मीन राशि में चन्द्र है~~
समझो जन्म समय

॥ महादशा तथा अन्तर दशा जानने की रीति ॥

महा दशा जानने के लिये भयात भभोग के पल बना लो, यदि भयात भभोग में विकला ३० से कम हों तो उसकी गणना छोड़ दो। ३० से ऊपर विकला हो या विपल हो तो पल में १ और जोड़ दो। जैसे ७ दंड २४ पल ३५ विपल है भयात् में तो तुम ७ दंड २५ पल भयात मान लो। इसी तरह सब जगह समझ लेना चाहिये। उदाहरण राहू की दशा जानना है तो समझो १८ वर्ष राहू की महा दशा की अवधी है तो १८ से गुणा करो भयात के पलों में

(विकला छोड़ो) (विपल छोड़ो)

भयात
दं। प।
७। २४
६०×
४२०
२४+
४४४ पल बने भयात के।

भभोग
५३। ४२
६०×
३१८०
४२
३२२२ पल बने यह भभोग के

४४४ भयात पल हैं यह
१८× से गुणा किया राहू की अवधी से

भभोग पल ३२२२) ७९९२ (२ वर्ष बने
६४४४
१५४८
१२× से गुणा चूंकि १२ मास का १ वर्ष होता है।

३२२२) १८५७६ (५ मास बने
१६११०
२४६६
३०× गुणा चूंकि एक मास में ३० दिन होते हैं।

३२२२) ७३९८० (२२ दिन
६४४४
९५४०
६४४४
३०९६
६०×

३२२२) १८५७६० (५७ दं।
१६१११०
२४६६०
२२५५४
२१०६
६०×

३२२२) १२६३६० (३९ पल।
९६६६
२९७००
२८९९८
७०२

७०२
६०×
३२२२) ४२१२० (१३ विपल बने
४१८८६
२३४ अब न गुणो

वर्ष - मा - दि - दं - प - वि
१५।२। ५। २२। ५७। ३९। १३
१५। ६। ७। २। २०। ४६

अब तुम समझो जन्म के बाद राहू की दशा की अवधी १५ वर्ष ६ मास ७ दिन २ दंड २० पल ४६ विपल तक और चलेगी।

X

यदि जानना हो कि कितनी राहू की अवधी बीत चुकी है जन्म के पहले तो वर्ष मास दिन दंड पल विपल की संख्या में जन्म का सम्बत् जोड दो पता लग जायेगा।

वर्ष	मास	दिन	दंड	पल	बिपल
१५	६	७	२	२०	४७
२०१० + सम्बत जन्म का है जोड़ दिया					
२०२५	६	७	२	२०	४७
	मा	अंश	द	प	वि

इस का मतलब सम्बत् २०२५ में क्वार गत कातिक में ७ अंश २ कला २१ विकला जब खतम होगी तब यह राहू की जन्म समय की दशा जिस में जातक पैदा हुआ था वह खतम होगी, अब समझो, जैसे सम्बत २०१० में जातक का जन्म हुआ तो वर्ष में, जन्म का सम्बत् जोड़ देने से आगामी अवधी की जानकारी होगी कि इतने सम्बत् तक यह जन्म कालीन महादशा चलेगी, देखो मास के नीचे ६ अंक है इसका मतलब ६ मास बीतने पर खतम होगी २०२५ में। मास की गणना बैसाख से होती है। तो क्वार के बाद समझो कातिक में खतम होगी दिन के नीचे ७ लिखा है समझो ७ अंश बीतने पर, दंड के नीचे २ अंक है समझो २ दंड बीतने पर २१ पल बीतने पर यह दशा खतम होगी ४७ विपल का १ पल मान कर पल में जोड़ दिया इसलिये २१ पल यह हो गया। ३० विपल या ३० पल हो उसको एक मान कर बांये हाथ की तरफ जोड़ देते हैं ध्यान रहे।

यानी यह जातक सम्बत् २०१० में जन्मा तब राहू की महादशा चल
रही थी जन्म समय तक २।५।२२।५।७।३८।१३ (वर्ष।मा।दिन।दंड।पल।विपल) तक चालू (राहू की) महादशा।
खतम हो चुकी थी, आगे १५ वर्ष ६ मास ७ दिन २ दंड २४ पल तक और
यह महादशा राहू की जातक पर चलेगी। इसी प्रकार हर गृह की महादशा
का समय पता लगाया जाता है। जन्म समय जातक की कौन महादसा चल रही है।
यदि किसी को अन्तर दशा जानना हो कि यह किस की अन्तर दशा में इस
समय चल रहा है। तो देखो यह व्यक्ति इस समय कितने वर्ष का है।
जैसे १८ वर्ष का आने वाले अपरैल में पुरा होगा, और जनवरी में पूछ
रहा है, तो जनवरी फरवरी मार्च १० अपरैल को पूरा १८ वर्ष का होगा, तो
जैसे १९७२ में १० अपरैल को जब वो १८ वर्ष का पुरा होगा। बीसवां
वर्ष लगेगा तो, तुम पहले जातक का जन्म का सन् देखो जैसे १९५३ में
१० अपरैल का जन्म है, तो सन १९७२ मे १० अपरैल को ही १८ वर्ष का
पूरा होगा। तो १८ वर्ष में किस किस गृह की कितनी अन्धी यानी
अन्तर हुई। जनम समय ३ वर्ष ५ मास २२ दिन चालू महादशा का
तो खतम हो गया था राहू का, तो पत्रा में देखो राहू की महा दशा में राहू
की अन्तर दशा की कितनी अन्धी का प्रमाण है। देखो, तो राहू की दशा में
राहू की अन्तर दशा का प्रमाण २ वर्ष ८ मास १२ दिन का है।
तो समझो जातक राहू की अन्तर दशा में ही चल रहा है क्यों कि जन्म

समय तक २ वर्ष ५ मास २२ दिन ही बीते हैं। तो इस अन्तर्दशा में कबतक चलेगा तो तुम राहू की अन्तर्दशा की अवधी से जातक की बीती अवधी घटा दो। नीचे उदाहरण लिख दिया। राहू की महादशा में राहू की अन्तर्दशा की अवधी का प्रमाण २ वर्ष ८ मास १२ दिन है। इससे बीता समय घटा दो, तो समझ में आजायेगा इसी की अन्तरदशा में जातक है, या दूसरे की अन्तरदशा में प्रवेश कर गया है। घटाने से पता चला राहू की अन्तर दसा खतम हो गई। की अन्तरदशा में प्रवेश कर गया २ मास २० दिन होगया प्रवेश किये

४२
२२
२०

वर्ष	मास	दिन	
२	८	१२	यह राहू की अन्तर्दशा की अवधी है
२	५	२२	— यह जातक के जन्म के पहले की बीती राहू की अवधी है।
०	२	२०	

तो यह जानकारी हुई २ मास २० दिन ५७ दंड ३७ पल १३ विपल तक और यह अन्तर्दशा में जातक रहेगा। फिर गुरु की अन्तर्दशा में २ वर्ष ४ मास २४ दिन रहेगा। फिर शनि की अन्तर्दशा में २ वर्ष १० मास ६ दिन रहेगा। फिर बुध की अन्तर्दशा में २ वर्ष ६ मास १८ दिन रहेगा। फिर केतू की १ वर्ष १८ दिन अन्तर्दशा चलेगी। फिर शुक्र की ३ वर्ष अन्तर दशा चलेगी। फिर सूर्य की अन्तर्दशा १० मास २४ दिन रहेगी। फिर चन्द्र की १ वर्ष २ मास चलेगी। फिर मंगल की १ वर्ष १८ दिन चलेगी।

१७ वर्ष की अवस्था में पूछ रहा है मैं किसकी ~~महादशा~~ अन्तर्दशा में हूं
मत
राहू में राहू की अन्तर्दशा का समय जातक का जितना बीता हो। लिखो जितना हो।

वर्ष	मास	दिन
०	२	२०
२	४	२४
२	१०	६
२	६	१८
१	०	१८
३	०	०
०	१०	२४
१	०२	००
१	००	१८
१५	१०	८

यह गुरु की महादशा १६ वर्ष रहेगी (२०) १२ ८ (४ दिन

अन्तर्दशा	व	मा	दिन
गुरु	२	१	१८ यह भी बीता चुका।
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	०६
केतु	०	११	०६
शुक्र	२	८	००
सूर्य	०	९	१८
चन्द्र	१	४	००
मंगल	०	११	०६
राहू	२	४	२४

१२
१२
८

१२) ३६ (३
३६
१०

५२
२४-
२८

२।६।१२
१।०।४-
१।६।८ यह शनि की अन्तर्दशा इतनी और रही समझो

व.	मा.	दि.
३	१	२२
२	१	१८ घटादो
१	०	४ शनि में गए

गुरु की अन्तर्दशा की अवधि।

८ माह २८ दिन शनि अन्तर्दशा का भी खतम हो गया समझो

वर्ष में पूछा
१७। मा.। दि.
१५।१०।८ घटादो १७ से
यह ज्यादा ३।१।२२
कितनी का बोध हुआ

३ वर्ष १ मास २२ दिन राहू की महादशा की अवधी के ऊपर जातक चला गया, यानी गुरु की महा दशा में आगया, और गुरु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा को भी पास कर चुका, यानी गुरु की महादशा में शनि की अन्तरदशा इस समय पास कर रहा है। १७ सवें वर्ष में

२३ सवें वर्ष में जुलाई में जातक किस महादशा में चल रहा है

वर्ष	मा	दिन
शनि १	०	४
बुध २	३	६
के ०	११	६
शु २	८	०
सू ०	७	१८
चं १	४	०
मं ०	११	६
रा २	४	२४

गुरु की अन्तर्दशा बीत चुकी है वह अवधी नहीं जोड़ी इसमें शुरु की महा दशा में यह समय इतना शनि की अन्तर्दशा का १७ सबें वर्ष में रहा है अब आगे २३ सवें वर्ष का देखो

बुध की अन्तर्दशा में यह जातक २२ वर्ष ३ मास ६ दिन का हुआ

इसका जन्म १० अप्रैल १९५३ का है तो यह समझो इस समय २३ सवें वर्ष में केतु की अन्तर्दशा में चल रहा है, १० जुलाई १९७६ में यह ४ मास रवि केतु की अन्तर्दशा का भोग लेगा। ७ मास बाकी रहेगा १० जुलाई से केतु की अन्तर्दशा का

सूर्य की महादशा ६ वर्ष रहती है। चन्द्र की महादशा १० वर्ष रहती है। मंगल की ७ वर्ष। राहू की १८ वर्ष गुरु की १६ वर्ष शनि की १९ वर्ष बुध की १७ वर्ष केतु की ७ वर्ष शुक्र की २० वर्ष रहती है।

सूर्य की महादशा में चं.मं.गु. की अन्तर्दशा शुभ प्रद है। चन्द की महादशा में बुध गुरु शुक्र की अन्तरदशा शुभ प्रद। मंगल की महादशा में सूर्य चन्द्र की अन्तरदशा शुभ प्रद। बुध की महादशा में गुरु शुक्र की अन्तरदशा शुभ प्रद। गुरु की महादशा में सूर्य चन्द्र मंगल की अन्तर दशा शुभ प्रद। शुक्र की महादशा में बुध गुरु शनि की अन्तरदशा शुभ। शनि की महादशा में गुरु बुध शुक्र की अन्तरदशा शुभ प्रद। शेष अशुभ है यह वामनाचार्य का मत है।

सूर्य की महादशा ६ वर्ष
कृ उ.फा. उ.षा. नक्षत्र
अन्तरदशादि १९

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
रवि	०	३	१८
चं	०	६	०
मं	०	४	६
रा	०	१०	२४
गु	०	९	१८
श	०	११	१२
बु	०	१०	६
के	०	४	६
शु	१	०	०

सूर्य में - मं. गुरु. शुक्र का अन्तर शुभ। चन्द्र. राहु. शनि. बुध केतु का अन्तर अशुभ है। इसकी दशा में एक नये व्यापार से धन प्राप्ति होगी अग्नी से कष्ट नेत्र विकार उदर विकार दांत कष्ट बच्चों से अलगा बड़ों में किसी का वियोग

चन्द्र महादशा १० वर्ष
रो. ह. श्रवण
अन्तर्दशादि २०

गृ	व	मा	दि
चं	०	१०	०
मं	०	७	०
रा	१	६	०
गु	१	४	०
श	१	७	०
बु	१	५	०
के	०	७	०
शु	१	८	०
सू	०	६	०

चन्द्र में - चन्द्र. गुरु. बुध शुक्र सूर्य की अन्तर दशा शुभ मं. राहु. शनि. केतु की अन्तर दशा अशुभ

मंगल की महादशा ७ वर्ष
मृ चि ध
अन्तर्दशादि २१

गृह	वर्ष	मास	दिन
मं	०	४	२७
रा	१	०	१८
गु	०	११	६
श	१	१	९
बु	०	११	२७
के	०	४	२७
शु	१	२	०
र	०	४	६
चं	०	७	०

कुज में - भौम, राहु शनि केतु सूर्य चन्द्र का अन्तर अशुभ - गुरु का अन्तर शुभ.

राहू को महादशा १८ वर्ष			
आर्द्रा स्वा. शत			
अन्तर्दशादि ५४			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
रा	२	८	१२
गु	२	४	२४
श	२	१०	६
बु	२	६	१८
के	१	०	१८
शु	३	०	०
र	०	१०	२४
चं	१	२	०
मं	१	०	१८

राहू में - राहू शनि केतु मंगल का अन्तर कष्टकर होगा, गुरु बुध शुक्र का अन्तर सुखद होगा।

गुरु को महादशा १६ वर्ष			
पुनर्वसु विसाखा पू. भा.			
अन्तर्दशादि ४८			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
गु	२	१	१८
श	२	६	१२
बु	२	३	६
के	०	११	६
शु	२	८	०
र	०	९	१८
चं	१	४	०
मं	०	११	६
रा	२	४	२४

गुरु में - गुरु बुध शुक्र रवि चन्द्र का अन्तर शुभ रहेगा
सूर्य चन्द्र राहू केतु का अन्तर दुखद रहेगा

शनि की महा दशा १९ व.			
पुष्य अनुराधा उ. भा.			
अन्तर्दशादि ५७			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन
श	३	०	३
बु	२	८	९
के	१	१	९
शु	३	२	०
सू	०	११	१२
चं	१	७	०
मं	१	१	९
रा	२	१०	६
गु	२	६	१२

शनि में - शनि केतु सूर्य चन्द्र मंगल राहू का अन्तर अशुभ
बुध शुक्र गुरु का अन्तर शुभ फलप्रद

समय ... मकर के लगन में ... जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ। ... है।

बुध की महादशा १७ वर्ष अश्लेषा ज्येष्ठा रेवती				केतु की महादशा ७ वर्ष मघा मूल अश्विनि				शुक्र की महादशा २० वर्ष पू. फा. पू. षाढ. भरणी			
अन्तर्दशादि ५१				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ३ ·			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	·
के	०	११	२७	शु	१	२	०	सू	१	०	०
शु	२	१०	०	सू	०	४	६	चं	१	८	०
सू	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	गु	२	८	०
रा	२	६	१८	गु	०	११	६	श	३	२	०
गु	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०
	बुध में - शुक्र रवि राहू शनि का अन्तर शुभ शेष अशुभ			केतु में - केतु रवि चन्द मंगल राहु शनि का अन्तर कष्ट कर शेष शुभ				शुक्र में शुक्र मं राहु गुरु शनि बुध का अन्तर शुभ सूर्य चन्द राहु केतु का अन्तर अशुभ परदेस वास विवाद परिवार का दुख मित्र शत्रु होंगे। धन नाश होगा।			

श्र॰ आ॰ चि॰			ध॰ पुनर्व॰ स्वाती			शत॰ पुष्य॰ विसा॰			पू॰ आश्लेषा॰ अनु॰ पू॰ भा॰			भरणी॰ मघा॰ ज्ये॰ उ॰ भा॰		
मंगला १			पिंगला २ वर्ष			धान्या ३			भ्रामरी ४ वर्ष			भद्रिका ५ वर्ष		
मास	१२	च॰	मास	२४	रवि	मास	३६	बृ	मा॰	४८	मं	मास	६०	बुध
मं	०	१०	पिं	१	१०	धा॰	३	०	भ्रा	५	१०	भद्रि	८	१०
पि॰	०	२०	धा॰	२	०	भ्रा	४	०	भ	६	२०	उ॰	१०	०
धा	१	०	भ्रा	२	२०	भ	५	०	उ	८	०	सि	११	२०
भ्रा	१	१०	भ॰	३	१०	उ	६	०	सि	९	१०	सं	१३	१०
भद्रि	१	२०	उ	४	०	सि	७	०	सं	१०	२०	मं	१	२०
उ॰	२	०	सि	४	२०	सं	८	०	मं	१	१०	पिं	३	१०
सि	२	१०	सं	५	१०	मं	१	०	पिं	२	२०	धा॰	५	०
सं	२	२०	मं	०	२०	पिं	२	०	धा	४	०	भ्रा	६	२०

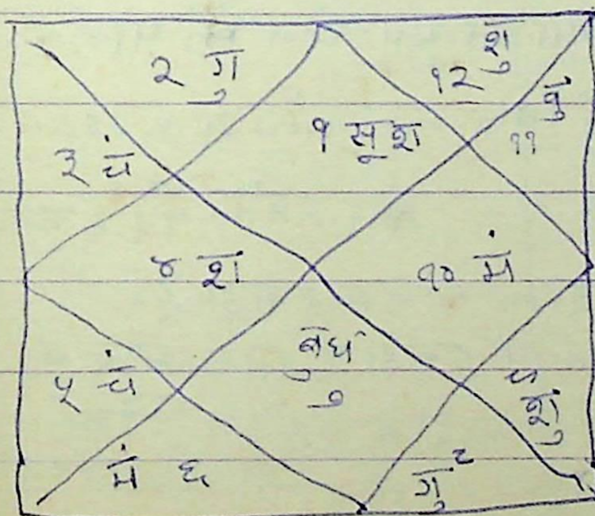
उल्का ६ वर्ष			सिद्धा ७ वर्ष			संकटा ८ वर्ष		
मा॰	७२	शनि	मा॰	८४	शु	मास	९६	के
उ	१२	०	सि	१६	१०	सं	२१	१०
सि	१४	०	सं	१८	२०	मं	२	२०
सं	१६	०	मं	२	१०	पिं	५	१०
मं	२	०	पि	४	२०	धा	८	०
पिं	४	०	धा	७	०	भ्रा	१०	२०
धा	६	०	भ्रा	९	१०	भ	१३	१०
भ्रा	८	०	भ	११	२०	उ	१६	०
भ॰	१०	०	उ	१४	०	सि	१८	२०
कृ॰ पू॰ फा॰ मू॰ रे			रो॰ उ॰ फा॰ पू॰ षा॰			मृ॰ ह॰ उ॰ षा॰		

...धन गत मकर के लग्न में ... जानकारी भी हो जाती
...जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ। ... है।

मेष सिंह धनु [illegible] मेष से गणना होती है।
वृष कन्या मकर में मकर से गणना शुरु होती है।
नवांशचक्रमिदम् कर्क वृश्चिक मीन को ~~को~~ कर्क से गणना होती है
कुम्भ मिथुन तुला में तुला से गणना होती है चक्र में
हर राशी के नीचे नवों टुकड़ों का स्वामी लिखा गया है। देखलो

राशी	मे	वृ	मि	क.	सिं	क	तु	वृ	धा	म	कु	मी
अं. क ३।२०	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४
६।४०	शु २	शा ११	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८	सू ५
१०।०	बु ३	बृ १२	गु ९	बुध ६	बु ३	गु १२	गु ९	बुध ६	बुध ३	गु १२	गु ९	बुध ६
१३।२०	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७
१६।४०	सू ५	शुक्र २	शनि ११	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८
२०।०	बुध ६	बुध ३	बृ १२	गु ९	बुध ६	बु ३	गु १२	गु ९	बुध ६	बुध ३	गु १२	गु ९
२३।२०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०
२६।४०	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८	सू ५	शु २	श ११	मं ८	सू ५	शु २	शनि १२
३०।०	बृ ९	बु ६	बुध ३	गु १२	गु ९	बुध ६	बुध ३	गु १२	गु ९	बुध ६	बुध ३	गु १२
	उदाहरण देखो तत्कालिक मैत्री विचार नीचे देखो											

जन्म कुण्डली में देखो



कुण्डली में गृह जो भी जहां जिस स्थान में हो वहां से दूसरे तीसरे चौथे दशवें ग्यारहवें १२ वें अस्थान में जो भी गृह होगा वह एक दूसरे का तत्कालिक मित्र होगा। और १-५-६-७-८-९ वें स्थान पर जो गृह होंगे आपस में शत्रुता रक्खेंगे। जैसे सूर्य एक में है तो गुरु चन्द्र शनि मं बुध शुक्र तत्कालिक सूर्य के मित्र हुये। और शनि एक में है तो शनि से चं ५ वें में है तो चं मं बु गुरु शुक्र क्रमशः १-५-६-७-८-९- इन स्थानों के गृह सूर्य के शत्रु हो जायेंगे इसी तरह समझ लो।

नैसर्गिक मित्र शत्रु बोध चक्रम
कुण्डली में देखो कौन ग्रह किसका मित्र शत्रु है।

ग्रहा:	शत्रव:	मित्राणि	उदासीना:
सूर्यस्य	शुक्र शनि	मंगल चन्द्र गुरु	बुध
चन्द्रस्य	०	रवि बुध	गुरु मं शुक्र शनि
मंगलस्य	बुध:	रवि चन्द्र गुरु	शुक्र शनि
बुधस्य	चन्द्रमा	सूर्य शुक्र	शनि गुरु मंगल
गुरुस्य	बुध शुक्र	सूर्य मं चन्द्र:	शनि
शुक्रस्य	सूर्य चन्द्र	शनि बुध:	गुरु मंगल
शनिस्य	सूर्य चन्द्र मं.	शुक्र बुध:	गुरु

इस चक्र में देखो, सूर्यस्य के माने सूर्य के स्थान में चन्द्रस्य माने चन्द के स्थान में
मंगलस्य के स्थान में। जैसे ५ नंबर सिंह कहलाता है इसका स्वामी सूर्य है
तो जातक को इष्ट काल बना कर लग्न बनाकर देखो
जैसे किसी की लग्न ६।१५।६।१६ है
तो समझो कन्यागत तुला लग्न के पांचवे नौमांश
में लग्न है। तुला का स्वामी शुक्र शनि के
नौमांश में हुआ। और समझो १५।६ कला
देखो नौमांश का कौन सा टुकड़ा है।
१३।२० तक चौथा टुकड़ा है इसका मतलब
१५।६ पांचवें नौमांश के टुकड़े में बैठेगा
तो तुम यह समझो यह तुला लग्न का
जातक शुक्र के नौमांश में हुआ तुला
लग्न की पंक्ती के नीचे पांचवे टुकड़े के
सामने देखो शुक्र लिखा है।

जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ। ... है।

॥ नौमांश बनाने और देखने की रीति ॥

नौमांश चक्र

नौ मांश कैसे खण्ड करने का तरीका तीस में ९ से भाग दो १ खंड नवांश का निकल आयेगा उसी खण्ड में २ से गुणा करो दूसरा खण्ड निकलेगा इसी तरह ३ से करो पहले खण्ड को गुणा, तो तीसरा टुकड़ा बनेगा ४ से करो चौथा, ५ से करो पांचवां, ६ से करो छठा, ७ से करो गुणा सातवां, ८ से करो आठवां, ९ से करो गुणा, ९वां, खण्ड नवांश का निकल आयेगा। उदाहरण

९) ३०(३ अंश
२७
३×६०
९) १८०(२० क.
१८०
×

३।२० पहला खण्ड नवांश का हुआ
२×
६।४० दूसरा खण्ड
३।२०
३×
१०।० तीसरा खण्ड
३।२०
४×
१३।२० चौथा खण्ड
३।२०
५×
१६।४० पांचवां खण्ड
३।२०
६×
२०।० छठा खण्ड
३।२०
७×
२३।२० सातवां खण्ड
३।२०
८×
२६।४० आठवां खण्ड
३० नवां खण्ड

टुकड़ा	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
३।२०	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं
६।४०	शु	श	मं	सू	शु	श	मं	सू	शु	श	मं	सू
१०।०	बुध	गु	गु	बुध	बुध	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बुध
१३।२०	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु
१६।४०	रवि	शुक्र	श	मं	सू	शु	श	मं	सू	शु	श	मं
२०।०	बुध	बुध	गु	गु	बुध	बुध	गु	गु	बु	बु	गु	गु
२३।२०	शुक्र	चं	मं	श	शुक्र	चं	मं	श	शु	चं	मं	श
२६।४०	मं	सू	शु	श	मं	सू	शु	श	मं	सू	शु	श
३०।०	गुरु	बु	बुध	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु

गुरु प्रसाद को ७।१।९।० लगन है तो ७।९ देखो नौमांश का कौन टुकड़ा है यह पहला ही टुकड़ा हुआ, अब तुम देखो तुला बाद वृश्चिक लगन के नीचे पहले टुकड़े के सामने देखो चंद्र लिखा है तो समझो वृश्चिक लगन में चन्द्र के नौमांश में जन्म हुआ

सं	घ.प.	रविदिने	चं दिने	मंदिने	बुदिने	गुदिने	शुदिने	शनिदिने	सूर्यादिवारेषु
१	२।३०	र	चं	मं	बु	गु	शु	शनि	कालहोराचक्रम्
२	५।०	शु	श	सू	चं	मं	बु	गुरु	सूर्योदय से
३	७।३०	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	१ घंटा तो होरा
४	१०।०	चं	मं	बु	गु	शु	शनि	रवि	उसी बार का रहता
५	१२।३०	श	रवि	चं	मं	बु	गुरु	शु	है फिर एक २
६	१५।०	गु	शु	श	रवि	चं	मं	बुध	घंटा बाद बदलता
७	१७।३०	मं	बु	गु	शु	श	रवि	चंद्र	रहता है इस
८	२०।०	रवि	चं	मं	बु	गु	शु	शनि	चक्र में हर
९	२२।३०	शु	श	सू	चं	मं	बु	गुरु	वार का होरा
१०	२५।०	बु	गु	शु	श	रवि	चंद्र	मं	प्रति घंटे बाद
११	२७।३०	चं	मं	बुध	गुरु	शु	शनि	रवि	किस का होता
१२	३०।०	श	रवि	चं	मं	बु	गु	शु	रहता है तो
१३	३२।३०	गु	शु	श	रवि	चंद्र	मं	बु	ज्ञात होता है
१४	३५।०	मं	बु	गुरु	शु	श	रवि	चंद्र	इष्ट काल के
१५	३७।३०	र	चं	मं	बु	गु	शु	शनि	घड़ी पल से
१६	४०।०	शु	श	रवि	चंद्र	मं	बु	गु	देखा जाता है
१७	४२।३०	बु	गु	शु	श	रवि	चंद्र	मं	कि कितने दंडपल इष्ट. के घटे
१८	४५।०	चं	मं	बुध	गु	शु	शनि	रवि	है किस गृह के
१९	४७।३०	श	रवि	चंद्र	मं	बुध	गुरु	शुक्र	सामने तब पता
२०	५०।०	गु	शु	शनि	रवि	चंद्र	मं	बुध	लगता है इस गृह
२१	५२।३०	मं	बु	गुरु	शु	शनि	रवि	चंद्र	के काल होरा में
२२	५५।०	रवि	चं	मं	बुध	गुरु	शु	शनि	जन्म हुआ
२३	५७।३०	शु	श	रवि	चंद्र	मं	बुध	गुरु	
२४	६०।०	बु	गु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मं	

जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ। ... है।

जैसे इष्टकाल (दं।पल) ५२।४९ है तो देखो किस वार में जन्म हुआ जैसे सोमवार में जन्म हुआ तो सोमवार के नीचे देखो ५७ दंड ३० पल तक शनि का होरा है इसके ऊपर इष्टकाल के दंड पल है। तो गुरु के होरा में जन्म समझो गुरु शुभग्रह है कुछ गुंजाइश है। पापग्रह का होरा अनिष्टकारी होता है दंड को ही घड़ी दंड को ही नाड़ी, घटी, आदि नामों से कहते हैं।

गुरुप्रसाद का जन्म गुरुवार की रात को बारह बजे के बाद ६ बजके २७ मि. पर हुआ, इसका इष्टकाल ५५।५८ है, गुरुवार का दिन है, तो गुरु की पंक्ती में देखा सबसे नीचे रवि को होरा में जन्म हुआ समझो। इसी तरह होरा का ज्ञान किया जाता है।

॥ द्वादश भाव बनाने की रीति ॥

लगन में ६ जोड़ देने से सप्तम भाव बन जाता है। और दशम लगन में ६ जोड़ देने से चतुर्थ भाव बन जाता है। १ रासी से षष्टांस घटा देने से षष्टांसो नैक बन जाता है। षष्टांशो नैक में चतुर्थ भाव जोड़ देन से चतुर्थ भाव की सन्धि बन जाती है। चतुर्थ भाव से ध लग्न घटा देने पर ६ से उसमें भाग देने से षष्टांस बन जाता है। एक बात का ध्यान रक्खो यदि १ रासी से षष्टांस संख्या ज्यादा हो तो १ रासी में १२ जोड़ कर षष्टांस घटाओ। जैसे षष्टांस

१ । . । . । .
१ । १२ । ५० । १५ है और इसे घटाना है तो ऊपर १ रासी में १२
११ । १७ । ९ । ४५
मान कर १३ समझ लो तो १३ से १ घटा दो १२ बचा तो ११ नीचे रख दो १ अंश को उधार दे दो १ रासी में ३० अंश होते हैं तो ३० से १२ घटा दो १८ बचे १७ रक्खो एक कला को उधार दे दो। १ अंश में ६० कला होती हैं ६० में से ५० घटा दो १० बचा ९ रक्खो १ उधार दे दो १ कला में ६० विकला होती है तो ६० में से १५ घटा दो ४५ बचा। इस तरह १ रासी से षष्टांस घटाया जाता है। अब हम द्वादश भाव बना रहे हैं। जैसे लगन रा । अं । क । वि । २ । १८ । ७ । ३५ है। दशम लग्न रा । अं । क । ११ । ७ । २२ है। पहले ६ जोड़ २ कर सप्तम भाव चतुर्थ भाव बना लो

यह दशमलग्न है।

रा. अं. क.
११।७।२२ दशमलग्न
६+
५।७।२२ चतुर्थभाव
२।१८।७।३५ – लग्न
६) २।१७।१२।२५ (० रासी
३०×
६०
१७+
६) ७७ (१३ अं
७८
१
६०×
६०
१२+
६) ७२ (१२ क.
७२
६) २५ (४ वि
२४
१
६०×
६) ६० (१० प्र.वि.
६०
×

रा. अं. क. वि. प्र.वि
०।१३।१२।४।१० यह षष्ठांस है।

यह लग्न है

रा. अं. क. वि.
२।१८।७।३५
६+
८।१८।१०।३५ सप्तम भाव

२।१८।७।३५। लग्न में
+ ०।१३।१२।४।१० षष्ठांस जोड़ा
३।१।२१।३९।१० ल.सं
+ ०।१३।१२।४।१० ष.
३।१४।३३।४३।२० द्वि.भा
+ ०।१३।१२।४।१० ष.
३।२७।४५।४७।३० द्वि.सं
+ ०।१३।१२।४।१० ष.
३।४०।५७।५१।४० तृ.भा.
+ ०।१३।१२।४।१० षष्ठांस
४।२४।७।५५।५० तृ.सं
+ ०।१३।१२।४।१०
५।७।२२।०।० चतुर्थ भाव

लग्न में इसी को जोड़ते जाते हैं ६ बार षष्ठांस जोड़ा जिससे प्रथम लग्न सन्धि द्वितिय भाव द्वितिय भाव की सन्धि तृतिय भाव तृतिय भाव तृतिय भाव की सन्धि चतुर्थ भाव आखिरी में आ गया। यदि चतुर्थ भाव न आवे तो गणित में कमी समझना यही कांटा मिलाना है।

१ राशी से षष्ठांस घटाओ
० | १३ | १२ | ४ | १० - षष्ठांस घटाया
० | १६ | ७४ | ५५ | ५० इसे षष्ठांसो नैक कहते हैं।
+ ५ | ७ | २२ | ० | ० + चतुर्थ भाव जोड़ो
५ | २४ | ८ | ५५ | ५० चतुर्थ भाव की सन्धि
+ ० | १६ | ७४ | ५५ | ५० + षष्ठांसो नैक जोड़ो
६ | १० | ५८ | ५१ | ४० पंचम भाव है
+ ० | १६ | ७४ | ५५ | ५० + षष्ठांसो नैक
६ | २६ | ४५ | ४७ | ३० षष्ठम भाव सन्धि
+ ० | १६ | ७४ | ५५ | ५० | षष्ठांसो नैक
७ | १४ | ३३ | ४३ | २० | षष्ठम भाव
+ ० | १६ | ७४ | ५५ | ५० | षष्ठांसो नैक
८ | १ | २१ | ३८ | १० | षष्ठम भाव सन्धि
+ ० | १६ | ७४ | ५५ | ५० षष्ठांसो नैक
८ | १८ | ८ | ३५ | ० | सप्तम भाव

यदि सप्तम सही न मिले तो समझो कहीं जोड़ में गलती है।

समस्त भाव सन्धि रखने का तरीका ॥

तन	धन	सहज	सुहृद	पुत्र	शत्रु	स्त्री	मृत्यु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय
२	३	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०
१८	१४	१०	६	१०	१४	१८	१८	१४	१०	७	१०
७	३३	५०	२२	५६	३३	७	७	३३	५०	२२	५६
३५	४३	५१		५१	४३	३५	३५	४३	५१	०	४०
	२०	४०		४०	२०		०	२०	४०		
सन्धि	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
३	३	४	५	६	८	७	७	१०	११	०	२
१	२७	२४	२४	२६	१	१	२६	२४	२४	२६	१
२१	४५	७	७	४५	२१	२१	४५	७	७	४५	२१
३७	४६	५५	५५	४६	३९	३७	५६	५५	५५	५६	३७
१०	३०	५०	५०	३०	१०	१०	३०	५०	५०	३०	१०
ग्रह	रवि	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के		
स्पष्ट	११	३	०	११	१	११	६	७	३		
	२६	०	२२	०	०	२६	३	१५	१५		
	५४	१२	३२	५१	४४	५३	३६	३६	३६		
	५५	१८	३७	३२	४७	५२	२६	२२	२२		

स्त्री भाव तक भाव और भाव सन्धि बनाई जाती है मृत्यु भाव की पूर्ति के लिये तन भाव की संख्या ही रख देते हैं केवल राशि में ६ और जोड़ देते हैं। इसी तरह धर्म भाव की पूर्ति के लिये धन भाव की संख्या राशि में ६ जोड़ कर रख देते हैं। इसी तरह कर्म भाव की पूर्ति के वास्ते सहज भाव की संख्या ६ जोड़ कर रख देते हैं इसी तरह लाभ की पूर्ति के वास्ते सुहृद भाव की संख्या रख देते हैं इसी तरह व्यय भाव की पूर्ति वास्ते पुत्र भाव की संख्या ६ जोड़ कर रख देते हैं। १२ होते ० रख देते हैं

यही क्रम सान्धि रखने में अपना होता है। स्त्री भाव से ही
इसमें ६ जोड़ २ कर के वही संख्या रखदेते हैं।

नवांश बनाने को रीति नवांश द्वारा नक्षत्र चरण।। रासी वर्ण योनी गण सब की जानकारी।।

यदि किसी के नवांस गृह की किसी समय जान कारी करनी हो तो तुम प्रश्न टाइम नोट कर लो उसका इष्ट काल बना लो फिर लगन बनाओ जैसे कुण्डली बनाते समय लगन बनाई जाती है वैसे बनाओ मान लो लगन २ रासी ८ अंश ३ कला १३ विकला पर है। तो देखो पत्रा में नवांश में

अं. क.
८।३ किस टुकड़े के अन्दर है। यह तीसरे टुकड़े के अन्दर हुआ। नवांश के जानने के लिये पहले ३० को ९ से भाग दे के पहला टुकड़ा बना लो ३।२० आयेगा उसे दो से गुणा करोगे तो दूसरा टुकड़ा बनेगा ६।४०। फिर पहले को ३ से गुणा करोगे तो तीसरा टुकड़ा १०।० बन जायेगा। इसी तरह ९ से गुणा करोगे नवां टुकड़ा निकल आयेगा।

तीसरा अंश कौन सी रासी होती है यह ३. अंश है।

९) ३० (३
२७
———
३×६०
९) १८० (२०
१८०
———
×

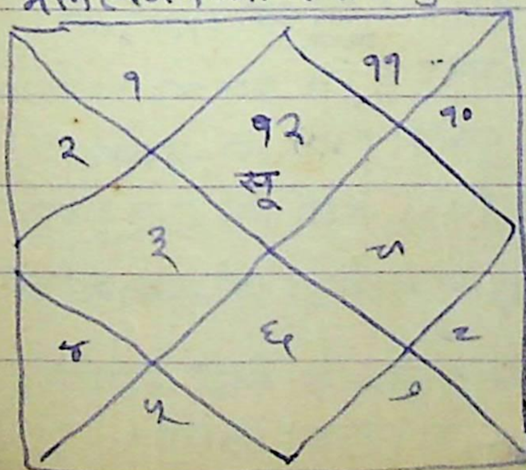
३।२० नवांश का पहला टुकड़ा हुआ
२×
———
६।४० दूसरा टुकड़ा नवांश का
———
३।२० पहला टुकड़ा में तीन से गुणो
३×
———
१०।० तीसरा टुकड़ा बन जायेगा
———
~~३।२० पहले को चार से गुणो~~
४×
———
१३।२० चौथा टुकड़ा बना

३।२०	पहला टुकड़ा
६।४०	दूसरा . .
१०।०	तीसरा . . .
१३।२०	चौथा . .
१६।४०	पांचवां . . .
२०।०	छठा . . .
२३।२०	सातवां . . .
२६।४०	आठवां . . .
३०।०	नवां . . .

इस तरह टुकड़े बनाकर देखो।

देखो किस रासी की गणना किस रासी से शुरु होती है। मेष, सिंह, धनु रासी की गणना मेष रासी से होती है। बृष कन्या मकर की गणना मकर रासी से शुरु होती है। कर्क वृश्चिक मीन की गणना कर्क रासी से शुरु होती है। कुम्भ मिथुन तुला रासी की गणना तुला से होती है। अब समझो पहले किस लगन की नवांश कुंडली बनानी है। तो तुम द्वादश भाव जो बने रहते हैं उसमें तुम पहले तन भाव की संख्या देखो की क्या लिखी है। जैसे २।१८।७।३५ (रा।अं।क।वि) संख्या लिखी है तो देखो १८।७ (अं।क) किस कौन सा टुकड़ा है। यह छठा टुकड़ा हुआ क्यों कि पांचवे टुकड़े के अंश १८।७ (अं) कला हैं इसलि छठे के अन्दर यह टुकड़ा माना गया। अब देखो तनु भाव की २ रासी है, तो वृष गत मिथुन रासी की गणना देखो तुला से होती है तो तुला पहला, वृश्चिक दूसरा, धन तीसरा, मकर चौथा, कुम्भ पांचवा मीन का छठा टुकड़ा हुआ तो समझलो मीन लगन की नवांश कुण्डली बनेगी। मीन लगन की नवांश कुण्डली का गोचर बना लो।

मीन लगन की नवांश कुण्डली



अब इनमें गृहों को बैठाना है तो गृह सपष्ट संख्याओं को देखो। जैसे सूर्य सपष्ट संख्या ११।२६।५४।५५ है। तो देखो ११ तो इसमें रासी है २६ अंश ५४ कला ५५ विकला हैं। तो देखो तुम २६।५४ नवांश का कौन सा टुकड़ा है। यह नवां टुकड़ा हुआ ३० अंश के अन्दर इसकी संख्या है। तो देखो ११ रासी गत मीन रासी में सूर्य है। तो मीन की गणना मीन से होती है। मीन से नवें टुकड़े तक गिनो

नवांश बनाने की रीति नवांश द्वारा नक्षत्र चरण।
रासी वर्ण योनी गण सब की जानकारी।।

यदि किसी के नवांस गृह की किसी समय जान कारी करनी हो तो तुम प्रश्न टाइम नोट करलो उसका इष्ट काल बना लो फिर लगन बनाओ जैसे कुण्डली बनाते समय लगन बनाई जाती है वैसे बनाओ मान लो लगन २ रासी ८ अंश ३ कला १३ विकला पर है। तो देखो पत्रा में नवांश में

अं. क.
८ । ३ किस टुकड़े के अन्दर है। यह तीसरे टुकड़े के अन्दर हुआ। नवांश के जानने के लिये पहले ३० को ९ से भाग दे के पहला टुकड़ा बनालो ३।२० आयेगा उसे दो से गुणा करोगे तो दूसरा टुकड़ा बनेगा ६।४०। फिर पहले को ३ से गुणा करोगे तो तीसरा टुकड़ा १०।० बन जायेगा। इसी तरह ९ से गुणा करोगे नवां टुकड़ा निकल आयेगा।

तीस अंश की एक रासी होती है यह ३० अंश हैं।

९) ३० (३
२७

३×६०
---
९) १८० (२०
१८०

×

३।२० नवांश का पहला टुकड़ा हुआ
२×

६।४० दूसरा टुकड़ा नवांश का

३।२० पहला टुकड़ा में तीन से गुणों
३×

१०।० तीसरा टुकड़ा बनजायेगा

३।२० पहले को चार से गुणों
४×

१३।२० चौथा टुकड़ा बना

३।२० पहला टुकड़ा
६।४० दूसरा . . .
१०।० तीसरा . . .
१३।२० चौथा . . .
१६।४० पांचवां . . .
२०।० छठा . . .
२३।२० सातवां . . .
२६।४० आठवां . . .
३०।० नवां . . .

इस तरह टुकड़े बनाकर देखो

देखो किस रासी की गणना किस रासी से शुरु होती है। मेष, सिंह, धनु रासी की गणना मेष रासी से होती है। बृष कन्या मकर की गणना मकर रासी से शुरु होती है। कर्क वृश्चिक मीन की गणना कर्क रासी से शुरु होती है। कुम्भ मिथुन तुला रासी की गणना तुला से होती है। अब समझो पहले किस लगन की नवांश कुंडली बनानी है। तो तुम द्वादश भाव जो बने रहते हैं उसमें तुम पहले तन भाव की संख्या देखो की

... तो देखो १२। ८ ग्रं. क.

... कि पांचवे टुकड़े के

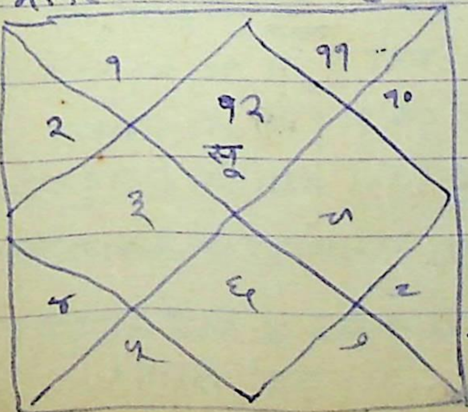
... ड़ा माना गया। अब

दे... की गणना देखो तुला

से ... तीसरा, मकर चौथा,

कुम्भ पांचवा, मीन छठा ... तो मीन लगन की नवांश कुण्डली बनेगी। मीन लगन की नवांश कुण्डली का गोचर बना लो।

मीन लगन की नवांश कुण्डली



अब इनमें गृहों को बैठना है तो गृह सपष्ट संख्याओं को देखो। जैसे सूर्य सपष्ट संख्या ११।२६।५४।५५ है। तो देखो ११ तो इसमें रासी है २६ अंश ५४ कला ५५ विकला हैं। तो देखो तुम २६।५४ नवांश का कौन सा टुकड़ा है। यह नवां टुकड़ा हुआ ३० अंश के अन्दर इसकी संख्या है। तो देखो ११ रासी गत मीन रासी में सूर्य है। तो मीन की गणना मीन से होती है। मीन से नवें टुकड़े तक गिनो

मसूरी
...वि-दा मे- दिनांक 28-6-78
...ी का चरण स्पर्श स्वीकार हो
...अगे समाचार इस प्रकार
... आपका पत्र आया था
... आपने लिखा था कि
...के बाद आपको काफी
...ह गात तो वास्तव मे ...
...वियोग दुखदायी होता है
...लिखा था कि आपको अब
...तीशा हो गयी तथा शरीर
...कता छ मां आप ऐसा
...ा क्योंकि मां हमारी तो आप
...हो अगर आपने हम छोड़
नही हमारा क्या हो मां अब
...कहता छ ... मैंने भी आपसे
ताकि आपको दुख भी कुछ
...ोग मगर वास्तव मे आप...
...ा को प्या...

नवांश बनाने की रीति नवांश द्वारा नक्षत्र चरण।। रासी वर्ण योनी गण सब की जानकारी।।

यदि किसी के नवांस गृह की किसी समय जान कारी करनी हो तो तुम प्रश्न टाइम नोट करलो उसका इष्ट काल बना लो फिर लगन बनाओ जैसे कुण्डली बनाते समय लगन बनाई जाती है वैसे बनाओ मान लो लगन २ रासी ८ अंश ३ १३ विकला पर है। तो देखो पत्रा में नवांश में

अं. क.
८।३ किस टुकड़े के अन्दर है। यह तीसरे टुकड़े के अन्दर हुआ। नवांश के जानने के लिये पहले ३० को ९ से भाग दे के पहला टुकड़ा बनालो ३।२० आयेगा उसे दो से गुणा करोगे तो दूसरा टुकड़ा बनेगा ६।४०। फिर पहले को ३ से गुणा करोगे तो तीसरा टुकड़ा १०।० बन जायेगा। इसी तरह ९ से गुणा करोगे नवां टुकड़ा निकल आयेगा।

तीस अंश की एक रासी होती है यह ३० अंश हैं।

९) ३० (३
२७
३×६०
९) १८० (२०
१८०
×

३।२० नवांश का पहला टुकड़ा हुआ
२×
६।४० दूसरा टुकड़ा नवांश का

३।२० पहला टुकड़ा में तीन से गुणों
३×
१०।० तीसरा टुकड़ा बन जायेगा

३।२० पहले को चार से गुणों
४×
१३।२० चौथा टुकड़ा बना

३।२० पहला टुकड़ा
६।४० दूसरा ...
१०।० तीसरा ...
१३।२० चौथा ...
१६।४० पांचवां ...
२०।० छठा ...
२३।२० सातवां ...
२६।४० आठवां ...
३०।० नवां ...

इस तरह टुकड़े बनाकर देखो।

देखो किस रासी की गणना किस रासी से शुरु होती है। मेष, सिंह, धनु रासी की गणना मेष रासी से होती है। बृष कन्या मकर की गणना मकर रासी से शुरु होती है। ... न की गणना कर्क रासी से शुरु होती है। कुम्भ मि... गणना तुला से होती है। अब समझो पहले ... कुंडली बनानी है। तो तुम द्वादश भाव जो बने रहते ... भाव की संख्या देखो की क्या लिखी है। जैसे ... खी है तो देखो १२।० किस कौन सा टुकड़ा है ... क्यों कि पांचवे टुकड़े के अंश १२।० कला है ... टुकड़ा माना गया। अब देखो तनु भाव की रा... रासी की गणना देखो तुला से होती है तो तुला ... न तीसरा, मकर चौथा, कुम्भ पांचवा मी... कलो मीन लगन की नवांश कुण्डली बनेगी। ... का गोचर बना लो।

मसूर
रवि-दा से दिनांक २४-६-७८
... का चरण स्पर्श स्वीकार हो
आगे समाचार इस प्रकार
है आपका पत्र आया था
आपने लिखा था कि
... के बाद आपको काफी
यह बात तो वास्तव में कठि
वियोग दुखदायी ... लिखा था कि आपको अब
... हो गयी तथा यदि
... करता था माँ आप ऐसा
... क्योंकि माँ हमारी तो आप
हो अगर आपने हमे छोड़
नही हमारा क्या हो माँ अब
करता था कि मैय्या भी अपने
ताकि आपको दुख भी कुछ
... अगर वास्तव में आप ...

मीन लगन की नवांश कुण्डली



अब ... का ... बनना है तो गृह सपष्ट संख्याओं को देखो। जैसे सूर्य सपष्ट संख्या ११।२६।५४।५५ है। तो देखो ११ तो इसमें रासी है २६ अंश ५४ कला ५५ विकला हैं। तो देखो तुम २६।५४ नवांश का कौन सा टुकड़ा है। यह नवां टुकड़ा हुआ ३० अंश के अन्दर इसकी संख्या है। तो देखो ११ रासी गत मीन रासी में सूर्य है। तो मीन की गणना मीन से होती है। मीन से नवें टुकडे तक गिनो

नवांश बनाने की रीति नवांश द्वारा नक्षत्र चरण। रासी वर्ण योनी गण सब की जानकारी।।

यदि किसी के नवांस गृह की किसी समय जान कारी करनी हो तो तुम प्रश्न टाइम नोट करलो उसका इष्ट काल बना लो फिर लगन बनाओ जैसे कुण्डली बनाते समय लगन बनाई जाती है वैसे बनाओ। मान लो लगन २ रासी ८ अंश ३ कला १३ विकला पर है। तो देखो पत्रा में नवांश में

अं. क.
८।३ किस टुकड़े के अन्दर है। यह तीसरे टुकड़े के अन्दर हुआ। नवांश के जानने के लिये पहले ३० को ९ से भाग दे के पहला टुकड़ा बनालो ३।२० आयेगा उसे दो से गुणा करोगे तो दूसरा टुकड़ा बनेगा ६।४०। फिर पहले को ३ से गुणा करोगे तो तीसरा टुकड़ा १०।० बन जायेगा। इसी तरह ९ से गुणा करोगे नवां टुकड़ा निकल आयेगा।

तीस अंश की एक रासी होती है यह ३० अंश हैं।

९) ३० (३
 २७
 ―――
 ३×६०
 ―――
९) १८० (२०
 १८०
 ―――
 ×

३।२० नवांश का पहला टुकड़ा हुआ
 २×
६।४० दूसरा टुकड़ा नवांश का
३।२० पहला टुकड़ा में तीन से गुणो
 ३×
१०।० तीसरा टुकड़ा बनजायेगा
३।२० पहले को चार से गुणो
 ४×
१३।२० चौथा टुकड़ा बना

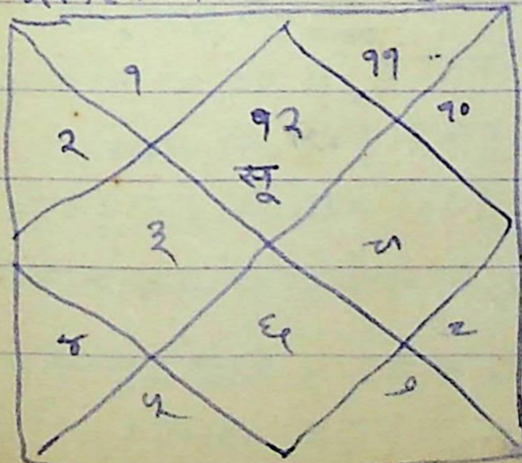
३।२० पहला टुकड़ा
६।४० दूसरा . . .
१०।० तीसरा . . .
१३।२० चौथा . . .
१६।४० पांचवां . . .
२०।० छठा . . .
२३।२० सातवां . . .
२६।४० आठवां . . .
३०।० नवां . . .

इस तरह टुकड़े बनाकर देखो

देखो किस रासी की गणना किस रासी से शुरु होती है। मेष, सिंह, धनु
रासी की गणना मेष रा ... न्या मकर की गणना
मकर रासी से शुरु होती ... न की गणना कर्क रासी से
शुरु होती है। कुम्भ मि ... णना तुला से होती है।
अब समझो पहले कि ... कुंडली बनानी है। तो तुम
द्वादश भाव जो बने रहते ... भाव की संख्या देखो की
क्या लिखी है। जैसे रा. २ ... ो है तो देखो अं. क. १८।७
~~किस~~ कौन सा टुकड़ा है। ... ां कि पांचवे टुकड़े के
अंश १८।७ कला हैं इस ... ड़ा माना गया। अब
देखो तनु भाव की २ रासी ... की गणना देखो तुला
से होती है तो तुला पहल ... सरा, मकर चौथा,
कुम्भ पांचवा मीन का छठा ... मीन लगन की नवांश
कुण्डली बनेगी। मीन ल ... ण्डली का गोचर बना लो।



मीन लगन की नवांश कुण्डली



अब इनमें गृहों को बैठाना है तो गृह स्पष्ट संख्याओं को देखो। जैसे सूर्य स्पष्ट संख्या ११।२६।५४।५५ है। तो देखो ११ तो इसमें रासी है २६ अंश ५४ कला ५५ विकला हैं। तो देखो तुम २६।५४ नवांश का कौन सा टुकड़ा है। यह नवां टुकड़ा हुआ ३० अंश के अन्दर इसकी संख्या है। तो देखो ११ रासी गत मीन रासी में सूर्य है। तो मीन की गणना मीन से होती है। मीन से नवें टुकड़े तक गिनो

कर्क से मीन रासी तक ६ वां टुकड़ा हुआ, मीन का स्वामी गुरु है,
तो समझो सूर्य मीन रासी में बैठेगा इसी भांति हर गृहों को बैठा दो गृहों के
सपस्ट संख्या देख २ के गणना कर कर के। जैसे चं सपस्ट संख्या
३।०।१२।१८। है। तो यह चन्द्र मिथुन गत कर्क रासी में ० अंश १२ कला पै है
तो वह नवांश का पहला टुकड़ा हुआ क्यों की ३।२० पहले टुकड़े
के अन्दर यह संख्या हुई। कर्क रासी की गणना कर्क से होती है।
तो कर्क रासी में चन्द्रमा को समझो। नवांश कुण्डली में ४ अंक पर
चन्द्र को बैठा दो। जैसे मंगल सपस्ट की संख्या ०।२२।३२।२७ है तो मंगल
को मीन गत मेष रासी में २२ अंश ३२ कला २७ विकला पर है, ०
सुन माने मीन रासी होती है अब देखो २२।३२ नवांश का कौन टुकड़ा
है। यह सातवां टुकड़ा हुआ। मंगल मेष में है तो मेष की गणना
देखो किस रासी से होती है मेष सिंह धनु की गणना मेष से होती है,
मेष से गिनो मेष से तुला सातवां टुकड़ा हुआ। तो मंगल को तुला
रासी में यानी ७ अंक में बिठा दो। नवांश कुण्डली बनाने का यही सिद्धान्त है
नवांश को लगन बनाने से भी जान सकते हो। लगन बना कर देखो
लगन के अंश कला नवांश का कौन टुकड़ा है। जैसे २।१८।७।३५
लगन संख्या है, तो १८।७ अंश कला जो है, यह बृष गत मिथुन रासी हुई इसका का
कौन टुकड़ा है। मिथुन की गणना तुला रासी से होती है गणना तो १८।७ नवांश
का छठा टुकड़ा हुआ तो तुला से गिनो मीन का छठा टुकड़ा हुआ तो समझो
मिथुन लगन में गुरु के नवांश में जन्म हुआ। क्यों कि छठा टुकड़ा
मीन का था मीन का स्वामी गुरु हुआ। इसलिये गुरु के नवांश में जन्म माना
अब पत्रे में देखो मिथुन रासी का छठा चरण किस नक्षत्र के किस चरण में है,
... नक्षत्र के चौथे चरण में नवांश का छठा टुकड़ा आया।

समझो ... नवांश में जन्म हुआ।
जन्म हुआ। मंगल के नवांश में

जैसे हर रासी में ९ चरण होते हैं वैसे ही नवांश में ९ टुकड़े होते हैं। लगन जिस रासी में हो उसका चरण देखलो नवांश के टुकड़ों के मुताबिक। जैसे लगन वृष गत मिथुन रासी में है यहां तो मिथुन का छठा चरण देखलो किस नक्षत्र में है। मिथुन का छठा टुकड़ा नवांश का था। तो मिथुन रासी का छठा चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चौथे चरण में है। नीचे प्रसंग लिखा है।

यदि लगन का स्वामी पाप ग्रह हो तो कलह, रोग तथा धन का नाश हो। यदि लगन का स्वामी शुभ ग्रह हो तो पवित्र बुद्धि धन प्राप्ती सुख प्राप्ती होती है। बुध यदि लग्न में हो क्रूर ग्रह देखता हो तो शीघ्र लाभ।

तो तुम समझो जातक आर्द्रा नक्षत्र के चौथे चरण में हुआ है।

गोपेश्वरी की कुण्डली

श्री शुभ सम्बत् ॥ २०१० ॥ शाके १८७५ ॥ तत्र भास्करे उत्तरायणे। ग्रीष्म ऋतु: ॥ मासानां मासोत्तमे मासे महा मंगलप्रदे बैसाख मासे। कृष्ण पक्षे। जन्मतिथौ एकादश्याम् ।१३।२२। तदुपरि द्वादश्याम् तिथौ। शुक्र वासरे। धनिष्ठा नक्षत्रे ।३।३५॥ तदुपरि शतभीषा नक्षत्रे। शुभ योगे ।१६।३३। बालव करणे १३।२२ तदुपरि कौलव करणे। एवं परिशोधित पंचाङ्ग शुद्धौ। दिनप्रमाणम् ॥ ३३।५३ ॥ रात्री प्रमाण ॥ २६।७ ॥ अहोरात्रम् ६०।० तत्र घन चालनम्। तत्र सं० कुम्भार्क: गतांशा: ११।२६।५५।३२ सूर्योदयादिष्टम् घटी ।१३।२० ॥ तत समये मिथुन लग्नोदये तस्यां शा: ।२।२१।७।५२। भयातम् ॥७।६॥ भभोग: ५३।३६ ॥ सूर्योदय ५।२३। सूर्यास्त ।७।३॥ तत श्री ब्रह्म वंशोद्भवाय कुलभूषण श्री सियारामदास गौड़ पुण्यभार्यायां कमलनयनी वाम कुक्षौ पुत्री रत्न प्रसूत:। होडा चक्रानुसारेण शतभीषा नक्षत्रे प्रथम चरणे जन्मत्वात। गोपेश्वरी राशी नामन: प्रसिद्धा:। जन्म राशी कुम्भ। स्वामी शनि। वर्ण शुद्र। गण राक्षस:। वश्य मानव। योनि: अश्व। आदि नाड़ी। वर्ग मार्जार। इत्याद्य वर्ग: बिवाह समये परिचिन्तनीयम्। तदनुसार जन्म तारिख १० - ४ - १९५३।

गोपेश्वरी की कुण्डली

श्री शुभ सम्बत् ॥ ...
ग्रीष्म ऋतु: ॥ मा...
मासे। कृष्ण पक्षे ...
द्वादश्याम् तिथौ ...
तदुपरि शतभीष ...
तदुपरि कौलव क...
दनप्रमाणम् ॥ ३३ ...
६०।० तत्र धन च...
दयादिष्टम् घटी। ...
श:।२।२९।०।५ ...
६।३३। सूर्यास्त ।...
श्री सियाराम दास ...
कुक्षौ पुत्री रत्न ...
प्रथम चरणे जन्म ...
जन्म रासी कुम्भ ...
वश्य मानव। ...
इत्यादि वर्ग: विवाह ... हुसार
जन्म तारीख १०-८-१९५३।

13-2०
3-15
10-5

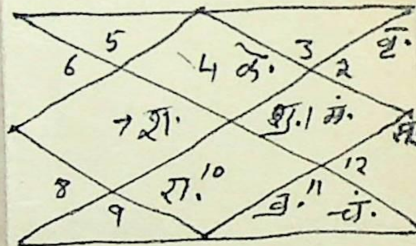
55-55
3-15
52-40

55-55
3-15
52-40

15-17
3-15
12-2

11-53
5-46
6-7
2 2
12 14
3
3-3०
15-17-30 ३४

15-17-30
2-20-0
3-1-17-37-30



...ंवर में जन्म हुआ ...

जन्मस्थान से काशी जी का देशान्तर ३७ मि. ८ सै. २७ सैकिंड का दैनिक अन्तर काशी का और जन्म स्थान का ८ मिनट का काशी से लखनऊ का अन्तर था यह कुण्डली काशी ऋषि केशोपाध्या के पंचाङ्ग से बनाई। जन्म दिन में ११।५ पर हुआ था।

घं। मि।
११।५ जन्म टाइम जन्म स्थान का
३७-८ + देशान्तर
११।४४।८
२७ + दैनिक मिन्टादि अन्तर
११।४४।३५
८+ काशी से लखनऊ तक का अन्तर
११।५२।३५
११।५३ जन्म टाइम सही समझो

५।४५ सूर्योदय
३७।८+
६।२४।८
२७+ मिन्टादि का अन्तर
६।२४।३५
८ + लखनऊ काशी का अन्तर
६।३२।३५
६।३३ पर सूर्योदय सही लखनऊ में

सूर्यास्त
६।१७
३७।८
६।५४।८
२७+
६।५४।३५
८ +
६।१२।३५
६।१३ पर सूर्यास्त लखनऊ में।

गोपेश्वरी की जन्म पत्री का साधन

घं। पं
३।१६ बीता नक्षत्र
१।३७-५०+
४।५३।५०
२० +
४।५३।५०
८ +
४।[illegible]।३५

घं। पल
३।१६ बीता नक्षत्र
१।३७।५०+ देशान्तर
४।५३।५०
२० +
५।१३।५०
२७+
५।१४।१७ बीता नं.

घं। पल
५५।५५ जन्म नक्षत्र
१।३७।५०+ दे
५७।३२।५०
२०+ अन्तर
५७।५२।५०
२७+
५७।५३।१७ जन्म नक्षत्र

दं।पल की संख्या में दंड पल ही जोड़ा जाता है। घंटा मिनट में घंटा मिनट की संख्या जोड़ना चाहिये। तिथि नक्षत्र योग करण की संख्या दंड पल की है इसलिये देसान्तर के दंड पल विपल जोड़े मिन्टादि अन्तर के २० पल जोड़े। २० पल का अन्तर काशी लखनऊ का रहता है। २७ विपल दैनिक मिन्टादि का काशी जन्मस्थान से है।

तिथि के दंड पल
दं । प ।
१२।४२
१।३७।५० + देसान्तर
१४।१६।५०
२० + काशी लखनऊ
१४।३६।५० का अन्तर
२७ + विपल का
१४।४०।१७ मिन्टादि का अं = तिथि का मान

दं। पल योग के
१५।५३ योग
१।३७।५० + देसान्तर
१७।३०।५०
२० + काशी लखनऊ का अंतर
१७।५०।५०
२७ + अपरैल में रैलवे टाइम का
१७।५१।१७ योग का मान

दं । पल
३९।४२
१।३७।५० + देशान्तर
४१।१९।५०
२० +
४१।३९।५०
२७ + अपरैल में रैलवे टाइम का अन्तर २७ सैकण्ड का
४१।४०।१७ करण का मान

जन्मस्थान से लखनऊ तक का संस्कार अन्तर का किया
घंटा । मिनट में
११।५३ जन्म टाइम
६।३३ सूर्योदय
७।३ सूर्यास्त

दंड पल में
३३।५३ दिनमान
५।१४ बीता नक्षत्र
५७।५३ जन्म नक्षत्र
१४।४० तिथि का मान
१७।५१ योग
४१।४० करण
११।२६।४२।२६ पत्रा के सूर्य

अब इन्हीं पर से साधन किया

गोपेश्वरी की जन्म पत्री साधन

अब इष्ट काल गोपेश्वरी का संस्कार कर के काशी के पंचांग से बनाया जन्म स्थान से काशी पूर्व हो तो देसान्तर अन्तरादि घटादो पश्चिम काशी से जन्मस्थान हो तो देसान्तरादि संख्या जोड़ २ दो।

घं।मि।
११।५३ जन्मराइस — ११ रासी के सामने २७ वें अंश के नीचे
६।३३ — २।२७।५
५।२०×२।३० — १३।२०+इष्ट
१०।४० — १५।४७।५
१५।०।६०० — १५।३७।१३ – यह दो राशी के सामने इक्कीसवें अंश के नीचे
१०।१६।०।६०० — ०।८०।५२ = तो
१३।२०।०इष्ट
५।१४ – बीतान०
८।६।भयात — २ रासी २१ अंश ८ कला ५२ विकला
५७।५३ जन्म नक्षत्र — २।२१।८।५२ पर लग्न बना
५।१४ – बीता नक्षत्र — शतभीषा नक्षत्र के प्रथम
५२।३९ भभोग — चरण में जन्म हुआ

६।११४०।१६
६०
५४०
५४०
×
१६०१
१७+
६।१६२०।३२
१२०
१२०
१२०
×
७५४
३२+
६।७८६।१२
७८०
६
६।१३ (०

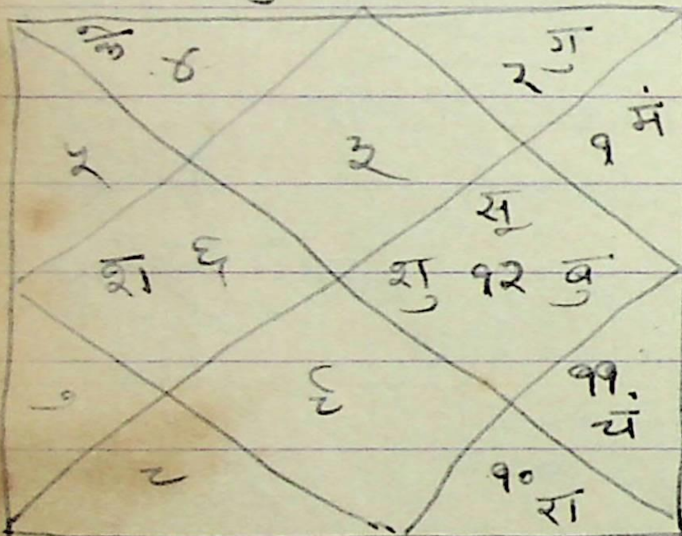
बार। चालनधन सूर्य गति — दं।पल — भभोग में भाग दे के चरण जाना
०।१३।२०×५८।५७ — ४।५२।३६ (१३दं
०।७५४।११६० — ५२
०।७४१।११४० — ×
०।७५४।१६०।११४० — ४।३६ (७ प०
०।१३।६।०।० — ३६
३×६०
४।१८०।४५ वि०
१२०
×
११।२६।४२।२६ — १३।६।४५ प्रथम चरण,
०।१३।६+ — यानी प्रथम चरण में
११।२६।५५।३२ सू।सपष्ट — जन्म हुआ भयात संख्या इससे कम है।

गोपेश्वरी की जन्म पत्री साधन

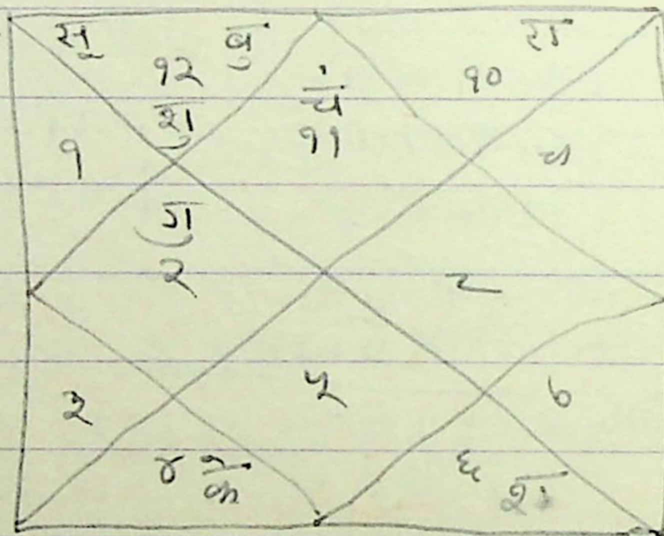
गृह स्पष्ट गोपेश्वरी के

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	०	१०	१	११	६	७	३
२६	२१	२९	४१	२	३३	५	१६	१६
५५	३४	४३	५८	४०	५४	१०	२९	२८
३२	१५	०	४३	४२	२२	०	१	१

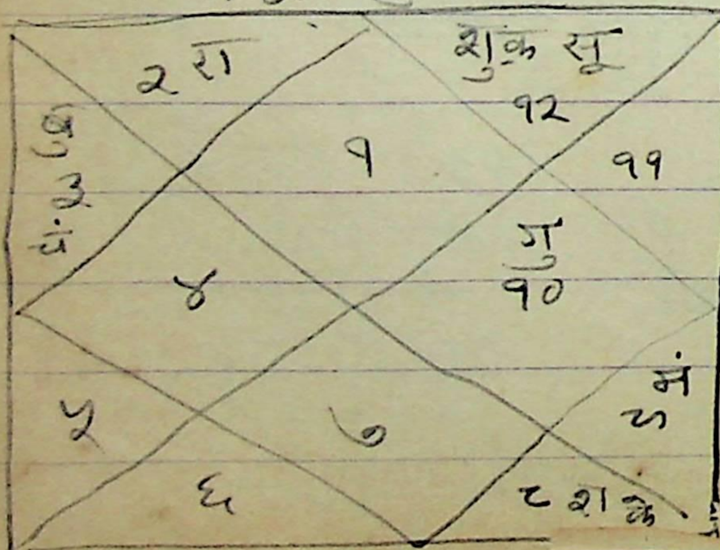
जन्म कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



नवांश कुण्डली



मिथुन लग्न में मंगल के नौमांश में जन्म हुआ गोपेश्वरी का

... हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ।

लग्न में स्थित ग्रहों
॥ का फल ॥

तनु भाव फल = सूर्य-मंगल-शनि इनमें से कोई ग्रह यदि लग्न में स्थित हो तो ज्वर पीड़ा और धन हानि होवे, यदि पापग्रह सहित चन्द्रमा लग्न में बैठा हो तो ज्वर से पीड़ा धन क्षय। शुभग्रह से युक्त बली चन्द्र यदि लग्न में बैठा हो तो सौख्य देता है। बुध शुक्र लग्न में हों तो धन धान्य लाभ,

धन भाव फल = चन्द्र बुध गुरु शुक्र धन भाव में हों तो धन राज्य सुख होवे पापग्रह धन स्थान में हों तो धन हानि होवे। शनि धन में हो राजा से भय कार्य का नाश होगा।

सहज भाव फल = यदि तीसरे भाव में पापग्रह हों तो धन-धर्म-राज्य सुख होगा यदि बलवान पापग्रह हों तो पृथ्वी लाभ हो। यदि शुभ ग्रह हों तो सुख, धन, पुत्र मान, यश, बिलास देते हैं। यदि चन्द्र बली हो कर तीसरे में हो तो आनन्द और भी देता है।

सुहृद भाव फल = ४ में चन्द्र हो तो कष्ट रोग देता है। यदि पापग्रह युक्त चन्द्र चार में हो तो और भी कष्ट कर होवे। यदि शुभ ग्रहों से युक्त पूर्ण चन्द्र ४ स्थान में हो तो सुखद हो। कोई शुभ ग्रह चौथे घर में हों तो बिविध सुख देते हैं। यदि पापग्रह ४ में हों तो सुख धन का नाश हो रोग कष्ट अतुल भय हो।

पुत्र भाव फल = शुभ ग्रह ५ वें में हों तो धन पुत्र सुख हो। शुक्र होतो बहुत ही लाभ प्रद यदि ५ वें में पाप ग्रह हों तो पुत्र-धन-बुद्धि-सुख हरण करते हैं। रोग चौर कलह का भय होवे।

शत्रु भाव फल = यदि ६ में पाप ग्रह बैठे हों तो द्रव्य लाभ, सुख मिले। मंगल अतियन्त लाभ कारी। शत्रुओं का नाश करते हैं। शुभ ग्रह हों तो धन नाश करे क[illegible]। पापग्रह के साथ इसमें चन्द्र रोगकारी है।

यह मुख्य बात ध्यान रक्खो हर राशी से ५वां ९वां घर त्रिकोण होता है। पहला चौथा सातवां १०वां केन्द्र कहलाता है।

स्त्री भाव का फल= पापग्रह सप्तम में हों तो स्त्री नाश करें। सेवक से भय पापग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो व्याधियाँ, भय, यदि इसमें शुभ ग्रह हों तो धन, यश, सुख, मान की प्राप्ती बन्धुओं से सुख मिले।

मृत्यु भाव फल= वर्ष प्रवेश के समय यदि पापग्रह युक्त चन्द्रमा ८ वें स्थान में हो तो मरण, केवल पापग्रह ही बैठे हों तो मृत्युवत कष्ट यदि शुभग्रह हों इसमें तो धातु क्षय रोग धन हानि, मान हानी, कार्य हानि

धर्म भाव फल= यदि इसमें पापग्रह हों तो भाइयों से भय पशुओं को पीड़ा हो सूर्य हों तो आनन्द, शुभ ग्रह हों तो धन धर्म वृद्धि करते हैं।

कर्म भाव फल= इस १० वें घर में स्थित शनि पशु धन का नाश करे सूर्य मंगल इसमें हों तो व्यापार पराक्रम द्वारा धन, सुख दें। अन्य गृह हों तो इस राज्य भाव में तो धन, पुत्र, राजा के संग से सुख देते हैं।

लाभ भाव फल= इसमें यदि सब शुभ वा, क्रूर गृह, बली होकर बैठे हों तो धन समूह यश, सौख्य, की प्राप्ती होवे। अच्छे मित्रों का साथ। बल पुष्टि देते हैं। क्रूर गृह बल रहित, होकर इसमें बैठे हों तो वह धन पुत्र, बुद्धि का नाश करते हैं। यदि बल रहित शुभ ग्रह लाभ भाव में हों तो अल्प फल देते हैं।

व्ययभाव फल = यदि पाप ग्रह १२वें भाव में हों तो नेत्र रोग बिवाद राजा, चोर आदिकों से धन हानि। शुभ ग्रह हों तो अच्छे मार्ग में खर्च करावें। शनि व्ययभाव में हों तो हर्ष वृद्धि देता है।

कोई भी भाव हो, जो अपने स्वामी, या शुभ ग्रह से देखा जाता हो या शुभ गृह से युक्त हो तो उसी भाव की वृद्धि होती है। चाहे शुभ हो चाहे अशुभ सीधी बात है अशुभ गृह को अशुभ वृद्धि होती है। शुभ गृह को शुभ वृद्धि होती है।

यदि लगन का स्वामी लगन को देखता हो। और कार्य भाव का स्वामी कार्य भाव को देखता हो तो। काम पूर्ण होगा। या लगन स्वामी कार्य भाव को। कार्य भाव का स्वामी लगन को देखता हो तो काम पूर्ण होगा। या लगन का स्वामी कार्य भाव के स्वामी को देखे, और कार्य भाव का स्वामी लगन के स्वामी को देखता हो तो काम पूर्ण होता है। और चन्द्र की दृष्टि भी हो तो कार्यसिद्ध हो

यदि शुभ ग्रह लगन को देखे पर लगन का स्वामी लगन को न देख रहा हो तो चौथाई हिस्सा काम का पूर्ण होता है। यदि लग्न स्वामी को शुभ ग्रह न देखता हो तो आधा काम बनेगा कहे। यदि एक भी शुभ ग्रह लगन और लगन स्वामी को देखे तो तीन हिस्सा काम बनजायेगा समझो। यदि शुभ ग्रह लगन वा लगन

स्वामी को देखरहे हों तो पूरा काम बनेगा। यदि लगन स्वामी की लगन पर दृष्टि हो। या दो या तीन शुभ ग्रह लगन को देख रहे हों तो तीन हिस्सा काम बनजायेगा। यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों की नजर से अलग होकर शुभग्रह के लगन को देखे, और लगन के स्वामी की भी लगन पर नज़र हो तो पूरा काम बने। क्रूर दृष्टि वर्जित चन्द्रमा शुभ ग्रह अथवा लगन के स्वामी को देखें तो पूरा काम बनेगा।

जो ग्रह पाप ग्रह से पीड़ित, पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रह की नज़र में हो या अस्त हो गया हो अनिष्ट फल कारक है।

कुण्डली में हर भाव कार्य	गोचर में दिशा की जानकारी
भाव है जिस प्रकार का काम जातक का हो जैसे धन सम्बन्धी कार्य है तो पांचवा स्थान कार्य भाव स्थान है तो पांचवे में जो अंक हो उस अंक का स्वामी कार्य भाव का स्वामी हुआ इसी तरह जिस २ स्थान से जो जो कार्य का विचार होता हो देख लो	लगन पूर्व है द्वितिय तृतिय स्थान पूरब उत्तर का कोना है। चौथा स्थान उत्तर है। पांचवा छठा स्थान उत्तर पश्चिम का कोना है सातवां स्थान पश्चिम है। अष्टम नवम पश्चिम दक्षिण का कोना है। दशम दक्षिण है ग्यारह बारहवा स्थान पूर्व दक्षिण का कोना है।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र केवल सातवें घर को पूर्ण नज़र से देखता है। गुरु ७-५-९ को मंगल ७-८-४ को शनि ७-१०-३ को राहू केतु ७-५-१०-३-९-१२वें को देखते हैं।

गुरु की नज़र ॥ बिवाह का प्रश्न कब होगा ॥
जिस दिशा में होती है उसी दिशा में वर मिलेगा कहो।
और जल्दी बिवाह होगा कहो। अन्य गृहों की दृष्टि के बावत भी
इसी प्रकार शुभा शुभ कहो।

जिस समय कोई प्रश्न करे मेरी कन्या या पुत्र का बिवाह कब होगा तो घड़ी देखो, क्या टाइम है। फिर प्रश्न लग्न को कुण्डली बनाओ, या उस दिन की लग्न सारिणी पत्रा में देखो कि इस प्रश्न टाइम में कौन लग्न प्रवेश कर रही है। बस उसी लग्न की कुण्डली बना लो, जैसे प्रश्न समय लग्न तुला लग्न चल रही है उसी तुला लग्न की कुण्डली बना लो, यथा स्थान गोचर में उसी दिन का पत्रा में देखकर गृह बैठा दो।



फिर देखो लग्न से चन्द्रमा 3-6-10-11 वें 3 में या लग्न में होतो और गुरु लग्न को या चन्द्र को देखता होय यानी गुरु 7-5-9 वें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। तो समझो जल्दी बिवाह होवे। यदि प्रश्न समय बृष तुला कर्क यह लग्न लग्न सारिणि में चल रही होतो शुभ है। यदि इस लग्न को सोम, गुरु, शुक्र, बुध, की दृष्टि होतो भी शुभ। यदि शुभ गृहों से लग्न युक्त हो तो भी शुभ। यदि मेष मिथुन सिंह तुला धन कुम्भ रासी में चन्द्र शुभ शुक्र होतो, और चन्द्र लग्न को देखता होय तो कन्या को बर मिले, यदि शुक्र चन्द्र सम रासी यानी बृष, कर्क, कन्या, बृशीचक, मकर, मीन, रासी में हो या उस रासि के नवांश में होतो वर को स्त्री मिले। यदि कोई कृष्ण पक्ष में प्रश्न करे और चन्द्रमा, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ रासी

स्त्री के तीन स्थान होते हैं (पहला सातवां दूसरा १२ वां तीसरा छठवां आयु स्थान) तीसरा आठवां दूसरा सातवां चार स्थान मारकेश के विचार के है। (तृतियेश अष्टमेश दुतियेश सप्तमेश की महादशा में यह चारों के मालिक जिस गृह को पूर्ण दृष्टि से देखता होगा उसकी अन्तर्दशा में मारकेश लगता है।

कुण्डली में २-३-७-८ के स्थान स्वामी जिस गृह को पूर्ण नजर से देखते हों उनकी अन्तर्दशा में मारकेश हो

में होके के छठे आठवें भाव में होय तो बिवाह भंग होय जानो। यदि शुक्ल पक्ष में समरासी यानी (बृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन, रासी) में चन्द्र होय तो, और इस चन्द्र को सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु, क्षीणबुध, देखता होय तो बिवाह भंग जानो। क्षीण बुध उसे कहते हैं जो बुध सूर्य एक घर में होते हैं, तो उसी को क्षीण बुध समझो। सूर्य के साथ स्वगृही गृह भी हो तो क्षीण बल हो जाता है। यदि प्रश्न लग्न से सातवें (७वें घर में) चन्द्र हो और इसके साथ मंगल शुक्र भी हो तो वैधव्य योग होगा। यदि शनि के साथ चन्द्र, शुक्र हो तो वर को स्त्री छिनार मिलेगी समझो। यदि लग्न से पूर्वे पापगृह हो तो (वह पाप गृह शत्रु अथवा वह पाप गृह) और शत्रु द्वारा देखा जाता हो, नीच रासी का हो, तो स्त्री कुल्टा होगी और बच्चे मर जायेंगे। यदि वर कुण्डली में या प्रश्न कुण्डली में १-५-७-८ में गुरु बुध हो तो स्त्री सती मिलेगी। यदि प्रश्न करते समय शंख भेरी मृदंग घंटे बजें तो शुभ समझो, अवश्य बिवाह होगा इस वर्ष। या कोई स्त्री उस समय पुत्र या कन्या लेके आ जाय शुभ जानो॥ यदि प्रश्न समय कौवा कुत्ता सियार बोले विधवा आ जाय अशुभ जानो। यदि वर कन्या की रासी की स्वामियों से मैत्री न हो तो बिवाह न करे। बिवाह में दस कूट का विचार करे॥ मालिक नौकर = गुरु-शिष्य में भी ये विचार करना जरूरी है॥ जिस वर्ष में या महादशा में गुरु जी कन्या के बलिष्ट होते हैं तो शादी जरूर होती है। पास जरूर होता है।

यदि चन्द्र लगन से

महादशाओं में अन्तर्दशा
कौन २ सी शुभाशुभ होती हैं।

सूर्य की महादशा में यदि चन्द्र मंगल गुरु की अन्तरदशा आजाय तो शुभ फल देगी। इसी तरह चन्द की महादशा में बुध गुरु शुक्र की अन्तर्दशा शुभप्रद है। मंगल की में सूय चन्द की गुरु की शुभ प्रद है। बुध की महादशा में गुरु शुक्र की अन्तर्दशा शुभ है। गुरु की दशा में सूर्य-चन्द्र-मंगल की अन्तर्दशा शुभ है। शुक्र की दशा में बुध गुरु शनि की अन्तर्दशा शुभ है। शनि की दशा में गुरु-बुध-शुक्र की अन्तर्दशा शुभ है। बाकी सब अशुभ अन्तर्दशायें समझो।

नारी के तीन स्थान प्रमुख है १-२-७ वां
१२-३-६ यह स्थान आयु के हैं।
२-३-७-८ वां यह स्थान मारकेश के हैं।
तृतियेश, द्वितियेश, सप्तमेश, अष्टमेश की महादशा में यह मालिक चारों में से कोई हो कुण्डली में जिस गृह को पूर्ण नज़र से देखते हों उस ग्रह की जब अन्तर्दशा लगेगी तब मारकेश लग जाता है तब जप पाठ पूजन करवा देना चाहिऐ

समेत ... नवांश में जन्म हुआ
... हुआ। मंगल के ...

"दीप सिखा की कुण्डली"

मंगल की महादशा में जब बुध की अन्तर्दशा आयेगी तब मारकेश लगेगा

श्री शुभ सम्बत् ॥ १९७९ ॥ शाके १८०४४ ॥ श्रावण मासे शाल्मीबा १२।११ तदुपरि कृष्ण पक्षे ॥ पञ्चम्याम तिथौ ॥ शुक्र वासरे ॥ पूर्वा भाद्र नक्षत्र

४५४६ १५ जुलाई सन् १९२२ जन्म टाइम रात्री १२।४० पर घं. मि.

सूर्योदय ॥ ५।१३ ॥ सूर्यास्त ६।४७ ॥ दिनमान ३३।४६ घं. मि. घं. मि.

गर करणे ५४।५६ ॥ भयातम् ६६।२१ ॥ भभोग: ६६।३५ ॥

मिश्रमान ४६।५६ ॥ तत्र ऋण चालनम् ॥ २।५८।४२ ॥

तत्र सं कर्कार्क: गतांश ॥ ३।१।२१।२१ ॥ सूर्य सपस्ट:

२।२६।५२।३ ॥ इस्ट काल ४८।३२ ॥ तत् समये मीन

लग्नोदय तस्यांश: ११।२।२२।५५ ॥ कर्के नवमांश:

तत् श्री वैश्य वंशोद्भवाय तस्यात्मज लाला दुर्गा

प्रसाद् जी तस्यात्मज लाला बाबूरामजी अग्रवाल गृहे

भार्यायां वाम कुक्षौ पुत्री रत्न प्रसूत: ॥ होरा चक्रानुसारेण

शुभ नाम दीप सिखा नाम्न: प्रसिद्धा: । जन्म राशि

मीन । स्वामी गुरु ॥ विप्र वरण ॥ गण मनुष्य

वश्य: जलचर ॥ योनि: गज । नाड़ी आदि तदनसार

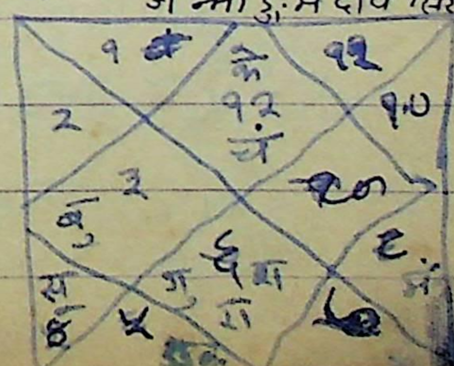
चतुर्थ चरण में जन्म

जन्म तारीख १५-७-१९२२

तत् चन्द्राश: ११।४।३५।१९

११।१६।३०।८ चन्द्र लग्न

चन्द्र सपस्ट किया मीन राशी हुई



~~१२। बीता घंटा~~
~~१२।४० जन्म टाइम रात को~~
~~२ ६।४६ - सूर्यास्त~~
~~६।४६~~

वार उधार लिया १ दिन का वार होता है तो ६६+६० ६. दंड का एक वार हुआ

घं। मि।
१२।४० जन्म टाइम रात का
६।४६ - सूर्यास्त टाइम
५।५३ × २।३०
१०।१०६
१५०।१५६०
१०।२५६।१५६०
१४।४२।३० रात्रिइष्ट
३३।४६ + दिन मा।
४८।३१।३०
४८।३२।इष्ट मा।

२।१२६।५२।२ सूर्य सपस्ट
लगन बनाओ
२ के सामने २७ के अंश के नीचे
१०।५७।४८ संख्या मिली
४८।३२।+
५६।२२।४८ यह संख्या

वार।द।प।
२।४६।५६ मिश्र मा।
६।४८।३२ - इष्ट का और वार
२।५८।२४ धन चालन
वार। धन चालन। सूर्य गति
२।५८।२४ × ५७।४६
११२।३२४८।१३४४
११४।३३०६।१३६८
११२।३३६२।४६५०।१३६८
४।२७।१६।५२।४८ गणन फल

३।१४।२१।२१ पत्रा के सूर्य
४।२६।१७ ~~सपस्ट~~ गुणन फल
२।२६।५२।२ सूर्य सपस्ट

घटे अंश के नीचे
~~१८।२८।१३~~
~~१६।५२।३०~~ + रात्रिलग्न
३५।१०।४३
४।२४।१०।४३

११ के सामने २ के नीचे ५६।२२।५५ संख्या मिली
११।२।२२।५५ लगन बनी मीन लगन में जन्म हुआ

... में रवि मंगल रहे

६० में से
४२।११-बीता नक्षत्र शतभीषा है घटाया
१७।४९
४८।३२+१८ काल जोड़ा
६६।२१ भयात् शतभिषा बीत चुका

दं।प.
१७।४९
४८।४६+ जन्म न. का मान पूर्वा.भा.
६६।३५ भभोग इतना दं प. जन्म नक्षत्र का भोग करेगा
६०x
३९६०
३५+ भयात् पल

पल बने ३९९५) २३८८६० (५९८
१९९७५
३९११०
३५९५५
३१५५
६०x
३९९५) १८९३०० (४७ प.
१५९८०
२९५००
२७९६५
१५३५
६०x
३९९५) ९२१०० (२३
...

रा। अं। क। वि
११।१६।३७।२३ चन्द्रस्पस्ट

नक्षत्र पलों पर २ से गुणा करना हमेशा
भूल जाती हूं बाद में सुधार किया है
ध्यान से देख लेना

दोष लिखा भयात के द.पल
६६।२१
६०
३९६०
२१+
३९८१
६०x
२३८८६०
नक्षत्र संख्या
२५x६०
१५०० पल

दं। प। वि.
५९।४८।१९
१५०० + नक्षत्र पले
१५५९।४८।१९
२x
३११८।३६।३८

६) ३११८ (३४६
२७
४१
३६
५८
५४
४x६०
२४०
३६+
६) २७६ (४६
२४
३६
३६
०x६०

३०) ३४६ (११ रा.
३०
४६
३०
१६ अं.

दीप सिखा

भयात
६६।२१
भभोग

१६।३८।४५ प्रथम चरण
२×
३३।१७।३० द्वितीय चरण

४) ६६।३५।१६
६४
२×६०
१२०
३५+
४।१५५।३२
१५२
३×६०
४।१८०।४५
१८०
×

१६।३८।४५
३×
४९।५६।१५ तृतिय चरण

१६।३८।४५
४×
६६।३५।० चतुर्थ चरण

चतुर्थ चरण में जन्म हुआ
पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ चरण में
चतुर्थ चरण मीन राशि है

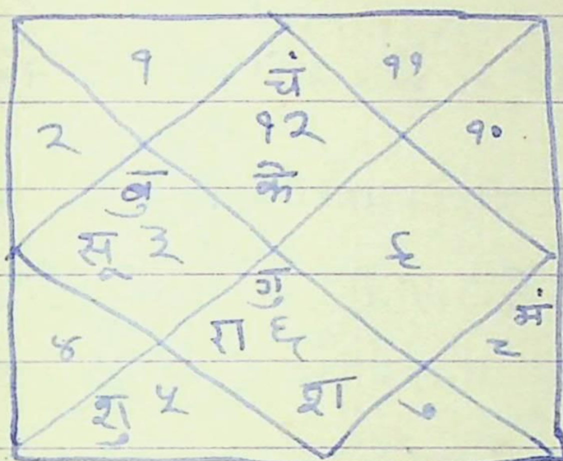
६।१३५।२
१२०
१५
६।११६।१
६०
५६
६।१८०।३
१८०
०
६।१५५।३
१२०
३५

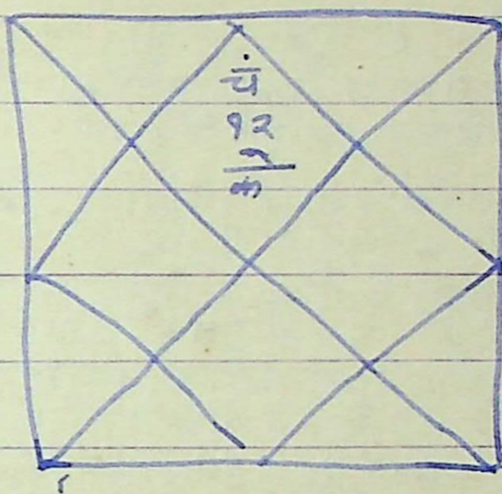
गृह स्पष्ट:

	सू	चं	मं	बु	गु	शुक्र	श	रा	के
	२	११	७	२	५	४	५	५	११
	२६	१६	२१	१६	२१	१०	१२	१६	१४
	५२	३७	२४	२३	११	चा	४०	३	३
	२	२३	१८	११	२४	४८	१६	४६	४५
गति	५६		०	८६	५	६६	३	३	३
	५७		४०	२०	१०	१०	१०	११	११

जब अष्टमी से पहले जन्म होता है तो मिश्रमान से इष्ट ही घटाया जाता है ऋण चालन हो जाता है। यदि अष्टमी के बाद जन्म हो तो इष्ट से मिश्रमान घटाया जाता है धन चालन माना जाता है।

जन्म कुण्डली दीपसिखा की चन्द्र कुण्डली

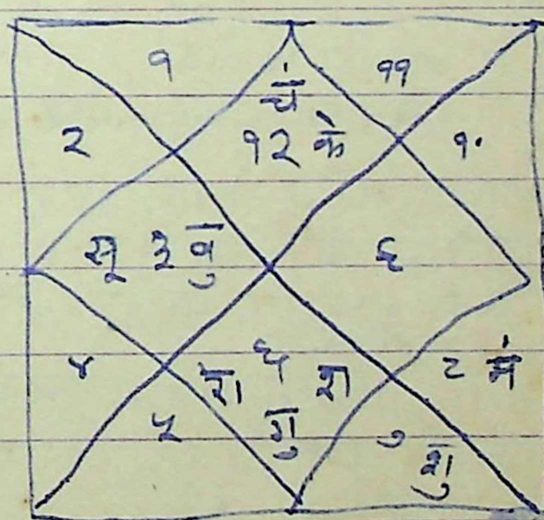




पंडित जी के हिसाब से मेष लगन में जन्म दीपसिखा का हुआ है।

जन्म कुण्डली चन्द्र कुण्डली





1) विवाह योग = यदि सप्तमेश शुभ युक्त न होकर छठे ८वे १२वें भाव में हो तो। और या नीच का होकर सप्तमेश कहीं बैठा हो या अस्त होकर बैठा हो तो स्त्री सुख नहीं मिले

2) या छै ८-१२वे भाव का स्वामी सातवें स्थान पर बैठा हो। बैठा भी हो तो उस शुभ ग्रह की नज़र न हो तो। अथवा सप्तमेश ६-८-१२वें भाव का स्वामी हो तो स्त्री सुख नहीं मिले।

3) यदि सप्तमेश १२वें भाव में हो, लगन स्वामी वा राशी का स्वामी, (वा मानो) जन्म राशी का स्वामी सातवें स्थान पर हो तो जातक का विवाह सुखद नहीं होगा।

4) यदि शुक्र चन्द्रमा साथ होकर किसी भाव में बैठे हों। और शनि मंगल सातवें भाव में बैठे हों तो भी विवाह सुखद नहीं होगा।

5) यदि लगन में सातवें में बारहवें मे पाप ग्रह बैठे हों पांचवे भाव में चन्द्रमा निर्बल होकर बैठा हो तो विवाह सुखद न होगा।

6) किसी२ का मत है ७वे १२वें मे दो पापग्रह बैठे हों या दो से अधिक हों और चन्द्रमा पांचवें में हो तो जातक स्त्री पुत्र से रहित होगा।

7) शनि और चन्द्रमा के सातवें स्थान पर होने से प्रायः जातक का विवाह नहीं होता यदि विवाह हो भी तो स्त्री बांझ रहेगी।

8) सातवें भाव में पाप ग्रह रहने से स्त्री सुख में बाधा रहेगी।

9) शुक्र बुध के साथ सातवें में रहने से जातक कलत्रहीन होगा। यदि शुभ ग्रह की सातवें पर नज़र हो तो अधिक अवस्था में सुख मिले।

10) यदि लगन से सातवें भाव से अथवा चन्द्र से सातवें भाव में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह की नज़र हो या अपनी राशी के स्वामी की नजर हो तो सुखद

11) सूर्य सपस्ट मे ४ राशी १३ अंश २० कला जोड़ कर जो आवे वह धूम होता है यदि वही सातवें स्थान का सपस्ट हो तो विवाह नहीं होता।

12) यदि शुक्र मंगल सातवें भाव में हो तो जातक स्त्री रहित होता है। शुक्र और मंगल के नवमें या पांचवे भाव में रहने से स्त्री रहित होता है।

13) यदि शुक्र किसी पाप ग्रह के साथ होकर ५-७-९ वें में बैठा हो तो स्त्री सुख नहीं होता।

14) शु-गुरु-शनि-सब के सब शत्रु नवांश में हो या नीच हो वह जातक स्त्री रहित हो पुत्र रहित हो। दाम्पत्ति जीवन सुखद न हो।

यह लड़के के विवाह में कुण्डली का विचार होगा।

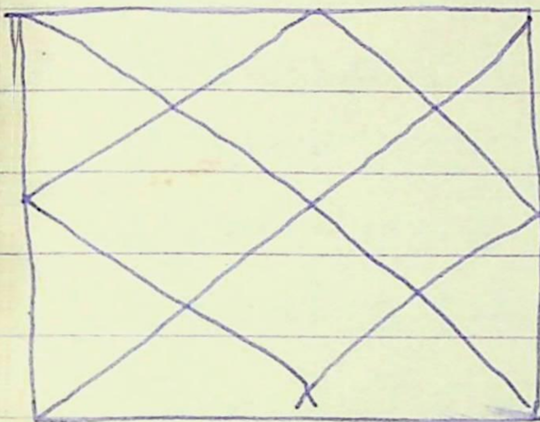
नवांश जानना हो कि शुक्र गुरु शनि शत्रु के नवांश में है या नीच ऊंच हैं तो प्रश्न लगन बनाकर अंश कला देखलो नवांश का कौन सा टुकड़ा है फिर उस टुकड़े का स्वामी कौन है। लगन बनाकर गणना किसकी किससे होती है। मेष सिंह धनु की मेष से, वृष कन्या मकर की मकर से। कर्क वृश्चिक मीन की कर्क से। कु. मि. तु. की तुला से गणना होती है।

समक धनगत मकर ... नवांश ...

स्त्री कितनी होंगी इसकी जानकारी ।।

१) यदि सातवें में गुरु बुध हों तो १ स्त्री होगी। यदि सातवें में रवि मंगल रहे तो १ स्त्री होवे।

२) यदि बहुत से पापग्रह दूसरे सातवें स्थान में हों, या द्वितियेश सप्तमेश पर पापग्रह की दृष्टि हो तो जातक के ३ विवाह होंगे। बाबू राधे श्याम की कुण्डली देखो



॥ चन्द्रमा का अरिष्ट ॥

यदि लग्न से, या गोचर से, १२-६-८-७-१ इनमें से किसी अस्थान में चन्द्रमा हो और उसको पाप गृह देखते हों तो वह चन्द्रमा उस प्राणी को अशुभ फल अथवा मृत्यु देता है। यदि चन्द्रमा को मंगल देखता हो उस प्राणी को अग्नि से भय या उसे किसी हथियार से भय होता है। यदि चन्द्र को शनि राहू केतू देखते हों तो शत्रुभय होता है। सूर्य चंद्र को देखता हो तो चन्द्रमा वात जनित रोग और दरिद्रत्व प्रदान करता है। केवल गुरु जी के देखते हों तो चन्द्र शुभ फलदायक है।

यदि दो पाप गृहों से युक्त लग्न को शनीचर देखता हो तो या लग्न में शनि भी हो तो मानसिक व्याधि रोग जातक को देता है। मुन्याह जन्म समय में १२-४-८-६-७- इनमें से किसी स्थान में स्थिति हो और लग्न से ८वें स्थान विराजमान हो और उसे पाप ग्रह देखरहे हों तो मृत्यु होवे।

... गुरु ग्रह आधि... सार्क कहा गया है।

सद्गुरु भवन

॥ चन्द्रमा का अरिष्ट ॥

यदि लगन से, या गोचर से, १२-६-८-७-१ इनमें से किसी अस्थान में चन्द्रमा हो और उसको पाप ग्रह देखते हो तो वह चन्द्रमा उस प्राणी को अशुभ फल अथवा मृत्यु देता है। यदि चन्द्रमा को मंगल देखता हो उस प्राणी को अग्नि से भय या उसे किसी हथियार से भय होता है। यदि चन्द्र को शनि राहू केतु देखते हों तो शत्रुभय होता है। चंद्र को सूर्य देखता हो तो चन्द्रमा वात जनित रोग और दरिद्रत्व प्रदान करता है। केवल गुरु जी देखते हो तो चन्द्र शुभ फलदायक है।

यदि दो पाप ग्रहों से युक्त लगन को शनीचर देखता हो तो या लगन में शनि भी हो तो मानसिक व्याधि रोग जातक को देता है। मुन्थाह जन्म समय में १२-४-८-६-७-इनमें से किसी स्थान में स्थिति हो और लगन से ८वें स्थान विराजमान हो और उसे पाप ग्रह देख रहे हों तो मृत्यु होवे।

प्रतिये गृह अपने स्थान से तीसरे और १०वें स्थान को १पाद दृष्टि से देखता है। ७ वें पांचवें स्थान को दो पाद (चरण) दिष्टि से देखता है। औ ४-८वें को तृपाद दिष्टि से देखता है। सातवें स्थान को सब पूर्ण दिष्टि से देखते हैं।

७-३-१०- वें स्थान को	शनि
५-७-९ वें	गुरु
४-८-७वें	मंगल
५-७-९-१२-......	राहु
७-३-१० ...	केतू
७-	सूर्य
७-	चंद्र
७	बुध
७-	शुक्र

१-३-४-५-७-८-९-१० इन स्थानों को तो सभी गृह किसी हद तक किसी न किसी दृष्टि से देखते हैं ही। परन्तु हर गृह १-२-६-११-१२- इन स्थानों को एकदम नहीं देखते हैं

राहू २-१०, वें स्थान को त्रिपाद दिष्टि से ३-४-६-८ वें स्थान को अर्ध दिष्टि से अपने स्थान और ११ वें स्थान को नहीं देखता है राहू।

यह वर्ष कुण्डली में देखा जाता है।

हर गृहों की दृष्टि चार प्रकार की होती है। पहली दृष्टि प्रत्यक्ष स्नेह करने वाली होती है। दूसरी गुप्त स्नेह करने वाली होती है। तीसरी गुप्त बैर कराने वाली होती है। चौथी प्रत्यक्ष बैर कराने वाली होती है। जन्म कुण्डली में बैठे हुये गृह अपने स्थान से ७-५ वें स्थान के बैठे गृहों को देखते हैं, वह उनकी दृष्टि बलवान होती है। हर गृह ३-११ वें स्थान में बैठे गृह को जो देखता है, वह दृष्टि गुप्त स्नेही काम बनाने वाली होती है।

लगन से छठे स्थान तक



दहिना भाग

बाम भाग इधर दृष्टि बलवान सप्तम से १२ वें तक

६२

अपने स्थान से, गृह चौथे दशवें पर बैठे गृहों को देखता है तो उस दृष्टि में गुप्त रूप से शत्रु भाव रखता है। यह दृष्टि १५ कला की होती है। सातवें में और पहले में बैठे हुऐ गृह यदि परस्पर एक दूसेर को देखते हैं। यदि एक ही स्थान में बैठे हों वह दृष्टि प्रत्यक्ष बैर कराती हैं। दुष्ट फल देने वाली कार्यों का नास करने वाली कलह करने वाली दृष्टि मानी जाती है। यह तीनों दृष्टि १२ अंश के अन्दर मानी जाती है।

सूर्य के १५ अंश चन्द्रमा के १२ अंश मंगल के ८ गुरु के ७ अंश शुक्र के ७ अंश और शनि के ७ अंश दीप्त कहलाते हैं। १२ हों राशियों में दक्षिणा की अपेक्षा बाम दृष्टि बलवती होती है। लगन से छठे स्थान तक दक्षिणा माना जाता है। सप्तम से द्वादश स्थान तक बाम भाग कहलाता है। इसी तरह दसवें स्थान से, चौथे स्थान तक जो दृष्टि पड़ती है वह बलवती होती है। यदि दृष्टा दृश्य दोनों ग्रह एक ही स्थान पर पड़े हों या परस्पर उनकी दृष्टि पड़ती हो तो अतियन्त लाभप्रद

॥ गृहों की दशा १० होती हैं॥

अपने उच्च रासी में स्थित ग्रह दीप्त कहलाता है। नीच रासी मे स्थित ग्रह दीन = मित्र के घर में स्थित ग्रह मुदित = अपनी राशी में स्थित ग्रह स्वस्थ = शत्रु के घर में सुप्त = पाप ग्रहों से देखा जाने ग्रह पीड़ित = नीचाभिलासी यानी गुप्त या प्रत्यक्ष बैर रखने वाल, हीन = अस्त ग्रह मुषित = उच्चाभिलाषी ग्रह सुवीर्य = शुभ वर्ग में सुन्दर रश्मी युक्त ग्रह अधिवीर्य संज्ञक कहा गया है।

बारहों भावों से किन २ बातों का " विचार करना चाहिये "

चाहे प्रश्न कुण्डली का गोचर हो चाहे वर्ष लग्न का हो।

तनु भाव से = शरीर की दुर्बलता पुष्टता, रंग, मसा, चिन्ह, आयु अवस्था, प्रमाण, सुख, दुःख, जाति, आचरण, बुद्धिमान, ज्योतिषी,

धन भाव से = सोना-चांदी-रत्न-लोहा, सीसा, कांसा, धातुओं का और मित्रता का विचार करना चाहिये।

सहज भाव से = भाई बहन, नौकर, मार्ग, पिता से सम्बन्धी कार्य, हानी, साहस, इन बातों का विचार करे।

सुहृद् भाव से = पिता का धन, गढ़ा हुआ धन, खेती बारी, घर भूमी, मिलेगी की नहीं यह विचार करे।

पुत्र भाव से = मंत्रणा यानी सलाह - धनोपार्जन का उपाय, गर्भ, विद्या, पुत्र इन बातों का विचार करे।

शत्रु भाव से = मामा का, शारीरिक व्याधि, शत्रु, गाय, भैंस, घाव पराधीनता, स्वाधीनता,

स्त्री भाव से = रोजगार - स्त्री, नष्ट वस्तु मिलेगी की नहीं, लड़ाई झगड़ा, खोई वस्तु जो रास्ते से गायब हुई हो। विस्मरण यात्रा का विचार । सम्बन्धी बातें विचार करे।

सप्तम भाव में शुभाशुभ कोई ग्रह बैठा हो अशुभ फलदायक

अष्टम भाव = प्राचीन द्रव्य, मरे हुये प्राणी का धन, संग्राम, मरण शत्रु, दुर्गस्थान - नष्ट - परिवार - मानसी व्यथा का विचार करे।

नवमभाव से = विलास - यात्रा - धर्म - कर्म का उपाय

दशम भाव से = रुपया - पैसा - पुण्य - राज्यविस्तार - पैतृक सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाली बातों का विचार करना चाहिये

ग्यारहवे भाव से = अन्न का भाव - कन्या - मित्र, चौपाये - धन सम्बंधी हाथी, घोड़े - पशु आदि - राजा का द्रव्य, कुटुम्ब, धन से अधिक से अधिक लाभ होने का उपाय का बिचार करें।

बारहवें भाव से = शत्रु पर रुकावट - पीड़ा - सभी प्रकार के खर्च का विचार

बलवान गृह का लक्षण बताते हैं। लगन चतुर्थ सप्तम दसम चार भाव केन्द्र अथवा कंटक, चतुष्टय, के नाम से बिख्यात हैं। इन स्थानों में पहुंचे सभी गृह चाहे शुभ हो, चाहे अशुभ गृह हो सबसे अधिक बली होते हैं। १ - १० - ७ - ४ - ११ - ५ - ९ स्थान में सभी गृह बलवान होते हैं, चाहे पाप गृह हो, चाहे शुभ। निष्कर्ष यह निकला १२ भावों में से ४ - ८ - १२ वां भाव अशुभ फल देने वाले हैं परन्तु यदि इन भावों में यदि गृह दीप्तअंशों का अतिक्रम करके बैठा हो तो शुभ होजाता है। दीप्त अवस्था में स्थित गृह कार्य सिद्धि करता है दीन में दुःख का आगमन। स्वस्थ में कीर्ती लक्ष्मी प्राप्ती। मुदित में = अतियन्त आनन्द। सुप्तावस्था में = शत्रु भय दुःख पीड़ित मे = धन हानि। मुषित और हीन दशा में = कार्य और धन नाश। सुवीर्यावस्था में = हाथी - घोड़ा - सोना, रत्न, सम्पत्ति लाभ। अधिवीर्यावस्था में = राज्यलाभ मित्र और धन का सङ्गम होता है।

धो, घे ... डॉ ... दे - राजा

अधिक ... विवेक ... लाभ होने

त्रु पक्ष ... बड़ा. सभी

... ट कोट रहे हैं

लक्षणों ... यहीं ... न चतु

कं ... वाप के ... के नाम

सभी ... वंश्चाओं ... हो, चाहे

ते हैं ... भोग ... - 8 - १

ते हैं ... प्रभावि ... ह हो,

में से ... हो जायगा ... भाव

भावों ... कहीं ... दीप्तअंशो

है। दीप्त ... भोग ... में स्थित

प्रगम ... हारा था ... में कोटि

नन्द ... दोनों में = शु

मुबि ... दशा में

= हा ... सोना रत्न

में = राज्यलाभ मित्र और

विवाह में मारक ग्रह = विवाह में मंगल १-४-७-८-१२ वें स्थान पर गोचर में हो या कुण्डली में हो तो जातक मंगली होता है। मंगल यदि मेष वृश्चिक मकर का हो तो महा मंगली कहलाता है। ऐसे योग में जब दोनों मंगली हो तो विवाह करे वर्ना दोनों को मारक योग है। इसी प्रकार यदि शनि कन्या की कुण्डली में लग्न से अष्टम भाव में या अन्य कोई पाप ग्रह विशेष कर शत्रु के घर में हो या नीच हो अथवा नीच रासी नीच नवांस नीच द्रेक्काण का हो तो पति का नाशक है। यदि वर की कुंडली में दूसरे सातवें स्थान में पाप ग्रह हों तो स्त्री नाशक है। मंगल शनि दोष हो तो मंगल शनि दोष वाले के साथ विवाह करे।

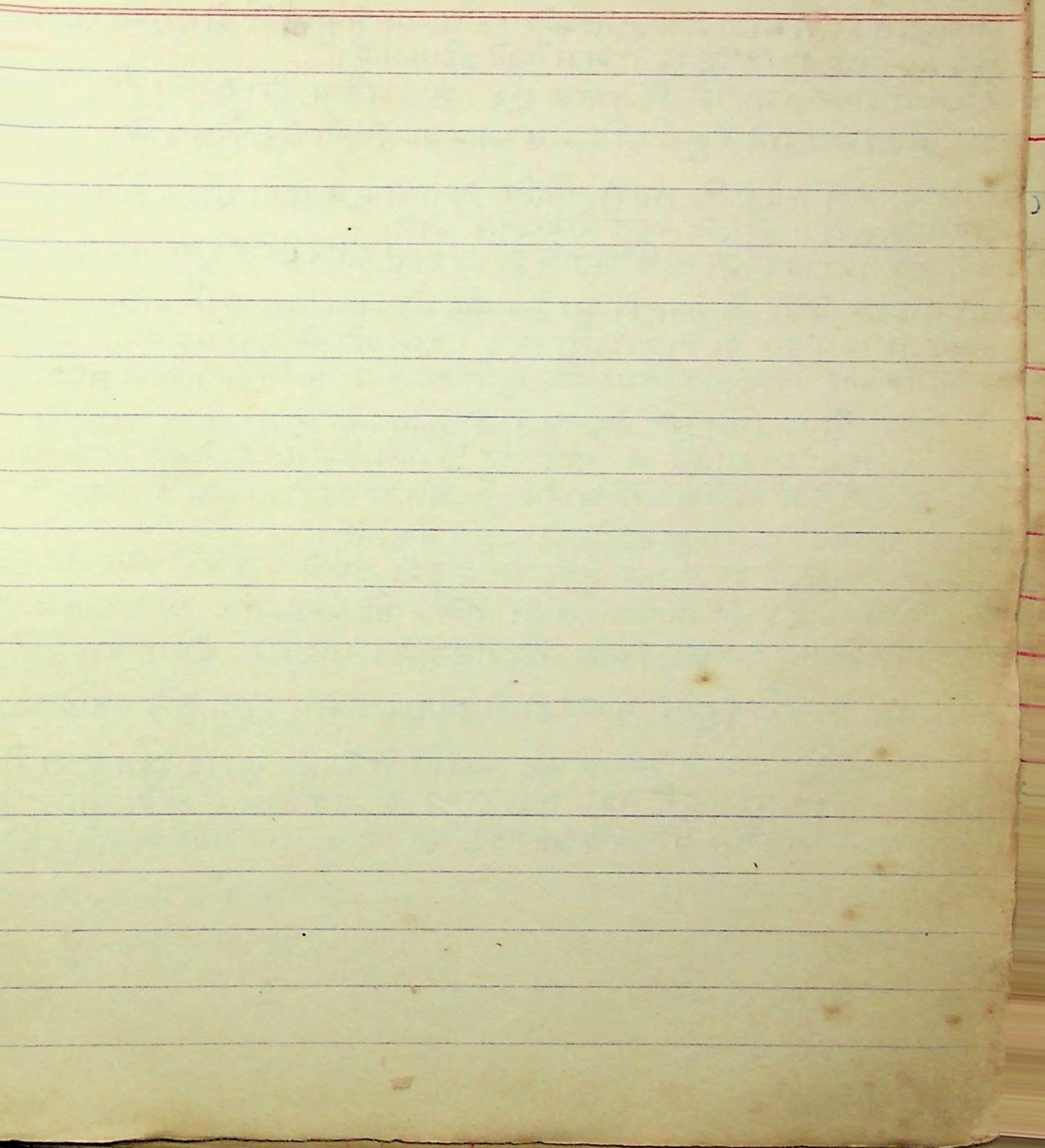
यदि मंगल पर शनि की पूर्ण दृष्टि या सप्तम स्थान पर मंगल शनि की पूर्ण नज़र हो तो वैधव्य योग होता है।

यदि सातवें स्थान का स्वामी चन्द्रमा हो यानी सातवें स्थान में ४ अंक हो और वह केतु के साथ हो। या सातवें स्थान में बुध चन्द्रमा के साथ हो तो भी वैधव्य योग है क्योंकि चन्द्रमा के शुक्र बुध अति शत्रु है। गुरु की नज़र सप्तम पर हो पर यदि गुरु नीच रासी का है तो भी वैधव्य योग है।

यदि कन्या की जन्मरासी वर की सप्तम रासी की न हो या सप्तम स्थान के स्वामी जिस रासी में हो उसके त्रिकोण वाली रासी की भी रासी कन्या की यदि न हो ऐसे वर कन्या के विवाह से पुत्र भाव क्लेशित रहता है (यदि पुरुष की ८ वीं रासी जो हो उसमें कन्या की जन्म रासी हो तो मैत्री न रहे। यदि १२ वीं रासी जो वर की हो उसमे कन्या की जन्म रासी पड़े तो विशेष अनिष्ट होता है।

स्त्री का विचार सातवें स्थान से। सौतिन का विचार छठे से १२ वें स्थान से किया जाता है। यदि तीसरी स्त्री का विचार करना हो तो। १२ वें से छठे यानी पंचम स्थान से विचार किया जाता है। उससे भी ज्यादा स्त्री का विचार करना हो तो क्रमशः छठे स्थान से विचार होता है। शुक्र स्त्री कारक ग्रह है। अतः शुक्र से भी स्त्री का विचार होता है और २ धन स्थान से स्त्री सम्बन्धी बातों का विचार होता है।

स्त्री के रंग रूप का विचार सप्तमेश से या सातवें घर पर जिसकी पूर्ण नज़र हो उस ग्रह के रंग का बताये। या शुक्र बलवान हो या सप्तमेश बलवान हो उससे



नेत्र विचार :-

सिंह लग्न में सूर्य चन्द्र हों तो और उन्हें शनि मंगल देखते हों तो नेत्रहीन होवे
यदि इन सूर्य चन्द्र को शुभाशुभ ग्रह दोनों देखते हों तो बुदबुद नेत्र होवें। व्यय भाव
में चन्द्रमा हो तो बायां नेत्र हानी करे। और व्यय में सूर्य हो तो दाहिनी आंख जा
यदि शुभ ग्रह की दृष्टि रहे तो कम दिखे पूरी न जाये।

यदि सूर्य जन्म लग्न में हों जातक सूर (संग्रामप्रिय) हो। स्तब्ध रहे (चिरकार्य कर्ता)
और मंद्य नेत्र होवे। सूर्य यदि मेष लग्न का हो तो नेत्र रोग होवे।

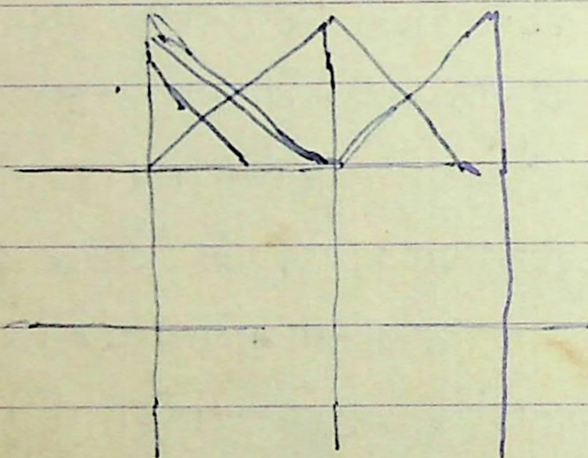
सिंह लग्न में सूर्य हो तो रात में न दिखे। तुला में सूर्य हो तो दरिद्र होवे। कर्क
लग्न में सूर्य हों तो बहुत छोटी आंखे होवें।
यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों १२वें भाव में हों तो दोनों आंखें जावें। या पापग्रह छठे
आठवें भाव में हों तो नेत्र विकार हो। यदि छठे में पापग्रह हों तो बायीं आंख जावे
आठवें में पाप ग्रह हों तो दाहिनी फूटे। शुभग्रहों की नजर पड़ जाय तो फूटे नहीं
केवल विकार होकर रह जाय। यदि सूर्य लग्न या सातवें भाव में हों और शनि
उन्हें देखता हो या शनि सूर्य के साथ हो तो जातक की सीधी आंख नष्ट होवे।
यदि लग्न में या सातवें में सूर्य राहू हों साथ में मंगल हो तो बाईं आंख नष्ट हो
यदि अष्टम और १२वें भाव में षष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बाम नेत्र नष्ट करे
अष्टम भाव का पापग्रह दहिने नेत्र को नष्ट करे।
यदि मंगल द्वितियेश होकर सूर्य चन्द्रमा से आठवें भाव में हो और शनि छठे
या १२वें भाव में हो तो जातक अन्धा होवे। यदि चन्द्रमा ८-१२-६ भाव में हो
और शनि मंगल के साथ हो तो नेत्र नष्ट होवें। यदि चन्द्र छठे सूर्य आठवें
१२वें स्थान पर शनि दूसरे मंगल हो तो निश्चय नेत्र हीन होवे। यदि दूसरे
भाव के स्वामी के साथ लग्न का स्वामी होके ६-८-१२ स्थान पर हो
नेत्र नष्ट हो। यदि द्वितियेश शुक्र चन्द्र के साथ होकर कहीं लग्न में
हो तो रतौंधी आवेगी। यदि द्वितियेश उच्च हो और शुभ ग्रह देखते हों तो न नष्ट होवे

गर्भाधान के समय का निर्णय

निषेक - स्त्री की जन्म राशी से ३-५-७-५ [illegible] १-२-४-५-७-८-९-१२ राशियों में चन्द्र यदि मंगल से देखा जाता हो। ऐसे समय में संगम करे। तो गर्भ रहे। इस गर्भ योग रज के समय चन्द्रमा पुरुष के उपचय ३-६-१०-११ राशी में हो उसे बृहस्पति देखता हो तो पुरुष को संगम करना चाहिये स्त्रियों के ऋतु काल से १६ रात तक गर्भाधान होता है तब तक ऋतु काल कहा गया है। उस महीने के तीसरे दिन से १६ दिन समझना। ४ रात संगम न करे पहले दिन से चौथे दिन तक) फिर १२ रात छठे दिन, आठवें, दशवें, बारहवें चौदहवें १६वें दिन संगम करे तो निश्चय पुत्र होगा। क्रमशः यह भी कहा गया है। चौथी रात का निषेक अल्पआयु वान पुत्र है। ५वीं रात कन्या को होती है। छठी वंशकर्ता पुत्र को। सातवीं रात बन्ध्या को। आठवीं रात पुत्र को। नवीं सुन्दरी कन्या को। १०वीं रात का गर्भ प्रभाव शाली पुत्र का। ११वीं रात कुरूपा कन्या होगी। १२वीं रात का गर्भ श्रीमान पुत्र को। १३वीं रात का गर्भ कुलटा कन्या देता है। १४वीं रात का गर्भ धर्मात्मा पुत्र दे। १५वीं रात लक्ष्मी कन्या को होती है। १६वीं रात का गर्भ सर्वज्ञ पुत्र देता है। पहले गर्भाधान समय की लगन बनाओ फिर लगन से तीसरे भाव में सूर्य हो तो पुत्र उत्पन्न होता है। लगन से त्रिकोण। ५। ९ में सूर्य हो तो पुत्र हो। गर्भाधान लगन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु पुत्र होता है विद्या का पूर्ण ज्ञान वाला होवे। प्रश्न काल में बलवान लगन हो सूर्य चन्द्र गुरु विषम रासी में हों या विषम नवांश में हों तो पुत्र हो। यदि ये ग्रह सम रासी या सम नवांश में हों तो कन्या हो। बलवान गुरु सूर्य विषम रासी में हों तो पुत्र हो। बलवान चन्द्र शुक्र मंगल सम रासी में हों तो कन्या होवे। गुरु शुक्र चन्द्र सूर्य मंगल द्विस्वभाव की रासी में ३-६-७-१२ रासी के नवांश में हों और

उन्हें बुध देखता हो तो दो बच्चे होंगे। कहो। पुरुष के नवांश में ३-५ में गुरु और सूर्य हो तो २ बच्चे होवें। यदि चन्द्र शुक्र मंगल द्विस्भाव के स्त्री नवांश ३।१२ में हों तो दो कन्यायें जन्में। ३-५-७-९-११ में शनि हो तो पुरुष का जन्म परन्तु लगन में शनि न हो तब कहो।

पुरुष रासी कहो अथवा क्रूर रासी कहो एक ही है (मेष-मिथुन-सिंह-तुला धन कुम्भ रासी क्रूर अथवा पुरुष रासी कहलाती है। (वृष-कन्या-वृश्चिक-मकर मीन यह रासियें सौम्य और स्त्री रासी कहलाती हैं।



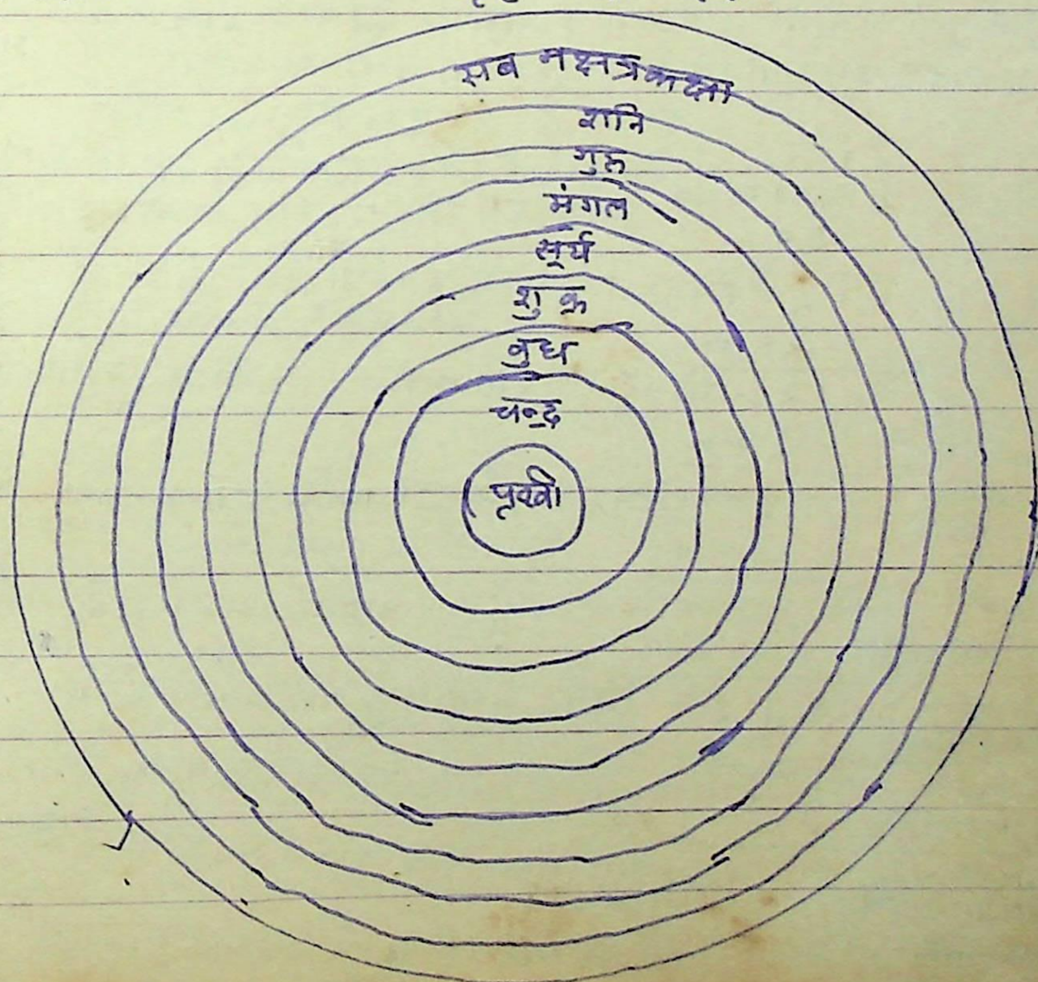
नपुंसक योग= यदि सूर्य चन्द्र में परस्पर दृष्टि हो। या शनि बुध में परस्पर दृष्टि हो। या विषम रासी में मंगल, सम रासी में सूर्य को परस्पर दृष्टि हो तो। या चन्द्र लगन विषम रासी का हो उसे मंगल देखता हो। या चन्द्र समरासी का बुध विषम रासी का हो इन्हें मंगल देखता हो तो। या शुक्र लगन और चन्द्रमा पुरुष (विषम) रासी के नवांश में हो नपुंसक का जन्म हो। यानी उससे बच्चे न होवेंगे चाहे जो उपाय वह जातक करे असफल रहेगा

सूर्य का फल शुभाशुभ ६ मास में होता है। मंगल का फल दिन भर में। शुक्र का फल १५ दिन में बुध का दो मास में गुरु का एक मास में चन्द्रमा का फल क्षण मात्र में प्रश्न काल में जिस गृह का नवांश हो वह गृह उस नवांश से जितने नवांश पर हो उतने काल पर नियमानुसार फल देता है।

चन्द्र सपस्ट करने पर, जब सूर्य के सपस्ट करने के बाद जब चन्द्र सूर्य के १२ अंश के अन्दर हो तो अस्त समझो। जब मंगल सूर्य के १७ अंश के अन्दर हो तो अस्त जानो। बुध १४ अंश के अन्दर हो तो अस्त समझो। बुध वक्री सूर्य के १२ अंश के अन्दर हो तो अस्त। गुरु ११ अंश के अन्दर हो तो अस्त होगा। शुक्र १० अंश के अन्दर हो तो अस्त हो जाता। शुक्र वक्री ८ अंश अंश तक हो तो अस्त समझो। शनि सूर्य से १५ अंश के अंदर आ जाते हैं तो अस्त हो गया समझो। सूर्य के अंशों से हर गृह के अंश घटा कर देख लो। जन्म काल के हर गृह सपस्ट कर के गणित से देख सकते हो। कि जातक किस प्रकार के गृहों में हुआ है।

सब से नीचे प्रथ्वी है।

गृह कक्षा प्रदर्शन



चन्द्र की १२ अवस्था होती हैं।

पत्रा में हरदिन के ग्रहसपस्ट लिखे रहते हैं। जिस दिन जो कार्य, जिस समय करना हो उस दिन सूर्योदय से चन्द्र की कौन अवस्था रहेगी उसकी जानकारी के वास्ते उस दिन के चन्द्र सपस्ट की संख्या उतारो जैसे श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को चन्द्र का पत्रा में सपस्ट ९।१०।४४।५८ है (रा। अं। क। वि) और सूर्योदय ५ बजके २७ मिनट पर हुआ तो तुम ९ रासी चन्द्र की छोड़ के १० अंश को २ से गुणा करो ५ से भाग दो।

अंश
१०
२ ×
५) २० (४
२०

तो समझो ४ जो लब्धि आई है सो समझो चन्द्र की चार अवस्था तो बीत गई। पांचवी अवस्था चालु है। आधा २ घंटा एक २ अवस्था रहती है। तो ५।२७ मि पर जैसे सूर्य उदय हुआ तो इसमें ३० मिनट मिनट नीचे धर कर ३० जोड़ो, देखो ५।५७ मिनट जोड़ कर हुआ, तो समझो ५ बजके २७ मिनट से बाद ५।५७ तक ५ पांचवी अवस्था रहेगी। देखो पांचवी अवस्था हास्य है। तो इस समय में किसी से हंसने खेलने जाना हो तो आ जाओ। इसी तरह सब जानो यह

अवस्था	
प्रवास	१
नाश	२
मरण	३
जय	४
हास्य	५
रति	६
क्रीड़ा	७
सुप्त	८
भुक्त	९
ज्वर	१०
कम्प	११
स्थिर	१२

जैसे सूर्योदय ५।२७ (घं।मि) में हुआ
३० +
५।५७ मिनट तक हास्य अवस्था ही रहेगी इसके बाद छठी अवस्था लगेगी
३० +
६।२७ मिनट तक रति नाम का चन्द्र की छठी अवस्था रहेगी
३० +
६।५७ मिनट तक क्रीड़ा सातवीं अवस्था रहेगी
३० + मिनट के बाद में
७।२७ मिनट तक सुप्त आठवीं अवस्था रहेगी
३० +
७।५७ मिनट तक भुक्त नवीं अवस्था रहेगी बाद में
३० +
८।२७ मिनट तक ज्वर दसवीं अवस्था रहेगी
३० +
८।५७ मिनट तक कम्प ग्यारहवीं रहेगी
३० +
९।२७ मिनट तक स्थिर बारहवीं अवस्था रहेगी
आगे घंटे पर फिर देखो ९।२७ के

फिर ५।५७ से ६।२७ तक छठी अवस्था रहेगी रति करना हो तो आओ।
फिर ६।२७ से ६।५७ तक सातवीं अवस्था रहेगी। क्रीड़ा करना हो आओ।
फिर ६।५७ से ७।२७ तक आठवीं अवस्था रहेगी सोना हो आओ।
७।२७ से ७।५७ तक नवीं रहेगी खाना हो आओ।
७।५७ से ८।२७ तक दसवीं रहेगी बुखार होगा।
८।२७ से ८।५७ तक ग्यारहवीं रहेगी ठीक नहीं है।
... ९।२७ तक

गृहों की दस दशायें क्या क्या होती है नीचे देखो।

चन्द्रमा की हर अवस्थाओं की व्याख्या करदी।

घं मि ०।२० स्थिर अवस्था है ३०+	तो यदि चन्द्रमा प्रवास अवस्था में हो तो प्रवास होता है। यानि इसमें प्रवास करना चाहिये
०।५० मिनट तक प्रवास २०	नाश में हो तो नाश द्रव्य का होता है।
१०।२० मिनट तक नाश २०	मृत्यु में हो तो मरण या उतना कष्ट होता है
११। २० मि. तक मरण ३०+	जय में जय होवे चाहे जहां चले जाओ
११। ५० मि. तक जय	

हास्य अवस्था चन्द्र की हो तो हास्य विलास
रति अवस्था में कामिनि के पास जावे सुख है,
क्रीड़ा अवस्था में सखा से मिले सुख होगा।
सुप्त अवस्था में सोवेगा या कलह करेगा
भुक्त अवस्था में देह में पीड़ा होगी जहां जायेगा।
ज्वरावस्था में ज्वर भय होता है। कहीं न जाये।
कम्पित अवस्था में कहीं जाओगे तो ताप हो
यानी ज्वर अथवा हानि से ताप मन को होवे
सुस्थिर अवस्था में जाओगे तो सुख होगा।
या कोई शुभ काम करोगे तो सुख होगा।

गृहों की दसो दसाओं
॥ की जानकारी ॥
आगे पेज पर फल लिखे हैं ॥

गहों की भी दस दशा होती हैं। १ दीप्त २ दीन ३ मुदित ४ स्वस्थ ५ सुप्त ६ पीड़ित ७ मुषित ८ परिहीन ९ सुवीर्य १० अधिवीर्य (अपनी उच्च राशी में स्थित गृह दीप्त होता है। नीच राशी में स्थित गृह दीन होता है। मित्र के घर में स्थित गृह मुदित होता है। अपनी राशी में स्थित ग्रह स्वस्थ होता है। शत्रु के घर में स्थित ग्रह सुप्त होता है। अन्य पाप ग्रहों से जीता हुआ ग्रह पीड़ित होता है। नीचाभिलाषी ग्रह हीन। अस्त गृह मुषित कहलाता है। उच्चाभिलाषी ग्रह सुवीर्य। और सुन्दर रश्मि, तथा शुभ वर्ग में प्राप्त ग्रह अधिवीर्य संज्ञक कहलाता
मेष का सूर्य)(वृष का चन्द्र)(मकर का मंगल)(बुध कन्या में)(गुरु कर्क में)(शुक्र मीन में)(शनि तुला में)(उच्च का होता है। सातवें पर नीच के हो

किसी कार्य के करने में यदि गृह दीप्त अवस्था में हो तो कार्य की सिद्धि करता है दीन दशा में हो गृह तो दुख का आगमन होता है। स्वस्थ्य दशा में गृह हो तो कीर्ति तथा लक्ष्मी मिले। मुदित में आनन्द मिले। सुप्तावस्था में गृह स्थिति हो कार्य के समय तो शत्रु भय तथा दुख प्राप्त होवे। पीड़ित में धन की हानि हो मुषित तथा हीन में कार्य और धन का नाश होता है। सुवीर्य अवस्था गृह की हो तो सोना रत्न सम्पत्ति का लाभ होवे। अधिवीर्य अवस्था में राज्य लाभ मित्र तथा धन का समागम।

सूर्य के साथ शनि का बल बढ़ जाता है।
शनि के साथ मंगल का बल बढ़ जाता है
मंगल के साथ वृहस्पति का बढ़ जाता है।
गुरु के साथ चन्द्रमा का बल बढ़ जाता है
चन्द्रमा के साथ शुक्र का बल बढ़ जाता है।
शुक्र के साथ बुध का बल बढ़ जाता है।
बुध से चन्द्रमा का बल बढ़ जाता है।

राहू के दोष को बुध नाश करता है।
राहू बुध के दोष को शनि नाश करता है
राहू बुध शनि के दोष को मंगल नाश करेगा
राहू बुध शनि मंगल के दोष को शुक्र नाश करता है। राहू बुध शनि मंगल शुक्र के दोष को गुरु नाश करता है। इन छै हो गृहों के दोष को चन्द्रमा नाश करता है। सातो के दोष को सूर्य यदि सूर्य उत्तरायण हो तो विशेष रुप से नाश करता है।

सभी गृहों के ॥ सूर्य चन्द्रादि के परिया वाची नाम ॥

सूर्य के	हेलि	सूर्य	तपन	दिनकृत	भानु	पूषा	अरुण	अर्क
चन्द्र के	सोम	शीति	द्युति	उडुपति	ग्लौ	मृगाङ्क	इन्दु	चन्द्र
मंगल के	आर	वक्र	क्षितिज	रुधिर	अंगारक	क्रूरनेत्र	कुज	
बुध के	सौम्य	तारा तनय	बुध	बोधन	विद्	इन्दु पुत्र		
गुरु के	मन्त्री	गुरु	सुराचार्य	वाचस्पति	देवेज्य	जीव		
शुक्र के	काव्य	सित	भृगुसुत	आस्फुजित	आच्छ	दानवेज्य		
शनि	छाया सुनु	कोण	तरणि तनय	मन्द	आर्कि			
राहू के	असुर	सर्प	फणि	सैहिकेय	तम	अगु		
केतू के	ध्वज	शिखी	केतु					

गुलिक और मान्दि ये दो गुलिक शनि अंश कहलाते हैं।

दीप्त
मेष का सूर्य उच्च
वृष का चन्द उच्च
मकर का मंगल उच्च
कन्या में बुध उच्च
कर्क में गुरु उच्च
मीन में शुक्र उच्च
तुला में शनि उच्च
वृष मे राहू उच्च
वृश्चिक में केतु उच्च
सातवें मे गृह नीच के गृह दीन हैं

क्रमशः मेष से लेकर मीन तक समझो इन २ रासियों पर चन्द्रमां के अंश इतने २ हों तो मरण सूचक हैं जैसे यदि मेष रासी पर चन्द्र ८ वें अंश पर हो यदि वृषरासी वाले के २५ वें अंश पर चन्द्र हो इसी प्रकार सब देखने की रीति है। चक्र में देखो

चन्द्र सपस्ट करो ॥ चन्द्र अंश शुभाशुभ विचार तब करो।

राशी बारहों	मे	वृ	मि	क	सिं	कन्या	तु	वृ	धन	म	कु	मी	
शुभ अंश	२१	१४	१८	८	१६	७	२४	११	२३	१४	१६	७	अंशपर चन्द्र के
अशुभ अंश	८	२५	२२	२२	२१	१	४	२३	१८	२०	२०	१०	अंशपर

कुण्डली बनाते समय जब चन्द्र सपस्ट करोगे, तब तुम्हें शुभ अशुभ अंशों का पता चलेगा, कि चन्द्र जन्म समय किस अंश पर था, उसी के द्वारा तुम शुभ अशुभ फल बता सकते हो। अब समझो जिसके जन्म समय चन्द्र मेष के ८ वें अंश पर हो तो उस बालक का मरण ८ वें वर्ष होगा यदि चन्द्र वृष रासी के २५ अंश पर है तो समझो इस बालक का मरण २५ वें वर्ष में होगा। यदि मिथुन रासी के २२ वें अंश पर चन्द्र है तो समझो २२ वें वर्ष यह बालक मरेगा। इसी तरह सब समझो। शुभ अंशों को पुष्कर अंश कहते हैं। अशुभ अंशों को मरण सूचक अंश कहते हैं।

सभी रासियें अपने २ स्वामी की दिशा में प्लावित (नीचोन्मुख) होती हैं।

सूर्य जिस रासी में हो उससे चौथी रासी अभिजित कहलाती है।

सूर्य को आत्मा समझो चन्द्र को मन मंगल को पराक्रम बुध को बचन, गुरु को सुख विज्ञान का सार समझो। शुक्र काम। शनि दुःख। जन्म काल में जो बली गृह हो उसका अंग पुष्ट जानो। निर्बल गृह को निर्बल जानो।

इस चक्र के अनुसार अपना नक्षत्र और शिष्य का नक्षत्र देखो। यदि चक्रानुसार जैसे गुरु का नाम मित्र कोष्ठ के नीचे (क) अक्षर पड़ा समझो। तो अपना नाम का अक्षर जैसे (र) है शुरु में यानी रूप कुमार नाम है तो देखो पहला अक्षर इस नाम मे (र) पड़ा अब देखो (र) वाले कोष्ठ के ऊपर दुशमन लिखा है तो समझो तुम रूप कुमार से मित्रता करोगी, पर रूप कुमार दुशमन का काम करेगा। र के नीचे राक्षसः लिखा है। क के नीचे देव = तो समझ लो देव असुर में पटरी नहीं खायेगी। इसी तरह मिलाया जाता है।

जिस कोष्ठ के नीचे अपना नामक्षर आवे तो हानी। सम्पति के नीचे प्रथम अक्षर आवे तो सम्पतिवान होगा। विपति के नीचे विपति होगी। क्षेम के नीचे मंगल होगा। प्रत्यारि के नीचे के कोष्ठ मे प्रथम नामाक्षर पड़े तो शत्रु वृद्धि। साधक के नीचे पड़े सिद्धि होवेगी समझो। मृत्यु के नीचे पड़े तो बध होगा मित्र के नीचे पड़े तो मित्र बढेंगे। सुमित्र के नीचे पड़े सुहृद मित्र मिलेंगे।

जन्म	सम्पति	विपत	क्षेम	दुश्मन	साधक	मृत्यु	मित्र	सुमित्र
अ आ अश्विनि देवः	इ भरणी मनुष्य	ई उ ऊ कृतिका राक्षसः	ऋ ॠ ऌ ॡ रोहिणि मनुष्य	ए मृगासिरा देवः	ऐ आर्द्रा मनुष्य	ओ औ पुनर्वसु देवः	क पुष्य देवः	ख ग अश्लेषा राक्षसः
घ ङ मघा राक्षसः	च पु.फा. मनुष्य	छ ज उ.फा. मनुष्य	झ ञ हस्तः देवः	ट ठ चित्रा राक्षसः	ड स्वाती देवः	ढ ण विशाखा राक्षसः	त थ द अनु देवः	ध ज्येष्ठा राक्षसः
न प फ मूल राक्षसः	ब पू.षा. मनुष्य	भ उ.षा. मनुष्य	म श्रवण देवः	य र धनिष्ठा राक्षसः	ल शतभि. राक्षसः	व श पू.भा. मनुष्य	ष स ह उ.भा. मनुष्य	ळ क्ष अं अः रेवती देवः
यह जन्म कोष्ठ है हानिकारक है	सम्पति का कोष्ठ लाभ प्रद है।	विपति कोष्ठ दुखद है	क्षेम कोष्ठ मांगलिक है शुभ काम होगा	दुश्मन कोष्ठ महा दुखद	साधक कोष्ठ सिद्धि दायक	मृत्यु कोष्ठ वध होगा।	मित्र कोष्ठ मित्र बढेंगे	सुमित्र कोष्ठ में नामाक्षर पहले पड़े तो सच्चे मित्र मिलेंगे

संस्कृत भाषा में आगे पेज मे देखो।

जन्म इ आ। मंगल के नवांश में जन्म

पक्षे माने(२) ऐक माने (१) त्रय माने(३) वेद माने ४) रूपमाने १) अवनि १) भुज माने २) शशि माने १) युग २) युग्म माने २) भू माने १) युग्म माने २) पक्ष २ युग्म माने २) ऐक १) द्वि माने २) त्रि माने ३) रूप माने १ त्रिय माने ३) अवनि माने १) शशि माने १) शशि द्वय माने २) ऐकमाने १) पक्ष माने २) अग्नि ३) वेद माने ४) यह शब्द संकेत रूप हैं

।। इन १२ भावों के परियावाची नाम ।।

तनु	कल्प	उदय	आद्य	तनु	जन्म	बिलग्न	होरा			
धन	वाक्	अर्थ	भुक्ति	नयन	स्व	कुटुम्ब				
सहज	दुश्चिक्य	विक्रम	सहोदर	धैर्य	वीर	कर्ण				
सुहृद	पाताल	वृद्धि	हिबुक	क्षिति	मातृ	विद्या चतुष्टय	यान	गेह	सुख	बन्धु
पुत्र	धी	देव	राज	पितृ	नन्दन	पंचक				
शत्रु	रोग	अंग	शस्त्र	भय	षष्ट	रिपु	क्षत्			
स्त्री	काम	गमन	जामित्र	द्यूत	कलत्र	सम्पति	अस्त	सप्तम		
मृत्यु	रन्ध्र	आयु	मृत्यु	अष्ट	रण	बिनाश				
धर्म	गुरु	शुभ	भाग्य	धर्म	तप	नव				
कर्म	ज्ञान	राज	व्यापार	आस्पद	मेषूरण	कर्म				
लाभ	भव	आय	एकादश	लाभ	उपान्त					
व्यय	रिस्फ	द्वादश	अन्त्य							

ज्योतिषी को चाहिये जब कोई बहुत प्रश्न करे तो पहला प्रश्न को लगन से हल करे। दूसरा प्रश्न चन्द्रमा से तीसरा प्रश्न सूर्य से चौथा प्रश्न गुरु के स्थान से। पांचवां प्रश्न बुध और शुक्र से इनमें से जो ग्रह बलवान हो उसका फल कहना चाहिये।

माता का विचार लगन से चौथे स्थानसे या चौथे स्थान के स्वामी से या चन्द्रमा से (को)
पिता का बिचार नवें स्थान से अथवा नवमेश से, और सूर्य से और शनि से भी होता है

व्यापार का प्रश्न लग्न से दशमें स्थान से देखो।
पुत्र का प्रश्न लग्न से पंचम स्थान से देखो।
शत्रू या रोगी का प्रश्न छठे या आठवे स्थान से
बाधाओं का प्रश्न भी छठे स्थान से देखे
स्त्री वा पती सेवक का प्रश्न सातवें स्थान से देखो

यदि शुक्र बुध गुरु क्रमसे सातवे चौथे पांचवे भाव में प्राप्त हो तो प्रत्येक जातक मे अरिष्ट कारक होते है। शनि अष्टम भाव मे होने पर मनोरथ पूरा करता है।

भाई बहन का तीसरे स्थान से देखो। या तृतिय भाव से अथवा तीसरे अंक के स्वामी से देखो

सूर्य से - पिता - आत्मा - प्रताप - आरोग्यता - आसक्ति - लक्ष्मी का विचार करे।
चन्द्रमा से - मन - बुद्धि - राजा की प्रसन्नता - माता - धन का विचार करे।
मंगल से - पराक्रम - रोग - गुण - भाई - भूमि - शत्रु - जाति का विचार करे।
बुध से, विद्या - बन्धु - विवेक - मामा - मित्र - वचन का
गुरु से, बुद्धि - शरीर पुष्टि - पुत्र - ज्ञान का विचार करे
शुक्र से - स्त्री - वाहन - भूषण - कामदेव - व्यापार - सुख का विचार करे।
शनि से - आयु - जीवन - मृत्युकारण - विपत - सम्पत्ति का विचार करे।
राहु से - पिता के पिता का
केतु से - नाना का विचार करे

सूर्य लगन का कर्ता है। गुरु धन भाव का कर्ता है। मंगल सहज भाव का कर्ता है।

गुरु शनि बुध सूर्य कर्म भाव का बृहस्पति लाभ भाव का कर्ता है। शनि व्यय भाव का कर्ता है।

चन्द्र बुध - सुहद् भाव का है। गुरु पुत्रभाव का कर्ता है। शनि मंगल शत्रु भाव का कर्ता। शुक्र स्त्री भाव का कर्ता। शनि मृत्यु भाव का कर्ता है। सूर्य गुरु धर्म भाव का कर्ता है।

उसे के
और
उसेफ्र
हैं। फ़
में मा
है म

बच्चे का प्रश्न कोई पूछे गर्भ में क्या है पुत्र या पुत्री

…कि जिस समय पूछे, जिस व्यक्ति के लिये उसके नाम के अक्षर तिगुना …म की जितनी मात्रायें हों उनको चौगुना करो। आधा र… …में सुमार नहीं किया जाता है न दो अक्षर अक्षर एक में जड़ने … दो अक्षर गिने जाते हैं। जैसे (कस्तूरी) तो इसमें आधा स …ा रतू को एक अक्षर समझो जैसे कर्मा वाई तो (र्मा) यह एक अक्षर हुआ। कर्मा में १ मात्रा २ नाम अक्षर कर्मावाई में ४ नाम अक्षर २ मात्रायें हुई। इसी तरह सब समझो अब उदाहर कर्मा वाई का प्रश्न समझो तो ४ × ३ = १२ हुआ (तिगुना किया) मात्रायें २ है तो २×४ = ८ इसमें ६ अंक और जोड़ दो प्रश्न शुक्लपक्ष में छठ का है। छ तिथि संख्या जोड़ दो। फिर ८ से भाग दे दो ६ शेष वचा तो तुम समझो पुत्री होगी। सम शेष रहे तो पुत्री होगी। विषम शेष रहे तो पुत्र होगा।

१२ नामाक्षर
८+ मात्रायें
२० जोड़ फल
७+ अंक और जोड़ दो।
२८
६+ तिथि संख्या जोड़ा
८) ३४ (३
२४
शेष ६ सम संख्या है तो पुत्री होगी

ब्राह्मण से फूल का नाम उच्चारण करावे प्रश्न समय क्षत्री से नदियों का नाम लिवावे प्रश्न समय वैश्य से किसी देवता का नाम प्रश्न समय लिवावे। शूद्र से प्रश्न समय फल का नाम लिवावे। अन्त्यज से अनाज का नाम लिवावे।

प्रश्न लगन भी बना कर देखो गर्भ में क्या है। प्रश्न लग्न में बुध शनि हों या बुध शनि पूर्ण दृष्टि से लग्न को देखते हों तो समझो पेट में कुछ नहीं है। लग्न में शुक्र बैठे हों पुत्री होगी। रवि गुरु मंगल हों लग्न में तो पुत्र होगा यदि चन्द्र लग्न … पुत्री। होगी। चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो भी पुत्री समझो।

माता का विचार लगन से चौथे स्थान से या चौथे स्थान के स्वामी से या च[illegible] को
पिता का बिचार नवें स्थान से अथवा नवमेश से, और सूर्य से और श[illegible]

उसे के
और
उसे फ
है। फ
में मा
हैम
है

व्यापार का प्रश्न लग्न से दशमें स्थान से देखो
पुत्र का प्रश्न लग्न से पंचम स्थान से देखो।
शत्रु या रोगी का प्रश्न छठे या आठवे स्थान से
बाधाओं का प्रश्न भी छठे स्थान से देखे
स्त्री वा पती, सेवक का प्रश्न सातवें स्थान से देखो

यदि शुक्र बुध [illegible]
क्रम से सातवे [illegible]
भाव में प्राप्त [illegible]
प्रत्येक जातक [illegible]
कारक होते है [illegible]
अष्टम भाव में हो [illegible]
पूरा करता है।

भाई बहन का — तीसरे स्थान से देखो। या तृ[illegible] भाव से अथवा तीसरे अंक के स्वामी से देखो

सूर्य से - पिता - आत्मा - प्रताप - आरोग्यता - आशक्ति - लक्ष्मी का विचार करे।
चन्द्रमा से - मन - बुद्धि - राजा की प्रसन्नता - माता - धन का विचार करे।
मंगल से - पराक्रम - रोग - गुण - भाई - भूमि - शत्रु - जाति का विचार करे।
बुध से, विद्या - बन्धु - विवेक - मामा - मित्र - वचन का
गुरु से, बुद्धि - शरीर पुष्टि - पुत्र - ज्ञान का विचार करे
शुक्र से - स्त्री - वाहन - भूषण - कामदेव - व्यापार - सुख का विचार करे।
शनि से - आयु - जीवन - मृत्युकारण - विपत - सम्पत्ति का विचार करे।
राहु से - पिता के पिता का
केतु से - नाना का विचार करे

गुरु शनि बुध सूर्य कर्म भाव का
बृहस्पति लाभ भाव का कर्ता है।
शनि व्यय भाव का कर्ता है।

सूर्य लगन का कर्ता है। गुरु धन भाव का कर्ता है। मंगल सहज भाव का कर्ता है।
चन्द्र बुध - सुहृद भाव का है। गुरु पुत्रभाव का कर्ता है। शनि मंगल शत्रु भाव का कर्ता है
शुक्र स्त्रीभाव का कर्ता। शनि मृत्युभाव का कर्ता है। सूर्य गुरु धर्म भाव का कर्ता है।

बच्चे का प्रश्न कोई पूछे गर्भ में क्या है पुत्र या पुत्री

जो व्यक्ति जिस समय पूछे, जिस व्यक्ति के लिये उसके नाम के अक्षर तिगुना करो। नाम की जितनी मात्रायें हों उनको चौगुना करो। आधार मात्रा में सुमार नहीं किया जाता है न दो अक्षर अक्षर एक में जड़ने पर दो अक्षर गिने जाते हैं। जैसे (कस्तूरी) तो इसमें आधा स और तू को एक अक्षर समझो जैसे कर्मा वाई तो (र्मा) यह एक अक्षर हुआ। कर्मा में १ मात्रा २ नाम अक्षर कर्मावाई में ४ नाम अक्षर २ मात्रायें हुई। इसी तरह सब समझो अब उदाहर कर्मा वाई का प्रश्न समझो तो ४ × ३ = १२ हुआ (तिगुना किया) मात्रायें २ है तो २×४ = ८ इसमें ६

१२ नामाक्षर ८+ मात्रायें २० जोड़ फल ७+ अंक और जोड़ दो। २४ ६+ तिथि संख्या जोड़ा ८)३० (३ २४ शेष ६ सम संख्या है तो पुत्री होगी	ब्राह्मण से फूल का नाम उच्चारण करावे प्रश्न समय क्षत्री से नदियों का नाम लिवावे प्रश्न समय वैश्य से किसी देवता का नाम प्रश्न समय लिवावे। शूद्र से प्रश्न समय फल का नाम लिवावे। अन्त्यज से अनाज का नाम लिवावे।	अंक और जोड़ दो प्रश्न शुक्लपक्ष में छठ का है। तिथि संख्या जोड़ दो। फिर ८ से भाग दे दो ६ शेष बचा तो तुम समझो पुत्री होगी। सम शेष रहे तो पुत्री होगी। विषम शेष रहे तो पुत्र होगा।

प्रश्न लगन भी बना कर देखो गर्भ में क्या है। प्रश्न लग्न में बुध शनि हों या बुध शनि पूर्ण दृष्टि से लग्न को देखते हों तो समझो पेट में कुछ नहीं है। लग्न में शुक्र बैठे हों पुत्री होगी। रवि गुरु मंगल हों लग्न में तो पुत्र होगा। यदि चन्द्र लग्न ... पुत्री। होगी। चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो भी पुत्री समझो।

मेष रासी के परियाचाचो नाम - अज, विश्व, क्रिय, तुंबर, आद्य।
वृष रासी के उक्ष, गोपाबुर, गोकुल। मिथुन के नाम द्वन्द - नृयुग्म, यम, युग तृतिय
कर्क के नाम, कुलीर, कर्काटक, कर्कट। सिंह को - कंठीरव, मृगेन्द्र, लेय,
कन्या के नाम, पाथोन, रमणी, तरुणी। तुल के नाम - तौली, वणिक, जूक,
घट, वृश्चिक के नाम - अलि, अष्टम, कीट, कौर्पि। धन के नाम - धन्वी, धनु
चाप सरासन। मकर के नाम - मृग, मृगास्य, नक्र है। कुम्भ के नाम -
घट, तोयधर। मीन के नाम - अन्त्य, मत्स्य, पृथुरोम, झष,

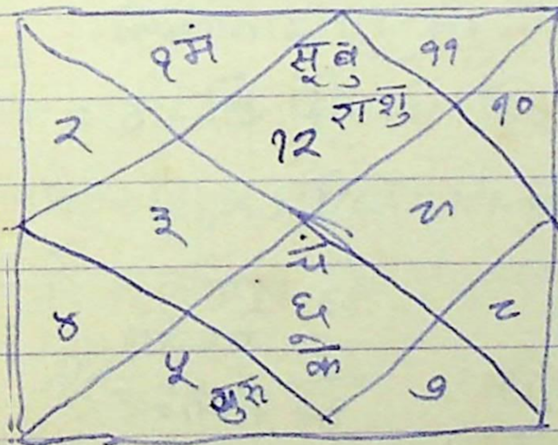
गर्भ जानकारी के लिये प्रश्न लगन पत्रा से बना कर देखो नवांश
गर्भ है या नहीं इसकी जानकारी। प्रश्न काल में सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल अपने
नवांश में है (यानी लगन से नवें घर में है) तो निश्चय गर्भ है। यदि ऐसा न हो तो पुरुष के उपचय, यानी ३।६।१०।११ वें
में सूर्य और शुक्र अपने नवांश में हो तो भी गर्भ का सम्भव है। अथवा स्त्री की
कुण्डली में उपचय में अपने २ नवांश में मंगल चन्द्रमा हो तो भी गर्भ है कहे।
वा गुरु ५-७-अथवा लगन में हो तो भी गर्भ सम्भव है। ॥ सिद्धान्त ॥

१०।१।७।४ इन भावों की संज्ञा यानी तनुभाव, कर्मभाव, स्त्रीभाव, सुहृद
भावों की संज्ञा कण्टक अथवा चतुष्टय कहलाती है। हर लगन से ९ वीं
५ वीं त्रिकोण संज्ञा होती है। १।४।७।१० वां भाव केन्द्र कहलाता
है। २।५।८।११ वां भाव पणफर कहलाता है। १२ वां, छठा, ९ वां, तीसरा,
भाव आपोक्लीम कहलाता है। ८ वां भाव चौथा भाव चतुरस्त्र कहलाता
है। ३।११।६।१० वां भाव उपचय कहलाता है। शेष ८ अस्थान
९।२।४।५।७।८।१२।१। पीड़ा कहलाता है। यह भाव जन्मकुण्डली
अथवा प्रश्न कुण्डली में अपनी अपनी लगन को स्वामियों अथवा
रासियों के स्वामियों से, बुध गुरु शुक्र युक्त हों, यानी एक ही स्थान
पर हों, इसका मतलब युक्त है। या इन लोगों द्वारा लगन अथवा रासी
देखी जाती हो (और किसी दुष्ट ग्रह से लगन देखी जाती हो न युक्त
हो तो शुभ फल देने वाली होती है।

यात्रा के समय की लगन से शुभाशुभ विचार

एक प्रकार तो
जैसे कुण्डली बनाते समय लगन बनाई जाती है उसी प्रकार लगन बना कर यात्रा लगन बनावे और गोचर बना कर यथा स्थान ग्रह बैठा वे फिर विचार करे।
दूसरी प्रकार = जिस दिन जिस टाइम यात्रा करना है पत्रा में तो तुम पत्रा में उस मास उस पक्ष की लगन सारिणि में देखो यात्रा समय कौन लगन चल रही है। देखा यात्रासमय मीन लगन चलरही है तो गोचर बनाओ और अष्टमी तक यदि कहीं जाना है तो अष्टमी तक का पत्रा वाला गोचर बना कर उसमें ग्रह जहां २ हों बैठा दो। जैसे

यात्रा लगन



अब देखो तीसरे छठे ११ वें पर यदि पाप ग्रह सूर्य मंगल शनि राहु केतु यह है तो समझो यात्रा शुभ है। इनके साथ बुध भी यदि है तो पाप गृह समझो। यात्रा लगन से दशवें स्थान पर शनि खराब होते हैं। सातवें स्थान पर शुक्र बहुत खराब होते हैं। लगन से १-६-७-८-वें स्थान पर चन्द्र भी अशुभ होते हैं। यात्रा लगन का मालिक गुरु है १२ अंक माने मीनलगन है मीन का स्वामी गुरु है। इसमें मंगल बली है स्वग्रही होने से यदि झगड़ा लड़ाई मार काट करने जारहे हो तो विजय होगी। २-४-५-६-१०-११वें स्थान पर मंगल शुभ है। १-६-७-८-१२ वें स्थान पर अशुभ हैं।

कोर्ट के काम को यात्रा करने जा रहे हो तो सूर्य बली होना चाहिये।
३-६-११ वें स्थान पर सूर्य बली होता है। धन संग्रह करने जाते हो
तो शनि बली होना चाहिये ये ३-६-११-वें स्थान पर होवे। मीन का शुक्र
बली है उच्च का है। इससे स्त्री पाने जाते हो तो अवश्य मिलेगी। और
चन्द्र सप्तम भाव में है यानि ७वें स्थान पर शुभ है। स्त्री पाने के लिये जाओ। इस
में गुरु छठे भाव में है शत्रु के घर में है, यात्रा में शोक भी होगा। सूर्य श.
राहु मध्यम हैं। सूर्य बुध चन्द्र शुक्र यदि बली होना चाहिये।
इन का बलाबल गृह सपष्ट पत्रा में होते हैं उसमें देखो सूर्य किस
रासी गत किस रासी में कितने अंश कला विकला पर है।
जैसे सूर्य ३-१३-१५-५० है तो समझो मिथुन गत कर्क
रासी के १३ अंश १५ कला ५० विकला पर है। तो तुमें जो गृह बल
देखना हो ऐसे देखो। सूर्य अंश से बुध अंश और सूर्य अंश
से शुक्रांश घटा कर देख लो जैसे

सूर्य अंश
१३ सूर्य अंश से
१२ बुध अंश घटाया
१ एक बचा बुध अस्त है समझो
१२ अंश के ऊपर शेष बचे
तो उदित है।

सूर्यांश १३
१३ शुक्रांश
० यह भी अस्त

१३ सूर्यांश
१ - गुरु अंश
१२ सामान्य है,
अस्त होने जा रहा
है।

यदि गुरु लगन से २-५-९-११-७ वें स्थान में बैठे हों या सूर्य चन्द्र मंगल के बैठे हों तो शुभ या धन मीन का गुरु भी हो तो उच्चका गुरु समझो बलिष्ठ समझो

यदि गुरु मीन का हो तो बलिष्ठ है। रासी से २-५-९-११ ७वें स्थान पर गुरु बलिष्ठ हो तो बिवाह निश्चय होवे इस समय १९७५ में गुरु मीन रासी पर है तो कुम्भ वालों के लिये गुरु बलिष्ठ है। यदि गुरु मित्र के घर बैठा हो तो भी इन स्थानों पर गुरु बलिष्ठ होता है। यदि गुरु इन्हीं स्थानों पर परिक्षा समय हों तो जातक पास जरुर होगा यही देखने का तरीका है। धन मीन का गुरु होकर मित्र के घर बैठा हो तो शुभ उच्चका यानि गुरु बलिष्ठ समझो।

॥ मारकेश विचार ॥ गोचर में या कुंडली में हो

रासी से चन्द्रमा राहू के संग अष्ठवें स्थान पर जब होवे तो मारकेश सम दुख दाई होगा। लगन से अष्टम स्थान में राहु चन्द्र हों तो मरण सम दुख होगा/और केतु लगन से दूसरे स्थान में हो उसी कुण्डली में तो मारक रहेगा। चूंकि अष्टम स्थान मृत्यु भाव का है।

॥ योनि मैत्री ॥

नक्षत्र	अ॰ शत	स्वा॰ ह॰	पूर्वा॰ भा॰ धनिष्ठा	भ॰ रे॰	कृ॰ पुष्य	अ॰ पूर्वा षा॰
योनी	घोड़ा	महिष	सिंह	हाथी	मेष	बानर
नक्षत्र	उ॰षा॰ अभि	रो॰ मृ	जे॰ अनु	मू॰ आर्द्रा	पुन॰ अश्व	पूर्वा॰ फा॰
योनि	नेवरा	सर्प	हरिण	कुत्ता	विलार	चूहा
न॰	वि॰ चि॰	उ॰ फा॰ उ॰ भा॰				
योनि	व्याघ्र	गौ				

वैर अथवा मित्रता

गाय व्याघ्र	घोड़ा भैंसा	कुत्ता मृगा	चूहा बिल्ली	सेर हाथी
परम बैर	परम बैर	परम बैर	परम बैर	परम बैर
न्योला सर्प	बानर मेढ़ा			
बैर	बैर			

गृह मैत्री ॥ ॥ प्रेम भाव ॥

सु मं चं गु	चं सू बु	मं गु चं सू	बुध शु सू	गुरु सू चं मं	शु॰ बु श	

शनि शु बु	गृह मैत्री है।	॥ सम भाव ॥		
बुध सम	मं गु शु श सम	शु॰ शनि॰ सम	गु॰ श मं सम	मं गु सम
श॰ गु सम	श॰ गु॰ सम	गु॰ शु॰ सम	शत्रुता गृहों की।	

शु॰ श॰ शत्रु शत्रु	बुध चं शत्रु	चं॰ बु शत्रु	बु॰ शु॰ शत्रु शत्रु	सू- चं शत्रु शत्रु	सू चं मं शत्रु शत्रु

॥ जन्म काल में मंगल दोष ॥ १-४-७-८-१२ वे स्थान

यदि जन्म काल में कुण्डली में बर को मंगल, लग्न में या चौथे १२-८ वें ७ वें घर में हो तो स्त्री मरे कन्या की कुण्डली में हो पति मरे

मंगली की पहचान

कन्या या बर कोई की कुण्डली में मंगल १-४-७-८,१२, वें स्थान पर हो तो मंगली कहलायेगा। १-८-१० वें अंक के साथ मंगल हों तो महा मंगली कहलायेगा। यानी मेष वृश्चिक मकर का मंगल १-४-७-८-१२ वें स्थान में हो हो तो महा मंगली होगा जिसे पगड़ी मंगल कहते हैं

मंगल चाहे वर कुण्डली में हो चाहे कन्या की कुण्डली में हो १-४-७-८-१२ वें स्थान पर हो तो मंगली होगा। मेष मकर वृश्चिक का मंगल १-४-७-८-१२ वें स्थान पर हो तो महा महा मंगली जातक को समझो।

देवतागण	मनुष्यगण	राक्षस गण
ह. स्वा. अ.	रो. भ. तीनों	चि. अश. म.
पु. अनु. रे	पूर्वा तीनों	मू. ध. शत.
अश्वनि	उत्तरा.	वि. कृ. ज्ये.
पुर्न. मृग.		

यदि वर कन्या का एक ही नक्षत्र हो तो शुभ। देव मनुष्य हो तो प्रीति सम रहे मनुष्य राक्षस मृत्यु होय या छूटे

देव राक्षस बैर। यदि देव राक्षस गण दोनों का हो पर योनि की मैत्री हो तो शुभ है। यदि कन्या राक्षस वर मनुष्य गण हो तो यदि २६ गुण मिले तो करे।

मिथुन रासी केतु का घर माना है। कन्या रासी राहू का घर है।

नवरत्न अंगूठी बनाने का ढंग			गृह	रासी	गृह	स्वामी
ईशान में पन्ना	पूरब में हीरा	आग्नेय में मोती	सूर्य	सिंह	मेष वृश्चिक	मंगल
			चन्द्र	कर्क	मिथुन कन्या	बुध
			मंगल	मेष		
उत्तर में पुषराज	माणिक्य	दक्षिण में मूंगा	बुध	कन्या	धन मीन	गुरु
			गुरु	मीन	बृष तुला	शुक्र
			शुक्र	तुला		
वायव्य में लहसुनिया	पश्चिम में नीलम	नैऋत्य में गोमेध	शनि	कुम्भ	मकर कुम्भ	शनि
					सिंह	सूर्य
					कर्क	चन्द्र

प्रीति षराष्टक बिवाह में विचार करो।

तुला	सिंह	कुम्भ	धनु	मकर	वृश्चिक	इसमें विवाह शुभ है।
बृष	मीन	कन्या	कर्क	मिथुन	मेष	

यह	मरण	षडाष्टक में	बिवाह	न करे	इसमें बिवाह अशुभ है।
मकर	मेष	तुला	कर्क	धन	मिथुन
सिंह	कन्या	मीन	कुम्भ	बृष	वृश्चिक

यदि रासियों के स्वामी से वर कन्या की शत्रुता हो तो सादी न करे। यदि दोनों की जन्म रासी के स्वामी से या दोनों की नवांस रासी के स्वामी से मित्रता हो तो करे।

॥ गृह मैत्री ॥

	सूर्य के घर में	चन्द्र के घर	मंगल के घर	बुध के घर	गुरु के घर	शुक्र के घर
मैत्री	मं गु चन्द्र	सूर्य बुध	चं गु सू	सू शु	सूर्य शुक्र	बुध श
	शनि के घर	राहू के घर	केतु के घर			
	बुध शुक्र	शुक्र शनि	सू चं मं			
सम ग्रह	केतु के घर	चन्द्र के घर	बुध के घर	मंगल के	गुरु के घर	शुक्र के
	सू बुध सम	मं गु शु श	मं गु श	शु शनि	शनि सम	मं. गु.
	शनि के घर	राहू के	केतु के घर			
	गुरु सम	मं · गु ·	बुध गुरु			
शत्रु	सूर्य के घर	चन्द्र के	मंगल के	बुध के घर	गुरु के घर	शुक्र के
	शुक्र शनि	~~कोई शत्रु नहीं~~	बुध	चन्द्र	बुध शनि	चं. सू.
	शनि के घर	राहू के घर	केतु के घर			
	सू चं मं	सू चं मं	शुक्र शनि			
परम शत्रु		शुक्र बुध				

अशुभ नक्षत्रादि चक्रम

वार	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
नक्षत्र	वि.भ. मघा धनिष्ठा उत्तराषाढ	पू.षा. उ.षा. चित्रा स्वाती विशाखा	उ.षा. आर्द्रा धनिष्ठा.शत पू.भा.	धनि. भरणी मूल रेवती अश्व वाढ	शत. कृति. रोहि. मृग. आर्द्रा उ.फा.	रोहि ज्येष्ठा पुष्य अश्वि. मघा	पू.फा. उ.षा. चित्रा हस्त रेवती उ.फा.
तिथि	७ १२ १४	६ ११ १३	२ १०	१ ३ ५	४ ६ ७	२ ७	६ ७

जिस दिन वार नक्षत्र तिथि इस चक्रानुसार हो उस दिन कोई शुभ कार्य न करे।

॥ काल दण्ड योग ॥

रवि	भरणी
सोम	आर्द्रा
मंगल	मघा
बुध	चित्रा

शुभ सर्वार्थ सिद्धि योग चक्रम

वार	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
नक्षत्र	मूल पुष्य अश्विनी हस्त उत्तरा तीनों	रोहिणी मृग पुष्य अनु श्रवण	अश्विनी कृतिका अश्लेषा उ.भा.	रोहिणी हस्त कृतिका मृग अनुराधा अश्लेषा	रेवती अनु अश्विनि पुनर्वसु पुष्य	श्रवण अनु अश्व पुनर्वसु रेवती पू.फा.	श्रवण स्वाती रोहि.

शुभ अमृत सिद्धि योग

वार	नक्षत्र
रवि	हस्त
चंद्र	श्रवण, मृग,
भौम	अश्विनी
बुध	अनुराधा
गुरु	पुष्य
शुक्र	रेवती
शनि	रोहिणी

आनन्दयोग

वार	नक्षत्र
रवि	अश्विनी
सोम	मृगशिरा
भौम	अश्लेषा
बुध	हस्त

पंचकयोग चक्रम	त्रिपुष्कर योग	द्विपुष्कर योग चक्रम	
धनिष्ठा के परार्ध से रेवती पर्यन्त नक्षत्र पंचक कहलाते हैं	मंगलवार शनिवार रविवार को दुइज ७-१२ तिथि और इनमें से कोई नक्षत्र इन दिनों में पड़े। जैसे उ.फा. उ.भा. पूर्वा.भा. पुनर्वसु. कृतिका. उ. षा. पड़ें यानी एक ही दिन इनमें से कोई वार नक्षत्र तिथि पड़े तो होग॥	भद्रा तिथि को शनि. मंगल. रवि.	दुइज ७-१२. धनि. चित्रा. मृग.
इन दिनों में जो कार्य करोगे पांच बार करना होगा। खाट बनाना प्रेत दाह घास लकड़ी न इकट्ठा करें।		इसका फल यदि इस समय	दूना होता है। में काम करोगे तो

शुभाशुभ तिथियां

शुक्लपक्ष को नन्दा रिक्ता अशुभ। भद्रा पूर्णा मध्यम। जया शुभ और कृष्णपक्ष को नन्दा रिक्ता शुभ, भद्रा पूर्णा मध्य। जया अशुभ हर कार्य करने के पहले विचार करलेना चाहिये। कौन पक्ष है इस टाइम

कृष्णपक्ष को परिवा से पंचमी तक पू तिथि शुभ छठ से दशमी तक मध्यम एकादशी से मावस तक अशुभ होते हैं शुक्ल पक्ष में परिवा से पंचमी तक अशुभ। छठ से दशमी तक मध्यम एकादशी से पूर्णिमा तक शुभ होते हैं। अब कार्य के समय पत्रा से देखो

नन्दा को जानो	भद्रा को	जया को	रिक्ता	पूर्णा को
तिथि १-६-११ पड़े तो	तिथि. २-७-१२ पड़े तो	३-८-१३ पड़े तो	४-९-१४-पड़े तो	५-१०-१५-मानें पूर्णिमा ३० मानें मावस पड़े तो कृष्णपक्ष
कृष्णपक्ष	कृष्णपक्ष	कृष्णपक्ष	कृष्णपक्ष	

भी शुक्लपक्ष में भी इन्ही तिथियों में यही पड़ेगी

संसकृत में मासों के नाम	
चैत्र	= मधुमास
वैसाख	= माधव
जेठ को	= शुक्र
असाढ	= शुचि
सावन	= नभ
भादों	= नभस्य
क्वार	= ईष
कार्तिक	ऊर्ज
अगहन	= सह
पूस	= सहस्य
माघ	= तप
फागुन	= तपस्य

संसकृत में राशियों के नाम।।	
अज	मेष
वनिता	कन्या
मृग	मकर
घट	कुम्भ
अवत्या	कन्या
मन्मथ	मिथुन
केशरि	सिंह
तुला	तुला
वृष	वृष
कुलीर	कर्क
जीवाय	बृहस्प

चन्द्र की 12 अवस्था

सूर्योदय से सवा घड़ी यानी आधा 2 घंटा पर बदलती हैं अवस्थायें

प्रवास
नाश
मरण
जय
हास्य
रति
क्रीड़ा
सुप्त
भुक्त
ज्वर
कम्प
स्थिर

सूर्य - चन्द्रमा - मंगल - बुध - गुरु - शुक्र - शनि
स्थिर मति - चंचल मति - क्रूरमति - मिश्र मति - कोमल मति - लघु मति - तीक्ष्ण प्रकृति

॥ ऋतु बरशान ॥

मास बैसाख से शुरू किया जाता है

जब पत्रा में सूर्य इन इन रासियों पर आवे
मीन-मेष के सूर्य हों वसन्त ऋतु समझो
बृष-मिथुन " " " ग्रीष " "
कर्क-सिंह . . . . वर्षा " "
कन्या-तुला " " " शरद " "
वृश्चिक-धन " " " हेमन्त " "
मकर-कुम्भ " " " शिशिर " "

किस मास में किस के सूर्य रहते हैं	
बैसाख में	मेष के सूर्य रहते हैं।
जेठ में	बृष . . . .
असाढ़ में	मिथुन . . . .
सावन में	कर्क . . . .
भादों में	सिंह . . . .
क्वार में	कन्या . . . .
कार्तिक में	तुला . . . .
मंसिर में	वृश्चिक . . . .
पूष में	धन . . . .
माघ में	मकर . . . .
फागुन में	कुम्भ . . . .
चैत में	मीन . . . .

हर तिथियों के स्वामी

परिवा के अग्नि जी	तेरस के कामदेव
दुइज के ब्रह्मा जी	चौदस के शिव
तीज के पारवती जी	मावस के पितर
चौथ के गणेश जी	पूर्णिमा के चन्द्र

पंचमी के नाग देव
छठ के कार्तिके जी
सप्तमी के सूर्य जी
अष्टमी के शिव जी
नौमी के दुर्गा जी
दशमी के यमराज
एकादशी के विश्वेदेवा
द्वादशी के विष्णु

पूरब को संस्कृत में प्राची
पश्चिम को . प्रतीची
उत्तर को . . उदीची
दक्षिण को . . . अवाची

यायिजय योग मुहूर्त का दिन। क्र. आ. म. अ. श. म. ज्ये. मूल वि.
स्थायिजय योग मुकालय का दिन तीनो पूर्वा. तिथि चौथ चा१४. तिथि दिन मंगल. शनिवार हो

सन्धि योग में

तिथि	८-१२
करण	तैतिल
नक्षत्र	अनु. म. पुष्य

मुकदमा दायर के मुहूर्त तिथि

तिथि - ११-१३
१-३-५-६-८
१५ / वार. रवि
चंद्र गुरु. मं. शनि

चोरी गई वस्तु का ज्ञान

नं.		
१	अन्धे	रोहिणी-पुष्य-उ.फा. वि. पू. षा. धनि. रेवती
२	काने	मृग. आर्द्रा. हस्त. अश्विनी. अनुराधा उ. फा. शत.
३	अन्धे	आर्द्रा. मघा. चि. ज्येष्ठा. पू. भा. भरणी अभिजित
४	सुलोचन	पुनर्वसु. पू. फा. स्वा. मूल. श्रवण उ. भा. कृतिका

नम्बर १ की दिशा। पूर्व। फल। शीघ्र मिले
नम्बर २ की दिशा। दक्षिण। फल। ३ दिन बाद
नम्बर ३ की दिशा। पश्चिम। फल। १ मास में
नम्बर ४ की दिशा। उत्तर। फल। कभी नहीं

नक्षत्र. स्वा. ह. म. अनु. ध. पुष्य. अश्लेषा रे. रो. ३ उत्तरा

यदि मघा नक्षत्र से उ.फा. नक्षत्र तक कोई वस्तु खोवे तो शीघ्र मिलेगी। हस्त से धनिष्ठा तक जाय तो लेने वाला न देगा। शतभीषा भरणी तक जाय तो घर ही में पड़ी है। कृतिका से अश्लेषा तक जाय तो कभी न मिलेगी। सूर्य नक्षत्र से पहले ८ नक्षत्रों में गुम होगी तो वस्तु जंगल में है। यदि अगले ८ नक्षत्र तक खोवे तो घर के बाहर ही है। यदि और आगे के नक्षत्रों में गई तो न मिले। यदि देखना हो तो पत्रा में देखो सूर्य किस नक्षत्र में है मानो अश्विनी पर है तो अश्विनी से

जज से मिलने का मुहूर्त

तिथि- १-२-३
५-६-७-८
१०-११-१२
१३-१५-
चंद्र - बुध - गुरु
शुक्र - ३ उत्तरा
मृ. रो. रे. चि. पुष्य. अनु.

गिनो तो अश्लेषा तक नौ नक्षत्रों के अन्दर वस्तु गुम हुई है तो समझो कि वस्तु जंगल में है। इसी तरह सब देखे

सूर्य नक्षत्र से नवें नक्षत्र में पशु गया हो तो पशु वन में सूर्यनक्षत्र से ६ नक्षत्र तक गया हो तो घोरे में है सातवां नक्षत्र पड़े तो जल्दि आवे दूसरा पड़े तो नहीं मिले तीसरा नक्षत्र पड़े तो समझो मरगया।

अधोमुखी नक्षत्र	उर्ध्वमुखी नक्षत्र	तिरियक संज्ञक नक्षत्र
मूल अश्लेषा में दुष्टकर्म इसमें करे	आर्द्रा. पुष्य. श्र. ध. शत. सिद्धि करे इसमें भक्ती मोक्ष का साधन करें।	अनु. ह. स्वा. ज्ये. पुनर्वसु इसमें कुंआ तालाब बावली खुदावे

वर्जित योग

मृत्यु योग		हुताशन योग बुरा		प्रयोगारम्भे क्रमात्		
रवि	अनुराधा	रवि को	द्वादशी	अस्थान	न.	फलानि
सोम	उ.षा.	चन्द्र को	छठ	शीर्षे	३	हानि
भौम	शतभिषा	भौम को	सप्तमी	मुखे	३	सिद्धि
बुध	अश्विनि	बुध को	अष्टमी	कण्ठे	३	मृत्युः
गुरु	मृगसिरा	गुरु को	नौमी	हस्ते	४	शत्रुभयम्
शुक्र	अश्लेषा	शुक्र को	दशमी	हृदये	४	इष्ट प्राप्ती
शनि	हस्त	शनि को	एकादशी	उदरे	३	हानि:
				कटि	३	इष्ट प्राप्ती
				चरणे	४	धन प्राप्ति

रवि मं.	नन्दा बुरी
शुक्र चंद्र	भद्रा बुरी
बुध	जया बुरी
शनि	पूर्णा बुरी
गुरु	रिक्ता मृत्युयोग होता है।

इनमें शुभ काम न करें।

इसी तरह देखा जाता है। देखने का तरीका जब प्रयोग करना हो सूर्य नक्षत्र से अनुष्ठान नक्षत्र तक गिनो जैसे हस्त पर सूर्य हो तो स्वाती नक्षत्र पर कोई काम शुरू करने जा रहे हो तो स्वाती नक्षत्र हस्त से तीसरा नक्षत्र (स्वाती) पड़ रहा है प्रयोगारम्भ में तीन नक्षत्र तक हानि लिखो इसके बाद ३ नक्षत्र तक के अन्दर करो वि. ज्येष्ठा. अनुराधा तक बाद है

मृत्यु योग है देखो

शुभ तिथियां कृष्ण पक्ष में २-५-३-७-१०-११-१-१३-वा पूर्णमासी यह तिथि सब कार्य में शुभ हैं। कार्य भेद से सब तिथियां ठीक हैं। कृष्ण पक्ष की तेरस व शुक्ल की परिवा बहुत खराब है शुभ कार्य में और अमावस्या शुभ कार्य में वर्जित है।

॥ सिद्ध योग ॥

रवि	सोम	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
हस्त	मृग	अश्वनी	अनु	पुष्य	रेवती	रोहिणी

कृष्णपक्ष। प्रथम नन्दा के सिद्ध योग॥

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	कृष्णपक्ष
शुक्र	बुध	मंगल	शनि	गुरु	के योग

द्वितीय नन्दा के सिद्ध योग

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	शुक्लपक्ष के योग
रवि.मं.	चंद्र शुक्र	बुध	गुरु	शनि	

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती	नक्ष.

यह बार के सिद्ध योग हैं।

अर्थ उत्पादन के सिद्ध योग

रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
ज्ये.मू.	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
पे.अनु.	उ.षा.	शतभीषा	अश्वनी	मृगसि.	अश्ले.
	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा
	श्रवण	उ.भा.	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फा.
शनि को	उतरा.फा.हस्त.चित्रा.स्वाती				

चोरी के नक्षत्र. वार

विसारवा.कृ.३उतरा मू.आर्द्रा.भ.म.अश्ले. ज्ये. यह नक्षत्र हों

॥ बार यह हों ॥ चोरी में॥

शनि मंगल शुक्र गोचर में दशवें घर में मंगल बैठा हो तो अति लाभ हो

मंगल को युद्ध कतल, विष देना, चाहिये।

रिक्ता तिथि हो दुष्ट काम करने में। शनि.मंगल.रवि हो चौथ तिथि हो ६-१४ तिथि हो।

दुष्ट कर्मों की व्याख्या

कतल करना कराना जेल कराना। आग लगाना लड़ाई करना मारना इत्यादि दुष्ट कर्म कहलाते हैं।

शुक्लपक्ष को अति सुन्दर तिथियां

मास	तिथि
क्वार में	नौमी तिथि
कातिक	१२-१५ तिथि
माघ में	सप्तमी तिथि
भादों में	तीज तिथि
असाढ़ में	१०-१५ तिथि
जेठ में	१५ पूर्णिमा हो
फागुन में	पूर्णिमा हो
चैत में	पूर्णिमा हो

मास	तिथि कृष्णा पक्ष को अति सुन्दर
भादों में	अष्टमी तिथि
पूस में	एकादशी
भादों में	अमावस हो

पंचमी को उधार न दे

शनि को दिक्षा ले रवि को मंत्र ले।

॥ वारों के स्वामी ॥

रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शिव	दुर्गा	कार्तिके	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल

नीलम	तुला - कुम्भ - रासी वालों को अति लाभ
प्रयोग	मकर - बृष . . . . साधारण लाभ
शुभाशुभ	मिथुन - कन्या . . . . . . साधारण लाभ
	धन - मीन . . . कभी अच्छा कभी बुरा

गीत, नाच, क्षेत्र, खेती, चित्रकारी, उत्सव, घर बनाना, वस्त्र, गहना, लेना सिल्प का काम (नन्दा में शुभ है), बिवाह, जनेऊ, यात्रा, विद्या, कला हाथी, घोड़ा, रथ लेना, (भद्रा में शुभ है) सेना, फौज का काम, युद्ध शस्त्र लेना चलाना, यात्रा, उत्सव, घर लेना, बनाना, दवा निर्माण व्यापार (जया में शुभ है) दुष्ट काम सब (रिक्ता में शुभ)। यात्रा, व्याह, जनेऊ, राजगद्दी देना, देवरादि कारी बनाना, शान्ति कर्म पौष्टिक कर्म (पूर्णा में शुभ हैं)

नवरत्न की अंगूठी बनाने ॥
॥ का ढंग।

ईशान	पूर्व	आग्नेय
पन्ना	हीरा	मोती
उत्तर	माणिक	दक्षिण
पुखराज	पश्चिम	मूंगा
वायव्य	नीलम	नैऋत्य
लहसुनिया	पश्चिम	गोमेध

सन्मुख चन्द्र की व्याख्या

मेष	सिंह	धनु का	पूरब में चन्द्र रहता है।
मिथुन	तुला	कुम्भ	का चन्द्र पश्चिम में सन्मुख रहता है।
कर्क	वृश्चिक	मीन	का चन्द्र दक्षिण में
वृष	कन्या	मकर	का चन्द्र उत्तर में
			सा॰

यात्रा में सन्मुख चन्द्र उत्तम होता है। दिशा बल पांचवें पेज में आगे देखो

यात्रा की लगन बनाओ यदि १-४-७-१०-५-९ वें स्थान पर शुभग्रह हो तो शुभ यात्रा समझो। ३-६-११ वें स्थान पर पाप ग्रह हों तो यात्रा शुभ समझो। दशवें स्थान पर शनि हो तो खराब यात्रा है सातवें स्थान पर शुक्र खराब समझो। लगन से १-६-८-८ वें स्थान पर चन्द्र हो तो अशुभ समझो यात्रा। यात्रा लगन का मालिक १-६-७-८-१२ वें स्थान पर बैठा हो तो अशुभ है। सभी ग्रह अपने २ स्थान से ३।१० वें स्थान को एक चरण से देखते हैं। दोनों त्रिकोण ५।९ वें स्थान को दो चरण से देखते हैं। और ४-८ वें स्थान को तीन चरण से। सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि चारों चरण से देखते हैं। दृग बल माने। दृष्टि कहलाती है।

वेभाग	पंचस्वरा चक्रम्				
	१	२	३	४	५
	अ	इ	उ	ए	ओ
	क	ख	ग	घ	च
	छ	ज	झ	ट	ठ
	ड	ढ	त	थ	द
	ध	न	प	फ	ब
	भ	म	य	र	ल
	व	श	ष	स	ह
तिथि	१ ६ ११	२ ७ १२	३ ८ १३	४ ९ १४	५ १० १५
वार	रवि मं	बुध चन्द्र	गुरु	शुक्र	शनि
न.	रे.अ. म.कृ रो.मृ	पुनर्व पु.म अश.	उ.फा. ह.चि स्वा	अनु. ज्ये. मू.	अ.ध शत पू.भा
	आर्द्रा	पूर्वा फा.	वि.	पू.षा. उ.षा	उ.भा

जुवा सट्टा लाटरी, चोरी युद्ध मुकदमाको

यह पंच पंक्तियां हैं पूछने वाले के नाम का पहला अक्षर जिस पंक्ती में मिले वही पंक्ति बालस्वर को समझो फिर उस पंक्ती से दूसरी पंक्ती कुमार तीसरी पंक्ती युवा चौथी पंक्ती वृद्ध पांचवी मृत्य स्वर की पंक्ती होगी गिनने का तरीका पहली तो नामाक्षर वाली पंक्ती इसके आगे वाली दूसरी फिर आगे तीसरी चौथी पांचवीं होगी । युवा स्वर के नक्षत्र वार तिथि एक हो दिन पड़े उसी दिन अपना काम करे जुवा, सट्टा, आदि मुकदमा दायर करने में मुद्दई का युवा स्वर रहे मुद्दालय का वृद्ध या मृत्य स्वर उस दिन पड़े तो दायर करे। यदि इससे न ठीक बैठे तो सर्वाङ्ग बना कर काम करे जिस दिन का सर्वाङ्ग बन जाय उस दिन दायर करे

यात्रा प्रतिउत्तम चरलग्न में	यात्रा प्रति स्वभाव स्थिरमें	यात्रा मध्यम द्विस्वभाव लग्न में

यायिज्य योग मङ्गई का होता है। जो दायर करता है स्थाइज्य योग मुद्दालय का होता है जिस पर किया है सन्धि योग दोनों का होता है।

चर	स्थिर	द्विस्वभाव
मेष	वृष	मिथुन
कर्क	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धन
मकर	कुम्भ	मीन

अफसरों से मिलने का महूर्त

अफसर से ध्रुव - मृदु - क्षिप्र नक्षत्र में मिलने जाये। सोम - गुरु - शुक्र - रवि २ - ३ - ५ - ७ - १२ तिथियों में मिले। सूर्यबल उच्च हो। अस्त में न जाय।

नक्षत्रों के रुप स्वभाव

रोहिणी	उत्तराभाद्र	उ. षा	उ. भाद्र	मृगसिरा, चित्रा, अनुराधा, रैवती
ध्रुवास्थिर	ध्रुवास्थिर	ध्रुवास्थिर	ध्रुवास्थिर	मृदुमैत्री मृदुमैत्री मृदुमैत्री =

कृतिका	विसाखा	भरणी	मघा	पूर्वाभा.	पूर्वाषाढ	शतभीषा
मिश्रसा	मिश्रसा	उग्रक्रूर	उग्रक्रूर	उग्रक्रूर	उग्रक्रूर	चर
अश्विनि	पुष्य	हस्त	अश्लेषा	पुनर्वसु	स्वाती	श्रवण
लघुक्षिप्र	लघुक्षिप्र	लघुक्षिप्र	तीक्षण	चर	चर	चर

धनिष्ठा	ज्ये. मूल
चर	तीक्ष्णक्रूर

बजार लगाने का दुकान खोलने का महूर्त

मिश्र-ध्रुव-क्षिप्र रिक्त तिथि मंगलवार छोड़ दे

आपरेशन करने का समय।

रवि	स्वा. मृ.
गुरु	अनु. श्र.
	ज्ये. शत
मंगल	हस्त. अश.
	अभि. पुष्य

औषध सेवन में

मूल चर मृदु लघु नक्षत्रों में शुक्र चंद्र रवि गुरु बुधवार हो तो दवा शुरू करे।

औषध बनाने में

द्विस्वभाव वाली लगन हो ३-६-७-१२ वीं लगन शुभ है यह लगन द्विस्वभाव वाली होती हैं।

गर करण के बाद बणिज [illegible] [illegible] पर्यायवाची नाम (भद्रा) भी कहते हैं। हर तिथि का आधा भाग करण कहलाता है। कृष्ण पक्ष की चौदस से करण शुरु होता है। पहले शकुनि फिर चतुष्पद फिर नाग किंस्तुघ्न बव बालव कौलव तैतिल गर बणिज वृष्टि (भद्रा)

× योगों की सूची

विष्कुम्भ (१) नम्बर	परिघ (१९)
प्रीती (२)	शिव (२०)
आयुष्मान (३)	सिद्ध (२१)
सौभाग्य (४)	साध्य (२२)
शोभन (५)	शुभ २ (२३)
अतिगंड (६)	शुक्ल (२४)
सुकर्मा (७)	ब्रह्म (२५)
धृति (८)	ऐन्द्र (२६)
शूल (९)	वैधृति (२७)
गण्ड (१०)	
वृद्धि (११)	
ध्रुव (१२)	
व्याघात (१३)	
हर्षण (१४)	
वज्र (१५)	
सिद्धि (१६)	
तीपात (१७)	
यान (१८)	

करण सूचि

- बव (१)
- बालव (२)
- कौलव (३)
- तैतिल (४)
- गर (५)
- बणिज (६)
- विष्टि (७) भद्रा भी इसे कहते हैं
- शकुनि (८)

× करण

- चतुष्पद (९)
- नाग (१०)
- किंस्तुघ्न (११)

ऋतु वरणन

- बसन्त (१) हेमन्त (५)
- ग्रीषम (२) शिशिर (६)
- वर्षा (३)
- शरद (४)

सूर्य संक्रान्ति से ऋतु ज्ञान ॥

मीन + मेष	का सूर्य	बसन्त ऋतु
वृष + मिथुन	का सूर्य	ग्रीषम ऋतु
कर्क + सिंह	का सूर्य	वर्षा ऋतु
कन्या + तुला	का सूर्य	शरद ऋतु
वृश्चिक + धन	का सूर्य	हेमन्त ऋतु
मकर + कुम्भ	का सूर्य	शिशिर ऋतु

मास चक्र से ज्ञान

चैत + बैसाख	बसन्त
जेठ + असाढ़	ग्रीष्म
सावन भादों	वर्षा
क्वार + कार्तिक	शरद
अगहन पूस	हेमन्त
माघ फागुन	शिशिर

लग्न राशी संख्या

मेष (१	वृश्चिक [illegible]
वृष (२	धन (९
मिथुन (३	मकर (१०
कर्क (४	कुम्भ (११
सिंह (५	मीन (१२
कन्या [illegible]	
तुला [illegible]	

पूस (९)
माघ (१०)
फागुन (११)

सम्वत्सर सूची

नक्षत्र संख्या		मास संख्या		गणना क्रम
अश्विनि (१)	मूल (१९)	चैत (१२)	प्रभव (१)	मास को गणना
भरणी (२)	पूर्वाषाढ़ (२०)	वैसाख (१)	विभव (२)	वैसाख से होती है
कृतिका (३)	उत्तराषाढ़ (२१)	जेठ (२)	शुक्ल (३)	वार को गणना रविवार
रोहिणी (४)	श्रवण (२२)	असाढ़ (३)	प्रमोद (४)	योग को विष्कुम्भ से
मृगसिरा (५)	धनिष्ठा (२३)	सावन (४)	प्रजापति (५)	ऋतु को वसन्त से
आर्द्रा (६)	शतभिषा (२४)	भादों (५)	अंगिरा (६)	लगन को मेष से
पुनर्वसु (७)	पूर्वाभाद्र (२५)	क्वार (६)	श्रीमुख (७)	तिथि को गणना
पुष्य (८)	उत्तराभाद्र (२६)	कार्तिक (७)	भाव (८)	शुक्ल पक्ष को
अश्लेषा (९)	रेवती (२७)	अगहन (८)	युवा (९)	पड़िवा से शुरू करो
			धाता (१०)	कृष्ण पक्ष को पारेवा
				१६वीं संख्या समझो

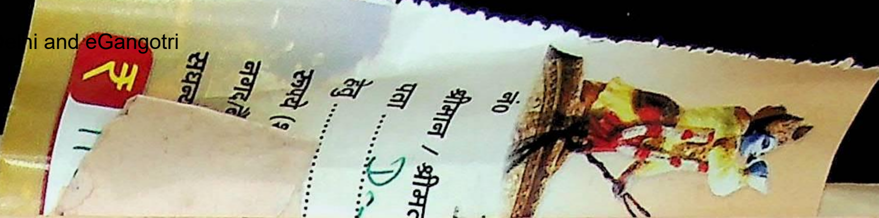
मघा (१०)
पूर्वाफाल्गुनी (११)
उत्तराफाल्गुनी (१२)
हस्त (१३)
चित्रा (१४)
स्वाती (१५)
विसाखा (१६)
अनुराधा (१७)
ज्येष्ठा (१८)

ईश्वर (११)	सर्वजित (२१)	
बहुधान्य (१२)	सर्वधारी (२२)	
प्रमाथी (१३)	विरोधी (२३)	
	विकृत (२४)	
विक्रम (१४)	खर (२५)	शुभकृत (३६)
वृष (१५)	नन्दन (२६)	शोभन (३७)
	विजय (२७)	क्रोधी (३८)
चित्रभानु (१६)	जय (२८)	विश्वास (३९)
सुभानु (१७)	मन्मथ (२९)	पराभव (४०)
तारण (१८)	दुर्मुख (३०)	प्लवङ्ग (४१)
		कीलक (४२)
पार्थिव (१९)	हेमलम्ब (३१)	सौम्य (४३)
	विलम्ब (३२)	साधारण (४४)
अव्यय (२०)	विकारी (३३)	विरोधकृत (४५)
	शार्वरी (३४)	परिधावी (४६)
	प्लव (३५)	

करणों को गणना बव से।
सम्वतसर को अंगिरा से।

संवतसर ६० होते हैं पत्रा में जो सम्वतसर हो उसको गणना संख्या देख लो इसले प्रश्न बल को

...में जन्म हुआ।
नम 5 प्रा। मंगल के नवांश में जन्म हुआ।



पूस (९)
माघ (१०)
फागुन (११)

सम्वत्सर सूची

नक्षत्र संख्या ×		मास संख्या	
अश्वनि (१)	मूल (१९)	चैत	१२
भरणी (२)	पूर्वाषाढ़ (२०)	बैसाख	१
कृतिका (३)	उत्तराषाढ़ (२१)	जेठ	(२)
रोहिणी (४)	श्रवण (२२)	असाढ़	(३
मृगसिरा (५)	धनिष्ठा (२३)	सावन	(४
आर्द्रा (६)	शतभिषा (२४)	भादों	(५)
पुनर्वसु (७)	पूर्वाभाद्र (२५)	क्वार	(६)
पुष्य (८)	उत्तराभाद्र (२६)	कार्तिक	(७)
अश्लेषा (९)	रेवती (२७)	अगहन	(८)
मघा (१०)			
पूर्वाफाल्गुनी (११)			
उत्तराफाल्गुनी (१२)			
हस्त (१३)			
चित्रा (१४)			
स्वाती (१५)			
विसाखा (१६)			
अनुराधा (१७)			
ज्येष्ठा (१८)			

सम्वत्सर:
प्रभव (१)
विभव (२)
शुक्ल (३)
प्रमोद (४)
प्रजापति (५)
अंगिरा (६)
श्री मुख (७
भाव (८)
युवा (९)
धाता (१०
ईश्वर (११)
बहुधान्य (१२)
प्रमाथी (१३)
विक्रम (१४)
बृष (१५)
चित्रभानु (१६)
सुभानु (१७)
तारण (१८)
पार्थिव (१९)
अव्यय (२०)
सर्वजित (२१)
सर्वधारी (२२)
विरोधी (२३)
विकृत (२४)
खर (२५)
नन्दन (२६)
विजय (२७)
जय (२८)
मन्मथ (२९)
दुर्मुख (३०)
हेमलम्ब (३१)
विलम्ब (३२)
विकारी (३३)
शर्वरी (३४)
प्लव (३५)
शुभकृत (३६
शोभन (३७)
क्रोधी (३८)
विश्वावसु (३९)
पराभव (४०)
प्लवङ्ग (४१)
कीलक (४२)
सौम्य (४३)
साधारण (४४)
विरोधकृत (४५)
परिधावी (४६

गणनाक्रम
मास को गणना
बैसाख से होती है
बार को गणना रविबार
योग को विष्कुम्भ से
ऋतु को बसन्त से
लग्न को मेष से
तिथि को गणना
शुक्ल पक्ष को
पड़िवा से शुरू करो
कृष्ण पक्ष को परेवा
१६ वी संख्या समझो
करण को गणना
बव से।
सम्वत्सर को
अंगिरा से।

सम्वतसर ६० होते हैं पत्रा में जो सम्वतसर हो उसको गणना संख्या देख लो इससे प्रश्न बल की

× सम्वत्सर	तिथि शुक्लपक्ष से गणना की	
प्रमादी (४७)	चतुर्थी (४)	एकादशी (२६)
आनन्द (४८)	पञ्चमी (५)	द्वादशी (२७)
राक्षस (४९)	छठ (६)	त्रोदशी (२८)
	सप्तमी (७)	
अनल (५०)	अष्टमी (८)	चतुर्दशी (२९)
पिंगल (५१)	नवमी (९)	मावस (३०)
कालयुक्त (५२)	दशमी (१०)	
सिद्धार्थी (५३)	एकादशी (११)	
रौद्र (५४)	द्वादशी (१२)	
दुर्मति (५५)	त्रोदशी (१३)	
दुन्दुभि (५६)	चतुर्दशी (१४)	
रुधिरोद्गारी (५७)	पूर्णिमा (१५)	
रक्ताक्ष (५८)	परिवा (१६)	
	दूइज (१७	
क्रोधन: (५९	तृतिया (१८)	
क्षय: (६०)	चतुर्थी (१९)	
	पंचमी (२०)	
तिथिगणना	छठ (२१)	
प्रतिपदा (१)	सप्तमी (२२)	
दुतिया (२)	अष्टमी (२३)	
	नौमी (२४	
तृतिया (३)	दशमी (२५	

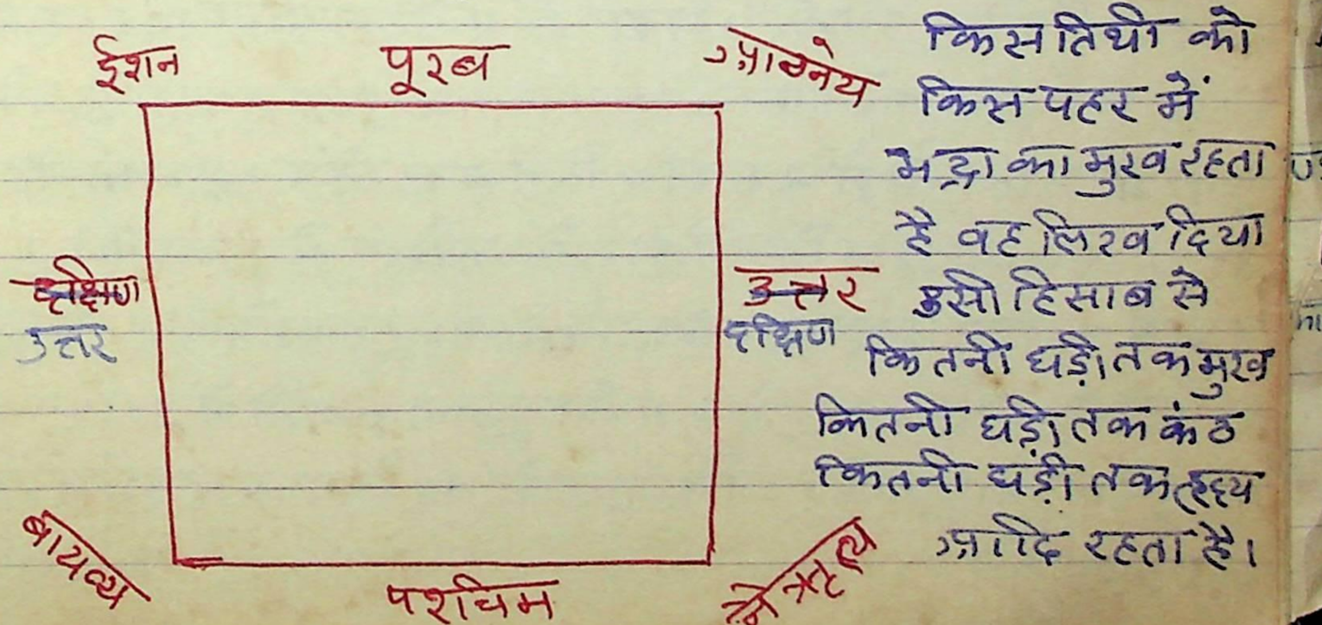
मे. बृ. मिथुन राशी का चन्द्र पत्रा में जिस दिन हो तो समझो भद्रा स्वर्ग में है।

जन्म हुआ। मंगल के नवांश में जन्म हुआ।

॥ भद्रा का ज्ञान ॥

भद्रा का जन्म श्री महादेवजी के अंग से हुआ है। गदहे पर सवार रहती है। इसके तीन पांव हैं। पुंछ है। सेर की सी गर्दन है। मुर्दा पर भी सवार है। सात हाथ लम्बी पेट पतला शिव की आज्ञा से देवताओं के काम से लगी है। महा उग्र है विकराल है। देह मोटी है। बड़े २ दांत बड़ी २ दाढ़ी हैं। नाश करने वाली है। अग्नि रुप होकर प्रथ्वी पर वास करती है। भद्रा जिस दिन जिस समय से लगती है उस समय से शुरु में ५ घड़ी तक भद्रा का मुख होता है। पश्चात् १ घड़ी तक कंठ में रहती है। दस घड़ी तक हृदय होता है। ५ घड़ी तक नाभी ६ घड़ी तक कटि तीन घड़ी तक पुंछ। जब मुख वाली घड़ी होती है उस समय शुभ काम न करे। कार्य नाश करती है। कण्ठ वाली घड़ी में मृत्यु वत कष्ट होता है। हृदय वाली घड़ी में लक्ष्मी नाश होती है। नाभी में बुद्धि का नाश कटि में बुद्धि नाश। पूंछ वाली घड़ी में जय होती है। आखिरी की तीन घड़ी शुभ होती है।

भद्रा का दिशा का ज्ञान = पूर्व दिशा में चौदस के दिन पहले पहर में [जाना हो तो]
भद्रा का मुख रहता है कभी न जाय उस दिन उस बेला में।
यदि आग्नेय कोण में अष्टमी को जाना हो तो दूसरे पहर मे मुख
होता है कभी न जाय। उत्तर में एकादशी को जाना हो तो न
जाय, सातवें पहर में मुख भद्रा का रहता है। नैऋत्य कोण
में पूर्णिमा को चौथे पहर न जाय। न शुभ काम करे।
पश्चिम में चौथ को पांचवे पहर न जाय। वायव्य में
दशमी को छठे पहर न जाय। दक्षिण में सप्तमी को तीसरे
पहर में न जाय। ईशान में तीज को आठवें पहर मुख होगा
न जाय। पूंछ की घड़ी शुभ होती है। किस दिशा में कि समय



किस तिथी को
किस पहर में
भद्रा का मुख रहता
है वह लिख दिया
इसी हिसाब से
कितनी घड़ी तक मुख
कितनी घड़ी तक कंठ
कितनी घड़ी तक हृदय
आदि रहता है।

॥ रोगविज्ञान ॥ शान्ति का उपाय ॥

जिस नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो उस नक्षत्र के देवता का जप पूजन हवन दान करने से रोग शान्ति होती। यदि अश्विनी में रोग होवे तो ९ दिन भय रहता है। इसमें अश्विनी कुमारों की पूजा भरणी में रोग होने से मृत्युवत कष्ट यम की पूजा करे। कृतिका में भी ९ दिन क्लेश रहे। इसमें अग्नी पूजा। रोहिणी में ७ दिन तक पीड़ा रहे इसमें ब्रह्मा जी की पूजा करे। मृगसिरा में ३० दिन पीड़ा रहे इसमें सोम देवता की पूजा करे। आर्द्रा में ३० दिन तक पीड़ा रहे इसमें रुद्र की पूजा करे। पुनर्वसु में ७ दिन पीड़ा रहे इसमें सूर्य की माता की पूजा करे। पुष्य में ७ दिन पीड़ा रहे। इसमें गुरु की पूजा करे। अश्लेषा में ३० दिन पीड़ा रहे। इसमें सर्प की पूजा करे। मघा में २० दिन पीड़ा रहे। इसमें। पित्रों की पूजा करे शनि को ज्यादा कष्ट हुआ करता है इसमें। पूर्वा फाल्गुनी में २ मास ९ दिन कष्ट रहेगा। अर्यमा की पूजा उत्तरा फाल्गुनी में ७ दिन पीड़ा इसमें आदित्य की पूजा करे। हस्त में १५ दिन कष्ट रहे सविता देवी की पूजा इसमें करे। चित्रा में ११ दिन कष्ट रहे त्वष्ट देवता की पूजा। स्वाती में ३० दिन कष्ट वायु देव की पूजा करे। विसाखा में १५ दिन कष्ट इसमें अग्नी की पूजा करे। अनुराधा में ३० दिन कष्ट मित्र से आदित्य की पूजा इसमें।

Office of the M.O. I/c Maternity Home,

ज्येष्ठा में ३० दिन रहे इसमें इन्द्र की पुजा करे। मूल में ७ दिन कष्ट नैऋत्य में यातुधान की पुजा करे॥ पूर्वाषाढ में ३० दिन कष्ट इसमें वरुण की पुजा करे। उत्तराषाढ में ३० दिन कष्ट इसमें विश्वेदेवा की पुजा करे॥ श्रवण में ११ दिन पीड़ा रहे इसमें विष्णु जी की पुजा करे। धनिष्ठा में ३० दिन कष्ट रहे इसमें आठों वसु की पुजा करे। शतभीषा में ११ दिन कष्ट रहे इसमें वरुण पुजा। पूर्वाभाद्र में ३० दिन कष्ट रहे। इसमें ११ रुद्रों की पुजा करे॥ उ. भाद्र में ७ दिन कष्ट रहे। ११ रुद्रों की पुजा इसमें भी करे रेवती में १ मास कष्ट रहेगा इसमें आदित्य की पुजा करे। रेवती में ज्वर बहुत दिन आता है। तीनों पूर्वा. अश्लेषा. ज्येष्ठा, आर्द्रा में बीमारी मरण समान कष्ट दे। यदि अश्लेषा. पूर्वा.भाद्र स्वाती, भरणी. शतभीषा. शनि-रवि-मंगल का दिन हो तो और परिवा-अष्टमी-द्वादशी-चौदस-पूर्णमासी तिथि पड़ जाय तब रोग उत्पन्न हो तो निश्चय मृत्यु होने की संभावना है कहते तो यह है चाहे धन्वन्तरी भी आवे रक्षा न करे।

॥ प्रश्न पिंड बनाने की क्रिया ॥

प्रश्न समय की तिथि, पहर, नक्षत्र, बार, योग, सम्वत्सर, नामाक्षर
इन्हें जोड़ कर जो फल आता है वही पिंड कहलाता है।

॥ उदाहरण ॥

जैसे किसी ने पूछा मेरा साल कैसा रहेगा। तो तुम पत्रा उठाओ देखो इस समय कौन तिथि लगी है और प्रश्न किस पक्ष का प्रश्न है। यह देखो मान लो कृष्ण पक्ष की तृतीया को प्रश्न किया तो १८ संख्या तिथि की हुई। उस समय नक्षत्र पुनर्वसु है तो ७ वीं संख्या नक्षत्र की हुई। उस समय योग शूल है तो ९ वीं संख्या हुई। वार शनि है तो ७ संख्या बार की हुई। ~~सम्वत्सर २०२६ है तो वो संख्या जोड़ो~~
नाम गोपाल है तो ३ अक्षर नाम का हुआ २०७० पिंड बना ॥
३ से इस जोड़ फल में भाग दो

१८ संख्या तिथि की
७ संख्या नक्षत्र की
९ योग संख्या
७ बार संख्या
~~२०२६ सम्वत्सर संख्या~~
३ नामाक्षर संख्या

२०७०

३) २०७० (६९०
 १८
 २७
 २७
 ०
 ×

शेष ० बचा तो यह वर्ष समझो अच्छा बीतेगा

यदि १ शेष बचे तो क्लेशप्रद समय रहेगा
यदि २ शेष बचे तो सामान्य
यदि ० शेष बचे तो सुखद रहेगा॥

प्रश्नाक्षर द्वारा प्रश्न

जब कोई प्रश्न करे उसके प्रश्नाक्षर गिन ले। यदि प्रश्नाक्षर बहुत अटपट और ज्यादा हों तो प्रश्न कर्ता यदि ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम लिवावे। और क्षत्री हो तो नदी का नाम। वैश्य हो तो किसी देवता का नाम। शुद्र हो तो किसी फल का नाम लिवावे फिर उसके अक्षर गिन ले फिर स्वर व्यंजन वर्णों के ध्रुवांक लिखे।

॥ स्वर ध्रुवांक ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१६	२५	

॥ व्यंजन ध्रुवांक ॥

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०	१३	२२	३५	४५	२४	१८	१७

ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
१३	३५	२८	१८	२६	२७	२६	१६	१२	१३	३५	२६	२५	३५	१२

॥ पिंड बनाने का एक प्रकार यह है ॥

जैसे किसी ने गुलाब का नाम लिया तो देखो (ग का ध्रुवांक २१ है उ की मात्रा है ग पर तो उ स्वर हुआ उ का ध्रुवांक १५ है ल का ध्रुवांक १३ है आ की मात्रा है आ का ध्रुवांक २१ है। ब का ध्रुवांक २६ है ब के साथ अ की ध्वनि निकल रही है तो छोटे अ का ध्रुवांक १२ है। यह स्वर और व्यंजन के सब ध्रुवांकों का योग है १०८ इसी को पिण्ड कहते है इसी पिण्ड पर हर प्रश्नोत्तर मिलेगा

॥ लाभहानि प्रश्न ॥

लाभालाभ प्रश्न में पिंड में ४२ जोड़ कर ३ के भाग देने से शेष १ में लाभ २ में अल्प लाभ ० में हानि होगी

॥ जय पराजय का प्रश्न ॥

इसमें पिण्ड में ३४ जोड़ कर ३ से भाग दे १ शेष में जय २ में सान्धि ० में पराजय

दुख सुख का प्रश्न

पिंड में ३८ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में सुख ० में दुख मिलेगा

जीवन मरण के प्रश्न में

पिण्ड में ४० जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में जीवन है २ में कष्ट ० में मरण है

यात्रा प्रश्न

पिण्ड में ३७ जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में उत्तम २ में अल्प यात्रा ० में नहीं होगी

वर्षा का प्रश्न

पिण्ड में ३२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा २ में मध्यम ० वर्षा नहीं होगी।

गर्भ का प्रश्न है की नहीं

पिंड में २६ जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष बचे तो गर्भ है। २ में संदेह ० में नहीं है।

सत्यासत्य का प्रश्न

पिंण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य ० में असत्य बात है

बाहर स्त्री है या पुरुष

प्रश्न के अक्षर और स्वर के ध्रुवांक जोड़ कर तिथि नक्षत्र वार संख्या जोड़ कर ७ से भाग देने में २-४-६ हो तो स्त्री है १-३-५-० में पुरुष है।

तेजी मंदी का प्रश्न

पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता २ में समान ० में मंहगी

विवाह प्रश्न

पिण्ड में ८ से भाग से १ शेष में बिना यत्न के होगा २ में अधिक यत्न से विवाह होगा ३ में नहीं होगा ४ में विवाह से कन्या मरण ५ चाचा का मरण ६ राज भय ७ में वर कन्या दोनों का मरण या ससुर का मरण ० में विवाह से सन्तान का मरण होगा।

गर्भ ज्ञान

बार की संख्या २ से गुणा करके पक्ष के हिसाब से तिथि संख्या भी जोड़ कर दें २ से भाग देने पर १ शेष रहे तो गर्भ है २ शेष में नहीं है।

पुत्र है या कन्या ऐसा प्रश्न॥

तिथि बार नक्षत्र योग नामाक्षर संख्या जोड़ कर ७ से भाग दे १ शेष ३-५-७-९-११ ऐसी विषम हो तो पुत्र सम हो तो कन्या जैसे २-४-६ यदि प्रश्न पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र २ में कन्या ० मे कुछ नहीं है।

अपना या पराया गर्भ का प्रश्न॥

योग बार संख्या जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में अपना २ में वर्णशंकर ० शेष में अपने वीर्य से कहना।

जीवन मरण का प्रश्न॥

प्रश्न के अक्षरों को दूना कर दें फिर स्वर यानी जितनी मात्रा लगी हो उनको चतुर्गुणित कर के सब जोड़ कर ३ से भाग दे १ शेष में जीवन २ में पीड़ा ० मरण यदि प्रश्न आलिंगित बेला का हो तो कुछ दिनों में मरेगा। अभि धूमित बेला का प्रश्न हो तो कुछ मासों में दग्ध बेला में हो तो कुछ वर्षों में

उदाहरण = यदि किसी ने

सूर्य उदय से ७ घड़ी बीतने पर यानी पौने तीन घंटा बीतने पर प्रश्न किया तो उस दिन के दिन मान में ३ से भाग दे दो जैसे २७ घड़ी है तो ९ = ९ घड़ी के तीन भाग हुये। तो प्रथम बेला आलिंगित = दूसरी बेला अभिधूमित तीसरी बेला दग्ध हुई। ९ घड़ी का भी तीन भाग कर तो ३-३ घड़ी हुई प्रश्न ७ घड़ी पर किया सूर्योदय के बाद तब भी प्रश्न तीसरे भाग का हुआ दग्ध बेला का इस प्रकार भी देख लो उस प्रकार भी तीन भाग दिन मान के करके देख लो।

द्रव्य लाभ का प्रश्न॥

प्रश्न कर्ता के नामाक्षरों की संख्या को ५ से गुणा करके ५ जोड़े उसमें ७ से भाग दे १ शेष बचे तो १० गुना लाभ २ में २० गुणा लाभ

परदेशी का प्रश्न।

तिथि, बार, नक्षत्र, करण, लग्न, संख्या में जो परदेश गया हो उसके नामाक्षर मिलावे ७ से भाग दे १ शेष में परदेशी जहां गया है वहीं है २ मे चल चुका ३ में आधे मार्ग में ४ में ग्राम या सहर के पास आ गया ५ में लौट गया ६ में रोग युक्त है ० में कार्य उसका नहीं हुआ।

क्या कर रहा है॥

तिथि, बार, नक्षत्र, योग की संख्या जोड़ कर २ गुणा करे ३ जोड़े १२ से भाग दे १ शेष में साथियों के साथ बैठा है २ में थोड़े मित्रों के साथ कसरत कर रहा है। कुछ उद्वेग कारक बात भी सुन रहा है। ३ में अपने स्थान पर बैठा कुछ सोच रहा है फिर कहीं कार्यवश चलने वाला है। ४ मे मुंह जल से धो रहा है। ५ सोकर उठा है कुछ खा रहा है। ६ में मार्ग में है इस समय मुलाकात हो सकती है। ७ बचे तो स्त्री के साथ क्रीड़ा कर रहा है। ८ बचे मन मे उद्वेग है ९ में धार्मिक कार्य में लगा है या सोच रहा है। १० में राज दरबार में सन्मान पा रहा है। ० मे दुखी है। पर स्त्री से मिलना चाहता है।

जन्म कब हुआ ऐसा पूछे कोई।

प्रश्न वर्ण ध्रुवांक को २ से गुणा करके मात्रा ध्रुवांक जोड़ कर पिण्ड बना के १०८ से भाग दे जो शेष संख्या आवे उसमें वर्ष जन्मसमय के बीत गये समझो। उसी पिण्ड में २ से भाग दो १ शेष में शुक्लपक्ष में जन्म २ में कृष्णपक्ष में जन्म हुआ। उसी पिण्ड में २७ से भाग दे १ बचे तो नक्षत्र अश्विनी से संख्या के अनुसार समझे। जैसे २ बचे भरणी ३ बचे कृतिका इत्यादि २। उसी पिण्ड मे ३० से भाग दे १ बचे तो १ अंश बीते जन्म हुआ। २ बचे २ अंश बीते इत्यादि २। १२ से पिण्ड में भाग दे १ बचे फागुन २ बचे चैत इत्यादि २ मास बनेगा। फिर १२ से पिण्ड में भाग दे तो १ बचे मेष २ बचे वृष इत्यादि २ लग्नों में जन्म हुआ। फिर पिंड मे ७ से भाग दे १ बचे रविवार २ बचे सोम इत्यादि २ वार निकालें।

॥ गर्भ है को नहीं॥ केरल का मत यह है।

प्रश्नदिन को बार संख्या को ३ से गुणा कर वर्तमान तिथि संख्या जोड़ कर २ से भाग दे १ शेष बचे गर्भ है ० बचे नहीं है।

॥ पुत्र होगा को कन्या॥

प्रश्न समय के तिथि- वार - नक्षत्र - योग नामाक्षरों को जोड़ कर २१ जोड़ कर ३ से भाग दे शेष १ बचे तो पुत्र २ बचे कन्या ० बचे गर्भपात

॥ कौन जीतेगा॥

अलग २ दोनों के नामाक्षर संख्याओं को ३ से गुणा करके उसमें वर्तमान तिथि की घड़ियां जोड़ दे ३ से अलग २ भाग दे देवे जिसका शेष अधिक बचे वह जीतेगा।

हर लग्न ज्ञान करके उसका फलविचार ॥

यदि मेष चर लगन में प्रश्न करे तो नानष्ट वस्तु यानी खोई हुई वस्तु का लाभ होगा। न ऋण मिलेगा। न धन लाभ। न रोग ज्ञमी जायेगा। केवल बन्दी छूटे। शत्रु सेना आवेगी। कुशल प्रश्न में कुशल है। कलह प्रश्न में कलह शान्त होगी। आना जाना होगा इस लगन में।

स्थिर लगन (वृषलग्न) में मृत प्रश्न हो तो मरणा नहीं होगा। खोई वस्तु का लाभ नहीं। स्थान, धन, प्राप्ति नहीं। आना जाना नहीं। रोगनाश नहीं। बंधन से मुक्ति नहीं। शत्रु आक्रमण नहीं करेंगे। अर्थ प्रश्न में अर्थ लाभ। कल्याण नहीं। कलह प्रश्न में शान्ति नहीं होगी अभी।

द्विस्वभाव में (मिथुनलग्न) में अभिलष्ट सिद्धि खोई वस्तु मिले देर से विलम्बसे शत्रु लोग शीघ्र आक्रमण करेंगे। जाना आना, बन्दी से छूटना देर से रोग कलह शीघ्र छूटें।

तत्कालिक ग्रह लक्षण इससे लाभालाभ ज्ञान करना ॥

प्रश्नाक्षरों को ६ से गुणा करके ८ जोड़ कर ९ से भाग दे तो शेष १ बचे रवि २ बचे सोम ३ बचे भौम ४ बचे बुध ५ में गुरु ६ बचे शुक्र ७ बचे शनि ८ बचे राहु ९ बचे केतु ग्रह इस समय है यह समझें। अगर तत्कालिक ग्रह सूर्य है तो काम सिद्ध नहीं होगा। चन्द्र है तो सिद्ध होगा। मंगल हो तो मृत्यु (कार्यनाश होगा) बुध गुरु शुक्र से लाभ) शनि राहु केतु हों असफलता मिलेगी।

प्रश्न समय तत्कालिक ग्रह चन्द्र शुक्र गुरु हों तो जीव सम्बन्धी चिंता कोई है। सूर्य बुध केतु हों तो कोई धातु सम्बन्धी चिन्ता है। मंगल शनि राहू हों तो कोई मूल सम्बन्धी चिंता है।

जीव- कीड़े मकोड़े से हाथी पर्यन्त जीव सम्बन्धी प्रश्न होता है।

धातु= मिट्टी से लेकर सोना चांदी पीतल लोहा कांसा तांबा रांग कांच आदि

मूल= तिनके से लेकर वृक्ष पर्यन्त मूल सम्बन्धी प्रश्न होता है।

॥ कार्य अवधि का ज्ञान ॥

प्रश्न समय तत्कालिक ग्रह सूर्य हो तो एक मास में काम होगा। चंद्र हो तो २० दिन में। मंगल हो तो २ मास में। बुध हो तो ७ दिन में। गुरु हों तो १६ दिन में। शुक्र हो तो २० दिन में। शनि राहू केतु हों तो १ वर्ष में

॥ विवाद अथवा मुकदमे में सन्धि का प्रश्न ॥

प्रश्न समय के इष्ट काल की घड़ी में १५ जोड़ कर ३ से भाग दे १ शेष बचे तो सुलह होगी २ बचे तो कोशिश करने पर सुलह होगी। ० बचे तो नहीं होगी।

॥ सन्तान होगी की नहीं ॥

प्रश्न दिन की तिथि संख्या में ४ से गुणा करके १ जोड़े तथा वर्तमान वार योग की संख्या जोड़ देवे २ का भाग देवे जो लब्धि आवे यानी भागफल जो आवे उसे ४ से गुणा कर ३ से भाग देने पर शेष १ बचे विलम्ब से होगी। २ बचे नहीं होगी ० बचे तो जल्दी ही होगी।

कैदी छूटेगा कि नहीं।।

अधिकारी और कैदी के नामाक्षरों की संख्या जोड़ कर २ से गुणा करे ६ जोड़ दे उसमें फिर ३ का भाग दे जो शेष बचे उसे ८ से फिर गुणा करे ३ का भाग दे। शेष १ बचे जल्दी छूटे २ बचे देर से छूटे ० बचे द्रव्य खर्च करने से मुश्किल से छूटे।

ग्रहों के ध्रुवांक ।।

रवि ५ सोम २१ भौम १४ बुध ७ गुरु का ८ शुक्र ३ शनि ११ ध्रुवांक है

॥ चक्र बार ध्रुवांक ॥

रवि	सो	मं	बु	गु	शु	श
५	२१	१४	६	८	३	११

अमुक से मुलाकात होगी कि नहीं

प्रश्न समय की इष्ट घड़ी यानी जितने बजे प्रश्न करे वह टाइम को ३ से गुणा कर के १ जोड़े ४ से भाग दे १ शेष बचे तो मुलाकात होगी। २ बचे तो जाने से मिलना होगा ३ बचे नहीं मुलाकात होगी। ४ बचे तो मिलने पर क्लेश होगा।

कार्य अवधि ज्ञान केरलमत से

प्रश्न कालिक तिथि वार नक्षत्र योग संख्या जोड़ कर ३ से गुणा करे ६ जोड़ दे ७ से भाग दे शेष यदि १ बचे १५ दिन में। २ बचे १ मास में। ३ बचे २ मास में। ४ बचे ६ मास में। ५ बचे दिन भर में ६ बचे रात्री भर में। ७ बचे तो ३ घंटे में ८ बचे तो २४ घंटे में। ० बचे २४ सैकेंड में यानी एक पल में।

किस हालत में मुलाकात होगी

(३)

गर्ग मनोरमा पुस्तक का मत || बोध चक्र ||

(१) केवल स्वर संख्या चक्र | २नं. केवल वर्णसंख्याचक्र ||

अ १ लृ = ९ आ २ लॄ = १० इ = ३ ए = ११ ऐ = १२ ई = ४ ओ = १३ उ = ५ औ = १४ ऊ = ६ अं = १५ ऋ = ७ अः = १६ ॠ = ८	**वर्ग संख्या चक्र** अवर्ग = १ गरुड़ कवर्ग = २ बिल्ली चवर्ग = ३ सिंह टवर्ग = ४ स्वान तवर्ग = ५ नाग पवर्ग = ६ मूषक यवर्ग = ७ मृग सवर्ग = ८ मेढ़ा	क १ ख २ ग ३ घ ४ ङ ५ च १ छ २ ज ३ झ ४ ञ ५ ट १ ठ २ ड ३ ढ ४ ण ५ त १ थ २ द ३ ध ४ न ५ प १ फ २ ब ३ भ ४ म ५ य १ र २ ल ३ व ४ श १ ष २ स ३ ह ४	इसके मत में भी कोई फल या मेवा का नाम प्रश्न कर्ता से लिवाते हैं।

वर्ग संख्यासहित स्वरों वर्णों के ध्रुवांक ||

अवर्ग१	अ१ आ२ इ३ ई४ उ५ ऊ६ ऋ७ ॠ८ लृ९ लॄ१० ए११ ऐ१२ ओ१३ औ१४ अं१५ अः१६
कवर्ग(२)	क्३ ख्४ ग्५ घ६ ङ्७
चवर्ग(३)	च्४ छ्५ ज्६ झ्७ ञ्८
टवर्ग(४)	ट्५ ठ६ ड्७ ढ्८ ण्९
तवर्ग(५)	त्६ थ्७ द्८ ध९ न्१०
पवर्ग(६)	प्७ फ्८ ब्९ भ्१० म्११
यवर्ग(७)	य८ र्९ ल्१० व्११
शवर्ग(८)	श्९ ष्१० स्११ ह्१२
	क्ष१३ त्र१४ ज्ञ१५

उदाहरण ||

जैसे किसी ने दाख कहा तो व्यंजन आ की मात्रा स्वर हुआ। ख वर्ण हुआ इसके साथ ध्वनि छोटे अ की निकली। वह स्वर हुआ दोनों स्वर वा वर्णों का ध्रुवांक जोड़ो (द् ८ + ख ४ जोड़ा १२ हुआ। (आ २ + अ १ = ३ हुआ तो वर्ण ध्रुवांक को स्वर ध्रुवांक से गुणा किया। १२ × ३ = ३६ यही पिंड कहलाता है इसी तरह सब बनेगा ||

सिद्धि असिद्धि का प्रश्न कार्यों में ज्ञात करने की क्रिया।

सिद्धि असिद्धि विषय का प्रश्न हो तो पिंड में २ का भाग देकर १ शेष बचे तो कार्य सिद्धि हो। ० बचे असिद्धि। लाभ अलाभ के प्रश्न में पिण्ड में २ का भाग देकर क्रम से लाभ, १ बचे लाभ ० बचे हानि।
किस दिशा में लाभ हानि का प्रश्न हो तो ८ का भाग पिण्ड में दे शेष १ हो तो पूर्व में लाभ। २ बचे ईशान में। ३ बचे उत्तर में ४ बचे वायव्य में ५ बचे पश्चिम में ६ बचे नैऋत्य में ७ बचे दक्षिण ८ बचे आग्नेय में लाभ होगा।
सन्तान का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३ का भाग दे १ बचे पुत्र २ बचे कन्या ३ या ० बचे तो हिजड़ा पैदा हो, या नहीं होगा कच्चा गिर जायेगा।
लोक सम्बन्धी प्रश्न हो तो पिण्ड में ३ का भाग दे १ बचे स्वर्ग में २ बचे मृत्युलोक में ० बचे पाताल में यदि काल जानना हो तो १ बचे भूत काल २ बचे बर्तमान ० बचे भविष्य काल।

धान्य धातु के १२ भेद

धान्य धातु हो तो पिंड में १२ से भाग दे १ शेष बचे सोना २ बचे चांदी ३ बचे तांबा ४ बचे शोधित मोती ५ में कांसा ६ में पीतल ७ बचे सीसा ८ बचे जस्ता ९ बचे लोहा १० बचे रांगा ११ बचे पारा १२ बचे अभ्रक। का प्रश्न है।

॥ अधान्य धातु का १० भेद॥

पिण्ड में १० का भाग दे १ शेष बचे मिट्टी २ में अंजन ३ में पत्थर ४ में हरिताल ५ बचे मैनसिल ६ बचे लहसुनिया ७ बचे पद्मपराग पत्थर ८ बचे प्रबाल (मूंगा) ९ बचे मुक्ता १० बचे चांदी का प्रश्न है।

लोकसम्बन्धीप्रश्न

देवताओं के भेद

पिण्ड में ४ से भाग देकर १ बचे स्वर्ग के २ में मर्त्यलोक के ३ बचे रसातल के और ४ शेष में अन्तरिक्ष के (आकाश) रहनेवाले देव होते हैं।

मनुष्यों की जाति भेद

पिण्ड में ५ के भाग से १ शेष बचे ब्राह्मण २ बचे क्षत्रिय ३ बचे वैश्य ४ में शुद्र जाति का व्यक्ति है।

पिण्ड में ४ का भाग देकर १ शेष मे स्वेदज) २ बचे उद्भिज (वृक्षादि) ३ बचे अंडज (सर्पादि और ४ बचे जरायुज (मनुष्यादि)

।राक्षसों का भेद।।

पिण्ड में २ का भाग देकर १ शेष बचे तो पृथ्वी पर रहनेवाला राक्षस और ० बचे नरकबासी राक्षस है।

हार जीत का प्रश्न ।। मुकदमे का

पिण्ड में प्रश्न कर्ता का नामाक्षर संख्या जोड़ कर ३ से भाग देकर शेष १ बचे तो मुद्दई की जीत २ बचे मुद्दालय की जीत ० बचे सुलह होगी समझो।

१२ भावों की जानकारी ।।

पिण्ड में २ का भाग देकर १ शेष बचे पुरुष ० बचे स्त्री का प्रश्न है। यदि पिण्ड में १२ से भाग देकर शेष १ बचे तनुभाव, २ बचे धन भाव ३ बचे सहजभाव ४ बचे सुहृद ५ पुत्रभाव ६ बचे शत्रुभाव (रोग) ७ मे स्त्रीभाव ८ बचे आयु भाव ९ बचे धर्मभाव १० बचे कर्मभाव (व्यापार) ११ बचे तो लाभ १२ बचे व्ययभाव समझना चाहिये उसी के अनुकूल उत्तर बतावे नील कण्ठी देखकर ८ भाव का फल बतावे

किस ग्रह का कोप है या अच्छाई

पिण्ड में ६ से गुणा करके १ जोड़े ० से भाग दे शेष संख्या के अनुसार ग्रहों का ज्ञान करो। १ बचे रवि २ बचे चन्द्र तीन बचे मंगल इत्यादि २

चोरी गई वस्तु का ज्ञान कहां है ।।

पिण्ड में ५ का भाग देकर १ शेष बचे तो खोई वस्तु घर में है। २ बचे पृथ्वी में ३ शेष बचे देवालय मे रक्खी है। ४ में दूसरे के घर में है। ५ शेष या ० बचे तो चोर चुरा कर ले गया है।

॥ नष्ट वस्तु की दिशा ज्ञान, खोये व्यक्ति की दिशा ज्ञान॥

प्रश्न अक्षरों को ६ से गुणा करके जोड़कर ९ से भाग दे। १ बचे रवि, २ शेष बचे चन्द्र, ३ शेष बचे मंगल, ४ शेष बचे तो बुध, ५ शेष बचे तो गुरु, ६ शेष बचे तो शुक्र, ७ शेष बचे शनि, ८ शेष बचे राहु, ९ शेष बचे केतु। तो अब इसी से दिशा ज्ञान करलो। चन्द्र सूर्य से पूर्व दिशा समझो। गुरु शुक्र से पश्चिम दिशा को। मंगल बुध से उत्तर दिशा में। शनि राहु से दक्षिण में

जैसे १, २, शेष बचे तो कहदो पूर्व दिशा में माल गया है। ५, ६, शेष बचे तो कहदो पश्चिम में माल गया है। ३, ४, शेष बचे तो कहदो उत्तर में माल गया है। ७, ८, शेष बचे तो कह दो माल दक्षिण में गया है।

॥ हर वस्तु की तेजी मंदी देखो इससे ॥
॥ मासतथा हर वस्तु का ध्रुवांक ॥

नम्बर	संज्ञा	चैत	वैसाख	जेठ	असाढ़	सावन	भादों	क्वार	कातिक	मंसिर	पूस	माघ	फागुन
१	जव	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
२	चना	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
३	गेहूं	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
४	धान	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
५	तिल	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
६	खांण	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
७	गुण	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
८	घी	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	१
९	नमक	१	०	२	२	३	२	०	२	१	१	२	१
१०	शहद	२	१	०	०	२	२	१	०	२	१	०	२
११	अरहर	०	२	१	१	२	२	२	१	०	२	१	०
१२	मूंग	२	१	०	०	१	१	१	०	२	१	०	२
१३	कपास	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	१
१४	रेंडी	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	१
१५	सूत	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	१
१६	वस्त्र	२	१	०	०	१	१	१	०	२	१	०	२
१७	कम्बल	०	२	१	१	२	२	२	१	०	२	१	०
१८	रेशम	०	२	१	१	२	२	२	१	०	२	१	०

तेजो मन्दो का प्रश्न पूछने पर

मास ध्रुवांक

		चैत	वैसाख	जेठ	अ.	सा.	भादों	क्वार	कातिक	मंगसिर	पूस	माघ	फागुन
१९	सुपारी	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	०
२०	अलसी	०	२	१	१	२	२	२	१	१	२	१	०
२१	तेल	१	१	०	०	१	१	१	०	२	१	०	२
२२	फिटकरी	१	०	२	२	०	०	०	२	१	०	२	१
२३	हींग	२	१	०	०	१	१	१	०	२	१	०	२
२४	हल्दी	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	०
२५	लौंग	०	२	१	०	१	२	२	१	०	२	८	२
२६	जीरा	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२७	अजवान	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२८	कपूर	०	२	१	०	२	२	२	२	०	२	१	१
२९	काकुन	१	१	२	१	०	०	०	१	१	०	२	२

जिस वर्ष में जिसदिन जानना हो उस वर्ष के शाका को पत्रा में देखलो जैसे इस वर्ष का जानना हो तो सम्बत् २०३१ शाका: १८९६ है तो तुम इस शाका: से १६४० घटा दो अब जिस मास को जिस वस्तु को तेजो मंदो देखनो हो। उसमास का ध्रुवांक जोड़ दो। ३ से भाग दे दो १ बचे साधारणलाभ २ बचे सस्ती होगी जो वस्तु पूछो ३ बचे महंगाई होगी उसकी। उदाहरण जैसे माघ में हल्दी का भाव पूछो तो माघ के नीचे हल्दी के सामने ध्रुवांक देखलो। ० लिखा है तो ० जोड़ा तो वही २५६ रहा इसे ३ से भाग दे दो १ शेष बचा समझो साधारण लाभ रहेगा।

```
 १८९६ शाका:
 १६४० −
 ─────
  २५६
    ० +
 ─────
३) २५६ (८५
   २४
 ─────
    १६
    १५
 ─────
     १
```

॥ ग्रह ध्रुवांक ॥

सू	चं	मं	बु	गु	शुक्र	शनि
५	५	८	५	१०	७	५

राशी ध्रुवांक ॥

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
७	१०	८	४	१०	५	७	८	७	५	११	१२

रासी	मे	वृष	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
अंश	३	२२	३३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१९	३३	२२

॥ अक्षरों का ध्रुवांक ॥

अक्षर	अ	ब	ज	द	इ	व	उ	ह	तथ	ए	क	ल	ग	न
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०
अक्षर	स	अ	फ	ष	क	र	श	त	स्वे	रव	आल	अवाद	जोय	ग
अंक	६०	७०	८०	९०	१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	१०००

॥ बार ध्रुवांक ॥

दिन	सूर्य	चंद्र	बुध	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अंक	६८०	३१३	१४०	१०	२६६	२८०	२२२

॥ स्वर ध्रुवांक ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
१३	१८	११	२८	१२	२२	३२	२६	२७	२७	२६	२७

॥ व्यंजन ध्रुवांक ॥

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द
१३	११	२१	३०	२९	१५	२१	२३	२६	२६	१२	१३	२२	२५	४५	२४	१८	१७
ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	स	ष	श	ह			
३३	३५	२८	१८	२९	२७	९६	१६	१३	३	३५	३९	३५	३९	१२			

॥ ग्रह स्वामियों की रासियों के ध्रुवांक ॥

सू राशी	चन्द्र	मंगल रासी	बुध रासी	गुरु रासी	शुक्र रासी	शनि रासी
सिंह है	~~स्वामी~~ कर्का	~~स्वामी रासि~~ मेष वृश्चिक	कन्या है	धन मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ
५	२१	१४	९	८	३	११

प्रश्न समय को लग्न ध्रुवांक ॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृश	ध	म	कु	मी
ध्रुवांक	३	२२	३३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१९	३३	२२

॥ नक्षत्र ध्रुवांक ॥

नक्ष.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आ	पुनर्व	पु.	आश्ले	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह	चि	स्वा
ध्रुवां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

वि	अनु	ज्ये	मू	पू.षा	उ.षा.	अभि	श्र.	ध	शत	पू.भा	उ.भा	रे
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८

॥ योगों का ध्रुवांक ॥

वि	प्रीति	आ	सौ	शो	अ	सु	धृ	शू	गं	वृ	ध्रु	व्या	ह	वज्र
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
सि	व्य	व	प	शिव	सि	सा	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	ऐन्द्र	वैधृत			
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७			

शुक्ल पक्ष से ॥ तिथियों के ध्रुवांक ॥

प	द्व	ती	चौ	पं	छ	स	अ	नौ	द	ए	द्वा	त्रो	चौ	पूर्णिमा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
प	द्व	ती	चौ	पं	छ	स	अ	नौमी	द	ए	द्वा	त्रो	चौ	मावस
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

॥ वर्ग ध्रुवांक ॥

लृ ९ लॄ १०

अवर्ग	अ २ आ ३ इ ४ ई ५ उ ६ ऊ ७ ए ११ ऐ १२ ओ १३ औ १४ अं १५ अः १६ ऋ ७ ॠ ८
कवर्ग	क ३ ख ४ ग ५ घ ६ ङ ७
चवर्ग	च ४ छ ५ ज ६ झ ७ ञ ८
टवर्ग	ट ५ ठ ६ ड ७ ढ ८ ण ९
तवर्ग	त ६ थ ७ द ८ ध ९ न १०
पवर्ग	प ७ फ ८ ब ९ भ १० म ११
यवर्ग	य ८ र ९ ल १० व ११
शवर्ग	श ९ ष १० स ११ ह १२ क्ष १३ त्र १४ ज्ञ १५

॥ ग्रामाक्षर और मकानमालिक का नामाक्षर मिलाने की विधि ॥

ग्राम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग	मकानमालिक का वर्गाक्षर
कावर्ग	गरुण	मार्जार	सिंह	स्वान	नाग	मूष	मृग गज	मेष	
अक्षर अवर्ग	३+३	५+४	७-५	१+६	३ ७ शत्रु	५+८	७-१	१+२	
कवर्ग	४+५	६-६नि	८-७	२+८	४-१	६ २ श	८-३	२+४	
चवर्ग	५+७	५+८	१.१नि	३-२	५-३	७-४	१ ५ शत्रु	३+६	
टवर्ग	६-१	८-२	२+३	४-४ नि	६-५	८-६	२+७	४ ८ शत्रु	
तवर्ग	७ ३ शत्रु	१+४	३+५	५+६	७.७ नि	१+८	३-१	५-२	
पवर्ग	८-५	२.६ शत्रु	४+७	६+८	८-१	२-२ नि	४-३	६-४	
यवर्ग	१+७	३+८	५ १ शत्रु	७-२	१+३	३+४	५ ५ नि०	७-६	
शवर्ग	२-१	४-२	६-३	८ ४ नि	२+५	४+६	६+७	८ ८ नि०	

नि का अर्थ ० है। श का अर्थ शत्रु है.

आय ध्वज पांच प्रकार की आय होती हैं

(१)	ध्वज	झंडा	यह आय के अर्थ लिख दिये
(२)	धूम	धूवां	
(३)	सिंह	शेर	
(४)	स्वान	कुत्ता	
(५)	गौ	गाय	
(६)	गदहा	घोड़ खच्चर	
(७)	हाथी	गज	
(८)	ध्वांक्ष	पक्षी	

आ माने आमदनी, बा माने बार। अं। अंश। ध माने धनलाभ। ऋ माने खर्च।
न माने नक्षत्र। ति माने तिथि। यो माने योग। आयु माने उमर का प्रश्न
आय भी, आ माने होती है (आमदनी)

यह केवल मकान के लाभ हानि के बनाने में काम आने वाला है।

पिंड	आ	बार	अंश	धन	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु
७	७	श	६	८	५	भरणी २	११	१	५६
९	१	बु	९	१२	३	ज्येष्ठा १८	१२	९	७२
१५	७	चं	९	१२	५	उ. फा. १२	१५	६	१२०
२१	५	श	९	१२	७	आर्द्रा ६	३	३	४८
३७	५	बु	६	८	७	उ. भा. २६	११	१३	५६
४९	१	शनि	६	८	३	चित्रा १४	२	७	२२
४५	५	शुक्र	६	१२	७	आश्ले ९	१५	१८	१२०
५१	३	बुध	६	१२	१	के ३	३	१५	४८
५५	७	गुरु	६	८	५	पुनर्वसु ८	५	४	८०
५७	१	चंद्र	९	१२	३	शतभीषा २४	६	१२	९६
[illegible]	५	गुरु	९	१२	७	उ. फा.	१२	६	७२
७९	७	बुध	६	८	५	पु. फा ११	२	१९	३२
८५	५	चं	६	८	५	मृगसिरा ५	५	१९	८०
८७	७	शु	९	१२	५	उ. षा. २१	६	२४	९६
९७	१	गुरु	६	८	३	पु. षा. २०	११	१०	५६
९९	३	चंद्र	९	१२	५	आश्लेषा ९	१२	१८	७२
१०५	१	शनि	९	१२	३	के ३	१५	१५	१२०
[illegible]	७	गुरु	९	१२	५	शतभीषा २४	३	१२	४८
११५	३	शुक्र	६	८	१	भरणी	५	१	८०

पिंड	ग्राम छली	वार	अंश	धन	ऋण	नक्षत्र	तिथि	योग	आयु	
१२७	७	चंद्र	६	८	५	१७ अनुराधा	११	२२	५६	
१२९	१	शुक्र	९	१२	३	६ अनुराधा	१२	३	७२	
१३९	३	गुरु	६	८	१	मृगसिरा ५	२	१६	३२	
१४१	५	चं	९	१२	७	उत्तराषाढ २१	३	२४	४८	
१४७	३	शनि	९	१२	१	स्वाती १५	६	२१	६६	
१५७	५	शुक्र	६	८	७	चित्रा १४	११	७	५६	
१६९	१	चंद्र	६	८	३	भरणी २	२	१	३२	
१७१	३	शुक्र	९	१२	१	ज्येष्ठा ३	३	९	४८	
१५७	७	शनि	६	८	५	धनिष्ठा २३	५	२५	८०	
१७७	१	बुध	९	१२	३	उ. फा. १२	६	६	९६	
१६५	३	गुरु	९	१२	१	उ. षा २१	१४	१५	१२०	
१८९	७	शुक्र	६	८	५	उत्तरा भाद्र २९	१३	२	३२	
२०५	५	बुध	६	८	७	पूर्वाषाढ २०	१०	५	८०	

जप मन्त्र : वं वटुकाय

बटुक मंत्र बलि प्रदान करने का = ऐहि देवि पुत्र बटुकनाथ कपिल जटा भारभासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्व विघ्नान् नाशय २ सर्वोपचारसहितं बलिं गृहण २ स्वाहा ॥

जप मन्त्र = क्षें क्षेत्रपालाय नमः।

क्षेत्रपाल की बलि मन्त्र = क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थान क्षेत्रपालेश सर्व कामं पूरय स्वाहा।

जप मन्त्र ॐ गं गणपतये नमः

गणपति की बलि मन्त्र = ग्लौं गां गीं गूं गणपतये वरवरद सर्व जनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृहण २ स्वाहा।

देवी के वाहन सिंह के शरीर में देवताओं का वास है

ग्रीवां मे मधुसूदन ॥ शिर में श्री नीलकंठ ॥ ललाट में गिरजा ॥ वक्षः में
शारदा ॥ षड्वक्त्र मणिबन्ध की सन्धि में ॥ नाग पार्श्व में ॥ कर्ण में
अश्विनौ (   ) नेत्र में सूर्य चन्द्र ॥ वसुकुल दांतों में ॥ जिह्वा में
वरुण ॥ हुंकार में श्री चर्चिका चंडिका ॥ गन्ड में यक्ष ॥ यम दोनों ओठ में
रोम २ में सर्व देव रहते हैं ॥

सप्त सती के सर्व अध्यायों की पूर्णाहुति का विधान
तान्त्रिक आहुति घृत से   वैदिक पूर्णाहुति अन्न द्रव्यों से

अध्याय के अन्त में (इति बोलने से लक्ष्मी का नाश होता है (वधः बोलने से कुल का नाश होता है। (अध्यायः बोलने से अपने प्राण का नाश होता है।
ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवि महात्म्ये सत्याः सन्तु मम (अथवा) (यजमानस्य कामः) जगदम्बार्पणमस्तु ।। आहुति प्रथम की।
ॐ सांङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली बीजाधिष्ठै श्री महाकालिकायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।। तान्त्रिक आहुति है।
आचमनी घी से
घृतं घृत पावानः पीवत व्वसां वसा पावानः ।। पीवतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।। दिशः प्रदिशः आदिशो विदिशः उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा
वैदिक आहुति ।। १ उल्टे पान पर शाकल्य घी में भिगो कर १ कमल गट्टा १ सुपारी २ लौंग २ छोटी इलाइची गूगल शहद स्त्रुवा में रख कर खड़े होकर बोले (ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिका पीलवासिनी स्वाहा। कह कर यज्ञ में डाल दे फिर ५ बार घी छोड़ते हुये यही मंत्र बोले "
दूसरे अध्याय समाप्त होने पर वैदिक आहुति ।। १ पान उल्टा करके १ कमल गट्टा १ सुपारी २ लौंग २ इलायची शहद गूगल धर कर शाकल्य घी में भिगो कर स्त्रुवा में धर कर ।। ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवि महात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु फिर घी से ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिका पीलवासिनी स्वाहा

तान्त्रिक आहुति ॥ ह्रीं सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब वही रहेगा ॥ तीसरे अध्याय में वही सामान है केवल भैंसा का गुग्गल विशेष है ॥ तान्त्रिक आहुति विधि ॥ ॐ जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब वही रहेगा चतुर्थ अध्याय को सिर्फ खीर मिश्री जरूर रखना चाहिये॥ मंत्र वही वैदिक हैं जो पहले लिख आये हैं। ॐ प्राणाय स्वाहा से शुरू है। पील वासिनी स्वाहा अन्त तक मन्त्र है। ऐसा कहकर पदार्थ स्त्रुची वाला यज्ञ देवता को दे। घी छोड़ते समय॥ ह्रीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै - सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा॥ पांचवे अध्याय में सामान वही रहेगा सिर्फ ऋतुफल फूलमाल कपूर स्त्रुची में रखलिया जायेगा मन्त्र वही बोले प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां पील वासिनि स्वाहा॥ घृत देते समय कहे। क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादि चतुर्विंशद्देवताभ्यो महाहुतिं महाहुतिं नमः स्वाहा

सातवें अध्याय की अधिष्ठात्री धूमावती जी हैं।

ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सवार्णिके मन्वन्तरे देवि महात्म्ये सत्या: सन्तु (यजमानस्य कामा:) जगदम्बार्पण मस्तु ऐसा कह कर जल पृथ्वी पर छोड़ दे पाठ कर के ।। इस अध्याय में भी सामान वही विशेष शाकल्य में भोजपत्र मिला दे। और स्रुची में धर कर मन्त्र बोलता हुआ यज्ञ में पूर्णाहुति दे।। (ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा (व्यानाय स्वाहा) अम्बे अम्बिके अम्बालिके · नमानयात कश्चन स सस्त्यश्वक: सुभद्रिकां पील वासिनि स्वाहा। यही मन्त्र है। और घी को आचमनी देते समय यह तान्त्रिक मन्त्र बोले ।। सामन सब का एक ही है क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै कर्पूर बीजा धिष्ठात्र्यै महा हुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा ।। इस सातवें अध्याय में सामान वही केवल दो जायफल और स्रुचा में रख ले तब पूर्णाहुतिं दे। ॐ जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुंडा देव्या कर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा ।। इस आठवे अध्याय में सामान वही रहेगा केवल लाल चन्दन और रख ले।। मन्त्र वही रहेगा घी मे ...यन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै क्लीं अष्ट... सावर्णि...तायै महा हुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा।। इस नवे अध्याय में जगदम्बा... ही केवल १ बेल फल आहुति में रख ले। अम्बिके...

क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारा देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ इस दशवें अध्याय में विशेष बेलफल आहुति में रखले। मन्त्र वही है। तान्त्रिक में =

इस ग्यारहवें अध्याय में सामान वही रहेगा केवल फूल लाल गुड़हल के और खीर पूर्णाहुति में लगेगी ॥ मन्त्र वही ॥ तान्त्रिक रूप में आहुति क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़वाहनायै नारायणि देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा

इस बारहवें अध्याय में पूर्णाहुति में सामान वही रहेगा केवल केला रखले या ऋतु फल कोई रखले मन्त्र वही रहेंगे ॥ तान्त्रिक आहुति ॥ क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सपरिवारायै वरप्रदायै वैष्णवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

इस तेरहवें अध्याय में पूर्णाहुति में सामन वही केवल १ फूल या १ फल रखले ॥ मन्त्र वही रहेंगे ॥ तान्त्रिक ॥ क्लीं जयन्ति सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

काली तारा त्रिपुर सुन्दरी बीज का स्वरूप ज्ञान

क्रीं काली बीज कामबीज भी कहलाता है।
क्रीं का अर्थ बहुत विशाल है इससे पुर्षार्थ चतुष्टय की प्राप्ती होती है।
ककार शब्द से धर्म की प्राप्ती होती है। इकार शब्द से अर्थ की प्राप्ती होती है
रकार शब्द से काम की प्राप्ती होती है। मकार शब्द से मोक्ष की होती है।
सब को एक में मिला कर जपने निर्वाण पद मिलता है। (तोड़ल तन्त्र में लिखा है)
यामम तन्त्र में लिखा है। क् और र् से स्वरूप का वर्णन किया गया है
क से ~~आप~~ आप ज्ञान रुपा हैं। र के संयोग से तेज रुपा हैं। इकार
से आप भक्तों को अभिष्ट फल देने वाली हैं। विन्दु से मोक्ष दात्री हैं।
वरद तन्त्र में लिखा है:- ककार से काली का रकार से ब्रह्म का ईकार
से महामाया का नाद से विश्व योनी का विन्दु से संताप नाशिनी का
बोध होता है। मुसलमान भी इस बीज को सदा जपता है क्रीं का करीम
कहता है। जो क्रीं क्रीं क्रीं इस रूप से जपता है उन्हें अणिमा आदि
अष्ट सिद्धियां अनायास मिल जाती हैं। जो तीन दिन तीन रात जपलेते
है उन्हें आप मिल जाती हैं। विश्वसार तन्त्र का कथन है।
हूं बीज तारा बीज है इसे कूर्च बीज भी कहते हैं। इसमें हकार से शिव उकार
से भैरव विन्दु से संताप नाशिनी का बोध होता है। हूं हूं दो बार कहे
चाहे जिस अवस्था में जपे कुबेर से भी अधिक सम्पत्तिवान होवे।
गुरु ब्रहस्पत के समान पंडित होवे। कामिनी का संमोहन करने वाला होवे
सब से पूजित होवे। कालिका शब्द का अर्थ महान है। छ अक्षर वाला है।

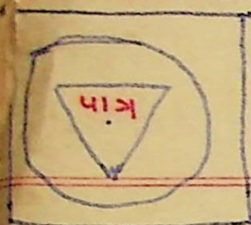
क+अ+ल्+इ+क्=कालिका क का अर्थ ब्रह्म, अ का अर्थ अनन्त ल् का अर्थ विश्वात्मा = इ का अर्थ सूक्ष्म = क् = ब्रह्म है आ अनन्त मतलब कालिका ब्रह्मस्वरूपिणी है। अनन्तत्व = सूक्ष्मत्व विश्वात्मकत्व गुण कालिका भगवती में हैं। दक्षिण दिशा का आधिपत्य यमराज (सूर्यसुत) को है परन्तु कालिका के भय से दिशा छोड़ भाग जाते हैं इसलिये मां दक्षिण काली है। एक विशिष्ट अर्थ और है पुरुष को दक्षिण कहते हैं शक्ति को वामा जब से इसने पुरुषों को जीता तब से और मुक्त किया तब से दक्षिण काली नाम पड़ा।

ऐं क्लीं ह्रीं तीन बीजाक्षरों से बोधित दक्षिण मूर्ति भैरव से समाराधित रक्त कालिका भुवनेश्वरी हैं। (ह्रीं) भुवनेश्वरी बीज है (इसे लज्जा बीज भी कहते हैं)

वरद तन्त्र में ह्रीं का अर्थ = हकार से शिव = रकार से प्रकृति का ईकार से महामाया का नाद विंदु से विश्व योनि संताप हारिणी का बोध होता है। देवी भागवत हकार से स्थूल देह रकार से सूक्ष्म देह इकार से कारण देह पूरी ह्रीं से विश्वात्म मुसलमान इस बीज को रहीम कहते हैं। (ह्रीं ह्रीं) दोगुणा कर के जपने से महीपाल होकर मोक्ष को प्राप्त होता है। यह तीन बीज का मतलब। काली तारा त्रिपुरसुन्दरी है यह तीनों काली का लक्ष्य कर बताया गया है। तारा रहस्य में स्पष्ट कहा गया है जो काली है वही तारा है वही नील सरस्वती है। वही त्रिपुरसुन्दरी है। इनमें भेद बुद्धि वाला नरक गामी होता है। कालिका के दो भेद है (काली, और रक्त) कृष्ण कालिका दक्षिण काली है। रक्त काली त्रिपुर सुन्दरी है। महाकाल महाकाली को मां करके सम्बोधित करता है। दक्षिण काली के बांये हाथ में ऊपर कृपाण नीचे के हाथ में मुण्ड कटा हुआ है। दाहिनी तरफ ऊपर अभय मुद्रा नीचे कर में वर मुद्रा है। कृपाण ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान से कर्म बन्धन काटती हैं वही मुण्ड धारण किया है कर्म का प्रतीक है। पाप पुण्य रूपी मनुष्य पशु को बलि लेती हैं मनुष्य पाप पुण्य की मूर्ति है इस पाप पुण्य के नाश के बाद आत्म साक्षात्कार होता है। अभय वर मुद्रा शरणागति का दान देने का प्रतीक है। भगवती कालिका का ध्यान पहले साधक को करना चाहिये फिर जप। मेरे मत से दो क्रिया साथ नहीं हो सकती है। जप के करते जब थक जाय तब ध्यान करने लगे। तो सुगम है वैसे जप ध्यान साथ भी हो सकता है। साधारण साधक नहीं कर सकता है। शरीर द्वारा मनुष्य एक समय में चलना सुनना सूंघना देखना खाना सब करता है। काली जी के मंत्र में अंत में स्वाहा लगा देने से मन्त्रोद्धार हो जाता है। क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। जप से देवराज होवे हूं हूं स्वाहा। जपने से नृसिंह रूप होकर सिद्ध हो जाता है। ह्रीं ह्रीं स्वाहा जपने से सिद्धि सम्पन्न हो जाता है।

...वताभ्यो नमः पुष्पांजलिं

क्षेत्रपाल चक्र



सर्व भूतों चक्र

बलिपात्र

॥ क्षेत्रपालों के बाद गणेशजी को पूर्ववत पूजन ॥

बटुक चक्र के उत्तर की तर्फ वैसा ही चक्र बना कर ॐ गं गणेश बलि पात्राधारमंडलाय नमः कह कर बीच में बलि पात्र रखदे। इति गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्नव्यंजन युत माधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ गं गणेश बलि द्रव्याय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य॥ उत्तरे गं गणेशाय नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय॥ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलिं ग्रहण २ स्वाहा॥ ऐसा कह कर बायें अंगूठे और बीच की उंगली से बलि उठा कर दे पात्र में। दाहिने हाथ से जल प्रति ग्रास के बाद देता जाय॥

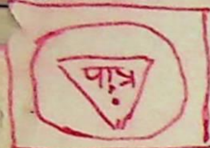
प्रार्थना॥ सर्वदा सर्व कार्याणि निर्विघ्नं साधये न्मम॥ शान्ति करोतु सततं विघ्नराजः सशक्तिकः॥ पुष्पांजलि॥ बटुक चक्र की बाईं तरफ चौकोर यन्त्र लिखकर बीच में सर्वभूत का पात्र रखे॥ (ह्रीं सर्व भूत विघ्नकृत् बलि पात्राधारमंडलाय नमः॥ इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्न व्यंजनयुत माधारं बलिं च निधाय॥ सर्व भूत विघ्नकृत् बलि द्रव्याय नमः॥ इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य॥ बलिमुपनीय ॐ ह्रीं सर्व विघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्यः इमं बलिं गृहण २ हुं फट स्वाहा॥ कह कर सब उंगलियों से बलि दे पात्र में॥ दाहिने से जल दे॥ (प्रार्थना) भूता ये विघ्नकर्तारः दिवि अन्तरिक्षगाः॥ पाताल स्थल संस्थाश्च शिव योगेन भाविताः॥

समम ... मंगल के नव...

सिंह बलिमन्त्रः॥ ॐ वज्रनख दंष्ट्रायुधाय सिंहाय हुं फट् नमः॥ दूसरा मन्त्र यह है
ॐ क्षौं वनस्पति पुत्राय सिंहाय इमं बलिं गृहण २ स्वाहा॥ महिष बलि मन्त्रः॥
ॐ भूं महिष शृंगेभ्यो महिषेभ्यः इमं बलिं गृहण २ स्वाहा॥

क्रूराद्या शतसंख्याकाः पाखंडाद्या व्यवस्थिताः॥ ध्रुवाद्याः सहस्रसंख्याश्च
इन्द्राद्याशा व्यवस्थिताः॥ तृप्यन्तु प्रीति मनसो भूता गृहन्त्विमं बलिं॥
॥नगरे वाथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥ वापी कूपेषु वृक्षेषु शमशाने च
चतुष्पथे॥ नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा
बलिं गृहणन्तु मे सदा॥॥ पुष्पांजलि॥॥ प्रधान बलि॥ आगे दे॥
देवता के आगे बीच में भूमी पर सिन्दुर से त्रिकोण वृत्त चतुरस्रात्मक यंत्र
लिखे। विन्दु की जगह चंडिका जी का बलि पात्र रक्खे॥ मूलं चंडिका बलि
पात्राधारमंडलाय नमः पूर्ववत पुजन पंचोपचार से करे। ॐ मूलं दुर्गा
बलि द्रव्याय नमः इति गंध पुष्पाभ्यां संपुज्य॥ मूलं सांगायै सायुधायै
सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिका ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै त्रिगुणा
त्मिकायै चंडिक देव्यै नमः॥ इति संपूज्य॥ बलिमुपनीय॥ मूलं २ ह्येहि
जगतां जननि! इममामिषान्न बलिं गृहण २ सिद्धिं देहि २ शत्रुक्षयं
कुरु २ ह्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा एष बलिः साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै
सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै त्रिगुणात्मिक
श्री दुर्गा देव्यै नमः॥ बायें अंगूठे और अनामिका से बलि दे। दाहिने हाथ
से जल दे॥ प्रार्थना॥ ॐ शरण्य गति दीनार्त परित्राण परायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते॥ पुष्पांजलिं दद्यात्॥
देवि के दाहिने भाग में सिंह को बलि दे। बाम भाग में महिष को बलि दे।
पुष्पांजलि सबको दे फिर॥ ॐ सर्वेभ्यो बलि देवताभ्यो नमः पुष्पांजलिं
समर्पयामि जरूरत हो तो देख
लेना

बटुक चक्र



पूर्व की ओर सिंदूर घी सान कर यह यन्त्र बनाके बीच में बलि पात्र रख कर पहले पूजन फिर भोग सब चढ़ादे॥

॥ पंचमकार से पंचोपचार से वटुक पूजनविधि ॥

आचमनी प्राणायाम करके संकल्प वटुक पूजन का करे।
ॐ तत्सद्य अमुक मासे, अमुक नक्षत्रे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं अथवा अमुक यजमानस्य संकल्पोक्त फलावाप्तये श्री दुर्गा देव्याः पुरश्चरण सिद्धये चतुर्दिक्षु बटुकादि देवताभ्यो दधि माषान्न द्रव्यैः पंच महाभूत बलिदानं करिष्ये।
चक्रस्य पूर्वे भूमौ सिंदूरेण विन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्रात्मक यन्त्रं विलिख्य॥ वटुक बलि पात्राधार मंडलाय नमः, इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य॥ अन्न व्यञ्जन युतमाधारं बलि च निधाय॥ ॐ वं वटुक बलि द्रव्याय नमः इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य॥ (पूर्वे वं बटुकाय नमः) इति संपूज्य (आने इस तरह बोल कर पूजन करे॥ बलिमुपनीय॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवी पुत्र वटुकनाथ कपिल जटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्व विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण २ स्वाहा॥ यह बोल कर बायें अंगुठे और बाई अनामिका से पकड़ कर बलि द्रव्य बलिपात्र में देता जाय। दाहिने हाथ से जल देता जाय प्रति ग्रास के बाद। फिर प्रार्थना॥ ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्ड पाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती॥ क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतु र्जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥ बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदः शान्ति करोति मे नित्यं भूत वैताल सेवितः॥
[illegible] बलिं दद्यात्॥ फूल हाथ में लेकर चढ़ादो॥

बटुक चक्र की दक्षिण तरफ ऐसा ही यन्त्र योगिनी का बना कर बीच में योगिनी बलि पात्र रखदे फिर बोले योगिनी बलि पात्राधार मंडलाय नमः।। फिर पूजन पंचोपचार से करके उसी प्रकार पंचमकार युत बलि देता जाय बायें अंगूठे और बीच की उंगली अनामिका से उठा उठा कर देना चाहिये।।

योगिनि चक्र

पात्र

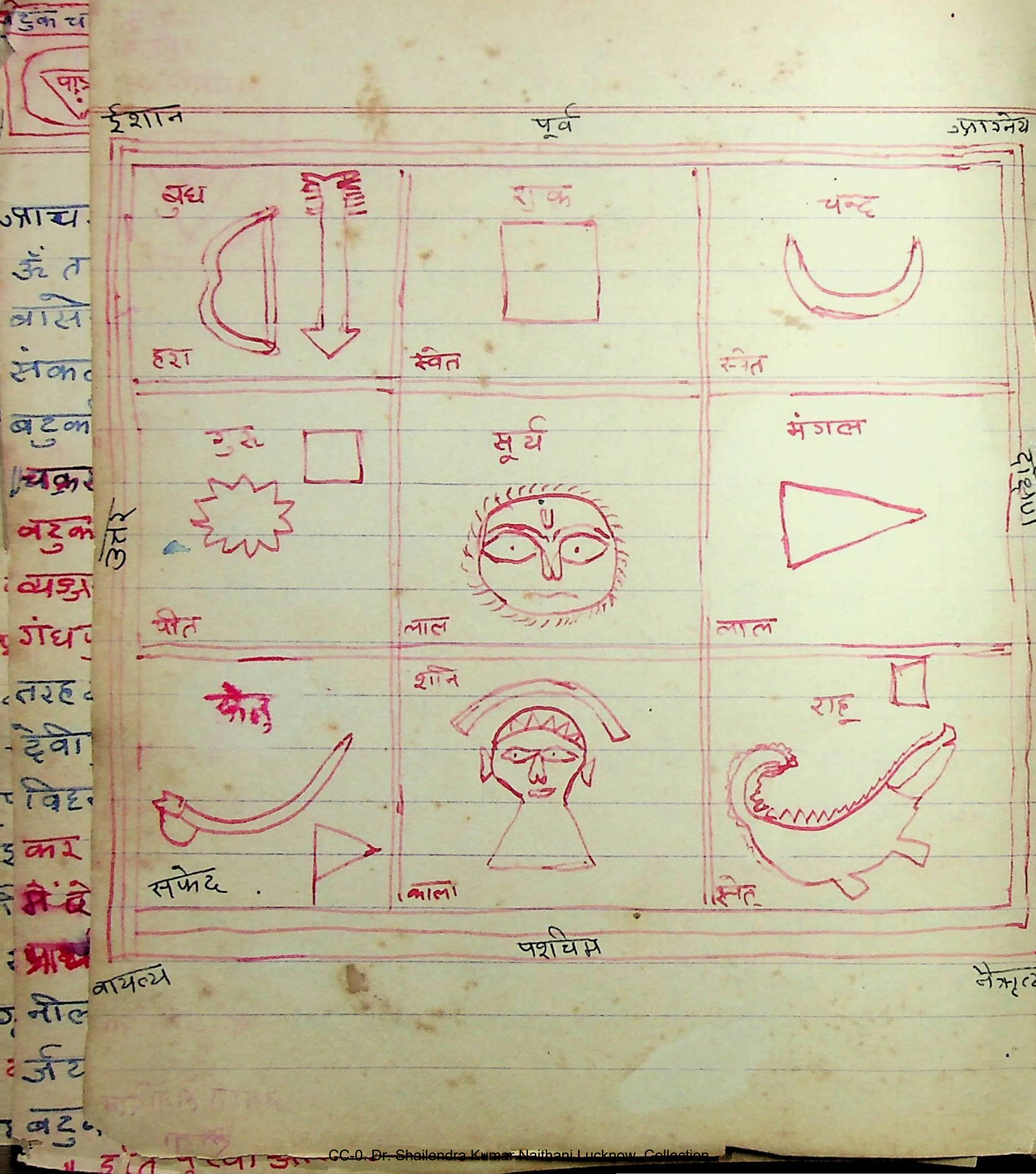
योगिनि बलि पात्राधार मंडलाय नमः कहकर पात्र बीच में धरे इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य।। तदुपरि अन्नव्यंजन युत माधारं (बीच में) बलिं च निधाय।। ॐ यां योगिनि बलि द्रव्याय नमः इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य।। दक्षिणे यां सर्व योगिनीभ्यो नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय।। मन्त्र।। ॐ सर्व वर्ण योगिनिभ्यो इमं बलिं गृहण २ हुं फट् स्वाहा।। कहकर बांयें हाथ का अंगुठा मध्यमा अनामिका से बलि देता जाय। दाहिने हाथ से प्रति ग्रास बाद जल देता जाय। प्रार्थना।।

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन तले भूतले निष्कले वा।। पाताले वा (स्थले ऽनले वा सलिल पवन यो यत्र कुत्रस्थिता वा।। क्षेत्र पीठोपपीठ दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः प्रीता देव्या सदा नः शुभ विधि बलिना पांतु वीरेन्द्र वन्द्याः।। या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोर परात्परा।। खेचरी भूचरी व्योम वती प्रीतास्तु मे सदा।। यां योगिनिभ्यः स्वाहा सर्वाभ्यो योगिनिभ्यो फट्।। पुष्पांजलिं दद्यात्।। इसी तरह चक्र पश्चिम में बनाके

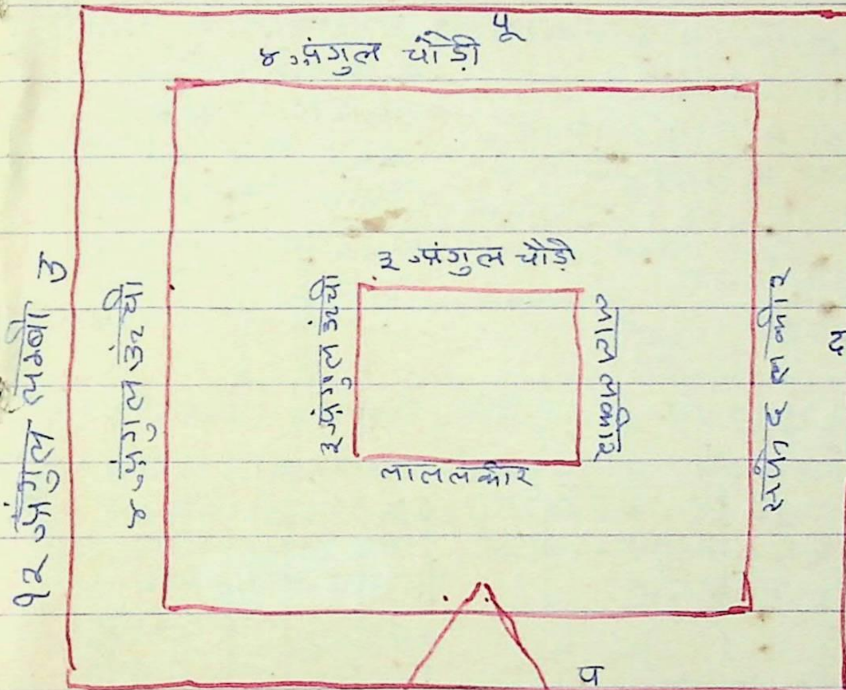
ॐ क्षेत्रपाल बलि पात्राधार मंडलाय नमः। (पंचोपचार पूजन) पूर्ववत् बोल कर।। फिर बलि बायें अंगूठे और तर्जनी से दे। दाहिने हाथ से जल देता जाय।। मन्त्र

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः।। भो स्थान क्षेत्रपालाय इमं बलिं गृहण २ सर्व कामान् पूरय २ स्वाहा।।। प्रार्थना।। योस्मिन क्षेत्रे निवासी च क्षेत्र पालः सकिंकरः।। प्रीतोयं बलि दानेन सर्व रक्षां करोतु मे।। पुष्पांजलि दे।।

(आसुरि कल्प विधि के पीछे पेज में क्षेत्र कीलन विधि लिखी है।) जरुरत हो तो देख लेना


ईशान
पूर्व
आग्नेय
बुध
हरा
शुक्र
श्वेत
चन्द्र
स्वेत
गुरु
पीत
सूर्य
लाल
मंगल
लाल
उत्तर
दक्षिण
केतु
सफेद
शनि
काला
राहु
स्वेत
पश्चिम
वायव्य
नैऋत्य

॥ कुण्ड स्वरूपम् ॥



योनि १२ अंगुल ऊंची १२ अंगुल लम्बी ८ अंगुल चौड़ी ऊपर की लाल लकीर ४ अंगुल चौड़ी ४ अंगुल ऊंची सफेद उसके नीचे की लकीर ३ अंगुल चौड़ी ३ अंगुल ऊंची

आग्नेय्यां मातृका वेदी नैऋत्य में वास्तु वेदी वायव्य में क्षेत्रपाल ईशान में नवग्रह पधराने चाहिये

षोडश मातृका चक्र

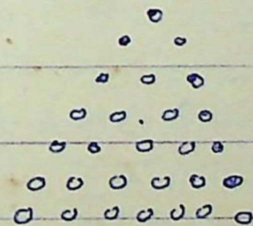
पू

आत्मनः कुलदेवताः १६	लोक मातरः १३	देवसेना ७	मेधा ५
तुष्टिः १६	मातरः १२	जया ८	शची ४
पुष्टिः १५	स्वाहा ११	विजया ७	पद्मा ३
धृतिः १४	स्वधा १०	सावित्री ६	गौरी गणेश

प

श्रीः

सप्तघृत मातृका चक्रम्



कीर्तिर्लक्ष्मी धृति मेधा
स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते
सप्तैता घृत मातरः

ईशान	पूर्व	आग्नेय
ॐ भूर्भुवः स्वः मग्धदेशोद्भव आत्रेय सगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि नमः। विष्णु अधिदेव स्थापित होते हैं।	ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गव सगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ शुक्राय नमः शुक्र आवाहयामि स्थापयामि नमः अधि देवता इन्द्र	ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेय सगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इहतिष्ठ सोमाय नमः सोमाय आवाहयामि। अधिदेवत उमा प्रत्यधि देवता (अपवना
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वसिन्धु देशोद्भव आङ्गिरस सगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पत मावाहयामि स्थापयामि नमः। अधि देवता ब्रह्मा प्रत्यधिदे इन्द्र	ॐ भूर्भुवः स्वः कालिङ्ग देशोद्भव काश्यप सगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ सूर्याय नमः सूर्य मावाहयामि स्थापयामि नमः अधिदेवता ईश्वर प्रत्यधि देवता अग्नि	ॐ भूर्भुवः स्व अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाज सगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहा गच्छ इहतिष्ठ भौमाय नमः भौमाय आवाहयामि। अधिदेवता स्कन्ध प्रत्यधि देवता पृथ्वी
ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर वेदी समुद्भव जैमिनि सगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतु मावाहयामि स्थापयामि नमः अधि देवता चित्रगुप्त प्रत्यधि देवता ब्रह्मा	ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहा गच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चर मावाहयामि स्थापयामि नमः अधिदेवता यम प्रत्यधि देवता प्रजापति	ॐ भूर्भुवः स्वः राठिन पुरोद्भव पठीन सगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहा गच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहु मावाहयामि। अधिदेवता काल प्रत्यधिदेव सर्प

पश्चिम

प्रथम गणेश का ध्यान

(११) वीं बार ग्यारवीं में प्रधान कलश में वरुण की प्रतिष्ठा

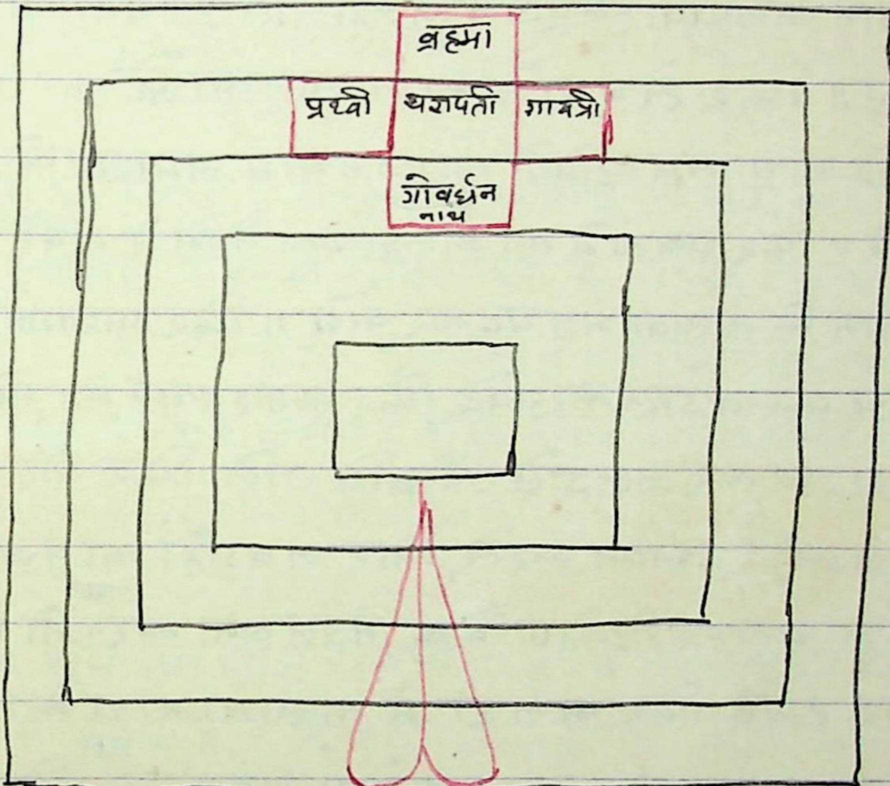
द्वितीय वार

पंचओंकार पूजन

पूरब में

नवग्रह पूजन (६)

(३) प्रथम पूजन आग्नेय १२ गणेशों की



सातवीं बार में (७) षोडश मातृका पूजन सप्त मृत्तिकाः का पूजन

उत्तर

दक्षिण

वायव्य

शान्ती ७ कलश धरे

पश्चिम की ओर पूर्व मुख पुजारी आसन पूजन करे

गौरी गणेश ६)

पूजन प्रथम करे १०)

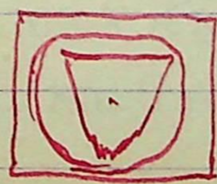
ईशान्य वास्तु देवता को (२)

६४ योगिनी (४)

५० क्षेत्रपाल (५)

~~छठी बार में~~ (३)

आठवी बार में



इस चतुरस्त्र त्रिकोण विन्दु पर कलश धरे

८ वीं बार सामन्य कलश में वरुण की पूजा आवाहन

१२ वीं बार नवदुर्गा

(१३) गणेश (१४) बटुक १५ नवग्रह (१६) सप्तशती

यदि तेल का अखंड दीप हो तो माई के बांये धरे घृत को दीप दायें धरे सफेद बत्ती डाले ॥ यदि घी में लाल बत्ती जले तो बाँयें धरे यदि घी में तेल में सफेद बत्ती हो तो दाहिनी तरफ धरे। माई के ध्यान रक्खे धूप पात्र बायें धरे

सर्व प्रथम गजानन का ध्यान हाथ जोड़ कर करे। आवाहन पूजन पुष्पांजलि दे। फिर आग्नेय कोण में १२ गणेशों का आवाहन पूजन करे। फिर वास्तु भगवान का आवाहन पूजन पुष्पांजलि प्रार्थना करे। फिर ६४ योगिनियों का॥ फिर क्षेत्रपालों का॥ मातृकाओं का॥ वासोर्द्धारे यानी सप्त घृत माताओं का॥ सप्त ऋषियों का॥ आचार्य सम्वरण करे पूजन करे आचार्य प्रार्थना करे॥ फिर एक तांबे का कलश एक कोने में रख दे। आचार्य रक्षा के लिये यजमान के कलावा मंत्र पढ़ कर बांधे॥ फिर साधारण कलश पूरब को ओर पंच पल्लव डाल कर रख दे, फिर पुण्याहवाचनं मंत्र पढ़ते हुये कलश को भूमि पर रख कर जल डाले औषधि डाले॥ फिर यदि हवन करना हो तो पहले अग्नि स्थापन करले, फिर नवग्रहों का पूजन करे। फिर प्रधान कलश चतुरस्त्र त्रिकोण विन्दु मंडल बना कर ऊपर जो मिट्टी एक में मिला कर रख दे, फिर कलश में कलावा बांध कर वेदी पर रख दे, उस कलश पर चावल का कटोरा रख कर, एक नारियल में लाल कपड़ा लपेट कर कलावे से बांध कर ऊपर धर दे। उस कलश में गंगा जल गुलाब जल इतर डाले, पंच पल्लव, पंचरत्न, जायफल, सतावर, बायबिडंग, औषधि डाले। फिर अब पहले वरुण जी का आवाहन पूजन करे प्रार्थना करे। फिर नारियल धरे कलश पर

पहले ही

पंचगव्य से पूजन सामिग्री छिड़क कर पवित्र करलो

पंचगव्य बनाने का तरीका = 1 गुना गोबर 2 गुना मूत्र 4 गुना दूध 3 तो दही 2 गुना घी मिलाया जाता है तब पंचगव्य बनता है।

दुर्गा जी को प्रधान कलश में प्राणप्रतिष्ठा करे ।। फिर फूल लेके ध्यान करके आवाहन करे। भाव से ही फिर लाल फूल से आसन दे।।

अर्घ्य = पाद्य देकर = मधुपर्क कटोरे में भर कर भोग दे। मधुपर्क माने घी शहद दही, एक में मिला कर दे। फिर आचन। स्नान। तेल - इतर - शुद्ध जल = घृतस्नान = शुद्धजलस्नान = शहद स्नान शुद्ध स्नान = शक्कर स्नान = शुद्ध स्नान = दुग्धस्नान = शुद्ध स्नान।

दधिस्नान = शुद्ध जल स्नान = पंचामृत स्नान = शुद्धजलस्नान ।। तौलिये से भाव से पोंछ कर वस्त्र दे = मंगल सूत्र भूषण दे =

बांये तरफ धूप का पात्र रख दे ।। दांई तरफ दीप दिखा कर रख दे फूलमाला पहनावे = नैवेद्य तस्तरी में दे। आचमन करावे मुख पोंछे = ऋतु फल दे = दो वस्त्र पहना कर जनेऊ दे। चन्दन, हल्दी गुलाल, सेंदुर, काजल - दुर्वा - वेलकी पती तब माला, फूल माला - रत्नमाला = हार = कंगना = करधनी, कुण्डल = विछिया = नथ = पाजेब = चूड़ी कांच की पहनावे = तब धूप अखंड दीप धरे दीप माई के दाहिने धूपपात्र बांये धरे ।। फिर नैवेद्य फल दे ।। पान दक्षिणा दे। पुष्पांजलि दे ।। फिर नव दुर्गा पूजन करे। फिर गणेश पूजन वटुक पूजन

एक सेर [illegible]लो में २० काली मिर्च मिला ले यदि जलन खुजली हो तो काली मिर्च न मिलावे। तीन नीम की पत्ती ३ बेल की पत्ती ३ काली मिर्च की एक गोली सुबह रात को ३ जामुन का बीज ३ करेला का तीन नीम का बीज पीस के रात को फांक ले ठंडे पानी से ले ४० दिन। ब्रह्मचर्य इतने दिन।

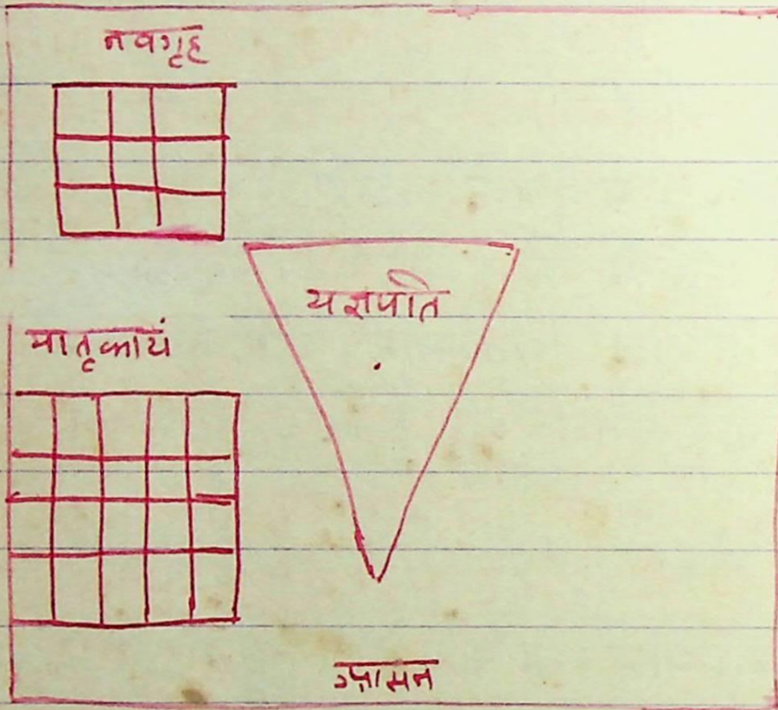
शुरू में पूजा

गणेश वरुण

पूर्व

ई

आ १२ गणेश



सप्तऋषि
१६ मातृका
पृथ्वी उ

गायत्री द

वायव्य

सामान्य कलश

प

नै

गोवर्धनाथ

वास्तु

गौरी गणेश

६४ योगिनी

५० क्षेत्रपाल

बकुची दो मास खाने के बाद चित्रक दवा गौमुत्र में घिस कर दोबार लगावे छाला पड़ने पर नारियल का तेल लगादे नमक छुड़ादे ४० दिन

पूजा विधि

यदि छाला एक दिन में न पड़े दूसरे दिन फिर लगादे पुराना हो तो तीन बार घिस के लगादे। सूर्य उपासना करे रोज ४० दिन लाल चन्दन जल में मिला के।

हाथ धो कर प्रणाम करे इष्टदेव को श्री गुरु महाराज को = पश्चात हाथ में जल लेके अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यान्तर: शुचि:॥ इतना कह कर सिर पर जल छिड़क दो॥ पश्चात बिनियोग करो, पृथ्वी का जल आचमनी में ले के यह मन्त्र बोल कर आसन के नीचे डाल दो - ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता आसनोपवेसने विनियोग:॥ प्रार्थना पृथ्वी को = ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मांन्देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ पश्चात् यजमान के हाथ में फूल सुपारी अक्षत् देकर स्वस्ति वाचन करे

॥ स्वस्ति वाचन ॥

श्रीमन महागणाधिपतये नमः॥ हरि: ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधि नान्त्वा निधि निधि पतिं हवामहे वसो मम॥ आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥१॥ स्वस्तिन इन्द्रो बृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा:। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥२॥ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा:॥ पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम॥३॥ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥४॥ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता

रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता
बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥५॥ द्यौः
शान्तिरन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिः
रोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि
॥६॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नआसुव
॥७॥ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ॥ तेन यज्ञ
मवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥८॥ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य
बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञग्वं समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवा
स इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥९॥ एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥१०॥ ॐ शान्तिः
सुशान्तिः सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ॥ गणेश जी की स्तुति ॥
ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च
विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥११॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो
भाल चन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि
॥१२॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे
चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥१३॥ शुक्लाम्बरधरन्देवं शशिवर्णं
चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभिप्सितार्थ
सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः

गौरीजी की स्तुति॥
सर्व मंगल मांगल्ये। शिवे सर्वार्थ साधिके॥ शरण्ये त्र्यंबके गौरि
नारायणि नमोस्तुते॥१६॥ श्रीविष्णु जी की स्तुति॥ सर्वदा सर्व कार्येषु
नास्ति तेषाम मंगलम्॥ येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः॥१७॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः॥ येषा मिन्दीवरश्यामो
हृदयस्थो जनार्दनः॥१८॥ पश्चात् गणेश गुरु सूर्य ब्रह्मा विष्णु महेश
सरस्वतीजी की स्तुति॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्।
॥सरस्वतीं प्रणाम्यादौ शान्ति कार्यार्थ सिद्धये॥१९॥ जनार्दनजी
की स्तुति॥ सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः॥ देवादिशन्तु नः
सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥ फिर गणेशजी की स्तुति॥ वक्रतुण्ड
महाकाय सूर्य कोटि समप्रभं॥ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु
सर्वदा॥२१॥ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महा गणाधिपतये नमः॥

॥ सबको जुगलरूप से स्तुति॥

ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यांन्नमः॥ ॐ
उमा महेश्वराभ्यान्नमः॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः॥ ॐ माता पितृः
चरणकमलेभ्यो नमः॥ ॐ कुल देवताभ्यो नमः॥ ॐ स्थान देवताभ्यो
नमः॥ ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ ॐ
सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः॥ एतत कर्म
प्रधान श्री दुर्गा देव्यै नमः॥ ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥ बाम



॥ दिगरक्षा मन्त्र ॥

उत्तर में

बामे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे मं भद्रकाल्यै नमः ॥ उपरि गं गणपतये नमः ॥ पृष्ठे ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ यह कहकर फूल अक्षतों को गणेश जी पे चढ़ा दो संकल्प करो फूल अक्षत सुपारी सवा रुपया दक्षिणा जल हाथ में लेकर

ॐ स्वस्ति श्रीमन् मुकुन्द सच्चिदानन्दस्याज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे एकपंचाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत् कल्पानां मध्ये अष्टमे श्री श्वेत बाराह कल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे तथा पंचाशत्कोटि योजन विस्तीर्ण भूमंडलान्तर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखण्डानां मध्ये नव सहस्र योजन विस्तीर्णे भरत खण्डे तत्रापि परम पवित्र भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तक देशे कुमारिके क्षेत्रे अमुक नगरे वीर विक्रमादित्य राज्यातीत अमुक संख्या परिमिते अमुक संवत्सरे (अमुकायने) (अमुक गोले) (अमुक ऋतौ) (अमुक मासे) (अमुक पक्षे) (अमुक तिथौ) (अमुक वासरे) (अमुक योगे) (अमुक करणे) (

(अमुक राशिस्ते सूर्ये) (अमुक राशिस्थे चन्द्रे) (अमुक राशिस्थे देव गुरौ
शेषेषु ग्रहेषु यथा २ राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण विशेषण
विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ (अमुक गौत्र) (अमुक नाम शर्मा, या वर्मा, या
गुप्ता, या दास अहं जो जाति का यजमान हो कहो = मम इह जन्मनि श्री दुर्गा प्रीति से
द्वारा सर्व पापक्षय पूर्वक दीर्घ आयुर्विपुल धन पुत्र पौत्राद्यनवच्छिन्न संतति
वृद्धि स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ शत्रु पराजय सदभिष्ट सिद्ध्यर्थं यथा
सम्पादित सामग्रया शारदे ( ) नवरात्र प्रतिपदे विहित कलशस्था
पन दुर्गा पूजा कुमारी पूजादि करिष्ये ॥ तदंगत्वेन निर्विघ्नता पूर समाप्त्यर्थं
गणपति, पंचओंकार, वास्तु, दिव्यादि ६४ योगिनी, अजरादि ५०
क्षेत्रपाल, सप्तचिरंजीव, सप्तऋषि, गौर्यादि षोडश मातृका, वरुण
कलश, सूर्यादि नवग्रह, तदंग भूत अधि देवता, प्रत्यधि देवता,
स्थापन पूजनान्तरमितौ दुर्गा स्थापनावाहनं कलश स्थापनं तस्योपरि
दुर्गापूजनं वा प्रतिपदारम्य नवमी पर्यन्तम् तथा चत्रितयुपरि
अखण्ड दीपकं तिल तैल पूरितं तूलिका वर्ति युतं च करिष्ये वा ब्राह्मणो
द्वारा कारयिष्ये ॥ संकल्प समाप्त हुआ ॥ अग्नि कोण में गणेश जी
का पूजन पहले अक्षत लेकर स्तुति करो फिर आवाहन पूजन करो



ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनं ।।
ॐ हे हेरम्ब ! त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ।। सिद्धि बुद्धि पतये
त्र्यक्ष कोटिसूर्य समप्रभम् ।। नागास्य नागहारत्वं गणराज चतुर्भुजं ।।
भूषित: स्वायुधैर्दिव्यै: पाशांकुश परश्वधै: ।। आवाहयामि पूजार्थं
रक्षार्थं च मम क्रतो: ।। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां रक्ष च मे
क्रतुम ।। ॐ भूर्भुव: स्व: गणेश इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये
नम: गणपति मावाहयामि स्थापयामि नम: ।। पादयो: पाद्यं
समर्पयामि नम: ।। हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि नम: ।। मुखे आचमनीयं
समर्पयामि नम: ।। सर्वाङ्गे स्नानीयं समर्पयामि नम: ।। वस्त्रोपवस्त्रार्थे
अलंकारार्थे कौसुम्भसूत्रं साक्षतञ्च समर्पयामि नम: ।। यज्ञोपवीतं
समर्पयामि नम: ।। गन्धं विलेपयामि नम: ।। अक्षतान्समर्पयामि नम: ।।
पुष्पाणि समर्पयामि नम: ।। दूर्वांकुराणि समर्पयामि नम: ।। धूपं
धूपमाघ्रापयामि नम: ।। प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि नम: ।। धूप दीप
पात्र की रक्षा निवृत्त अक्षत छोड़ दे।। हाथ धोकर नैवेद्य दे।
नैवेद्यं निवेदयामि नम: ।। हाथ धुला दे।। गन्धपुष्पाभ्यामाच्छाद्य ।।
धेनु मुद्रा अमृती कृत्य,
ग्रास मुद्रा प्रदर्श्य ।। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ बीच २ में

आचमनी भी दिखा दे ॥ आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ फिर नैवेद्यं निवेदयामि

नमः ॥ आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ फिर ॥ गंधं समर्पयामि नमः ॥ जल दे

फिर हाथ मुख धोने को। पोछने को तौलिया दे ॥ मुख शुद्धी के लिये ॥

ताम्बूलं पुङ्गीफल इलायची लवंग कर्पूर सहित समर्पयामि नमः ॥ यथाशक्ति ॥

दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ प्रार्थना गणेश जी की पुनः करे ॥

ॐ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ॥

विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ॥१॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥

नागाननाय सित सर्प विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

अनया पूजया सिद्धि बुद्धि सहित महा गणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम्

॥ पंच ओंकार आवाहन पूजन ॥

अक्षत ले के ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वे ब्रह्मन् इहा गच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः

ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणे गायत्रि

इहा गच्छ इह तिष्ठ गायत्र्यै नमः ॥ गायत्री मावाहयामि स्थापयामि नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमे गोवर्द्धन इहा गच्छ इह तिष्ठ गोवर्द्धनाय नमः ॥

गोवर्द्धनमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तरे पृथ्वी

इहा गच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मध्ये यज्ञपते इहागच्छ इह तिष्ठ यज्ञपतये नमः यज्ञपति मावाहयामि स्थापयामि नमः पूर्ववत पूजन जैसे गणेश जी का किया ॥

प्रार्थना = ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्द्धनेश्वरः ॥ पृथ्वी यज्ञपति श्चैतान् पंचोङ्कारान्नमाम्यहम् ॥ अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः ब्रह्मादि पंच प्रणावाः प्रीयन्तु न मम ॥ अग्नि कोण में १२ गणेश का पूजन पूर्ववत

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वक्रादि द्वादश मूर्ति गणपेभ्यो नमः गणपा इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ वक्रादि द्वादश मूर्ति गणपेभ्यो नमः वक्रादि द्वादश मूर्ति गणपान् आवाहयामि स्थापयामि नमः

प्रार्थना द्वादश गणेशों को पूर्ववत् पूजन करने के बाद ॥

ॐ नमो देव गणेशाय नमस्ते विघ्ननाशन ॥ नमो मूषकमारूढ शुभकर्त्रे नमो नमः ॥ नमः कात्यायनी पुत्र नमः परशु पाणये एकरुद्र स्वरूपं विद्या बुद्धि विचक्षण ॥ देहि मे रूप सौभाग्यम् देहि मे पुत्र सम्पदः ॥ इच्छा सिद्धि प्रदो देव यथोक्त भव मे सदा ॥ अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः वक्रादि द्वादश गणपाः प्रीयन्तु न मम ॥ नैऋत्य में अब वास्तु की पूर्ववत पूजन आवाहन ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तु पुरुषाय नमः । वास्तु पुरुषमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

वरुण आवाहन और प्रार्थना =

नागपाशधरं देवं वरुणं नक्र वाहनम् । शुद्ध स्फटिक संकाशम् प्राणरूप नमाम्यहम् । पाश हस्तं च वरुणं मर्णसां प्रीति मीश्वरम् । आवाहयामि यज्ञेस्मिन - पूजेयं गृह्यताम् ।। अनया पूजया सांग: सपरिवारा: वरुण देव: प्रीयान्तु नमम् । ॐ भूर्भुव: वरुणाय आवाहयामि स्थापयामि नम: ।

प्रार्थना:- वास्तु देवता की ।।

नाग पृष्ठ समारुढं शूल हस्तं महाबलम् ।। पाताल नायकं देवं वास्तु देवं नमाम्यहम् ।। अनया पूजया सांगा: सपरिवार: वास्तु देव: प्रीयान्तु नमम् ।। वायव्य मे ६४ योगिनी का आवाहन पूजन पूर्ववत् ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: दिव्यादि ६४ योगिन्य इहा गच्छत् इहतिष्ठत ।। दिव्यादि ६४ योगिनिभ्यो नम: ।। दिव्यादि ६४ योगिनी: आवाहयामि स्थापयामि नम: ।। पूर्व वत पूजन प्रार्थना ।।

ॐ जयादि सर्वा योगिन्य: दुर्गा रुपाश्च ता: स्मृता पूजया बलिदानेन सन्तुष्टास्सन्तु मे सदा ।। अनया पूजया सांगा: सपरिवारा: दिव्यादि चतुःषष्ठि योगिन्य: प्रीयान्तु नमम् क्षेत्रपाल आवाहन पूजन पूर्ववत

ॐ भूर्भुव: स्व: अजरादि पंचाश क्षेत्र पाल इहा गच्छत् इह तिष्ठत् अजरादि क्षेत्रपेभ्यो नम: अजरादि क्षेत्रपान् आवाहयामि स्थापयामि नम: ।।

।। प्रार्थना ।।

क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वा रिष्ट निषूदनान् । अस्या गस्य सिद्धयर्थं पूजया राधितान् मया ।। अनया पूजया सांगा: सपरिवारा: अजरादि पंचाशत् क्षेत्रपा: प्रीयान्तु नमम् ।। षोडश मातृका आवाहन पूजन

ॐ भूर्भुव: स्व: गौरियादि षोडश मातर इहा गच्छत इहतिष्ठत गौर्यादि षोडश मातृभ्यो नम: ।। गौर्यादि मातृ: आवाहयामि स्थापयामि नम: प्रार्थना ।। गौरी पद्माशची मेधा सावित्री विजया जया ।। देव सेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातर: ।।

हृष्टि: पुष्टि:स्तथा तुष्टिरात्मन: कुलदेवता ।। गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पुज्याश्च षोडश ।। अनया पूजया सांगा: सपरिवारा: गौर्यादि षोडश मातर: प्रीणान्तु नमम् ।। वसोर्द्धारा पु० ।।

ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्र धारम् ।। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष ।। (गंधादि से पूजन) श्रीर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा श्रद्धा प्रज्ञा सरस्वती धृतेन पूजिता सर्वा सुप्रीता घृत मातर: ।।

घृत मातृका प्रार्थना ।। वसोर्द्धारे महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनी ।। शीघ्रं मम बरं देहि परांगति नमोस्तुते ।।

सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध: दक्षिण से उत्तर क्रम से करे ।।

देशकालौ संकीर्त्य अद्य दुर्गा[illegible]नाङ्गत्वेन सांकल्पिक विधिना ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तान्नान्निष्क्रीय भूत यथा शक्ति हिरण्येन नांदी श्राद्ध करिष्ये ।। यह यजमान कहे ।।

ॐ सत्य वसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दी मुखा: ।। ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धि: ।। तत: (अमुक) गोत्रा: अस्मन्मातृ पितामही प्रपितामह्य: नान्दी मुख्य: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धि: ।। अमुक गोत्र अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहा: नान्दी

मुखा: ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजं पाद प्रक्षालनं वृद्धि:॥
द्वितीय गोत्र अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीका:
नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं
वृद्धि:॥ आसनदानं॥ ॐ सत्य वसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां
नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः॥
कुशा दक्षिण की ओर पूर्व की ओर बिछा दे फिर नान्दी श्राद्ध करे॥
ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव॥ ॐ अमुक गोत्राणां अस्मन्मातृ
पितामही प्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखा
सनं स्वाहा नमः॥ ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियताम्॥ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ
प्राप्नुवाव॥ ॐ अमुक गोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां नान्दी
मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः॥ ॐ नान्दी श्राद्धे
क्षणौ क्रियताम्॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव॥ अमुक गोत्राणां
अस्मन मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां सपत्नी
कानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः॥
नान्दी श्राद्ध क्षणौ क्रियताम्॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव॥
ततो गंधादि दानम्॥ ॐ सत्य वसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो
नान्दी मुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यताम्
वृद्धि:॥ अमुक गोत्राभ्यो अस्मन्मातृ पितामही प्रपितामही प्रपितामहीभ्यो



नान्दी मुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥
अमुक गोत्रेभ्योऽस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दी मुखेभ्यो
ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥ द्वितीय
गोत्रेभ्योऽस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः
नान्दी मुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥

अब भोजन   दान द्रव्यदानम्॥ ॐ अद्यतत्सन्मात्रादित्रय
पित्रादित्रय मातामहादित्रय नांदी श्राद्ध संबंधिनः सत्यवसु संज्ञकाः
विश्वेदेवाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः युग्म ब्राह्मण भोजन
पर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं अमृत
रूपेण दत्तं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥ ॐ अद्य तत्सादमुक गोत्राः
मातृ पितामही प्रपितामह्यो नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो
युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रयी
भूतं किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥ अमुक
गोत्राः पितृ पितामहाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म
ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं
किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥ अमुक
गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दी
मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं

दास्यमानमन्नवातन्निष्क्रयीभूत किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहासंपद्यतां वृद्धि ।। खांचे के लड्डू दान करे ।। ॐ सत्सवसु संज्ञका विश्वे देवाः नांदी मुखाः प्रयंताम् ।। अमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपिता मह्यो नांदीमुख्यः गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नांदी मुखाः द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः नांदी मुखाः सपत्निकाश्च प्रीयन्ताम् ।।

स्वस्तिवाचन ।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। दक्षिणा दान करो सबको ।। ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य नांदी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल (धान) निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।। ॐ अमुक गोत्राभ्यो मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नांदी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमाह मुत्सृजे ।। ॐ अमुक गोत्रेभ्य पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य नांदी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रीयभूतां दक्षिणां दातुमाहमुत्सृजे ।। ॐ अमुक गोत्रेभ्यो पितामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकाश्च मुखेभ्यः कृतस्य नांदी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रीयभूतां दक्षिणां दातुमाहमुत्सृजे ।। आशीष दे

गोत्रं नो वर्द्धताम् ॥ वर्द्धतां वो गोत्रम् ॥ दातारो नोऽभि वर्द्धताम् ॥ अभि वर्द्धतां वो दातारः ॥ वेदाश्च नोऽभि वर्द्धताम् ॥ अभि वर्द्धतां वो वेदाः ॥ संततिर्नो वर्द्धताम् ॥ वर्द्धतां वः संतति ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगतम् ॥ मा व्यगमद्वः श्रद्धा ॥ बहु देयं च नोऽस्तु ॥ अस्तु वो बहु देयम् ॥ याचितारश्च नः सन्तु ॥ सन्तु वो याचितारः ॥ एवा आशिषाः सत्या सन्तु ॥ सन्त्वेतास्सत्याशिषाः ॥ ॐ माता पितामहोश्चैव तथैव प्रपितामहो । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपिता महः ॥ मातामह तत्पिता च प्रमातामह कादयः ॥ एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम् ॥ (अस्मिन्नांदी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचानात् नांदी मुख प्रसादात् सर्वः परिपूर्णोस्तु अस्तु परिपूर्णा इति विप्राः

आचार्यादिवरणम् ॥

ॐ तत्सद्यादि ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परब्रह्म परमात्मने, ब्रह्मणो द्वितिय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खंडे आर्यावर्ते आर्यावर्तान्तर गत ब्रह्मावर्तैकदेशे लक्ष्मणपुरी लखनऊ नगरे, (अमुक सम्बतसरे) (अमुकायने) (अमुक गोले) (अमुक ऋतौ) (अमुक मासे) (अमुक पक्षे) (अमुक तिथौ) (अमुक वासरे) (अमुक योगे) (अमुक करणे) (अमुक राशिस्थिते सूर्ये

अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरो शेषेषु ग्रहेषु यथार
राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ
(अमुक गोत्रं (अमुक शर्माहं) (अस्मिन्दुर्गा हवन कर्मणि अमुक गोत्रं
(अमुकनाम शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्वर्णा द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।
आचार्य कहे वृतोस्मीति॥ गुरु का पूजन (पाद प्रक्षालनं) गंधं द्वारां
दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्॥ ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
(अक्षत, पुष्प, कलावा, आचार्य के बांधे, दक्षिणा दे नैवेद्य धूप दीप दे।
(प्रार्थना करे) आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादिनां बृहस्पतिः॥ तथात्वं
मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यस्तु भवप्रभो॥ यथा विहितं कर्म कुरु॥ एवं ब्रह्मा
वरणम्॥ पूर्ववत॥ प्रार्थना॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्व वेदधर प्रभो॥
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ रक्षाविधानम्॥ हाथ में
यवाङ्कुश दूर्वा दक्षिणा अक्षत सरसों गोमयं दही सब मिला कर तांबे
के पात्र में रखले॥ फिर यह प्रार्थना कहता जाय और तांबे के पात्र
में मिली वस्तु सर्व दिशाओं में डालता जाय॥ (नमस्ते शारदा देवि
काशमीर प्रतिवासिनी॥ अहं प्रणमामि नित्यं विद्यादानं देहि मे॥
ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य, नमस्कृत्य पितामहं॥ विष्णु रुद्रं श्रियं देवींवन्दे
भक्त्या सरस्वतीम्॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिन नाथं निशाकरं॥ धरणी
गर्भ संभूतं शशि पुत्रं बृहस्पतिं॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहं

राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शक्राद्याः देवताः सर्वे
मुनीनां कथयाम्यहं ॥ गर्ग मुनिं नमस्कृत्य नारदोपि महामुनिः ॥
वशिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रो महामुनिः ॥ व्यासं कविं नमस्कृत्य
सर्व शास्त्र विशारदाः ॥ विद्याधिकास्तु मुनयः आचार्यास्तु तपो
धनाः ॥ सर्वेते प्रणिपत्येन यज्ञरक्षां करोतु मे ॥ रक्षसां भागोसि
निरस्तं गवं, रक्षःऽइदमहं गवं, रक्षोमि तिष्ठामि इदमहं गवं, रक्षोवबाध
इदमहं गवं रक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेन द्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां
वायोव्वेस्तोकानामाग्नि राजस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽऊर्ध्व नमस्म
मारुतं गच्छतम् ॥ रक्षोहा विश्व चर्षणीरभि योनि मयो हते ॥
द्रोणे सधस्थमासदत् ॥ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेयां गरुडध्वजः ॥
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥ केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां
मधुसूदनः ॥ उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशान्ये च गदाधरः ॥ ऊर्ध्वं गोवर्द्धनो
रक्षेदधश्चैव जनार्दनः ॥ एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥ यज्ञाग्रे
रक्षते शंखः पृष्ठपद्मं च उत्तमं ॥ वाम पार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च
सुदर्शनः ॥ उपेन्द्रो रक्षतेब्रह्मा आचार्यं पातु वामनः ॥ अच्युतः पातु
ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु सामं च अथर्वाणं च माधवः
उपद्रष्टास्तु ये विप्रास्तेपि रुद्रेण रक्षिताः ॥ यजमानं सपत्नीकं पुण्डरी
कादरक्षतु ॥ रक्षा हीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतां हरिः ॥ वेदमंत्रैश्च

कर्तव्या रक्षा शुभेच्छ सर्षपैः ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन रक्षां कुर्यात्सदा बुधः ॥

अब आचार्य कलावा बांधे यजमान के ॥ येन बद्धो बली राजा

दानवेन्द्रो महाबलः तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे माचल माचल ॥

अथ पुण्याहवाचनं ॥ कलश स्थापन पहले भूमि को स्पर्श करे यह कहे ॥

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥

पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृंह पृथिवीं माहिंसीः ॥

मिट्टी में जौ मिलाके या गेहूं मिलाके वेदी बनावे कलश स्थापित करे ॥

कलश में जल डाले ॥ यह मंत्र कहे ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि

वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋत

सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ इति जलप्रक्षेप ॥ कलश में

गंगाजल या कोई नदी जल डालो ॥ यह कहो ॥

ॐ इमम्मे गंगे, यमुने, सरस्वति, शुतुद्रिस्तोमं सचता, परुष्ण्या, मरुद्वृधे

वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥ इति जलेन पूर्य ॥ फिर चंदन डाले

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीं ॥ ईश्वरीं सर्व भूतानां

तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति कलशे गंध प्रक्षेपः ॥ दूर्वा डालो

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण

शतेन च ॥ इति दूर्वा प्रक्षेपः ॥ सर्वऔषधि डालो मायफल सतावर आदि ॥

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ॥ मनै नु बभ्रूणामहं

शतं धामानि सप्त च ॥ इति औषधीः प्रक्षेपः ॥

सर्वौषधी: में ।। कुष्ठं, मांसी हरिद्रे द्वे मुरा शैलेयचन्दनम् ।। वचा चम्पकमुस्ते च सर्वौषध्यो दशस्मृता: ।।
कुष्ट - जटामासी - हल्दी दो मलिया गिरि चन्दन - वच - चम्पक -

कुश डालो ।।
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण। सूर्यस्य रश्मिभि: ।। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्काम: पुनेतच्छकेयम् ।। इति कुशप्रक्षेप: ।। सात भांति की मिट्टी कलश में डालो ।।
ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ।। यच्छा न: शर्म सप्रथा: ।। इति सप्तमृद् प्रक्षेप: ।। सुपारी डालो ।। ॐ या: फलिनीर्याऽअफलाऽपुष्पा याश्च पुष्पिणी: ।। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहस: ।। इति पुंगीफलप्रक्षेप: पंचरत्न डालो, सोना चांदी तांबा मूंगा मोती ।। पंचरत्न प्रक्षेप: ।। सोने के अभाव में दक्षिणा डालो ।। इति दक्षिणा प्रक्षेप: ।।
पंचपल्लव डालो ।। यह कहो ।। ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।
इति पंचपल्लवानि प्रक्षेप: ।। कलश के गले में कलावा बांधो ।।
ॐ युवा सुवासा: परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमान: ।। तन्धीरास: कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्त: ।। इति कौसुम्बसूत्र बंधनम् ।। एक कटोरे में चावल भरकर कलश पर धरो ।।
ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।। वस्नेव विक्रीणावहाऽइष मूर्जं शतक्रतो ।। इति कलशोपरि तन्दुल पूर्ण पात्र निधानम् ।।
एक नारियल में सतिया लगाकर कलावा या टूल लपेट कर पूर्ण पात्र के ऊपर रक्खो ।। यह बोलो ।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या

(कलश के सामने पुष्प लेकर प्रार्थना करें
ॐ कलशस्य मुखे विष्णु) से शुरू करें (सन्निधो भव तक पढ़े)

वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥ इति श्री कलशविधानम् ॥

कलश में वरुणजी का पूजन पंचोपचार से करो ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः ॥ वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥ प्रार्थना

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले तत्रास्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥ कुक्षौ तु सागरास्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदोह्यथर्वणः ॥२॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी सदा ॥३॥ आयान्तु "यजमानस्य" अथवा मम गृहे च दुरितक्षयकारकाः ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥४॥ आयान्तु यजमानस्य (या मम गृहे च) दुरितक्षयकारकाः ॥ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥५॥ उत्पन्नोसि तदा कुंभः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥६॥ त्वयि तिष्ठन्ते भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥७॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥८॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥९॥ ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ! ॥ प्रधान पूजनं

यावत्तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ इति कलश पूजनम् ॥ पुण्याहवाचन
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ फिर आचार्य पूजन पंचोपचार से
स्वर्ण या तांबे का पूर्ण कलश धरे ॥ फिर आचार्य कहे, अपां मध्ये
स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ॥ शिवा आपो भवन्तु ताः ॥ शिवा
आपः संतु ॥ अस्तु शिवा आपः ॥ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति
पुष्करे ॥ सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ॥ १ ॥
सौमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घ
मायुर्यशो बलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ २ ॥
अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ अस्त्वक्षतमरिष्टम् ॥ ब्राह्मण को गंध दे ॥
आचार्य कहे अस्तु सौमंगल्यम् ॥ शिष्य फूल चढ़ावे आचार्य को
आचार्य कहे अस्तु सौश्रेयम ॥ यजमान अक्षत दे । आचार्य कहे
अस्त्वायुमस्तु ॥ शिष्य पान खिलावे ॥ आचार्य कहे ॥ अस्तु
ऐश्वर्यमस्तु ॥ शिष्य दक्षिणा दे ॥ आचार्य कहे अस्तु आरोग्यमस्तु ॥
दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु अस्तु ॥ और यह भी कहे
श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहु पुत्रं चारोग्यं चायुष्यं चास्तु अस्तु ॥
यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः
प्रवर्तंते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बह्वृषि
संमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः ॥ आचार्य पुण्याहवाचनं करे ॥

पश्चात् आचार्य (शान्तिरस्तु से बोले संपद्यतां तक
फिर फूल ले कर सब को प्रार्थना करे

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ प्रसीदन्तु भवन्तः प्रसन्नाःस्म ॥
(फिर कलश स्थापित करने के बाद) यजमान के सिर पर दूर्वा से सिंचन
करे और आचार्य यह बोलता जाय) शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु
बृद्धिरस्तु रिद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु
शिवं कर्मास्तु कर्म समृद्धिरस्तु धर्म समृद्धिरस्तु वेद समृद्धिरस्तु
धनधान्य समृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अरिष्ट निरसनमस्तु ॥ भूमौ यत्पापं
आरोग्यम शुभम कल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभि
बृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यतां ॥ अब हाथ में
फूल लेके सब को पुष्पांजलि कलश में दे॥ तिथि करण महूर्त नक्षत्र
ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम ॥ तिथि करौ समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे
सलग्नेसदैवते प्रीयतां ॥ दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयताम् ॥ अग्निपुरोगा
बिश्वे देवाः प्रीयन्ताम ॥ इन्द्र पुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॥ वशिष्ठ
पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॥ माहेश्वरी पुरोगा उमामतरः प्रीयंताम् ॥
अरुधन्ती पुरोगा एक पत्निय: प्रीयताम् ॥ विष्णु पुरोगा सर्वे देवाः
प्रीयंताम् ॥ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयंताम् ॥ आदित्य पुरोगाः
सर्वग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रियताम् ॥ अम्बिका
सरस्वत्यौ प्रीयेताम् ॥ श्रद्धा मेधे प्रीयताम् ॥ भगवती कात्यायनी
प्रीयताम् ॥ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॥ भगवती रिद्धिकरी प्रीयताम्

भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् ।। भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् ।। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ।। भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ।। भगवतौ विघ्न नायकौ प्रीयताम् ।। सर्वाः कुल देवताः प्रीयताम् ।। सर्वाः ग्राम देवताः प्रीयंताम् ।। सर्वाः इष्ट देवताः प्रीयंताम् ।। भूमौ ।। हताश्च ब्रह्मद्विषः ।। हताश्च परिपंथिनः ।। हताश्च विघ्न कर्तारः ।। शत्रवः पराभवंयान्तु ।। शाम्यंतु घोराणि ।। शाम्यंतु पापानि ।। शाम्यंत्वीतयः ।। पात्र ।। शुभानि वर्धंताम् ।। शिवा आपः सन्तु ।। शिवा ऋतवः सन्तु ।। शिवा अग्नयः संतु ।। शिवा आहुतयः संतु ।। शिवा औषधयः संतु ।। शिवा वनस्पतयः संतु शिवा अतिथयः संतु ।। अहोरात्रे शिवेस्याताम् ।। फिर जल कलश में ।। फिर बोले आचार्य ।। शुक्रांगारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहिता आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् ।। भगवन्नारायणः प्रीयंताम् ।। भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम् ।। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु ।। याज्यया यत्पुणयं तदस्तु ।। वषट्कारेण यत्पुणयं तदस्तु ।। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ।। एतत्कल्याण युक्तं पुण्य मस्तु ।। पुण्याह कालान्वाचयिष्ये ।। ॐ पुण्यं पुण्याहम दीर्घ मायुरस्तु ।। स्वस्तिवाचन ।। ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो ब्रहस्पतिर दधातु ।। अब यदि हवन हो यतो पहले अग्नि स्थापन करे

कलश पूजन

सामान्य
फिर कलश ग्रहादिकों का पूजन करे फिर ईशान कोण में वरुण का आवाहन पूजन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः ॥ वरुण आवाहयामि स्थापयामि नमः॥ प्रार्थना ॥ ॐ नागपाशधरं देवं वरुणं मकरवाहनम् ॥ शुद्ध स्फटिक संकाशं प्रणारुप नमाम्यहम् ॥ पाशहस्तं च वरुणमर्णसां पतिमीश्वरम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रति गृह्यताम् ॥ अनया पूजया सांगः सपरिवारः वरुण देवः प्रीयन्तां नमम ॥ ईशान कोण में ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादि नवग्रहाः इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ॥ सूर्यादि नवग्रहानावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ प्रार्थना नवग्रहों को ॥ ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनिराहु-केतवः सर्वे गृहाः शान्ति भवन्तु करा भवन्तु ॥ ॐ ईश्वरादि अधिदेवताभ्यो नमः॥ ॐ शिवो गौरी तथा स्कन्दो विष्णु ब्रह्मा पुरन्दरः ॥ यमः कालश्चित्रगुप्तश्चाधिदेवा इमे स्मृताः ॥ ॐ अग्न्यादि प्रत्यधिदेवताभ्यो नमः॥ ॐ अग्निरापो मही विष्णुरिन्द्र इन्द्राणिका तथा ॥ प्रजापतिर्भुजङ्गश्च ब्रह्मा: प्रत्यधिदेवताः॥ ॐ गणेश पंच लोकपालेभ्यो नमः॥ ॐ विनायकस्तथा दुर्गा वायुराकाशमेव च ॥ अश्विनौ चैव पंचैव पंचैतांल्लोकपालान् नमाम्यहम् ॥ ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥ इन्द्रो वह्निः

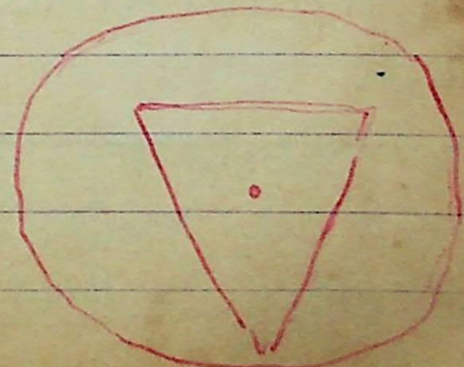
पितृ पीतमैं ऋतो वरुणो मरुत् ॥ कुवेर ईशो ब्रह्मा चऽनन्तश्च
दिगिश्वरा: ॥ऽनया पूजया सांगा: सपरिवारा: सूर्यादय: प्रीयन्तु नमम ॥
पंच गव्य से भूमि शुद्ध करो सामिग्री शुद्ध करो। पंचगव्य बनाने की विधि
दो गुना गोबर चार गुना मूत्र दूध दही ऽाठ गुणा घी गाय का यह
पंचगव्य बनाने की विधि है। पंचगव्य मिलाने की विधि ॥
इस मन्त्र से गोमुत्र मिलावो ॥ ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमही धीयो योन: प्रचोदयात ॥ गोवर मिलने का मंत्र
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व
भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ दूध मिलाने का मन्त्र ॥ ॐ ऽाप्या
यस्व समेतु ते विश्वत: सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य संगथे ॥ दही
मिलाने का मन्त्र ॥ ॐ दधिक्राव्णो ऽकारिषं जिष्णोरश्वस्य
वाजिन: ॥ सुरभिनो मुखा करत्प्रण ऽायूंषि तारिषत् ॥ घी के
मिलाने का मंत्र ॥ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि ॥
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ इन सबको कुशा से एक
पात्र में मिलाना इस मन्त्र से ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवे
श्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ बाद में कुशा से ऽापने ऊपर
यजमान के ऊपर सामिग्री पर छिड़कना पिलाना।

॥ कलश भेद ॥

कलश की विशेषतायें

कामना के भेद से कलश स्थापित किया जाता है। धर्म, काम के काम में भस्म डाले।। धन के काम में मुक्ता कलश में डाले।। शान्ती पुष्टि तुष्टि के कार्य में कमल डाले।। कामको पूर्ति में हल्दी डाले।। मोक्ष के काम में ( ) जय काम में अपराजिता (बड़ी खटैटी), उच्चाटन में व्याघ्री (छोटी कटेरी) मारण में (मिरचा) कैतवं (धतूरा) मोहन में।। वशीकरण में शिखिमूलिका (मोर पंखी) आकर्षण में पारन्ती ( ) कलश में डालो श्लोक पूरा संस्कृत का भी लिख रही हुँ। तन्त्रान्तरे कामना में देन कलशे विशेष वस्तु।। धर्म काम: क्षिपेद् भस्म धन कामस्तु मौत्तिकम्।। श्री काम: कमलं दद्यात् कामार्थी रोचनं तथा।।१।। मोक्ष कामो न्यसेद्दस्त्र जयकामोपरा जिताम्।। उच्चाटनार्थं व्याघ्रीं च वश्यार्थं शिखिमूलिकाम्।।२।। मारणाय मरीचञ्च कैतवं मोहनाय।। आकर्षणाय पारन्तीं प्रक्षिपेत् कलशोदरे।। ।।सामान्यार्घ कलश स्थापन।।

इस चतुरस्त्र वृत्त त्रिकोण मंडल पर सामान्य कलश अपने बायें हाथ की ओर स्थापित करे (ॐ ह्रीं आधार शक्तिये नमः से पंचोपचार पूजन करे। ॐ क्रः अस्त्राय फट् कहकर पात्र रक्खे। ॐ क्रां हृदयाय नमः कहकर जल सामान्य कलश में डाले।



कं मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्य मंडलाय नमः ॥ यह कहकर तीर्थ का जल डाले ॥ ॐ सं षोडशकलात्मने सोम मंडलाय नमः ॥ यह कहकर अष्ट गंध डाले या मालियागोरे चन्दन डाले ॥ प्रार्थना ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥ अब अंकुश मुद्रा ॥ आठ बार मूल मन्त्र जपे ॥ ओ सेत्र जिसका हो उसका बीज जपे ॥ धेनु-मत्स्य मुद्रा कूर्म मुद्रा, दिखावे ॥ तज्जलेन आत्मानं पूजा सामिग्रीञ्च संप्रोक्षय ॥ इति सामान्यार्घ कलशस्थापन ॥

अब पहले श्री सूक्त के १६ मन्त्रों से अपने शरीर में देहन्यास करे इसी प्रकार फिर इन्हीं १६ मन्त्रों से एक फूल हाथ में लेकर भगवती की मूर्ति में भी न्यास करदे ॥

॥ न्यास विधि ॥ श्री सूक्त मंत्रों से ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥ (शिरसि) । ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ (नेत्रयोः) ॐ अश्वपूर्वां (वां) रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ॥ श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥ (कर्णयोः

ॐ कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।। घ्राणयोः ।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियम् लोके देवजुष्टामुदारां ।।
तां पद्मिनी (नें) मीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।५।।
(मुखे) ॐ आदित्यवर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथ
बिल्वः ।। तस्या फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।
।।६।। (ग्रीवायां) ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।७।। (करयोः) ॐ क्षुत्पि
क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।। अभूतिम समृद्धिं च सर्वां
निर्णुद मे गृहात् ।।८।। (हृदि) ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां
करीषिणीम् ।। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ९।। (नाभौ)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।। पशूनां रूपमन्नस्य मयि
श्रीः श्रयतां यशः ।।१०।। (लिङ्गे) कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।। (गुदे) ॐ आपः [illegible]
स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे
कुले ।।१२।। (उर्वोः) ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्
।। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ।।१३।। (जानुनोः) ॐ
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।। सूर्यां हिरण्मयीं

लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥१४॥ (जंघयोः) ॐ तां मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योश्वान् विंदेयं पुरुषानहम् ॥१५॥ (चरणयोः) ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ (सूक्तं पंचदशर्चं च श्री कामः सततं जपेत् ॥१६॥ इस प्रकार करके कलश के ऊपर सुवर्ण की मूर्ति रेशम का कपड़ा बिछा कर स्थापित करे और षोडशोपचार से पूजन करे ॥ पहले मूर्ति को घी में स्नान करावे फिर दुग्धधारा से स्नान करावे ॥

प्राण प्रतिष्ठा करे ॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहम् अस्याः श्री प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः जीव इह स्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहम् अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद वायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु ॥ विश्वे देवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ मादयन्तामो प्रतिष्ठ मादयन्तामो प्रतिष्ठ ॥ ॐ एषवै प्रतिष्ठा

प्रश्न हड्डी के टूटने के तुरन्त बाद तुम क्या करोगे ?

उत्तर (1) हड्डी टूटने के तुरन्त बाद मनुष्य को आराम देय दशा में रखना चाहिए जिससे किसी प्रकार का तनाव न हो और यदि त्वचा कट जायगा घाव हो जाय तो घाव खून से बचाना चाहिए।

(2) इसके बाद किसी प्रतिदिन व्यक्ति की सहायता से टूटे हुए अंग में पट्टे बंधानी चाहिए कभी-2 पट्टे के साथ लकड़ी को खपाची भी बाँधी जा सकती है।

(3) उक्त कार्य करने के पश्चात रोगी को अस्पताल भेजना चाहिए।

← अध्याय 12 पेशी तन्त्र →

पेशी तन्त्र → हड्डियाँ हमारे शरीर का सुन्दर एवं सुसंगी ढाँचा बनाती है। इस ढाँचे को हड्डियां जगह-2 पर पेशियों द्वारा जुड़ी रहती है। शरीर में लगभग 1600 पेशियाँ है। इन पेशियों के समूह को पेशी तन्त्र कहते हैं।

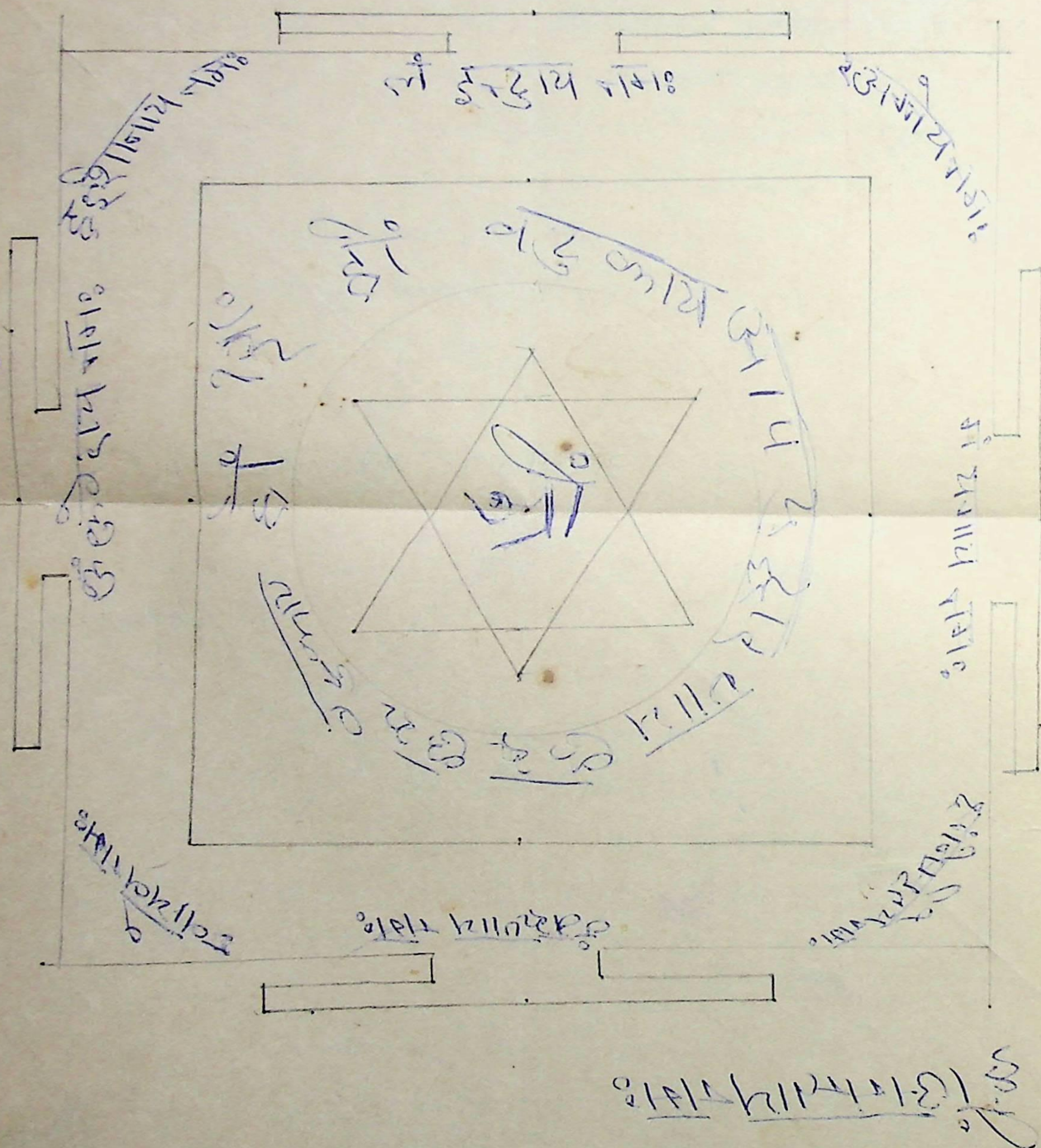
प्रश्न कंकाल पेशियाँ किसे कहते है ?

उत्तर जो पेशियाँ कंकाल की हड्डियों से जुड़ी रहते हैं उन्हें कंकाल पेशियाँ कहते है। सभी कंकाल पेशियाँ धारी दार होती है, और उनके दोनों सिरे पर सफेद मजबूत धागे सी रचनाये होती है। जिन्हें कण्डरा कहते है। कण्डरे द्वारा पेशियां हड्डियों से जुड़ी रहती है।

प्रश्न पेशी तन्त्र के मुख्य कार्य कौन-2 से है ?

उत्तर पेशी तन्त्र के निम्नलिखित कार्य है। पेशी तन्त्र के कार्य —

ॐ कृष्णे नमः



नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम भवति ।।
अनेन अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः गर्भाधानादि षोडश संस्कारान्
संपादयामि ।। पूजन करके प्रार्थना हाथ में फूल लेके करो ।।
ॐ जटाजूट समायुक्तामर्द्धेन्दु कृतलक्षणाम् ।। लोचनत्रय संयुक्ताम्
पद्मेन्दु सदृशाननम् ।।१।। अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ।।
नवयौवन सम्पन्नां सर्वाभरण भूषिताम् ।।२।। सुचारुदशनां
तद्वत्पीनोन्नत पयोधराम् ।। त्रिभंगस्थान संस्थान महिषासुरमर्दिनीम्
।।३।। त्रिशूलं दक्षिणे ध्यात्वं खड्गं चक्रं क्रमादधः ।। तीक्ष्ण बाणं तथा
शक्तिं वामतोपि निबोधत ।।४।। खेटकं पूर्ण चापं च पाशमंकुश
मूर्द्धवजम् ।। घंटां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेदयेत् ।।५।।
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् ।। शिरश्छेदोद्भवं तद्
वद्दानवं खड्गपाणिनम् ।।६।। हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्द्यन्त्र विभूषितम् ।।
रक्तरक्ती कृताङ्गञ्च रक्तविस्फारितेक्षणाम् ।।७।। वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटी
भीषणाननम् ।। सपाशवामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ।।८।।
वमद्रुधिर वक्त्रञ्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत ।। देव्यास्तु दक्षिणं पादं
समं सिंहोपरिस्थितम् ।।९।। किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि
।। स्तूयमानञ्च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत ।।१०।। उग्रचण्डा प्रचण्डा च
चण्डोग्रा चण्डनायिका ।। चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपाति चण्डिका
।।११।। आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टितम् ।। चिंतयेत सततं देवीं धर्म काम
मोक्षदाम् ।।१२

आवाहन शूलिनी का करे
तब पूजनं करे

॥ हाथ मे फूल लेके ॥

ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् ॥ दानवांस्तर्ज
यन्तीञ्च सर्व काम दुघां शिवाम् ॥१॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां
नाभि मध्ये व्यवस्थिताम् ॥ आगच्छ वरदे ! देवि दैत्यदर्प
निपातिनि ! ॥२॥ पूजां गृहाण सुमुखि ! नमस्ते शंकरप्रिये ! ॥
वसतीर्थमयं वारि सर्व देवसमन्वितम ॥३॥ इमं घटं
समागच्छ तिष्ठ देव गणैः सह ॥ दुर्गे ! देवि ! समागच्छ
सान्निध्यमिह कल्पय ॥४॥ बलिपूजां गृहाण त्वमष्टाभिः
शक्तिभिः सह ॥ आसि[illegible] समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥
रक्षां कुरु सदा भद्रे ! विश्वेश्वरि ! नमोस्तुते ॥ एह्येहि
दुर्गे ! दुरितौघ नाशिनि ! ॥ प्रचण्ड दैत्यौघ विनाश
कारिणि ! ॥ उमे ! महेशार्द्ध शरीर धारिणि ! ॥
स्थिरा भवत्वं मम यज्ञ कर्मणि ॥
एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ॥
आवाहयाम्यहं देवि ! सर्व कामार्थ- सिद्धये ॥

ऐसा कह कर फूल कलश में डाल दो ॥

॥ वेदोक्त आवाहन ॥

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णां रजतस्रजां । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो ममावह ॥ ॐ सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिगवं सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठ दृशं गुलम् ॥१॥ ॐ आगच्छ्छ महा देवि ! । सर्वसम्पत्प्रदायिनी ! ॥ या व्रतं समाप्येत ताव त्वं सन्निधौ भव ॥ आसन दो = अनेक रत्न संयुक्तम नाना मणि गणान्वितम् ॥ कार्तस्वर मयं दिव्य आसनं प्रतिगृह्यताम् ॥ पाद्यम ॥ गंगादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् । तोय मेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्घं प्रतिगृह्यताम् ॥ अर्घ्यम = दूर्वा, तिल, सरसों, जौ, पुष्प अक्षत, चन्दन सब मेलाके निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्य सिंहो परिस्थिते देवि ! गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ मधुपर्क दे ॥ दही घी मधु समानभाग ॥ पाराशर: वाक्य है ॥ १भाग घी छना हुआ । २भाग शहद ३भाग दही हो ॥ दधि मधुघृतसमायक्तं पात्रयुग्म समान्वितम् ॥ मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भव शोभने ॥ आचमन ॥ कर्पूरेण सुगंधेन सुरभिस्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयर्थं देवि ! त्वं प्रतिगृह्यताम् ॥ स्नान ॥ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हैमांभोरुह वासितैः ॥ स्नानं कुरुष्व देवेशि ! शलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ पुनराचमन ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहे लोकेश्वरि महानधे ॥ सर्व लोकेषु शुद्धात्मन ! ददामि स्नेह मत्तमम् ॥ पंचामृतस्नान ॥ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ॥ पावनं हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ शुद्ध जल स्नान

दहीस्नान॥ पयस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्॥ दध्यानीतं मया देवी! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ शुद्ध जल से फिर स्नान॥
घृतस्नान॥ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्॥ घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ शुद्ध जल से स्नान
शहद से स्नान। तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु॥ तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ फिर शुद्ध जल से
शर्करास्नानं॥ इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका॥ मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ शुद्ध जल से फिर
पंचामृतस्नान॥ पंचामृत[illegible]नीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
शुद्ध जल से स्नान = फिर चन्दन लाल = ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ मलयाचलं संभूतं चन्दनागरु संभवम्॥ चन्दनं देवि! देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ फिर शुद्ध जल से स्नान करावे = सुगन्धित उबटन लगाकर स्नान करा। प्रा
नाना सुगन्ध द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम्॥ उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ शुद्ध जल से स्नान॥
श्री सूक्त के १६ मन्त्रों मूर्ति पर शंख से अभिषेक कराना फिर तौलिया से पोंछकर धोती दुपट्टा चढ़ावे॥ फिर मूर्ति को सिंहासन पर पधरावे = पूजन करे॥

नेऊ धारण करावे ॥ स्वर्णा सूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ अष्ट गंध चढ़ावे = ॐ गंधद्वा
रां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीं ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
श्रियम् ॥ सौभाग्यसूत्र दानम् ॥ (मंगल सूत्र) ॐ सौभाग्यसूत्रं
वरदे ! सवर्णामणि संयुक्तम् ॥ कंठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं
देहि मे सर्वदा ॥ कंठसूत्रं समर्पयामि नमः ॥ अक्षत चढ़ाना ॥
अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तमाणि समान्वितान् ॥ गृहाणेमान्महादेवि
देहि मे निर्मलां धियम् ॥ हल्दी चढ़ाना चाहिये ॥ हरिद्रारञ्जिते
देवि ! सुखसौभाग्य दायिनी ॥ तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं
प्रयच्छ मे ॥ गुलाल ॥ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम संभवम्
॥ कुङ्कुमेनार्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥ सिंदूर ॥ सिन्दूरमरुणा
भासं जपा कुसुम सन्निभम् ॥ अर्पितं ते मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥
काजल चढ़ाओ = चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारकम्
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥ दुर्वा चढ़ाओ ॥
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रां
हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥ बिल्वपल्लव चढ़ाओ ॥
अमृतोद्भवः श्री वृक्षो महादेवप्रियः सदा ॥ बिल्वपत्रं प्रयच्छामि
पवित्रं ते सुरेश्वरि ! ॥ आम के पत्ते चढ़ावे =

मृहद्वारे योग्रमीप धुम्रासुर निवार्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्वांगि ! पल्लवैर्नंदनोद्भवैः ॥ फलमाला ॥ ॐ महादेवी च विद्महे विल्व पत्रि च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ रत्नमाला दो मुक्ता फल युतां मालां रत्न वैडूर्य सुप्रभाम् ॥ माणिक्य स्वर्ण ग्रथितां गृह्यतां वरदे नमः ॥ फूलमाला ॥ पद्म शंखज पुष्पादि शत पत्रैर्विचित्रितां ॥ पुष्प मालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ॥ पुष्प ॥ पुष्पैर्नाना विधैर्दिव्यैः कुमदैरथ चम्पकै ॥ पूजा ते क्रियते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ फूल पारिजाति के मंदार के गुड़हल कनेर लाल ॥ दुर्गा जी को निज दे ॥ सौगंधिकं सकंकोलं पुन्नागाशोक मल्लिका ॥ अन्यान्यपि सुगन्धीनि पुष्प पत्राणि देशिकैः ॥ २ ॥ इति श्लोक पल्लव ॥ अलङ्कार ॥ हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभिः रत्नाढ्य कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ अलङ्कार नहो तो अक्षत चढ़ादो ॥ सुगन्धित इत्र ॥ चन्दनागुरु कर्पूर कुङ्कुमं रोचनं (हल्दी) तथा ॥ कस्तूर्यादि सुगन्धाश्च सर्वांगेषु विलेपयेत ॥ अंगपूजा ॥ ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि नमः ॥ ॐ मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः ॥ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि नमः ॐ भद्रकाल्यै नमः कटि पूजयामि नमः ॥ ॐ कमलवासिन्यै नमः

नाभिं पूजयामि नमः ॥ ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः ॥ ॐ ब्राह्मयै नमः हृदयं पूजयामि नमः ॥ ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः ॥ ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणा बाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः बाम बाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै नमः स्कंधौ पूजयामि नमः ॥ ॐ स्कन्दमात्रे नमः कंठं पूजयामि नमः ॥ ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः ॥ ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरः पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वांगं पूजयामि नमः ॥ हाथ में फूल लेकर मां के समस्त अंगो में छुआता जाय ॥ अब धूप अर्पण करे सकोरे में धूप अंगारों पर डाल दे और हाथ छोड़ के घंटा बजा दे ॥ ॐ भगवति ! हरिबल्लभे ! मनोरे त्रिभुवनभूतिकारे ! प्रसीद मह्यम् ॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा दीपं ॥ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम् ॥ दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीता भव सर्वदा ॥ नैवेद्यं ॥ नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ जल दो पीने को धेनु मुद्रा दिखावे ॐ अमृतं अमृतं जुहोमि स्वाहा कहे ॥ योनि मुद्रा दिखावे ॥ घंटा बजावे ॥ ग्रास मुद्रा ॥

कोनिष्ठिका

ॐ प्राणाय स्वाहा) अंगूठा अनामिका से उठा कर ग्रास दे।
ॐ अपानाय स्वाहा) अंगूठा तर्जनी से उठा कर दो॥ ॐ उदानाय
स्वाहा) अंगूठा मध्यमा अनामिका से उठा कर दो। ॐ व्यानाय
स्वाहा) अंगूठा तर्जनी मध्या से दो॥ ॐ समानाय स्वाहा॥
सब उंगलियों वा अंगूठे से दो॥ वेदोक्त रीति से॥ ॐ नाभ्या
आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत॥ पद्भ्यां भूमिर्दिशः
श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्॥ तान्त्रोक्त॥ अन्नं चतुर्विधं
स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्ति
मे ह्यचलां कुरु॥ नैवेद्यं निवेदयामि नमः॥ बीच बीच में
आचमनी भी देता जाय॥ आचमनीयं समर्पयामि नमः॥
हाथ धुलावे॥ गंधतोयं समानीतं स्वर्ण कलशे स्थितम्॥
हस्त प्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये॥ ऋतु फल दे॥ नारि
केलेक्षु जंबादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥ ऋतु फल समर्पयामि॥
पान लगे हुये ४ बीड़ा दो॥ एला लवङ्ग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्प
वासितां बीटिकां मुखवासार्थं समर्पयामि सुरेश्वरि!॥ दक्षिणा॥
ध्यान॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता
मति मतीव शुभां ददासि॥ दारिद्र्य दुःख भय हारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता॥ नवदुर्गा पूजा॥

॥ शैल पुत्रि पूजन ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि इहागच्छ इहतिष्ठ शैल पुत्र्यै नमः शैलपुत्री
मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पूजा करो ॥ ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्व
शक्ति स्वरूपिणी ! ॥ पूजां गृहाण कौमारी ! जगन्मातर्नमोस्तुते ॥१

॥ ब्रह्मचारिणि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मचारिण्यै नमः ॥
ब्रह्म चारिणि मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पूजा ॥ ॐ त्रिपुरां
त्रिगुणाधारां मार्गज्ञान स्वरूपिणीं ॥ त्रैलोक्य वंदितां देवीं त्रिमूर्ति पूज्या
म्यहम् ॥२॥

चन्द्रघंटा

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र घंटे इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्र घंटायै नमः ॥
चन्द्र घंटा मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पूजा ॥ ॐ कालिकां
तु कलातीतां कल्याण हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं नित्यं
कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ ॥ कूष्माण्डा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ कूष्माण्डायै नमः ॥
कूष्माण्डा मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ अणिमादि
गुणोदारां मकराकार चक्षुषम् ॥ अनन्त शक्ति भेदां तां कामाक्षीं
पूज्याम्यहम् ॥ ४ ॥ ॥ स्कन्दमाता पूजन ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः ! इहागच्छ इहतिष्ठ स्कन्दमात्रे
नमः ॥ स्कन्द मातरमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ चण्डवीरां
चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभंजिनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥

॥ कात्यायनी पूजन ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनि ! इहागच्छ इह तिष्ठ कात्यायन्यै नमः ॥
कात्यायनी मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ सुखानन्दकरीं
शान्तां सर्व देवैर्नमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मकां देवीं शाम्भवीं
पूजयाम्यहम् ॥ ॥ कालरात्री पूजन आवाहन
ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ कालरात्र्यै नमः ॥
कालरात्री मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ चण्डवीरां चण्ड
मायां रक्तबीज प्रमर्दिनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं गायत्रीं
पूजयाम्यहम् ॥ महागौरी पूजन ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरि ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ महागौर्यै
नमः ॥ महागौरी मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पूजन प्रार्थना
ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुखसौभाग्य दायिनीम् ॥ सन्तोषजननीं देवीं
सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ८॥ सिद्धिदा आवाहन पूजन प्रार्थना ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदे ! इहा गच्छ इह तिष्ठ सिद्धिदायै नमः ॥
सिद्धिदा मावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये
भय दुर्ग विनाशिनि ! पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गति
नाशिनीम् ॥ ९॥ ॥ ज्योति पूजन ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः आद्या सर्वसुरोज्योद्भव तेज स्वरूप श्री दुर्गायै
नमः ॥ प्रधान साधार विकल्प सत्ता स्वभाव भावद्भुवनत्रयस्य सा
विद्या व्यक्रम पोह मायाः ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम् ॥

आरती

बटुकसहित नव कुमारियों का पूजन वायव्य कोंण से शुरु करे। ईशान कोंण तक आसन बिछाकर तिनके ऊपर प्रथम गणेश को बिठावे दूसरा बटुक फिर नवों कुमारियें बिठावे। फिर पूजन करे यदि ९ कन्या न जिमा पावे तो १-३-५-७-९ इस हिसाब से जिमादे।

॥ गणेश पूजन प्रथम ॥

ॐ गं गणपतये नमः॥ ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः॥ पाशांकुशाभय वरान्दधतं गजास्यम्॥ रक्ताम्बरं सकल दुःखहरं गणेशं॥ ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्॥ ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन्मद गन्ध लुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम् दन्ताघात विदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

॥ बटुक पूजन ॥

ॐ बं बटुकाय नमः॥ ॐ करकालित कपालः कुण्डली दण्ड पाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती॥ क्रतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति बटुक नाथः सिद्धिदः साधकानां

॥ दोवर्ष को कुमारी ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे ! सर्वशक्ति स्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि
जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ त्रिहायना त्रिमूर्ति संज्ञा ॥
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्य वन्दितां देवीं
त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥ चतुरब्दा कल्याणी ॥
कलात्मिकां कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं
देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ ॥ पंचवर्षा रोहिणी ॥
अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां
लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ षडब्दा कालिका ॥
कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीं ॥ कामदां करुणोदारां
कालिकां पूजयाम्यहम् ॥५॥ सप्तहायना चंडिका ॥
चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभंजिनीम् ॥ पुजयामि सदां
देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥६॥ अष्टवर्षा शाम्भवी ॥
सदानन्दकरीं शान्तां सर्व देव नमस्कृताम ॥ सर्वभूतात्मिकां
लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायना दुर्गा ॥
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा
भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥८॥ दसवर्ष सुभद्रा ॥
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुख सौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्र
जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

आरती

॥ आरती ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी, मैया जय मंगल कारिणी मैया जय आनन्द कारिणी, तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को, उज्वल से दोऊ नयना चन्द्र बदन नीको ॥२॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे, मैया रक्ताम्बर राजे, रक्त पुष्प गलमाला कण्ठन पर साजे ॥३॥ केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी, मैया खप्पर धारी, सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी ॥४॥ कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती, मैया नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती ॥५॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती मैया महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नयना निशदिन मदमाती ॥६॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे मैया शोणित बीज हरे। "मैया ०॥" मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे ॥७॥ तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी तुम कमलारानी मैया तुम कमलारानी आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥८॥ [चौं]सठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों, बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥९॥ — भुजा चार अति शोभित वर आयुध धारी, मैया वर आयुध धारी। मनवांछित फल पावत सेवत नरनारी ॥१०॥ कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती [मैया ०] श्री मालकेतु में राजत सकल विश्व में राजत। कोटि रतन ज्योती ॥ १०॥ यह अम्बे की आरति जो कोई नर गावे, मैया ०॥ कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे ॥ ॥ शंख में जल भर आरती उतार कर इधर उधर बगल में थोड़ा जल डालदे।

॥ दोवर्ष को कुमारी ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे ! सर्व शक्ति स्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ त्रिहायना त्रिमूर्ति संज्ञा ॥

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥ चतुरब्दा कल्याणी ॥

कलात्मिकां कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ ॥ पंचवर्षा रोहिणी ॥

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ षडब्दा कालिका ॥

कामचारां शुभां कान्तां काल चक्रस्वरूपिणीं ॥ कामदां करुणो दारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥५॥ सप्तहायना चंडिका ॥

चण्ड वीरां चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभंजिनीम् ॥ पूजयामि सदां देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥६॥ अष्टवर्षा शाम्भवी ॥

सदानन्दकरीं शान्तां सर्व देव नमस्कृताम ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायना दुर्गा ॥

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥८॥ दसवर्ष सुभद्रा ॥

सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्य दायिनीम् ॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

आरती

॥ आरती ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी, मैया जय मंगल करिणी मैया जय आनन्द करिणी, [illegible] निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी ॥ १ ॥

मांग सिन्दूर विराजत [illegible] दोऊ नयना चन्द्र बदन नीको ॥ २ ॥ कनक [illegible] मैया रक्ताम्बर राजे, रक्त पुष्प गल मा[illegible] वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ॥ मै[illegible] सेवत तिनके दुःख हारी ॥ ४ ॥

कानन कुण्डल [illegible] गज मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत [illegible] न विदार महिषासुर घाती मैया महिषासुर घा[illegible] निशदिन मदमाती ॥ ६ ॥

चण्ड मुण्ड संहारे शो[illegible] बीज हरे ॥ मैया ॥ मधु कैटभ दोउ मारे सुर भय ह[illegible] तुम रुद्राणी तुम कमला रानी मैया तुम कमला र[illegible] तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥

भुजा चार अति शो[illegible] अायुध धारी। मन वांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ ९ ॥ कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ॥ श्री मालकेतु में राजत सकल विश्व में राजत। कोटि रतन ज्योति ॥ १० ॥ यह अम्बे की आरति जो कोई नर गावे ॥ मैया ॥ [illegible] शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे ॥ ॥ शंख में जल भर आरती उतार कर इधर उधर बगल में थोड़ा जल डाल दे।

[illegible] riously लेना है - [illegible] कुशलक्षेम पत्र का [illegible] यह कार्य देने का [illegible] होती भी - बात कहूं [illegible] कर्ष्ट करना है। [illegible] को क्षमा करना। [illegible] नैनीताल

॥ दोवर्ष की कुमारी ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशी ! सर्वशक्ति स्वरूपिणी ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि
जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ त्रिहायना त्रिमूर्ति संज्ञा [illegible]
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपि [illegible] ां देवीं
त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥ चतुर [illegible]
कलात्मिकां कलातीतां कारुण [illegible] नीं
देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ [illegible]
अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षर [illegible]
लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ [illegible]
कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरू [illegible]
कालिकां पूजयाम्यहम् ॥५॥ सप्तहा [illegible]
चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभं [illegible]
देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥६॥ [illegible]
सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृतां [illegible] भूतात्मिकां
लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायना दुर्गा ॥
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा
भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥८॥ दसवर्ष सुभद्रा ॥
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्र
जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए N
प्रेषक का नाम और पता :— SENDE
प्रेषक - सुशील कुमार
मण्डलीय ०प्र०
मल्लीताल
पिन PIN 26

आरती

॥ आरती ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी, मैया जय मंगल करिणी मैया जय आनन्द करिणी, तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को, उज्वल से दोऊ नयना चन्द्र बदन नीको॥२॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे, मैया रक्ताम्बर राजे, रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे॥३॥ केहरि बाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी, मैया खप्पर धारी, सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी॥४॥ कानन कुण्डल शोभित नाशाग्रे मोती, मैया नाशाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती॥५॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती मैया महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना निशदिन मदमाती॥६॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे मैया शोणित बीज हरे॥ "मैया०॥" मधु कैटभ दोउ मारे सुर भय हीन करे॥७॥ तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी तुम कमला रानी मैया तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥८॥ भुजा चार अति शोभित वर आयुध धारी, मैया वर आयुध धारी। मन वांछित फल पावत सेवत नर नारी॥९॥ कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती मैया० श्री मालकेतु में राजत सकल विश्व में राजत। कोटि रतन ज्योती॥१०॥ यह अम्बे की आरति जो कोई नर गावे, मैया०॥ कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे॥ ॥ शंख में जल भर आरती उतार कर इधर उधर बगल में थोड़ा जल डाल दे।

॥ हाथ में पुष्प लेकर कहे ॥

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर जगतो खिलस्य,
प्रसीद विश्वेश्वर पाहि विश्वं त्वमीश्वरि देवि चराचरस्य ॥

॥ दुर्गा गायत्री १०८ अष्टोत्तर जपो ॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्

॥ परिक्रमा में प्रार्थना ॥

नमस्ते जगताम् धात्रि ! नमस्ते शंकरप्रिय ! ॥ नमः सर्व
हितार्थायै जगदाधार हेतवे ॥ साष्टाङ्गोयम प्रणामस्ते प्रयत्नेन
मया कृतः ॥ ॥ प्रणाम करते समय ॥ पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा
पाप संभवः ॥ त्राहि माम सर्वदा मातः सर्व पाप हरा भव ॥

शान्तीपाठ ॥ पुनः शान्तिस्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवाम् शान्तिकरीं ब्रह्मारीं ब्रह्मणः प्रियाम् ।
सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥ १॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥
विश्वेश्वरीं विश्व धात्रीं चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २॥
सर्व देवमयीं देवीं सर्व लोक भयापहाम् ॥ ब्रह्मेश
... नमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ३॥ विन्ध्यस्थां
... ध्याननिलयां दिव्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगनीं योगजननी
... कां प्रणमाम्यहम् ॥ ४॥ ईशानं मातरं देवीमीश्वरीं ॥

शातोस्मि सदा दुर्गा संसारार्णवतारिणीम् ॥ यइदं पठति
णुयाद्वापि योनरः। सम्मुक्तः सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्ग
पुष्पलेकर॥ बरयाचना ॥ करो जो बर चाहते हो व
देहि यशो देहि भगं भगवति ! देहि मे पुत्रान्देहि धनं
कामांश्च देहि मे ॥२॥ ॐ महिषघ्नि महामाये चामुं
ालिनी ॥ आयुरारोग्यं विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते
पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि ! ॥ भयेभ्यः मानुषेभ्
रक्षमां सदा ॥३॥ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे ! सर्वार्थ
उमे ! ब्रह्माणि ! कौमारि ! बिश्वरूपे ! प्रसीद मे ॥४
धालब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ बिल्वपत्र कृता
वां शरणं गतः ॥५॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं
॥ आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्
ापं हर क्लेशं हर शोकं हर असुखम् ॥ हर रोगं
ारी हरप्रिये ॥७॥ ॐ कायेन मनसा वाचा
मया ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे ! त्वं हर
पूजा कलाग्नि कार्यार्थे: सकृतयन्त
ोस्तु भुक्तिं मुक्तिं ...

दुर्गा गायत्री

॥ हाथ में पुष्प लेकर कहे ॥

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर जगतो खिलस्य,
प्रसीद विश्वेश्वर पाहि विश्वं त्वमीश्वरि देवि चराचरस्य ॥

॥ दुर्गा गायत्री १०८ अष्टोत्तर जपो ॥

ॐ महा दिव्ये च विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्

॥ परिक्रमा में प्रार्थना ॥

नमस्ते जगताम् धात्रि ! नमस्ते शंकरप्रिय ! ॥ नम: सर्व
हितार्थायै जगदाधार हेतवे ॥ साष्टाङ्गोयम प्रणामस्ते प्रयत्नेन
मया कृत: ॥ **प्रणाम करते समय** ॥ पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा
पाप सम्भव: ॥ त्राहि माम सर्वदा मात: सर्व पाप हरा भव ॥

शान्तिपाठ ॥ पुन: शान्तिस्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवाम् शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मण: प्रियाम् ।
सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥ १ ॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥
विश्वेश्वरीं विश्व धात्रीं चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥
सर्व देवमयीं देवीं सर्व लोक भयापहाम् ॥ ब्रह्मेश
विष्णु नमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ३ ॥ विन्ध्यस्थां
विन्ध्यनिलयां **दिव्यस्थान** निवासिनीम् ॥ योगिनीं योगजननीं
चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ ईशान मातरं देवीमीश्वरीं

प्रणतोस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ यइदं पठति स्तोत्रं
श्रृणुयाद्वापि यो नर: ॥ समुक्त: सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्गया सह

पुष्पलेकर ॥ बरयाचना ॥ करो जो बर चाहते हो वह करो ॥

रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति ! देहि मे पुत्रान्देहि धनन्देहि
सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ १ ॥ ॐ महिषघ्नि ! महामाये चामुंडे !
मुण्डमालिनी ! ॥ आयुरारोग्य विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते ॥ २ ॥
भूत प्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्य: परमेश्वरि ! ॥ भयेभ्य: मानुषेभ्यश्च
देवेभ्यो रक्षमां सदा ॥ ३ ॥ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे ! सर्वार्थ
साधिके ! उमे ! ब्रह्माणि ! कौमारि ! बिश्वरूपे ! प्रसीद मे ॥ ४ ॥
कुंकुमेन मया लब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ बिल्वपत्र कृता
पीडे दुर्गे ! त्वां शरणं गत: ॥ ५ ॥ गतं पापं गतं दु:खं गतं
दारिद्रमेव च ॥ आगता सुख सम्पत्ति: पुण्याच्च तव दर्शनात्
॥ ६ ॥ ॐ हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हर असुखम् ॥ हर रोगं
हर क्षोभं हर मारीं हरप्रिये ॥ ७ ॥ ॐ कायेन मनसा वाचा
कर्मणा यत्कृतं मया ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे ! त्वं हर
दुर्गतिम् ॥ ८ ॥ पूजा फलानि कार्याणि: सुकृतं यन्मयार्जितम्
॥ तत्सर्वं फलद मेस्तु भुक्ति मुक्तिं च देहि मे ॥ ९ ॥ लोदेमत्व
त्प्रसादान्नित्यं कृता पूजा तवाराया ॥ स्थिरा भव गृहे स्मिन्मे
सन्तान ऐश्वर्य कारिणी ॥

दुर्गा गायत्री

॥ हाथ में पुष्प लेकर कहे ॥

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर जगतो खिलस्य,
प्रसीद विश्वेश्वर पाहि विश्वं त्वमीश्वरि देवि चराचरस्य ॥

॥ दुर्गा गायत्री १०८ अष्टोत्तर जपो ॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्

॥ परिक्रमा में प्रार्थना ॥

नमस्ते जगताम् धात्रि ! नमस्ते शंकरप्रिय ! ॥ नमः सर्व
हितार्थायै जगदाधार हेतवे ॥ साष्टाङ्गोयम प्रणामस्ते प्रयत्नेन
मया कृतः ॥ प्रणाम करते समय ॥ पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा
पाप संभवः ॥ त्राहि माम सर्वदा मातः सर्व पाप हरा भव ॥

शान्तीपाठ

॥ पुनः शान्तिस्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवाम् शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ।
सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥ १ ॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥
विश्वेश्वरीं बिश्व धात्रीं चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥
सर्व देवमयीं देवीं सर्व लोक भयापहाम् ॥ ब्रह्मेश
विष्णु नमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ३ ॥ विन्ध्यस्थां
विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगनीं योगजननीं
चंडिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ ईशान मातरं देवीमीश्वरी

प्रणतोस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ यइदं पठति स्तोत्रं
शृणुयाद्वापि यो नरः ॥ समुक्तः सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्गया सह

पुष्प लेकर ॥ बर याचना ॥ करो जो बर चाहते हो वह करो ॥

रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति ! देहि मे पुत्रान्देहि धनन्देहि
सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ १ ॥ ॐ महिषघ्नि ! महामाये चामुंडे !
मुण्डमालिनी ! ॥ आयुरारोग्य विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते ॥ २ ॥
भूत प्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि ! ॥ भयेभ्यः मानुषेभ्यः
देवेभ्यो रक्षमां सदा ॥ ३ ॥ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे ! सर्वार्थ
साधिके ! उमे ! ब्रह्माणि ! कौमारि ! बिश्वरूपे ! प्रसीद मे ॥ ४ ॥
कुंकुमेन मया लब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ बिल्व पत्र कृता
पीडे दुर्गे ! त्वां शरणं गतः ॥ ५ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं
दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्
॥ ६ ॥ ॐ हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हर असुखम् ॥ हर रोगं
हर क्षोभं हर मारीं हरप्रिये ॥ ७ ॥ ॐ कायेन मनसा वाचा
कर्मणा यत्कृतं मया ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे ! त्वं हर
दुर्गतिम् ॥ ८ ॥ पूजा फलानि कार्यार्थैः सुकृतं यन्मयार्जितम्
॥ तत्सर्वं फलदं मेस्तु भुक्तिं मुक्तिं च देहि मे ॥ ९ ॥ लादेभवन
त्प्रसंसानित्यं कृता पूजा तवाराया ॥ स्थिरा भव गृहेस्मन्मेन
सन्तान ऐश्वर्य कारिणी ॥

आपदुद्धाराष्टक

॥ अथ दुर्गा आपदुद्धाराष्टकम् स्तोत्रं ॥

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके ! विश्वरूपे ॥ नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥१॥ नमस्ते जगत् चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महा योगि विज्ञानरूपे ॥ नमस्ते सदानन्द रूपे, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥२॥ अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ॥ त्वमेका गतिर्देवि निस्तार कर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥ ३॥ अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये जले संकटे राज गेहे प्रवासे ॥ त्वमेका गतिर्देवि ! निस्तार हेतुर्नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥ ४॥ अपारे महादुस्तरे त्यन्त घोरे विपत्सागरे मज्जतां देहभाजां ॥ त्वमेका गतिर्देवि निस्तार नौका नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥ ५॥ नमश्चण्डिके ! चण्ड दोर्दण्डलीलसमुत्खंडिताखंडलाशेषशत्रोः ॥ त्वमेका गतिर्विघ्न सन्दोह हर्त्री नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥ ६॥ त्वमेका सदाराधिता सत्यवादिन्यनेका खिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा ॥ इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥७॥ नमो देवि ! दुर्गे ! शिवे ! भीमनादे ! सदासर्व

सिद्धि प्रदातृ स्वरूपे ।॥ विभूतिः सतां काल रात्रिः स्वरूपे
नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ।॥८॥ शरण्या मसि सुराणां
सिद्धि विद्याधराणां मुनि दनुज नराणां व्याधिभिः पीड़िताानाम्
॥नृपति गृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां त्वमसि शरण्या मेका
देवि दुर्गे ! प्रसीद ॥९॥
इदं स्तोत्रं मयाख्यातं आपदुद्धारमष्टकम् ॥ त्रिसंध्यमेक सन्ध्यं वा
पठनाद्देव संकटात् ॥१॥ मुच्यते नात्र संदेहो भुविस्वर्गे रसातले ॥
सिद्धेश्वरतन्त्रे, हरिगौरीसम्बादे आपादुद्धाराष्टकम् स्तोत्रं सम्पूर्णं

शुभं भूयात्

संकट नाशन स्तोत्र

॥ शंकट नाशन स्तोत्र ॥

ॐ परब्रह्म स्वरूपाञ्च वेद गर्भां जगन्मयीम् ॥ शरण्ये त्वामहं
बन्दे दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥१॥ कामाख्यां कामदां श्यामां
कामरूपां मनोरमाम् ॥ ईश्वरीं त्वामहं बन्दे दुर्गां दुर्गति
नाशिनीम् ॥२॥ त्रिनेत्रां हास्य संयुक्ताम् सर्वालंकार भूषिताम्॥
विजयां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥३॥ ब्रह्मादिभिः
स्तूयमानां सिद्ध गन्धर्व सेविताम् ॥ भवानीन्त्वामहं बन्दे
दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥४॥ निशुम्भ शुम्भ मथिनीं महिषा
सुर घातिनीम् ॥ दिव्य रूपामहं बन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम्॥५॥
विंशत्यर्द्ध भुजां देवीं शुद्ध कांचन सन्निभाम् ॥ गौरीरूपामहं
बन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥६॥ त्रिशूलं खड्ग चक्रं च वाराः
शक्तिं परश्वधम् ॥ दधानां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम्॥७॥
जगन्मयीं महा विद्यां सृष्टि संहार कारिणीम् ॥ सर्व देव महं
बन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥८॥ इदन्तु कवचं दिव्यं महा
मन्त्रं महा फलम् ॥ यः पठेन्मानवो नित्यमस्म मोक्ष
समन्वितः ॥ धनं धान्यं प्रयच्छामि सकृदावर्तनेन तु ॥
मत्स्य सूक्तोक्त दुर्गा संकट नाशन स्तोत्रम् **शुभं भूयात्**॥

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि ! तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद
परमेश्वरि ! न्यूनं चाप्यधिकं वापि यन्मया मोहतः कृतम् ॥

सर्वं तदस्तु संपूर्णा त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ आवाहनम् न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पुजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी ॥

॥ सरस्वती स्तोत्र ॥ ॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं परम दुर्लभम् ॥ वागीश्वर्या मन्त्र गर्भंतु भुक्ति मुक्ति फलप्रदम् ॥

ॐ अस्य वाग्वादिनी शारदा स्तोत्र मन्त्रस्य मार्कण्डेयाश्वलायन ऋषिः स्रग्धरानुष्टुप छन्दः श्री सरस्वती देवता ह्रीं बीजं ऐं शक्ति रैं कीलकम् प्राप्तु वागिव बृद्धये जपे बिनियोगः ॥ ध्यान ॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमा माद्यांजगद्व्यापिनीम् ॥ वीणा पुस्तक धारिणीम् भयदां जाड्यान्धकारापहम् ॥ हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ॥ वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदाम शारदाम् ॥१॥ ब्रह्मोवाच ॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैक बीजे शशि रुचि कमले कल्प बिस्पष्ट शोभे ॥ भव्ये भव्यानुकूले शुभ मति बनदे विश्ववन्द्याङ्घ्रि पद्मे ॥ पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो मोद संपादयित्रि ॥ प्रोत्फुल्ले ज्ञान कूले हरि निज दयिते देवि संसार सारे ॥२॥ सौं सौं सौं शक्ति बीजे कमलभव मुखांभोज रूपस्वरूपे ॥ रूपे रूप प्रकाशे सकल गुण मये निर्गुणे निर्विकारे न स्थूले नैव सूक्ष्मेप्यविदित विभवे जोप्यविज्ञानतुष्टे ॥

विश्वे विश्वान्तराले सुरवर नमिते निष्कले नित्य शुद्धे ॥३॥
ऐं ऐं ऐं ~~ह्रीं ह्रीं~~ ह्रीं जाप तुष्टे हिम रुचि मुकुटे वल्लकी व्यग्र हस्ते ॥
मातर्नमस्ते मातर्नमस्ते दह दह जड़तां देहि बुद्धि प्रशस्ते ॥ विद्ये
वेदान्त वेद्ये श्रुतिपरि पठिते मोक्षदे मुक्ति मार्गे ॥ मार्गा
तीत प्रभावे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे ॥४॥ धीं धीं धीं
धारणाख्ये धृति मति नुति भिर्नामभिः कीर्ति नित्ये नित्ये
ऽनित्ये निमित्ते मुनिगण नमिते नूतने वै पुराणे ॥ पुण्ये पुण्य
प्रभावे हरि हर नमिते नित्य शुद्धे सुवर्णे मन्त्रे मन्त्रार्थ
तत्वे मति ! मति ! मतिदे माधव प्रीति नादे ॥५॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकं व्यग्र हस्ते ॥ संतुष्टाकार
चित्ते स्मित मुखि सुभगे जृंभिणी स्तंभ विद्ये ॥ मोहे मुग्ध
प्रभावे मम कुरु कुमतिं ध्वांत विध्वंस मीड्ये ॥ गीर्गौर्वाग्
भारती त्वं कविवर रसने सिद्धिदे सिद्धि साध्ये ॥६॥ श्रीं २
स्तौमि त्वां ह्रीं च वन्दे मम खलु रसनां मा कदाचित्यजेथाः
जेथाः ॥ मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु मम मनो देवि मे पातु
पापात् ॥ मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषये (च समये ऽप्यहं) पुस्तके मे
मा कुलत्वं ॥ शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु
कुण्ठा कदापि ॥८॥ इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रतिदिन मुषसि

तत्वार्थवेत्ता

स्तौति यो भक्त नम्रो वाणीं वाचस्पते रप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मृष्टकण्ठः ॥ सस्यादिष्टार्थ लाभः सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी ॥ सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ९ ॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ॥ सारस्वतो नरः पाठात्सस्यादिष्टार्थ लाभवान् ॥ १० ॥ पक्षद्वयेऽपि भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम् ॥ अविच्छेदं पठेद्धीमान् = ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ ११ ॥ शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम् ॥ वांछितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः ॥ १२ ॥ इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभं प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वं च गच्छति ॥ १३ ॥ (यथा शक्ति जप करना)

ॐ श्रीं सौं ह्रीं क्लीं धीं महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः ॥ इति मनुः इति श्रीरुद्रयामलेतन्त्रे दशविद्यारहस्ये सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णं ॥

गुरु पादुका पूजन

॥ वामकेश्वर तन्त्र का है॥

॥ गुरु पादुका पूजन॥

ॐ महादेव्या श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ ॐ महादेवानन्दनाथ श्री० पा० न० त० न०॥ ॐ त्रिपुराम्बा श्री पा० पू० न० त० न०॥ ॐ भैरवानन्दनाथ श्री० - - .

ऐते दिव्यौघाः॥ ॐ ब्रह्मानन्दनाथ श्री० ॐ पूर्णादेवानन्दनाथ श्री० . . . . ॐ चलचित्तानन्दनाथ श्री० . . . ॐ स्मरदीपानन्दनाथ श्री० . . . ॐ मायाम्बानाथ श्री० . . . . ॐ मायावत्यम्बानाथ श्री० . . . . ऐते सिद्धौघाः॥ ॐ विमलानन्दनाथ श्री०

ॐ कुशलानन्दनाथ श्री० . . . . . ॐ भीमसेनानन्दनाथ श्री० . . . . . ॐ सुधाकरानन्दनाथ श्री० . . . ॐ मीनानन्दनाथ श्री० . . . ॐ गोरक्षकानन्द श्री० ॐ भोजदेवानन्दनाथ श्री० . . . . ॐ प्रजापत्यानन्दनाथ श्री० . . . . ॐ मूलदेवानन्दनाथ श्री० . . . ॐ रतिदेवानन्दनाथ श्री० . . . . ॐ विघ्नदेवानन्दनाथ श्री० ॐ हुताशनानन्दनाथ श्री० . . ॐ समयानन्दनाथ श्री० ॐ सन्तोषानन्दनाथ श्री० - - ऐतान् पुष्पादिभिः संतोष्य गुरुपात्रमृतेन सकृत्सकृत् संतर्प्य मानवौघसमीपे॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें (हसौं) हसक्षमलवरयूं (सहौं सहक्षमलवरयीं हसौं) सहसखफ्रें स्त्रीं सियारघुनाथ शरणानन्दनाथ श्री जानकी देव्यम्बा श्री० पा० पू० न० त० न०

स्वगुरुनाथ श्री० . - ॐ परापर गुरु नाथ श्री० पा० पू० न०तृ०
ॐ परमेष्ठी गुरुनाथ श्री० पा० - - इति गुरु चतुष्ठय पूर्ववत्पूजयेत्तर्पयेत्
पुष्पांजलि दे॥ इसके बाद ध्यान करे यह ध्यान पीछे लिखा है।
शरदचन्द्रसमाभासं शरत्पंकजलोचनं॥

॥ सप्तश्लोकी दुर्गापाठ प्रारभ्यते ॥

शिवोउवाच॥ देवित्वं भक्तसुलभे सर्व कार्य विधायिनी॥ कलौ हि कार्य सिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥ देव्युवाच॥ श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्ट साधनम्। मयातवैवस्नेहेनाप्यम्बास्तुति प्रकश्यते॥ ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्र मंत्रस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः दुर्गा प्रीत्यर्थं सप्तश्लोकी दुर्गा पाठे विनियोगः ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥१॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके॥ शरण्ये त्रियम्बके गौरि नारायणी नमोस्तुते॥३॥ शरणागति दीनार्तपरित्राणपरायणे॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोस्तुते॥४॥ सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते॥ भयभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते॥५॥ रोगानशेषानपहांसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्॥ त्वामाश्रितानां-न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रितां प्रयान्ति॥६॥

सर्वा बाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ! ।। एवमेव त्वयाकार्य
मस्मद्वैरि विनाशनम् ।।७।। एतत्परम गुह्यं सर्व रक्षा
विशारदम् । देव्या संभाषितं स्तोत्रं सदा साम्राज्य दायकम् ।।८।।
शृणु या श्चापठेद्वापि पाठयेद्वापि यत्नतः परिवार युतोभूत्वा त्रैलोक्य
विजयी भवेत् ।।९।। इति श्री सप्तश्लोकी दुर्गास्त्रोतं समाप्तः ।।

॥ चंण्डिकादल प्रारम्भ ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ।।अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चण्डिका दल मुत्तमम् ।।मन्त्रं
बिना तु जपत्वा वै तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।। ॐ नमो भगवति जय जय
चामुंडे चण्डि, चण्डेश्वरि, चण्डायुधे ।। चण्ड रूप धारिणि ताण्डव प्रिये ।।
कुण्डलीभूतदिङ् नाग मंडली कृत गण्डस्थले समस्त जगदण्ड
संहार कारिणि परे, अनन्तानन्त रूपा शिवे नर शिरो माला लंकृत
वक्षस्थले, महा कपाल मालोज्वलन्मणि, मुकुट चूड़ा वतंस चन्द्र
खण्डे, महा भीषणे देवि ।।महा माये षोडश कला परिवृतोल्लासिते,
महा देवा सुर समर निहत रुधिरार्द्री कृत लम्बित तनु कमलोद्भा
सित करे ।। सम्पूर्ण रुधिर शोभित महा कपोल वक्त्र हासिनि,
दृढतर निबद्ध्यमान रोम राजी सहित हेम कांची दामोज्वलित,
वसना रुणी भूत नूपुर प्रज्वलित मही मण्डले ।।महा शम्भु रूपे,
महा व्याघ्र चर्माम्बर धरे ।।महा सर्प यज्ञोपवीतिने ।।महाश्मशान

चण्डिका दल प्रारम्भ

भस्मोद्धूलितसर्व गात्रे ॥ कालि ॥ कंकालि महाकालि, कालाग्नि रुद्रकालि ॥ काल संकर्षिणि, काल नाशिनी, काल रात्रि नमो दुष्टमर्दिणी ॥ नाना भूत प्रेत पिशाच गण सहस्त्र संचारिणि नाना व्याधि प्रशमाने ॥ सर्व दुष्ट प्रमाथिनि सर्व दारिद्रय नाशिनि, धग धगेत्या स्वादितमांस खण्डे गात्र विक्षेप कल, कलायमान, कंकाल धारिणि, मधु मांस रुधिरा वसिक्त विलासिनि, सकल सुरासुर गन्धर्व, यक्ष विद्याधराकिन्नर किम्पुरुषादिभिः स्तूयमान चरिते सर्व मन्त्राधि कारिणि, सर्व शक्ति प्रधाने ॥ सकल लोक पावनि ॥ सकल दुरित प्रक्षालिनी ॥ सकल लोके जननि ॥ ब्राह्मी ॥ माहेश्वरि ॥ कौमारि । वैष्णवि ॥ शंखिनि ॥ वाराही । नारसिंहीन्द्राणि ॥ चामुण्डे महालक्ष्मीस्वरूपे ॥ महा विद्ये ॥ योगेश्वरि ॥ योगिनि ॥ चण्डिके ॥ महा माये ॥ विश्वरूपिणि ॥ सर्वाभरणभूषिते ॥ अतल, वितल, सुतल, रसातल तलातल महातल, पातालादि भूर्भुवः स्वर्महर्जनस्तपः सत्याख्य चतुर्दश भुवनैक नाथे महाक्रूरे प्रसन्नरूपधारिणि ॐ नमः पितामहाय ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ इति सकल लोके कज्जायमान ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर रूपिणि, दंड कमंडलु धारिणि ॥ सावित्रि सर्व मंगला सरस्वति पद्मालये । पार्वति सकल जगत स्वरूपिणि । शंख चक्र गदा पद्म धारिणि ॥ परशु शूल पिनाकटंक धारिणि, ॥ शर चाप शूल करवाल खड्ग डमरु अंकुश गदा परशु तोमर

भिन्दिपाल, भुशुण्डी मुद्गर मूसल, परिघायुध दोर्दण्ड सहस्त्रे, चन्द्रार्क वह्नि नयने॥ इन्द्राग्नि यम नैर्ऋति वरुण वायु सोमेशान प्रधान शक्ति हेतुभूते, सप्तद्वीप समुद्रो पर्युपरि व्याप्ते ईश्वरि महा प्रपंच मालालंकृत मेदिनी नावे, महाप्रधाने महा कैलास पर्वतोद्यान वन विहारिणि, क्षेत्र नदी तीर्थ देवता यतनालंकृते। वसिष्ट वामदेवादि महा मुनिगण वन्द्य मान चरणारविन्दे॥ द्वि चत्वारिंशद्वर्ण महात्म्ये॥ पर्याप्त वेद वेदाङ्गा द्यनेक शास्त्रा धार भूते। शब्द ब्रह्म मयि। लिपि देवते। मातृकादिवि चिंर स्वरत्न॥ मम शत्रुन्हुंकारेण नाशय नाशय। भूत प्रेत पिशाचानुच्चाटयोच्चाटय॥ समस्त ग्रहान् वशी कुरु वशी कुरु॥ मोहय २ स्तंभय २ मादय मादय, उन्मादयोन्मादय, विध्वंसय २ द्रावय २ श्रावय २ स्तोभय २ संक्रामय २ सकलारातीन् मूर्द्धन स्फोटय २ मम शत्रून् शीघ्रं मारय मारय जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थास्वस्मान् राज चोराग्नि जलवात विषभूत शत्रु मृत्यु ज्वरादि नाना रोगेभ्यो नानाभिचारेभ्यो, नानापवादेभ्य: पर कर्म पर तन्त्र मन्त्र यन्त्रौषधि शल्य शून्य क्षुद्रेभ्य: सम्यङ् मां रक्ष रक्ष॥ ॐ क्रों ह्रीं ह्रौं मम शत्रु सर्व प्राणसंहार कारिणि हुं फट् स्वाहा

॥ इति रुद्रयामले तंत्रे चण्डिकादलम्॥

॥ चंडिका हृदयम् ॥

ॐ अस्य श्री चंडिका हृदय स्तोत्र मंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप छन्दः। श्री चंडिका देवता ह्रां बीजं ह्रीं शक्तिः। ह्रूं कीलकम् श्री चंडिका प्रीतये जपे विनियोगः। करन्यासः ॥

तारा विचार करना हो तो वर के नामाक्षर की रासी से या जन्म रासी से कन्या की जन्म रासी या नाम रासी तक गिनो जैसे मघा वर का न. है, कन्या का अश्वनी नक्षत्र है। तो मघा से अश्वनी १८ बां नक्षत्र हुआ उसे ९ से भाग दो। यदि ९ से भाग न जाय ० लब्धि रहे तो वही समझो जैसे। १ बचा शुभ ३-५-७ बचे तो खराब बाकी शुभ तारा होता है। अश्वनी से मघा तक १० वां हुआ

९) १८ (२
१८
१

| सितं पक्ष मोन
| शुक्लपक्ष

९) १० (१
९
१

॥ चंडिका ध्यान ॥

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ सधिके, शरण्ये त्रियम्बके गौरि नारायणी नमोस्तुते ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथा तथम्। चंडिका हृदयं गुह्यं श्रृणुष्वैकाग्र मानसः ॥
ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं हूं। जय जय चामुण्डे चंडिके त्रिदश मणि मुकुट कोटीर संघट्टित चरणारविंदे, गायत्रि, सावित्रि, सरस्वति, महाकृता भरणे, भैरव रूप धारिणि, प्रकटित दंष्ट्रोग्र वदने, घोरे घोराननें, ज्वलज्वाला सहस्त्र परिवृते, महाट्टहास ~~[illegible]~~ वलीकृत दिगान्तरे,

सर्वायुध परिपूर्णे, कपाल हस्ते, गजाजिनोत्तरीये, भूत वैताल वृन्द परिवृते
प्रकम्पित चराचरे मधुकैटभ महिषासुर धूम्रलोचन चण्ड मुण्ड
रक्तबीज शुम्भ निशुम्भादि दैत्य निष्कण्टके, काल रात्रि महामाये शिवे
नित्ये इन्द्राग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु सोमेशान प्रधान शक्ति भूते ब्रह्म
विष्णु शिवस्तुते त्रिभुवनाधाराधारे वामे, ज्येष्ठे, वरदे, रौद्रि, अम्बिके,
ब्राह्मी माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवि, शंखिनी, वाराहि इन्द्राणि चामुंडा,
शिवदूती, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वति स्वरुपे नादमध्यस्थिते महोग्र
विषोरग फणा फणा घटित मुकुटा[illegible]दि रत्न महा ज्वाला मय पाद
बाहू कण्ठोत्तमांगे, मालाकुल, महा महिषोपरि गंधर्व विद्याधराराधिते
नवरत्न निधि कोशे, तत्व स्वरुपे, वाक् पाणि पाद पायुपस्थात्मिके, शब्द स्पर्श
रुप रस गन्धादि स्वरुपे, त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण महा बुद्धि स्थिते, ऐं
कार ह्रींकार क्लीं कार हस्ते, ॐ ह्रीं आं क्रौं [illegible] प्रवेशय २ द्रांशोषय
द्रांशोषय क्रीं सुकुमारय, सुकुमारय श्रीं सर्व प्रवेशय २ त्रैलोक्यवर
वर्णानि समस्त चित्तं वशीकुरु कुरु मम शत्रून् शीघ्रं मारय २ जाग्रत्
स्वप्न सुषुप्त्यवस्था स्वस्मान् राज चोराग्नि जल वात विष भूत शत्रु मृत्यु
ज्वरादि स्फोटकादि नाना रोगेभ्यो दुष्टेभ्यः सम्यङ् मां रक्ष २ ऐं ऐं
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं स्फ्रः मम सर्व कार्याणि
साधय २ हुं फट् स्वाहा।। २१ वारं जपेत्।। राजद्वारे श्मशाने वा

दुर्गा सतनाम स्तोत्र

बिवादे शत्रु संकटे। भूताग्नि चोर मध्यस्थे मयि कार्याणि साधय स्वाहा। चंडिका हृदयं गुह्यं त्रिसंध्यय: पठेन्नर:। सर्व कामप्रदं पुंसा भुक्तिं मुक्तिं प्रयच्छति ॥ इति हृदयं॥

॥ दुर्गा शतनाम स्तोत्रम् ॥

दुर्गायाः शतनामानि श्रृणु त्वम्भवगेहिनी ॥ दुर्गा, भवानी, देवेशी, विश्वनाथ प्रिया, शिवा ॥१॥ घोर दंष्ट्रा करालास्या, मुण्डमाला, विभूषणा। रुद्राणी, तारिणी, तारा माहेशी, भव बल्लभा ॥२॥ नारायणी, जगद्धात्री महादेव प्रिया, जया ॥ विजया च जयाऽऽराध्या, शर्व्वाणी, हर बल्लभा ॥३॥ असिता, चाणिमा देवि लघिमा, गरिमा, तथा ॥ महेशशक्तिर्विश्वेशी गौरी, पर्व्वत नन्दिनि ॥४॥ नित्या, च निष्कलंका च निरीहा, नित्य नूतना ॥ रक्ता, रक्त मुखी, वाणी, वसु युक्ता, वसुप्रदा ॥५॥ रामप्रिया, राम रता रघुनाथ वरप्रदा ॥ राजेश्वरी - राज्यरता कृष्णा, कृष्णावरप्रदा ॥६॥ यशोदा, राधिका, चंडी द्रौपदी, रुक्मिणी, तथा ॥ गुहप्रिया, गुहरता गुह वंशा, विलासिनी ॥७॥ गणेश जननी, माता, विश्वरूपा च जाह्नवी ॥ गङ्गा, काली च काशी च भैरवी भुवनेश्वरी ॥८॥ निर्म्मला च सुगन्धा, च देवकी, देव पूजिता ॥ दक्षजा, दक्षिणा, दक्षा, दक्षयज्ञविनाशिनि ॥९॥ सुशीला सुन्दरी, सौम्या, मातंगी, कमला, कला ॥ निशुम्भ नाशिनी, शुम्भ

सरस्वती कवच

नाशिनि, चण्ड नाशिनि ॥१०॥ धूम्रलोचन संहर्त्री महिषासुर मर्दिनि उमा, गौरी कराला च, कामिनी विश्वमोहिनि ॥११॥ इत्येवं शतनामानि कथितानि वरानने ॥ नामस्मरणमात्रेण ~~मात्रेण~~ जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥१२॥ यः पठेत् प्रातरुत्थाय स्मृत्वा दुर्गा पद द्वयम् ॥ मुच्यते जन्म बन्धेभ्यो नात्र कार्य्या विचारणा ॥१३॥ संध्या काले दिवाभागे निशायां वा निशा मुखे ॥ पठित्वा शतनामानि मंत्रसिद्धिर्लभेद् ध्रुवम् ॥१४॥ अज्ञात्वा स्तवराजञ्च दश विद्यां भजेद्यदि ॥ तथापि नैव सिद्धिः स्यात् सत्यं २ महेश्वरि ॥ इति मुण्डमालातन्त्रे द्वितीय पटले श्री दुर्गा देव्याः शतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥

॥ सरस्वति कवच प्रारम्भः ॥

श्रुणु वत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व कामदम् श्रुतिसारं श्रुति सुखं श्रुत्युक्तं श्रुति पूजितम् ॥१॥ उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने वने ॥ रासेश्वरेण विभुना रासेन रास मंडले ॥२॥ अतीव गोपनीयं च कल्प वृक्ष समं परम् ॥ अश्रुताद् भुत मन्त्राणां समूहैश्च समन्वितम् ॥३॥ यद्धृत्वा बुद्धिमांश्च बृहस्पतिः ॥ यद्धृत्वा भगवाञ्छुक्रः सर्व दैत्येषु पूजितः ॥४॥ पठनाद्धारणाद् वाग्मी कविन्द्रो वाल्मिको मुनिः ॥५॥ स्वायम्भुवो मनुश्चैव यद्धृत्वा सर्व पूजितः ॥ कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः ॥६॥ ग्रंथं चकार यद्धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥ धृत्वा वेद विभागं च

पुराणान्यखिलानि च ॥७॥ चकार लीलामात्रेण कृष्णद्वैपायनः स्वयम् ॥ शातातपश्च संवर्त्तो वसिष्ठ पराशरः ॥८॥ यद् धृत्वा पठनाद् ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकार सः ॥ ऋष्यशृङ्गो भरद्वाजश्चास्तीको देवलस्तथा ॥९॥ जैगीषव्योऽथ जाबालिर्यद्धृत्वा सर्वपूजितः ॥ कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेष प्रजापतिः ॥१०॥ स्वयं बृहस्पतिश्छन्दो देवो रासेश्वरः प्रभुः ॥ सर्वतत्त्वपरिज्ञान सर्वार्थसाधनेषु च ॥११॥ कविताशु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ॥ श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदावतु ॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रं पातु निरन्तरम् ॥१३॥ ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा नेत्रयुग्मं सदावतु ॥ ॐ ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु ॥१४॥ ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा ओष्ठं सदावतु ॥ ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्म्यै स्वाहेति दन्तपंक्तीः सदावतु ॥१५॥ ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदावतु ॥ ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धं मे श्रीं सदावतु ॥१६॥ ॐ श्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु ॥ ॐ ह्रीं विद्यास्वरूपायै स्वाहा मे पातु नासिकाम् ॥१७॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वाण्यै स्वाहेति मम पृष्ठं सदावतु ॥ ॐ सर्ववर्णात्मिकायै पदयुग्मं सदावतु ॥१८॥ ॐ रागाधिष्ठातृदेव्यै सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥

ॐ सर्व कण्ठ वासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु ।।१८।। ॐ ह्रीं जिह्वाग्र
वासिन्यै स्वाहाऽग्नि दिशरक्षतु ।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै बुध जनन्यै
स्वाहा ।।२०।। सततं मन्त्र राजोऽयं दक्षिणे मां सदावतु ।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां मे सदावतु ।।२१।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कवि जिह्वाग्र वासिन्यै स्वाहा मां
वारुणेऽवतु ।। ॐ सदाऽम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदावतु ।।२२।। ॐ
गद्य पद्य वासिन्यै स्वाहा मां मुत्तरेऽवतु ।। ॐ सर्व शास्त्र वासिन्यै स्वाहा
ईशान्यां सदावतु ।।२३।। ॐ ह्रीं सर्व पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु ।।
ॐ ऐं ह्रीं पुस्तक वासिन्यै स्वाहाधो मां सदावतु ।।२४।। ॐ ह्रीं ग्रन्थ
बीजस्वरुपायै मां सर्वतोऽवतु ।। इति ते कथितं विप्र सर्व मन्त्रौघ
विग्रहम् ।।२५।। इदं विश्व जयं नाम कवचं ब्रह्म रुपिणाम् ।।२६।।
पुराश्रुतं धर्म वक्त्रात् पर्वते गन्धमादने ।। तव स्नेहान्मयाख्यातं
प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।।२७।। गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकार
चन्दनैः ।। प्रणम्य दण्डवद् भूमौ कवचं धारयेत्सुधीः ।।२८।।
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ।। यदि स्यात् सिद्ध कवचो
बृहस्पति समो भवेत् ।।२९।। महावाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्य
विजयी भवेत् ।। शक्नोति सर्वं जेतुं स कवचस्य प्रसादतः ।।
।।३०।। इतते काण्वशाखोक्तं कथितं कवचं मुने ।। स्तोत्रं पूजा
विधानं च ध्यानं च वन्दनं तथा ।।३१।। इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महा
पुराणे प्रकृति खण्डे नारायण नारद संवादे सरस्वती कवचं नाम चतु
र्थोऽध्यायः ।।

॥ अर्गला के सिद्ध प्रयोग ॥

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्र काली कपालिनि॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥१॥ इस श्लोक के सम्पुट से महामारी (प्लेग) शान्त होती है॥

मधु कैटभ विद्रावि विधातृ वरदे नमः रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ इस श्लोक के सम्पुट से राजा चोर का भय जाय॥

महिषासुर निर्नाश भक्तानां सुखदे नमः। रूप देहि०

इससे रिपुवर्ग का नाश होवे।

वंदितांघ्रियुगे देवि सर्व सौभाग्य दायिनि। रूपं देहि०

इससे राज सन्मान होवे॥

रक्त बीज बधे देवि चण्ड मुण्ड विनाशिनि। रूपं देहि०। इससे शत्रु भय हटे।

अचिन्त्य रूप चरिते सर्व शत्रु विनाशिनि। रूपं देहि०। इससे रोग समूल जाय

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरिता पहे। रूपं देहि०। इससे सर्व विपत्ति जाय

स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं त्वां चंडिके व्याधि नाशिनि। रूपं देहि०। व्याधि हटे

चंडिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः। रूपं देहि०। सौभाग्य मिले॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि०। सर्व सुख मिलेगा॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बल मुच्चकैः। रूपं देहि०। शत्रु नाश होगा॥

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्। रूपं देहि। कुटुम्ब रक्षा॥

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनम् कुरु। रूपं देहि। इससे यश लक्ष्मी जय वृद्धि होवे।

अर्गला के प्रयोग

मूलम का संकेत इष्टमंत्र को सात बार जपले या जो श्लोक को जपना हो

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि०॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष मिले।
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ॥ रूपं देहि०॥ पुरुषार्थ मिले।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ॥ रूपं देहि०॥ सर्वज्ञता प्राप्त होवे।
देवि प्रचण्डदोर्दण्ड दैत्य दर्प विनाशिनि ॥ रूपं देहि०॥ जलोधर नाश होवे।
देवि भक्त जनोद्दाम दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ॥ रूपं देहि०॥ अनावृष्टि दूर होवे।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीं तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्
स्त्री सुन्दर मिले ॥ ॥अथ सर्व मन्त्रोत्कीलनविधि: ॥ तन्त्रान्तरे॥
ॐ ह्रीं ह्यौं क्ष्म्रीं क्ष्मलवर पीडं मलवर फ्रीं ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः उत्कीलय २
स्वाहा (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) मूलम सात बार। ॐ जयन्ति
मंगला काली भद्रकाली कपालिनि ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा
स्वधा नमोस्तुते ॥१॥ ॐ ह्री ह्यौं ह्रीं ह्यौः ऐं क्ष्मलवर फ्रौं क्ष्मलवर
फ्रौं ॐ ह्यौं उत्कीलय २ स्वाहा मूलम् १ स्वाहा ॥ इत्युत्कीलनम् ॥
ॐ विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे ॥ श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय
नमः सोमार्द्ध धारिणे त्रैलोक्यं वशी कुरु २ क्ष्मलवर फ्रौं ॐ
मूलम् १ इति प्रथम श्लोकं समापयेत् ॥ इत्यर्गला मोक्षः ॥
अथ मूलेन षडंगन्यास ११ कवच पाठ न्यासः करे॥
॥ शाप मोचनमन्त्र ॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं क्रां क्रौं चण्डिका देव्यै शाप नाश
नुग्रहम् कुरु २ स्वाहा। आदि अन्त में सात बार पहले करले ॥

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरु २ स्वाहा २१ बार
आदि अन्त में ।। पुस्तक पूजन ।।
ॐ नमः पिशाचिनि कंकिनि त्रिशूल खड्ग हस्ते सिंहारूढे
ऐह्येहि आगच्छ २ इमां पूजां गृहण २ स्वाहा श्रीं सप्तसती
स्वरूपिण्यै ह्रीं चंडिकायैनमः ।। संजीवनी विद्या ।।
ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनी विद्यामृत मुत्थापयोत्थापय
क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ।। अथवा मरीच कल्पोक्त सप्तसती.
शापादि मोचनम् ।। ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हुं ॐ ऐं द्रोमय मोहय
उत्कीलय २ ठं ठं

नवार्ण विधि

॥ नवार्ण विधि ॥

श्री गणपतिर्जयति ॥ ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्र ऋषय: गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांसि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता: नन्दा शाकम्भरी भीमा: शक्त्य: रक्त दन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि अग्नि वायु सूर्यास्तत्वानि ऋग यजु: सामवेदा: ध्यानानि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीतियर्थं जपे विनियोग.

॥ ऋष्यादि न्यास: ॥

ॐ ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नम: शिरसि ॥ ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दोभ्यो मुखे ॥ ॐ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि ॥ ॐ नन्दा शाकम्भरी भीमा: शक्तिभ्यो नमो दक्षिणस्तने ॥ ॐ रक्त दन्तिका दुर्गा भ्रामरी बीजेभ्यो नमो वामस्तने ॥ ॐ अग्निव सूर्यतत्वेभ्यो नमो नाभौ ॥ इति ऋषयादि न्यास: ॥ अथवा तन्त्रान्तरे ॥ ऐं बीजं ह्रीं शक्ति: क्लीं कीलकम् ॥ ॐ ऐं बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्त्ये नम: पादयो: ॥ ॐ क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ॥ इति पाठान्तरम् ॥

अब हाथ धोकर फिर न्यास करो ॥ तत: बहिर्मातृका न्यासं कुर्यात् ॥

ॐ अं नम: शिरसि ॥ ॐ आं नम: मुखे ॥ ॐ इं नम: दक्षिण नेत्रे ॥ ॐ ईं नम: वाम नेत्रे ॥ ॐ उं नम: दक्षिण कर्णे ॥ ॐ ऊं नम: वाम कर्णे ॥ ॐ ऋं नम: दक्षिण नासापुटे ॥ ॐ ॠं नम: वाम नासापुटे ॥ ॐ लृं नम: दक्षिण कपोले ॐ ॡं नम: वाम कपोले ॥ ॐ एं नम: ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ऐं नम: अधरोष्ठे ॥ ॐ ओं नम: ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ॥ ॐ औं नम: अधो दन्तपंक्तौ ॥ ॐ अं नम: मूर्द्धनि ॥

ॐ अः नमः मुख वृत्ते ॥ ॐ कं नमः दक्षिण वाहु मूले ॥ ॐ खं नमः दक्षिण कूर्परे ॥ ॐ गं नमः दक्षिण मणिबंधे ॥ ॐ घं नमः दक्षिण हस्तांगुलिमूले ॐ ङं नमः दक्षिण हस्तांगुल्याग्रे ॥ ॐ चं नमः वाम वाहु मूले ॥ ॐ छं नमः वाम कूर्परे ॥ ॐ जं नमः वाम मणिबंधे ॥ ॐ झं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ॐ ञं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ टं नमः दक्षिण पाद मूले ॥ ॐ ठं नमः दक्षिण जानुनि ॥ ॐ डं नमः दक्षिण गुल्फे ॥ ॐ ढं नमः दक्षिण पादांगुलिमूले ॥ ॐ णं नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे ॐ तं नमः वामपाद मूले ॥ ॐ थं नमः वामजानुनि ॥ ॐ दं नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ धं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ नं नमः वाम पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ॐ फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ बं नमः पृष्ठे ॥ ॐ भं नमः नाभौ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ ॐ यं नमः त्वगात्मने नमः हृदि ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि (गर्दन में) ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष हस्तांतम् ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तांतम् ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ॥ ॐ हं प्राणात्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ॥ ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ॥ **इति विन्यास ॥ इस न्यास के करने से मनुष्य देवता के रूप को प्राप्त करता है। यह प्रथम न्यास है ॥ सारस्वत न्यास है ॥**

दूसरे सारस्वत न्यास के करने मूर्खता नाश हो जाती है।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयो।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अंगुष्ठयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कर पृष्ठयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिबन्धयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कूर्परयोः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदयाय नमः।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसे स्वाहा।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायवषट्।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचाय हुं।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्राय फट्।। इति द्वितिय सारस्वतन्यास।।
तृतिय मातृकागण न्यासः।। इसके करने से मनुष्य त्रैलोक्य को जीतता है।
ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वस्यां मां पातु।। ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां मां पातु।। ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणस्यां मां पातु।। ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्याम् मां पातु।। ॐ ह्रीं बाराही पश्चिमायाम् मां पातु।। ॐ ह्रीं इन्द्राणी वायव्याम् मां पातु ॐ ह्रीं चामुंडा उत्तरस्यां मां पातु।। ॐ ह्रीं महालक्ष्मी ईशान्याम् मां पातु ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वे मां पातु।। ॐ ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु।। ॐ ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु।। इति तृतिय न्यासः।।
चतुर्थः षड्देवी न्यासः।। इसके करने से साधक मृत्यु तथा वृद्धवस्था को दूर करता
ॐ कमलाङ्कुश समण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु।। ॐ खड्ग पात्र धरा रक्त दन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु।। ॐ पुष्प पल्लव संयुक्ता शाकम्भरी पृष्ठाङ्गं मे पातु।।

ॐ धनुर्बाण करा दुर्गति हारिणि दुर्गा वामाङ्गम् मे पातु ।। ॐ शिरः पात्र करा भीमा मस्तकाद्चरणान्तं मे पातु ।। ॐ चित्र कान्ति भृद भ्रामरी चरणाभ्यां शिरः पर्यन्तं मे पातु ।। इति चतुर्थ न्यासः ।।

अथ ब्रह्माख्य नामक पंचम न्यासः ।। इसके करने से सब कामना प्राप्त होती है

ॐ ब्रह्मा सनातनः पादादि नाभि पर्यन्त मां पातु ।। ॐ जनार्दनः नाभे विशुद्धि पर्ययन्तं नित्यं माम पातु ।। ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धे ब्रह्म रन्ध्रान्तं मां पातु ।। ॐ हंसः पाद द्वयं मे पातु ।। ॐ वैनतेयः कर द्वयं मे पातु ।। बृषभश्चक्षुषा मे पातु ।। ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि मे पातु ।। ॐ सर्वानन्दमयो हरिः परापरो देहभागो मे पातु ।। इति पंचमो ब्रह्मादि न्यासः ।। अथ महालक्ष्म्यादि न्यास षष्ट न्यासः ।। इससे सद्गति प्राप्त है ।।

ॐ अष्टादश भुजायुक्त महासरस्वती ऊर्ध्वं मे पातु ।। ॐ दश भुजा मण्डिता महाकाली अधः मे पातु ।। ॐ सिंहो हस्त द्वयं मे पातु ।। ॐ पर हंसोऽक्षियुगमम् मे पातु ।। ॐ दिव्य माहिषारूढो यमः पाद द्वयं मे पातु ।। ॐ महेशश्चण्डिका सहितः सर्वांगानि मे पातु ।। इति षष्ठ न्यासः ।।

अथ सप्तम बीज मन्त्र न्यासः ।। इसके करने से रोग नाश हो जाते हैं ।।

ॐ ऐं नमः शिखायाम् ।। ॐ ह्रीं नमो दक्षनेत्रे ।। ॐ क्लीं नमो वाम नेत्रे ।। ॐ चां नमो दक्ष कर्णे ।। ॐ मुं नमो वाम कर्णे ।। ॐ डां नमो दक्ष नासा पुटे ।। ॐ विं नमो मुखे ।। ॐ च्चै नमो गुदे ।। इति बीज न्यासः ।।

॥ अष्टम विलोम बीजन्यासः॥ इससे दुखनाश होते हैं।

ॐ च्चें नमो गुदे॥ ॐ विं नमो मुखे॥ ॐ यै नमो वाम नासापुटे॥ ॐ डां नमो दक्ष नासापुटे॥ ॐ मुं नमो वाम कर्णे॥ ॐ चां नमो दक्ष कर्णे॥ ॐ क्लीं नमो वाम नेत्रे॥ ॐ ह्रीं नमो दक्ष नेत्रे॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम्॥ इति अष्टमन्यासः॥

नवमं न्यासं मन्त्र व्याप्ति स्वरूपकम्॥ इसके करने से देवत्व प्राप्त होता है॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणा पर्यन्तं पूर्वाङ्गे॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि दक्षाङ्गे॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि पृष्ठे॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः मस्तका च्चरणावधि वामाङ्गे॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः मस्तकात्पादान्तम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः पादादि शिरोन्तम्॥ इति नवमोन्यासः

दशम षडङ्ग न्यासः॥ इससे तीनों लोक वश होते हैं॥ ॐ मू० नमः हृदयाय नमः॥ ॐ मू० नमः शिरसे स्वाहा॥ ॐ मू० नमः शिखायै वषट्॥ ॐ मू० नमः नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ मू० नमः अस्त्राय फट्॥ इति दशम षडङ्ग न्यासः॥ मू० माने मूलमंत्र नवार्ण का पूरा कहो॥ अथ एकादश न्यासः॥ इसके करने शान्ति सुख प्राप्त होता है॥ प्रार्थना॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥ शंखिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा॥१॥ सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥२॥ यच्च किंचित्क्वचिद् वस्तु सदसद् वाखिलात्मिके तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया॥३॥

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पाताऽत्ति यो जगत् ।। सोऽपि निद्रा वशं नीतः
कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।।४।। विष्णुः शरीर ग्रहणमहमीशान एव च ।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ।। ॐ शूलेन
पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।। घंटास्वनेन नः पाहि चाप
ज्यानिःस्वनेन च ।।१।। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चंडिके रक्ष दक्षिणे ।।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।।२।। सौम्यानि यानि रूपाणि
त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।। यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा
भुवम् ।।३।। खड्गगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।। कर
पल्लव संगीनि तैरस्मान रक्ष सर्वतः ।।४।। ॐ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे
सर्वशक्ति समन्विते भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।।१।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम् । पातु नः सर्व भूतेभ्यः कात्यायनि
! नमोस्तुते ।।२।। ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषा सुरसूदनम् ।। त्रिशूलं
पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तुते ।।३।। हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेना
पूर्य या जगत् ।। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ।।४।। असुरा
सृग्वसा पंक चर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।। शुभाय खड्गो भवतु चंडिके !
त्वां नता वयम् ।।५।। मूल षडंगन्यासः ।। क्लीं को चन्द्रसमान सर्व शरीर
में ध्यान करो ।। ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां (हृदयाय नमः) ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
(शिरसे स्वाहा) ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) ॐ

चामुंडायै अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं) ॐ विच्चे कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्) एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्॥ इस प्रकार न्यास करके नवार्णमंत्र से ८ बार व्यापक न्यास करे॥

अक्षरन्यासः॥ तन्त्रान्तरे॥ ॐ ऐं नमः। शिरसि॥ ॐ ह्रीं नमः नेत्रयोः॥ ॐ क्लीं नमः ललाटे॥ ॐ चां नमः भ्रुवोः॥ ॐ मुं नमः कर्णयोः॥ ॐ डां नमः गण्डयो ॐ यैं नमः मुखे (वदने) ॐ विं नमः दन्तपंक्तियोः॥ ॐ च्चें नमः जिह्वायां ॐ ऐं नमः स्कन्धयोः॥ ॐ ह्रीं नमः कण्ठे॥ ॐ क्लीं नमः भुजयोः॥ ॐ चां नमः हृदि॥ ॐ मुं नमः पार्श्वयोः॥ ॐ डां नमः पृष्ठे॥ ॐ यैं नमः नाभौ॥ ॐ विं नमः लिंगे॥ ॐ च्चें नमः कट्यां॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः गुह्ये॥ ॐ मूलम० नमः करयोः॥ ॐ मू० नमः पादयोः॥ ॐ मू० नमः सर्वांगे॥ अथ दिगन्यासः॥ ॐ ऐं प्राच्यै नमः॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः॥ ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः॥ ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः॥ ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः॥ ॐ क्लीं वायव्यै नमः॥ ॐ चामुंडायै उदीच्यै नमः॥ ॐ विच्चे ईशान्यै नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे भूम्यै नमः॥

॥ शंकराचार्य विरचित देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि न जाने स्तुति महो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः॥ न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेश हरणम् ॥१॥ विधेरज्ञानेन द्रविणाविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्याच्युतिरभूत॥ तदेतत्क्षन्तव्यं जननि ! सकलोद्धारिणि ! शिवे ! कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि ! बहवः सन्ति सरलाः परं तेषाम मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः॥ मदीयोयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे ! कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणा सेवा न रचिता न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥ तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपम यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥ परित्यक्त्वा देवान्विविध विधि सेवा कुलतया मया पंचाशीतेरधिकमुपनीते तु वयसि ॥ इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता निरालम्बो लम्बोदर जननि ! कं यामि शरणम् ॥५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कन्कैः ॥ तवापर्णे कर्णे विशति मनु वर्णे फलमिदं जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥ चिता भस्मालेपा गरल मशनं दिक्पटधरो जटाधारी कण्ठे भुजगपति

हरि पशुपतिः ॥ कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि!
त्वत पाणि गृहण परिपाटी फलमिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकांक्षा
न चाविभव वांछापि च न मे न विज्ञाना पेक्षा शशि मुख सुखे
च्छापि न पुनः ॥ अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृड़ानी रुद्राणि शिव शिव! भवानीति जपतः ॥८॥ नाराधि
तासि-विधिना विविधोपचारैः किं रूक्ष चिन्तन परैर्न कृतं वचोभिः
॥ श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब परं
तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे! करुणार्णा
वेशी ॥ नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०
जगदम्ब विचित्र मत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ॥ अपराध परं
परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥ मत्समः पातकी नास्ति
पापघ्नी त्वत्समा नहि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥
॥१२॥ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं
देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

पीला फूल दूध कच्चा, के ... के बाद कमल के फूल से। दही मछली के खण्ड से भोग लगावे। दही बड़ा उरद का पूड़ी पुआ मीठा भोग दे एक एक मट्टी का दीप सबके सामने तेल का धरे धूप दीप दिखावे। कमल के फूल चढ़ावे सबको। तांबे का दस पैसा चढ़ावे। ५ हजार इस मन्त्र जपे यन्त्र के सामने। दशांश क्रिया करे।

बिन्दू में राहु का पूजन होगा (~~ॐ ह्रीं~~ नीला फूल चढ़ेगा बिन्दु पर (ॐ ह्रीं श्रीं ऐं राहवे फट् स्वाहा) इस मन्त्र से पूजन होगा।

बाकी सब इसी मन्त्र से पूजन पंचोपचार से करे।

मूल मन्त्र = (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं भुवनेश्वर्यै नमः)

यह सर्व आशापूरक यन्त्र है।

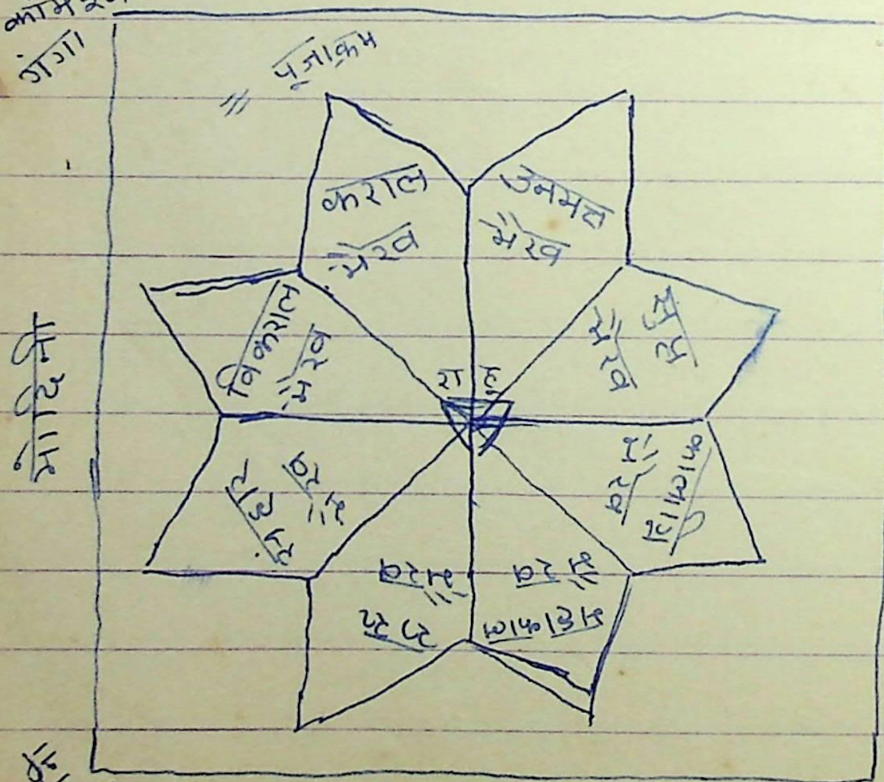
आवाहन
आसन
पाद्य
अर्घ
स्नान, वस्त्र
गंध
पुष्प, इतर
धूप
दीप
नैवेद्य, पान
भेंट
पुष्पांजलि

क्रम पूजा

(१) गणेश
(२) कामेश्वरी
(३) गंगा

पूर्वमें कामिनी

कुबेर
विमला



रहता है आपका और मैं सबको काफी चिन्ता रहती है।

धर्मराज

पश्चिममें
अरुणा

वरुणा (१)
गायत्री (२)
सरस्वती (३)

॥ कुलाचार व्याख्या ॥

शक्ति
स्वमार्गीका

जिसमें नित्य कुलस्त्री ॥कुलगुरु ॥और कुल देवी ॥ तथा विश्व की पूजन हो
शक्ति शोधन करले ना चाहिये

॥ कुलांगना की व्याख्या ॥

माया बीज दे कर कान में शक्ति शोधन करे पहले
धोबिन, भंगिन, चमारिन, पासिन, तेलिन, तमोलिन, आदि और या वेश्या हो उसे हठ पूर्वक लाकर पूजन षोडशोपचार से करके रेतस से भुवनेश्वरी को तृप्त करे ॥ और विशेष कर जप तर्पण करे ॥ हवन पूर्वोक्त विधि से करे

॥ कुल कान्ता की व्याख्या ॥

॥ कुला चार की व्याख्या ॥

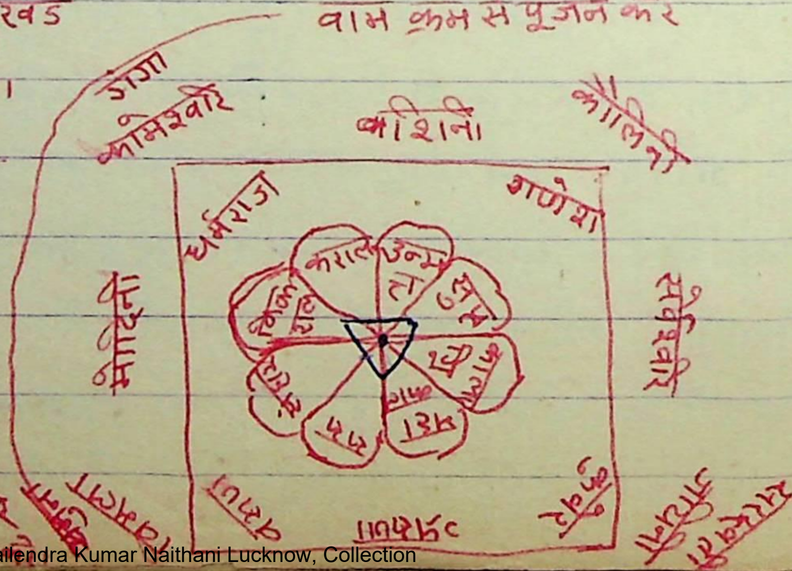
कुल की स्त्री या अपनी स्त्री को सुन्दर वस्त्र धारण कराके अलंकार धारण करावे। सुगन्ध लगावे भोजन सुन्दर सुन्दर करावे धूप दीप से। पान सुगन्धित खिलावे। फिर ब्रह्म योनि का पूजन करे। यह पूजन गुरु से पूछे। कुलस्त्री कुल गुरु का पूजन वामाचार से करे पंचमकार युक्त जब सूर्य कन्या राशी पर हो तब यह पूजन करे) या सूर्य ग्रहण में सामयिक पूजन करे। (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः) इस मन्त्र से सर्वाशा पूरक यन्त्र भूमि में लिख के श्री चक्र के लिये पुष्पांजलि देकर चतुष्कोण में गणेश, धर्मराज, वरुण, कुबेर, का पूजन करे। अष्ट भैरवों का अष्ट दल में, (कराल) (विकराल) (संहार) (रुरु भैरव) (महाकाल भैरव) (कालाग्नि भैरव) (सुप्त भैरव) (उन्मत्त भैरव) का पूजन करे॥



देवेश्यपि शान्चे: पति

बाद में कवच सहस्त्र नाम पढ़े ।।

पीला फुल, दुग्ध, मधु से पंचोपचार से पूजन करे। ईशान क्रम से
विन्दु में नीले फूल से दही मत्स्यखंड — वाम क्रम से पूजन करे
कमलों से भुवनेश्वरी पूजन करे।
(ॐ ह्रीं श्रीं ऐं राहवे फट् स्वाहा
से राहू का विन्दु में पुजन करे।
तीन बार सूर्य के मन्त्र का पूजन
करे दस तांबे का पैसा चढ़ावे।
पंचोपचार से पुजन करे। फिर
मन्त्र ५ हजार ढाई हजार १ हजार
... हवन । तर्पण ...



॥ श्री भुवनेश्वरी कवच ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

भगवन् परमेशान् सर्वागम विशारद। कवचं भुवनेश्वर्याः कथयस्व महेश्वर ॥१॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु देवि महेशानि कवचं सर्वकामदम्। त्रैलोक्य मोहनं नाम सर्वेप्सित फलप्रदम् ॥२॥
यस्य स्मरण मात्रेण ब्रह्मा संसार सागरे। जनार्दनोऽपि देवेशि त्रैलोक्य विजयी भवेत् ॥३॥
धनाधिपः कुबेरोऽपि देवेशः शची पति। पठनात् धारणात् सत्यं यतः सर्वे दिगीश्वराः ॥४॥
ऐश्वर्य युताः शान्ताः सर्व सिद्धिमवाप्नुयुः। यस्य प्रसादादीशोऽपि भैरवानां सुरेश्वरि ॥५॥
त्रैलोक्य प्रथिताख्योऽहं विद्धि त्वं कवचं शिवे। क्रोधाधिपो महावीर्यो देवेशो भीमरूप धृक् ॥६॥
... परशिष्येभ्यो दद्याच्छिष्येभ्य एव च। अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्वा नरक माप्नुयात् ॥७॥
त्रैलोक्य मोहनस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः। छन्दो विराट् देवता च कीर्तिता ॥८॥

विनियोग = ॐ अस्य त्रैलोक्य मोहन कवचस्य सदाशिव ऋषिः विराट् छन्दः श्री भुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्ग विधायां लक्ष्मी भोग मोक्ष फल प्राप्त्यर्थे यन्त्रोद्धारण कवच पाठे विनियोगः॥

ॐ ह्रीं क्लीं मे शिरः पातु श्रीं फट् पातु ललाटकं। सिद्ध पञ्चाक्षरी माया नेत्रे मे भुवनेश्वरी ॥१॥ श्रीं क्लीं मे श्रुतिः पातु नमः पातु च नासिकाम् ॥ देवी षडाक्षरी पातु वदनं मुण्ड भूषणाम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ग्लं पातु जिह्वां मायान्महेश्वरी ऐं स्कन्धौ पातु मे देवि महा त्रिभुवनेश्वरी ॥३॥ हूं घंटा मे सदा पातु देव्येकाक्षरिणी। ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् मायादीश्वरी मे भुजद्वयम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् मायाभुवनेश्वरी स्तनद्वयम ॥ ह्रां ह्रीं ऐं फट् महामहा
देवी च हृदयं मम ॥५॥ ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायत्पार्श्वौ काम स्वरूपिणी । ॐ ह्रीं
क्लीं ऐं नमः पायात्कुक्षिं महाषडक्षरी ॥६॥ ऐं सौं ऐं ऐं क्लीं फट् स्वाहा कटि
देशे सदावतु । अष्टाक्षरी महाविद्या देवेशी भुवनेश्वरी ॥७॥ ॐ ह्रीं ह्रौं ऐं श्रीं
ह्रीं फट् पायात्के गुह्यस्थलम षडक्षरी ॥ महाविद्या महामाया साक्षाद् ब्रह्मस्व
रूपिणी ॥८॥ ऐं ह्रां ह्रौं हूं नमो द्विव्ये देवी सर्व पदं ततः । ॐ दुस्तरं पदं तारय पदं तारय
प्रणवद्वयम् ॥९॥ स्वाहा इति महाविद्या जानुनि मे सदावतु । ऐं सौं ॐ ऐं क्लीं फट्
स्वाहा जंघे मे भुवनेश्वरी । ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौं सौं वद् २
वाग्वादिनीति च वीजद्वयम द्वयं देवि विद्यायां विश्वव्यापिनी ॥११॥ सौं २
ऐं २ क्लीं २ श्रीं २ ह्रीं २ ॐ २ चतुर्दशात्मिका विद्या पायात् कवचे नमः ॥
॥१२॥ सकलं सर्व भीतिभ्यः शरीरं भुवनेश्वरी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्रदिग् भागे
पायान्मे चापराजिता ॥१३॥ श्रीं ऐं ह्रीं विजया पायादिन्दु पुरदाग्निस्थले
। ॐ श्रीं सौं क्लीं जया पातुयाम्यां मां कवचान्वितम् ॥१४॥ ह्रीं २ ऐं सौं
ह्सौं पायान्नै ऋतिर्मां परात्मिका । ॐ श्रीं २ ह्रीं सदा पायात्पश्चिमे ब्रह्म
रूपिणी ॥१५॥ ॐ ह्रां सौं मां मयाद्रक्षेद् वायव्यां मंत्ररूपिणी ॥ ऐं क्लीं श्रीं
सौं सदा रक्षतु कौवेर्यां नग नन्दिनी ॥१६॥ ॐ पायादुर्ध्वं सुरेश्वरी
॥१७॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मां पायाद् धस्था भुवनेश्वरी । एवं दशदिशं,
रक्षेत् सर्व मन्त्र मई शिवा ॥१८॥ प्रभाते पातु चामुण्डा श्रीं क्लीं ऐं सौं स्व
रूपिणी ॥ १९ ॥

ध्याह्ने यातु मामम्बा श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं स्वरूपिणी ॥१८॥
सायं पायादुमादेवी ऐं ह्रीं क्लीं सौं स्वरूपिणी।
निशादौ पातु रुद्राणी ॐ क्लीं क्रीं स्वरूपिणी ॥२०॥ निशीथे पातु ब्रह्माणी
क्रीं ह्रीं ॐ स्वरूपिणी। निशान्ते वैष्णवी पायादुमा ह्रीं क्लीं स्वरूपिणी।
॥२१॥ सर्वं कालं च माम् पायादों ह्रीं क्रीं भुवनेश्वरी॥ एषा विद्या माया
गुप्ता तन्त्रे ष्वश्रीम साम्प्रतम् ॥२२॥ देवेशि कथिता तुभ्यं कवचेच्छा
त्वयि प्रिये। इति ते कथितं देवि गुह्याद् गुह्यतरं परम् ॥२३॥ त्रैलोक्य
मोहनं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम्। ब्रह्म विद्यामयं भद्रे केवलं ब्रह्म
रूपिणाम् ॥२४॥ मंत्र विद्यामयं चैव कवचं मन्मुखोदितम्। गुरुमभ्यर्च्य
विधिवत कवचं धारयेद्यदि ॥२५॥ साधको वै यथा ध्यानं तत् क्षणाद् भैरवो भवेत्
सर्व पाप विनिर्मुक्तः कुल कोटि समुद्धरेत् ॥२६॥ गुरुः स्यात्सर्व विद्या
सु ह्यधिकारो जपादिषु। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृतः ॥२७
शतमष्टोत्तरं जपत्वा तावद्धो मोदिकं तथा। त्रैलोक्य विचरेद्वीरो
गणा नाथो यथा स्वयं ॥२८॥ गद्य पद्य मई वाणी भवेद् गंगा
प्रवाहवत्। पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूले नैव पठेत्सकृत ॥२९॥

॥ श्री देव्यु वाच॥

भगवन् करुणाम्भोदे कीदृशं मंत्र मुत्तमम्। मूलकं भुवनेश्वर्याः कृपया
वक्तु मर्हसि ॥३०॥ ॥ईश्वर उवाच॥ शृणु देवि प्रवक्ष्ये मुद्धारं
मन्त्र विग्रहम्। देवेशि भुवनेश्वर्याः गोप्याद् गोप्यतमं कुरु ॥३१॥
प्रणावं सकला लक्ष्मी कामं वाग्भव मेव च। शरश्च भुवनेश्वर्याः महये
ऽन्तश्च नमः इति ॥ ३२॥

प्रोक्तोऽयं भुवनेश्वर्याः मन्त्र त्रयोदशाक्षरः ॥ इत्युद्धारः प्रकाशम्
"इतिमूल"
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः ॥ अनेन मन्त्रेण नरेश्वरीं ध्यायेद्
यो भुवनेश्वरीं ॥ स याति भूपेश्वरतां ॥ ३३ ॥ भूर्जे विलिख्य गुटिकां
स्वर्णस्थां धारयेद्यदि पुरुषो दक्षिणे बाहौ योषिद्वाम करे तथा ॥ ३४
सर्व सिद्धियुतो भूत्वा विचरेद् भैरवो यथा। तद् गात्रं प्राप्य शस्त्राणि
ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वती ॥ ३५ ॥ अल्पानि कुसुमानीव भवन्ति सुख
दानि च। तस्य गेहे चिरं लक्ष्मी वाणी च निवसेद्ध्रुवम् ॥ ३६ ॥
यो भजेदधमो मर्त्यो देवेशि भुवनेश्वरीम् ॥ ३७ ॥ अल्पायुर्निर्बलो
मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥ श्री देव्युवाच ॥ ॥ किं दृशं
भुवनेश्वर्या यन्त्र मन्त्रमयं महत् ॥ ३८ ॥ यं दृष्ट्वा लभते मुक्तिं पूजित्वा
मानवेश्वरः ॥ ॥ श्री भैरव उवाच ॥ ब्रवीमि यथा तुभ्यं गोपनी
यं प्रयत्नतः ॥ ३९ ॥ यस्य कस्य न दातव्यं दत्वा कुष्ठी भवेद्ध्रुवे
॥ त्रिकोणं पूर्व मुद्धृत्य ह्यधस्थाद्वीर वन्दिते ॥ ४० ॥ ऊर्ध्वं च
तादृशं कुर्यात् त्रिकोणं च पुनः क्षिपेत् । अधस्थात् कोण कुहराद्
ऊर्ध्वं कोणे सामाक्षिपेत् ॥ ४१ ॥ उत्थाप्योर्ध्वं त्रिकोणं च यन्त्र
मध्ये विनिक्षिपेत् । पुनस्त्रिकोण मध्ये तु विन्दुस्थानं समाचरेत् ॥ ४
यन्त्रान्ते चतुरस्राभिः वेष्ठितं सहितं चरेत् ॥ लताभिस्सहिता रेखा
श्च - तस्यास्त्रिः समाचरेत् ॥ ४२ ॥

बीजाक्षरान्विमन्येवं यन्त्रं प्रोक्तं मया तव। विन्दोरोर्ध्वं च प्रणवं तद्
ऊर्ध्वं तत् परान्यसेत ॥४४॥ तदूर्ध्वं च कमलां सव्ये च मदनं न्यसेत्।
वामेऽपि चरमं वर्णां पुनः सव्ये शारस्मृता ॥४५॥ वामेप्ये चर्मं वर्णान्नान्यः
पर्वत नान्दिनी। पर नाम्ना परम वर्णां पुनः वामेऽपि तादृशम् ॥४६॥
पुनर्नामाक्षरं सव्ये तथा वामेऽपि विन्यसेत्। विन्दोरधस्थाद्परं तदधस्था
त्स्मृतं परम ॥४७॥ पूजयेत्साधको धीमान् धारयेत्साधकोत्तमः ॥४८॥
कवचं यन्त्र संयुक्तं सर्व मन्त्रमयं महत्। सम्पूज्य कवचं यन्त्रं धृत्वापि
साधकेश्वरः ॥४९॥ त्रैलोक्ये विजयेद्धीरो यथैवाहं तथैव सः। इदं
रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ॥५०॥ यस्य कस्य न वक्तव्यं सत्यं
जानीहि सुव्रते। कर्मणा मनसा वाचा सत्यं २ सुरेश्वरी ॥५१॥ रहस्यं
भुवनेश्वर्या न देयं यस्य कस्य चित्। दद्याच्छिष्याय शान्ताय गुरु
भक्तिपराय च ॥५२॥ लोभ मोह विहीनाय देवि भक्ति युताय च। सत्यं २
पुनः सत्यं सत्यं जानीह पार्वती ॥५३॥ इत्येषः परलो देवि गोपनीयं
महेश्वरी। कवचोद्धारको नाम साधकेष्ट फलः प्रदः ॥५४॥
इति श्री भुवनेश्वरी रहस्ये कवच कथनं सप्तमः पटलः ॥

॥ तन्त्रों के नाम ॥

रुद्रयामल = लक्ष्मीयामल = उमायामल = स्कन्दयामल = गणेश
यामल = जयद्रथामल = चन्द्रज्ञान = इसमें षोडशानित्याओं का
वर्णन है। मेरुदण्ड = भगमालिनी = शिवदूती = मालिनी विद्या =
महासम्मोहन = वाम गुह्य = महादेव = वातुला, वातुलोत्तरा =
कामिका = हृदय भेद तन्त्र = तन्त्रभेद = गुह्य तन्त्र = कलावाद = तन्त्र
कलासागर = तन्त्र काण्डकामत = तन्त्र मतोत्तरा = तंत्र विनाख्या = तंत्र तारातत्ला = तंत्र
तरोत्तलोत्तरा = तंत्र पञ्चामृत = तंत्र रूपभेद = तंत्र भूतोड्डामरा = तंत्र कुलसार = तंत्र
कुलोड्डीशा = तंत्र कुलचूड़ामणि = तंत्र सर्वज्ञानोत्तरा = महाकाली मता =
अरुणेश्वर = मोदनीशा = विकुण्डेश्वर = पूर्वाम्नाय = पश्चिमाम्नाय
दक्षिणाम्नाय = उत्तराम्नाय = निरुत्तराम्नाय = विमला = विमलो
त्तरा = देवी माता = अन्तिम माता = भुवनेश्वरी रहस्य में =
तृतीय पटल मे भैरव ने भवानी को बताया है। चतुर्थ पटल में
श्री भुवनेश्वरी का तत्व वर्णन है। जिसके जपने में कोई विघ्न
नहीं होता है॥ यह पञ्चदशी विद्या है १५ अक्षर का मंत्र है इसका
इसके जप में शापोद्धार कीलक की जरुरत नहीं होती है।
पंचम पटल में पूजन का प्रकार है। षष्ठ पटल में = साधक के
पालनीय नियम भूत शुद्धि: भूतोत्सारण भूत शुद्धि = प्राणायाम
सम्पूर्ण न्यास के साथ विशद विधि बताई। सप्तम पटल में कवच
अष्टम पटल में भुवनेश्वरी सहस्त्र नाम है।

नवम मे तत्व विद्या स्तोत्र निरूपण है। दशम पटल में उत्कीलन है,
एकादश पटल में ईश्वर भग प्रकाशन। द्वादश पटल में दीक्षा बताई है
त्रयोदश पटल में पुरश्चरण विधि बताई गई। चतुर्दश पटल में होम
की बिधि वर्णन है। पंचदश में चक्र पूजा। षोडश पटल में आचार विधि
सप्तदश पटल में सूर्य गृहण की पूजा विधि बताई है।

एकाक्षरी महा विद्या श्री विद्या भुवनेश्वरी विद्या चतुर्दशात्मिका
और षोडशात्मिका विद्या तत्वविद्यात्मिका देवी भुवनेश्वरी
स्वर्ग राज्य को देने वाली इस विद्या को एकबार उच्चारण करने से
ब्रह्महत्या दूर होती है। ॥ पूजा क्रम॥
ब्राह्म्य महूर्त में उठ हाथ पैर धो कर आसन पर बैठ जाय।
सहस्त्रसार में कुण्डलिनी में आरोह अवरोह से गुरु का ध्यान करे।
अपने इष्ट मंत्र का जप कर शौच दातून स्नान सन्ध्या आदि करे।
द्वार पाल का पूजन कर आसन शुद्द करे। भूतोत्सारण करे।
शान्ति के साथ सम्विद को स्वीकार करे। प्राणायाम करे।
मन्त्र न्यास करे देवता की भावना आ जावे॥ न्यास क्रम॥
हल्लेखायै नमः मूर्ध्नि - गगनायै नमः हृदयाम्बुजे - रक्त करालायै
नमः गुह्ये -, महोच्छुष्मायै नमः पदद्वये ऊपर दक्षिण उत्तर
पश्चिम मुखों में न्यास करे। पुनः गायत्री सहित - ब्रह्मणे नमः
भाल, सावित्र्या सह विष्णवे नमः कपोले, वागीश्वरी सहित
महेश्वराय नमः दक्षिण नासायां, श्री सहित धनपतये नमः॥
वाम नाशायां॥ रति सहित काम देवाय नमः मुखे,, गणपतये नमः;
नासिका पुटे॥ सर्व करोपरि निधये नमः॥ पुनः इन्ही देवताओं
को भ्रन्डान्तराल में और मुख में मूल मन्त्र से,, फिर गणपति

अष्टादश पटल में चन्द्र ग्रहण कालीन पूजा बताई। एकोनविंश पटल में भूकम्प में किस प्रकार पूजा होगी॥ विंश पटल में संक्रान्ति में पूजा विधि बताई है। एकविंशत पटल में शक्ति पूजन है। द्वाविंशत पटल में शरद् कालीन में पूजा नवरात्री में किस प्रकार होती है। कुमारी पूजन विधि बताई है॥

औरानोधि इन दोनों से दोनों स्तन द्वन्द्व में वामांस में, हृत् कमल में सव्यांस में, दोनों पार्श्व में नाभि देश में, कपाल में, उदर में, हृदय में, ब्रह्माणी आदि देवियों के नामोच्चारण पूर्वक न्यास करे॥ फिर (ह्रीं) मूल मन्त्र से सारे शरीर में व्यापक न्यास करे फिर पीठन्यास करके अपने शरीर को देवी रूपसे भावना करे॥ ध्यान करे॥

हृदय कमल में मानसिक उपचारों से पूजन कर अन्तर्याग करके समानार्घ्य की स्थापना करे। घटस्थापन और पूजन करके यन्त्र पूजा शुरू करे। यन्त्र मन्त्र और पूजा यह अत्यन्त गुप्त है।

त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, वृत्त, फिर षोडशदल वृत्त चतुर्द्वार यही यन्त्र का उद्धार क्रम है। पहले ८ दल कमल के बाहर १६ दल कर्णिका के मध्य में षट्कोण अनन्तर नवशक्तियों का मन्त्र से पूजन करे ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः॥ ॐ अजितायै नमः॥ ॐ अपराजितायै नमः॥ ॐ नित्यायै नमः॥ ॐ विलासिन्यै नमः॥ ॐ दोगध्र्यै नमः॥ ॐ घोरायै नमः॥ ॐ मंगलायै नमः॥

(सब में शक्ति पद लगा कर अर्थात (ह्रीं) युक्त चतुर्थ्यन्त करना) यथा (ह्रीं कमलासनायै नमः। सर्वशक्ति उन देवियों के बीजों से आसन आवाहनादि से उस यन्त्र में मूर्ति की कल्पना करे। उसमें भगवती भुवनेश्वरी देवी का आवाहन करे। पुनः मध्यम से लेकर पूर्व दक्षिण- पश्चिम- उत्तर यथाक्रम पंचभूतों के समान कान्तिमती हल्लेखादियों का पूजन करना। वर पाश, अङ्कुश अभीति आयुधों को धारण की हुई शुभ्र भूषणों वाली आग्नेयादि चारों स्थानों में अङ्ग देवतों का पूजन करे। षट्कोण में इन तीन शक्तियों का पूजन करे। तथा शक्तियुगल का पूजन करे।

इन्द्र कोण में ब्रह्मा के साथ गायत्री का पूजन करे। नैऋत्य में
शंख चक्र गदा पद्म धारण किये हुये पीत वस्त्र वाले सावित्री
के सहित विष्णु का पूजन करे। वायव्य कोण में परसु अक्षमाला
अभय वर चारों आयुधों को धारण की हुई स्वच्छ सरस्वती के
साथ रुद्र का पूजन करे। आग्नेय कोण में रत्न के कुम्भ रत्न की
पेटिका दोनों हाथों में धारण की हुई धन के स्वामी कुबेर को
दाहिने हाथ से आलिङ्गित की हुई और बायें हाथ में जिनके कमल
विराजमान है। कुवेर की गोद में बैठी हुई महालक्ष्मी का पूजन
करे। पश्चिम दिशा में बाण, पाश, अंकुश, शर को धारण की
हुई हैं। लाल आभूषणों को धारण किये हैं। दाहिने हाथ से पति
को आलिङ्गित कर बायें हाथ में कमल को लिये मदन की गोद
में बैठी रति का पूजन करे। ईशान कोण में रिद्धि सिद्धि के
सहित गणपति का पूजन करे। बाण और पाश को धारण की
हुई तथा वर अंकुश माध्वी रस से पूर्ण नर कपाल धारी
दिगम्बर मूर्ति जिनके अनेक रंग चमक रहे हैं चमकीले
चम्पक पुष्प को लिये सिन्दूर के समान जिनकी रक्त आकृति
दूसरे हाथ में रक्त माल लिये ध्वज को स्पर्श करते हुये।
कान्ता को आलिङ्गित किये हुये ऐसे दिगम्बर को षट्कोण के

पार्श्वों में पूजन करना षट् कोण के दोनों पार्श्वों में निधि का पूजन करे। यह शक्तियां उनके पत्रों में पूजनीया हैं। पीछे इन्हीं का पूजन करे = ॐ अनंग कुसुमायै नमः॥ ॐ अनंग कुसुमातुरायै नमः॥ ॐ अनंग मदनायै नमः॥ ॐ अनंग मदनातुरायै नमः ॐ भुवन पालायै नमः॥ ॐ गगन वेलायै नमः॥ ॐ शशि शेखरायै नमः॥ ॐ गगन रेखायै नमः॥ अब पाश अंकुश वर अभय को धारण की हुई अरुण विग्रह देवियों का षोडश दल में पूजन करे।

ॐ ईशायै नमः॥ ॐ उमायै नमः। ॐ क[illegible] नमः॥ ॐ विकरात्यै नमः॥ ॐ सरस्वत्यै नमः॥ ॐ श्रियै नमः॥ ॐ दुर्गायै नमः॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रुत्यै नमः॥ ॐ स्मृत्यै नमः॥ ॐ धृत्यै नमः॥ ॐ श्रद्धायै नमः॥ ॐ मेधायै नमः॥ ॐ मत्यै नमः॥ ॐ कान्त्यै नमः॥ ॐ आर्यायै नमः॥ इस प्रकार १६ दल में १६ शक्तियों का पूजन करे। अब भगवती की परिचारिका शक्ति खड्ग और खेटक को धारण की हुई कुलाङ्गना षोडश माताओं का १६ दल पद्म के बाहर पूजन करे।

अनङ्ग रूपायै नमः।। अनंगमदनातुरायै नमः।। अनंङ्ग भुवन वेगायै नमः।। अनंगभुवनपालिकायै नमः।। अनंगमदनाङ्कुशायै नमः।। अनंग वेदनायै नमः।। अनंगमेखलायै नमः।।

तीन वृत्तियों के पास चषक ताम्बुल, छत्र चामर वस्त्र पुष्प, कमल हाथ में लिये सर्वाभरण से दीप्त गुरु पंक्तित्रय का पूजन करे। सम्पूर्ण आभूषणों से उज्वल लोकपालों का बाहर पूजन करे। उसके बाहर देवी प्रीत्यर्थ वज्रादि आयुधों का पूजन करे।। फिर विन्दु में आसनादि नानोपचार नाना प्रकार नैवेद्यों से महापूजा करे। फिर होमविधि समाप्त कर सुवासिनी बटुक कुमारी आदि का पूजन एवं वायन, दान करे। पुनः ऋष्यादि को पुनः कृत्वा ।। विनियोग करके यथा विधि जप करे।। फिर कवच सहस्त्र नाम स्तोत्र करे बाद में जो पात्र पूजन के लिये रखे है उन्हीं का विधिवत् उत्सादन कर गणेश ग्रह नक्षत्र इत्यादि गुरुस्तोत्र जप के पात्रवन्दना करे। पुनः बाहर जाके उच्छिष्ट भैरव का पूजन कर उन्हें तृप्त करके हाथ पैर धो कर पूजा घर में आकर शान्ति स्तोत्र और वीर बन्दना स्तोत्र पाठ करे।

गुरु का ध्यान अधोमुख सहस्त्र दल कमल की कर्णिका के बीच चन्द्र मंडल के ऊपर शुक्लवर्ण स्वच्छ अलंकारों से अलंकृत ज्ञानानन्द से प्रसन्न चित्त सच्चिदानन्द स्वरूप चतुर्भुज ज्ञान मुद्रा, पुस्तक वर अभय को धारण किये हुये हैं तीन नेत्र प्रसन्नमुख सम्पूर्ण देवों के देव बांये हाथ में कमल दाहिने हाथ में शक्ति रक्तवाली को आलिङ्गित किये हुये परम शिव स्वरूप गुरु का ध्यान करे। उनके चरणों से निकली अमृत धार से अपने को भिगा कर मानसोपचार से पूजन करे।

गुरु पादुका पूजन का मन्त्र = ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसौः हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें स्हौः सहक्षमलवरयीं हसौः स्हौः श्रीमच्छ्री सियारघुनाथ शरणानाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः (यदि स्त्री हो गुरु तो) अमुक देव्यां श्री पादुकां पूजियामि नमः।। इस प्रकार दस बार जप करके दण्डवत करे।

गुरु के मन्त्र = ऊँ नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिव रूपिणम्। शिरसा योग पीठस्थं मुक्ति कामार्थ सिद्धये ।।१।।

बीच में मूलमन्त्र से पूर्व से दक्षिण की तरफ हंसः इस मन्त्र से कुण्डलिनी का उत्थान करे। षट्दल को कुण्डलिनी को लाकर (वं नमः। भं नमः। मं नमः। यं नमः। रं नमः। लं नमः इस प्रकार कहकर षट्दल में पूजन करे। इसी प्रकार हर दल में निज २ बीजों के द्वारा पूजन करे। दूसरी, पाँचवीं डायरी में देख लो॥

प्राणायाम करे॥ १६ प्रणव जप करते हुऐ पूरक करे। ६४ वार जप करे कुम्भक में। ३२बार जप रेचक में करे॥

ऋष्यादि न्यास: का विनियोग॥

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी मन्त्रस्य श्री शक्ति। ऋषि: गायत्री छन्द: श्री भुवनेश्वरी देवता ह्रीं बीजं ईं शक्ति: रकार कीलकं श्री चतुर्विध पुरुषार्थ साधने विनियोग: ऋष्यादि न्यास =(श्री शक्ति ऋषये नम: शिरसि)(गायत्री छन्दसे नम: मुखे)(श्री भुवनेश्वरी देवतायै नम: हृदि) (ह्रीं बीजाय नम: गुह्ये)(ईं शक्तिये नम: पादयो)(रकार कीलकाय नम: नाभौ)(श्री पुरुषार्थ साधने विनियोग: इति सर्वांगे॥ करन्यास।(ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम:)(ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:)(ह्रूं मध्यमाभ्यां वौषट्)(ह्रैं अनामिका भ्यां हुं) ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्)(ह्र: करतल कर प्रष्ठाभ्यां फट्)(षडङ्ग न्यास॥(ह्रां हृदयाय नम:)(ह्रीं शिरसे स्वाहा)(ह्रूं शिखायै वषट्)(ह्रैं कवचाय हुं)(ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्)(ह्र: अस्त्राय फट्॥

ध्यान करे फिर गुह्यातिगुह्य गोप्तीत्वं गृहाण।

संकल्प - जल हाथ में लेकर करे ॥ ॐ अद्य पूर्वेद्
युरहोरात्रा चरित मुच्छ्र् वास निच्छ्र्वासात्मक
षट्शताधिक मेकविंशति सहस्त्र संख्यकमजपा
जपं मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरक अनाहत् विशुद्धा
ज्ञा ब्रह्मरन्ध्रेषु चतुर्दल, षट्दल, दशदल द्वादश
दल षोडशदल द्विदल सहस्त्रदल स्वर्ण विद्रुम
नील पिंगल धूम्र विद्युत कर्बुर वर्णेषु स्थिताभ्यो
गणपति ब्रह्म विष्णु रुद्र जीवात्म परमात्म
गुरुपादुकाभ्यो तथा आगसः समर्पयामि नमः॥
फिर संकल्प करे = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलाधार चक्रस्थाय
गणपतये अजपाजपं षट्शतं समर्पयामि नमः॥
फिर संकल्प = ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाधिष्ठान चक्रस्थाय
ब्रह्मणे अजपाजपानि षट्सहस्त्राणि समर्पयामि
नमः॥ ॐ अहनत् चक्रस्थाय रुद्राय अजपाजपा
नां - षट्सहस्त्राणि समर्पयामि नमः॥
विशुद्ध चक्रस्थाय जीवात्मने अजपाजपानामेक
सहस्त्रं समर्पयामि नमः॥ ॐ आज्ञा चक्रस्थाय
परमात्मने अ[illegible] मेकं सहस्त्रं समर्पयामि नमः

सहस्त्रदलकमल कर्णिकामध्यस्थायै श्री गुरु पादुकायै
अजपाजपानामेक सहस्त्रं समर्पयामि नमः॥
श्री अजपा गायत्री मन्त्रस्य हंस ऋषिः अव्यक्त गायत्री
छन्दः परमहंसो देवता हं बीजं सः शक्तिः सोऽहं कीलकं
ॐकारस्तत्वं उदात्तः स्वरः हेमो वर्णः मम मो क्षार्थे
अजपाजपे विनियोगः॥ ऋषियादि न्यास॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
हंसात्मने ऋषये नमः शिरसि। अव्यक्त गायत्री छन्दसे नमः
मुखे। परमहंस देवतायै नमः हृदये। हं बीजाय नमः मूला
धारे। सः शक्तये नमः पादयोः। सोऽहं कीलकाय
नमः नाभौ। ॐकार तत्वाय नमः हृदये, उदात्त स्वराय
नमः कण्ठे। हेम वर्णाय नमः सर्वाङ्गे॥ करन्यास
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सूर्यात्मने स्वाहा। अंगुष्ठाभ्यां नमः
हं सौं सोमात्मने स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। हंसं
निरंजनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्॥ हं सौं
निराभासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं। हसौं
अनन्ततनुः सूक्ष्मा देवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठिका
भ्यां वौषट्॥ हसः अव्यक्त बोधात्मने करतल कर
पृष्ठाभ्यां । षडङ्गन्यास -

(ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्) यह महाविद्या का मन्त्रराज है मुक्ति दायक है।
(ह्रीं स्त्रीं हूं) नीलाख्यमंन्त्र जप से इच्छानुसार रूप धरने की शक्ति प्राप्त होती है
यह नील सरस्वती का प्रधान मन्त्र है। इसके उपासक विद्वान
और कुबेर के धन के समान धनी होवे। तीन लाख जप करे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सूर्यात्मने स्वाहा हृदयाय नमः
हसौं सोमात्मने स्वाहा शिरसे स्वाहा ॥ हंसः
निरञ्जनात्मने स्वाहा शिखायै वषट् ॥ हसौं
निराभासात्मने स्वाहा कवचाय हुं। हसौं अनन्त
तनु सूक्ष्मा देवी प्रचोदयात् स्वाहा नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ हंसः बोधात्मने स्वाहा अस्त्राय फट् ॥
विराट रूप का ध्यान करे ॥ वसुन्धरे को स्पर्श
कर के यह बोले = समुद्र मेखले देवि पर्वतस्तन
मंडले। विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शम् क्षमस्व मे ॥

(बीजों का विवरण)

फिर जो स्वर चलता हो उसके अनुकूल पैर रक्खे
माया बीज (ह्रीं) (काम बीज (क्लीं) वाग बीज (ऐं) शक्ति षोडशी
बीज (सौं) कामराज बीज (क्लीं) कूर्च बीज (हूं) वधू बीज
(स्त्रीं) लक्ष्मी बीज (श्रीं) कालिका बीज (क्रीं) विश्व बीज
(क्लीं) प्रणव (ॐ) कला (ह्रीं) आकाश बीज (ह्सौः) शक्ति (सौः)
क्रोध बीज (हूं) द्रोमं (द्रोमयं) मोहं (मोहय) त्रिधा ठिठं
माने तीन बार ठं ठं ठं है। रक्षा बीज (फट्) पाश बीज (आं)
अस्त्र बीज (फट्) द्विधा माने दो बार। सकृद माने एक बार। लज्जा बीज
(स्त्रीं), और ह्रीं भी है

माँ मेरी तरफ एक बार तो निहार लीजिये, ये आँखें आप ही की सूरत देखने को व्याकुल हैं। माँ जी क्या मेरा प्यार दिखावा झूठा जो आप को आकर्षित नहीं कर पा रहा। माँ मेरे सब अपराधों को भुला कर आप थोड़ी ही देर के लिए ही सही, पर मेरी माँग भरने जरूर आयेंगी, आपको क्या हमारी याद बिल्कुल नहीं आती, माँ मैं मिलने से मजबूर हूँ, पर हूँ तो आप ही की आप ही ने ये बन्धन बाँधा है इसे आप ही इस से छुटकारा दिलायेंगी माँ आप तो भव से तारने वाली कहलाती हैं, मेरी तरफ भी निगाह कर लीजिए। मेरे हाथ अपवित्र हैं उन्हें अपने श्री चरण कमलों का

धर्म
रमुख
पूर्ण है
तों
नेश्वर्यै नमः
रके
सिद्धि
सिरो
र्य॥
जपे
जपे
सिरो
॥
सोऽ
परम
जपे
... क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः क्लीं
भुवनेश्वर्यै नमः॥

(ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्) यह महाविद्या का मन्त्रराज है मुक्ति दायक है।
(ह्रीं स्त्रीं हं) [illegible] जप से इच्छानुसार रूप धरने की शक्ति [illegible] है

मेरे आराध्य के श्री चरण कमलों में मुझ
अभागी दासी का प्यार भरा स्पर्श
स्वीकार हो।
माँ जी आप यहाँ पर क्यों नहीं आ रही
हैं माँ जी मुझे तो इस दुनिया ने
मजबूर कर रखा है, लेकिन आप तो
मेरा दुख समझती हैं, क्या मेरी
किस्मत इतनी खराब है कि मेरे जाने
के बाद आप इस घर में प्रविष्ट
होगी, माँ मैंने अनेकों अपराध किये
हैं, लेकिन आप तो दयामयी माँ हैं,
दासी पर कृपा कर दीजियेगा केवल
रात को ही फेरों के समय आ
जाइयेगा, माँ आपने ही लिखा था
कि तेरी मेरी मांग प्रसादी से भरी
जायेगी, पर जब आप आयेगी नहीं
तो अब ये बात कैसे पूरी होगी।

पाखा तिथि युक्त

रविवार के दिन, पूर्वाभिमुख होकर एकाक्षरी मन्त्र जपे। अर्थ धर्म काम मोक्ष को देनेवाला है॥

साधक भद्रा तिथि युक्त सोमवार के दिन आग्नेय दिशा की ओर मुख करके द्वयक्षरा विद्या (श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः॥ सब कामना पूर्ण हो

मंगल के दिन दक्षिणा मुख होकर त्रियक्षरी विद्या (ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः॥ कामनाओं को प्राप्त करेगा। ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः

चतुर्थी तिथि युक्त बुधवार के दिन नैऋत्य की ओर मुख करके चतुराक्षरी विद्या जपे (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः॥ सर्वसिद्धि

पंचमी तिथि को गुरुवार के दिन पश्चिमाभिमुख होकर पंचाक्षरी विद्या जपे (ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः॥ अभिलष फलार्थ॥

छठ तिथि को शुक्रवार के दिन वायव्य... में षडाक्षरी विद्या जपे

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः॥

सप्तमी के दिन शनिवार को उत्तराभिमुख होके सप्ताक्षरी विद्या जपे (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः॥

रविवार को अष्टमी के दिन ईशान की ओर मुख करके अष्टाक्षरी विद्या जपे (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः॥

सोमवार को नवमी के दिन पूर्वाभिमुख होकर नवाक्षरी जपे परम सिद्धि को॥ (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौं ऐं सौं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः॥

दशमी को दिन मंगल को आग्नेय कोण में मुख करके जपे
दशाक्षरी विद्या =(ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्रों हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
भुवनेश्वर्यै नमः ।।
एकादशी को दिन बुधवार को दक्षिणाभिमुख होकर जपे
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः ।।
गुरुवार को द्वादशी के दिन में नैऋत्याभिमुख होके जपे द्वादशाक्षरी
ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ।।
शुक्रवार को त्रयोदशी के दिन पश्चिमाभिमुख होकर जपे
ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सौं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः
शनिवार को चौदश के दिन उत्तराभिमुख होकर जपे (ॐ ॐ क्लीं
क्लीं सौः सौः श्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः सौः ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ।।
अमावस और पूर्णिमा को रविवार के दिन ईशान कोण में पंचदशी
जपे (ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्लीं सौः
क्रों क्रों ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ।।
षोडशाक्षरी =(ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ह्यौं ॐ ह्यौं सौः ऐं क्लीं
श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ।
भुवनेश्वर्यै गायत्री = ॐ भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै
धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

तत्वविद्या = ॐ ऐं सौः ह्रीं तत्व रूपिणी ह्रीं भुवनेश्वरी ह्रीं ।।
इसका १५ लाख १५ हज़ार जप करने से १ पुरश्चरण होता है।
इस विनियोग = ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी तत्वविद्या मन्त्रस्य भैरव ऋषि: अनुष्टुप छन्द: श्री तत्व रूपिणी भुवनेश्वरी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्ति: कीलकम् वीर साधने विनियोग: ।। करन्यासं ।।
ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: । ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: । ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: । ह्र: करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: । (ह्यौं सौं ह्रीं भुवनेश्वरी ह्रीं तत्व रूपिणी ह्रीं) ध्यान करे
पूजा प्रकार: लिख चुके पीछे ।।

॥ तर्पण क्रम ॥

आचमन - प्राणायाम - ऋष्यादिन्यास - करन्यास - षडङ्ग न्यास - मूल मंत्र (ह्रीं) से जल को सात बार अमृती करण करके जल में श्री यन्त्र का ध्यान करके देवी हृदय से परिवार समेत लाकर षडङ्ग योग एकाकार कर कुण्डलिनी के प्रयोग रूपी अमृत से अभिषिक्त कर विधिवत पूजन करके बाद में ईशान में (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्द नाथ भैरवस्तृप्यताम् । बीह्रै में परम गुरुस्तृप्यताम् । नैऋत्य में परमेष्ठी गुरुस्तृप्यताम् । वायव्य में परमाचार्य गुरुस्तृप्यतां - एक २ बार तर्पण करके । विन्दु मूल ३ बार (श्री भुवनेश्वरी भगवती सेश्वरा सवाहना सपरिवारास्तृप्यताम् ॥ (परिवार देवता का तर्पण ॥ ह्रां हृदयं स्तृप्यताम् ॥ ह्रीं शिरस्तृप्यताम् ॥ ह्रूं शिखा स्तृप्यताम् । ह्रैं कवचायस्तृप्यताम् ॥ ह्रौं नेत्रत्रयं तृप्यताम् ॥ ह्रः अस्त्रं तृप्यताम् । ह्रीं हल्लेखा तृप्यताम् ॥ ऐं गगना तृप्यताम् ॥ ऊं रक्ता तृप्यताम् ॥ ईं करालिका तृ० ॥ फ्रौं महोच्छुष्मा तृ० ॥ गं गंगा तृ० यं यमुना तृ० सं सरस्वती तृ० गायत्री सहित ब्रह्मा तृ० ॥ सावित्री सहित विष्णु तृ० ॥ सरस्वती सहित रुद्र तृ० ॥ लक्ष्मी सहित कुबेर तृ० ॥ रति सहित मदन तृ० ॥ पुष्टि सहित विघ्नराज तृ० ॥ शंख निधि तृ० ॥ पद्म निधि तृ० ॥ अनंग कुसमा तृ० ॥ अनंग मदना तृ० ॥ अनंग कुसमातुरा तृ० ॥

अनंग मदनातुरा तृ०॥ अनंग मेखला तृ०॥ भुवनपाला तृ०
गगन वेगा तृ०॥ शशि शेखरा तृ०॥ कराली तृ०॥ विकराली तृ०
उमा तृ०॥ सरस्वती तृ०॥ श्रीस्तृप्यताम् ०॥ दुर्गा तृ०॥ ऊषा तृ०
लक्ष्मी तृ०॥ सत्या तृ०॥ श्रुति तृ०॥ स्मृति तृ०॥ धृति तृ०॥
श्रद्धा तृ०॥ मेधा तृ०॥ मति तृ०॥ कीर्ति तृ०॥ आर्या तृ०॥
अनंग रूपा तृ०॥ अनंग मदना तृ०॥ अनंग मदनातुरा तृ०॥ भुवन
वेगा तृ०॥ भुवन पालिका तृ०॥ सर्व शिशिरा तृ०॥ अनंग
वेदना तृ०॥ अनंग मेखला तृ०॥ इन्द्र तृ०॥ अग्नि तृ० यम तृ०
निऋति तृ०॥ वरुण तृ०॥ वायु तृ०॥ कुवेर तृ०॥ ईशान तृ०
ब्रह्मा तृ०॥ अनन्तवज्र तृ०॥ शक्ति तृ०॥ दण्ड तृ०॥ खड्ग
तृ०॥ पाश तृ०॥ ध्वज तृ०॥ गदा तृ०॥ त्रिशूल तृ०॥ ब्राह्मी तृ०
माहेश्वरी तृ०॥ बाराही तृ०॥ ऐन्द्री तृ०॥ चामुंडा तृ०॥ महा
लक्ष्मी तृ०॥ पद्मा तृ०॥ चक्र तृ०॥ इस प्रकार परिवार
देवता का तर्पण कर पुनः प्राणायाम करके देवी को अपने हृदय
मे विसर्जित करे॥ तीर्थों को अपने २ स्थान मे बिसर्जित करे
इसके बाद बज्रोदक हुं फट स्वाहा इस मंत्र से जल पूर्ण घट
लेके मूल मंत्र को स्मरण करता हुआ यज्ञ मंडप में जाकर
ॐ ह्रीं विशुद्ध सर्वपापानिशमया शेषं विकल्पम पनय हुं इस मंत्र
से हाथ पैर धोले।

फिर आचमन करके द्वार के अग्रभाग में स्थित होकर अपने दाहिने और बतलाये हुये क्रम से समानार्घ निर्माण करे। उस जल से द्वार देवता का पूजन करे॥ द्वारोर्ध्वे गं गणपतये नमः॥ दक्षे वं बटुकाय नमः॥ वामे क्षां क्षेत्रपालाय नमः। अधः यां योगिनिभ्यो नमः। दक्षे गं गंगायै नमः। वामे यं यमुनायै नमः॥ पुनः दक्षे श्रीं श्रियै नमः॥ वामे सरस्वत्यै नमः। इस प्रकार पूजन कर वामांग को सिकोड़ता हुआ मण्डप में जाके पुनः पूजन करे। नैऋत्ये ब्रह्मणे नमः॥ वास्तु पुरुषाय नमः॥ कुशाशन देके अंजलिवद्ध होकर हाथमें जल लेके विनियोग करे = ॐ अस्य श्री आसन मन्त्रस्य मेरु प्रष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः॥ न्यास = मेरु पृष्ठ ऋषये नमः शिरसि॥ सुतलं छन्दसे नमः मुखे। कूर्मो देवतायै नमः हृदि। आसनोपवेसने विनियोगः॥ इसी से सम्पूर्ण अंगों का न्यास करे॥ जैसे मेरुपृष्ठ ऋषये नमः शिरसि से पैर तक न्यास कर जाय।

प्रथ्वी पूजन प्रार्थना = मत्सुकाय नमः। कालाग्नि रुद्राय नमः आधार शक्त्यै नमः॥ मूल प्रकृत्यै नमः। कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः॥ पृथिव्यै नमः। सुधा समुद्राय नमः॥ मणि द्वीपाय नमः।

चिन्तामणि गृहाय नमः॥ पारिजाताय नमः॥ रत्नवेदिकायै नमः। इन मन्त्रों को बोल कर आसन पूजन पंचोपचार से करे फिर वीरासन पर बैठे॥ प्रथ्वी की प्रार्थना॥

प्रथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारयते माम देवि पवित्रम् कुरु चासनम्॥

ॐ नमस्यामि नमस्यामि योग मार्ग प्रबोधिनी त्रैलोक्य विजये मातः समाधि फलदा भव॥ क्लीं शूद्रायै नमः॥ अमृती करण विद्या = अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतमाकर्षय २ सिद्धिं देहि २ श्री भुवनेश्वरी पदं मे वशमानय स्वाहा॥ तीन बार गुरु पादुका मन्त्र करे॥ ऐं वद वद वाग्वादिनी मम जिह्वाग्रे स्थिरा भव सर्व सत्व वशं करी स्वाहा॥

(ये पूजन का गुरु पादुका मन्त्र)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसौं हसक्षमलवरयुं हसखफ्रें हसौं सहौं सक्षमलवरयीं हसौः स्हौः श्री मच्छ्री श्री सिया रघुनाथ शरणानाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः॥ (गुरु पादुका मंत्र (ऐं ह्रीं श्रीं) है। कुल्लुक जप में १० बार ह्रीं मन्त्र सिर पर जप ले। सेतु जप में ७ बार ह्रीं मंत्र हृदय पर जप ले

मुख शोधन में १० बार प्रणव हृदय पर हाथ रख के जपे

गुरु पादुका

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सखफ्रें ~~ह्सक्ष~~ ह्सक्षमलवरयूं सह्खफ्रें सहक्षमल-
वरयीं श्री गुरु भवानन्द नाथ श्री पादुकाँ पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।
ऐं । क्रों । ॐ । स्त्रीं । ॐ अं---सें क्षं = मूलं ऐं अं..से..क्षं तक।
ईं मूलं ईं ७ बार । ॐ मूलं ॐ ७ बार । मुख शोधन । मूलं माने पूरामंत्र अपना बीच में कहो

१० - १० - १२ - १२ - ७ - ६ - ६

गुरु पादुका मन्त्र दस बार
सेतु मन्त्र १० बार (ऐं)
महासेतु मन्त्र १२ बार (क्रों)
मुख शोधन १२ बार (ॐ)

ऐं, अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।
नमोस्तु गुरवे तस्मै इष्टदेव स्वरूपिणे।
यस्य वाग्मृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम्

कुल्लुका ७ बार (ईं ह्रीं ईं) भुवनेश्वरी को है यह / हर मंत्र की पादुका, सेतु। महासेतु। मुख शोधन। कुल्लुका। अलग २ होती है।
मुखशोधन ७ बार (ॐ ह्रीं ॐ)

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे
विद्यावतार संसिद्धये स्वीकृतानेक विग्रह
नारायण स्वरूपाय परमार्थैक रूपिणे। सर्व ज्ञान तमो भेद भानवे चिद्घनाये
।स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय शिवात्मने ।। परतन्त्राय भक्तानां भव्या
नां भव्यरूपिणे ।। बिवेकिनाम बिवेकाय बिमर्शाय बिमर्शिनाम् ।।
प्रकाशीनां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञान रूपिणे। पुरस्तात्पार्शवयोः पृष्ठे
नमस्कुर्या मुपर्यधः

सदा मच्चित्त रूपेण विधेहि भव दासनम्॥ त्वत्प्रसादादहं देव! कृत कृत्योऽस्मि सर्वतः॥ माया मृत्यु महा पशाद्विमुक्तोऽस्मि शिवोऽस्मि च॥ दिन में तीनों बेला में यह स्तुति करे।

अष्ट सिद्धियों का विवरण ॥

(१) अणिमा, इसके प्रभाव से विशाल काय ह्रस्व में परिणित हो जाता है,

(२) महिमा, जिसके प्रभाव से क्षुद्र शरीर विशालकाय हो जाता है।

(३) लघिमा = जिसके प्रभाव से हल्का भारी हो जाता है।

(४) ~~सिद्ध गरि~~ गरिमा के प्रभाव से हलका भारी हो जाता है।

(५) प्राप्ती = के प्रभाव से दूर के पदार्थ अपने अंग की वृद्धि के द्वारा किया जाता है

(६) प्रकाम्य = के प्रभाव से प्रकृति पर प्रभुत्व की प्राप्ती होती है।

(७) ईशत्व = के प्रभाव से ६ सिद्धियां दूसरे पुरुष में भी परिणित की जाती हैं।

(८) वशित्व = के प्रभाव से सिद्धि वाले को भी वश में किया जाता है।

त्र्यम्बकम की विवेचना शिव पुराण में की गई है कि ज्ञान क्रिया इच्छा तीनों शिव के नेत्र हैं। इसलिये यह त्रिलोचन त्र्यम्बकम कहाते हैं भगवती श्री कालिका के तीन नेत्र हैं (सूर्य - चन्द्र - अग्नि) महानिर्वाण में लिखा है। स्कन्ध पुराण में लिखा है शंकर त्रिवेद हैं ब्रह्मा विष्णु रुद्र के जनक हैं इसलिये त्रियम्बक कहाते हैं।

क्रीं काली जी के मन्त्राक्षर से स्वरूपज्ञान
द्वाविंशत्यक्षरी विद्या

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

द्वाविंशत (बाइस) अक्षर वाली विद्याराज्ञी भगवती के अलग २ अक्षरों से उनके स्वरूप का बोध इस प्रकार करो। (क्रीं से मस्तक क्रीं से ललाट क्रीं से तीन नेत्र हूं से नासिका हूं से दोनों नेत्र ह्रीं से दोनों कान ह्रीं से ग्रीवा द से ठोढी क्षि से दन्तावली णे से दोनों ओष्ठ का से दोनों स्तन लि से पीठ के से बाहु क्रीं से उदर क्रीं से नाभी क्रीं से नितम्ब हूं से योनि हूं से दोनों जंघा ह्रीं से पींडली ह्रीं से गुल्फ स्वा दोनों पांव हा से नख। १ विंशात वर्णात्मक यानी २० अक्षर वाली विद्या ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं।

इस मंत्र में शुरु में ॐ अन्त में स्वाहा जोड़ दिया जाय तो २२ अक्षर वाली होवे जिन मन्त्रों के अन्त में हूं फट् हो वह मन्त्र पुरुष रूप होता है जिनके अंत में स्वाहा हो वह शक्ति रूप हो जाता है। जिनके अन्त में नमः हो वह नपुंसक रूप है

कालीजी के मंत्र का विनियोग = ~~अस्य श्री कालिका~~

अस्य श्री विद्याराज्ञी मन्त्रस्य महाकाल ऋषिः उष्णिक छन्दः दक्षिणा कालिका देवता ह्रीं बीजम् हूं शक्तिः क्रीं कीलकम् पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे तत्कामना सिद्धये वा भगवती श्री दक्षिण कालिका प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ कृताञ्जलिः पठेत्॥ ततः अंगुष्ठेन शिरसि ॐ महाकालाय नमः। मध्यमानामिकाभ्यां मुखे - ॐ उष्णिक् छन्दसे नमः। अंगुष्ठ रहिताङ्गुलीभि हृदये - श्रीमद् दक्षिणा कालिकायै देवतायै नमः। संलग्नाङ्गुष्ठानामिका रूप तत्व मुद्रया गुह्ये - ॐ ह्रीं बीजाय नमः। मध्यमाङ्गुल्या पदद्वये - ॐ हूं शक्तये नमः हस्तद्वयतलयोः सर्वाङ्गे - ॐ क्रीं कीलकाय नमः।

करन्यास - ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ॐ क्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।
अङ्गन्यास - ॐ क्रां हृदयाय नमः इति। तर्जनीमध्यमाऽनामिकाभिः हृदये न्यसेत्। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा इति तर्जनीमध्यमाभ्यां शिरसि न्यसेत। ॐ क्रूं शिखायै वषट् इति मुष्टिबद्ध हस्ताङ्गुष्ठेन शिखायां न्यसेत्। ॐ क्रैं कवचाय हुं इति हस्तद्वय सर्वाङ्गुलीभिः सर्वाङ्गे न्यसेत्। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् इति तर्जनी मध्यमानामिकाभिः नेत्रत्रये न्यसे। ॐ क्रः अस्त्राय फट् इति दक्षहस्त तर्जनी मध्यमाभ्यां वाम हस्त तले तालत्रयं दद्यात्॥ वर्णन्यास - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ नमः हृदये। ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ नमः दक्षभुजे। ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ नमः वामभुजे। णत थ द ध न प फ ब भ नमः दक्षिण जंघायाम्। म य र ल व श ष स ह क्ष नमः वाम जंघायाम्
ध्यान - सद्यश्छिन्न गलद्रक्त नृमुण्डै रक्त भूषितैः।
अन्योन्य केश ग्रथितैः पादपद्म प्रलम्बितैः।
पञ्चाशद्भिर्महामाला शोभितां परमेश्वरीम्) (यह विस्वाक्षध्यान है
पंचाक्ष पञ्चाशन्मुण्डघटितमाला शोणित लोलिताम्।

इसका मतलब ५० नर मुण्डों की माला भगवती कालीजी के गले में पड़ी है वह मुण्ड ५० अक्षरों के प्रतीक हैं। महाप्रलय में बीज रूप से भगवती के कण्ठ में रहते हैं। ये शब्द ब्रह्मविभूषित सर्व मन्त्रात्मक परमानन्द ब्रह्म का ज्ञान करते हैं। ये अकार से क्षकार तक ५० अक्षर मातृका अवयव हैं। यह अपरिवर्तनशील अक्षर हैं। इन अक्षरों के रंग श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण हैं। तन्त्र शास्त्र में ५० अक्षर १६ स्वर २५ स्पर्श ४ अन्तस्थ ४ ऊष्म और १ क्ष।

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणा कालिके स्वाहा॥ जप से संसारिक सुख उपलब्धि होते हैं।

क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
हूं दक्षिणे कालिके स्वाहा
ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
क्रीं हूं दक्षिणे कालिके स्वाहा
क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
हूं क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
ॐ ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
ह्रीं हूं दक्षिणे कालिके स्वाहा
क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा
क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा

नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा।

ॐ प्रणव बीज है
ह्रीं हल्लेखा बीज भी कहलाता है लज्जा बीज भी कहते हैं।
क्रीं रति बीज भी कहलाता है।
आं अंकुशः बीज कहते हैं।
स्वाहा को वही सुन्दरी बीज कहते हैं

परा ध्यान =

महापद्म वनान्तःस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्वहितरते मातः एह्येहि परमेश्वरि।
एह्येहि देव देवेशि कालिके देवपूजिते। परामृत प्रिये शीघ्रं सन्निध्यं कुरु सिद्धिदे
देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते। यावत्वां पूजयिष्यामि तावत्वं सुस्थिरा भव।
कनकमय वितर्दि शोभमानं दिशि दिशि पूर्ण सुवर्ण कुम्भ युक्तम्।
मणिमय मंडप मध्यमेहि मातर्मम कृपया हि समर्चनं ग्रहीतुम्।
कालीतन्त्र का ध्यान = करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम्॥ सद्यश्छिन्न शिरः
खड्ग वामाधोर्ध्व कराम्बुजाम्। अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाध पाणिकाम्।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम्। कण्ठावसक्त मुण्डाली
गलद्रुधिर चर्चिताम्॥ कर्णावतंसतानीत शव युग्म भयानकाम्।
घोर दंष्ट्रा ललज्जिह्वां पीनोन्नत पयोधराम्॥ शवानां कर संघातैः
कृत कांच्ची हसन्मुखीम्। सृक्कद्वय गलद्रक्त धारा विस्फुरिताननाम्॥
घोर रावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम्। बालार्क मण्डलाकार
लोचनत्रितयान्विताम्॥ दन्तुरां दक्षिणाव्यापि मुक्तालम्बिक
चोच्चयाम्। शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम्॥ महाकालेन
च समं विपरीतरतातुराम्। शिवाभिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु
समन्विताम्॥ सुख प्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम्। योगिनी चक्र
सहितां कालिकां भावयेत् सदा। एवं संचिन्तयेत् कालीं सर्वकामार्थ
सिद्धये॥

भगवती काली का तल्प (विग्रह) पंच महाप्रेतों से हुआ जिनके नाम
ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-ईश्वर-सदाशिव- शव का निर्देश निर्गुण
ब्रह्म से है। उस शव पर भगवती का पदन्यास एक विशिष्ट भाव की
अभिव्यंजना करता है। क्यों कि निर्गुण ब्रह्म ही देवी के पद का आधार हो सकता है
क्यों कि निर्गुण सदाशिव में भगवती की स्थिति सूक्ष्म रूप से है।
भगवती शक्ति महाकाल के साथ अभिन्न हो कर अखंड आनन्द का अनुभव
कर रही है। रतावस्था की संभावना नहीं। परन्तु दिगम्बर महाकाल के ऊपर
दिगम्बरी भगवती की आरूढता के कारण विपरीत रतावस्था की कल्पना की
गई है। भगवती कालिका नव यौवन शालिनी पुर हर सुन्दरी दहकती
हुई चिता में प्रवेश कर रही हैं। श्मशान वह्नि के मध्य में विराज रही हैं।
महाकाल के साथ विहित विपरीत रीति से अतियन्त सन्तुष्ट हो रही हैं।
जो इस रूप का ध्यान करते हैं जगत्पूज्य हो जाते है।
साधन करने के लिये श्मशान के दो रूप महानिर्वाण तन्त्र कार मानते
है (चिता और ब्रह्मयोनि) यह आदि अन्त का प्रतीक हैं।

काली के नव भेद हैं।

काली नव विद्या प्रोक्ता सर्वतन्त्रेषु गोपिता।
आद्या दक्षिणा काली च भद्रकाली तथा परा।। अन्या श्मशान काली
च काल काली चतुर्थिका। पञ्चमी गुह्य काली च पूर्वं या कथिता
मया।। षष्ठी काम काली, सप्तमी धन कालिका। अष्टमी सिद्ध
काली, च नैमी चण्ड कालिका।।
।। गुप्त साधन तन्त्र ।।
कथं सा दक्षिणा काली श्मशानालय वासिनी।
वासिनी
वाह्निरूपा महामाया सत्यं सत्यं न संशयः। अतएव महाकाली श्मशानालय
इन = तोडल तन्त्र का = या चाद्या परमा विद्या द्वितीया भैरवी परा।
त्रैलोक्य जननी नित्या सा कथं शव वाहना।
तत्र या चाद्या परमेशानि स्वयं काल स्वरूपिणी। श्री शिवस्य हृदम्भोजे
स्थिता संहार रूपिणी। अतएव महाकाली ~~अत्र~~ जगत्संहार कारकः। संहार
रूपिणी काली यदा व्यक्त स्वरूपिणी। तदैव सहसा देवी शव रूपः सदाशिवः।
तत् ~~क्षणात्~~ दर्शाच् चंचलापांङ्गि सा देवी शव वाहना।।
शव इत्यपरे ब्रह्म वाचकः प्रेतनिर्णयः। गायत्री तन्त्र में लिखा है।
या शय्या परमेशानि स एव श्री सदाशिवः। तस्योपरि महेशानि सूक्ष्मा
त्रिपुर सुन्दरी।। गन्धर्व तन्त्र में लिखा है।

अष्टपाश की व्याख्या
रुद्रयामल तन्त्र में में है।

घृणा शंका भयं लज्जा जुगुप्सा चेति पञ्चमी, कुलं शीलं तथा जातिर
अष्टौ पाशा इमे स्मृता: । जीव: शिव: शिवो जीव: स जीव: केवल: शिव: ।
पाशबद्ध: सदा जीव: पाशमुक्त: सदा शिव: ॥

घृणा = संसार में केवल दो भाव प्रिय, अप्रिय होते हैं तो प्रिय से राग
अप्रिय से घृणा होती है।

शंका = अन्य के प्रति सन्देह की भावना। भौतिक वाद में निमग्न रह कर
जिस प्रकार स्वयं छल प्रपंच मिथ्या भाषण कपट व्यौहार में
रहता है उसी प्रकार दुसरे को भी समझता है। यही शंका का मुल है।

भय = पार्थिव पदार्थो की नशवरता का पर्यवेक्षण (डर) एवं स्वकिय
नशवर पदार्थो से प्रेम भय का कारण है।

लज्जा = अपने मन के भाव को दबाना लज्जा है मान अपमान की
भावना लज्जा कहलाती है।

जुगुप्सा = पराये दोष के दर्शन को अथवा निन्दा को जुगुप्सा कहते हैं।

कुल = मान्यता प्राप्त पुरुष को अपना पुर्वज बता कर स्वकिय
उच्चता जाहिर करना कुलाभिमान करना।

शील = अपनी स्वतन्त्रता का नाश कर के शिष्टाचार प्रदर्शित करना

जाती = जाति अभिमान

तिरोधान माने खतम करते हैं,

शिव रूप होने पर भी जिस बन्धन के द्वारा जीव को पशुत्व की प्राप्ती होती है उसे पाश कहते है। पाश के चार भेद हैं।

मल - कर्म - माया - रोध शक्ति।

(१) जो जीव की स्वाभाविक ज्ञान क्रिया शक्ति को तिरोहित (ढांकता) करता है उसे मल कहते हैं।

(२) फलार्थी जीवों के द्वारा क्रिय माण बीजांकुर न्याय से, यज्ञादि कार्य कलाप का नाम कर्म है।

(३) प्रलय काल में जीवों को लय करने वाली तथा सृष्टि काल में उन्हें उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम माया है।

(४) जिसके द्वारा शिव जीवों के स्वरूप का तिरोधान करते हैं उसे रोध शक्ति कहते हैं

तीन प्रकार के आचार हैं। जिन के द्वारा शक्ति साधना की जाती है।

दक्षिणाचार - वामाचार - कुलाचार। पुरश्चर्यार्णव का मत है।

मांसं भुक्त्वाऽऽसवं पीत्वा स्त्रियं गत्वा चरे जपं। यह श्लोक है।

कुलार्णव तन्त्र में है (मद्यं मांसं च मत्स्यं च मुद्रा मैथुनमेव च। मकार पंचकं देवि देवता प्रीति कारकम्। मादि पंचकमीशानि देवता प्रीतये सुधीः। यथा विधि निषेवेत तृष्णाया चेत् स पातकी)

तारा खण्ड में लिखा है = (सदा पंचमकारैश्च पूजयेत् कालिकाम्बिकाम्।
(शक्ति बिना नहिं जपेन्न शक्तिः कारणं बिना।।

यानी कारण बिना शक्ति का संग न करे।
शक्ति के बिना जप न करे।

मनुस्मृति में लिखा है।

न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने। प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला।

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षः। यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।।

श्री सुन्दरी पूजन तत्पराणाम् भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।। यह सिद्धान्त है

(मद्य मैथुन ... है)

ज्ञानस्य कारणं मद्यं। मद्यं ज्ञानस्य नाशकम्।
वायुना ज्वलितोऽग्निश्च। वायुना लयवान यथा॥

ज्ञानार्णव तन्त्र में लिखा है। मद्य ज्ञान का जनक है। मद्य ही ज्ञान का नाशक है। जैसे वायु ही अग्नि को जलाता है वायु ही बुझाता है। तान्त्रिक वामाचारियों का यह स्पष्ट मत है।

(तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चञ्चलां कामलोलुपाम्।
गुरुभक्तां मन्त्रयुक्तां सर्वलक्षण संयुताम्॥
कालीभक्तां जपासक्तां महाकाम कुतूहलाम्।
दर्शनान्मोहिनीं साध्वीं कटाक्षादि प्रमोचनीम्॥
नायिकाष्ट तुल्ययुक्तां। क्रोधमात्सर्य वर्जिताम्।
सर्वदोष विहीनाङ्गी विकार परिवर्जिताम्॥
दीक्षितां देवताभक्तां। घृणा लज्जा विवर्जिताम्।
जपासक्तां समासाद्य सर्वं संसाधयेत् शिवे॥

यानी किसी पराशक्ति के संग सर्व साधना करनी चाहिये॥ आखीरी चरण का यह अर्थ है॥ तन्त्रसास्त्र गोपनिय है। जैसे

(वेद शास्त्र पुराणानि सामान्या गणिका इव।
इयं तु शाम्भवी विद्या गुप्ता कुलवधूरिव। गोपायेन् मातृजारवत्॥
दिवा भागे यजेद् देवी लोकाचार क्रमेण च। लोकाचारं बिना देवि गोपनं नैव जायते॥ गोपनात् कार्यसिद्धिः स्यात् प्रकाशात् सिद्धिहा भवेत्॥
रात्रौ कुलक्रियां कुर्यात् दिवा कुर्याच्च वैदिकीम्। दिवा रात्रौ यजेद् देवीं योगी योगभेदतः॥ निरुत्तर तन्त्र में लिखा है।

ज्ञानस्य कारणं मद्यं। मद्यं ज्ञानस्य नाशकम्।
वायुना ज्वलितोऽग्निश्च। वायुना लयवान यथा॥
ज्ञानार्णव तन्त्र में लिखा है। मद्य ज्ञान का जनक है। मद्य ही
ज्ञान का नाशक है। जैसे वायु ही अग्नि को जलाता है वायु ही
बुझाता है। तान्त्रिक वामाचारियों का यह स्पष्ट मत है।
(तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चञ्चलां कामलोलुपाम्।
गुरुभक्तां मन्त्रयुक्तां सर्वलक्षण संयुताम्॥
कालीभक्तां जपासक्तां महाकाम कुतूहलाम्।
दर्शनान्मोहिनीं साध्वीं कटाक्षादि प्रमोचनीम्॥
नायिकाष्ट तुल्ययुक्तां। क्रोधमात्सर्य वर्जिताम्।
सर्वदोष विहीनाङ्गी विकार परि वर्जिताम्॥
दीक्षितां देवताभक्तां। घृणा लज्जा विवर्जिताम्।
जपासक्तां समासाद्य सर्वं संसाधयेत् शिवे॥
यानी किसी परा शक्ति के संग सर्व साधना करनी चाहिये॥
आखीरी चरण का यह अर्थ है॥ तन्त्रसास्त्र गोपनिय है। जैसे
(वेद शास्त्र पुराणानि सामान्या गणिका इव।
इयंतु शाम्भवी विद्या गुप्ता कुल वधूरिव। गोपायेन् मातृजारवत्॥
दिवाभागे यजेद् देवी लोकाचार क्रमेण च। लोकाचारं बिना देवि गोपनं
नैव जायते॥ गोपनात् कार्य सिद्धिः स्यात् प्रकाशात् सिद्धिहा भवेत॥
रात्रौ कुलक्रियां कुर्यात् दिवा कुर्याच्च वैदिकीम्। दिवा रात्रौ यजेद् देवीं
योगी योगभेदतः॥ निरुत्तर तन्त्र में लिखा है।

घृणा शं

पाशबद्

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नश्वर

लज्जा =

जुगुप्सा

कुल =

शील =

जाती =

घृणा शं
अष्टौ प
पाश ब
घृणा = र
शंका =
रहता है
भय = प
नशावर
लज्जा =
जुगुप्सा
कुल =
शील =
जाती =

घृणा शं
अष्टौ प
पाश ब
घृणा =
शंका =
रहता है
भय =
नश्वर
लज्जा =
जुगुप्सा
कुल =
शील =
जाती =

घृणा शं

ज्येष्ठो

पाशब

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नश्वर

लज्जा

जुगुप्सा

कुल =

शील =

ाती =

घृणा
पाश
घृणा =
शंका =
रहता है
भय =
नश्वर
लज्जा =
जुगुप्सा
कुल =
शील =
जाती =

घृणा शं

अष्टौ प

पाशब

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नशवर

लज्जा =

जुगुप्सा

कुल =

शील =

जाती =

घृणा शं

पाशबद्

घृणा = सं

शंका =

रहता है

भय = प

नश्वर

लज्जा =

जुगुप्सा =

कुल =

शील =

ाती =

घृणा

भ्रष्टो

पाश ब

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नशवर

लज्जा

जुगुप्सा

कुल =

शील =

जाती =

घृणा

अष्टौ

पाशब

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नशावर

लज्जा

जुगुप्सा

कुल =

शील =

जाती =

घृणा

जुगुप्सा

पाशव

घृणा =

शंका =

रहता है

भय =

नशावर

लज्जा

जुगुप्सा

कुल =

शील =

जाती =

घृणा
जुगुप्सा
पाशव
घृणा =
शंका =
रहता है
भय =
नश्वर
लज्जा
जुगुप्सा
कुल =
शील =
जाति =

यन्त्र पूजन

त्रिकोणाद्बहि: आग्नेशासुर वायव्य मध्य दिक्ष्वंग पूजनम् ॥

ॐ ऐं हृदयाय नमो हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः

आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा शिर: शक्ति श्री पादुका० पू० न० त० न०

ईशान्ये ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् शिखा शक्ति श्री० पा० न० त० न०

नैऋत्याम् ॥ ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं कवच शक्ति श्री० . . . .

वायव्याम् ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र शक्ति श्री० . . . . .

पूर्वे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति श्री०

सर्वदिक्षु ॥ (इत्यादि क्रमेण अंग देवता: पूजयेत्तर्पयेत् ॥ ततो श्री पात्रा

मृतेन तत्व मुद्रया त्रिःसकृद्वा तर्पयेत् ॥ पुष्पांजलि दे ॥ चंडिके देवि!

मूलम् अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पयेतु

भ्यं = प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततस्त्रिकोण यन्त्रे ॥

ॐ सरस्वती ब्रह्मभ्यां नमः सरस्वती ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि न० त० . .

पूर्वे ॥ ॐ लक्ष्मी हृषीकेशाभ्यान्नमो लक्ष्मी हृषीकेश श्री० पा० न० तृ०

नैऋते ॥ ॐ गौरी रुद्राभ्यान्नमः गौरी रुद्र श्री० पा० पू० न० त० न०

वायव्ये ॥ ॐ सिं सिंहाय नमः सिंह श्री० पा० पू० न० त० न० देव्याः

दक्षिणे ॥ ॐ मं महिषाय नमः महिष श्री० पा० पू० न० त० न० उत्तरे

ॐ कां कालाय नमः काल श्री० पा० . . . . . . दक्षिणे ॥ ॐ मृं मृत्वे

नमः मृत्यु श्री० . . . . . उत्तरे ॥ (ततो श्री पात्रामृतेन तत्व मुद्रया

त्रिसकृद्वा तर्पयेत ॥

महिष को देवी के वामभाग में रखना चाहिये सिंह को दाहिने ॥

फिर पुष्पांजलि दे। फिर प्रार्थना ॥
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ ततः षट्कोणेषु
नन्दजादि शक्तिः पूजयेत् ॥ ॐ नं नन्दजायै नमः नन्दजा शक्तिः
श्री० पा० पू० न० . . . पूर्वे ॥ ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः
रक्तदन्तिका शक्ति श्री० पा० पू० न० त० न० आग्नेययाम् ॥ ॐ
शां शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरी शक्ति श्री० पा० पू० न० तृ० न०
नैऋत्यां ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः दुर्गा शक्ति . . . .
पश्चिमे ॥ ॐ भीं भीमायै नमः भीमा शक्ति . . . . . .
वायव्याम् ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः भ्रामरी शक्ति . . . .
ईशान्याम् ॥ (पुष्पांजलि दे ॥ प्रार्थना करे ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं
तृतीयावरणार्चनम् ॥ इति यन्त्रे क्षिपेत ॥ ततोऽष्टपत्रेषु ॥ ब्राह्म्यादि शक्ति
ध्यानम् ॥ ॐ ब्राह्मी हंस समारूढां स्वर्णवर्णां चतुर्भुजाम् ॥ चतुर
वक्त्रां त्रिनेत्राञ्च ब्रह्मकूर्चं च पंकजम् ॥ दण्डपद्माक्षसूत्रं च
दधतीं चारु हासिनीम् ॥ जटाजूटधरां देवीं भावयेत्साधकोत्तमः ॥
ॐ ब्रां ब्राह्मी श्री० . . . . पूर्वे ॥ ॐ नारायणीं महादीप्तां श्यामां
गरुड़वाहिनीम् ॥ नानालंकारसंयुक्तां चारुकेशीं चतुर्भुजाम् ॥
घण्टा शंख कपालं च चक्रं संदधतीं पराम् ॥ मधुमत्तां मदोल्लोल
दृष्टिं सर्वांगसुन्दरीम् ॥ २ ॥ ॐ ईं नारायणीं श्री० पा० . . . .

ईशान्यां ॥ ॐ माहेश्वरीं वृषारूढां शुक्लां त्रिनयनान्विताम् ॥ कपालं डमरुं चैव वरदाभय शूलकम् ॥ टङ्कं च दधतीं देवीं नानाभरणभूषिताम् ॥३
ॐ ऊँ माहेश्वरी श्री पा० - - - - - उत्तरे ॥ ॐ चामुण्डां चण्डाट्टहासां प्रकटित दशनां भीमवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥ नीलाम्भोज प्रभाभां प्रमुदित वपुषां नारमुण्डालिमालाम् ॥ खड्गं शूलं कपालं नरशिर घटितं खेटकं धारयन्तीम् ॥ प्रेतारूढां प्रमत्तां मधु मदमुदितां भावये चण्ड रूपाम् ॥४॥ ॐ स्रूं चामुण्डा श्री० - —— - वायव्ये ॥ ॐ कौमारी कुंकुमाभां च त्रिनेत्रां सिखि संस्थिताम् ॥ चतुर्भुजां शक्ति पाशांकुशाभय धारिणीम् ॥ नानालंकार संयुक्तां प्रमत्तां परिचिन्तये ॥५॥ ॐ लूं कौमारी श्री० - - - - - - पश्चिमे ॥ ॐ अपराजितां च पीताभाम दासूत्रवरप्रदाम् ॥ कमलं मातुलुङ्गं च दधतीं परिचिन्तये ॥६॥ ॐ ऐं अपराजिता श्री० - - - - - नैर्ऋत्ये ॥ ॐ वाराही धूम्रवर्णाभां वराहवदनां शुभाम् ॥ खेटकं खड्ग मूसलं हलं वेदभुजैर्धृताम् ॥७॥ ॐ ओं वाराही श्री० - - - - - दक्षिणे ॥ ॐ नारसिंही नृसिंहस्य विभ्रती सदृशं वपुः ॥८॥ ॐ अः नारसिंही श्री० - - - - आग्नेये ॥ इति संम्पूज्य ॥ (पूर्ववच्छेषे पात्रामृतेन (विशेषार्घ्य जलेन) त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ॥ पुष्पांजलि दे प्रार्थना करे। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ (ततोऽष्टभैरवान् ध्यायेत् ॥

दधताञ्जन पुञ्ज नीलवर्णान् रुरु वेताल शूल दण्डान् ।। लघु
दुंदुभिः संयुक्तां त्रिनेत्रा कारि हस्तोपरि हस्त दण्ड एवं गजा
कृति निर्वर्तितो गरीयान् ।। भृकुटि संघट्टिते ललाट पट्टैः
ललितालिकुलाभ कुण्डलग्नान्मुदितान्तः करणान्सुयौवना
दयान् ।। इति ध्यात्वा ।। (ॐ ह्रीं अं असितांग भैरवाय नमः
असितांग भैरव श्री॰ . . . . पूर्वे ।। ॐ ह्रीं रुं रुरु भैरवाय
नमः रुरु भैरव श्री॰ पा॰ पूजय॰ त॰ न॰ ईशान्ये ।। ॐ ह्रीं चं
चण्ड भैरवाय नमः चण्ड भैरव श्री॰ . . . . . . उत्तरे ।। ॐ ह्रीं
क्रों क्रोध भैरवाय नमः क्रोध भैरव श्री॰ . . . . . . वायव्ये ।।
ॐ ह्रीं उं उन्मत्त भैरवाय नमः उन्मत्त भैरव श्री॰ . . . . . पाश्चिमे ।
ॐ ह्रीं कं कपाल भैरवाय नमः कपाल भैरव श्री॰ . . . . नैऋत्ये
ॐ ह्रीं भीं भीषण भैरवाय नमः भीषण भैरव श्री॰ . . . . दक्षिणे
ॐ ह्रीं सं संहार भैरवाय नमः संहार भैरव श्री॰ . . . . आग्नेय
इति संपूज्य ।। (पूर्ववद्योनि पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ।।
पुष्पांजलि दे । प्रार्थना करे ।। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्च
इति समर्प्य ।। ततो चतुर्विंशति दले पूर्वादि आग्नेयान्त दले
ॐ विं विष्णु मायायै नमः विष्णु माया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्प
इसी तरह कहा जायेगा ।

ॐ चें चेतनायै नमः चेतना श्री० .... ॐ बुं बुद्ध्यै नमः बुद्धि श्री० ...
ॐ निं निद्रायै नमः निद्रा श्री० ... ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधा श्री० ...
ॐ छां छायायै नमः छाया श्री० .... ॐ शं शक्त्यै नमः शक्त्यै श्री० ...
ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णा श्री० ..... ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्ति श्री० .. —
ॐ जां जात्यै नमः जात्यै श्री० ..... ॐ लं लज्जायै नमः लज्जा श्री० ... ॐ
ॐ शां शान्त्यै नमः शान्ति श्री० - — .. ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धा श्री० ..... ॐ
ॐ कां कान्त्यै नमः कान्ति श्री० ...... ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी श्री० ....
ॐ धृं धृत्यै नमः धृति श्री० ...... ॐ वृं वृत्यै नमः वृत्ति श्री० ....
ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुति श्री० ...... ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृति श्री०
.... ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टि श्री० ..... ॐ पुं पुष्ट्यै नमः पुष्टि श्री० ..
...... ॐ दं दयायै नमः दया श्री० ...... ॐ मां मातृयै नमः मातृयै श्री० ...
.. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्ति श्री० ...॥ इति संपूज्य ॥ पूर्ववद्योगिनी
पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय ॥ भगवती
चण्डिके देवि मुलमन्त्रमिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ॥ भक्त्या
समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् इति समर्प्य ॥ ततः भूपुर मध्ये प्रसिद्ध पूर्वा
दि दिक्षुत आरम्भ। ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पुजयामि नमः
पूर्वे॥
तर्पयामि नमः ॥ इसी तरह सबको पुजा करते जाओ और यही कहते जाओ।
ॐ रं आग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥
॥ आग्नेय में॥

घृणा ॐ यं यमाय नमः यम श्री॰पा॰ . . . दक्षिणामें॥ ॐ क्षं नैर्ऋतये नमः
अहं नैर्ऋति श्री॰ . . . . . नैऋत्यौ॥ ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री॰ . . . .
पाश पश्चिमे॥ ॐ यं वायवे नमः वायु श्री . . . . . वायव्य में॥ ॐ सं
घृणा सोमाय नमः सोम श्री॰ . . . . . उत्तरे॥ ॐ हं ईशानाय नमः ईशान
शंका श्री॰ . . . . ईशान्ये॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्त श्री॰ - - -
वरुण के बीच में॥ ॐ अं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्री॰ - - - - पूर्व ईशान
रहता के बीच में पूजन करे॥ इति संपूज्य॥ पूर्ववद्योगिनि पात्रामृतेन
भय = तर्पयेत्॥ फिर पुष्पांजलि दो प्रार्थना करे॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं
नशाव सप्तमावरणार्चनम्॥ इति समर्प्य॥ (अब जगदम्बा के आयुधों को पूजा)
लज्जा ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री॰ . . . पूर्व में॥ ॐ शं शक्त्यै नमः शक्ति श्री॰
. . . . . आग्नेयमें॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्ड श्री॰ . . . . . दक्षिणा में।
जुगुप्स ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री॰ . . . . . . नैऋत्यमें॥ ॐ पां पाशाय
कुल = नमः पाश श्री॰ - - . पश्चिममें॥ ॐ अं अंकुशाय नमः अंकुश (दवजा)
श्री॰ . . . . . वायव्यमें॥ ॐ गं गदायै नमः गदा श्री॰ . . . . ईशान में
शील ॐ चं चक्राय नमः चक्र श्री॰ . . . . निर्ऋति वरुण के बीच में॥
ॐ पं पद्माय नमः पद्म श्री॰ . . . . ऊर्ध्वे। पूर्व ईशान के बीच में॥
इति संपूज्य॥ पूर्ववद्योगिनि पात्रामृतेन तर्पयेत्॥ (फिर पुष्पांजलि दे
ाती प्रार्थना करे॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥ इति
समर्प्य॥

अब देवि के दक्षिण भाग में ।। ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा श्री० .... ॐ विं
विष्णवे नमः विष्णु श्री० ... ॐ रुं रुद्राय नमः रुद्र श्री० ... (अब
श्री महालक्ष्मी जी के दिव्य अस्त्रों की पूजा करो ।। ॐ अं अक्षमालाये
नमः अक्षमाला श्री० .... ॐ पं पद्माय नमः पद्म श्री० ... ॐ सां
सायकाय नमः सायक श्री० ... ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री० ...
ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री० ... ॐ गं गदायै नमः गदा श्री० .....
ॐ चं चक्राय नमः चक्र श्री० -- ॐ सुं सुराभाजनाय नमः सुराभाजन
श्री० --- ॐ शं शंखाय नमः शंख श्री० .... ॐ शं शक्त्यै नमः
शक्ति श्री० - ... ॐ पं परशवे नमः परशु श्री० .... ॐ धं धनुषे
नमः धनुष श्री० ... ॐ चं चर्माय नमः चर्म श्री० .... ॐ दं दंडाय
नमः दण्ड श्री० --- ॐ कुं कुंडिकायै नमः कुंडिका श्री० ..... ॐ घं
घंटायै नमः घण्टा श्री० .... ॐ पां पाशाय नमः पाश श्री० ....
ॐ शूं शूलाय नमः शूल श्री० .. चक्रस्य "बहिः कोणेषु
वायव्यां/ॐ वं बटुकाय नमः बटुक श्री० ... ईशान में ।। ॐ यां
योगिनिभ्यो नमः योगिनी श्री० ... निर्ऋति में ।। ॐ क्षें क्षेत्रपालाय
नमः क्षेत्रपाल श्री० .. . आग्नेय में ।। ॐ गं गणेशाय नमः गणेश श्री०
मध्ये ।। ॐ दुं दुर्गायै नमः श्री दुर्गा श्री० .. ईशान में ।। ॐ विं
विष्णवे नमः विष्णु श्री० ... आग्नेय में ।। ॐ शिं शिवाय नमः शिवाय
श्री० . . वायव्य में ।।

ॐ सूं सूर्याय नमः सूर्य श्री० . . . . नैऋत्य में ॥ ॐ गं गणेशाय
नमः गणेश श्री० - - - इति संपूज्य ॥ पूर्वकोणिनि पात्रामृतेन
तर्पयेत् ॥ फिर पुष्पांजलि दे। प्रार्थना भगवती चंडिके ! देवि
मु० अभिष्ट मे देहि शरणागतवत्सले ।। भक्त्यासमर्पये तुभ्यं
नवमावरणार्चनम् इति समर्प्य ॥

इन आयुधों का ध्यान करना वा मुद्रा दिखाना चाहिये ॥ अनन्तर
अक्षमाला, परशु - गदा - इषु (बाण) कुलिश (वज्र) पद्म - धनुष -
कुण्डिका - दंड - शक्ति - असि - चर्म - घंटा - सुराभाजन - त्रिशूल
पाश - सुदर्शन - हल - शंख - मूसल - चक्र - परिघ - भुशुण्डी - शिरः॥

॥ गुरु को तर्पण विधि ॥

जिस देवता को तर्पण करे उस देवता का यन्त्र रोली से या अष्ट गंध से थाली में बनाले। यह गुरु का तर्पण लिखा है। गुरु का मानसिक पूजन करके स्तुति करके तब तर्पण करे।

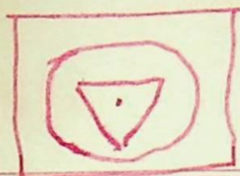
॥ तर्पण मंत्र ॥

ॐ ब्रह्मा भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ विष्णु भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ रुद्र भैरव स्तृप्यताम् ॥ ॐ हसक्ष मलवरयूं स्वधा देव्यै वौषट् आनन्द भैरवी तृप्यताम् ॥ एतद्देव तर्पणम् ॥ ऋषि तर्पणम् ॥ ॐ महादेवी काली तृ० ॥ ॐ महादेवी लक्ष्मी तृ० ॥ ॐ महादेवी सरस्वती तृ० ॥ ॐ महा देवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ त्रिपुराम्बा तृ० ॥ ॐ भैरवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ ब्रह्मानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ पूर्णानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ बिन्दिनाथानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चल चित्तानंदनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चंचलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुमारानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ स्मरदीपानन्दनाथस्तृप्यताम् ॐ क्रोधानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ वरदानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ मायाम्मा तृप्यताम् ॥ ॐ मायावत्यम्बा तृप्यताम् ॥ ॐ विमलानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुशलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ गोरक्षानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ भोजदेवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ प्रजापत्या नन्दनाथस्तृ० ॥ ॐ मूलदेवानन्दनाथस्तृ० ॥ ॐ विघ्नदेवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥

ॐ हुताशनानन्दनाथस्तृ० ॥ ॐ समयानन्दनाथस्तृ० ॥
ॐ संतोषानन्दनाथस्तृ० ॥ अब पितृतर्पण ॥ ॐ गुरु परम
गुरु परापर गुरु परमेष्ठी गुरु श्री सिया रघुनाथानन्द तर्पयेत ॥
गंधादिभिरभ्यर्चय ॥ मूलान्ते ॥ सांगां सपरिवारां सायुधां स
शक्तिकां ब्रह्म विष्णु रुद्र सहितां श्री चंडिकां तर्पयामि नमः ॥
दसबार या तीन बार तर्पण करे सबका ॥ फिर गायत्री जपे
तर्पण करने का द्रव्य ताम्र पात्र हो उसमें इष्ट यन्त्र रोली से
लिख कर पूजन करे फिर लाल चंदन जव पुष्प कुश जल
अक्षत से पात्र भर कर सूर्य मंडलस्थायै देवी को तर्पण करे
पश्चात् १०८ बार गायत्री जपे ॥

॥ पूजाविधि ॥

पूजा घर के पास जाकर हाथ जोड़ कर खड़ा हो के कहे,
देवि त्वं प्राकृतं चित्तं पापा क्रान्तमभून्मम ॥
तन्निःसारय चित्तान्मे पापं फट् फट् ते नमः ॥ इस मंत्र से
पाप दूर करे ॥ वज्रोदके हूं फट् स्वाहा ॥ इस मन्त्र से जल
हाथ में ले कर आसन पर डाले ॥ ॐ विशुद्ध सर्व पापानि
शमयाशेष विकल्पानयनापहं ॥ इस मन्त्र से हाथ पाव
धोवे ॥ ॐ हं स्वाहेत्याचम्य ॥ यह कह कर आचमन करे।



शिखा बांधे ॥ समानार्घ स्थापित करे ॥ अपने बाईं तरफ त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र मंडल बनावे और बीच में विन्दु में ॐ ह्रीं आधार शक्तिये नमः कह कर पंचोपचार से पूजन आधार शक्ति का करदे। फिर एक ताम्र का कटोरा उस विन्दु पर ॐ क्रः अस्त्राय फट् कह कर रख दे। ॐ क्रां हृदयाय नमः कह कर गंगाजल डाले। और गंगा जी का आवाहन करे। गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति कावेरि नर्मदे सिंधो जलेस्मिन संनिधिं कुरु ॥ कुशमुद्रा दिखा के सूर्य मंडल की ओर से गंगा जी का आवाहन करे ॥ फिर उस जल में गंध डाले ॥ धेनुमुद्रा दिखावे समानार्घ में ॥ फिर उस जल से फूल या कुशा द्वारा पूजा गृह का द्वार छिड़के ॥ फिर द्वार के देवता का पूजन करे ॥ द्वारोर्ध्वे गं गणपतये नमः ऊपर गणपति का पंचोपचार से पूजन करे। बाईं तरफ क्षं क्षेत्र पालाय नमः बोल कर पूजन करे ॥ दक्षिण में वं वटुकाय नमः बोल के पूजन करे ॥ नीचे की तरफ यों योगनीभ्यो नमः बोल कर योगिनी का पूजन करे ॥ इसी क्रम से ऊपर ऊर्ध्वे गं गंगाये नमः ॥ कह कर गंगा जी का पूजन करे ॥ वामे यं यमुनाये नमः ॥ दक्षे श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ अधः ऐं सरस्वत्यै नमः ॥ द्वार श्रीं इदमर्घ्यं परिकल्पयामि ॥ फिर कहे।

द्वार पाचाम्बलोकस्य द्वारं रक्षतु यत्नतः ॥ निवार्य विघ्न संघातमित्याज्ञा परमेश्वरी ॥ फिर बायें अंग को संकुचित करके दाहिना पांव उठा कर पूजा द्वार की देहली नांघ कर अन्दर घुसे ॥ और कहे ॐ अपः क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत गुह्यकाः ॥ ये चानि सत्यन्ते देवता भुवि संस्थिताः ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ (ॐ सर्व विघ्नानुत्सारयो त्सारय हूं फट् स्वाहा ॥ इस मन्त्र से बायें पैर को तीन बार जोर से जमीन पर ठोंके ॥ और उस समानार्घ्य से पूजा घर को छिड़के ॥ अब नैऋत्य कोण मे वास्तु देवता की पूजा करे (ॐ वास्तु पुरुषाय नमः कह कर पूजा करे ॥ ईशान कोण में (ॐ दीपनाथाय नमः) की पूजा करे ॥ स्तुति ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ इति भैरवाज्ञां ग्रहीत्वा ॐ रक्ष २ हुं फट् स्वाहेति भूमिं परिषिंच्य ॥ ॐ पवित्र हूं हूं फट् स्वाहेति ॥ यह कह कर भूमि सिंचन करे । ॐ आसुरेरेव बज्र रेखे हूं फट् स्वाहेति कहते हुऐ भूमी में त्रिकोण मंडल बना कर (ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः ॥

कह कर पूजा करे फिर उसपर कम्बल का आसन बिछा के आग्नेय कोणसे परिक्रमा करे और यह मन्त्र बोले " श्री गणेशाय नमः। सरस्वत्यैनमः ॥ दुर्गायै नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः हाथ से छू कर अब आसन पर बैठे। और आसन का विनियोग करे ॥ ॐ आसन मंत्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः" ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारयते माम देवि पवित्रं कुरु चासनं ॥ तीन आसन बिछावे तीन त्रिकोण भी बनावे हर आसन के नीचे त्रिकोण रहे। प्रथम त्रिकोण में (ॐ कूर्मासनाय नमः से पूजन करे फिर आसन बिछावे। दूसरे त्रिकोण में ॐ ह्रीं आधार शक्त्यै नमः (कमलासनाय) से पूजन करे। तीसरे त्रिकोण में ॐ पृथिव्यै नमः से पूजन करे। पहला कुशासन दूसरा काला तीसरा कंबल बिछा कर फिर पूजन करे। क्रमसे अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः। ॐ पद्मासनाय नमः दाहिने तरफ गुं गुरुभ्यो नमः। बाईं तरफ गं गणपतये नमः। मध्ये चंडिका देव्यै नमः। अब एक पात्र बाईं तरफ थोड़ा जल पृथ्वी पर डाल कर रखे उसमें जल पूजा के लिये डालस्व दाहिनी तरफ फूल धरे तस्तरी में पूजा वास्ते। अब अपने

पीछे तरफ हाथ धोने को पानी रखे लोटा में। देवी के पीछे पूजा की सामिग्री धरे॥ इस मंत्र से फूल पर जल छिड़के और फूल शुद्ध करे। (ऊं पुष्पे पुष्पे महा पुष्पे सुपुष्पे पुष्प संभवे। पुष्पं च यावकीर्णा हुं फट् स्वाहेति)॥ नाराचमुद्रा दिखावे। अंगूठा तर्जनी स्फोटो बना कर सब द्रव्य को सम दृष्टि से देखे॥ दीप दिखावे। (ऊं हुं फट स्वाहेति) मंत्र से शरीर वाक् चित्त शोधन १० बार कह कर करे। हृदय पर हाथ धर कर १० बार आत्म रक्षा के लिये तुम रक्ष २ हुं फट स्वाहेति १० बार कहे। फिर यह कहे। चन्दनाक्तानि पुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा तानि बाम हस्ते समादायाघ्राय ॥ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसका:॥ मृत्यु रोग भय क्लेशा: पतन्तु रिपु मस्तके॥ ऐसा कह कर एक फूल हाथ से मल कर दूर ईशान दिशा की ओर फेंक दे॥ कुल्लुका १० बार क्लीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट् परमेश्वरि॥ चंडिका का कुल्लुका है यह कुल्लुका रुद्रयामल मे कहा है

५१ महापीठों की सूची

	अंग का नाम	जहां पर गिरा	भैरवी का नाम	भैरव का नाम
१	ब्रह्मरन्ध्र	हिमालय	कोट्टरी	भीमलोचन
	त्रिनेत्र	सर्कर	महिष मर्दिनि	क्रोधीश
	नेत्रांशतारा	तारायग्राम	तारिणि	उन्मत्त
	वामकर्ण	करतोयातट पर	अपर्णा	वामदेव
	दक्षिणकर्ण	श्रीपर्वत	सुन्दरी	सुन्दरानन्द
	नासिका	सुगन्धा	सुनन्दा	त्र्यम्बक
	मन:	वक्रनाथ	पापहरा	वक्रनाथ
	वामगण्ड	गोदावरी	विश्व मातृका	विश्वेश
	दक्षिणगंड	गण्डकी	गण्डकीचंडी	चक्रपाणि
	ऊर्ध्वदन्त	अनल	नारायणी	संकुर
	अधोदन्त	पंचसागर	वाराही	महारुद्र
	जिह्वा	ज्वालामुखी	अम्बिका	वटुकेश्वर या उन्मत्त
	कण्ठ	काश्मीर	महामाया	त्रिसन्ध्या
	ग्रीवा	श्रीहट्ट	महालक्ष्मी	सर्वानन्द
	ओष्ठ	भैरवपर्वत	अवन्ती	लम्बकर्ण
	अधर	प्रभास	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड
	मर्म	ब्रह्मावर्तखंड	सिद्धेश्वरी	सिद्धेश्वर
	चिबुक	जनस्थान	भ्रामरी	विकृताक्ष
	दक्षिणहस्तांगुली	प्रयाग	कमला या ललिता	वेणीमाधव

अंग का नाम	जिस स्थान मे गिरा	भैरवी का नाम	भैरव का नाम
वामहस्त के अर्द्ध भाग	मानसरोवर	दाक्षायणी	हर
दक्षिण हस्त के अर्द्ध भाग	चाटगांव	भवानी	चन्द्रशेखर
वाम स्कन्ध	मिथिला	महादेवी	महोदर
दक्षिण स्कन्ध	रत्नावली	शिवा या कुमारी	शिव व कुमार
वाम मणिबन्ध	मणिबन्ध	गायत्री	शंकर व स[illegible]
दक्षिण मणिबन्ध	मणिवेद	सावित्री	स्थाणु
वाम कोणि	उज्जयिनी	मंगलचण्डी	कपिलाम्बर
दक्षिण कोणि	रणखण्ड	बहुलाक्षी	महाकाल
वाम बाहू	बाहूलाय	बाहुला या बाहुली	भीरुक
दक्षिण बाहू	बक्रेश्वर	बक्रेश्वरी	बक्रेश्वर
वाम स्तन	जालन्धर	त्रिपुरमालिनी	भीषण
दक्षिण स्तन	रामगिरि	शिवानी	चण्ड
पृष्ठ	वैवस्वत	त्रिपुटा	क्षमकर्मा
हृदय	वैद्यनाथ	नवदुर्गा या जयदुर्गा	वैद्यनाथ
नाभि	उत्कल	विजया	जय
जठर	हरिद्वार	भैरवी	वक्र
कक्ष	कौंक	कौंकेश्वरी	कौंकेश्वर
कंकाल	काञ्ची देश	वेदगर्भा	रुरु
वाम नितम्ब	कालमाधव	काली	असितांग

अंगका नाम	जिस स्थान में गिरा है।	भैरवी का नाम	भैरव का नाम
दक्षिणनितम्ब	नर्मदा	सोनाक्षी	भद्रसेन
महामुद्रा	कामरूप	कामाख्यादेवी	उमानंद या रावानंद
वामजानु	मलव	शुभचण्डी	ताम्र
दक्षिणजानु	स्रोता	चण्डिका	सदानन्द
वामजंघा	जयन्ता	जयन्ती	क्रमदीश्वर
दक्षिणजन्घा	नेपाल	महामाया या नवदुर्गा	कपाली
वामपाद	तिरोता	भ्रमरो	भ्रमर
दक्षिणपाद	त्रिपुरा	त्रिपुरा	नल
दक्षिणपदांगुठ	क्षीरग्राम	योगाध्या	क्षीरखण्ड
दक्षिणपादांगुलि-चतुष्टय	कालीघाट	कालिका	नकुलेश
वामगुल्फ	विभास	भीमरूपा	कपाली
दक्षिणगुल्फ	कुरुक्षेत्र	सम्बरी या विमला	सम्वर्त
वामपदांगुलि	विन्ध्यशिखर	विन्ध्यवासनी	पृथ्वभञ्जन

ग्रहों को दशों दशाओं का बखान

ग्रहविचार हर काम में किया जाता है। सूर्य बुध गुरु शुक्रादि कोई ग्रह हो जो ग्रह जिस कार्य का कर्ता है वह दीप्त, स्वस्थ, मुदित शान्त होना चाहिये।

गुरु - शुक्र मंगल बुध शाखाओं का स्वामी है। ऋगवेद के स्वामी गुरु हैं। यजुर्वेद के स्वामी शुक्र सामवेद के मंगल अथर्ववेद के बुध स्वामी हैं।

ग्रहों की दश दशा होती हैं। (१) दीप्त (२) मुदित (३) स्वस्थ (४) शान्त (५) शक्त (६) प्रपीड़ित (७) दीन (८) खल (९) विकल (१०) भयभीति

अपनी उच्च रासी में, त्रिकोण में, स्थित ग्रह प्रदीप्त कहलाता है।

अपने घर में ग्रह स्वस्थ कहलाता है। मित्र के घर में मुदित कहलाता शुभग्रह के घर में स्थित शान्त कहलाता है। स्फुटित रश्मी वालों से प्रतियन्त शुद्ध ग्रह शक्त कहलाता है। यानी हारा हुआ पराजित ग्रह पीड़ित कहलाता है। शत्रु की रासी और नवांश में प्राप्त ग्रह अतिदीन कहलाता है। पापग्रहों के घर में खल कहलाता है। नीच रासी में हर ग्रह भीति कहलाता है। सूर्य के साथ हर ग्रह अस्त कहलाता है।

यदि ग्रह दीप्त अवस्था में हो किसी काम के करने में तो कार्य सिद्धि दीन दशा में हो तो दुखागमन होवे स्वस्थ दशा में हो तो कीर्तिधन मिले। मुदित अवस्था में हो तो आनन्द मिले। शत्रु के घर में स्थित ग्रह सोया हुआ माना जाता है। काम के समय यदि सुप्त हो तो शत्रु भय दुख हो पीड़ित दशा में ग्रह धन हानी करता है। खल अथवा विकल अवस्था में ग्रह धन हानि मानहानि करता है। प्रदीप्त दशा में ग्रह हो तो सोना रत्न सम्पत्ति लाभ होवे। मुदित अवस्था में हो तो धनागमन उच्चाभिलाषी स्फुटित रश्मि में ग्रह हो तो राज मिले। अस्त अवस्था में ग्रह विकल करता है। शत्रु के घर में या शत्रु की रासी में खल का काम करता है

जन्म राशी से शनि यदि गोचर में १-२-५-६-८ वें स्थान में हो तो अशुभ फल देगा समझो, यदि ४-८-१२ वें स्थान पर हो तो विशेष अनिष्ट करे। (पूजा करे) यदि अपनी रासी से ३-६-१०-११ वें स्थान पर हो तो शुद्ध समझो सामान्यतः फल प्रद होगा।

॥ शनि पाद विचार ॥

शनि अपनी रासी से दूसरे नवें पांचवें स्थान पर हो तो चांदी के पाद समझो। इसका फल लाभ है। और यदि अपनी रासी से शनि १-११-६ स्थान पर हो तो स्वर्ण पाद समझो इसका फल चिन्ता प्रद रहता है। और यदि शनि १२-८-४ स्थान पर अपनी रासी से हो तो लोह पाद समझो फल दुःख यदि शनि अपनी रासी से १०-७-३ स्थान पर हो तो ताम्र पाद श्री प्राप्ती हो अपनी रासी से शनि १२ वीं स्थान पर सिर पर रहते हैं। दूसरे स्थान पर पैरों पर रहते हैं। १ स्थान पर हो तो हृदय पर आ जाते हैं। इसका चक्र

गुरु प्रसाद की कुंडली में शनि दसवें स्थान पर है ताम्र पाद हुआ फल श्री प्राप्ती है।

जन्म रासी या नाम रासी से शनि गोचर में देखो कहां है	मेष रासी वालों का २ स्थान पर शनि रजत पाद लाभ प्रद शुभ है।	कन्या रासी वालों का ५ वें स्थान पर शनि रजत पाद

चन्द्रमा की जानकारी

शुक्ल पक्ष की परिवा से दस दिन चन्द्रमा मध्य बली कहलाता है। एकादशी से दस दिन पूर्णबली चन्द्र कहलाता है फिर दस दिन तक क्षीण चन्द्र बलहीन दीन कहलाता है, अब जन्म देखलो जातक किस पक्ष में किस तिथि में जन्मा है। इसी से अनुमान करलो चन्द्र बली है या दीन है या क्षीण है।

×

गुरु का विवरण

गुरु महाराज अपनी राशी से ८ वें दुखदाई होते हैं। गुरु चौथे स्थान पर सम्बन्ध विच्छेद परिवार में कराते हैं। राशी से १२ वें स्थान पर गुरु मुकदमे बाजी में खर्च कराते हैं। खर्च फजूल किसी न किसी बहाने कराते रहेंगे। जब ७ वें स्थान पर आते हैं तो सुखद होते हैं धर्म कर्म अर्थ की सिद्धि बैभव शाली मनुष्यों का सम्पर्क लाभ होता है। अपनी राशी से गुरु ८ वें स्थान पर आते हैं तो बन्धन, व्याधि उग्र शोक यात्रा मृत्यु तुल्य रोगों से कष्ट होता है। जब ६ वें स्थान पर आते तो आर्थिक सुख शान्ती रति सुख कृषी व्यापार में लाभ उन्नति पदोन्नति विद्या बुद्धि की वृद्धि करते हैं। और छठे स्थान पर गुरु आते हैं तो कभी सुख कभी अधिक सुन्दर वस्त्रों की प्राप्ती होती है। जब पांचवे स्थान पर गुरु आते तो घर में पुत्र जन्म हो हाथी घोड़ा गाय बैल सेवक सोना चांदी सेवा लाभ होवे स्त्रियों को जेवर मिले। जब चौथे स्थान पर गुरु आते हैं तो स्थान भ्रष्ट हो। कार्य में असफलता अनेक प्रकार के क्लेश बन्धु बियोग चिन्ता व्यथा होवे। कहीं सुख शान्ति न मिलेगी। जब तीसरे स्थान पर आते हैं तो परदेस में भटकाते हैं। मानसिक उलझन रहने पर भी कभी २ साधारण शान्ति सुख मिलेगा बन्धु वर्गों से मेल मिलाप होगा। जब गुरु दूसरे स्थान पर आते हैं तो सब प्रकार धन देने वाले होंगे। व्यापार में लाभ स्त्री सन्तान का पूरा सुख देशाटन में सफलता है। जब अपनी राशी पर आते हैं तो विद्या बुद्धि नाशक धन नाशक पद च्युति स्थानान्तर कलह बिवाद राजभय सम्भव है। परन्तु यदि गुरु स्वगृही पड़ जायें तो अनिष्ट कारक नहीं होंगे। ॥ अच्छे बुरे अंशों की जानकारी ॥

राशी	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश	धनु	मकर	कुम्भ	मी
शुभांश	२१	१४	१८	८	१६	७	२४	११	२३	१४	१७	७
अशुभांश	८	२५	२२	२२	२१	१	४	२२	१८	२०	२०	१०

यह अंश लगन में नवांश में सप्तांश द्वादशांश में देखें और

मोटी सी बात है

बारहों भावों में जो जो भाव शुक्र बुध गुरु से देखे जाते हों या अपने लग्नेश से या रासीस से युक्त हो अथवा देखे जाते हों तो शुभ फल देते हैं। यदि पाप गृहों से युक्त हों या देखे जाते हों तो अशुभ फलदाता है

अपनी नीच रासी में हो या अपने शत्रु की रासी में गृह हो वह ग्रह जिस भाव में बैठा होता है उसी भाव का नाशक होता है।

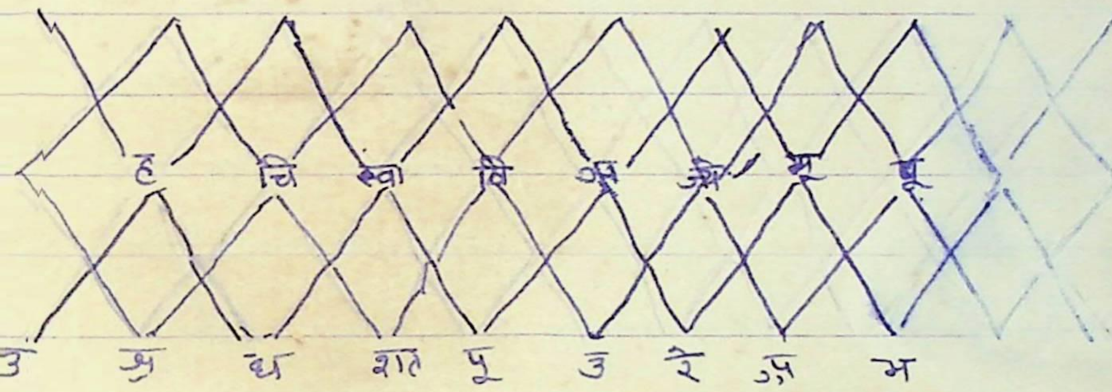
और जो गृह अपने मूल त्रिकोण में या अपने उच्च स्थान में या अपने मित्र के घर में पापग्रह जहां होगा उस स्थान यानी उस भाव की बृद्धि करेगा) जिस भाव का स्वामी यानि जिस भाव में जो अंक हो उसका स्वामी जैसे ४ अंक हो तो ४ का स्वामी चन्द हुआ वह चन्द्र छठे आठवें बारहवें स्थान में हो तो दुखद होगा या यह जिस भाव में बैठा होगा वह उस भाव का नाश करदेगा।

दुखद स्थान का स्वामी का मतलब शत्रुभाव मृत्युभाव दुखद स्थान है।

चाहे जो भाव हर भाव से आगे त्रिकोण जो पड़े और वहां से चौथा ७ वां १० वें घर में शुभ ग्रह हों तो शुभ फल

१-४-७-१० यह स्थान केन्द्र कहलाते हैं। लग्न से ९ । ५ वां स्थान त्रिकोण है। २-५-८-११ वां स्थान पणफर १२-६-९-३ यह स्थान आपोक्लीम ८-४ यह स्थान चतुरस्त्र ३-११-६-१० यह स्थान उपचय कहलाता है। शेष स्थान ९-२-४-५-७-८-१२-१- यह पीडक संज्ञक कहलाते हैं। यह स्थान बुध शुक्र बृहस्पत से देखे जाते हो या युक्त हों तो शुभ फलदायक होवे

॥ मारक गृहों का विवरण ॥



टिना तथा भूमि
मिहीनों व
ावासीय भू
करना ।
मजदूरों से ज
कानूनी करार
ग्रामीणों के
छोटे किसानो
रोक लगाने के
खेतिहर मजदू
कानूनमें संशोध
50 लाख हेक्
व्यवस्था की
धिक उपयो
बनाये जायें
त्रत मूल्य
बिजली उ

दूसरे स्थान का स्वामी छठे स्थान का स्वामी सातवें स्थान का स्वामी आठवें स्थान का स्वामी बारहवें स्थान का स्वामी यह सब मारक कहलाते हैं। इन गृहों की जब महादशा आयेगी तब पत्रे में देखो इस चक्र में (देखो जनम नक्षत्र क्या है। फिर देखो आज कौन ग्रह किस नक्षत्र पर है। मारक गृह अपनी महादशा में नहीं मारते इन मारक गृहों को जो गृह पूर्ण दृष्टि से देखता हो उसकी अन्तर दशा मारकेश बन जायेगी।

गुरु प्रसाद की कुण्डली में १२वें स्थान के स्वामी शुक्र को मं. गुरु पूर्ण नज़र से देख रहा है। इस का मतलब मं और गुरु की अन्तरदशा में कड़ी दशा आयेगी।

कुण्डली देखने का तरीका समझो

पत्रा के गोचर में १२ कोष्ठ है। १२ ही रासी हैं। इसका यह हिसाब है कि चाहे जिस लगन की कुण्डली हो। चाहे कोई ग्रह किसी कोष्ठ में बैठे हों, जिस अंक के साथ जो ग्रह बैठा होगा उसी अंक की रासी का ग्रह माना जाता है। एक अंक को मेष रासी दो अंक को वृष रासी ३ अंक को मिथुन रासी ४ अंक को कर्क रासी ५ अंक को सिंह रासी ६ अंक को कन्या रासी ७ अंक को तुला रासी ८ अंक को वृश्चिक रासी ९ अंक को धन रासी १० अंक को मकर रासी ११ अंक को कुम्भ रासी १२ अंक को मीन रासी कहते हैं। अब यह समझो गोचर में १ अंक जिस कोष्ठ में हो वहीं मेष रासी होगी। और १ अंक में जो ग्रह बैठा होगा वह ग्रह मेष रासी का माना जायेगा इसी तरह सब ग्रह का अंकों का हिसाब समझो। और राशीश माने रासी का स्वामी। १-८ अंक का स्वामी मंगल ४ अंक का स्वामी चन्द्रमा ५ अंक का स्वामी सूर्य ३-६ अंक का स्वामी बुध है। ९-१२ अंक का स्वामी गुरु १०-११ अंक का स्वामी शनि है। जिस अंक का स्वामी अपने अंक पर बैठा हो समझो वह स्वगृही है। अपने घर में बैठा है बलिष्ठ है। बुध-सूर्य-चन्द्र-शुक्र अपने घर से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

[illegible]
...करना आप इधर का कापि देखो और

मंगल ७-८-४ वाले घर पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु ७-५-९ वें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि-राहु-केतु-७-१०-३ वाले घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। २-७ अंक का स्वामी शुक्र है। कुण्डली में वृष का चन्द्र यानी २अंक के साथ चन्द्र हो तो उच्च का मानो। इसी तरह मेष का सूर्य - मिथुन का राहु। कर्क का गुरु। कन्या का बुध। तुला का शनि धन का केतु। मकर का मंगल। मीन का शुक्र हो तो उच्च का ग्रह है समझो) मेष का शनि। मिथुन का केतु। कर्क का मंगल कन्या का शुक्र। तुला का सूर्य। वृश्चिक का चन्द्र। धन का राहु। मकर का गुरु। मीन का बुध नीच ग्रह हैं।) यदि कुण्डली में या गोचर में यदि शनि राहु के घर में यानी राहु के संग हो या राहु शनि यानी १०-११अंक के साथ राहु हो तो समझो राहु मित्र के घर में बैठा है लाभ प्रद है। यदि गुरु चन्द्र के घर यानी ४अंक के साथ बैठा हो तो लाभ प्रद है। यदि चन्द्र ८-१२ अंक के साथ हो तो लाभ है मंगल ५अंक के साथ सूर्य १-८ अंक के साथ लाभ प्रद है। परन्तु नीच का ग्रह न हो। यानी सूर्य ७अंक के साथ हो तो समझो नीच का होकर बैठा है। यदि सूर्य १-८ अंक के साथ है तो हानि प्रद

कुण्डली देखने का तरीका समझो

पत्रा के गोचर में १२ कोष्ठ है। १२ ही रासी हैं। इसका यह हिसाब है कि चाहे जिस लगन की कुण्डली हो। चाहे कोई ग्रह किसी कोष्ठ में बैठे हों, जिस अंक के साथ जो ग्रह बैठा होगा उसी अंक की रासी का ग्रह माना जाता है। एक अंक को मेष रासी दो अंक को वृष रासी ३ अंक को मिथुन रासी ४ अंक को कर्क रासी ५ अंक को सिंह रासी ६ अंक को कन्या रासी ७ अंक को तुला रासी ८ अंक को वृशचिक रासी ९ अंक को धन रासी १० अंक को मकर रासी ११ अंक को कुम्भ रासी १२ अंक को मीन रासी कहते है। अब यह समझो गोचर में १ अंक जिस कोष्ठ में हो वहीं मेष रासी होगी। और १ अंक में जो ग्रह बैठा होगा वह ग्रह मेष रासी का माना जायेगा इसी तरह सब ग्रह का अंकों का हिसाब समझो। और राशीश माने रासी का स्वामी। १-८ अंक का स्वामी मंगल ४ अंक का स्वामी चन्द्रमा ५ अंक का स्वामी सूर्य ३-६ अंक का स्वामी बुध है। ९-१२ अंक का स्वामी गुरु १०-११ अंक का स्वामी शनि है। जिस अंक का स्वामी अपने अंक पर बैठा हो समझो वह स्वग्रही है। अपने घर में बैठा है बलिष्ठ है। बुध-सूर्य-चन्द्र-शुक्र अपने घर से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

फल देखेंगे आप कृद्ध चिन्ता न करना

मंगल ७-८-४ वाले घर पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु ७-५-९ वें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि-राहू-केतु-७-१०-३ वाले घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। २-७ अंक का स्वामी शुक्र है। कुण्डली में वृष का चन्द्र यानी २ अंक के साथ चन्द्र हो तो उच्च का मानो। इसी तरह मेष का सूर्य - मिथुन का राहू। कर्क का गुरु। कन्या का बुध। तुला का शनि धन का केतु। मकर का मंगल। मीन का शुक्र हो तो उच्च का ग्रह है समझो) मेष का शनि। मिथुन का केतु। कर्क का मंगल कन्या का शुक्र। तुला का सूर्य। वृशचिक का चन्द्र। धन का राहू। मकर का गुरु। मीन का बुध नीच ग्रह हैं।) यदि कुण्डली में या गोचर में यदि शनि राहू के घर में यानी राहू के संग हो या राहू शनि यानी १०-११ अंक के साथ राहू हो तो समझो राहू मित्र के घर में बैठा है लाभ प्रद है। यदि गुरु चन्द्र के घर यानी ४ अंक के साथ बैठा हो तो लाभ प्रद है। यदि चन्द्र ९-१२ अंक के साथ हो तो लाभ है मंगल ५ अंक के साथ सूर्य १-८ अंक के साथ लाभ प्रद है। परन्तु नीच का ग्रह न हो। यानी सूर्य ७ अंक के साथ हो तो समझो नीच का होकर बैठा है। यदि सूर्य १-८ अंक के साथ है तो हानि प्रद

कुण्डली देखने का तरीका समझो

पत्रा के गोचर में १२ कोष्ठ है। १२ ही रासी हैं। इसका यह हिसाब है कि चाहे जिस लगन की कुण्डली हो। चाहे कोई ग्रह किसी कोष्ठ में बैठे हों, जिस अंक के साथ जो ग्रह बैठा होगा उसी अंक की रासी का ग्रह माना जाता है। एक अंक को मेष रासी दो अंक को वृष रासी ३ अंक को मिथुन रासी ४ अंक को कर्क रासी ५ अंक को सिंह रासी ६ अंक को कन्या रासी ७ अंक को तुला रासी ८ अंक को वृश्चिक रासी ९ अंक को धन रासी १० अंक को मकर रासी ११ अंक को कुम्भ रासी १२ अंक को मीन रासी कहते है। अब यह समझो गोचर में १ अंक जिस कोष्ठ में हो वहीं मेष रासी होगी। और १ अंक में जो ग्रह बैठा होगा वह ग्रह मेष रासी का माना जायेगा इसी तरह सब ग्रह का अंकों का हिसाब समझो। और राशीश माने रासी का स्वामी। १-८ अंक का स्वामी मंगल ४ अंक का स्वामी चन्द्रमा ५ अंक का स्वामी सूर्य ३-६ अंक का स्वामी बुध है। ९-१२ अंक का स्वामी गुरु १०-११ अंक का स्वामी शनि है। जिस अंक का स्वामी अपने अंक पर बैठा हो समझो वह स्वग्रही है। अपने घर में बैठा है बलिष्ठ है। बुध-सूर्य-चन्द्र-शुक्र अपने घर से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

फल देखेंगे आप कुछ चिन्ता न करना

मंगल ७-८-४ वाले घर पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु ७-५-९ वें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि-राहु-केतु-७-१०-३ वाले घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। २-७ अंक का स्वामी शुक्र है। कुण्डली में वृष का चन्द्र यानी २ अंक के साथ चन्द्र हो तो उच्च का मानो। इसी तरह मेष का सूर्य - मिथुन का राहु। कर्क का गुरु। कन्या का बुध। तुला का शनि धन का केतु। मकर का मंगल। मीन का शुक्र हो तो उच्च का ग्रह है समझो) मेष का शनि। मिथुन का केतु। कर्क का मंगल कन्या का शुक्र। तुला का सूर्य। वृश्चिक का चन्द्र। धन का राहु। मकर का गुरु। मीन का बुध नीच ग्रह हैं।) यदि कुण्डली में या गोचर में यदि शनि राहु के घर में यानी राहु के संग हो या राहु शनि यानी १०-११ अंक के साथ राहु हो तो समझो राहु मित्र के घर में बैठा है लाभ प्रद है। यदि गुरु चन्द्र के घर यानी ४ अंक के साथ बैठा हो तो लाभ प्रद है। यदि चन्द्र ९-१२ अंक के साथ हो तो लाभ है मंगल ५ अंक के साथ सूर्य १-८ अंक के साथ लाभ प्रद है। परन्तु नीच का ग्रह न हो। यानी सूर्य ७ अंक के साथ हो तो समझो नीच का होकर बैठा है। यदि सूर्य १-८ अंक के साथ है तो हानि प्रद

॥ चन्द्रमा का अरिष्ट ॥

॥ चन्द्र कुण्डली से देखो ॥

यदि वृश्चिक का चन्द्र कुण्डली में हो वह नीच का हो गया हानि प्रद है। यदि यह चन्द्र गुरु के घर यानी ९-१२ अंक के साथ बैठा हो और तो हानि प्रद नहीं है। धन मीन राशी गुरु का घर है। इसी तरह समझो ॥ (चन्द्रारिष्ट) यदि १२-६-८-१-७ वें स्थान पर चन्द्रमा हो और उसे पापग्रह देखते हों तो मृत्यु वत कष्ट होता है। यदि चन्द्रमा को मंगल देखे तो उसे अग्नि हथियार का भय होता है। यदि चन्द्रमा को शनि राहू केतु देख रहे हों तो शत्रुओं का भय होता है। यदि चन्द्रमा को सूर्य देखते हों तो बात रोग होवे दरिद्र होवे। यदि बृहस्पति देखे तो शुभ फल दायक होवेगा।

॥ बारहों भावों के नाम ॥

कुंडली या गोचर में लग्न ही तनु भाव कहलाती है। दूसरा स्थान धन भाव मानी जाती है। तीसरा स्थान सहज भाव। चौथा स्थान सुहृद भाव। पांचवा स्थान पुत्र भाव। छठा शत्रु भाव। सातवां स्थान स्त्री भाव। आठवां स्थान मृत्यु भाव। नवां स्थान धर्म भाव। दसवां स्थान कर्म भाव। ११ वां स्थान लाभ भाव। १२ वां स्थान व्यय भाव

॥ गर्भ योग ॥

गोचर में जब जन्म रासी से ५वें या सातवें स्थान पर शनि आवे या जन्म रासी से शनि नवीं रासी पर जिस वर्ष पड़े गर्भ रहे। यदि कुण्डली पुरुष की हो तो उसकी स्त्री के गर्भ रहेगा। उस वर्ष जिस वर्ष नवमेश अपनी रासी से ५वें ७वें स्थान पर ११ अंक के साथ हो तो निश्चय गर्भ है या आने वाला है। कहते नवांस रासी उसे कहते हैं। कुण्डली में या गोचर में अपनी लगन या रासी से नवें स्थान पर जो अंक हो उस अंक के स्वामी को नवांश रासी का स्वामी कहते हैं। जैसे नवें स्थान पर १० अंक है तो इस अंक का स्वामी शनि हुआ, यही शनि नौमेश हुआ, यह जिस वर्ष ११ अंक पर स्थित होकर रासी से या लगन से ५-७वें स्थान पर आवेगा, तब पुत्र जरूर रहेगा। जिस वर्ष शनि शुक्र चन्द्र ३-६-११-८-१० वें स्थान पर आवें तो यात्रा होवे। पापग्रह सब ३-६-११वें स्थान में बली होते हैं। पापग्रह यह गोचर में जिस वर्ष इन स्थानों पर आवेंगे कुछ उन्नति होगी। जन्म रासी से पाप ग्रह १ २-४-७-८-१२वें स्थान पर आवे तो प्रायः अशुभ माने जाते हैं। यदि पापग्रह अपनी नवांश रासी में पड़े तो या मित्र के घर हो तो भी शुभ होंगे॥

॥ ग्रहबल किस घर में रहता है ॥

सूर्य मंगल लगन में और दशवें घर में बली होते हैं। शनि लगन से ७वें घर में बली होते हैं। चन्द्र शुक्र लगन से चौथे घर में बलवान होते हैं।

॥ शनि विवरण ॥

शनि गोचर में १-२-१२ वें स्थान पर साढ़ साती कहाते हैं। अपनी रासी से ४-८ वें स्थान पर शनि ढइया कहाते हैं। अपनी रासी से ७-१० वें स्थान पर कंटक कहलाते हैं। यह भी साढ़ेसाती की तरह दुख देते हैं। शनि जब जन्म रासी में आवें तो यात्रा करावे चर्म रोग वायु रोग होवे। दूसरे स्थान पर शनि आवें तो परिवार में मृत्यु होती है। धन हानि भी होती है। चौथे स्थान पर कष्ट प्रद होते हैं। १२वें स्थान पर प्रीति व्याधियां आती हैं। चौथे स्थान पर आने पर मित्रों से संबन्ध विच्छेद हो, मुकदमा होवे, विवाद होवे फजूल में। ८वें पर आवें तो, व्यर्थ खर्च रोगादि होवें। शनि जिस रासी नक्षत्र पर हो उससे अपने नाम नक्षत्र या जन्म नक्षत्र तक गिनो यदि एक ही नक्षत्र दोनों के पड़ें ३ मास १० दिन तक अनेक व्याधियां होवें।

यदि शनि नक्षत्र से अपना नक्षत्र दूसरे से पांचवे नक्षत्र के अन्दर पड़े तो १३मास १०दिन तक विजय में सफलता मिले यदि शनि नक्षत्र से अपना नक्षत्र छठे से ग्यारहवें नक्षत्र तक पड़े तो १ वर्ष ८ मास तक भ्रमण वायु रोग चर्म रोग रहेगा। १२वें नक्षत्र से १५ वें नक्षत्र तक अपना नक्षत्र पड़े तो १३ मास १० दिन तक महा कष्ट कारक समय बीतेगा। यदि शनि नक्षत्र से अपना नक्षत्र १६वे से १८ वे नक्षत्र तक पड़े तो १०मास का समय यश कारक राज कारक होगा, यदि अपना नक्षत्र उससे १९ से २०वें नक्षत्र तक पड़े तो ६मास २०दिन उन्नति तथा सुख रहेगा। यदि अपना नक्षत्र २१ से २२वें नक्षत्र तक पड़े तो ६मास २०दिन महा कष्ट रहे। यदि शनि नक्षत्र से अपना नक्षत्र २३ से २७ वें नक्षत्र तक पड़े तो अनुचित ढंग से लाभ रहे

॥ शनि का शान्ति करने का उपाय ॥

नीलम पहने। काले घोड़े के नाल की अंगूठी पहने। बिना कटी बिना जुड़ी हुई हो। शनि दान जप छाया दान करावे। शनि को भुना चना खावे। काले तिल का लड्डू खावे। काले तिल का तेल लगावे शनि स्तोत्र पढ़े। हनुमान बाहुक हनुमान चालीसा का पाठ करे। हनुमान जी की दक्षिणा की तरफ मुख वाली मूर्ती जो प्राण प्रतिष्ठित हो उसकी पूजा करे वहीं पाठ करे। पीपल पर जल दे रात को दीप जलावे परिक्रमा करे। नीलम पहने। तुला वा कुम्भ रासी वालों को अतिलाभ मकर-वृष रासी वालों को साधारण लाभ रहेगा। मिथुन-कन्या रासी वालों को साधारण शुभ। धन-मीन वालों को कभी अच्छा कभी बुरा लाभ।

॥ शनि स्तोत्र ॥

नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोस्तुते। नमस्ते वभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते। नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते काल कायजे। नमस्ते यम संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च नित्य सबेरे पाठ करे।

शनि यद्यपि पाप गृह है परन्तु मृत्यु वा शत्रु भाव में बैठा हो तो शुभ फल देगा। यदि १ अंक के साथ मृत्यु का भाव में बैठा हो तो उन्नति रहे यदि मेष का शनि हो तो ६-८-१२ वें भाव को बिगाड़ेगा। केवल मेष का शनि तीसरे दसवें भाव को ही बिगाड़ देगा। शनि जन्म दिन वाले दिन जिस स्थान पर कुण्डली में रहता है फिर चलते २ ३० वर्ष में उस स्थान पर आता है। जैसे शनि जन्म राशी में सातवें स्थान पर है तो फिर जन्म राश से सातवें स्थान पर ३० वर्ष में आवेगा॥

यदि सूर्य शुक्र चन्द्र कुण्डली में लगन से १२वें घर में बैठा हो
तो जातक अंधा टेढ़ा काना कुछ न कुछ होगा।

सूर्य बिवरण = सूर्य एक राशी पर एक मास रहता है। जन्म
राशी में जब गोचर का सूर्य आता है तो उदर रोग शरीर पीड़ा
मानसिक व्यथा भोजन में देर सबेर सम्बन्धी तथा मित्रों से झगड़ा
भ्रमण होता है। जब दूसरे स्थान पर जाता है तो दुर्जनों की
संगति नीच स्वभाव मानसिक व्यथा सिर नेत्र में पीड़ा कृषी
व्यापार में हानि। तीसरे स्थान पर जब जाता है तब रोग से
मुक्ति सुख आनन्द सन्मान पुत्र से सुख अभिष्ट लाभ शत्रु
पराजय लक्ष्मी तथा मान की प्राप्ति। जब चौथे पर जाते है तो
भाम कष्ट यात्रा में असुबिधा प्रवबा भोग में अटपटांग
विघ्न। भोजन में विघ्न व्यधायें होती हैं। पांचवें पर जाता है
तो आसक्ती, व्यग्रता असुविधायें. हानियें दीनता बेद। चित्त
की अनिस्थिरता रोग तथा शत्रुओं से भय। छठे पर जावे तो
आनन्द कार्य सिद्धि स्वस्थता धन मान का सुख शत्रुओं का
नाश। सातवें पर कुटम्बी तथा मित्रों से मतभेद। स्त्री वा
सन्तान के रोग से कष्ट उदर रोग कार्य में असफलता।
परदेश यात्रा होवे। आठवें पर जाता है तब बुरे कर्म का फल
मिले।

शत्रुओं से पीड़ा झगड़ा खांसी राज दरबार का भय मिलता है। जब नवें पर जाता है कान्ती की क्षय मिथ्या अपवाद विना कारण धन पुण्य की हानि आमदनी कम रोग मानसिक असान्ती रहेगी। जब १० वें पर जाता है तो धन मिले स्वास्थ सही रहे मित्र कुटुम्ब राजा तथा बड़ों का समागम होवे आनन्द प्राप्त होवे. अभिष्ट सिद्ध होवे। ११ वें पर जावे तो लाभ धन का। उत्तम भोजन नवीन पद बड़ों की कृपा मिले घर में उत्सव हो। जब १२ वें स्थान पर जावे तो जन्म भूमी का त्याग करना पड़े कुटुम से वियोग कार्य हानि पद की हानि अधिक व्यय कठनाइयें आवें। ॥ चन्द्र का बिवरण ॥

चन्द्र एक रासी पर सवा दो दिन रहता है। जब चन्द्र जन्म रासी पर आवे तो रोग हटे सुख मिले आनन्द होवे धन मिले सतकार उत्तम भोजन मिले स्त्री भोग मिले उपहार मिले। २ पर आवे तो मान्सिक असन्तोस, नाना रोग, नेत्र रोग भोजन मनो अनुकूल न मिले। तीसरे अस्थान पर आवे तो धन वस्त्र सुख आरोग्यता मिले, शत्रु पराजय हों। चित्त प्रसन्न धैर्य मिले मन चाही स्त्री का भोग मिले। जब ४ अस्थान पर आवे तो स्वजनों से झगड़ा चित्त की चंचलता

कुक्षि पीड़ा, कार्य हानि, भोजन निद्रा में असुविधा होवे।
जल से भय। पूवें पर आवे तो मार्ग में विघ्न कार्य हानि।
मन में अशान्ति, आसक्ति, धन न मिले, प्रिय पदार्थों की
हानि, वायु तथा गठिया बाय का प्रकोप। रोग होवें। जब
६ठे स्थान पर लाभ धनागमन, यश, आनन्द, शत्रु वा
रोगों की पराजय, स्त्री लोगों से वार्तालाप, घर में निवास
७वे स्थान पर आवें तो धन, सुख ख्याती वाहन मिले
स्वस्थ रहे। शान्ती, भोजन स्त्री सुख मिले। जब ८वें पर आवे
तो रोग, अपच, पिंडली पीड़ा, झगड़ा, चिन्ता, सर्प भय, बुरे
भोजन से भेंट हो। ९वें स्थान पर राजभय, वस्त्रादि हानि
मित्रों से मतभेद, देश त्याग, उदर रोग, व्यापार में हानि,
१०वें स्थान पर अभिष्ट सिद्धि, कार्य सफलता, स्वस्थ रहे
११वें स्थान पर, लाभ, सुख उत्तम भोजन, कुटुम समागम
...भ वस्त्र प्राप्ती मिले, १२वें स्थान पर शोक रहे।
मानसिक शारीरिक व्यथा, मान तथा कार्य धन हानि,
कुटुम घृणा करे चन्द्र ४-८-१२ में अशुभ कहा गया
यदि जन्म समय या कार्य समय चन्द्र पूर्ण हो तो
...ो ८ वे दूसरे स्थान पर फल दायक है। शुक्ल पक्ष

नौमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक चन्द्र शुभ ग्रह माना गया। बाकी तिथियों में मध्यम नीच माना गया। इसी को क्षीण चन्द्र हीन चन्द्र दुर्बल चन्द्र कहा गया है। अष्टम चन्द्र अति हानि प्रद है।

॥ मंगल का विवरण ॥

मंगल एक रासी पर डेढ वर्ष रहता है। जन्मरासी अथवा नाम रासी हो इस पर स्त्री से भेद, ज्वर, व्रण, कष्ट, दुर्जनों से कष्ट भ[illegible] कुटुम से मतभेद होवे। २ स्थान पर बल हानि, मान्सिक असान्ति, कार्य में असफलता, बचन में कठोरता, दुर्जनों की संगति, राजा, चोर, अग्नी, पित्त रोगादि से भय रहता है॥ ३ पर धन, खाने के पदार्थ, ऊनी वस्त्र, आरोग्यता शत्रू की पराजय होती है। ४ स्थान पर आवे तो शत्रु वृद्धि धन की कमी रहे। स्वजनों से विरोध, मान्सिक कष्ट रहे, अशुभ काम में मन लगे, ज्वर, रुधिर, उदर रोग होवे। ५वें पर धन हानि रहे, रोग होवे भोजन में देर, पाप कर्म भोग हो, कान्तो हीन शत्रु पीड़ा दे, सन्तान दुख दे। छठें स्थान पर सुख हो,

अन्न धन वस्त्र स्वर्ण मिले, ख्याती होवे, लाभ हो शुभ
विचार आवे, शत्रु से निर्भीकता आवे। ७वें स्थान पर
धन का नाश, भोजन वस्त्र कुटुम स्त्री भाई सन्तान से
असन्तोष, उदर रोग होवे। ८वें पर आवें परदेश वास
कार्य हानि पद च्युति रोग ऋण द्वारा मान हानि, शस्त्र
से प्यार होगा। ९वें स्थान पर अनादर हो शरीर पीड़ा, धातु
क्षय से दुर्बलता, धनाभाव, उग्रता, रोजगार से हटना हो,
१०वें पर विदेश यात्रा, रोग, दुख, निकृष्ट भोजन, रोजगार
में विघ्न किसी मत से दशवें पर शुभ होते है। ११वे पर
आरोग्यता, कार्य असफलता, धन वस्त्र प्राप्ती आनन्द मिले,
१२ स्थान पर धन खर्च, परदेश वास, संतप्त रहे। रोगी
होवे, नेत्र रोग हो, कुटुम से अनबन होवे।

॥ बुध का विवरण ॥

बुध एक राशी पर १ मास रहता है।
बुध जन्म राशी पर आवे तो जेल हो, चुगलखोर मिलें, धन हानि कुटुम से विरोध, स्वागत हीन, कुसमय में भोजन मिले। दुष्टसंग मिले। २ स्थान पर आवे आनन्द धन सुख, अच्छे व्यक्ति मिलें, किसी मत से अनादर होता है। तीसरे स्थान पर शत्रुभय हो कुटुम से झगड़ा धन हानि किसी मत से मित्र प्राप्ती हो निर्भय। ४ स्थान पर धन प्राप्ती, मातृ सुख, । ५वें स्थान पर अचानक झगड़ा पीड़ा, सन्तान वा स्त्री से वियोग, अनबन, मृत्युभय जोड़ों में गर्मी के कारण दर्द रहे। छठे स्थान पर आवे तब सब प्रकार शान्ति। ७वें पर पीड़ा, धन सुख हानि, मित्रों से झगड़ा, राजभय, शरीर में दर्द रहे। ८वें पर आवे तब धनपुत्र सुख बुद्धिविकास हो, चित्त में असान्ति, भोजन में अरुचि, जबरदस्ती झूठ बोलना पड़ेगा। ९वें स्थान पर कार्यों में विघ्नता, खेद, पीड़ा, पित्त से पीढ़ित रहे। अपवाद होवे। १०वें स्थान पर नये पद की प्राप्ती, वाक्य में चतुराई, शत्रु की हार सुख हो, केवल भोजन में असुविधा, मन में दुख अनादर, अपवाद हो। ११वें पर सुख, यश, धनागमन, कुटुम मित्रों से मित्रता हो। १२वें स्थान पर सुख हानि, चित्त में सन्ताप, झगड़ा, कार्य हानि, भोजन में अरुचि रहे।

॥ गुरु महाराज का विवरण ॥

गुरु महाराज एक रासी पर १२ मास रहते हैं। जब गुरुजी जन्म रासी अथवा नाम रासी पर आते हैं तो भय, मान हानि राजभय, रोजगार में झगड़ा। मान्सिक व्यथा पदार्थों की हानि २ स्थान पर धन सुख ख्याती उन्नति शत्रु की पराजय, कान में सोचे, ३ स्थान में पीड़ा, झगड़ा, विघ्न, रोग हो फजूल झगड़ा। झंझट हों पदच्युति हो। शरीर पीड़ा कुटुम से भी झगड़ा होवे। ४ स्थान पर धन कान्ती की हानि, मान्सिक व्यथा, शत्रु बढ़ें, कुटुम से असुविधा, देश का त्याग करना पड़े। ५ वें स्थान पर सुख उन्नति धनागमन कार्य सफलता, पद प्राप्ति, घर से सुख रहेगा। छठे स्थान पर आवें तो शोक, कुटुम से झगड़ा, अग्नि राजा से भय, घर से उदासीन रहे। ७ वें स्थान पर राजा से मान हो। उत्तम भोजन कार्य सफलता, आरोग्यता बुद्धि में विकास आवे। ८ वें पर जेल की सम्भावना, रोग, शोक, चोर, अग्नी भय, राज भय, क्रोध बढ़े कान्ती घटे, पदच्युति, शरीर कष्ट, हानियें हों। ९ वें पर धन पुत्र से सुख मकान प्राप्ति, जमीन खरीदे। विचारशीलता। १० वें पर [illegible] हानि, अपवाद दीनता, व्यर्थ भ्रमण करना पड़े।

११ वें पर धन प्रतिष्ठा आनन्द कान्ती की वृद्धि। सफलता, बुद्धि बल, शत्रु हानि। १२वें पर दरिद्रता विश्वास पात्रों से कलंक स्थान त्याग, मुकद्दमें बाजी, कभी २ शुभ काम में धन खर्च होवे

शुक्र एक रासी पर १मास तक रहता है।

॥ शुक्र महाराज का बिवरण ॥

शुक्र जब जन्म रासी पर आता है तो धन सुख प्राप्ती, शत्रु नाश बच्चा दुराचारी पैदा हो। २ स्थान पर धनागमन स्त्री सुख, मान, आरोग्यता, प्रसन्नता आवे, सज्जन से भेंट होवे। ३ स्थान पर रोजगार हानि, धन हानि, व्यापार में गड़बड़ी, शत्रु वृद्धि होवे। ४ स्थान पर सर्व प्रकार सुख शान्ति, ५वें स्थान प- नौकर कुटुम से प्रीति अन्न धन लाभ भोजन मिले, सौभाग्य मिले। ६ स्थान पर हानियां मनो व्यथा, सातवें स्थान पर शोक बड़े परिश्रम से जीविका चले। जनेन्द्री में रोग होने क भय। अपमान हो। ८वें स्थान पर सर्व प्रकार शान्ति सुख रहे ९ वें स्थान पर भी सर्व प्रकार शान्ति। १०वें पर हर प्रकार कष्ट ११वें स्थान पर सफलता सुख धना गमन। १२वें पर कार्य विघ्न चोर से भय। किसी के मत से शुभ है।। जैसा घटे समझे।

॥ शनि बिवरण ॥

शनि जब जन्म राशी पर आता है तो ढाई वर्ष रहता है। बुद्धि भ्रष्ट करदेता है। शरीर निस्तेज रहे। शारीरिक मानसिक पीड़ा कुटुम से झगड़ा। नाना प्रकार के रोग। दूसरे स्थान पर भी ढ़ाई वर्ष रहते हैं। नाना प्रकार का क्लेश। बेताब झगड़ा, स्वजनों से बैर, धन हानि, कार्य में असफलता। तीसरे पर भी ढ़ाई वर्ष रहते हैं। आरोग्यता, सुख, पद मिले, कार्य सफलता, नौकर मिले, दुराचरण बढ़े। चौथे पर शत्रु बढ़े, रोग हों, स्थान परिवर्तन हो, धन हानि हो स्त्री कुटुमसे वियोग, केवल अन्न प्राप्ती होवे। पूवें पर असान्ति कार्य सफलता न होवे, धन सुख की हानि, कुटुम से मुकदमेबाजी चले। पुत्र वियोग होवे। ६ स्थान पर शत्रु से विजय मकान बनाने का सौभाग्य मिले। ७ वें पर रोग लगे मानसिक व्यथा धनहानि परदेस बास हो। ८ वें पर द्रव्य मिले, कार्य हानि, निस्फलता, अस्त व्यस्थ ...रोग रहे। ९ वें पर दुख, रोग, शत्रु वृद्धि, कभी २ धन प्राप्ती। १० वें पर दुख, मानसिक व्यथा, पाप कर्म नौकरी ...पार में विघ्न, दिल में धड़कन, निर्धनता। ११ वें में ...न मिले, रोग जाय, उच्च अधिकार स्त्री सन्तान से सुख,

१२वें पर क्षति, झगड़ा, निर्धन्ता, दूरयात्रा खर्च अधिक मानसिक
व्यथा, जिस वर्ष दूसरे स्थान पर यह आता है उस वर्ष खर्च अधिक
अचानक धन हानि की सम्भावना, स्वास्थ खराब रहेगा, अशान्ति
रहेगा। जिस वर्ष रासी पर रहे शरीर कान्ति घटे, स्वास्थ बिगड़े
चित्त असान्त रहे। धन का व्यर्थ खर्च, कार्य में विघ्न, असफल
१२वें स्थान पर बन्धुओं से अनायास झगड़ा करा देता है। और
परिवार में किसी को रोग किसी को मृत्यु होवे। शनि जब ४थे
आवें तो निवास स्थान परिवर्तन जरूर कर देता है। ७वें स्थान
परदेश बास जरूर कराता है। यदि ४अंक ८अंक १-२-६
अंक के साथ हो तो जरूर हो जाना पड़े। १०वे स्थान पर आवे तो
व्यापार नौकरी में जरूर गड़बड़ी होगी। जिस वर्ष शनि खराब
रहते हैं प्रायः सब ग्रह अच्छे फल नहीं देते। जिस वर्ष शनि
शुभ फल देगा उस वर्ष सब शुभ ही रहेगा। गुरु और राहु
अच्छे नहीं रहते,

॥ राहू केतु बिवरण ॥

राहू केतु एक रासी पर १८ मास रहते हैं। जन्म समय यह जिस अंक पर रहेगा उसी के स्वामी का फल देगा जैसे ३ अंक पर है ३ अंक का स्वामी बुध है, ३ माने मिथुन रासी हुई। तो बुध का जो फल होगा स्थान भेद से हो मिलेगा, बुध फल बुध के बिवरण में पीछे देखलो लगन में अथवा रासी में राहू सदा दुखद रहते हैं। दूसरे स्थान पर निर्धन बनावें नाना प्रकार के कष्ट देवे। तीसरे पर लाभ प्रद रहते है। चौथे पर बैर भाव कराते है। ५वें पर शोकातुर रहे। छठे पर धन लाभ। सातवें पर कलह करावे। आठवें पर सर्व प्रकार की पीड़ा। नवे स्थान पर पाप कराते हैं। १०वें पर हानियां। ११वें पर लाभ। १२वें पर हानि।

॥ महादशा फल ॥

सूर्य की महादशा में धन नाश शरीर तपे। चन्द्र की महादसा में धन धर्म की प्राप्ती। मंगल की महादशा में रोग, मृत्यु, शस्त्र से भय, कलह, एक्सीडेन्ट होवे। बुध की महादसा में धन प्राप्ती। गुरु की महादसा में सम्पत्ति मिले। शुक्र की महादशा में अभिष्ट सिद्धि हो। शनि की महादशा में आलस प्रधान रहे। हानि प्रधान

राहु की महादशा में जेल होने की सम्भावना है। (केतु की महादशा में मुकदमें बाजी कलह अशान्ति रहे॥

॥ राहु केतु विचार॥

यदि राहु को जानना हो कि मौजूदा रासी पर कब तक रहेगा। तो तुम पत्र से राहु को देखो किस रासी गत होकर किस रासी रासी पर कितने अंश कला विकला पर राहू है। जैसे राहू के नीचे ७।१८।४४।५६ लिखा है। तो समझो तुला गत वृश्चिक रासी पर १८ अंश ४४ कला ५६ विकला पर राहू है तो तुम ३० अंश में से १८ अंश ४४ कला ५६ विकला घटो ६० से गुणा करदे। फिर कला जोड़ दे। पश्चात १८ महीना जो राहु की अवधी है उस संख्या से गुणा करदे। इसको १८०० से भाग दे दे। फिर ६० से शेष गुणा करके १८०० से भाग दे दे। फिर ६० शेष को गुणा करके १८०० से भाग दे दे। बस तीन बार भाग दे। जो भाग फल आवे वही मास दिन दंड है मतलब इतने मास दिन दंड तक राहु इस मौजूदा रासी पर रहेगा। यह सदा उल्टा चलता है बिना गणित के नहीं समझ में आता है कब तक और रहेगा। आगे उदाहरण रूप में गणित देखो।

तीस अंश को कलायें बनाओ	३० अंश को ६०× १८०० कलायें बनी
३० अंश में से १८।४४। अंश कला घटाओ	

३०।
१८।४४
११।१६
६०×
६६०
१६+
६७६×१८
१८००)१२१६८(६ मास
१०८००
१३६८
६०×
१८००)८२०८०(४५ दिन
७२००
१००८०
९०००
१०८०
६०×
१८००)६४८००(३६ दंड
५४००
१०८००
१०८००
×

इसका मतलब
६ मास ४५ दिन ३६ दिन तक राहू वृश्चिक रासी पर और रहेगा।

४५ दिन का १ मास १५ दिन होता है। तो समझो
७ मास १५ दिन ३६ दंड तक राहू वृश्चिक रासी पर रहेगा।

राहू के अंश पत्रा में जो लिखे हैं उनको तीस से घटा दो तो भी मोटा हिसाब लग जायेगा शेष जो आवे समझो इतने मास और रहेंगे।

दिन मे १२ बजे पहले का इष्ट काल निकालने की रीति

इष्टकाल निकालना सूर्योदय से १२ बजे के पहले तक की रीति

हुआ हो इष्ट काल

यदि किसी बालक का जन्म दिन में १२ बजे के पहले बनाना है इष्टकाल बनाने के पहले देखो घड़ी में क्या बजा है, फर्ज करो। १० बजे हैं, तो जन्म टाइम रेलवे घड़ी का यह हुआ। उस जन्म दिन का देखो पत्रा में आज सूर्योउदय के बजकर के मिनट पर हुआ जो फर्ज करो ५ बजके ४५ मिनट पर सूर्योदय हुआ अब उदय के सहित देखो इस तरह इष्ट काल निकालो। उधार किसी ... भी करके देखो ... उधार

घं मिनट
१० । ० जन्म टाइम है, सूर्योदय बाद का
५ । ४५ – सूर्योदय हुआ। इसे घटा दो एक घंटा उधार लेके
४ । १५ × २।३० से गुणा करदो।
८ । ३०
१२० । ४५०
८ । १५० । ४५०
१० । ३७ । ३० इष्टकाल यह सही बना
१० बजके ३७ मिनट ३० सेकिंड पर जन्म हुआ

हुऐ ६० में से ४५ घटाए १५ बचे

६०
४५
५२

यदि १२ बजे दिन के बाद जन्म हो तो जन्म के समय के घंटा मिनट १२ घंटा जो बीत गया वह जोड़ दो फिर सूर्योदय घटाओ फिर से गुणा करो फर्ज करो २ बज कर २५ मिनट पर जन्म दुपहर को

२ । २५ जन्म टाइम रेलवे का
१२ + बीता घंटा
२ । २५ – सूर्योदय टाइम रेलवे का
५ । ४५

१ घंटा उधार लो ६० हुआ ... हुआ ४५ घटाओ ... एक घंटा बचा ५ नहीं घटा समझो २ बजे का मतलब ... मान कर उधार लिया

इष्टकाल निकालने की
॥ रीति ॥

…घंटा मिनट के हिसाब से इष्टका॰ बनाते हैं तो इसी तरह बनाते हैं।

…तिषमत से दिन सूर्योदय से शुरू होता है। अंगरेजी मत …त को १२ बजे से। यदि बालक का जन्म ४।२० पर …का हुआ है। और उसी दिन सूर्यास्त ६।४५ पर हुआ है तो

घं- मिनट
…।२० जन्म टाइम रेलवे का दुपहर बाद का
१२+ बीता घंटा जोड़ दिया
…।३२
…।४५ – सूर्योदय हुआ घटाया
…।४७ × २।३० गुणा कर दिया
…०।७४
…३० ०।१४१०
…०।३७४।१४१०
६।३६।३० इष्टकाल बन गया
…म हो तो १२ मान कर घटा ले मौजूदा रासी में जोड़ के
…ल घंटा मिनट कला विकला
…विकला के नीचे ५९ से ज्यादा शेष नहीं
… यदि ज्यादा हो तो ६० से भाग दे दो शेष जो
…नीचे रक्खो लब्धि आगे जोड़ने में जोड़ दो।
…हो या घटाना दोनों में एक ही बात है।
…के नीचे १२ से ज्यादा न हो अंश के नीचे ३० से

३२ से ४५ नहीं घट सकता १ घंटा उधार लिया उसका ६० मिनट बना तो ६०+३२ जोड़ा ९२ हुआ ४५ अब घटाया ४७ बचा उधर ३ घंटा बचा उससे ५ नहीं घट सकता तो ४ बजे को अंगरेजी में १६ बजे भी कहते हैं १६ मान कर घटा और एक तो उधार चला गया १५ बचा १५ में से ५ घटाया १० बचा अंक रखने को रखने की रीति समझ लो।

```
  ३७४
  २३+
६०)३९७(६
   ३६
   ३७

६०)१४१०(२३
   १२०
   २१०
   १८०
    ३०
```

…न हो यदि हो तो रासि से उधार लोगे तो ३० अंश होगा। अंश से उधार लोगे तो …कला में लोगे तो ६० विकला होंगी। विकला से ६० प्रति विकला होंगी।

॥ मारकेश विचार ॥

- जातक की कुंडली में लगन से दूसरे और स्थान सातवें स्थान पर जो अंक हो उस अंक के स्वामी को मारक गृह समझो। जैसे दूसरे स्थान पर ४ अंक है तो चार माने कर्क राशी कर्क का स्वामी चन्द्र है यही मारक गृह हुआ। इस मारक गृह को जो गृह पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो उस गृह की अन्तर्दशा में जातक को खतरा ज्यादा है यह ध्यान रक्खे। द्वितियेश सप्तमेश अपनी अन्तर दशा में मारक नहीं होता है। जिस वर्ष मास में अपनी राशी से गोचर में अष्टमेश के द्वादशांश या अष्टमेष के त्रिकोण में गुरु बैठे हो तो मृत्यु होगी। या लगन के दूसरे स्थान से त्रिकोण में या चौथे घर में गुरु हो तो मृत्यु होगी। दूसरा प्रकार राहु के अंश कला जो सपस्ट करने से आये हों उन अंशो को ६० से गुणा करके कला बनालो। अंश में इसी कला

गुणा करो जैसे अंश - कला १८ - ४४ ६०× १०८० ४४+ ४१२४ यह कला बनगई	फिर सूर्य और गुरु जो सपस्ट हों उनको भी कला बना कर जोड़ ले, या सूर्य गुरु की संख्या जोड़ कर ६० से गुणा करके कलायें बनालो फिर इन कलाओं में राहु की कला से गुणा करदे। इधर चन्द्र सपस्ट करके उसको अंश को कला बना के राहु की कला जो

गुणाकर के आई हों उस संख्या में चन्द्र कलाओं से भाग दे दे। फिर जो राशी अंश कला बनेंगे उस राशी अंश कला पर जब जिस मास में सूर्य आयेंगे निश्चय मृत्यु होगी।

पत्रा के हिसाब से दीर्घायु मध्यायु अल्पायु देखने का तरीका यदि कुण्डली में लगन का स्वामी पुनर्वसु स्वाति श्रवण, धनिष्ठा, शतभीषा नक्षत्र में हो और अष्टमेष भी इन्हीं चर नक्षत्र में हो तो समझो दीर्घायू है।

यदि लगन का स्वामी रोहिणी - उ.फा. उ.षा. नक्षत्र में हो और अष्टमेष द्विस्वभाव वाले नक्षत्र

में हो तो भी दीर्घायु हो। दीर्घायु १२० वर्ष तक प्रमाण है यदि लगन का स्वामी चर नक्षत्र में अष्टमेष स्थिर नक्षत्र में हो तो मध्यायु इसका प्रमाण ८० वर्ष का है।

यदि स्थिर नक्षत्र में लगन का स्वामी चर नक्षत्र में अष्टमेष हो तो मध्यायु। अल्पायु ३२ वर्ष तक प्रमाण

दूसरा प्रकार ॥ होरा लगन की संख्या - जन्म लगन की संख्या लगन स्वामी की संख्या मतलब जैसे लगन का स्वामी बुध तो बुध सपस्ट की संख्या, अष्टम स्थान पर जो अंक होता है उस अंक का स्वामी जैसे लगन से आठवें स्थान पर ६ अंक हो तो ६ माने कन्या रासी तो कन्या का स्वामी बुध हुआ यही बुध अष्टमेष कहलाता है। चन्द्र सपस्ट की संख्या। शनि सपस्ट की संख्या। यह सब जोड़ डालो फिर जोड़ फल से १२० घटा दो। जो शेष आया वही आयु प्रमाण समझो। मध्यायु की जानकारी के वास्ते घटी संख्या में ८० जोड़ दो जो शेष आई मध्यायु होगी। यदि अल्पायु जानना हो तो मध्यायु की संख्या में ३२ वर्ष जोड़ दो जो आवे जोड़ कर अल्पायु हुई। मौजूदा अल्पायु देखना हो कि कितनी रह गई आयु ३२ से अल्पायु घटा दो शेष जो बचा उतना टाइम रह गया आयु का।

आयु का तीसरा उपाय देखो = कुण्डली में देखो अपनी या जिसकी देखनी हो देखो लगन का स्वामी और आठवें घर का स्वामी, किस अंक के साथ बैठा है। कुण्डली में जहां जो अंक है उस के अंक के स्वामी का वह घर है। जैसे यह कुंडली में मिथुन लगन है तो इस लगन का स्वामी



बुध हुआ पर १२ अंक (मीन) रासी में बुध बैठा है। और आठवें घर का स्वामी शनि है चूंकि १० अंक आठवें स्थान पर है तो १० माने मकर इसका स्वामी शनि हुआ यह शनि देखो लगन से चौथे घर में बैठा है चौथे घर में ६ अंक है ६ माने, कन्या ती कन्या रासी में बैठा है। अष्टमेष द्विस्वभाव की रासी में बैठा है, मीन रासी भी इसी द्विस्वभाव रासी में बैठा है। रासी कहो या लगन एक ही बात है। पत्रा के हिसाब से मध्यायु हुई पत्रा में आयु बिचार चक्र बना रहता है। (अब देखो शनि चन्द्र किस रासी में है, इस कुंडली में शनि कन्या रासी में चन्द्र कुम्भ में तो कुम्भ स्थिर रासी हुई। कन्या द्विस्वभाव रासी हुई पत्रे के हिसाब से दीर्घायु हुई। इसी तरह अल्पायु देखो।।

॥ नक्षत्र वा रासी गुरा ॥

रोहिणी	मृगसिरा	कृतिका	भरणी	अश्वनि
ध्रुव स्थिर	मृदु मैत्री	मिश्र	क्रूर उग्र	लघु क्षिप्र
पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा · पू · फा ·	उ · फाल्गुनी
चर	लघु क्षिप्र	तीक्षरा दारुण	उग्र क्रूर	ध्रुव स्थिर
हस्त	चित्रा	स्वाती	विसाखा	अनुराधा
लघु क्षिप्र	मृदु मैत्री	चर -	मिश्र	मृदु मैत्री
ज्येष्ठा · मूल	पूर्वा · षाढ़	उत्तरा षाढ़	श्रवण	धनिष्ठा
	उग्र क्रूर	ध्रुव स्थिर	चर	चर
शतभीषा	पूर्वा भाद्र	उत्तरा भाद्र	रेवती	
चर	उग्र क्रूर	ध्रुव स्थिर	मृदु मैत्री	

गृह रासियां

चर	स्थिर	द्विस्वभाव
मेष	वृष	मिथुन
कर्क	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धन
मकर	कुम्भ	मीन

पापगृहों की रासियें

१ – मंगल
५ – सूर्य
८ – मंगल
१० – शनि
११ – शनि

॥ मारकेश निवारण का उपाय ॥

सूर्य का मारकेश हो तो हरिवंश पुराण सुने। चन्द्र का मारकेश हो तो चन्द्रायन व्रत या भागवत सुने। मंगल का मारकेश हो तो रघुवंश पुराण या रामायण अखण्ड करावे। बुध का हो तो १०८ पाठ विष्णु सहस्त्रनाम पाठ या सवा लाख गायत्री जपावे। शुक्र का हो तो शिवपुराण या १०८ रुद्री पाठ करावे। शनि का हो तो सवा लाख महा मृत्युंजय जपावे। राहू का हो तो शिव महिम्न करावे। सर्वारिष्ट शान्त करना हो तो नृसिंह मन्त्र सवा लाख सविधि जपावे।

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्रौं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् क्ष्रौं ह्रीं ऐं ॐ नमः। ४१ अक्षर का मंत्र है यह।

॥ गृहों के अरिस्ट में कीमती नग न पहन सके तो यह पहने॥
या यह जड़ी पहनादे॥

सर्वारिष्ट में नवरत्न पहना जाता है। यदि न पहन सके तो बेल को जड़ पूजन करके सूर्य शान्ति में पहने। चन्द्रारिस्ट में रिवन्नी को जड़ पूजन करके पहने। मंगल अरिष्ट में नाग जिह्वा अनन्तमूल लता को जड़ (जड़ी या)। बुध में बिधारा की जड़। गुरु अरिस्ट में भंगरा की जड़ या बमनेठी की जड़ पहने। शुक्र के वास्ते मजीठ की जड़। शनि वास्ते बेंत को पहने अमलबेंत की जड़ हो। राहू के वास्ते मलियागिरि चन्दन की जड़ जो फला फूला न हो। केतु के वास्ते असगंध की जड़ फूली फली न हो।

	गृहों की महादशा वा अन्तर्दशा खराब में दान
सूर्य = माणिक्य पहने	सूर्य की में स्वर्ण का कमल दान करे।
चंद्र = चांदी ,,	चन्द की में चांदी का कमल, सफेद गाय दान
भौम = मूंगा ,,	भौम की में तांबे का कमल ...
गुरु = पुखराज ,,	बुध की में स्वर्ण का कमल. ...
शुक्र = हीरा ,,	गुरु की मे स्वर्ण का दान ...
शनि = नीलम ,,	शुक्र की में चांदी का पात्र दान ...
राहू = गोमेध ,,	राहू की में सोने का पात्र ...
केतु = लहसुनिया मोती ,,	शनि की में लोहे का पात्र
बुध = पन्ना ,,	केतु की में चांदी का पात्र ...

।। चौघड़ी बनाने की रीति ।।

डेढ़ घन्टे की एक चौघड़ी होती है। १२ घंटे का ८ वां हिस्सा एक चौघड़ी समझो २४ घंटे का १६ वां हिस्सा १ चौघड़ी होती है। इसे समझने के लिये जिस दिन की चौघड़ी निकालनी हो पत्रे में दिन मान देखो जैसे ३१।१५ दिन मान है इसे ८ से भाग दो।

८) ३१।१५ (दिनमान
२४ (३ दंड
७×६०
४२०
१५+
८) ४३५ (५४ पल
४३२
३×६०
८) १८० (२२ विपल.
१७६
४×६०
८) २४० (३०
२४०
×

दं.	प.	वि.	प्रतिविपल	
३	५४	२२	३०	यह पहली चौघड़ी
			२×	
७	४८	४५	०	यह दूसरी चौघड़ी
३	५४	२२	३०	पहली चौघड़ी में फिर
			३×	
११	४३	७	३०	यह तीसरी चौघड़ी
३	५४	२२	३०	
			४×	
१५	३७	३०	०	यह चौथी चौघड़ी

इसी रीति से चौघड़ी निकाली जाती हैं जिस चौघड़ी में जाना हो उसके घंटा मिनट बना कर

॥ घंटा मिनट बनाने की रीति ॥

से तीसरी चौघड़ी में जाना है तो उसके दं. पल. विपल में से गुणा करके ५ से भाग दे दो। जैसे

११।४३।७।३० है
२×
५) २३।२६।१५।० (४ घं
२०
३×६०
१८०
२६+
५) २०६ (४१
२०५
१×६०
६०
१५+
५) ७५ (१५
७५
५) × ० (०
०
×

घं मि. से.
४ ।४१ ।१५ । भागफल से
५ ।४३ + पर सूर्योदय हुआ
१० । २४ । १५

इसका मतलब १० बज के २४ मिनट १५ सैकिंड के अन्दर दिन में जाय

यदि रात को चौघड़ी निकालनी हो तो ६० में से दिन मान घटा दो

३१।१५ — दिन मान यह है
२८।४५ यह रात्री का मान निकाला।

इसमें ८ से भाग दे दो

८) २८।४५ (३
२४
३×६०
१८०
४५+
८) २२५ (२८
१६
६५
६४
१×६०
८) ६० (७
५६
४×६०
८) २४० (३०
२४०
×

दं. प. वि. प्रति. वि
३।२८।७।३० रात को प
२×

उसी तरह चौघड़ी बनाकर घं मि. बनाके सूर्यास्त के घंटा मिनट जो शेष जो आवें वही घंटा मिन सूर्यास्त के बाद जाने के हुऐ।

मैत्र माने अनुराधा नक्षत्र।

राहू की जानकारी के वास्ते एक सीधा हिसाब है। जब जब राहू १८ मास में ३० अंश बिताता है तो बताओ एक अंश कितने दिन में पास करेगा। इसका हिसाब है १८

$$\frac{१८}{३०} \times \frac{१}{१} = \frac{३}{५}$$ इसको ६० से गुणा। ५ से भाग दो

६ से इसे काटा, १८ मास तो को काटो वह है जो राहू की अवधी है, और ३० का मतलब ३० अंश की एक राशी है इसलिये $\frac{१८}{३०}$ = को काटा ६ से कटा = $\frac{३}{५}$ हुआ

३ × ६०

५)१८०(३६ दिन। इसका मतलब १ मास ६ दिन में
१८०
×

हुआ राहू एक अंश चलता है। पत्रा में अब देखो कितना अंश राहू भोग चुका देखा ८ अंश भोग चुका इसका मतलब ८ मास १२ दिन भोग चुका

सूर्य के कालम में देखो कितने अंश बीते/आधे वैसाख में मेष के सूर्य का अन्त यानी १ अंश बीत गया तो तुम समझो राहू का भी ६ दिन बाद १ अंश बीत जायेगा अब समझो जब सूर्य के १८ अंश बीत गया हो तो तुम समझो १८ में ६ से गुणा कर दो १०८ दिन हुआ तो १०८ दिन का कितना मास हुआ तो ३ मास १८ दिन हुआ

१८
६×
१०८(३ मास
९०
१८ दिन

इसका मतलब २१ मास १८ दिन में राहू के १८ अंश बीत गये। इसी से हिसाब लगा लिया करो राहू कब तक जातक पर रहेंगे।

सम्बत २०३२ में बैसारव शुक्लपक्ष की पंक्तियों में देखो नीचे गृहों के कालम में

५ पंक्ति बैसारव शु ८ रवौ सूर्योदय सपस्ट गृहाः। बुगुरा १५७६ अयनांशाः २३।२७।५० लिखा है

यह अष्टमी तक का है।

	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	
रा	१	३	११	१	११	२	२	७	१	
अं	२	२७	३	२३	२१	१५	२२	७	७	
क	५२	४६	१२	२८	७	४७	४८	४६	४६	
वि	५३	२७	५८	३८	४५	३६	१४	३७	३६	
कलि	५७	५२	४३	६३	११	६२	५	३	३	गति
	३४	१९	४८	५२	४८	५२	५६	११	११	

इस कालम से पत्रे में यह देख सकते हो कि कौन गृह उदित अस्त है जिसका उदय अस्त देखना हो सूर्य अंश से उसके अंश को घटा दो। घटाने पर १२ से ऊपर अंश आवें तो उदित वर्ना अस्त है।

इस कालम में सभी गृह उदित हैं।

सूर्य २ अंश चंद्र २७ अंश मं ३ अंश बुध २३ अंश गुरु २१ अंश शुक्र १५ अंश शनि २२ अंश राहु केतु ७ अंश है। ग्रहों का उदित अस्त यात्रा में बुध शुक्र का देखा जाता है। इसमें शुक्र बुध उदित हैं शुक्र के होरा में यात्रा करे।

...न के अन्त में ... सूर्य ... पहला होरा सूर्य का माना गया। उससे निकट दूसरा होरा शुक्र का। फिर बुध का। चौथा होरा चन्द्र का। पांचवा होरा शनि का। छठा गुरु का। सांतवा मंगल का। आठवां सूर्य का। नवां शुक्र का। दशवां बुध का। ग्यारहवां चन्द्र का। बारहवां शनि का। तेरहवां गुरु का। चौदहवां मंगल का। पन्द्रहवां सूर्य का। सोलहवां शुक्र का। सत्रहरवां बुध। अठारवां चन्द्र का। उन्नीसवां शनि का। बीसवां गुरु का। इक्कीसवां मंगल का। बाइसवां सूर्य का। तेइसवां शुक्र का। चौबीसवां बुध का। उसके बाद जब सूर्य उदय हो तो जिस वार को होरा जानना हो तो पहला होरा उसी वार का 1 घंटे तक समझो। जैसे मंगल का दिन है तो सूर्योदय के बाद 1 घंटा मंगल का ही होरा रहेगा। पश्चात् मंगल के निकट वर्ती गृह सूर्य का होरा दूसरा समझो फिर सूर्य के निकटवर्ती शुक्र का होरा समझो यही क्रम होरा जानने का है। सूर्य जब 24 होरा समाप्त हो गये तो उसके बाद जब सूर्य उदय हुआ तब प्रथम होरा चन्द्रमा का हुआ इस कारण ऋषियों ने इतवार के बाद सोमवार माना

"आयु के भेद"

आयु के 7 भेद माने गये हैं। बालारिष्ट 8 वर्ष तक रहता है। योगारिष्ट 20 वर्ष तक। अल्पायु 32 वर्ष तक इसके भंग से मरण होता है। मध्यायु 70 वर्ष तक रहती है। दीर्घायु 100 वर्ष तक। देवायु इसके ऊपर मानी गई 120 तक। योगाभ्यास द्वारा आयु बढ़ती है उसे असंख्यायु कहते हैं।

धन / सहज भाई का घर	तन	व्यय / लाभ
सुहृद भाव माता का घर		कर्म भाव पिता का घर
पुत्र भाव / शत्रु भाव	स्त्री भाव	धर्म भाव / मृत्यु भाव

॥ होराबिचार ॥

सात गृहों के सात होरा होतेहैं। जो २४ घंटे में उलट पुलट कर आते हैं। कार्य सिद्दि के समय अशुभ समय में भी शुभअवसर प्रदान करते हैं। राज काज में सूर्य का होरा उत्तम होता है। जैसे किसी जज अफसर डीयम आदि से मिलना हो तो। तब या मुकद्दमा सूर्य के होरा में दायर करे। (यात्रा प्रवास शुक्र के होरा में। ज्ञानार्जन बुध के होरा में करे। और सर्व कार्य चन्द्र के होरा में। द्रव्य जोड़ने या बैंक का खाता खोलने में दिक्षा लेने में शनि का होरा उत्तम होगा। बिवाह में गुरु का होरा शुभ है। युद्ध कलह बिवाद, कतल, विष देना, मारपीट मंगल का होरा उत्तम है। यात्रा के दिन चन्द्र गोचर में ३-५-७-१०-११ में हो तो शुभ समझो। ६-१-८ वें स्थान पर मध्यम फल देते हैं। अपनी रासी से गोचर में २-४-१२ वें स्थान पर हो तो उसदिन यात्रा ना करे। दिनरात में १२ संक्रान्ती होती हैं। बृष-कर्क-कन्या-वृश्चिक-मकर-मीन-यह चन्द्र की रासियां हैं। जिसद्दिन इन लगनों में चन्द्र हो यात्रा करे। पूर्व और उत्तर दिशा में चन्द्र बास रहता है। पशचिम दक्षिण में सूर्य ठहरता है। चन्द्र जिस दशा में रहता है जिन रासियों पर बस उन्हीं रासियों को लग्न भी उधर रहती हैं।

जिस दिन जो बार होता है उस दिन सूर्योदय से १ घंटा तो उसी बार का होरा होता है

बार	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
बार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
सू	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
चं	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
मं	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
बु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	मं	श	गु	मं	सू
गु	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	बु	सू	शु	बु	चं
शु	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं
श	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गुरु	मं	सू	शुक्र	बु

॥ सन्मुख चन्द्र की व्याख्या ॥

मे. सिं. ध. पूरब चंद्रा मेष सिंह धन लगन में पूरब को जावें

क. वृष. म. पश्चिम चंद्रा। कन्या वृष मकर लगन में पश्चिम को

कु. तु. मि. उत्तर चंद्रा कुम्भ तुला मिथुन लगनें उत्तर में

कर्क. वृ. मी. दक्षिण चंद्रा कर्क वृश्चिक मीन लगन में दक्षिण में ॥

[illegible]	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
[illegible]	सू	शु	बु	चं	सू	शु	बु	चं	श	गु
बु	चं	श	गु	मं	चं	श	गु	मं	सू	शु
गु	मं	सू	शु	बु	मं	सू	शु	बु	चं	श
शु	बु	चं	श	गु	बु	चं	श	गु	मं	सू
श	गु	मं	सू	शु	गु	मं	सू	शु	बु	चं
सू	शु	बु	चं	श	गु	बु	चं	श	गु	मं
चं	श	गु	मं	सू	श	गु	मं	सू	शु	बु

"क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः"। सफेद गौ के गोबर से चौका लगाकर उसमें बैठकर जप एक लाख करे।

~~पु~~ पुत्रप्राप्ती के लिये शालि बीज से हवन करे।

धन के लिये बेलपत्र से हवन करे। आयु के लिये दूब से। शत्रु नाश के लिये गुगुल से। आरोग्य के लिये तिल से घी से

बांझपन मिटाने के लिये पुष्य नक्षत्र में कमल के बीज यानी (पद्मबीज) पीस कर गाय के दूध से ३ दिन चौथे दिन से पीये। चूर्ण मात्रा १ तोला रहे। दूध आधा सेर। सुबह निहार मुंह दवा लेवे खीर खावे तीन दिन।

दूसरा प्रयोग सिरसा की जड़ रवि को निमन्त्रित कर के सोम को ले आवे पुत्र हेतु वृक्ष से प्रार्थना करे। १ सुपारी १ हल्दी की गांठ २ बतासे पुराना पैसा १ लगा जान चढ़ा आवे सिन्दूर लगावे वृक्ष में।

दूसरे दिन जड़ को पीस कर गाय के घी में कल्हार ले फिर १ तोला रोज़ चौथे दिन से ३ दिन खाले हल्का भोजन करे

...शुभ हो तो- सर्प, अग्नि रोग, ज्वर वृद्धि, जलन, क्षय, अतिसार आदि रोग हों
राजा, देव, ब्राह्मण नौकरों से चित्त में व्यसन उत्पन्न होता है।

चंद्रमा- अशुभ हो तो- पाण्डु रोग, जलदोष, कामलिया, पीनस आदि रोग होवें। स्त्री से प
उत्पन्न रोगों से और कालिका असुर स्त्री गण से व्याकुल रहेगा।

मंगल- अशुभ हो तो- पीनबीज, कफ, शस्त्र, अग्नि, ग्रन्थिरोग, घाव, द्विज रोगों से
पीड़ित रहता है। वीर शैवगण भैरव आदि से शीघ्र भय होता है।

बुध- अशुभ हो तो- गुह्य (गुदा) उदर रोग, नेत्ररोग, वायुरोग, मंदाग्नि, शूल, ग्रहणी रोग से दुखी।
विष्णु भक्त विशेष दुखी करता है।

गुरु- अशुभ हो तो- आचार्य, देवता, ब्राह्मणों के शाप से शोक होता है। गुल्म रोग,

शुक्र- अशुभ हो तो- स्त्री के विकार से प्रमेह रोग, असुरों से दुःख और खास अपनी स्त्री द्वारा
किया कर्म भय देता है।

शनि- अशुभ हो तो- दरिद्रता, निजकर्म, पिशाच, और चोरों से क्लेश होवे

केतु अशुभ हो तो- सन्धि रोग, खुजली, शीतला निकले, दाद एक्जीमा हो- शत्रुकृत्य
रोगों से- अपने आचरण से गिरने से। नीच जातियों से क्लेश होगा।

राहु- अशुभ हो तो- मनुष्यों को मृगी रोग, चेचक, फांसी, संक्रामक रोग, नेत्र रोग,
कीड़े पड़ते हैं ~~कीड़े पड़े~~, प्रेत पिशाचों से भय, कारागार से भय- अरुचि रहे- कुष्ठ रोग होवे।

सूर्य और मंगल राशि शुरु में कष्ट देते हैं जब अरिष्ट इनके आते हैं। शनि चन्द्र
अरिष्ट हो तो बीच समय मनुष्य का खराब गुजरेगा। गुरु शुक्र अरिष्ट हो तो अंत में
फल देते हैं। बुध सम्पूर्ण राशि में शुभ में शुभ, अशुभ में अशुभ फल देते हैं।

हर ग्रह विषम रासि में- ६ अंश तक गुजर जाने पर बाल अवस्था में रहते हैं। फिर ६ से
१२ अंश बीतने की अवस्था में कुमार रूप में रहते हैं। १२ से १८ अंश तक युवा रहता है गृह
१८ से २४ तक वृद्ध गृह रहता है। २५ से ३० तक मृतक गृह की दसा होती है।

और सम रासि में- गृहों की पहले मृतक दशा ~~...~~ अंश तक। फिर युवा दशा ~~...~~ फिर
कुमार फिर बाल अवस्था ६-६ अंश तक गृहों की दशा रहेगी।

मेष मिथुन सिंह तुला धन कुम्भ यह विषम रासी हैं।

वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर मीन यह सम रासी हैं।

॥ गर्भाधान का विचार ॥

गर्भाधान के समय की लगन बनाओ फिर देखो लगन से त्रिकोण एवं पूर्व स्थान में सूर्य हों तो पुत्र का जन्म होता है। गर्भाधान की लगन को शुभ गृह की दृष्टि हो तो जातक दीर्घायु हो, और भाग्यवान होता है। विद्यावान होता है। यदि बलवान गुरु, और बलवान सूर्य बिषम रासी में हो तो पुत्र होता है। बलवान चन्द्र, शुक्र मंगल समराशी में हो तो कन्या का जन्म होगा। गुरु शुक्र सूर्य चन्द्र मंगल ३-६-७-१२ राशी नवांश में हो उन्हें बुध देखता हो तो २ बच्चे होते हैं ३-७ वें स्थान पर सूर्य गुरु हों तो दो बच्चे होते हैं। चन्द्र शुक्र मंगल ६ठे १२ वें स्थान पर हों दो कन्यायें होती हैं यदि दोनों योग हो तो १ पुत्र १ कन्या होगी। ३-५-६-७-११- में शनि स्थित हो तो पुत्र का जानो जन्म होगा। अधिक पक्ष में पुत्र होता है। कृष्ण

यदि सम रासी में

यदि जन्म समय जन्म कुण्डली में चन्द्रमा लगन को न देखे तो जन्म समय पिता का घर होना न कहे। सूर्य यदि मेष कर्क तुला मकर इन चर रासियों में हो या ८।११-१२ इन स्थानों में से किसी स्थान में हो तो पिता को विदेश में था कहो। यदि चन्द्र लगन को न देखता हो यदि सूर्य स्थिर रासी वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ इनमें हो या ८-९-११-१२ इन किसी स्थानों में हो तो पिता उसी देश में रहते हुऐ घर नहीं था कहो। यदि चन्द्र जातक की लगन को न देखे और यदि सूर्य द्विस्वभाव रासी मिथुन कन्या धनु मीन इनमें हो या ८-९-११-१२ इन किसी स्थानों में हो तो स्वदेस और परदेश के मध्य में था कहो।

अगर १-५-८-१०-११- इन अंकों में दो पाप गृह हों, और सूर्य से सप्तम नवम या पांचवे भाव में, होता जन्म समय बालक का पिता बन्धन में होगा कहो। यदि सूर्य जातक की कुण्डली में चर रासी मेष कर्क तुला मकर में हो तो पिता परदेश में बन्धन में है समझो। यदि स्थिर रासी में सूर्य हो तो अपने शहर में ही बंधा [illegible] हैं। द्विस्वभाव रासी में सूर्य हो तो मार्ग में बन्धन में है समझो।

यदि मेष वृष राशी का लगन हो तो जन्म के घर में पूर्व में जन्म बालक का हुआ कहो। मिथुन लगन हो तो अग्नि कोण में हुआ। कर्क सिंह से दक्षिण में। कन्या लगन हो तो नैऋत्य में। तुला वृश्चिक लगन हो तो पश्चिम में हुआ। धनु लगन में हो तो वायव्य में। मकर कुम्भ से उत्तर में। मीन से ईशान में जन्मा होगा। जन्म समय जातक की लगन और चन्द्रमा जहां हो उसके बीच में जितने गृह पड़े समझो उतनी औरतें उस समय हों गी।

यदि बालक जन्म समय से ४ वर्ष में मरजाय तो समझो माता के पाप से मर गया ४ से ८ वर्ष के अन्दर बालक मर जाय तो समझो पिता के पाप से मर गया कहो। ८ से १२ वर्ष में मरे तो अपने पाप से मर गया कहो। जन्म से ८ वर्ष तक बालारिष्ट रहता है। ८ से २० तक दुष्ट गृहों का प्रकोप होता है उसे योगारिष्ट कहते हैं। २० से ३२ वर्ष तक अल्पायु योग होते हैं। ३२ से ७० तक मध्यायु योग रहते हैं। ७० से १०० तक पूर्णायु मानी गई है। १०० से १२० वर्ष तक परमायु में गया है।

॥ बालक मरण विचार ॥

जन्म काल में यदि चन्द्रमा ६-८-१२ वें भाव में रहकर सूर्य को छोड़के मंगल, शनि, राहु केतु गृह से देखा जाता हो तो यदि गुरु ही लगन में क्यों न बैठे हों बालक मर ही जाता है। यदि गन्डान्त नक्षत्र यानी मूलों वाले नक्षत्र में चन्द्रमा हो जन्म समय का चन्द्र सपष्ट करके गणित से देखलो कि पाप गृहों के साथ हो या चन्द्र पाप गृहों से देखा जाता हो तो। या चन्द्रमा मृत्यु भाव में हो और पाप गृह उसे देखते भी हों तो मरेगा। यदि लगन से ५-७ वें भाव में पापगृह के अंक हों यानी पाप गृह की रासी हो और उसमें सूर्य भी हों तो क्रम से पिता माता भाई मामा नानी नाना और बालक भी जल्द नाश हो जाता है।

सूर्य चन्द्र चौथे स्थान में हों, शनि सप्तम में हों, तो माता मरे। यदि लगन से छठे स्थान में पाप गृह हों तो भाई मरे। यदि लगन और चन्द्र पाप गृहों द्वारा देखा जाता हो गुरु केन्द्र में न हों तो माता मरेगी।

शनि के साथ सूर्य चन्द्र १२वें स्थान में हों मंगल चौथे हो तो माता गर्भ के साथ मरे लग्न और चन्द्रमा एक साथ हों या अलग २ हों. यदि पाप गृहों के मध्य में हों तो माता गर्भ सहित मरेगी। यदि शुभ गृह से लग्न और चन्द्रमा देखे जाते हों तो बच जायेगी। यदि ६-८-१२ वां भाव में क्रूर गृह हों इन स्थानों में शुभ गृह न हों तो माता मरे। या पाप गृहों के मध्य शुक्र गुरु हों तो भी मरेगी।

लग्न से ११ वे १२वें भाव में जितने गृह हों उतने जातक के बड़े भाई होते हैं। लग्न से द्वितिय तृतिय भाव में जितने गृह उपस्थित हो उतने छोटे भाई होते हैं।

यदि तृतियेश अथवा मंगल अष्टम भाव (मृत्युभाव) में हो तो भाई का नाश करे। या यह तृतियेश और मंगल यदि पाप गृहों की राशी में हो या पाप गृह के साथ हों भाई होकर भी मर जाता है। तीसरा, नववां, ग्यारहवां, सातवां यह सभी भ्रातृ स्थान होते हैं। इन स्थानो के स्वामी की दशा में मनुष्यों को भाई का लाभ होता है।

यदि लग्न से १२वे स्थान पर सूर्य शनि हों तो अथवा चन्द्र सप्तम स्थान पर हो ७ अंक के साथ तो पिता से तुरन्त बियोग होवे। यदि किसी शुभ गृह की नज़र हो तो दूवर्ज में पिता से बियोग होवे। रात्री के जन्म में चर रासी में चन्द्रमा हो उसे बुध देखे तो कहीं दूर देश में पिता का मरण होगा।

यदि रात्री के जन्म समय चर रासी में सूर्य शनि साथ हो तो विदेश में मरण हो।

से = बहन भाई से ... कर्म व्यापारादि कर्म परा...
का विचार होता है।

...से = बगीचा, कूआ, तालाब, जलाशय, खेती, औषधि निधि खजाना
कंदरादिक में प्रवेश।

...व से = गर्भ, सन्तान, विनय, मंत्रसाधन, सलाहादि, विद्या, विनय बुद्धि...

...से = चोरों से भय, शत्रुओं की लड़ाई - गधा - ऊंट - तथा क्रूर कर्म -
मामा का पक्ष, रोग, सेवकादि को का बिचार होता है।

...व से = व्यापार व्यौहार बिवाद, मिलाप, आना जाना, स्त्री सम्बन्धी
बातों का विचार

...भाव से = नदी में तैरना मार्ग सम्बन्धी बातें, किला, विषम स्थान, दुष्ट
शत्रु से भय, नष्टता, रण, व्याधि, ग्रहछिद्र मृत्यु,

...भाव से = नदी, तालाब, कुआ बावली, गौशाला, यात्रा, देव मन्दिर -
मठादि और धर्म का विचार

...म भाव से = राज्य, मुद्रा (मोहर) पुण्य, स्थान, पिता, प्रयोजन, वृष्टि,
आकाश सम्बन्धी बातों का

...यारहवे भाव से = हाथी - घोड़ा - पालकी - वस्त्र - अन्न, सोना, कन्या, विद्या
धन का लाभ

...बारहवे भाव से = त्याग - भोग - दूसरे से कलह, दान, इष्ट वस्तु, खेती
सब प्रकार के खर्च की विचार करे।

चाहे जो भाव हो, अपने स्वामी अथवा किसी शुभ ग्रह से देखा जाता
या शुभ ग्रह के युक्त हो वही भाव की वृद्धि होती है। जो पाप
से युक्त भाव हो, पाप ग्रह से देखा जाता हो तो वही भाव हानि का

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि - राहु - केतु - गुरु - मंगल
७ - ७ - ७ - ७ - ७ - ३ - १० - ६ - ७ - ७ - ३ - ५ - ७ - ६ - ४ - ८ - ७
१२ १०
इन स्थानों को पूर्ण नजर से देखता है।

नेत्रविचार = यदि शुक्र चन्द्र धनेश यानी दूसरे अंक का स्वामी तीनो एक जगह हों तो बालक को रतौंधी आती है। सूर्य शुक्र और लगन का स्वामी अस्त हो तो मध्यम दृष्टि वाला बालक होगा। लग्नेश - धनेश - सप्तमेश - नवमेश - पंचमेश षष्ठमेश अष्टम भाव में प्राप्त हों और शुक्र लगन से सम्बन्ध करता हो तो जातक नेत्र हीन होवे। शुक्र पंचमेश षष्ठेश के साथ लगन में हो तो राजा के कोप से नेत्र में विकार होता है। यदि धनेश और मंगल दोनों लगन में हों तो जातक को कर्ण का रोग होता है।

धन वृद्धि विचार = जन्म काल में धनेश जहां स्थित हो उस भाव की राशी की विशेष वृद्धि होती है। वह राशी जिस दिशा की होती है उसी दिशा में उसे द्रव्य लाभ होता है, वह राशी गृह यदि वक्री हो यानी राहु केतु यह वक्री होते हैं। और भी कभी २ वक्री होते हैं, बात तो जन्म काल के समय की है। यदि धनेश वक्री हो तो सब दिशा में लाभ रहेगा। यदि धनेश लाभ स्थान में हो लाभेश धन स्थान में हो तो या यह दोनो केन्द्र में हों तो जातक धनवान कहलाता है। यदि धनेश १२वें छठे स्थान में हो। लाभेश धन भाव में हो, या लाभेश छठे ८वें अस्थान में हो तो, या व्यय भाव में हो तो हरस्थिति में धन नाश होता है। यदिगुरु व्यय भाव में हो धनेश निर्बल हो और शुभ गृह लगन न देखता हो तो धन नाश होता है। यदि लग्नेश धन भाव में हो धनेश लाभ भाव में हो या लाभेश लगन में हो तो निधि आदि धन जातक को प्राप्त होता है। लगन और लाभ भाव में जो अंक हो उस का स्वामी उसी अंक के साथ हो तो बहुत धनवान होता है। यदि धनेश लाभेश अपने मित्र के घर हो उच्च स्थान का होकर लाभ स्थान में बैठा हो तो, अधिक धन हो यदि लाभेश धनेश आपस में मित्र हों और दोनों कहीं लगन में बैठे हो तो अधिक धनवान होता है। यदि लग्नेश धनेश लाभेश एक साथ लगन में हों तो करोड़पति होता है।

"लगनादि से विचारने योग बातें"

लगन से = सुख, आयु, अवस्था, जाति, आरोग्यता, शरीर के लक्षण क्लेश, आकृति, रूप रंग

धन भाव से - मोती, माणिक्य, रतन, धातु - धन, वस्त्र, अश्व, कर्म तथा मार्ग मार्ग सम्बन्धी कार्य देखे जाते हैं।

बालक मरण योग:-

यदि क्षीण चन्द्र लग्न में पाप ग्रह केन्द्र में या अष्टम में हो तो बालक मरे। ८वे छठे में शुभ ग्रह पाप गृहों से देखे जाते हों तो बालक १ वर्ष मास में मरेगा। यदि चन्द्रमा के नवांस में सप्तस्थ मंगल हो शुभ गृह की नज़र से रहित हो तो बालक जन्म नक्षत्र से ७ वें नक्षत्र में मरेगा। यदि शनि भौम सूर्य पुत्र स्थान में हों तो भी ७वें नक्षत्र में बालक समझो मरेगा। यदि एकसाथ शनि मंगल सूर्य ८वें छठे स्थान पर हो शुभ ग्रहों की नज़र न हो तो तुरन्त बालक मरेगा। यदि लगन का स्वामी नीच रासी में हो या अष्टम स्थान में बैठा हो, और शनि भि सातवें स्थान पर हो तो मृत्यु कारक होगा। यदि सूर्य त्रि कोण (आपोक्लिम) में यानी ३-६-९-१२ वे घर में हो इसमें सूर्य नीच बलहीन होता है। २ मास या ६ मास में बालक मरे।

यदि चन्द्रमा लगन से ६-८-१२ में हो पाप गृह देख रहे हों तो भी मरेगा। यदि शनि ७-१- में हो जलचर रासी में वा वृश्चिक रासी में चन्द्र हो शुभ गृह केन्द्र में हो तो जातक मरेगा।

यदि बृहस्पति मंगल के घर हो या नीच रासी (मकर) में हो तो एक मास में मरेगा। यदि मंगल सूर्य शनि अष्टम में हों एक मास में मरे। जिस नक्षत्र में केतु उदय हो रहा हो और बालक उस समय हो तो दो मास में मरे। यदि लगन और ७वें घर में पापग्रह हों, या क्रूर गृह शनि मंगल सूर्य से युक्त चन्द्र को कोई शुभ गृह न देखे तो शीघ्र मरे। क्षीण चन्द्र १२वें हो पापग्रह लगन का स्वामी, अष्टम स्थान में हो यदि केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो तो शीघ्र मरे। यदि क्रूर गृह से युक्त चन्द्रमा ७वें १२वें ८वें वा लगन में हों शुभ ग्रह केन्द्र में हो न देखते हों तो भी मरे।

यदि चन्द्र छठे ८वें घर में हो शुभ गृह की नजर न हो तो ८ वें वर्ष मरे। पाप
ह देखते हों तो शीघ्र मरे। यदि लगन में चन्द्र पाप ग्रह के साथ हो तो भौम
वें स्थान पर हो तो माता पुत्र सहित मरेगी। स्वामी दोनों मरेंगे। यदि सूर्य
गन में हों तो माता पुत्र किसी शस्त्र से मरेंगे। लगन में सूर्य वा चन्द्र
और या त्रिकोण पांच वें स्थान में वा ८ वें में। स्थित पाप ग्रह बलवान हों
न ग्रह की नज़र न हो तो शीघ्र मरे। यदि शनि १२वें सूर्य नवें चन्द्र
गन में मंगल ८वें में हो इनको बलवान गुरु ७ वें ९ वें ५ वें, संके
ान में बली होते हैं। वहां से न देखते हों तो मरे। यदि गुरु पांचवें से किसी
मारक गृह को देखता हो तो अरिष्ट मात्र होगा ठीक हो जायेगा। देखो इसमें गुरु

१	लगन चं १२	११ शनि १०
३	अरिष्ट परिहार	९
गुरु ५	६	८ सूर्य ७ मं

सूर्य को देख रहे हैं। पांचवें स्थान पर दृष्टि है।
शनि आठवें स्थान पर हैं इसे गुरु नहीं देख रहे हैं
नवे स्थान में चन्द्र को देख रहे हैं। ऐसी दशा
में अरिष्ट कहे। बलहीन गुरु सबों को देखे तो
दोष परिहार नहीं करता है। यदि गुरु ५वें भाव में
हो तो सब १-१२-८-९ को देखेगा तब दोष
परिहार होगा।

कार्य विचार क्रम

गृहों की दृष्टि से कार्य सिद्धि की जानकारी

इस प्रकार का प्रश्न हो यानि जिस भाव से जो काम विचारे जाते
वह कार्य भाव कहलाते हैं। हर भाव कार्य भाव है। प्रश्न लगन
में कौन गृह बैठा है। फिर देखो लगन का स्वामी यदि लगन को देखे
र्य भाव का स्वामी कार्य भाव को देखे जैसे
ाई बहन का प्रश्न है। तो देखो गुरु भाई बहन
भाव को देख रहे हैं। सो बीमार भाई ठीक हो
येगा। लगन को लगन का स्वामी देख रहा है
ार्य सिद्धि पूर्ण होगी समझो। तीसरे घर
भाई बहन का विचार लेता है।

प्रश्न लगन

का. भाव यहां है ५ ४	३ ल.	मं २ गु १
	९ बुध	

जिन अरिष्टों के फल का समय नहीं लिखा है उनमें साथ करने वाले गृहों में से जो बलवान हो उसकी रासी पर जब गोचर का चन्द्र आयेगा उस समय अरिष्ट होगा अथवा अपनी रासी में या लगन की रासी में चन्द्रमा जब जाय तथा बलयुक्त रहे पाप गृहों की नज़र हो तो १ वर्ष में मरे। प्राचीन मुनियों का कथन है।

(२) बक्री शनि मंगल के घर में यानी १-८ अंक का होकर केन्द्र में हो अथवा छठे ८वें में होकर उसे बलवान मंगल देखे, मेष वृश्चिक का मंगल बलवान होता है ऐसे समय का उत्पन्न बालक दो वर्ष तक जीता है।

(३) गुरु मंगल के घर में अष्टम भाव में हो मेष वा कन्या लगन में इस योग का संभव होता है उसे सूर्य चन्द्र मंगल शनि देखते हों, और शुक्र न देखता हो तो बालक तीन वर्ष में मरे।

कन्या लगन की कुंडली है

इसमें देखो गुरु १ अंक के साथ आठवें घर में है। १-८ अंक मंगल का होता है। इसमें मंगल १ अंक को देख रहा है। मंगल की दृष्टि ७-४-८ वें घर को देखता है। शनि ७-१०-३ सरे घर को देखता है। देखो कन्या लगन में शनि है। शुक्र तीसरे घर में है यह केवल ७ वें घर को ही देखता है। सो शुक्र की दृष्टि लगन पर नहीं है।

७ / ८ शुक्र	शनि ६ चं	५ / ४
९ र. बुध	३ वर्ष में मरे	३
१० मं / ११	१२	२ / १ बृ

कुंभ लगन की कुंडली

कर्क का बुध जन्म लगन से छठे वा ८ वें घर में हो उसे चन्द्रमा देखता हो तो जातक सर्व बल सम्पन्न होते हुये भी चौथे वर्ष मरेगा।

१२ / १	लगन ११	१० चं / ९
२	४ वर्ष में मरे।	८
३ / ४ बुध	५	७ / ६

रवि चन्द्र मंगल गुरु एकसाथ हों या मंगल गुरु शनि चन्द्र एकसाथ हों या रवि शनि मंगल चन्द्र एकसाथ हों तो ५ वर्ष में मरेगा। ...-४-७ वें स्थान में यह चार ग्रहों का योग होतो

र. चं. मं. गुरु | पांचवें वर्ष मरे | म. गुरु. शनि. चं. | र. शनि चं. मं.

यदि शनि चन्द्रमा के नवांश में हो उसे चन्द्रमा देखता हो या लगन के स्वामी पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो छः वर्ष में मरेगा।

३, १, ४, २ छठे वर्ष मरे, १२, ५ चं, ११ शुक्र, ६, ८ शु, श्न., १०, ७, ९

नवे वर्ष मरे

लगन में शनि रवि मंगल हों शुक्र गृह ७, ऊंक में क्षीण चंद्रमा को गुरु न देखता हो तो सातवें आठवें वर्ष मरे।

९, रवि शनि मं ८, ७ चं गु ६, १०, ११, ७ वें ८ वें वर्ष मरे, ५, १२ गुरु १, २, ४, ३

नवें वर्ष मरे

लग्नेश पाप गृह है १० अंक का स्वामी शनि है। शनि पापगृह है चंद्रमा से गिनो जहां चन्द्र है १२ वें स्थान पर शनि है। यानी लगन से पांचवें स्थान पर है देखो या लगन स्वामी किसी भी राशी में चन्द्रमा के नवांश में हो और उसे पापग्रह देखे तो मरे।

नवें वर्ष

...के मं

११, ९, ८ मं, १२, १० पाप गृह है, ९, ७, २ श, ४, ६, चं ३, बु ५, सू

शनि मकर के नवांश में हो बुध देखता हो यहां बुध शनि को देख रहा है बुध सातवें स्थान को पूर्ण नज़र से देखता है।

सूर्य चन्द्र बुध केवल सातवें को ही पूर्ण दृष्टि से देखता है। मंगल ७-८-४ को गुरु ७-५-९ को। शुक्र भी ७ वें को ही देखता है। शनि राहू केतु तीनों ७-१०-३ को देखते हैं।

५, ४, ३ २, ... ७ शनि, दसवें वर्ष मरे, १ रवि बुध, ८, ९ चं, १० बृहस्पति, १२, ११ शुक्र

बुध सूर्य के साथ हो उसे गुरु पूर्ण से देखता जाता हो राजा के समान सुख हो। परन्तु ११वें वर्ष में मर जाता है। दसवें चक्र में पीछे देख लो। नीचे

५ / ६	४	३ / २
७ श	११वें वर्ष मरे	१ बुध रवि
८ / ९ गु	१० गुरु	१२ / ११ शु

बुध सूर्य को गुरु देख रहे हैं।

यदि सिंह राशि में चन्द्रमा हो शनि से युक्त हो लगन से ८ वें स्थान पर हो और शुक्र देखता हो। या शनि वृश्चिक के नवांश में हो उसे सूर्य देखता हो तो वह बालक पिता के वैर से युक्त होगा १२ वर्ष में मरेगा। नीचे देखो सूर्य शनि को शुक्र देख रहा है।

शु १ / २	१२	१२ / १०
३	१२ वें वर्ष मरे	९
४ / चं ५	६	८ / सू शनि

या सूर्य को शनि शनि को सूर्य देखता हो तो भी १२ वें वर्ष मरेगा

यदि तुला के नवांश में शनि उसे गुरु तो जातक पिता के बैर से युक्त हो तेरहवें मरेगा तीसरे पर गुरु सातवें पर शनि है

(१३)

४ २
गु ५ ३ १
६ १२
शनि ९
७ ११
८ १०

(१४)

१ / २	१२	११ शनि
३		
४ / ५ बुध		

यह जातक कोई हो चौदहवें वर्ष मरे कन्या के नवांश में शनि है बुध देख रहा है

	१५ वें वर्ष	

सिंह के नवांश में शनि हो गुरु उसे देखता हो उस बालक के शस्त्र से घाव लगे १५ वर्ष में मरे

यदि कर्क के नवांश का शनि हो गुरु देखता हो तो जातक को सर्प डसे और आखिर में १६ वें वर्ष मर जायेगा

यदि शनि मिथुन के नवांश में हो उसे लगन का स्वामी देखता हो तो बालक रणशूर हो । महाभोगी हो १७वें वर्ष मरेगा ।

(१७)

८	६ श
७	धू रा
९	४
१०	३
११	१ शनि
१२ शुक्र	२

गुरु के नवांश में शनि हो राहु देखता हो शनि को लगनेश शुभ ग्रहों से रहित हो तो बालक जन्मलेते ही मरे । लगन का स्वामी उच्च रासी में हो तो १७ वर्ष में मरे ।

3	१
४	२ चं शनि
१२ शु	५
चं	११
रा	१०
६	गुरु
८	७

यदि गुरु के साथ सूर्य कर्क राशी का लगन में हो और अष्टमेश लगन में हो या केन्द्र में हो तो जातक २२सवें वर्ष मरे देखो नीचे अष्टमेश शनि केन्द्र में है कर्क का सूर्य गुरु के साथ है लगन में ।

५ / ६	४ सू गु	३ / २
शनि	२२ वर्ष में मरे	१
८ / ७	१०	११ / १२

(१८)

लगन स्वामी अष्टमेश दोनों पाप ग्रह हों एक दूसरे घर में हों यानी लग्नेश अष्टमेश के घर अष्टमेश लग्नेश के घर हो । १२वे या छठे स्थान पर हो गुरु से संग हो तो १८वें वर्ष मरे

केन्द्र में पाप ग्रह हों उसे चन्द्र न देखता हो या चन्द्र छठे ८वें स्थान पर हो तो बालक सुखी तो रहे पर २०वें वर्ष मरेगा ।

(१८)

८	७
१०	९ बुध
६	११
५	१२
२	४
१	३ मं

गु	श	
	२०वें वर्ष	रा
	सू मं	चं शु बु

लगन में शनि शत्रु की रासी का हो सौम्य गृह आपोक्लीं यानी तीसरे ६ठे ८ वें १२वें ११वें १२वें १२वें २सरे में ५वें में हो । उस जातक की आयु २६वर्ष २७वर्ष मरे नीचे देखो बुध शुक्र चन्द्र गुरु आपोक्ली में बैठे हैं शनि लगन में है ।

(२२)

२ शनि	१२ रा
१	चं ३
११	४ मं
१० गुरु	७
५	९
६ के	सू ८ बु

यदि अष्टमेश पाप ग्रह हो उसे गुरु देखते हों जन्म रासी का स्वामी ८वें में हो तथा पाप गृह की नज़र हो तो २८सवें वर्ष मरे । बायें हाथ की तरफ चक्र देखो अष्टमेश पापग्रह है मंगल इसे गुरु देख रहे हैं । रासी मिथुन है इसका स्वामी बुध अष्टम में बैठा है इस पर शनि की नजर है ।

२	१२ गुरु
बुध ३	१ श
११	४
१०	सू ५ मं
७	चं
६ शुक्र	८
९	

यदि चन्द्रमा शनि के सहायक हों सूर्य ८वें में हो। २५ वर्ष में मरे।

२
१२
३
१
११
४
१०
शनि चं ५
७
९
६
८ सू

लगनपति और अष्टमेश के बीच में चन्द्र हो, और गुरु १२वें स्थान पर हो तो २७ या ३० वर्ष में मरे नीचे देखो लगन का स्वामी बुध तीसरे घर में है। चंद्र बीच में पड़ गया शनि पांचवें घर में होगया।

४ / ५ बुध	३	२ गुरु / १
चं ६	२७ या ३० वर्ष में	१२
७ शनि / ८	९	११ / १०

यदि [illegible] केन्द्र में हो लगनेश बलरहित हो तो जातक ३० वर्ष या ३२ वर्ष में मरे। यदि क्षीण चन्द्र पाप ग्रह से युक्त हो अष्टमेश केन्द्र में वा ८वें में हो लगन में पाप ग्रह हो लगन निर्बल हो तो बालक ३२ वर्ष में मरे।

७ / ८	६ श	५ / ४
९ मं	३२ वर्ष में मरे	३
१० चं / श ११	बुध सूर्य १२	२ / १

यदि पाप ग्रह ६-८-१२ में हों लगनेश बल रहित हो शुभ ग्रह से युक्त न हो तो वह बालक अल्प आयु या सन्तानरहित होवे। यदि लगनेश अतियन्त बलिष्ठ हो। शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो केन्द्र में स्थित हो पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो वह जातक सदा भाग्य से युक्त होकर दीर्घ आयु हो।

३२ वर्ष अल्पायु कहलाती है ७० तक मध्यायु १०० वर्ष दीर्घायु कहलाती है।

अरिष्ट भंग -

यदि लग्नेश अतियन्त बलवान हो शुभग्रह से युक्त हो या दृष्ट हो। या केन्द्र में बैठे हो पाप ग्रहों की नज़र न हो तो दीर्घायु जातक होगा भाग्यवान होगा।

गुरु शुक्र बुध इनमें से एक भी बली होकर केन्द्र में हों। और उसे पापग्रह न देखे तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

इसी तरह चन्द्रमा अपने उच्च (बृष) में या अपने गृह कर्क में हो या अपने मित्र के घर हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। तो बड़ा अरिष्ट भंग हो जाता है। यदि शुक्लपक्ष में रात्री में जन्म हो कृष्णपक्ष में दिन में जन्म हो चन्द्रमा छठे ८वें स्थान में हो तो अशुभ गृहों का प्रभाव भी नहीं पड़ता है अरिष्ट भंग हो जाता है।

पूर्ण बलवान् और निर्मल बिम्बवाला गुरु केन्द्र में हो १।४।७।१०वां घर केन्द्र कहलाता है। इसमें हो तो कठिन अरिष्टों को नाश करता है।

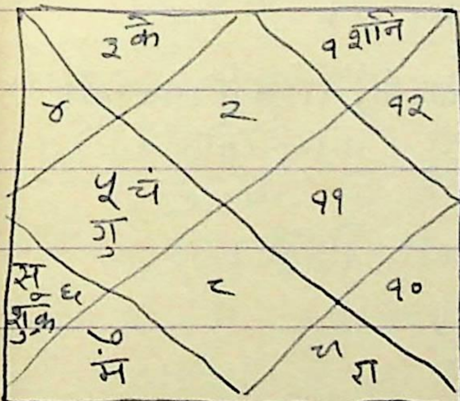
यदि लग्नेश बलवान होकर त्रिकोण वा केन्द्र में हो तो अरिष्ट योग में भी जन्मा बालक ठीक हो जाता है। जिसके जन्म समय में उच्च स्थान या अपने घर में बहुत गृह हों तो वे गृह चिरायु दायक हो। इसमें संसय नहीं है।

यदि राहु लगन से ३-६-११वे स्थान में हो शुभ गृह की नज़र हो तो अरिष्ट नाश होवे मेष बृष कर्क लगन में राहु निरन्तर बालक की रक्षा करते हैं।

पूर्ण चन्द्र शुभ स्थान में हो तो अरिष्ट नाश होवे। अपनी रासी का स्वामी लग्न में हो शुभ गृह देखते हों। उच्च स्थान का चन्द्र हो शुक्र की नज़र हो तो

लगन स्वामी बलवान होकर केन्द्र में हो उसको पाप ग्रह न देखते हों तो दीर्घायु हो।

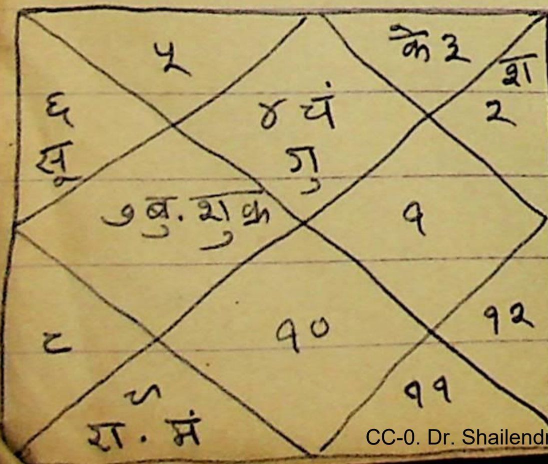
मध्यायु योग



लगन स्वामी बल रहित हो पर गुरु केन्द्र में १-४-७-१०वें घर में हो त्रिकोण ५।९ में स्थान पर हो और छठे ८वे १२वें पाप ग्रह हों तो मध्यायु होती है।

दीर्घायु प्रमाण - चतुष्टय १-४-७-१० में भाव में शुभ गृह हों या वृद्ध हों लग्नेश शुभग्रह युक्त हो गुरु की नज़र हो तो दीर्घायु होती है।
केन्द्र में लग्नेश हो साथ में गुरु शुक्र हों या गुरु शुक्र देख रहे हों तो पूर्णायु होती है
यदि तीन गृह उच्च राशी के हों लग्न स्वामी अष्टमेश के साथ २ हो आठवां स्थान पाप गृह से रहित हो तो पूर्णायु। (यदि आठवें स्थान में तीन गृह हों या अपनी उच्च राशी के मित्र स्थान के या अपने वर्ग के हों लग्न स्वामी बलवान हो तो पूर्णायु होती है।
उच्च राशी में स्थित कोई भी गृह हो उसमें शनि हो वा अष्टमेश हो तो दीर्घायु होता है।
यदि पापग्रह ३-११-छठे स्थान में हों। शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो लग्नेश बली हो है
शुभग्रह से युक्त ६-७-८ वा भाव हो ३-११-छठे में पाप ग्रह हो तो दीर्घायु होता है
यदि पाप ग्रह १२ वें छठे हों लग्नेश केन्द्र में बैठा हो। अष्टम स्थान में पाप गृह हो दशमेश उच्चराशी का हो तो दीर्घायु। (अष्टमेश जिस भाव में हो उस भाव का स्वामी जिस राशी में हो उस राशी का स्वामी और लग्नेश केन्द्र में हो दीर्घायु होता है
जिसका द्विस्वभाव लग्न में जनम हो लग्न का स्वामी केन्द्र में हो वा अपनी उच्चराशी का हो वा मूल त्रिकोण भाग में हो तो चिरकार तक जीवे दीर्घायु हो।
जिसके जनम समय मे द्विस्भाव लग्न हो लग्नेश से केन्द्र में शे पाप ग्रह हों तो चिरा॰
यदि सूर्य चन्द्र मंगल चर राशी के नवांश में हो गुरु शुक्र स्थिर राशी के नवांश में हो शेष गृह चं.रा.बध. केतु गृह द्विस्भाव राशी में स्थित हो तो इस योग का बालक उत्पन्न हुआ सौ वर्ष जीवे।
सूर्य गुरु मंगल शनि के नवांश में हो या नवम भाव में हो, अपने नवांश में बलवान हो लग्न में चन्द्रमा हो तो लक्ष्मीयुत युगान्त आयु हो।

यदि गुरु और शनि एक ही अंश के होकर धर्म में (९ वें भाव में) वा कर्म भाव १० वें में स्थित हो सूर्योदय में शुभ ग्रह से देखे जाते हों तो चिरायु तपस्वी होता है।
कर्क लग्न हो उसमें गुरु चन्द्र हो बुध शुक्र केन्द्र में बैठे हों शेष ग्रह सु-मं.रा.के.शनि. ३-६-११ वें में हो। अमित आयु मिले।



...क्कोण में पाप गृह न हों यानी पूर्व के स्थान पर केन्द्र में शुभ ग्रह न हों, प्रथम भाव में ...प ग्रह न हो। तो ऐसा बालक देवता होवे। लग्नादि भावों में शनि से लेकर मंगल तक ...ग्रह अपने २ घर के हों तो देवता के समान हो।

यदि कि लगन धनु के नवांश को १६ अंश ४० कला के बाद २० अंश तक हो उसमें गुरु बैठे हो तीन या चार गृह केन्द्र में हो जातक ब्रह्मपद पाता है उदाहरण देखो

१ उदाहरण

५ / ६	२० अंश तक हो लग्न ४ गुरु	३ / २
७ शुक्र सूर्य	मोक्ष योग	१ चं
८ / ९	१० मं. शनि	१२ / ११

पहला फिर दूसरा इस प्रकार है कि जिसके जन्म समय में धनु रासी में मेष का नवांश हो ८।३।२० लगन संख्या हो लगन में गुरु भी बैठा हो। सातवे भाव में शुक्र हो। कन्या रासी में चन्द्र हो तो भी मोक्ष प्राप्त होवे।

दूसरा उदाहरण

१० / ११	९ गुरु	८ / ७
१२	मोक्ष योग	६ चं
१ / २	३ शुक्र	५ / ४

॥ किस प्रकार मृत्यु होगी इसका निर्णय ॥

अष्टम स्थान को जो बलवान ग्रह देखता हो उसको धातु के प्रकोप से मृत्यु होगी यदि अष्टम स्थान को हो सूर्य देखता हो तो अग्नि से। चन्द्रमा देखता हो जल से। मंगल देखता हो तो शस्त्र से। बुध देखता हो ज्वर से। गुरु देखता हो तो कफ से। शुक्र देखे तो क्षुधा से। शनि देखे तो प्यास से मृत्यु होगी या रोग से होगी। यदि लगन से ८ वे स्थान का स्वामी लगन में हो और वह लगन का स्वामी काल पुरुष के जिस अंग में हो उस अंग में रोग उत्पन्न होकर मनुष्य मरेगा। यदि अष्टम भाव का नवांश चर रासी में हो तो विदेस में मरेगा। स्थिर रासी में हो तो घर में मरेगा। द्विस्भाव रासी में हो तो रास्ते में कहीं मृत्यु होती है।

...दि बली सूर्यादि गृहों से ८ वां भाव दृष्ट हो या युक्त न हो तो सूने घर में मरेगा ...ठवें भाव में द्रेष्काण हो उसके पति को धातु रोग से मृत्यु होती है। यदि ८ वें पाप गृह हो तो दुख से मरेगा। शुभ गृह हो तो सुख से मरेगा। ...ा में मंगल वृष में सूर्य शनि गृह में चन्द्र हो तो विष्ठा में मरे। क्षीण चन्द्र ८ वें में हो ...बलवान शनि देखता हो तो गुदा रोग से मरेगा। या नेत्र रोग से या शस्त्र से मरेगा। ...गन से ८ वे में या ७।५ वें में सूर्य शनि चन्द्र मंगल हों तो शूल से वज्र से या ...वाला से मरेगा। यदि मंगल शनि रासी में शनि मंगल रासी में हो अष्टम स्वामी ...केन्द्र में हो तो अवसान समय प्राप्त होने पर राजा के कोप से शूलादि श्रेष्ठ शस्त्र ...रेगा।

चंद्र लगन में सूर्य निर्बल होवे पञ्चम में हो लगन से १२वें गुरु हो चौथे में पाप गृह हो उसकी मृत्यु चारपाई पर हो।
अष्टम और लगन का स्वामी बल से हीन हो, मंगल षष्ठेश के साथ हो। तो उस मृत्यु युद्ध में होगी। विशेष शस्त्र से मरना हो।

लगन का स्वामी चतुर्थेश एक साथ हों और गुरु से युक्त हों अजीर्ण से मृत्यु होगी दशवें भाव का नवांश पति शनि के संग हो। दुख स्थान (अष्टम) से युक्त हो। तो विष खाकर मरेगा कहो।
यदि राहू से केतु से दसवें भाव का नवांश पति युक्त हो तो गले में रस्सी लगा कर मरेगा। यदि इसी में मंगल राहू हो शनि हों तो पिशाच पीड़ा से मरेगा। या आग से या जल में डूब कर मरेगा। क्षीण चन्द्र में जो जातक जन्मा हो कृष्ण अष्टमी से शुक्ल अष्टमी तक क्षीण चन्द्र माना जाता है सो अष्टम स्थान में बैठा हो तो अपस्मार (मृगीरोग) से मरेगा।। अष्टम स्थान में निर्बल सूर्य या मंगल निर्बल हो। धन भाव में पाप ग्रह हों तो पित्त से मरना होगा। सूर्य ३-६-७-१०-११ वें स्थान पर बली होते हैं। मेष का सूर्य बलिष्ठ होता होता है। सिंह का सूर्य स्वगृही बलिष्ठ होता है। बाकी २-७-८-१२-४- में निर्बल होता है। यानि २-७-८-१२-४ रासी में सूर्य निर्बल माना गया है।

मं शनि श १ / २	१२	१० / ९
३	पित्त रोग से	८
४ / ५	६	७ के सूर्य

६ श / ७	५	४ / ३
८ सू. मं	क्षय रोग	२
९ / १०	११	१ / १२ गु चं

चन्द्र गुरु मीन रासी में होकर ८वें घर में हो तो और पाप ग्रह देखते हों तो क्षय रोग से मरेगा। इसे शनि देख रहा है।

यह पुस्तक नीची बाग वाराणसी में मिलती है।

यदि ८वें स्थान पर बुध शुक्र हों पाप ग्रह देखते हों तो वातरोग क्षयरोग प्रमेह रोग इनसे मरेगा। यहां नीचे शनि शुक्र को देख रहा है। यदि सूर्य के स्थान में बुध पाप ग्रह भी देखते हों तो ज्वर से या त्रिदोस से मरे। शनि देखो बुध को देख रहा है।

(१)

श २ / ३	१	११ / १०
४ मं	वात क्षय प्रमेह	९
५ / ६ सूर्य	७	८ शुक्र

यदि ८वें में राहू हो उसे पापग्रह देखे तो गर्भ रोग फिरसे सर्प से मृत्यु होगी।

(२)

३ मं / ४	२	१ / १२
५ बुध रविस्थान है यह	ज्वर या त्रिदोस	श ११
६ / ७	८	१० / ९

२ के / ३	१	१२ / ११
४	पित्त से	१०
५ मं / ६ श	७	८ रा / ९

राहू ८वें हो पापग्रह देखे तो मसूरिकादि रोग से मरे। पित्त से मरे। दाने: निकले इसे मसूरिकादि कहे। यदि ८वें भाव में शनि २ में गुरु हों तो हाथ कटेंगे कहो। अथवा ८ में शनि १२ में गुरु हों तो भी हाथ कटेंगे जीवन में। यदि राहू शनि बुध १० वें भाव में हों। तो भी हाथ रहित होगा। यदि षष्ठेश शुक्र से देखा जाता हो। सूर्य शनि राहू से युक्त हो तो उसका सिर कटेगा। यदि शनि लग्न में राहू ७ वें में शुक्र कन्या में क्षीण चन्द्र सातवें में हो तो जातक के हाथ पैर दोनों कटजायेंगे।
यदि मंगल की रासी

(३)

के २ / ३	१	१२ / ११
४ श	फिरसे सर्प से	१०
५ / ६ मं	७	८ रा / ९

किस ग्रह से किसका विचार करना चाहिये। इस बात का जानना।

(१) सूर्य से पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ती, लक्ष्मी, का करे
(२) चन्द्र से मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता, धन,
(३) मंगल से पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, शत्रु जाति,
(४) बुध से, बिद्या, बिवेक, बन्धु, मामा, मित्र और वचन का
(५) गुरु से, बुद्धि, शरीर की पुष्टता, पुत्र, ज्ञान, का
(६) शुक्र से, स्त्री, बाहन, भूषण, कामदेव, व्यापार, सुख, का
(७) शनि से, आयु - जीवन, मृत्यु - कारण, विपत सम्पत्ति का
(८) राहू से, बाबा,
(९) केतु से नाना,

(सूर्य लगन का करता है)(गुरु धन भाव का करता है)
(~~चन्द्र बुध~~ मंगल - सहज भाव का करता है)(चन्द्र बुध सहज भाव का)(
(बृहस्पति पुत्र भाव का करता है)(मंगल शत्रु भाव का)(
(शुक्र स्त्री (जाया) भाव का करता है)(शनि मृत्यु भाव का)(
(सूर्य, गुरु, धर्म भाव का)(गुरु सूर्य बुध शनि कर्म भाव का)(
(गुरु लाभ भाव का)(शनि व्यय भाव का करता है)(

राहू का दोष बुध नाश करता है (यदि बुध शुभ हो तो राहू शान्त रहता है। राहू बुध का दोष

मुरादाबाद

स्वक्षेत्री, ॥ रासी वा गृहों की मिमांशा ॥ और मूल त्रिकोण, उच्च कब किस अंश तक गृह कहलाता है इसका ज्ञान
उच्च का पर्यायवाची नाम तुंग भी होता है। जन्म समय गृह सपस्ट करके देवो

सूर्य मेष रासी में उच्च होता है। चन्द्रमा वृष में उच्च का होता है। मंगल मकर में
बुध कन्या में। गुरु कर्क में। शुक्र मीन में। शनि तुला में उच्च का होता है। इस उच्च घर
उच्च राशी से सातवीं राशी में जो ठीक उल्टे भाग में पड़ता है। उस गृह का नीच स्थान
सातवें स्थान पर नीच का हो जाता है। सूर्य मेष रासी में उच्च है तुला में नीच का
माना जाता है। इसी तरह चन्द्र वृशचिक राशी में नीच का। मंगल कर्क में नीच। बुध मीन
में नीच। गुरु मकर रासी में नीच। शुक्र कन्या रासी में नीच। शनि मेष में नीच होता है।
पत्रा में देखो
मेष के १० अंश पर सूर्य परमोच्च होता है। यदि सूर्य जन्म रासी पत्रा में १० अंश तक है तो
परम उच्च समझो। चन्द्रमा वृष के ३ अंश तक परम उच्च का। मंगल मकर के २८
अंश तक परमोच्च। बुध कन्या के १५ अंश तक परम उच्च का गुरु कर्क के ५ अंश तक
परमोच्च का। शुक्र मीन के २७ अंश तक परमोच्च का। शनि तुला के २० अंश तक
परमोच्च का। इसी प्रकार उच्च स्थान से सप्तम राशी में इन सब अंशों पर जाता है
तो परम नीच गृह हो जाते हैं। जैसे समझो मेष के १० अंश पर जब सूर्य परमोच्च होता
है तो उसी तरह तुला पर भी जब १० अंश तक रहेगा तो परम नीच सूर्य हो जायेगा।
इसी तरह चंद्र वृष के ३ अंश तक उच्च है तो वृशचिक के ३ अंश तक परम नीच
समझो। मंगल जिस प्रकार मकर के २८ अंश तक परमोच्च का होता है तो
कर्क के २८ अंश पर परम नीच का समझो। जब बुध मीन के १५ अंश पर नीच है तो
और वृश्चिक ~~कन्या के १५ अंश तक~~ गुरु मकर के ५ अंश पर परम नीच है।
शुक्र मीन के २७ अंश तक परमोच्च है,
इसी तरह शुक्र कन्या के २७ अंश तक परम नीच का होगा। शनि मेष के
शनि तुला के २० अंश तक उच्च का होगा।
२० अंश तक परम नीच समझो। राहु वृशचिक में। केतु वृष में परम
नीच का होगा। केतु वृशचिक में उच्च माना है। राहु वृष में उच्च का वृशचिक में नीच का
प्रति गृह को एक २ राशी में मूल त्रिकोण की संज्ञा है। उच्च गृह से मूल
त्रिकोण प्रभाव में कम कहा गया है। परन्तु स्वक्षेत्री से मूल त्रिकोण बली
होता है। ऊपर लिखा जा चुका है सूर्य सिंह में स्वक्षेत्री है या यों समझो सूर्य
सिंह रासी का स्वामी है।

(परन्तु सिंह के १ [illegible] पर्यन्त सूर्य मूलत्रिकोण माना जाता है) और २१ में अंश से ३० अंश तक सूर्य स्वक्षेत्री कहलाता है) जैसे किसी जातक का जन्म काल में सूर्य कर्क गत सिंह के आठवें अंश पर है तो कहा जायेगा सूर्य मूलत्रिकोण में है यदि सूर्य कर्क गत मानो २१सवें अंश पर है तो स्वक्षेत्री सूर्य कहलायेगा क्योंकि २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री सूर्य होता है) इसी प्रकार चन्द्र वृष के ३ अंश तक उच्च है) और चन्द्र मेषगत वृष के ४ अंश से ३० अंश तक मूलत्रिकोण कहलायेगा) मान लो किसी जातक के जन्म कालीन समय में चन्द्र मेषगत वृष के १-या २ ३ अंश पर हो तो वह उच्च कहलायेगा। (परन्तु वही चन्द्र मेषगत वृष के ४ अंश से अंश पर्यन्त हो तो मूलत्रिकोण कहलायेगा) इसी प्रकार मंगल मीन गत मेष में १२ अंश तक मूलत्रिकोण में कहा जायेगा) १३ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री कहा जायेगा। बुध में एक विलक्षणता यह है सिंह गत कन्या रासी में स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोण, उच्च तीनों कहलाता है चाहे जो कहो) वैसे बुध कर्कगत कन्या रासी के १५ अंश तक उच्च कहलायेगा) १६ से २० अंश तक मूलत्रिकोण) (२१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री कहलायेगा) इसी प्रकार गुरु सिंह गत कन्या के ८ अंश पर हो तो उच्च है समझो) १७ अंश पर हो मूलत्रिकोण में समझो) २१ से ३० अंश तक स्वगृही गुरु को समझो) (बृहस्पति धन रासी का स्वामी है) परन्तु १३ अंश तक मूलत्रिकोण) १४ से ३० अंश तक स्वगृही समझो) जैसे जन्म समय गुरु वृश्चिक रासी गत धन के १० अंश पर है तो मूल त्रिकोण में समझो) यदि १४ से ३० तक है तो गुरु को स्वगृही समझो) इसी प्रकार शुक्र कन्या गत तुला के १० अंश पर है तो मूलत्रिकोण में है) ११ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री है) शनि मकर गत कुम्भ में २० अंश तक मूलत्रिकोण) २१ से ३० तक स्वक्षेत्री शनि को समझो) राहू वृष में उच्च होता है) मेष रासी में राहू स्वगृही होता

और राहू कर्क में मूल त्रिकोण होता है। इसी प्रकार केतु वृश्चिक में उच्च माना जाता है। तुला राशि में स्वगृही होता है। मकर में मूल त्रिकोण माना जाता है। किसी ऋषि के मत से राहू मिथुन राशि में उच्च। कन्या में स्वगृही होता है। केतु मिथुन में उच्च। कन्या में स्वगृही मानते हैं। राहू केतु के लिये अंशों का बन्धन नहीं होता है। इसलिये कर्क के किसी अंश में रहने से राहू मूलत्रिकोणी कहलाता है। और मकर और तुला के किसी अंश में रहने से केतु मूल त्रिकोणस्थ कहा जायेगा।

"चन्द्र का बलाबल विचार"

(चन्द्रमा एकादशी शुक्लपक्ष से, कृष्ण पक्ष की पंचमी तक तेजस्वी रहता है) इस कारण इन समय में जन्मने वाले का चन्द्र बल पूर्ण माना जाता है) इसके विपरीत चन्द्र कृष्णपक्ष की छठ से शुक्ल पक्ष की दशमी तक क्षीण चन्द्र कहलाता है। किसी के मत से चौदस मावस को ही क्षीण चन्द्र मानते हैं। जातक पारिजात में तथा यवनेश्वर का मत है शुक्ल पक्ष में परिवा से दसमी तक चन्द्र दुर्बल होता है। (शुक्ल एकादशी से कृष्ण पंचमी तक सबल चन्द्र होता है। कृष्ण छठ से अमावस तक निर्बल चन्द्र होता है) परन्तु निर्बल चन्द्र शुभग्रहों से देखा जाता हो तो बल शाली होता है।

कालपुरुष का सूर्य आत्मा माना गया है। चन्द्रमा मन। मंगल पराक्रम तथा धैर्य। बुध वाणी। गुरु ज्ञान। शुक्र काम। शनि दुःख। सूर्य मंगल गुरु पुरुष ग्रह हैं) (चन्द्र शुक्र स्त्री) (बुध शनि नपुंसक) पंचभूतों (में मंगल अग्नि तत्व) (बुध पृथ्वी तत्व) (गुरु आकाश तत्व) (शुक्र जल तत्व (शनि वायु तत्व)

॥ दिशा भेद ॥

(यानी दक्षिण पूर्व का)

पूर्व का स्वामी सूर्य, अग्नि कोण का स्वामी शुक्र, दक्षिण का मंगल नैऋत्य का राहू (यानी पश्चिम दक्षिण का) पश्चिम का शनि। वायव्य कोण का चन्द्रमा (यानी पश्चिम उत्तर का) उत्तर का बुध और ईशान कोण (पूर्व उत्तर) का गुरु स्वामी है।

शरीर में सूर्य का धातु हड्डी, और पित्त है। चन्द्र की धातु वात श्लेष्मा रक्त है। मंगल का धातु पित्त मज्जा। बुध की धातु चमड़ी वात कफ पित्त तीनों हैं। गुरु की धातु चर्बी कफ। शुक्र की धातु वीर्य कफ वात। शनि की धातु नशें वात श्लेष्मा। राहु केतु की धातु वायु इस शरीर में है। ॥रंग ग्रहों के॥

शनि राहु केतु	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल	सूर्य
काले काले काले	हरा	पीला	श्याम गौर	अतिलाल रक्त गौर	लाल गौर रंग

॥ ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री ॥

हर ग्रह गण अपने मूल त्रिकोण से २-४-५-८-९-१२वें घर को मित्र बनाते हैं तथा अपने उच्च स्थान के स्वामी को मित्र बनाते हैं।

सूर्य के	चन्द्र के	मंगल के	बुध के	गुरु के	शुक्र	शनि	राहु केतु के
चं मं गु	रवि बुध	रवि चंन्द्र गुरु	रवि शुक्र	चं मं सू	बुध शनि	शुक्र बुध	गु शु शनि
बुध	मं गु शु शनि	शुक्र शनि	मं गु शनि	शनि	मं गु	गुरु	
शु शनि		बुध	चंन्द्र	शुक्र बुध	सू. चं	सू चं मं	

तत्कालिक ग्रहों की उदाहरण कुण्डली देखो

उदाहरण कुण्डली में सूर्य के साथ बुध शुक्र हैं। ये दोनों सूर्य के तत्कालिक शत्रु हैं। इसी नियमानुसार सूर्य से १-५-६-७-८-९ वें घर में जो ग्रह होंगे वे सभी सूर्य के शत्रु तत्कालिक माने जायेंगे) उदाहरण कुण्डली में सूर्य से छठे चन्द्र है। ९ वें स्थान पर गुरु है। एतएव सूर्य के चन्द्र गुरु तत्कालिक शत्रु हैं और बुध शुक्र भी शत्रु हैं। सूर्य से शनि तीसरे स्थान पर हैं मंगल ११वें स्थान पर हैं। मित्र हैं।

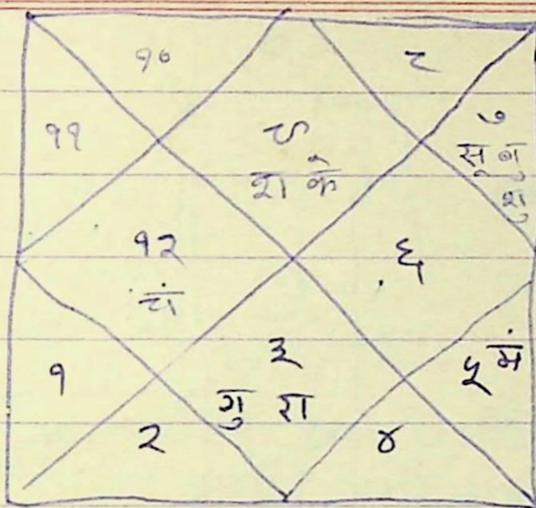
उदाहरण कुण्डली में देखो दूसरे स्थान पर ८ अंक यानी वृश्चिक राशि है वहां कोई ग्रह नहीं है। तीसरे में शनि केतु हैं। तीसरे स्थान पर के ग्रह मित्र हैं सूर्य के। चौथे स्थान में कोई ग्रह नहीं हैं। दशम स्थान में भी कोई ग्रह नहीं है। ११ वें स्थान में मंगल है। सो यह भी सूर्य का मित्र है। १२ वें स्थान में भी कोई ग्रह नहीं है। सूर्य से २-३-४-१०,११,१२-वें स्थान पर जो ग्रह हैं वह मित्र तत्कालीन होते हैं।

इस कुंडली के अनुसार सत्रु मित्र चक्र में देखो

तत्कालिक ग्रहों की

उदाहरण कुण्डली समझो

ग्रहों की तत्कालिक मैत्री या शत्रु चक्र



गृह	मित्र	शत्रु
सूर्य	श. मं.	बु. गु. शु. चं
चंद्र	श गु	सू बु शु मं
मंगल	सू. बु. गु शुक्र	श चं
बुध	श. मं	र. शु. चं गुरु
गुरु	मं चं	र. बु. श. शुक्र.
शुक्र	शनि. मं	र. बु. चं गुरु
शनि	र. बु. चं शुक्र	गु मं

यह हर ग्रहों की रीति देखने की है. जिसकी तत्कालिक मित्रता शत्रुता देखनी हो इसी क्रम से देखलो हर ग्रह के जहां जो बैठा हो वहां से गिनो स्थान २-३-४-१०-११-१२वें स्थान घर के ग्रह मित्र हैं १-५-६-७-८-९वें स्थानस्थ ग्रह शत्रु हैं। सब के यही समझो।

मित्र

सम

शत्रु

। पूर्ण दृष्टि ग्रहों की।

गृह	पूर्ण दृष्टि
रवि	७
चं	७
बुध	७
शुक्र	७
मंगल	७-४-८
गुरु	७-९-५
शनि	७-१०-३
राहु	७-५-९ १२
केतु	७-५-९ १२
गुलिक	२-७-१२

मेष चर रासी
कर्क चर ..
तुला चर ..
मकर चर ..

वृष स्थिर रासी
सिंह स्थिर रासी
वृश्चिक स्थिर रासी
कुम्भ स्थिर रासी

मिथुन द्विस्भाव रासी
कन्या द्विस्भाव रासी
धन द्विस्भाव रासी
मीन द्विस्भाव रासी

विषमराशियों को क्रूर तथा पुरुष कहा है।

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ

समराशियां सौम्य है स्त्रि रूप हैं

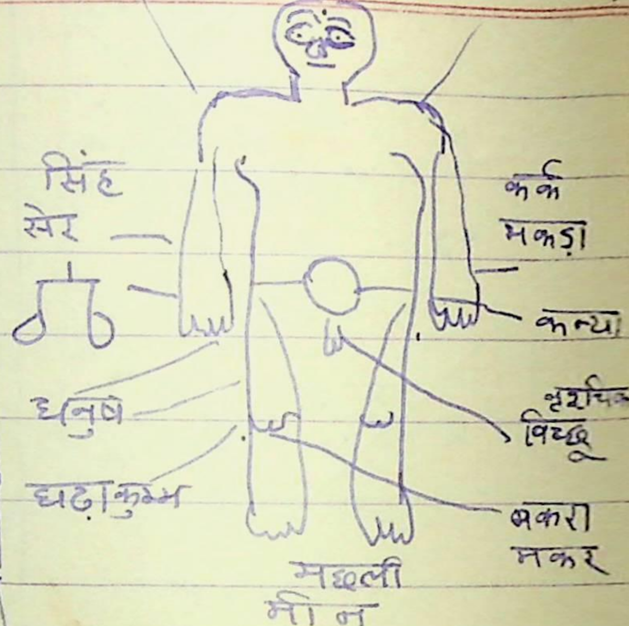
वृष, कन्या, वृश्चिक, मकर मीन कर्क

तत्व रूप राशी के

मेष सिंह धन	अग्नि
वृष। कन्या मकर।	पृथ्वी
मिथुन। तुला, कुम्भ	वायु तत्व
कर्क। वृश्चिक, मीन।	जल रूप

मेष - अग्नि तत्व
वृष - पृथ्वी · ·
मिथुन - वायु · ·
कर्क - जल · · फिर
सिंह - अग्नि तत्व
कन्या - पृथ्वी · ·
तुला - वायु
वृश्चिक · जल तत्व
धन · अग्नि तत्व
मकर - पृथ्वी
कुम्भ - वायु
मीन - जल

काल पुरुष का।
मेष - सिर
वृष - मुख
मिथुन - गला बाहू
कर्क - वक्षस्थल
सिंह - हृदय
कन्या - उदर
तुला - नाभी
वृश्चिक - लिंग गुदा
धन - पैरों की सन्धि जंघा
मकर - पैरों की गांठ
कुम्भ - घुटने से ऐड़ी तक
मीन - चरण उंगली



॥ षट् वर्ग का मतलब ॥

लग्न - होरा - द्रेष्काण। नवांश - द्वादशांश त्रिंशांश।

यह मूल नक्षत्र हैं

ज्येष्ठा। मूल। अश्विनी। मघा। अश्लेषा। रेवती

पूर्वा फाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्म हो, या पुष्य के मध्य के दोनों चरण में जन्म हो, या चित्रा के तीसरे चरण में हो भरणी के प्रथम चरण में। हस्त के तीसरे चरण में। रेवती के चौथे चरण में पुत्र जन्मे तो पिता को भारी कहो कन्या जन्में तो माता को भारी कहो। पूर्वाषाढ़ में धनु लगन में जातक पिता का नाश करे। पुष्य और कर्क लगन में बालक हो तो पिता की मृत्यु कारक है। पूर्वाषाढ़ और पुष्य नक्षत्र में बालक प्रथम चरण में जन्में तो पिता को दूसरे में माता को तीसरे में बालक का चौथे चरण में मामा का भारी कहे।

हर राशी में २ होरा होते है। १५ अंश का एक २ होरा होता है। जानने की बात यह है कि किस राशी का पहला होरा किसका होता है। मे. मि. सिं. तु. धन. कु. राशियों का होरा पहला सूर्य का वृ. कर्क. कन्या. वृश्चिक. मकर मीन राशी का पहला होरा चन्द्र का माना जाता है।

उदाहरण जैसे कि किसी जातक का शनि जन्म समय वृषगत मिथुन के १४ अंश पर है, तो कहा जायेगा शनि सूर्य के होरा में है। यदि शनि मिथुन गत कर्क के ६ अंश पर हो तो कहा जायेगा शनि चन्द्र के होरा में है। वही शनि मिथुन के १६ अंश पर है तो चन्द्र के होरा में शनि समझो। यदि कर्क के १६ अंश पर शनि हो तो सूर्य के होरा में समझो।

मूल माने गण्ड। गंड माने मूल।

८-अ

मूल की नाड़ी के विभाजन हों या ज्येष्ठा के सब के विभाजन करने के लिये जितने विभाजन करने हों उतने से भयात में भाग दे देना चाहिये प्रथम खण्ड निकल आयेगा फिर प्रथम में २ से गुणा करे तो दूसरा खण्ड प्रथम मे ३ से गुणा करे तो तीसरा खण्ड ४ से करे तो चौथा खण्ड इसी तरह जितने खंड करने हो करलो परन्तु तुम जितने खण्ड करने हो पहले उस संख्या से भयात में भाग देकर प्रथम खण्ड निकालो जैसे ज्येष्ठा नक्षत्र की सम्पूर्ण नाड़ी के दस भाग करने हैं तो १० से भयात में भाग देदो ज्येष्ठा के ~

प्रथम अंश में जन्म हो तो, या कहो प्रथम खण्ड में जन्म हो तो एक ही बात है नानी मरे दूसरे में नाना मरे। तीसरे में मामा मरे। चौथे में माता मरे। पांचवें में अपना मरे छठे में कुल का नाश करे। सातवें में बाबा नाना दोनों कुल का नाशक। आठवें मे वंश नाशक। नवें में ससुर मरें। दशवे खण्ड में जन्में तो स्वयं मरे। यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में मंगलवार का दिन हो कन्या जन्म लेतो बड़े भाई को घातक होगी। मूल नक्षत्र में रवि वार हो तो चाहे कन्या हो या पुत्र ससुर मरे। ज्येष्ठा के प्रथम चरण में जन्मे तो बड़े भाई का नाश दूसरे चरण में जन्मे तो छोटे भाई का नाश। तीसरे चरण में पिता का नाश चौथे चरण में स्वयं मर जाता है। मूल के प्रथम चरण में पिता का मरण दूसरे में माता का तीसरे में धन का नाश हो। चौथा चरण शुभ होता है। मूल नक्षत्र की नाड़ी के १५ खण्ड करे। तो देखें प्रथम खण्ड में पिता का। दूसरे में चाचा का। तीसरे में बहनोई का। चौथे में बाबा का। पांचवें में माता का। छठे में मौसी का। सातवें में माम मरे। आठवें में चाची। नवें में सब का नाश दसवें में पशुओं का। ग्यारहवें में नौकर का। बारहवें में स्वयं मरे। तेरहवें में बड़े भाई का। चौदहवें में बहिन का १५ वें अंश में नाना का नाश करे।। मूल मघा अश्विनी के प्रथम चरण में पिता को कष्ट। रेवती अश्लेषा ज्येष्ठा इनके चौथे चरण में पिता को कष्ट करे रात में जन्में तो रेवती के चौथे चरण में माता मरे। दिन में ज्येष्ठा के चौथे चरण में पिता मरे सन्ध्या में जन्में तो अश्लेषा के चौथे चरण में स्वयं मरे। दिन में जन्मा पिता को मारे। रात्री का जन्मा माता को मारे। सन्ध्या का जन्मा अपने को मारे।

मूल विचार

मूल का बिवरण = गण्डान्त -

अश्लेषा के अन्त और मघा के आदि का जो दोष युक्त काल है उसको रात्री गण्ड कहते हैं ज्येष्ठा और मूल के दोष युक्त काल को दिवा गण्ड कहते हैं। इसी को भुक्त भी कहते हैं। रेवती और अश्विनि के गण्ड को सन्ध्या गण्ड कहते हैं। अश्लेषा ज्येष्ठा रेवती के अन्तिम ४ दण्ड यानी आधा पहर बाद और मघा मूल अश्विनि के आदि का ४ दण्ड आधा पहर के अन्दर यदि बालक का जन्म हो तो विशेष रूप से अनिष्ट कारी होता है। इन चार अनिष्ट कारी दण्डों में से क्रमशः पहला पहर अनिष्ट माता के लिये दूसरा पिता के लिये, तीसरा बालक को ही चौथा भाई के लिये अनिष्ट कारी है। ज्येष्ठा के अन्तिम की १ घड़ी मूल के आदि की दो घड़ी इतनी बुरी होती है कि बालक को त्याग दे। यदि न त्यागे तो ८ वर्ष पिता न देखे। लिखा है इसमें जन्म लेने वाले का पिता मरण उसी क्षण होती है। यदि ऐसा बालक जी जाय तो बड़ा धनाड्य पदाधिकारी होता है अश्विनि का गण्ड दोष रहने से १६ वर्ष मघा का ८ वर्ष मूल का ४ वर्ष अश्लेषा का २ वर्ष ज्येष्ठा का १ वर्ष रेवती का १ वर्ष तक अनिष्ट का भय होता है। प्रातः अथवा सन्ध्या समय जन्म हो तो सन्ध्या गण्ड दोष हो तो उस बालक को अरिष्ट होता है। रात्री काल में जन्म हो तो रात्री गण्ड दोष से जातक की माता को अरिष्ट होता है। दिवा गण्ड (दिन में) जन्म होने से बालक के पिता को अरिष्ट होता है। दिवा गण्ड में कन्या का रात्री गण्ड में पुरुष का जन्म होता है, तो दोष नहीं लगता है॥

चित्रा के आदि के दो चरण, पुष्य के चारों चरण, पूर्वाषाढ़ के चारों चरण, इनमें जन्म होने से क्रमशः माता - पिता - मामा के लिये अनिष्ट होता है। हस्त और मघा के तीसरे चरण में माता पिता के लिये भय प्रद रहता है। उत्तरभाद्र पद उत्तराषाढ़ उत्तरफाल्गुनी का प्रथम चरण खुद बालक को ही दुख दायी होती है। पूर्वाषाढ़ और पुष्य के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता वा चाचा को अरिष्ट होता है। चित्रा - बिसाखा - हस्त में जन्म होने से माता पिता के लिये मृत्युदायी। मृगसिरा के मध्य में २५ से ३५ दण्ड तक में जन्म होने से माता को भय है। एक चरण १५ दण्ड का होता है। पांच नक्षत्रों के चरणों की विष घटिका संज्ञा कही जाती है। (पुष्य - पूर्वाषाढ़ - हस्त - मूल - अश्लेषा -) इन पांचों के नक्षत्रों के प्रत्येक चरण जातक के लिये अशुभ फलदायी बतलाया है। जातक का जन्म (पुष्य के प्रथम चरण में हो तो पिता के लिये अरिष्ट होता है। यदि पुष्य के तृतीये चरण में जन्म हो तो माता के लिये अरिष्ट, तीसरे में हो तो स्वयं के लिये। चौथे में हो तो मामा के लिये अरिष्ट होता है। (पूर्वाषाढ़ के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता को, दूसरे में हो तो चाचा को। तीसरे चरण में जातक को। चतुर्थ में पिता को भय कारक है) इसी तरह (हस्त के प्रथम में जातक को भय। दूसरे में चाचा को। तीसरे में माता को। चौथे में पिता को भारी है) (मूल के प्रथम चरण में जन्मे तो पिता को। दूसरे में माता को। तीसरे में परिवार को भारी) चौथे चरण में जन्मे तो उन्नति दाता होता है।

अश्लेषा का प्रथम चरण सुखदायी। दूसरा चरण परिवार को दुखद। तीसरे में माता को, चौथे में पिता को नाशकारी होता है। यह पांच नक्षत्र की विष घटिका हैं।

अरिष्ट कारी चन्द्र = यदि जन्म समय मेषराशी में चन्द्रमा २३ अंश पर हो और अष्टम स्थान में पड़ा हो तो २३ वर्ष के अन्दर जातक की मृत्यु होगी। यदि वृष के २१ अंश पर चन्द्र हो। मिथुन के २२ अंश पर कर्क के २२ अंश पर सिंह के २१ अंश पर कन्या के १ अंश पर तुला के ४ अंश पर वृश्चिक के २१ अंश पर धन के १८ अंश पर मकर के २० अंश पर कुम्भ के २० अंश पर मीन के १० अंश पर यदि जन्म समय का चन्द्रमा हो तो अरिष्ट कारक होता है। बालक की मृत्यु उतने ही वर्षों के अन्दर हो जाती है। यानी जितने अंश पर लिखा है उतने वर्ष में मृत्यु हो जाती है। चन्द्रमा का आठवें स्थान में रहना केवल मेष राशी के चन्द्रमा के लिये कहा गया है। बाकी राशियों के लिये आठवें में रहना ही आवश्यक नहीं है।

॥ चन्द्र के अरिष्ट अंशों की जानकारी ॥

राशी	मेष के	वृष	मि.	क	सिं	क.	तु	वृ	ध	म.	कु	मी	चन्द्र के इतने
सर्वार्थ चिन्ता मणि ग्रन्थ मे अंश	२३	२१	२२	२२	२१	१	४	२१	१८	२०	२०	१०	अंश पर यह राशी हों तो
जातक पारिजात में	८	२५	२२	२२	२१	१	४	२३	१८	२०	२०	१०	उतने वर्ष में मरे
बृहत्प्रजापत्य में	२६	१२	१३	२५	२४	११	२६	१४	१३	२५	२५	१२	
फल दीपिका मे	२६	१२	१३	२५	२४	११	२६	१४	१३	२५	२५	१२	

यदि चन्द्रमा निर्बल हो। पापदृष्ट हो। शुभ ग्रह युक्त न हो दुःस्थान में हो तो बालक के लिये अरिष्ट कारक है। जातक जन्मभर रोगी जरूर रहता है।

यदि लग्न से चन्द्र १२वें स्थान में शनि ७ में सूर्य ८वें में मंगल हो तो अरिष्ट कारक है यदि गुरु बली होकर देखता हो तो अरिष्ट भंग कर देता है।

यदि चन्द्रमा किसी भाव में पाप ग्रह के साथ बैठा हो, और उस पर किसी शुभग्रह की नज़र न हो तो, और लग्न में एक भी पाप ग्रह बैठा हो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होती है। किसी का मत है चन्द्रमा के साथ मंगल का होना बहुत बुरा है।

क्षीण चन्द्र १२वें स्थान में हो लग्न या ८वें में पाप ग्रह बैठे हो तो केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो तो शीघ्र मरे। (चन्द्र कृष्णपक्ष की छठ से शुक्ल पक्ष की दशमी तक क्षीण होता है)

क्षीण चन्द्र यदि लग्न में बैठा हो। ८वें या केन्द्र में पाप ग्रह हों तो भी शीघ्र मरे।

। मरण विचार।

यदि क्षीण चन्द्र पर राहू की नज़र हो ऐसा जातक शुद्ध दिन में ही मर जाता है।
यदि चन्द्रमा ७ - ८ - ४ किसी स्थान में हो परन्तु पाप ग्रहों से घिरा हो जैसे ४ में चन्द्र हो ३-५ में कोई पाप ग्रह हो तो भी मरे।
क्षीण चन्द्र १२ में हो लग्न, और ८ वें स्थान पर पाप ग्रह हों केन्द्र में शुभ ग्रह न हों तो भी मरे

चन्द्रमा का पाप ग्रह के साथ होकर लग्न में या ५- ७ - ८ - ९ - १२ स्थान में रहना बहुत अशुभ है। यदि कोई इसे शुभ ग्रह न देखते हों तो। चन्द्र के साथ मंगल, प्रतिदवंद्व
यदि चन्द्रमा ६-८-१२-स्थान में हो उस पर राहू की नज़र भी हो तो बालक मरेगा शीघ्र यह अरिष्ट यदि गुरु भी लग्न में हों तो भी भंग नहीं होता है। सर्व सम्मत से जन्मलग्न से ६ - ८ में चन्द्र अरिष्ट कारक है।
यदि ६-८ वें स्थान में चन्द्रमा के साथ शुभ ग्रह बैठा हो परन्तु उस पर किसी बली पाप ग्रह की नज़र हो तो बालक १मास तक जीता है। यदि तीन पापग्रह की नज़र हो तो
यदि लग्न में चन्द्रमा हो ७ वें स्थान में तीन पापग्रह हों तो ऐसा बालक शीघ्र मरे।
यदि चन्द्रमा ८ - ९ - १० स्थान में हो, और गुरु केन्द्र में न हो तो बालारिष्ट होगा।
शनि की ७-३-१० में पूर्ण दृष्टि होती है। यदि चन्द्रमा पर शनि की तीसरी दृष्टि हो यानी शनि से चन्द्रमा तीसरे स्थान में हो तो बालक को कठोर अरिष्ट होता है।
यदि लग्न तथा ८ वें स्थान में पापग्रह हों चन्द्र नीच हो या शत्रु के घर में हो गुरु केन्द्र में न हो तो बालारिष्ट योग होता है।
यदि चन्द्रमा से ५ - ९ वें स्थान में सूर्य बैठा हो तो बालारिष्ट योग होवेगा। तीन सप्ताह में ही खतम हो जाता है। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो नहीं मरता है।
चन्द्रमा यदि कर्क राशी गत हो ८ - १२ वीं राशी में पापग्रह हों तो बाला रिष्ट होता है।
यदि सूर्य लग्न में हो पापग्रह ५ - ९ - ८ में हों कोई बली शुभ ग्रह सूर्य को न देखे तो

यदि शनि मं. सू. ६ - ८ स्थान में हो, और उस पर न शुभ न अशुभ की नज़र हो तो शीघ्र मरे
लग्न का स्वामी नीच अथवा ८ वें में हो शनि ७ वें में हो तो शीघ्र मरे।
यदि मंगल लग्न में हो सूर्य शनि एक साथ हों अथवा अ. लग २ हो कर हो २ - ३ - ७ में हो तो एक मास में बालक की मृत्यु होगी।
यदि मंगल लग्न में शुभ ग्रह की नज़र न हो और शनि ६ - ८ में हो शीघ्र मरे।
शनि मंगल साथ होकर ७ में हों शुभ ग्रहों की नज़र न हो तो शीघ्र मरे।
यदि मंगल ३ - २ - ९ स्थानों में किसी में हो और शनि सूर्य साथ हों तो शीघ्र मरे। दस दिन पहले ही। यदि सब ग्रह आपोक्लीं (अर्थात् ३ - ६ - ९ - १२ स्थानों में हो तो बालक २ मास अथवा ६ मास तक जीता है।
यदि लग्न स्वामी नीच हो सूर्य के साथ हो अथवा लग्नेश और सूर्य ८ में हो शीघ्र मे
जितने दिन जीवे रोगी रहे। मृतक वत रहे।

किसी का जन्म कर्क राशी के अन्त में सिंह राशी के आदि में वृश्चिक के अन्त में धन के आदि में मीन के अन्त में मेष के आदि में हो तो बालारिष्ट योग होवे।
यदि लग्नेश निर्बल हो पापग्रह लग्न में हो चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण के समय का जन्म। जातक २ वा तीन माह में मर जायेगा। गुरु ८ वें में न हो और लग्न स्वामी ही पाप ग्रहों के साथ हो। शनि की नजर हो। ३ में कोई पाप ग्रह हो तो शीघ्र मरे।
यदि बालक का जन्म पिता के जनम लग्न में हो लग्न स्वामी दो पाप ग्रहों से घिरा हो तो चाहे शुभ ग्रह ही क्यों न साथ में हो तो भी शीघ्र मरे।
यदि गुरु ८ वीं रासी में हो केतु पर सू चं मं श की नजर पर इन पापग्रहों पर शुक्र की नज़र न पड़ती हो तो जातक मरा पैदा होगा।
यदि राहू मेष या बृष के अतिरिक्त अन्य किसी रासी का होकर लग्न में बैठा हो तो भी
यदि मंगल चन्द्रमा के नवांश में होकर ७ वें पर बैठा हो शुभ ग्रहों की नज़र न हो तो जन्म नक्षत्र के ७७ वें नक्षत्र पर जब गोचर का चन्द्र आवेगा बालक मरजायेगा। यानी २७-२७ दो बार नक्षत्र गिने ५४ वां नक्षत्र हुआ १२ नक्षत्र और गिने। द्व नक्षत्र हुऐ तो द्व के बाद ७० वां नक्षत्र जब शुरु होगा, और फिर जब खतम होगा उसके अन्दर सात दिन में मर जाना चाहिऐ। यदि शनि मंगल सूर्य ५ स्थान में हो तो उसको भी मृत्यु ७७ वें दिन होगी। यदि शनि ७ वें में या लग्न में हो लग्न चर रासी हो चन्द्र लग्न या वृश्चिक राशी में हो तो भले शुभ ग्रह केन्द्र में हो शीघ्र मरेगा।
यदि गुरु वृश्चिक या मेष रासी का हो अथवा नीच का हो जन्म समय सूर्योदय सूर्यास्त या सन्ध्या या दुपहर का ठीक समय हो १ मास में मरे। यदि शनि १२ वें में सूर्य ९ वें में चन्द्र लग्न में मंगल ८ में और बली गुरु की नज़र न हो तो शीघ्र मरेगा।
यदि चन्द्र लग्न पर शुभ ग्रह की नज़र न हो लग्न अथवा चन्द्रमा पाप ग्रहों से घिरा हो तो गर्भवती स्त्री बालक सहित मरजायेगी। या प्रसव के बाद दोनों की मृत्यु होगी
यदि चन्द्र शनि राहू के साथ किसी स्थान में बैठा हो लग्न से ८ वें मंगल हो तो दोनों मरे
यदि चन्द्र शनि राहू के साथ किसी घर में हो सूर्य लग्न में हो तो आपरेशन से बालक हो
यदि चन्द्र के साथ शनि हो सूर्य १२ में मंगल ४ में हो तो माता सहित बालक मरे। मरे
यदि ग्रहण के समय जन्म हो चन्द्र के साथ शनि लगन में हो मंगल ८ में हो तो माता शस्त्र से
यदि चन्द्रमा से ६-८-७ में स्थान में पाप ग्रह हो बालक माता दोनों मरें।
यदि पाप ग्रह ६-८-१२ में हों उनके साथ शुभ ग्रह न हों शुक्र गुरु पापग्रहों से घिरे हों तो जातक माता सोबर में मरेंगे। यदि सू. मं. शनि चन्द्र औरों के साथ होकर लग्न में हों तो बालक माता दोनों को अनिष्ट है।
यदि सूर्य चं. श. मं एक साथ ५ वें घर में हों बालक माता पिता भाई सभी को भारी है
यदि इन्हें शुभग्रह देखें तो न मरे। यदि सू- श. मं ८ में हों तो जातक पिता भाई को भारी होता है। शस्त्र से मरने के योग बन जाते हैं।

यदि ६-८-१२ में पापग्रह हो शुभ ग्रह न देखता हो बालक और पिता दोनों को भारी है।
जन्म समय का चन्द्र जिस रासी में हो उस रासी में जब गोचर का चन्द्र आवे तो दुखद बालक
जन्म होने के बाद गोचर का चन्द्र जन्म लगन की रासी में जब आवेगा अरिष्ट होगा।
१२ बार एक वर्ष में इस तरह का योग आता है।

चन्द्रमा ३ अवस्थाओं में मृत्यु कारक होता है। जब क्षीण होगा। जब ६-८ १२वें का
घर का स्वामी बनेगा। तो १२ बार अरिष्ट योग होगा।

॥ माता पिता भाई बहन सखा परिजन का विवरण ॥

मानव जीवन की यह दूसरी अवस्था है। माता पिता सुख। माता पुत्र सुख पारस्परिक प्रेम। मातृ मृत्यु। पिता भाई का सुख। भाई का जनम। भाई की संख्या। भाई का प्रेम भाई की उन्नति। भाई की मृत्यु अन्य कुटम्बियों के विषय में बिवरण किया गया है।

) माता का विचार चौथे स्थान से चतुर्थेश से चन्द्रमा से यदि बालक का जन्म समय दिन हो तो शुक्र से, रात्री हो चन्द्र से माता का विचार किया जाता है। यदि जन्म दिन में हो तो। सूर्य से पिता का विचार चन्द्रमा से मामी का विचार। शुक्र से माता का। शनि से चाचा का विचार करना चाहिये।

यदि रात में बालक का जनम हो तो सूर्य से चाचा का चन्द्र से माता का। शुक्र से मामी का। शनि से पिता का विचार करो। यदि चौथे स्थान में शुभ ग्रह हो ४ का स्वामी उच्च रासी में हो मातृ कारक ग्रह बलवान हो तो माता दीर्घायु होवे। यदि ४ में शुभ ग्रह हो मातृ कारक जैसा ऊपर लिखा है दिन रात के जन्मानुसार जिस ग्रह से जिस सम्बन्धी का विचार लिखा है वह ग्रह उसका कारक ग्रह होता है। जैसे रात के जनम में चन्द्रमा से माता का बिचार लिखा है तो चन्द्रमा ही मातृ कारक ग्रह है। यदि मातृ कारक ग्रह चन्द्र के साथ शुभ ग्रह के साथ हो और चतुर्थेश बली हो तो माता जीवे यदि चन्द्रमा अथवा शुक्र उच्च नवांस में हो उस पर शुभ ग्रह की नज़र हो अथवा शुभ ग्रह केन्द्र में हो चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह हो शुभ ग्रह की नज़र हो तो माता दीर्घायु होती है। यदि चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो उसके साथ पाप ग्रह हों माता दीर्घायु नहीं है। रहस्य यह है दो पाप ग्रहों के मध्य शुभ ग्रह का या दो शुभ ग्रह के मध्य चतुर्थेश का मतलब यह है तीस अंश पहले ३० अंश बाद अन्तर में केवल शुभ ग्रह या पाप ग्रह हों तो वही मध्य में कहलाता है। जैसे किसी का चन्द्रमा मेष के ५ अंश पर हो तो इस ५ अंश के पहले अर्थात् मीन के ५ अंश के बाद से मेष के ४ अंश तक और मेष के ५ अंश के बाद से बृष के ५ अंश तक के अन्तर में यदि दोनों तरफ पाप ग्रह हों तो वह चन्द्रमा पाप मध्य गत अथवा पाप से घिरा हुआ कहलाता है। यदि शनि पाप रासी में हो और उस पर पाप ग्रह की नज़र हो तो माता शीघ्र मरे यदि शनि पर शुभ ग्रह की नज़र हो तो माता की रक्षा होती है। यदि शनि के साथ पाप ग्रह हों तो भी माता मरेगी। अमावस का चन्द्रमा अथवा सूर्य से दस अंश के अन्तर में हो और चन्द्र नीच हो या नीच नवांश में हो तो माता मरेगी।

बाल्य काल में मृत्यु माता को। ॥ माता की मृत्युविचार ॥

यदि चन्द्र से चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो और उसके साथ शुभ ग्रह न हो, अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो माता की मृत्यु हो जाती है।

(२) यदि सूर्य चन्द्र चौथे स्थान में और शनि ७ वें में हो, और दोनों के पाप ग्रह हों या दोनों पाप ग्रहों की नजर में हो, अथवा पाप ग्रह चतुर्थेश के साथ हो तो माता मरे।

३) यदि लग्न से चतुर्थेश के साथ या चौथे में बली पाप ग्रह हों। केन्द्र में अन्य ग्रह हों।

४) यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में सूर्य, अन्य पाप ग्रहों के साथ होकर बैठा हो तो माता मरे।

५) यदि सूर्य, अथवा मंगल ८ वें में हो चन्द्र क्षीण हो, और चन्द्र पर पापग्रह की नज़र हो तो मरे। जैसे किसी का जन्म शुक्लपक्ष की परिवा को हुआ तो उसकी कुण्डली का चन्द्र क्षीण होगा।

६) चन्द्रमा यदि सूर्य मंगल, अथवा शनि के साथ हो कर छठे स्थान में हो तो माता शीघ्र मरे

७) यदि सूर्य मंगल या शनि ७ वें स्थान में हो तो माता को भय कारक है। उस पाप ग्रह की नज़र हो

८) यदि क्षीण चन्द्रमा राहू, अथवा केतु के साथ होकर ७ वें स्थान में बैठा हो तो माता को कष्ट

९) यदि चन्द्रमा सूर्य, अथवा शुक्र ४ में हो, और मंगल ७ वें स्थान में हो शुभ ग्रह की नज़र न हो तो (जल्दी मरे)

१०) यदि शनि और मंगल जहां चन्द्र बैठा हो वहां से सातवें स्थान में हो तो माता ९ या ८ मास में मरे

११) यदि गुरु लग्न में हो चन्द्र छठे हो गुरु चन्द्र पर शनि की नज़र हो तो मात ३ हफ्ते में मरे

१२) यदि दिन के समय का जन्म हो मंगल, शुक्र से तीनों जहां बैठा हो वहां से यदि मंगल ५-९ में हो और चन्द्र निर्बल हो यानी वृश्चिक रासी के उपांशतक ही हो तो, और पापग्रह की नज़र (हो तो मरे)

१३) यदि रात के समय का जनम हो चन्द्रमा से शनि ५ वें ९ वें स्थान पर हो निर्बल चन्द्र हो पाप ग्रहों की नजर हो तो माता की जल्दी मृत्यु होवे।

१४) यदि शनि मंगल ४ में हो पाप ग्रहों की नज़र हो तो मरे।

१५) यदि चन्द्र से सातवें स्थान पर शनि गुरु आठवें स्थान पर हों पापग्रह की नज़र हो तो मरें।

१६) चन्द्र, अथवा शुक्र पाप ग्रह से घिरा हो या पाप ग्रहों की नज़र हो तो माता शीघ्र मरे।

१७) यदि लग्न और चन्द्र पाप ग्रह की नज़र में हो गुरु केन्द्र में न हो तो मरे।

१८) यदि चन्द्र पर पाप ग्रहों की तीसरी नज़र हो शुभ ग्रह कोई न देख रहा हो तो मरे।

१९) यदि चन्द्रमा से त्रिकोण (५।९) में शनि हो जनम रात में हो तो माता मरे।

२०) यदि दिन में जन्म हो शुक्र मंगल पाप युक्त हो तो माता शीघ्र मरे।

२१) यदि ४-७ वें में पापग्रह हों उनमें से किसी के साथ चन्द्र भी हो तो माता को खतरा है।

२२) यदि चन्द्रमा से ७-८-९ में सभी पाप ग्रह हों तो माता को खतरा।

२३) यदि पाप ग्रह लग्न में ७ में ८ में हो शुभ ग्रह न देखे तो खतरा।

२४) यदि पाप ग्रहों से चन्द्र किसी पाप ग्रह के साथ होकर ७-८ में हो अथवा कोई बली पाप ग्रह देखे तो

२५) चन्द्र से चौथे स्थान में पाप ग्रह अपने शत्रु के घर बैठे हों तो माता पिता बालक तीनों मरें। यदि केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न बैठे हों।

२६) यदि लग्न में ७-१२ में क्रूर ग्रह हों। दुसरे में शुभ ग्रह हो तो माता की कौन चलाई पूरा परिवार क्षय हो सकता है। यदि बली शुभ ग्रह की नज़र न हो।

२७) लग्न में गुरु दूसरे में शनि तीसरे में राहु हो तो माता को खतरा।
२८) क्षीण चन्द्र से ५-८- में पाप ग्रह हो शुभ ग्रह की नज़र न हो तो खतरा छ मास में माता को
२९) यदि शनि मंगल एक ही नवांश में होकर किसी स्थान में हो चन्द्र केन्द्र में हो तो मरे
३०) यदि चन्द्रमा से ८ में मंगल शत्रु के घर हो चाहे शुभग्रह की नज़र क्यों न हो माता को खतरा।
३१) यदि कोई कन्या अपनी माता के जनम नक्षत्र में जनम ले तो माता मरे।

॥ मातृ पुत्र प्रेम योग ॥

यदि लग्न स्वामी चौथे का स्वामी आपस में मित्र हो उनपर शुभ ग्रह की नज़र हो या शुभ ग्रहों के साथ हों तो दोनों में प्रेम रहे। इसी प्रकार चतुर्थेश केन्द्र में हो उसपर लग्नेश की नज़र हो शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो भी प्रेम रहे। यदि जन्म बालक का या माता का मिथुन लग्न का हो और बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो या बुध पाप ग्रह के साथ हो तो माता पुत्र में अनबन अनबन रहेगी।

पिता का विचार नवम स्थान नवें स्थान के स्वामी से, और सूर्य से होता है। यदि पुत्र का राशी में जनम हो तो शनि से भी पिता का विचार होता है। सूर्य पितृ कारक होता है। यदि सूर्य छठे में हो तो शुभ जरूर होता है परन्तु पितृवंशोद्भवों को कष्ट देता है।

३) नवें दूसरे में अर्थात कर्मस्थान (दशम) में यदि मंगल रहे भाग्याधिपति यानी ९ का स्वामी नीच रासी में बैठा हो तो पिता निर्धन होता है।

४) ९ का स्वामी सूर्य पाप दृष्ट पाप युक्त अथवा पापग्रहों के मध्य में हो तो पिता दुखी रहे।

५) यदि नवें स्थान का स्वामी शुभ ग्रह हो सूर्य शुभ ग्रह से युक्त हो, अथवा ९ वां भाव शुभ युक्त हो तो पिता सुखी रहता है।

६) ९ वें स्थान का स्वामी शुभ ग्रहों के मध्य हो गुरु या शुक्र किसी की उस पर नज़र हो २ स्थान में हो पिता सुखी रहे।

७) यदि पुत्र का लगन पिता की अष्टम स्थान में में हो अर्थात् पिता के ८ वें स्थान की जो रासी हो वही राशि यदि पुत्र का लगन स्थान हो अथवा, अष्टमेश पुत्र के लगन में हो तो पिता को खतरा।

८) ९ वें स्थान का स्वामी लगन स्वामी से बली हो सूर्य पर शुभ ग्रह की नज़र हो तो जातक पिता का प्रेमी होता है। आज्ञाकारी होता है।

९) पिता की दशम स्थान में जो रासी हो वही पुत्र के लगन में रासी हो तो पिता के समान हो

१०) यदि पिता पुत्र का लगन एक ही राशी में हो अथवा पिता की कुण्डली के तीसरे स्थान में जो रासी हो उसी रासी में पुत्र का जनम हो तो पुत्र पिता का धन प्राप्त करे। यदि पुत्र की कुंण्डली में दशमें स्थान में सूर्य मेष का हो वह पिता का धन प्राप्त करे

११) यदि बालक का जनमलगन पिता की छठी ८ वीं रासी में हो वह पिता का द्रोही हो।

१२) जब बालक का लगन पिता की २-३-९-११ स्थान गत रासी में हो तो पुत्र सेवक है

१३) यदि पुत्र का जनम ~~नक्षत्र~~ पिता के जनम नक्षत्र में हो, अथवा पिता के जन्म नक्षत्र से एक नक्षत्र आगे या एक नक्षत्र पीछे हो तो पुत्र परदेश में रहेगा।

१४) यदि लग्नेश नवमेश या सूर्य पर शुभ ग्रह की नज़र हो तो पुत्र पूर्ण आज्ञाकारी होगा।

१५) रात में जन्म होने से शनि (मेष. मिथुन. सिंह तुला धन. कुम्भ) में हो दिन में जन्म हो सूर्य भी विषम रासी यानी बेजोड़ रासी में हो तो पिता को शुभ

१६) यदि चतुर्थेश ६-९ भाव में हो तो पिता भोगी विलासी होगा। अथवा ४-९ का स्वामी ४ अस्थान में हो तो भी पिता विलासी।

॥ बाल्य काल में पिता की मृत्यु॥

१) यदि ५-८ भाव की रासी क्रूर रासी हो उसमें सूर्य बैठा हो पिता की मृत्यु होती है। यदि ५-८ भाव में चन्द्रमा बैठा हो माता की मंगल बैठा हो भाई की मृत्यु बुध बैठा हो मामा की मृत्यु गुरु बैठा हो नानी की मृत्यु शुक्र बैठा हो नाना की मृत्यु शनि बैठा हो बालक की मृत्यु है।

२) यदि सु - चं - मं श॰ पांच में बैठा हो, अथवा इनकी पाचवें में नज़र हो पंचमेश के साथ हो यह पाप ग्रह तो बालक के भाई माता पिता कुल के लोगों को विशेष भय नहीं होता। परन्तु गुरु और शुक्र शुभ रासी में बैठकर पंचमेश पर नज़र डालते हों तो कोई अशुभ फल नहीं होता। जगत गुरु शंकराचार्य की कुंडली में चन्द्रमा पांचवें स्थान को देख रहा है, पर गुरु शुक्र की नज़र नहीं है स्मरण रहे चन्द्र पाप रुप है इसलिये चन्द्र की महादशा में ~~उनकी मौत हुई~~। उनके पिता की मौत हुई।

३) यदि सु - शनि १२वें में हो क्षीण चन्द्र ७ में हो तो पिता की मौत शीघ्र होवे। यदि चन्द्र पर शुभ नज़र हो तो ३ वर्ष में पिता की मृत्यु होती है।

४) यदि शनि राहू १२ स्थान में हो क्षीण चन्द्र ७ में हो शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो पिता की मृत्यु होवे

५) यदि मंगल सूर्य साथ हों उन पर शनि की नजर हो पिता १ वर्ष में मरे।

६) यदि राहू ८ में हो उस पर सू॰ मं॰ श॰ की नजर पड़ती हो बालक के जनम से १ हफ्ते के भीतर पिता को अरिष्ठ होगा

७) यदि शनि मंगल सूर्य से ८ वें स्थान पर हों उन पर सूर्य की नजर न हो पिता मरे।

८) यदि नवमेश से ८ वें स्थान में सूर्य राहू हों, और उनके संग शुभ ग्रह न हो न नज़र हो तो मरे।

९) यदि लगन से नवमस्थान में सूर्य पाप ग्रह के साथ हो जन्म समय सूर्य की महादशा हो तो

१०) यदि नवमेश राहू के साथ नवमस्थान में ही बैठा हो राहू की महादशा जन्म समय हो तो पिता मरेगा

११) यदि लग्न से नवें स्थान में राहू केतु हो, और राहू केतु की ही महादशा में जन्म हो तो, अर्थात आर्द्रा - स्वाती - शतभीषा - अश्वनी - मघा - मूल नक्षत्र में जन्म बालक का हो तो मरे

१२) यदि राहू नवें में हो उसके साथ उसके साथ कोई उच्च ग्रह बैठा हो या उच्च ग्रह की महादशा में जनम हो तो पिता की मृत्यु होवे।

१३) यदि नवें का स्वामी, और राहू एक दूसरे से छठे ८ वें स्थान में बैठा हो जन्म राहू की महादशा अथवा नवमेश की महादशा में हो पिता को खतरा होता है। महाराजा रामेश्वर सिंह जी की कुण्डली में नवमेश शनि है शनि से राहू छठे में है। शनि से राहू से शनि आठवें में है। जन्म स्वाती नक्षत्र में हुआ राहू की महादशा है, अतः

१४) यदि सूर्य पाचवें में हो स्वग्रही अथवा उच्च न हो यानी सिंह मेष रासी में सूर्य न हो तो पिता को विशेष कष्ट होगा। पिता मरे

१५) यदि सूर्य १० में स्थान में पापग्रह हो। लगन से दशमेश नीच का हो पापयुक्त हो तो पिता को महान कष्ट कारक होगा। अमावा के राजा की कुण्डली में सूर्य से दशवें स्थान में राहू है लगन से दशमेश गुरु नीच रासी का है। क्षीण चन्द्र एवं राहू से दृष्ट है चार मास में ही पिता मर गये थे।

१६) सूर्य यदि पापग्रह की नज़र में हो या पाप ग्रहों के बीच में पड़ जाय तो पिता को अरिष्ट होता है पाराशर बताते हैं सूर्य से सातवें घर में कोई पाप ग्रह हो तो पिता को भारी है।

ऊमावा के राजा की शनि से युक्त है। एक जगह सूर्य पापग्रह केतु और बुध से युक्त है शनि देख रहा है पिता गुजर गये। एक जगह सूर्य राहू से युक्त मंगल की नज़र में है पिता गुजर गये। एक जगह सूर्य शनी की नज़र में है पिता गुजर हो गया।

१७) सूर्य जहां बैठा हो वहां से छठे ८वें ४ मे ८ मे कोई पापग्रह हो कोई शुभ ग्रह की नज़र न हो तो पिता को अरिष्ट होता है।

१८) यदि लग्न में शनि ७ में मंगल ६ मे चन्द्र हो पिता गुजरेगा। यदि पाप ग्रह

१९) पाप ग्रह ४-१०-१२वें स्थान में हो बालक के माता पिता मरें और बालक देशान्तर में भ्रमण करता है।

२०) यदि सूर्य ७ में मंगल १० में राहू १२ में हो तो पिता को खतरा।

२१) यदि दशवें स्थान में मं शत्रु की रासी में बैठा हो पिता को खतरा।

२२) यदि केतु ४-५-८वें स्थान में हो पिता को भय है। शारीरिक कष्ट होगा यदि केतु पाप ग्रह की नज़र में हो तो मृत्यु भी हो सकती है। रामानुजाचार्य की में ४ में केतु था पापग्रह मंगल शनि सूर्य देख रहे थे गुरु से शुभ दृष्ट है इसी से पिता सोल्हवें वर्ष मर गये। एक जगह केतु ८वें में है परन्तु पाप दृष्ट पापयुक्त नहीं है परन्तु अन्य योगों के कारण ही पिता मरे। एक जगह ५वें में केतु शनि दृष्टी में है। पिता की मृत्यु हुई।

२२) यदि सूर्य ६-८-१२वें स्थान में हो जन्म लग्न सिंह अथवा मीन के द्वादशांश में हो तो पिता के मरने के बाद ऐसा बालक जनम लेता है। एक की कुण्डली में सूर्य छठे स्थान में है, और लग्न कुम्भ राशी के १७ अंश पर है इस लिये लग्न सिंह के द्वादशांश में हुआ इसलिये पिता पहले मरा बच्चा बाद में हुआ।

२४) यदि सूर्य मंगल के नवांश में हो शनि से दृष्ट हो पिता पहले मरे बाद में बच्चा हो एक जगह सूर्य मंगल के नवांश में है शनि की नजर है

२५) यदि सूर्य शनि मंगल एक संग होकर किसी स्थान में हों पिता पहले मरे बाद मे बच्चा हो

२६) यदि दिन में जनम हो सूर्य पर मंगल की नज़र हो और रात में जन्म हो शुक्र पर मंगल की नज़र हो तो पिता पहले मरे बच्चा बाद में हो।

२७) यदि जन्म कालीन सूर्य और शुक्र चर रासी में हों मंगल की नज़र हो पिता पहले या मंगल से युक्त हो।

२८) जन्म रात में हो शनि मंगल साथ होकर चर रासी में हो तो भी पिता परदेश में मरेगा

२९) जातक का जनम लग्न जनम नक्षत्र नवांश भी वही हो तो जनम होते पिता मरे

३०) धन स्थान में यदि राहू शुक्र शनि सूर्य बैठे हों तो जनम के पहले पिता जन्म के बाद माता मरे।

द्वादशांश चक्र

अं.क.	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृश्चि	ध	म	कु	मी
२।३०	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
५।०	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं
७।३०	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१०।०	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२।३०	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं
१५।०	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू
१७।३०	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु
२०।०	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु
२२।३०	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं
२५।०	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु
२७।३०	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श
३०।०	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श

त्रिंशांश चक्र

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृश्चि	धन	मकर	कु.	मी.	अंश स्वामी
५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	
५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	
८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	
७ बु	५ श	७ बुध	५ श	५ बु (?)	७ श	५ बु	७ श	५ बु	७ श	५ बु	७ श	
५ श	५ मं	५ शु	५ मं	५ श (?)	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	

जिस दिन जो बार होता है उसी बार का सूर्योदय से १ घंटा तक होरा रहता है। जिस दिन देखना हो पंचाङ्ग में सूर्योदय का घंटा मिनट देख लो। जैसे सूर्योदय ६।४६ पर हुआ तो ७।४६ तक उसी बार का होरा माना जाता है। ७।४६ के बाद दूसरे ग्रह का माना जायेगा

॥ होरा चक्र ॥

अं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१५	५ सू	चं ४	५ सू	चं ४	५ सू	चं ४	५ सू	चं ४	५ सू	चं ४	५ सू	चं ४
	चं ४	सू ५	४ चं	सू ५	४ चं	सू ५	४ चं	सू ५	४ चं	सू ५	४ चं	सू ५

द्रेष्काण के चक्र का टुकड़ा		मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
	१०	१ मं	२ शु	३ बुध	४ चं	५ रवि	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु	१० श	११ श	१२ गु
	२०	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ गुरु	१० श	११ श	१२ गु	१ मं	२ शुक्र	३ बुध	४ चं
सही होरा चक्र	३०	९ गुरु	१० शनि	११ शनि	१२ गुरु	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं

वार	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सू	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	श	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मं
चं	चं	शनि	गुरु	मं	सू	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध
मं	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
बुध	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र
गुरु	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सू	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
शुक्र	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सू
शनि	शनि	गुरु	मं	सू	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सू	शुक्र	बुध	चं
सूर्य	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं

सप्तमांश चक्र

अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
४ १७ ८	१ मं	८ मं	३ बुध	१० श	५ सू	१२ गु	७ शु	२ शु	९ गु	४ चं	११ श	६ बु
८ ३४ १७	२ शु	९ गु	४ चं	११ श	६ बुध	१ मं	८ मं	३ बुध	१० श	५ सू	१२ गुरु	७ शुक्र
१२ ५१ २५	३ बु	१० श	५ सू	१२ गुरु	७ शु	२ शु	९ गु	४ चं	११ श	६ बुध	१ मं	८ मं
१७ ८ ३४	४ चं	११ श	६ बुध	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	५ सू	१२ गु	७ शुक्र	२ शु	९ गु
२१ २५ ४२	५ सू	१२ गु	७ शु	२ शु	९ गु	४ चं	११ श	६ बुध	१ मं	८ मं	३ बुध	१० शनि
२५ ४२ ५१	६ बु	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	५ सू	१२ गुरु	७ शु	२ शु	९ गु	४ चं	११ श
३०	७ शुक्र	२ शु	८ मं	४ चं	११ श	६ बुध	१ मं	८ मं	३ बुध	१० श	५ सूर्य	१२ गुरु

घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं	घं
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध
चं	श	गु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र
बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं	सूर्य
शुक्र	बुध	चं	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मं
सूर्य	शुक्र	बुध	चं	शनि	गुरु	मं	सूर्य	शुक्र	बुध

सम रासी में शुरु में सूर्य का होरा माना जावेगा १५ अंश तक लगन जो बनाई है उसमें देखलो कितना अंश कला बीता जैसे लगन ४।२५।१०।२० है तो सिंह लगन में २५ अंश १० कला २० विकला पर लगन है। सिंह लग्न विषम लगन है। तो १५ अंश के ऊपर हो गयी चन्द्र के होरा में जन्म हुआ समझो। विषम रासी में १५ अंश तक चन्द्र का होरा होता है चक्र में देखलो पक्षा मैं

लगन मे, चौथे स्थान मे, सातवें स्थान मे, दशवें स्थान मे, क्रम से देखो। इनमे यह ग्रह बली माने जाते हैं। लगन में शनि, चौथे में मंगल, सातम में गुरु बुध। दशवें में शुक्र चन्द्र निर्बल होते हैं।

दिग्बल चक्रम



दिग् निर्बल चक्रम



॥ दिन रात्री का बल विचार ॥

चं - शनि - मंगल रात्री में बलिष्ठ होते हैं। सू - गुरु - शुक्र दिन में बलिष्ठ होते हैं। बुध सदा काल बली रहता है।

शुक्ल पक्ष में शुभ ग्रह शुभ होते है कृष्णपक्ष में पाप ग्रह शुभ हैं। शुक्र-बुध-मंगल-गुरु-शनि उच्च हो या बली हों, या वक्री हों, या चन्द्रमा के साथ हों, तो इनको चेष्टा बल पूर्ण होती है। चन्द्र का सूर्य के उत्तरायण मे चेष्टा बल अधिक होता है। हर गृह के छे बल होते हैं (दृष्टि, -स्थान, -निसर्ग, - चेष्टा, दिग् - काल यह छे बल हैं।)

गृह चाहे जिस स्थान में हो उससे २-३-४-१०-११-१२ वें स्थान के गृह आपस में तत्कालिक मित्र होते हैं। और १-५-६-७-८-९ स्थान में स्थित गृह आपस में शत्रु होते हैं। चक्र में देखो

नैसर्गिक माने स्वाभाविक रूप से

नैसर्गिक मित्र शत्रु का बोध चक्रम्

ग्रहा:	शत्रव:	मित्राणि	उदासीना: सम हैं।
सूर्य	शुक्र: शनि:	मं - चं - गु	बुध
चन्द्र	०	रवि बुध:	गु - मं - शुक्र - शनि
मंगल	बुध	रवि: चंद्र: गुरु:	शुक्र: - शनि:
बुध	चन्द्र:	सूर्य: शुक्र:	शनि: गुरु: मंगल:
गुरु	शुक्र: बुध:	सू - मं - चं	शनि:
शुक्र	सूर्य: चंद्र:	शनि: बुध:	गुरु: मङ्गल:
शनि	सू - चं - मं	शुक्र: बुध:	गुरु:

सूर्य	स्थिर बुद्धि वाला है
चंद्र	चंचल · · ·
मंगल	क्रूर मति · · ·
बुध	मिश्रित मति का
गुरु	कोमल स्वभाव
शुक्र	लघु बुद्धि वाला
शनि	तेज उग्र स्वभाव का

तत्कालिक मैत्री वा शत्रु विचार

उदाहरणार्थ चक्रम् देखो।



नीचे चक्र में सूर्य के दूसरे स्थान पर गुरु है तीसरे चन्द्र। चौथे पर शनि है, दशवें में मंगल है। ग्यारहवें में बुध है। यह सब गृह सूर्य के तत्कालिक गृह समझो।

१ स्थान में शनि पांच में चन्द्र छै में मंगल सात में बुध आठ में गुरु नौ में शुक्र सूर्य के तत्कालिक शत्रु हुऐ।

२।३।४।१०।११।१२।। इन स्थानों पर हर गृहों के हर गृह यह बैठे हुये मित्र माने गये १।५।६।७।८।९ वें स्थान पर हर गृहों के गृह बैठे हुऐ शत्रु माने जायेंगे तत्कालिक

यदि तत्कालिक मैत्री और नैसर्गिक मैत्री दोनों मिले तो अति मैत्री समझो। यदि तत्कालिक और नैसर्गिक शत्रु गृह हों तो अति शत्रुता समझो। एक में मित्र दूसरे में सम (उदासीन) गृह हों तो केवल उस गृह को शत्रु समझो। एक में शत्रु दूसरे में मित्र होने से सम होते हैं। जैसे इस चक्र में सूर्य से तीसरे गुरु बैठे हैं यदि गुरु के मित्र कौन हैं यह जानना हो तो देखो दूसरे स्थान पर गुरु से राहू मंगल बैठे हैं तो गुरु के राहू मंगल तत्कालिक मित्र हुये। नैसर्गिक चक्र में सूर्य के राहू मंगल मित्र होते हैं तो अति मित्रता समझो।



उषा
नारायण दत्त
[illegible]

प्रश्न विचार

(1) प्रश्न कुण्डली में सौम्य रासी की लगन हो (वृष. क. वृश्. मकर. मीन यह सौम्य रासियां है इनकी लगन हो। लगनस्वामी अपने घर में हो। या शुभग्रह लगन में हो या लगनस्वामी शुभग्रहों के घर में या मित्र के घर में बैठा हो तो शीघ्र कार्य सिद्धि होवेगी।

(2) या लगन का स्वामी लगन को देखता हो, या जिस कार्य के बावत का प्रश्न है उस कार्य भाव को, कार्य भाव का स्वामी देखता हो। जैसे सहज भाव का सम्बन्धी प्रश्न है। भाई का फर्ज करो प्रश्न है तो प्रश्न कुण्डली में सहज भाव में जो अंक विद्यमान हो उस अंक का स्वामी सहज भाव को देख रहा हो। (शीघ्र काम बने) अथवा लगन का स्वामी कार्य भाव को, और कार्य भाव का स्वामी लगन को देख रहा हो तो भी काम शीघ्र बनेगा। अथवा लगन के स्वामी को कार्य भाव का स्वामी कार्य भाव के स्वामी को लगन का स्वामी देख रहा हो, तो शीघ्र काम बने। और लगन या कार्य भाव पर चन्द्र की नज़र भी हो तो शीघ्र काम बने।

रवि चन्द्र बुध शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	राहू	केतु
७ - ७ - ७ - ७ -	७-४-८	७-५-९	७-३-१०	७-५-९-१२	७-३-१०.
सातवें को पूर्ण नज़र से देखता	पूर्ण नज़र	पूर्ण नजर	पूर्ण नज़र	पूर्ण	पूर्ण

इससे देखलो कौन ग्रह किसे पूर्ण नजर से देख रहा है।

कार्य भाव का स्वामी लगन में हो और लगन के स्वामी को देखता हो तो शीघ्र काम बनेगा।

यदि लगन का स्वामी लगन को न देखे तो, शुभ ग्रहों की
भले नज़र हो चौथाई काम बनेगा कहे।
लगन के स्वामी पर शुभ ग्रहों की नज़र हो तो आधा काम बनेगा
यदि एक शुभग्रह भी लगन को देखे या और लगन स्वामी
को देखे तो १५ विश्वा काम बनेगा। यदि चन्द्रमा
क्रूर ग्रहों की नज़र से बच कर शुभ ग्रह के लगन को
देखे लगन के स्वामी की नज़र भी लगन पर हो तो पूरा
काम बनेगा बतावे। ॥ अनिष्ट योग॥

जो ग्रह पाप ग्रहों से पीड़ित हों, पाप ग्रहों से युक्त हो, या
पापग्रहों की नज़र हो या जो ग्रह अस्त हो गया हो वह फल
नहीं देगा।

सूर्य के साथ सब ग्रह अस्त हो जाते हैं।

अपनी उच्च राशी में स्थिति ग्रह दीप्त कहलता है।
नीच राशी में दीन कहलाता है।
मित्र के घर में मुदित कहलाता है।
अपनी राशी में स्थित ग्रह स्वस्थ कहलाता है।
अपने शत्रु के घर में सुप्त कहलाता है यानी सोया ग्रह है।
पाप ग्रहों की नज़र से देखा हुआ हर ग्रह पीढ़ित कहलाता है,
नीचा भिलाषी ग्रह हीन
सूर्य के साथ अस्त ग्रह मुषित मरा हुआ कहलाता है,
उच्चाभिलाषी ग्रह सुवीर्य
शुभ वर्ग में अधिवीर्य संज्ञक कहा जाता है। ॥ ग्रह दृष्टियें॥

रवि चन्द्र बुध शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	राहू	केतु
७ - ७ - ७ - ७	७-४-८	७-९-५	७-३-१०-	७-५-९ १२-	७-३-१०

दीप्त अवस्था में स्थित ग्रह काम सिद्ध करता है। दीन में दुखी करे स्वस्थ में कीर्ति लक्ष्मी प्राप्ति। मुदित में आनन्द। सुप्त में शत्रु भय तथा दुख। पीड़ित में धन हानि। मुषित तथा हीन में (कार्य तथा धन हानि) सुवीर्यावस्था में हाथी, घोड़ा, सोना, रतन, धन प्राप्ती अधि वीर्य में राज्य लाभ मित्र तथा धन का संगम होता है।

यदि चन्द्रमा लगन अथवा लगन के स्वामी को देखता हो अथव लगन स्वामी कार्यस्वामी एक स्थान में बैठे हों तो काम बने यदि लगनेश अथवा कार्येश कार्य स्थान को न देखे तो काम न बने। प्रश्न में लगन से विचार करना चाहिये। चन्द्रमा से विचार करे। यानी चन्द्र बल देखे पत्रा में यदि प्रश्न शुक्ल पक्ष की दशमी तक और कृष्ण पक्ष की छठ तक कोई करे तो चन्द्र बलपूर्ण समझो। लगन के हिसाब से चन्द्रमा वृष के ३ अंश तक चन्द्र उच्च मेष के वृष के ४ अंश से ३० अंश तक चन्द्र मूल त्रिकोण में है। चन्द्र सपस्ट उस समय के इस्ट काल से करोगे तब अंशों का हाल मिलेगा। (लगनेश पाप ग्रह हो तो कलह रोग हो धन नाश हो देख इसे शुभग्रह देखें तो चित्त की व्याकुलता नस्ट होगा। लाभ होगा। (यदि लग्नेश शुभ ग्रह हो तो पवित्र बुद्धि द्रव्य की प्राप्ती सुख मिले।

...ध यदि लगन में हो उसे चन्द्रमा अथवा क्रूर ग्रह देखता हो तो शीघ्र लाभ होगा। चन्द्रमा की लगन और धन भाव के स्वामी ...ं परस्पर दृष्टि हो या लगन और धन भाव के स्वामी एक जगह ...ठे हों यदि त्रिकोण में बैठे हों दोनों तो शीघ्र लाभ।
...-७ वें घर में चन्द्रमा १० वें घर में सूर्य। लगन ने गुरु हो या कोई शुभ गृह हों तो प्रश्न कर्ता को शीघ्र लाभ होवे।

तन भाव फल = यदि लगन शुभ रासी हो तो दीर्घायु। राज पूजित सुखी हो।
लगन को लगनेश देखता हो तो धनी होतीक्ष्ण बुद्धि कुल की कीर्ती वृद्धि वाला हो।
यदि लगनेश त्रिकोण वा केन्द्र में [struck out] स्थित हो शुभ ग्रह से युक्त हो या बलवान
होकर शुभ ग्रह की रासी में हो तो भूमंडल में यश होवे। यदि लगनेश ६-८-१२
वे स्थान में हो या पाप ग्रह से युक्त हो या पाप ग्रहों से देखा जाता हो अथवा पाप
ग्रहों से घिरा हो तो मनुष्य बदनाम होगा।। यदि द्वितियेश या बुध लगन
में हो या लगनेश के साथ बुध चौथे में हो, और बुध बलवान हो पाप
ग्रह की नज़र से बचा हो तो जातक विद्या में यशस्वी होगा।
लगनेश से, १२ वें स्थान का स्वामी यदि शत्रु हो और नीच हो तो या दुर्बल
हो तो और शुक्र देखता हो तो जातक विदेश जायेगा। लगन को सूरज देखे तो
राज सेवी पिता के धन से धनी होगा। चन्द्र देखे तो जलचरों के रोजगार से
जीविका चलावे। मंगल लगन को देखे तो धर्मात्मा स्थूल लिंग वाला
होगा। लगन को बुध देखे तो विद्वान होगा सिल्पज्ञ यशस्वी होवे।
गुरु देखे तो राजा का पूज्य होगा। लगन को शुक्र देखे तो वेश्या गामी
होगा सुखी होगा धनी होगा। लगन को शनि देखे तो वृद्ध स्त्री भोगी खल
मलिन स्वभाव वाला होगा। यदि कोई लगन को न देखता हो तो लगन
में जो ग्रह हो उसके हिसाब से फल कहे। यदि लगन को लगनेश देखता
हो तो राजा हो राजा का प्रिय हो धनी सुखी होगा। लगन को सब शुभ
ग्रह देखें तो राजा तीन शुभ ग्रह देखें राजा दो ग्रह शुभ देखें तो सुखी धनी हो
तीन पापग्रह देखें तो महा दुखी होगा। यदि लगनेश विशेष बलवान
होकर केन्द्र में हो और शुभग्रह से युक्त हो पाप ग्रह न देखते हों तो
जातक तमाम अरिष्टों का संहार कर के राज लक्ष्मी के साथ
दीर्घायु होवे। बहुत गुणों वाला होवेगा।

तीसरे स्थान सम्बन्धी प्रश्न = जैसे भाई बीमार का प्रश्न
है तीसरे भाव का स्वामी तीसरे घर को देखता हो या
तीसरे भाव के स्वामी को शुभ ग्रह देख रहे हों तो भाई
जल्दी ठीक हो जायेगा। यदि पाप ग्रह देखें तो विपरीत
फल होगा। यदि तीसरे स्थान का स्वामी छठे घर में हो तो भाई
को उस में के अंक के स्वामी सम्बन्धी रोग होगा

~~छठे मैंमें भाव का स्वामी छठे स्थान में हो~~

स्वामी पाप

॥ यात्रा में चन्द्र का फलविचार ॥

जैसे कुंडली मे सूर्य सपष्ट के द्वारा लगन बनाई जाती है वैसे बनाओ। पहले यात्रा के समय का इष्ट काल बनाओ जैसे के २५ मिनट पर जाना है तो इसका इष्टकाल बनालो। सूर्योदय

२।२५ यात्रा टाइम
१२ + बीता घंटा जोड़ा
२।३७
५।२५ ÷ सूर्योदय
७।१२ × २।३०
१४।२४
०।२९०।३६०
१४।२३४।३६०
१८। ० । ० इष्टकाल

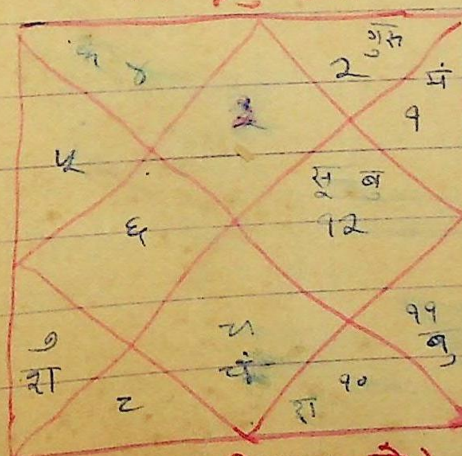
सूर्य सपष्ट पत्रा में जो हो जैसे ३।१।२१।२२ है अब तुम पत्रा में लगन सारिणी में देखो ३ के सामने एक अंश बीत गया हो तो अब तुम दूसरे अंश के नीचे देखो क्या संख्या है उस संख्या को इष्ट काल में जोड़ो फिर संख्या लगन सारिणी में कहां है। ध्यान रहे ज्यादा संख्या न हो कम भले हो अब रासी के सामने ८ अंश के नीचे २।८। रा अं

अब समझो बृषगत मिथुन लगन को गोचर बनाओ, बनाई मिथुन लगन के बनाया, अब सबगृह यथा स्थान बैठ चंद्र कहां है किस भाव में है भाव यानी सौ भाव में बैठा है। भाग वृ यात्रा शुभ समझो २ बजकर २५ मि

तन - धन भाव में चन्द्र धन देता है। भाव में हो तो राजसन्मान। सुहृद भाव पुत्र भाव में वृद्धि। शत्रु भाव में सम्पत्ति भाव में सुखद। मृत्यु भाव में मृत्यु कर्म भाव नवें में भाग्य वृद्धि। धर्म भाव लोभ भाव ग्यारह...

लगन को
ती जानो
चार करो
हो। चौथे
पड़ेगा।
होगा।
से युक्त
तो
गृह
पृथ्वी
प्रश्न
हो
नावल

यात्रा लग्न कुंडली



इस प्रकार चन्द्र विचार करो।

तन भाव फल = यदि ...

लगन के ...

... के गुणों को व्याख्या देखो।

	वार संख्या।।
पुष्य - हस्त - जल्दबाज है।	रवि (१)
घा पू.फा. - पू.षा. - पू.भा. = दुष्ट हैं।	सोम (२)
वा. - श्र. - धनि. - शत = चर है	भौम (३)
	बुध (४)
. फा. - उ.षा. - उ.भा. - स्थिर = स्थिर हैं	गुरु (५)
चित्रा - अनु. - रेवती - = मृदु हैं।	शुक्र (६)
श्लेषा - ज्येष्ठा - मूल = कठोर हैं।	शनि (७)
कृतिका - विसाखा = साधारण हैं।	

।। प्रश्न लग्न विचार।। कोई प्रश्न हो।

प्रश्न लग्न से यदि तुला यानी सातवें घर में जो अंक हो उस अंक का ... जैसे सातवें घर में ५ अंक है, तो ५ अंक का स्वामी सूर्य है, यदि ... तो कार्य सिद्ध होगा। यदि सूर्य सातवें घर में बैठा हो कार्य सिद्ध।

...न लग्न स्थिर भाव वाला हो। यानी वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भ लग्न हो तो ...ध भी बैठा हो तो काम सिद्ध। यदि द्विस्वभाव वाला लग्न बने तो ...थुन-कन्या-धन-मीन लग्न हो तो संदेह प्रद। यदि चर लग्न यानी ...न = मेष-कर्क-तुला-मकर लग्न का प्रश्न हो तो कतई काम न बने।

इससे ... होगा।
आशा है ... मन
और कलकत्ता में तुम्हारे
... है शीघ्र ही तुम्हारे
... पत्रों का
... है। पहुँ ...

यदि तीसरे भाव का स्वामी छठे स्थान में हो

यदि छठे भाव का स्वामी तीसरे भाव में हो। तीसरे भाव का स्वामी पाप ग्रह युक्त हो या सूर्य के साथ, ग्रस्त हो गया हो तो रोग बढ़ेगा।

प्रश्न लगन बना लो
जब कोई पूछे

चतुर्थ स्थान सम्बन्धी प्रश्न = जैसे खेती का प्रश्न है तो लगन को कास्तकार जानो - चौथे को खेत जानो - सप्तम को खेती जानो दशम को अन्न वृद्धि जानो। इन स्थानों का बलाबल विचार करो लगन में यदि शुभ ग्रह हों तो किसान को खेती से लाभ हो। चौथे स्थान में क्रूर ग्रह हों तो भूमी छोड़ कर किसान को भागना पड़ेगा। सातवें में शुभ ग्रह हों तो किसान को खेती से लाभ अच्छा होगा। पापग्रह हों हानि हो। दशम भाव में दशमेश हो शुभ ग्रह से युक्त हो, अन्नादि वृक्षादि अच्छे लगते हैं। लगन में पापग्रह हों तो खेती वाले को चोरों से उपद्रव होगा। लगन स्थित पाप ग्रह बक्री वा अतिचारी न हो तो चोर से लाभ भी होवेगा। पृथ्वी या भाड़ा, किराया, किश्त, के प्रश्न हों तो लगन को प्रश्न करने वाला जानो। सप्तम को किराया। दशम को उत्पत्ति, चतुर्थ को परिणाम कल्पना करके इन स्थानों का बलावल विचार कर कहे।

पंचम भाव का बिचार = यदि पंचम भाव का स्वामी लगन में हो। लगनेश वा चन्द्रमा पंचम में बैठा हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न हो। यदि द्विस्भाव लगन हो जैसे कन्या मिथुन, धन, मीन और पंचम स्थान में शुभ ग्रह हों तो दो सन्तानें होंगी। लगनेश पंचमेश पुरुष रासी में स्थित हो यानी मेष, सिंह, तुला, मिथुन, धन, कुम्भ में हों तो गर्भ में पुत्र है। लगनेश पुरुष ग्रह हो, या पुरुष रासी में लगनेश हो तो गर्भ में पुत्र है। यदि उच्चगामी चन्द्रमा शुभ ग्रहों से युक्त हो या चन्द्र पर शुभ ग्रहों की नज़र हो या लगनेश पंचम स्थान पर बैठा हो तो पुत्र होगा।

"तत्काल प्रश्न लगन बना कर देखलो। जब कोई पूछे

लगन का स्वामी मेष सिंह तुला मिथुन धन कुम्भ यह पुरुषराशी है यदि इन राशी में हों तो गर्भ में पुत्र है समझो लगन का स्वामी पुरुष हो या पुरुष रासी में हो तो गर्भ में पुत्र है. है समझो। पुरुष गृह सूर्य शुक्र गुरु शनि भौम हैं। बुध चन्द्र गृह स्त्री गृह हैं। यदि चन्द्रमा शुभ गृहों के साथ हो या शुभ गृहों की पूर्ण नज़र हो। और लगन का स्वामी पंचम स्थान में बैठा हो तो भी पुत्र है समझो गर्भ में

दूसरे भाव का फल= दूसरे स्थान से धन, नेत्र, मुख, विद्या, बचन, कुटुम्ब, भोजन का विचार करना चाहिये।

[illegible] २ जुलाई [illegible]

प्रिय प्राणप्रिये सच्चे हृदय का

पर्व दे?

प्रणाम! मैंने

भेजे है

पंचम भाव का बिचार = यदि पचम भाव का स्वामी लगन में हो। लगनेश वा चन्द्रमा पंचम में बैठा हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न हो। यदि द्विस्भाव लगन हो जैसे कन्या मिथुन, धन, मीन, और पंचम स्थान में शुभ ग्रह हों तो दो सन्ताने होंगी। लगनेश पंचमेश पुरुष रासी में स्थित हो यानी मेष, सिंह, तुला, मिथुन, धन, कुम्भ में हों तो गर्भ में पुत्र हो। लगनेश पुरुष ग्रह हो, या पुरुष रासी में लगनेश हो तो गर्भ में पुत्र है। यदि उच्चगामी चन्द्रमा शुभ ग्रहों से युक्त हो या चन्द्र पर शुभ ग्रहों की नजर हो या लगनेश पंचम स्थान पर बैठा हो तो पुत्र होगा।

"तत्काल प्रश्न लगन बना कर देखलो।। जब कोई पूछे

लगन का स्वामी मेष सिंह तुला मिथुन धन कुम्भ यह पुरुष राशी है यदि इन राशी में हों तो गर्भ में पुत्र है समझो लगन का स्वामी पुरुष हो या पुरुष रासी में हो तो गर्भ में पुत्र है है समझो। पुरुष गृह सूर्य शुक्र गुरु शनि भौम हैं। बुध चन्द्र गृह स्त्री गृह हैं। यदि चन्द्रमा शुभ गृहों के साथ हो या शुभ गृहों की पूर्ण नज़र हो और लगन का स्वामी पंचम स्थान में बैठा हो तो भी पुत्र है समझो गर्भ में

दूसरे भाव का फल = दूसरे स्थान से धन, नेत्र, मुख, विद्या, वचन, कुटुम्ब, भोजन का विचार करना चाहिये॥

कुछ
ए आदि
जी, जीज
समाचा
शा है त
दूख
यह
लीजी
हार र
पत्रो

यदि यह जानना हो फैसला में जो बीमार है मर जाया को जीवित है तो ऐसे
जानो पिंड बनालो पहले

बीमारी में यदि जानना हो कि रोगी को कौन को बाधा लगी है। तो इसतरह जानो। पिंड बनाकर १२ से भाग को दो जब भाग देने पर ३-५-६-८-११-७- शेष बचे तो समझो बीमार जीवित है। १-२-४-७-१०-१२ बचे तो समझो मरगया।

बाधा की जानकारी के लिये पिंड में ८ से भाग दो -७-३ शेष बचे तो देव बाधा समझना। २-८ बचे तो पित्तरों की बाधा समझना। ६-४ बचे तो भूतप्रेतादि कों की बाधा समझना। १-५- बचे तो गृहादि कों की बाधा जानना।

॥ प्रश्न किसके विषय में पूछता है॥
उसका ज्ञान

प्रश्नकरता के मुखसे देखो पहला अक्षर किस वर्ग का निकला है (अ) वर्ग का अक्षर निकला हो तो समझो अपने बारे में पूछना है। (क) वर्ग का हो तो दूसरे के बारे में पूछना है। (च) वर्ग का हो तो दूसरों की चिन्ता का प्रश्न करेगा। यदि (ट) वर्ग का हो तो अपनी चिन्ता करने का प्रश्न करेगा। (त) वर्ग का हो तो भी अपनी चिन्ता का प्रश्न करेगा। (प) वर्ग या (य) वर्ग का अक्षर हो तो दूसरे की चिन्ता का प्रश्न है। (श) वर्ग का प्रश्न हो तो अपनी चिन्ता करेगा प्रश्न में।

वर्ण विवरण।

अ वर्ग के अक्षर	ब्राह्मण है स्त्री	चारो की जाती वर्णो का पता
अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः	अ वर्ग	वर्ण से लगता है।..
क वर्ग के अक्षर	क्षत्री है पुरुष	
क ख ग घ ङ	क वर्ग	
च वर्ग के अक्षर	वैश्य है नपुंसक	
च छ ज झ ञ	च वर्ग	
ट वर्ग के अक्षर	ट वर्ग नपुंसक	
ट ठ ड ढ ण	शूद्र है	
त वर्ग के अक्षर	त वर्ग पुरुष	
त थ द ध न	अन्त्यज है	
प वर्ग के अक्षर	अन्त्यज है स्त्री	
प फ ब भ म	प वर्ग	
य वर्ग के अक्षर	य वर्ग नपुंसक	
य र ल व ~~[illegible]~~ ह	शूद्र है	
श वर्ग के अक्षर	वैश्य है नपुंसक	
श ष स ह क्ष त्र ज्ञ	श वर्ग	

दिन में सूर्योदय से सूर्यास्त तक ४ पहर होते हैं। इसी तरह रात में चार पहर होते हैं सूर्यास्त से सुबह तक

॥ सर्वाङ्क विधि बनाने की रीति ॥

नक्षत्र संख्या गणना करो अश्वनी नक्षत्र से
बार संख्या गणना करो रविवार दिन से
नाम संख्या प्रश्न कर्ता के नाम का पूरा अक्षर
तिथि संख्या गणना करो शुक्ल पक्ष की परिवा से
पहर संख्या गणना करो सूर्योदय से जितने बजे उदय हो वहां से ३ घंटा बीता गया तो समझो १ पहर गया
लगन संख्या गणना करो मेष लगन से ॥
योग संख्या गणना करो विष्कुम्भ से ॥

जैसे जिस दिन का प्रश्न हो जैसे कोई पूछे, आज यात्रा करनी है या फला काम करना है तो कैसा रहेगा तो उस समय को घड़ी में नोट करलो फिर पत्रा देखो इस समय कौन नक्षत्र लगा है। कौन योग लगा है कौन तिथि लगी है। कौन बार है। कौन सा पहर है जिसमें प्रश्न किया है। कौन सी लगन इस टाइम लगी है। सब देख लो। बस जोड़ दो सब उनकी संख्या। यदि चौदस का प्रश्न है तो पक्ष कृष्ण है तो। गणना शुक्लपक्ष से तिथि की होती है तो तुम गिनो पूनो तक १५ फिर कृष्णपक्ष की परिवा १६ चौदस तक २९ गिन्ती हुई तो समझो २९ वीं तिथि हुई ये। योग जैसे वृद्धि लगा है प्रश्न समय तो ११ वी संख्या हुई समझो पत्र में देखलो गिनलो।

२८ सब नक्षत्र योग पत्रा में लिखे रहते हैं

सब का जोड़ करने से आवे उसे पिंड समझो

बार संख्या जैसे गुरु की नाम कमला

नाम	।।	३
तीथि	।।	८
योग	।।	२६
नक्षत्र	।।	१५
पहर	।।	५
लगन	।।	११
करण	।।	२
सम्बत्सर	।।	१२ पिंड

[illegible] ८८ / ३× / [illegible] / ८) ३५२ (४४ / ३२ / ३२ / ३२ / ०

पिंड में ८ से भाग दे ७-३- बचे तो देव बाधा है समझो। २-८ बचे तो पितरों की बाधा समझो ६-४ बचे तो भूत बाधा समझो। १-५ बचे गृह बाधा समझो।

पहले में ० बचे तो यात्रा में धनहानि

दूसरे भाग में ० बचे तो शत्रुओं का भय

तीसरे भाग में ० बचे तो मृत्यु का भय

(1) बीमारी में बाधा जानने का विषय भी

पिंड में १२ से भाग देने पर = ३-५-६-८ बचे ११-९-बचे तो बीमार जीवित है।

१-२-४-७-१०-१२ बचे खतम होगया

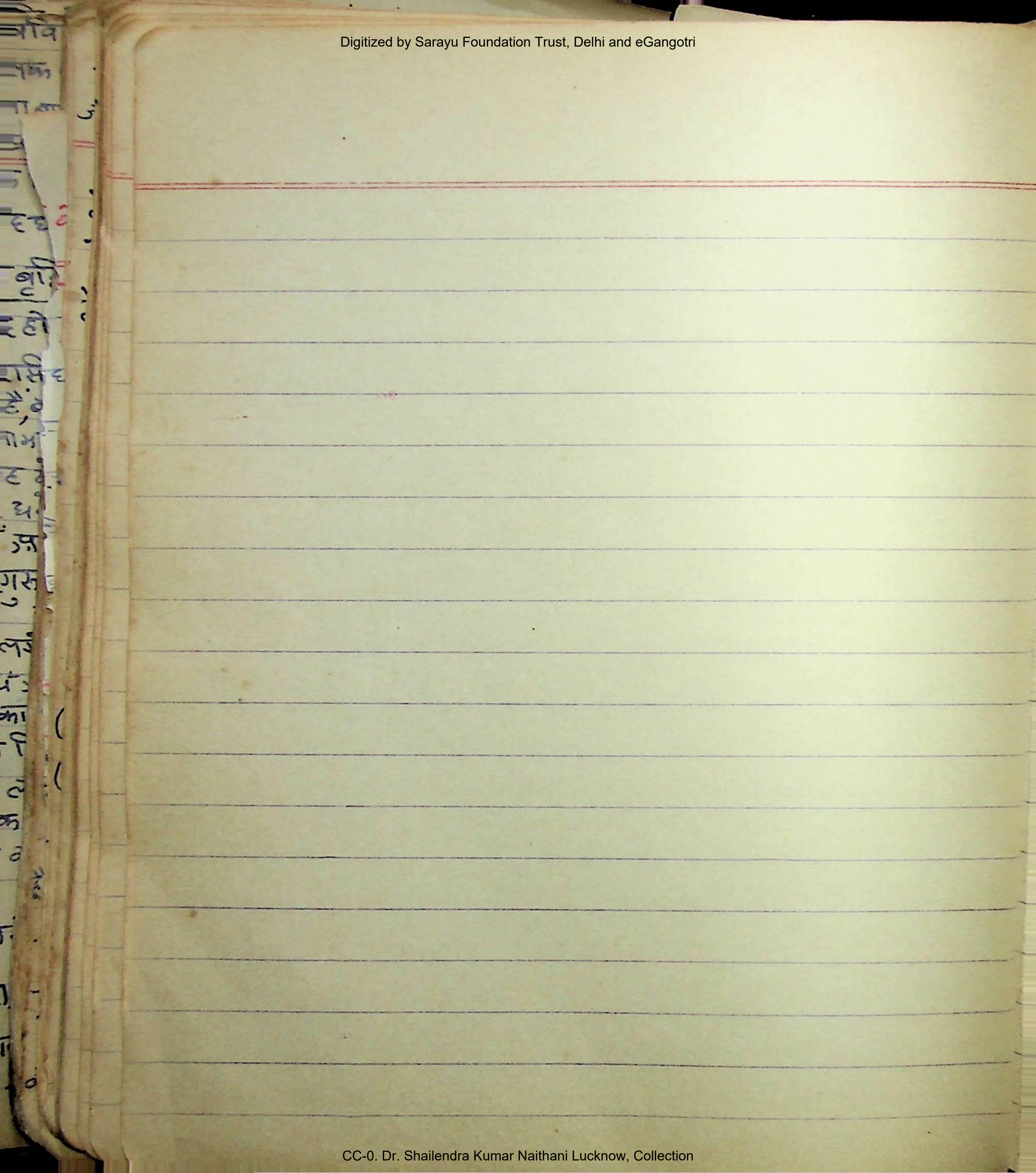
नक्षत्र	योग	नक्षत्र
अश्वनी ।।	विष्कुम्भ	अश्वनी
भरणी ।।	प्रीति	भरणी
कृतिका ।।	आयुष्मान	मृगसिरा
रोहिणी ।।	सौभाग्य	आर्द्रा
मृगसिरा ।।	शोभन	पुनर्वसु
आर्द्रा ।।	अतिगण्ड	पुष्य
पुनर्वसु ।।	सुकर्मा	अश्लेषा
पुष्य	धृति	मघा
अश्लेषा ।। मघा	शूल	पूर्वाफाल्गुनी
पूर्वा.फा. ।।	(१०) गण्ड	उत्तरा.फा.
उ.फा. ।।	(११) वृद्धि	हस्त
हस्त ।।	(१२) ध्रुव	चित्रा
चित्रा ।।	(१३) व्याघात	स्वाती
स्वाती ।।	(१४) हर्षण	विसाखा
विसाखा ।।	(१५) वज्र	अनुराधा
अनुराधा ।।	(१६) सिद्धी	ज्येष्ठा
ज्येष्ठा ।।	(१७) व्यतिपात	मूल
मूल ।।	(१८) वरियान	पूर्वाषाढ़
पूर्वा.षाढ़ ।।	(१९) परिघ	उत्तराषाढ़
उ. षाढ़ ।।	(२०) शिव	श्रवण
श्रवण ।।	(२१) सिद्ध	धनिष्ठा
धनिष्ठा ।।	(२२) साध्य	शतभीषा
शतभीषा	(२३) शुभ	पूर्वाभाद्रपद
पूर्वा.भाद्र ।।	(२४) शुक्ल	उत्तराभाद्रपाद
उ. भाद्र ।।	(२५) ब्रम्ह	
रेवती ।।	(२६) ऐन्द्र	
अभिजित ।।	(२७) वैधृति	

|| मनुष्य किसविषयमें प्रश्न करता है। इसका ज्ञान ||

...न कर्ता के मुख से प्रथम अक्षर जो निकले नोट करलो ध्यान
...कर। फिर देखो किस वर्ग का वह अक्षर है। अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः
...र अक्षरों के अन्दर हो तो अ वर्ग का अक्षर समझो। कहदो तुम
... बाँर में पुछते हो। यदि प्रथम अक्षर प्रश्नकर्ता का
...ख ग घ ङ के अन्दर हो तो समझो क वर्ग का अक्षर है। उसका
... के बाबत पुछता है। यदि च छ ज झ ञ इन अक्षरों के अन्दर
...तो च वर्ग का अक्षर है। तो कह दो दूसरे की चिन्ता लेकर आये है
... तरह यदि (ट) वर्ग का अक्षर हो तो समझो अपनी चिन्ता में
...। यदि (त) वर्ग का अक्षर हो तो भी अपनी चिन्तामें समझो
... (प) वर्ग अथवा (य) वर्ग का अक्षर हो तो दूसरे की
...चिन्ता मे प्रश्न कर्ता है। यदि (श) वर्ग का अक्षर हो तो
... ष. स. ह में से कोई अक्षर हो तो अपनी चिन्ता लेके
...आया है।

।।चोर की जाती अथवा लिंग का ज्ञान।।

... = वर्ग का प्रश्न करे तो स्त्री जे लिया है। ब्राह्मण है चोर
... = क्षत्री = पुरुष है
... = वैश्य = नपुंसक
...ट = शूद्र = नपुंसक
...त = अन्त्यज = पुरुष
...प = अन्त्यज = स्त्री
...य = शुद्र = नपुंसक
...श = वैश्य = नपुंसक



पशु बलि
विधान

एक सुन्दर युवा छाग हो। तेज धार वाला खडग हो। छाग बन्धन के लिये नई रस्सी, स्तम्भ रुधिर ग्रहण करने के लिये ताम्रपात्र, पका केला, पकड़ने वाले दो आदमी, एक छेदन करने वाला आदमी होना चाहिये। फिर पशु को अपने मूल मंत्र से स्नान करावे फिर देवी के सामने उसे ले जाये और अपने वाम भाग में उसे पूर्व मुख करके खड़ा करे। फिर उसके दोनों सींगो में सिन्दूर लगावे, गले में बेलपत्र की माला पहनावे फिर सामान्यार्घ्य पात्र के जल से मूल मंत्र बोल कर ३ बार प्रोक्षण करे यानी उस पर जल छिड़के। कवच मंत्र (हुं) इससे अवगुण्ठन करे धेनु मुद्रा दिखावे यह मंत्र से नमस्कार करे। (एतत् पाद्यं छाग पशवे नमः) इसी मंत्र को बोल कर पंचोपचार पूजा करदे। फिर पशु गायत्री कान में सुना दे।
(ॐ पशुपाशाय विद्महे विश्व कर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्)
फिर खडग की पूजा करे पहले उस पर सिन्दूर से गोलाकार ३ चिह्न करे जैसे ◎ इन वृत्तों के बीच में बेल के पत्ते के डंठल से ह्रीं लिख दे। और इससे पूजन करे। ॐ ह्रीं इस मंत्र से ॐ ह्रीं कालि कालि वज्रेश्वरि लौह दण्डाय नमः। फिर खडग् के अग्र मध्य मूल भाग में क्रमशः (पंचोपचार से इन देवियों का पूजन करे। हुं वागीश्वरि ब्रह्माभ्यां नमः। हुं लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। हुं उमा महेश्वराभ्यां नमः

ॐ ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति युक्ताय खडगाय नमः प्रणाम करे फिर
ॐ खड्गाय खडग धाराय शक्ति कार्यार्थ तत्पर पशुं
छिन्ध्यतां शीघ्रं खडगनाथ नमोस्तुते। कह कर पुष्पांजलि दे।
फिर तिल कुश जल हाथ में ले कर संकल्प करे।
ॐ नमः परब्रह्म परमात्मने अद्या श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री
श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशत तमे कलियुग कलि
प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे भरत खण्डान्तर्गत लखनऊ
नगरे सूर्य अमुकायने अमुक सम्वत्सरे अमुक ऋतौ अमुक
मासे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक वासरे अमुक राशस्थिते
सूर्ये अमुक राशास्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु यथा स्थान स्थितेषु
एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक
जातं अहं कमला सरकार नामहं श्री बाला त्रिपुरा देव्याः प्रीति कामः
इमं छाग पशुं श्री बाला त्रिपुरा देवतायै सम्पददे। फिर हाथ जोड़कर
कहे। ॐ बलिं गृहण महादेवी पशुं सर्व गुणान्वितम् यथोक्तेन
विधानेन तुभ्यमस्तु समर्पितम् कह कर ह्रां हुं फट् कहते हुये पशु
के कन्धे पर धीरे से खड्ग छुआवे, फिर पशु को स्तम्भ में बांधे
(स्तम्भ से)
जल छिड़के फिर स्तम्भ की पूजा करे। फिर पशु का छेदन करे।
फिर पशु का सिर थोड़े मांस सहित और ताम्र पात्र में रक्त को रख कर देवी

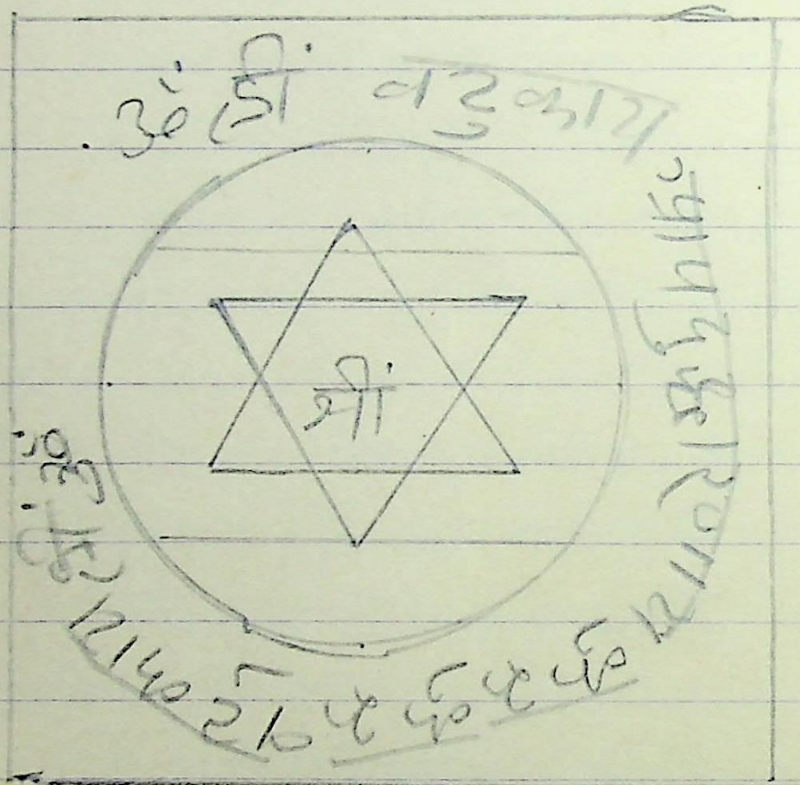
(श्री बटुकभैरव यन्त्र)

संहार भैरवाय नमः

असितांग भैरवाय नमः

रुरु भैरवाय नमः

भीषण भैरवाय नमः



चण्ड भैरवाय नमः

कपाल भैरवाय नमः

उन्मत्त भैरवाय नमः

क्रोध भैरवाय नमः

देवस्य धीमहि ॥ धीयो यो नः प्रचोदयात् प्रतिकूलकारिणी
न्॥ । अनुकूल कारिणी अस्तु ॥ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नि च
हि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२॥ ॐ श्रूं ह्रीं श्रीं ब्रह्म कोशजो
र्क्ष्रह्रं जटो स्वाहा॥ पञ्चम्यां च नवम्यां च दशम्यां च विशेषतः
वा तु महाविद्यां श्री कामः सर्वदा पठेत्॥११॥ ॐ गन्धद्वारां
॥ र्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
म्॥ श्रीर्मे भजतु ॥ अलक्ष्मीर्मे नश्यतु ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं
मामिह ॥ पवमानवितज्जहि ॥ यदुत्थितं दुःखं भवति तत्सर्वं
शमय स्वाहा ॥ ॐ गायत्र्यै स्वाहा ॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा ॥ ॐ
वत्यै स्वाहा ॥ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्नः
प्रचोदयात् ॥३॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो
प्रचोदयात् ॥४॥ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ॥
दन्तिः प्रचोदयात् ॥५॥ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धी
तन्नो ...ः प्रचोदयात् ॥६॥ तत्पुरुषाय विद्महे महासेना
महि ॥ तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥७॥ तत्पुरुषाय विद्महे
पक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥८॥ वेदात्मना
महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ॥ तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥९॥
यणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदया

॥१०॥ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि॥ तन्नो
ऽनङ्गः प्रचोदयात्॥ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि॥
तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्॥१२॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युति
कराय धीमहि॥ तन्नोऽऽदित्यः प्रचोदयात्॥१३॥
वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि॥ तन्नोऽग्निः प्रचोदया
त्॥१४॥ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि॥ तन्नो
दुर्गिः प्रचोदयात्॥१५॥ सहस्रपरमा देवी शतमूला शताङ्कुरा॥
सर्वं हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी॥ १२ काण्डात्काण्डात्
प्ररोहन्ति०॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे॥ शिरसा
धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे॥ १३॥ अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि
कण्वेन जमदग्निना॥ विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः क्रिमीणां राजाऽप्येषां
स्थपतिर्हतः॥ अथो माताऽथो पिताऽथो स्थूरा अथो क्षुद्राः
अथो कृष्णाः अथो श्वेताः अथो आशातिका हताः श्वेताभिः सह
सर्वे हताः आहरावद्य शृतस्य हविषो यथा तत्सत्यं यदमुं
यमस्य जम्भयोः आदधामि तथा हि तत्॥ खणफण्म्रसि
ब्रह्मणा त्वा [illegible] शपामि॥ ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि॥
घोरेण त्वा भृगूणां चक्षुषा प्रेक्षे॥ रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसां मनसा ध्यायामि
॥ अघस्य त्वा धारया विध्यामि॥ अधरो मत्पद्यस्वासौ उत्तुद

शिमिजावरितल्पजेतल्पउत्तुद्द गिरीशं रनु प्रवेशाय मरीचो रूपसंनुद्यावीदत:
पुरस्तादुदयाति सूर्यः तावदितोऽमुंनाशाय योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं
द्विष्मः खट् खट् जोह छिन्धि भिन्धि छिन्धि भिन्धि हन्धि कट् इति
वाचः क्रूराणि परिबाहि जोहि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः द्विषन्तं
मेऽभिनाशयतं मृत्यो मृत्यवे नय अरिष्टं रक्ष अरिष्टं मञ्ज २ स्वाहा ॥ ॐ
ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंह वदे महाभैरवोज्वल २ विद्युज्ज्वलज्वाला
जिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रौं क्ष्म्यें नमो नारायणाय घृणिः सूर्या
दित्यों सहस्रा हुं फट् ॥ अब ब्रह्म द्विषो जहि ॥ सर्पो लूककाक कङ्क
कपोतादि वृश्चिकोग्र दंष्ट्राकरोगविषान्मे महाभूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस
सकलकिल्बिषादि महारोगविषान्निरोगाविषं कुरु २ स्वाहा ॥ प्राक्षिस्प
न्दे च दुःस्वप्नं भुजस्पन्दे च दुर्मतिम् । दुश्चिह्नं दुर्गतिं रोगं भयं नाशय
शांकरि ॥१४॥ महाविद्यां कृतवता योऽस्माकं द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरति
यावदेकविंशतिं कृत्वा तावदाधिकं नाशय ॥ ब्रह्मविद्यामिमां देवी
नित्यं सेवेत यः सुधीः । ऐहिकामुष्मिकं सौख्यं सिद्ध्यत्वेन न
संशयः ॥१५॥ एनां विद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः सोऽवश्यं
नाशमाप्नोति षण्मासादचिरेण वै ॥१६॥ अग्रतः पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो
रक्ष मे सदा ॥ चण्डघण्टा विरूपाक्षी त्वां भजे जगदीश्वरीम् ॥१७॥
एवं विद्यां महाविद्यां त्रिसन्ध्यायं स्तौति मानवः ॥

॥ दृष्ट्वा जनैर्दुष्टजना: सर्व मोह वशं गता: ॥१८॥ तामग्निवर्णां
तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म फलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं
शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुशमनायै नम: ॥१९॥ मातर्मे मधु
कैटभघ्नि महिष प्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मित धूम्र लोचनवधे
हे चण्डमुण्डार्दिनि ॥ नि:शेषी कृत रक्त बीज दनुजे नित्ये
निशुम्भापहे शुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके
॥२०॥ कालदण्ड परं मृत्यु विजया बन्धयाम्यहम् ॥ पञ्च
योजन विस्तीर्णं मृत्योश्च मुख मंडलम् ॥ तस्माद्रक्षमहा
विद्ये भद्र काली नमोऽस्तुते ॥२१॥ अब ब्रह्मद्विषो जहि ॥
वारिजलोचन सह पारिगति वारयासुर कर निकरै: पूरित मेघ
द्रुमानां दापिता गोप कन्यके सहोदरवत् ॥ अव ब्रह्म द्विषो
जहि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्ध लक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ
आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मन: ॥ वासांसि मम
गावश्च अन्नपाने च सर्वदा ॥ ततो मे श्रिय आनिरियाय श्रियं
वयोजरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्व मायन् भवन्ति सत्या
सीमिथा मितद्रो श्रियं ऐवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा
वषट् कृत्यं संतत्यै संधीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥ ॐ ह्रीं

ह्रीं क्लीं क्लुं प्रों हुं फट् स्वाहा ।। अथर्व ब्रह्मविदो जोहि ऊँ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद् विषावहै ।। ऊँ शान्तिः ऊँ शान्तिः ऊँ शान्तिः)(इति श्री ह० वृहज्ज्यो धर्मस्कंध उपा० स्त० श्री दुर्गापा०ध्याये अथर्वण रहस्योक्त श्री नव दुर्गापि निबन्धिरुपणं नाम सप्तदशं प्रकरणम् ।।१७।।)

संकल्प = ऊँ विष्णु विष्णु विष्णु नमः परमात्मने श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारत खण्डे सूर्य सौम्यायने अथवा याम्यायने अमुक सम्वत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ तदुपरि हो तो तदुपरि बोले अमुक नक्षत्रे अमुक राशास्थिते सूर्ये अमुक राशास्थिते देव गुरौ शेवेशु ग्रहेषु यथा २ स्थान स्थितेषु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां। यदि किसी स्त्री के वश में पुरुष को करना हो तो जैसे नाम मुन्नालाल पति का नाम है, पत्नी का नाम सरोज बाला है। तो तुम इस तरह योजना करे लाल बनिया है तो कहो मुन्नालाल गुप्तनामनं गोयल गोत्रकं सरोज बाला गुप्तायै आकर्षण हेतवे अद्यारभ्य मास पर्यन्तं (अमुक आकर्षण मन्त्रस्य यानी जो मन्त्र जपना हो वह पूरा बोलो। जितनी संख्या जपना हो सो पूरी संख्या कहो यदि सवा लाख जपना हो तो कहो।। सपाद लक्ष्य संख्यांक परिमितम् कमला संख्या बोल ...
...ना माहं शाम्भव गोत्राहं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं जपं करिष्ये।

करन्यास- हृदन्यास- हसनी, शारिवनी, चक्रिणी, गादनी, शूलिनी, त्रिशूल धारिणी से करना चाहिये महा विद्या का ॥ दिगन्यास- हंसिनी ह्रीं पूर्वस्यां नमः। शंखिनी ह्रीं आग्नेयां नमः। चक्रिणी हूं याम्यां नमः॥ गादिनी ह्रैं नैऋत्यां नमः॥ शूलिनी ह्रौं वारुण्यां नमः त्रिशूल धारिणी ह्रः वायव्यां नमः॥ ह्रं उत्तरस्यां नमः॥ कर ईशान्यां नमः॥ हं· सं· च· ग· शू· त्रि· ऊर्ध्वस्यां नमः॥ हं- शं· च· ग· शू· त्रि· भूम्यै नमः॥ गायत्री, ध्यान

अरि शंख कृपाण खेट बाणांस् धनुष्क शूलमद्य कर्तरीं दधानां भजामि।
महिषोत्तमां संस्था नवदुर्गा सदृशी तनूम्॥ श्रेयस्तु दुर्गां
हेमप्रख्या मिन्दुखण्डान्तमौलिं शंखाभिरा भीति हस्तां त्रिनेत्रां।
हे मा ० ज स्ता

पुरुष बनिया हो तो गुप्त या गुप्तस्य

स्त्री बनिया हो तो, अमुकी गुप्तायै या वैश्यायाः

क्षत्री पुरुष हो तो अमुकस्य वर्मणाः या अमुकं वर्मणाः

स्त्री क्षत्राणी हो तो अमुकी या अमुक्याः क्षत्राणियाः

ब्राह्मण पुरुष हो तो अमुकस्य शर्मणाः जैसे बाबूलाल। यदि बाबू लाल नाम है तो बाबू लालस्य

स्त्री ब्राह्मणी हो तो अमुकी ब्राह्मणियाः। जैसे कमला देव्याः ब्राह्मणियाः

पुरुष शूद्र हो तो अमुकं दासस्य। जै बुद्धू लाल नाम है तो बुद्धू लाल दासस्य

स्त्री शूद्र हो तो अमुकी शूद्रायाः॥ जैसे विद्या नाम है तो विद्या शूद्रायाः

स्त्री के लिये अमुकी देव्याः भी योजना में लगा देते हैं। पुरुष के लिये लालस्मात् और नाम में जोड़ देते हैं। जैसे बाबूलाल नाम है तो बाबूलालस्मात् कह कर जान का सम्बोधन करते है।

दूसरे का काम शुरु करने में करिष्यामि कहा जाता है।

अपने स्वयं के काम करने में कहो आत्मनः मनोभिलषित कार्य सिद्धयर्थं जितना जपना है, दसहजार जपना हो तो अयुतं जपं (अमुक मन्त्र) अद्यारम्य, मेरे आजसे। जितने दिन के अन्दर जपना हो जैसे 11 दिन के अन्दर खतम करना हो तो कहो एकादश दिवस पर्यन्तं शाम्भव गोत्राहं कौल अवधूत जातं कमला सरकार नामाहं जपं करिष्ये॥ विनियोगः

ॐ अस्य श्री महाविद्या स्तोत्र मन्त्रस्य यर्मा ऋषिः, कालिका देवता गायत्री छन्दः श्री सदाशिव देवता प्रीत्यर्थे मनो वांछित सिद्धयर्थे च जपे पाठे च विनियोगः

स प्रयोग।

विनियोग:- ॥ श्री महाविद्यास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री दुर्गामहा महामन्त्रस्य। किरातरूपधर ईश्वर ऋषि: अनुष्टुप छन्द: अन्तर्यामी नारायण: किरातरूपधरेश्वरो नवदुर्गा गायत्री देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्ति: क्लीं कीलकं परमन्त्र परतन्त्र परयन्त्र भ्रामरी शाकिनी डाकिनी सकलापत्ति निवारणार्थे मनो अभिलषित कामना सिद्ध्यर्थे श्री महाविद्या पाठे विनियोग:

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्।
चिन्तितां किरातरूपेण मारणां हृदयनन्दिनीम्॥
उत्तमां सर्व विद्यानां सर्व भूत वशंकरीम्॥
सर्व पापक्षयकरी सर्वशत्रु निवारिणे॥

कुलकरी गोत्र करी धनकरी धान्य करी बलकरी यशकरी विद्याकरी उत्साह बल बर्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी द्राविणी सर्व मन्त्र प्रभंजिनि यन्त्र विद्या प्रभेदिनी सर्व ज्वरोत्साद करी एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकम् अर्द्ध मासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं षाणमासिकं सांवत्सरिकं वात्तिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं सन्तत ज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमाला लूतताल वर्णानां त्रासिनी सर्पाणां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी शिर: शूलाक्षिशूल कर्ण शूल दन्त शूल बाहु शूल हृदय शूल कुक्षि शूल पक्ष शूल गद गुल्म शूल लिङ्ग शूल योनि शूल पाद शूल सर्वाङ्ग शूल विस्फोटका दीति आत्म रक्षा परोक्ष रक्षा प्रत्यक्ष रक्षा अग्नि रक्षा अघोर रक्षा वायु रक्षा उदक रक्षा महान्धकारोल्का विद्युदनिल चर शस्त्रास्त्र मां रक्ष रस्वाहा। महादेवस्य तेजसा भयंकरा विष्टदेवता बन्धयामि पन्थानुगत चौराक्रक्षते बन्धकस्य कण्टकं बन्धयामि महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वशूलान्

कह पिङ्गलेन कण्टकमय रुद्राङ्गी। ॐ अं ग्रां मातंगी इं ईं मातंगी
उं ऊं मातंगी ऋं ॠं मातंगी लृं लॄं मातंगी ओं औं मातंगी प्रं प्र:
मातंगी स्वर २ ब्रह्मदण्ड विश्वर २ रुद्रदण्ड प्रज्वल २ वायु दण्ड प्रहर २
इन्द्र दण्ड भक्ष २ निर्ऋति दण्ड हिल २ यम दण्ड नित्योपवादिनि हंसिनि
शाङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनि त्रिशूलधारिणी हुं फट स्वाहा॥
आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धन मेव च सदाशिवं पुत्रवृद्धिं देहि
मे चांण्डिके॥ अथातो मन्त्र पादा भवन्ति॥
ॐ क्षायाये स्वाहा॥ ॐ चतुराये स्वाहा॥ ॐ हिलि स्वाहा॥ ॐ पिलि
स्वाहा॥ ॐ हरं स्वाहा॥ ॐ हर हरं स्वाहा॥ ॐ गन्धर्वाय
स्वाहा॥ ॐ गन्धर्वाधिपतये स्वाहा॥ ॐ यक्षाय स्वाहा॥ ॐ यक्षाधि
पतये स्वाहा॥ ॐ रक्षे स्वाहा॥ ॐ रक्षोऽपि पतये स्वाहा॥ ॐ भू:
स्वाहा॥ ॐ भुव: स्वाहा॥ ॐ स्व: स्वाहा॥ ॐ उल्का मुखी स्वाहा॥ ॐ
रुद्रमुखी स्वाहा॥ ॐ रुद्रजटी स्वाहा॥ ॐ ब्रह्मविष्णु रुद्रतेजसे स्वाहा॥
॥इमा भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस नव ग्रह भूत वैताल शाकिनी डाकिन्य:
कूष्माण्डास्सर्वे चोरा राज पुरुष: कलह पुरुषा नातेषां दिशं बन्धयामि
दुर्दिशो बन्धयामि॥ हस्तौ बन्धयामि॥ चक्षुषि बन्धयामि॥ श्रोत्रे
बन्धयामि॥ जिह्वां बन्धयामि॥ घ्राणं बन्धयामि॥ बुद्धिं बन्धयामि
गतिं बन्धयामि॥ मतिं बन्धयामि॥ अन्तरिक्षं बन्धयामि॥

आकाशं बन्धयामि ॥ पातालं बन्धयामि ॥ यम मुखेन बन्धयामि ॥ पंच
योजन विस्तीर्णं बन्धयामि ॥ रुद्रो बध्नातु ॥ रुद्र मंडलं रुद्रः सह परिवारो
देवता प्रत्यधि देवता सहितं रुद्र मंडलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवार
कस्य = सर्वतोमाम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूँ
श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि
पुष्टि वर्धनम् ॥ ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१०॥ ॐ
वर्षन्तु ते विभावरि दिवोऽभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म
द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय । प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावतारूढो हेम
वर्णो वज्र हस्त इन्द्रो बध्नातु ॥ इन्द्र मण्डलमिन्द्रः सह परिवारो देवता
प्रत्यधि देवता सहितं मिन्द्र मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवार
कस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचाया
स्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥
ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१॥ इन्द्रं वो
विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तु केवलः ॥ १ ॥ ॐ
वर्षन्तु ते विभावरि दिवोऽभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व०
बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ आग्नेय्यां
दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवर्णो ज्वालाहस्तोऽग्निर्वध्नातु॥
अग्नि मण्डलं अग्निः सह परिवारो देवता प्रत्याधि देवता सहितं अग्नि
मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २
अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह
व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय। ॐ ह्रां ह्रीं हूं क्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं
क्रौं हुं फट् स्वाहा॥२॥ ॐ अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम॥ अस्य
यज्ञस्य सुक्रतुम॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥
रोहन्तु सर्व वीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ याम्यां दिशि
यमो देवता महिषारूढो नील वर्णो दण्ड हस्त यमो बध्नातु यम मण्डलं
प्रत्यक्षं बन्ध २ मम स परिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं २
आक्रमय २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्रा
ग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं क्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं
हुं फट् स्वाहा॥ ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः॥
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि
दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व वीजान्यव ब्रह्म द्विषो
जहि। अव ब्रह्म द्विषो जहि॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः

ं नमो भगवते रुद्राय ॥ निर्ऋत्यां दिशि। निर्ऋति मण्डलं निर्ऋतिः
सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं निर्ऋति मण्डलं प्रत्यक्षं
न्ध२ मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ प्रचलं २ आक्रम्य २ महा
वज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वो पद्रव नाशनाय॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रौं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ मो बुणः परापरा
निर्ऋति दुर्हणा वधीत् ॥ पदीष्ट तृष्णया सह ॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो
अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अब ब्रह्म द्विषो
जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां
दिशि वरुणो देवता मकरा रूढः श्वेत वर्णः पाश हस्तो वरुणो बध्नातु
वरुण मण्डलं वरुणा सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं वरुण
मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्व तो माम रक्ष रक्ष ॥
प्रचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्र
अग्नि मम सर्वो पद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रौं ॐ क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं
हुं फट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ इमं मे ॥ १ ॥ तत्वायामि ॥ २ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो
अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अब ब्रह्म
द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥
वायव्यां दिशु वायु देवता मृगा रूढो धूम्रवर्णो ध्वज हस्तो वायुर्बध्नातु
वायु मण्डलं वायु सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं वायु मण्डलं

त्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ अचलं २ आक्रम्य
क्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राज चोर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम
र्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों श्रां ह्रीं क्रौं हुं फट्
वाहा ॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जा मातरद्भुत ॥ आवांस्यावृणी
महे ॥ बर्षन्तु ते बिभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व वीजान्यव
ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौवेर्यां दिशि कुवेरो देवता अश्वारूढः
पीतवर्णो गदाङ्कुश हस्तः कुवेरो बध्नातु ॥ कुवेर मंडलं कुवेरः सपरिवारो
देवता प्रत्याधि देवता सहितं कुबेर मंडलं
मत्यक्षं बन्ध २ मम सह परिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ अचलं
आक्राम्य २ महावज्रकवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि
मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों श्रां ह्रीं क्रौं
फट् स्वाहा ॥ ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तु माशुं सोमो वीरं
कर्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ श्रवणं यो
ददाशदस्मै ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते ० वि० दि० रोहन्तु ० स० वी० ब्र० द्वि०
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥
ऐशान्यां दिशि ईशानो देवता बृषारूढः स्फटिक वर्णो
त्रिशूल हस्त ईशानो बध्नातु ॥ ईशान मण्डलं मीशानः

हपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं ईशान मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २
म सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र
कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥८॥ ॐ
मीशानमजगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् पूषा
ो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१॥ ॐ
र्षन्तु ते विभावीर दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजा
न्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मदेवत
सा रूटो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बध्नातु ॥ ब्रह्म मण्डलं
ब्रह्मा सपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं ब्रह्म मण्डलं
त्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २
चलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर
र्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां
ं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥९॥ ॐ ब्रह्मा
वानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति
भन् ॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते० वि० दि० अ० वि० रोहन्तु० सर्व
न० ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥

यं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं ऽऽपागवं सुरे

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताद्दिशि
वासुकिर्देवता कूर्मा रुढा पद्महस्तो वास्तुकिः बध्नातु। वासुकि
मण्डलं वासुकिः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं
वासुकि मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो
माम रक्ष २ अचलं प्रचलं आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां
ह्रीं हूं श्रों क्लों क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ नमो
ऽस्तु सर्पेभ्यो० ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो ऽभ्रस्य विद्युतः
रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ते
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥
अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुणा रूढः श्याम वर्णश्चक्र
हस्तो विष्णुर्बध्नातु ॥ विष्णु मण्डलं विष्णुः सहपरिवारो
देवता प्रत्यधि देवता सहितं विष्णु मण्डलं प्रत्यक्षं
बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं
अचलं आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर
सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वो पद्रव नाशनाय ॥ ॐ
ह्रां ह्रीं हूं श्रों क्लों क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥११॥ ॐ
इदं विष्णुर्विचक्रमे० ॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते० वि० दि० अ० वि०
रोहन्तु सर्व० बी० ब्रह्म द्विषो जहि० अव ब्रह्म द्विषो जहि० ॥

ॐ नमो भगवते रुद्रायनमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। प्राच्यांदिशि इन्द्रः सह परिवारो देवता प्रत्याधि देवतास्तद्दिक्षु त्रिशूलको नाम राक्षसः शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी गृहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वो पद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों अप्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥१॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्रायनमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ आग्नेय्यां दिशि आग्निः सहपरिवारो देवता प्रत्याधि देवतास्तद्दिक्षु मारीचको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि भूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी बैताल कामिनी गृहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्रकवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वो पद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रों क्लीं क्लुं प्रों अप्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु ते • वि • दि • अ • वि • रो • सर्व • बी • ब्रह्म • द्वि • जहि अव • ब्र • द्वि • जहि •

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ याम्यां दिशि
यमः सहपरिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु एक पिंगल कोनाम
राक्षसस्तस्य अष्टादश कोटि भूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस
शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी बैताल कामिनी
ग्रहान् बन्ध यामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं
अचलं आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह
व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ हां हीं हूं क्रीं क्लीं क्लुं
प्रों ऑ हीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो
अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्ववीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि
अव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय॥ नैर्ऋत्यां दिशि॥ निर्ऋतिः सह परिवारो देवता
प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु सत्य को नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश
कोटि भू॰ प्रे॰ पि॰ रा॰ ब्र॰ रा॰ शा॰ डा॰ काकिनी॰ हा॰ रा॰ या॰
वैताल कामिनी गृहान् बन्ध यामि मम स परिवारकस्य सर्वतो
माम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय।
ॐ हां हीं हूं क्रीं क्लीं क्लुं प्रों ऑ हीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥
ॐ वर्षन्तु ते॰ वि॰ दि॰ अ॰ वि॰ रो॰ सर्व॰ वी॰ ब्र॰ द्वि॰ जहि
अव॰ ब्र॰ द्वि॰ जहि॥

ॐ नमोभगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ प्रतिच्यां दिशि वरुणः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु लम्को नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश कोटि भूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रीं क्लीं क्लुं ग्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावीर दिवो अभ्रस्य विद्युतः रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। वायव्यां दिशु वायु सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु प्रलम्बको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश कोटि भूत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस शा० डा० का० हा० रा० या० वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्रीं क्लीं क्लुं ग्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावीर दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥

दिशि
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ कौबेर्यां ~~कौबेर~~
कुवेरः सह परिवारो देवता प्रत्यीध देवतास्ताद्दिक्षु अश्वालको नाम
राक्षस्तस्याष्टा दस कोटि भुत प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस शाकिनी० डा०
का० हा० रा० या० वे० कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम स परिवारकस्य
सर्वतो माम रक्ष रक्ष अचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥
ॐ हां हीं हूँ श्रीं क्लीं क्लुं प्रोंं प्रां हीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥
ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व
बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अब ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ ईशान्यां
दिशि ईशानः सहपरिवारो देवता प्रत्यीध देवतास्तद्दिक्षु
उन्मत्तको नाम राक्षस्तस्य अष्टादश कोटि भुत० प्रे० पि० रा०
ब्र० रा० शा० डा० का० हा० रा० या० ~~क~~० वे० कामिनी ग्रहान्
बन्धयामि मम स परिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचलं
अचलं आक्रम्य २ महा वज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्प
सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ हां हीं हूँ श्रीं क्लीं
क्लुं प्रोंप्रां हीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ बर्षन्तु ते०॥ रोहन्तु सर्व
बी० ब्र० द्वि० ज० अब० ब्र० द्वि० ज॥ -

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ
ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवता
स्ताद्दिक्षु आकाशवासी नाम राक्षस्तस्याष्टादश कोटि भूत
प्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्म राक्षस. शाकिनी डाकिनी काकिनी हाकिनी
राकिनी याकिनी वैताल कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवार
कस्य सर्वतो माम रक्ष २ प्रचलं २ आक्रम्य २ महावज्रकवचाया
स्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥
ॐ हां हीं हूं क्षीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ
वर्षन्तते विभावरि दिवोऽभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव
ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय
नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताद्दिशि वासुकि सपरिवारो
देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु पाताल वासी नाम राक्षस्तस्य
ष्टादश कोटि. भू. प्रे. पि. रा. ब्र. रा शाकिनी. डा. का. हा.
रा. या. वै. कामिनी. ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य
सर्वतो माम रक्ष २ प्रचलं २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय
राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ
हां हीं हूं क्षीं क्लीं क्लुं प्रों प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ
वर्षन्तुते. । रोहन्तु. सर्व. बीजा. ब्र. द्वि. जहि. अव. ब्रह्म
द्विषो जहि ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ प्रावंतरस्यां॥ दिशि विष्णुः सह परिवारो देवता प्रत्यधि देवतास्तद्दिक्षु महाभीमको नाम राक्षसस्तस्याष्टादश कोटि॰ भू॰ प्रे॰ पि॰ रा॰ ब्र॰ रा॰ श॰ डा॰ का॰ हा॰ रा॰ या॰ बै॰ कामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ प्रचलं प्रचलं प्राक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राजचौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों ॐ प्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥११॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो प्रभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि प्रव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ प्राच्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राणि वज्र हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ प्रचलं २ प्राक्रम्य प्राक्रम्य हुं जटो स्वाहा॥ प्रव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ आग्नेय्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते अग्निज्वाल हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष रक्ष हुं जटो स्वाहा॥ प्रव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ याम्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते यम काल हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ हुं जटो स्वाहा॥ प्रव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नैर्ऋत्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते निर्ऋतिखड्ग कंकाल हस्ताभ्यां मम स
परिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष२ हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्मद्विषोजहि॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ वारुण्यां दिशि
॥ ॐ नमो भगवते वारुणि पाश हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो
माम रक्ष२ हुँ जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म द्विषोजहि॥ ॐ नमो भगवते
रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ वायव्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते
वायव्य वेध हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष२ हुं जटी
स्वाहा॥ प्रब ब्रह्मद्विषोजहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय॥ कौवेर्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते कौवेरी गदांकुश
हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष२ हुं जटी स्वाहा॥
प्रब ब्रह्मद्विषोजहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय
॥ ईशान्यां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ईशाने त्रिशूल डमरू हस्ताभ्यां
मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष२ हुं जटी स्वाहा॥ प्रब ब्रह्म
द्विषोजहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
ऊर्ध्वायां दिशि॥ ॐ नमो भगवते ब्रह्माणि स्रुक स्रुव कमण्डलु अक्ष
सूत्राङ्कुश हस्तैः मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष२ हुं जटी
स्वाहा॥ प्रब ब्रह्मद्विषोजहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय॥ ॐ नमो भगवते पातालवासिनी विष गल
हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष२ हुं जटी स्वाहा॥

ऽप्रब्रह्म द्विषोजहि ।। ऊं नमो भगवते रुद्राय नमः ।। ऊं नमो भगवते रुद्राय ।।
ऽप्रावन्तरस्यां दिशि ।। ऊं नमो भगवते महालक्ष्मी पद्मा रुदः पद्महस्ताभ्यां
मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ हुं जटो स्वाहा ।। ऽप्रब्रह्मद्विषो
जहि ।। ऊं नमो भगवते रुद्राय नमः ।। ऊं नमो भगवते रुद्राय ।। शिरो रक्षतु
ब्रह्माणि मुखं माहेश्वरी तथा ।। कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ।।
।।१।। चामुण्डा हृदयं रक्षेत्कुक्षिं रक्षेत वारुणी ।। वैष्णवी रक्ष पादौ मे
पृष्ठ देशे धनुर्धरी ।।२।। यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व माम पदे पदे ।।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि
नारायणि नमोस्तुते ।। ऊं ब्राह्मी माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणी
चामुण्डे सिद्ध चामुण्डेश्वरि गणेश्वरि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालक्ष्मी सर्वतो
दुर्गे हुं फट स्वाहा ।। ऊं ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् ।। कनकवज्र वैडूर्य मुक्ता
लंकृत भूषणे एहि २ ऽप्रागच्छ २ मम करशो प्रविशय भूत भविष्य
वर्तमान काल ज्ञान दूर दृष्टि दूर श्रवणं कुरु हि २ ऽप्राग्नि स्तम्भनं, शत्रु
स्तम्भनं, शत्रु मुख स्तम्भनं, शत्रु गति स्तम्भनं शत्रु मति स्तम्भनं
परेषां गति सर्व मति शत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु २ शत्रु
कार्य हानि करि मम कार्य सिद्धि करि शत्रूणामुद्योग विद्वेषे
करि वीर चामुण्डे निहाट कहाटक धारिणी नगरी पुरी पट्टन
ऽप्रास्थान सम्मोहिनी, ऽप्रसाध्य साधिनी ।। ऊं ह्रीं श्रीं ट्रेविहन
हुं फट स्वाहा ।।

फ़ब ब्रह्म द्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥
प्रावन्तरस्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते महालक्ष्मी पद्मा रुद्रः पद्म हस्ताभ्यां
मम सपरिवारकस्य सर्वतो मामरक्ष २ हुं जटी स्वाहा ॥ फ़ब ब्रह्म द्विषो
जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ शिरो रक्षतु
ब्रह्माणि मुखं माहेश्वरी तथा ॥ कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ॥
॥१॥ चामुण्डा हृदयं रक्षेत्कुक्षिं रक्षेत् वारुणी ॥ वैष्णवी रक्ष पादौ मे
पृष्ठ देशे धनुर्धरी ॥२॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व माम पदे पदे ॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि
नारायणी नमोस्तुते ॥ ॐ ब्राह्मी माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराही इन्द्राणी
चामुण्डे सिद्ध चामुण्डेश्वरि गणेश्वरि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालक्ष्मी सर्वतो
दुर्गे हुं फट स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् ॥ कनक वज्र वैडूर्य मुक्ता
लंकृत भूषणे एहि २ आगच्छ २ मम करशो प्रविशाय: भूत भविष्य
वर्तमान काल ज्ञान दूर दृष्टि दूर श्रवणं ग्रहि २ आग्नि स्तम्भनं, शत्रु
स्तम्भनं, शत्रु मुख स्तम्भनं, शत्रु गति स्तम्भनं शत्रु मति स्तम्भनं
परेषां गति सर्व मति शत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु २ शत्रु
कार्य हानि करि मम कार्य सिद्धि करि शत्रूणामुद्योग विघ्ने
करि वीर चामुण्डे निहाट कहाटक धारिणी नगरी पुरी पट्टण
स्थान सम्मोहिनी, प्रसाध्य साधिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ईं विहन
हुं फट स्वाहा ॥

ऊँ ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौं ग्लौं श्रीं क्रौं एहि २ भ्रमराम्बाहि
लें जगन मोहनाय मोहनाय सकलाऽण्डज पिण्डजान् भ्रामय
प्रजा वशंकरी संमोहय २ महामाये अष्टादश पीठ रूपिणी,
लवरयुं स्फुर २ प्रस्फुर २ कोटि सूर्य प्रभा सुरि चन्द्र जटी मां रक्ष
मम शत्रून् भस्मीकुरु २, विश्व मोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा
नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसा वणाय् इन्द्र संदीप
ाय, क्लीं क्लीं सम्मोहन वाराय ब्लुं ब्लुं सन्तापन वाणाय
: वशीकरण वाराय कम्पित कम्पित हुं फट् स्वाहा ।। क्लीं नमो
मे वशं कुरु २ स्वाहा ।। ऊँ ह्रां श्रीं क्ष्णीं ह्म्प्रैं हूं स्त्रौं सहस्राक्ष
फट् स्वाहा ।। ऊँ नमो विष्णवे ।। ऊँ नमो नारायणाय ।। ऊँ जय २
जीजन वल्लभाय स्वाहा ।। सहस्त्रसार ज्वालावर्त ह्म्प्रौं हन
हुं फट् स्वाहा ।। ऊँ तत्स वितुर्व रेणियम भर्गो देवस्य धी
।। धीयो यो नः प्रचोदयात् ।। श्री मन्नारायणस्य चरणौ
णं प्रपद्ये ।। श्री मते नारायणाय नमः ।। ऊँ उग्रं वीरं महा
ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु २ नमा
हम् ।।४।। भगवन् सर्व विजय सहस्त्राराय राजितं ।। शरणं त्वां प्रपन्नो
श्री करं श्री सुदर्शनम् ।।५।। अरुणी वारुणी चैव सर्वग्रह निवारि
कर्म करी ।। ऊँ भूः स्वाहा ।। ऊँ भुवः स्वाहा ।। ऊँ स्वः स्वाहा ।। ऊँ भूर्भुव
: स्वाहा ।।

प्रयोग अपवासिद्धि करने का उपाय"

भूम्यामन्तर्हितम माने धरती के अन्दर का

२१-२१ पाठ २१ दिन कर लेने पर मनुष्य को श्री महा विद्या सिद्ध होजाती है। फिर वह मनुष्य सम्पुट वाला मन्त्र पढ़ कर पत्ता या फूल या फल चाहे जिस पर १०८ बार पढ़ कर डाल दे चाहे स्त्री हो या पुरुष अवश्य वश में होजाता है। मन पर कब्जा कर लेता है। सात दिन २१-२१ पाठ रात में करदे तो शत्रु का नाश हो जाता है।

ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृतोम वर्षाय मम ज्वर रोग शान्ति कुरु २ स्वाहा। १०८ बार पढ़ कर जल पिला दे या झार दे।

ॐ काल २ महा काल काल दण्ड नमोस्तुते। काल दण्ड निपातेन भूम्यामन्तर्हित ज्वरं हन्ति॥ १०८ बार इस मन्त्र से जल पढ़ कर देदे रोगी का ज्वर उतरे। या इस मन्त्र को कागज पर लिख कर रोगी को दिखा दे॥

कहीं आग लगी हो तो यह मन्त्र १०८ बार पढ़ कर जल छिड़क दे। नीचे वाला

समुद्रस्योत्तरे तीरे मरीचो नाम राक्षसस्तस्य मूत्र पुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा॥ रक्षा के वास्ते यदि कहीं डर लग रहा हो तो यह पढ़े १०८

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म फलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुःशमनायै नमः॥

रक्षा के वास्ते १०८ बार जपले

~~काल दण्ड परमविद्या~~ (काल दण्ड परं मृत्यु विजया बन्धयाम्यहम्। पञ्च योजन विस्तीर्णं मृत्योश्च मुख मण्डलम्। तस्माद्रक्ष महा विद्ये भद्र काली नमोस्तुते)

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा ॥ ततो महाविद्या सिध्यति ॥
असिक्षित को न दे॥ अहं न जाने न च पार्वतीश एकविंशतिवा
परिजाप्य शुचिर्भवेत् ॥६॥ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरु
॥ अपवश्यं वश मित्याहुरात्मना च परेण वा ॥७॥ महाविद्यावतां पुं
मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ सप्तरातो व्यतीतायां शत्रूणां तद्विनश्यति ॥८॥ ॐ
कुबेरते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिमावह ॥ ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषं
नाशय मे ज्वर ॥९॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृताभिवर्षाय
ज्वर रोग शान्तिं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ काल २ महाकाल कालदण्ड
नमोऽस्तुते ॥ काल दण्ड निपातेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरं हन्ति ॥ लि
त्वा यस्तु पश्यति॥ समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसस्तस्य मू
पुरीषाभ्यां हुताशनं शमय २ स्वाहा ॥ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपल
नाम यक्षिणी ॥ तस्या नूपुर शब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥
जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदति
दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥१०॥ ॐ भास्कराय विद्
महे महद्युतिकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥११॥ ॐ तत्स
वितुर्वरेणियम भर्गो देवस्य धी मही धीयो योनः प्रचोदयात् ॥
प्रतिकूल कारिणी न शैयत् ॥ अनुकूल कारिणी अस्तु ॥ ॐ महा
च विद्महे विष्णुपत्नि च धीमही ॥ तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात् ॥१४॥

कराय विद्महे महाद्युति कराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ ॐ तत्स वितुर्वरेण्यं
देवस्य धीमहि धीयो योनः प्रचोदयात् ॥ प्रतिकूल कारिणी नश्येत । अनुकूल
कारिणी अस्तु ॥ महादेवी च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः
प्रचोदयात् ॥

॥ प्रयोग ॥

ब्रूं ह्रीं श्रीं ब्रह्मकोशजो मामरक्ष २ हुं जटी स्वाहा ॥ पञ्चम्यां च नवम्यां
दशम्यां च विशेषतः ॥ पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वदा पठेत् ॥
॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां
तामिहो पह्वये श्रियम् ॥ श्रीर्मे भजतु ॥ अलक्ष्मीर्मे नश्यतु ॥ यदेच्छ यदन्ति
... दुरेकमयं विन्दति मामिह ॥ पवमान वितज्जहि ॥ यदुत्थितं दुःस्वं भवति
तत्सर्वं शमय शमय स्वाहा ॥ ॐ गायत्र्यै स्वाहा ॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा ॥
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमही । तन्नः
इन्द्रः प्रचोदयात् ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमही ॥ तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात् ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमही तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥
ॐ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमही तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ ६ ॥
तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ॥ तन्नः षणमुखः प्रचोदयात् ॥ ७ ॥
तत्पुरुषाय विद्महे स्वर्ण पक्षाय धीमही तन्नो गरुड़ा प्रचोदयात् ॥ ८ ॥
वेदात्मनाय विद्महे हिरण्य गर्भाय धीमहि ॥ तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ९ ॥
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णु प्रचोदयात् ॥ १० ॥
मन्मथेशाय विद्महे काम देवाय धीमही । तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥
वज्र नखाय विद्महे तीक्ष्ण दंष्ट्राय धीमही । तन्नो नरसिंहः प्रचोदयात् ॥
॥ १२ ॥ ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युति कराय धीमही । तन्नोऽऽदित्यः प्रचोदयात्
॥ १३ ॥ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमही । तन्नोऽग्नि प्रचोदयात् ॥ १४ ॥

इष्ट गायत्री

ॐ वाग्भवं त्रिपुरा देव्यै विद्महे कामेश्वरी च धीमहि
तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥ गुरु गायत्री ॥
ॐ गुरु देवाय च विद्महे तत्पुरुषाय धीमहि
तन्नो गुरु प्रचोदयात् ॥ पशु गायत्री। पशु के कान में देते हैं।
ॐ पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ॥
ॐ आद्यायै विद्महे परमेश्वर्यै धीमहि तन्नः काली प्रचोदयात्

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्रौं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम्
नृसिंहं भीषणं भद्रं, मृत्युं २ नमाम्यहम् क्ष्रौं ह्रीं ऐं ॐ

कात्यायनाय विद्महे कन्य कुमारि धीमहि। तन्नो दुर्गि प्रचोदयात्॥१५
सहस्त्र परमा देवी शत मूला शतांकुरा॥ सर्वं हरतु मे पापं दुर्वा दुःस्वप्न नाशिनी॥ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति। अश्व क्रान्ते रथ क्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे॥ शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे

जो इस महा विद्या को तीनों काल पढ़ता है वह इतना प्रभाव शाली हो जाता है कि दुष्ट जन मोहित हो जाते हैं। दुष्टता नही करते उसके साथ। और उसके असाध्य कार्य असाध्य कार्य हो जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्ध लक्ष्मी स्वाहा॥ (ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ) पंचाक्षरी महाविद्
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों हुं फट् स्वाहा॥ एकादशाक्षरी महाविद्या
ॐ हां ह्रीं हुं श्रीं क्लीं क्लुं प्रोंप्रां ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा॥ (सम्पुट यही है।)
ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवोअभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्व बीजान्यव ब्रह्म द्विषो जहि अव ब्रह्म द्विषो जहि॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय। अमुक दिशि अमुक देवता अमुकारुढो अमुकवर्णो अमुक हस्तो अमुक देवता वध्नातु (। जैसे ब्रह्म मंडल ब्रह्मा सपरिवारो देवता प्रत्यधि देवता सहितं ब्रह्म मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध २ मम सपरिवारकस्य सर्वतो माम रक्ष २ अचल २ आक्रम्य २ महावज्र कवचायास्त्राय राज चौर सर्पाग्नि व्याघ्रादिषु मम सर्वोपद्रव नशनाय॥ ॐ हां ह्रीं हुं श्रीं क्लीं क्लुं प्रोंप्रां ह्रीं हुं फट् स्वाहा॥ सम्पुट

प्रयोग विधि

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा ततो महाविद्या सिध्यति ॥ इसका मतलब
आखीरी दिन पाठ के बाद आठ ब्राह्मणों का पुजन करके भोजन वा दक्षिना देवे।
अहं न जाने न च पारवतीश
एकविंशति वाराणि परिजाप्य शुचि भवेत् ॥६॥ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात्
स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा। अवश्यं वश मित्या दुरात्मना ॥७॥ महाविद्या वतां पुंसा
मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ (पवित्र होकर २१ पाठ पवित्र होकर जप करके पंचोपचार से
जगदम्बा का पूजन करे तो चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष अवश्य बस में होजाता है ॥
सप्त रात्रौ व्यतीतायां शत्रुणां तद्धि नश्यति ॥८॥ यदि सात दिन तक रात में २१ पाठ करे तो
शत्रु का नाश होजाता है (१) ॐ कुबेर ते मुखं रौद्रं नान्दनमावाह । ज्वरं मृत्यु भयं
घोरं विषं नाशय मे ज्वर ॥ (२) दूसरा मंत्र ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृताम
वर्षाय मम ज्वर रोग शान्तिं कुरु २ स्वहा ॥ यह बुखार न उतरता हो तो एक पाठ है
करता जाय या १०८ बार रुद्राक्ष पर जप के जल पढ़ कर पिलादे तो ज्वर जाय
या
भूमि पर यह तीसरा मंत्र बुखार वाले को लिख कर दिखादे तो बुखार चला जाय।
ॐ काल २ महाकाल काल दण्ड नमोस्तुते। काल दण्ड निपातेन भूम्यामन्तर्हित
ज्वरं हन्ति) लिखित्वा यस्तु पश्यति (। समुद्रस्योत्तरे तीरे मारी चो नाम राक्षसस्तस्य
मूत्र पुरीषाभ्यां हुताशनम शमय शमय स्वाहा ।इसे कहीं आग लगी हो तो १०८ बार पढ़ के छिड़क दे
हेमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी। तस्य नूपुर शब्देन विशल्या भव गर्भिणी।
इस मंत्र को गर्भिणी के दर्द हो तो १०८ बार जल पढ़ कर पिलादे तो फौरन बच्चा
यदि कहीं डर लगता हो तो अपनी रक्षा के वास्ते इस मंत्र को १०८ बार पढ़ले। मंत्र यह है
तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्म फलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये
तरसि तरसे नमः॥ काल दण्ड परं मृत्यु विजया वन्दयाम्यहम्। पञ्च
न विस्तीर्णं मृत्योश्च मुख मंडलम् ॥ तस्म द्रक्ष महाविद्ये भद्र कालो नमोस्तुते

कालो तर्पण मन्त्र नीचे लिखा है। फिर अंग देवता तर्पण मन्त्र फिर आवरण देवता मन्त्र है।

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा सायुधां सपरिकरां आद्यां कालीं तर्पयामि स्वाहा।

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा आद्यां कालीं तर्पयामि स्वाहा। पश्चात् अंगदेवता तर्पयामि स्वाहा आवरण देवता तर्पयामि स्वाहा

वां वटुकाय नमः से पूजा पंचोपचार से वटुक को। स्तुति।। ऐह्येहि देवीपुत्र वटुक नाथ पिंगलजटाभार भासित त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय २ सुरामांस सहितं बलिं गृहाण २ गृहणापय २ प्रसन्नो भव वरदो भव सुसिद्धिं मे देहि हुं फट् स्वाहा।। बायें हाथ के अंगूठे अनामिका से बाद में जल यह मन्त्र कह कर गिरादे।। एष: बलिर्वटुकाय नमः।। यां योगिनिभ्यो नमः मन्त्र से पूजा करे इससे स्तुति।। ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वा तले पवन सलिलयोर्यत्र कुत्रस्थिता वा क्षेत्रे पीठोपपीठ दिषु च कृतपदा धूप दीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभ बलि विधिना पातु वीरेन्द्र वन्द्या इसे पढ़ कर दाहिने अंगूठे से और अनामिका से बलि पर जल गिरादे।। एष: बलि: योगिनिभ्यो नमः।। पश्चिम में क्षां क्षेत्रपालाय नमः से पूजन करे

बसन्त कुसमाकर रस में इतना वस्तु रहता है।

प्रवालपिष्ठि	४ भाग	अनुपान
रससिंदूर	४ भाग	मलाई
मुक्ता पिष्ठि	४ भाग	शहद
अभ्रक भस्म	४ भाग	मक्खन
लोह भस्म	३ भाग	
रजत भस्म	२ भाग	
नाग भस्म	३ भाग	
स्वर्ण भस्म	२ भाग	
बंग भस्म	३ भाग	

मूलमंत्र पढ़ने के बाद शिवा बलि मंत्र पढ़कर पूजन करे।

पंचबली देने के पश्चात् शिवा बली दे। (एषबलि: शिवायै नमः से पूजन करे पुष्पों को अगर चन्दन कस्तूरी से सुगन्धित करले, जैसे ऐं क्लीं सौं एष बलि: शिवायै नमः कहता जाय पूजन करता जाय। फिर प्रार्थना करे गृहण देवि महाभागे शिवे कालाग्नि रूपिणी शुभाशुभं फलं व्यक्तं ब्रूहि गृहाण बलिं तव ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एष बलि: शिवायै नमः। (या ऐं क्लीं परमेश्वरी स्वाहा एष बलि: शिवायै नमः कहदो) पंचमकार से बलि देना चाहिये।

जगदीश्वरी ...
को प्रणाम आ...
एक बार निकल
मेरे रो. ल. प
कृपा करके ऐ
पत्र जरूर ...
कि मेरा क्या ह
अब कोई नहीं
बार बार आप
को कर रहा
कारा आप

आद्या शक्ति को घट में हो चाहे यन्त्र मे स्थापित करना हो तो यह हाथ जोड़कर कहे
देवेशि भक्त सुलभे परिवार समन्विते यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं
सुस्थिराभव। (क्रीं आद्ये कालिके देवि परिवारादिभिः सह इहा गच्छ इह
तिष्ठ इह सान्नधेहि इह सन्निरुध्यस्व मम पूजां गृहाण) यह आवाहन मंत्र है।
प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र = आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवतायाः जीव इह
स्थितः, आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं
क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवतायाः वांङ् मनो नयन घ्राण श्रोत्र त्वक् प्राणाः
इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा" यह तीन बार कहे। फिर कहे
आद्ये काली स्वागतं ते सुस्वागतमिदं तव। आसनं चेदमत्र त्वयास्यतां परमे
श्वरी। यह कहकर पुष्पों का आसन दे।
स्नान करावे = ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा पाद्य समर्पयामि अर्घ्यं समर्पयामि
स्नानं समर्पयामि।। हाथ में फिर पुष्प लेकर देवी के अंगों में न्यास करे।
षडङ्गन्यास के मंत्र = ह्रां हृदयाय नमः, ह्रीं सिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं
कवचाय हुं, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।
षोडश प्रकारेण पूजन करे = पाद्य - अर्घ्य - आचमनी - स्नान, वस्त्र, गहना,
इतर, चन्दन, पुष्प, धूप दीप, नैवेद्य, आचमनी, अमृत, पान, तर्पण, नमस्कार
हर द्रव्य चढ़ाने की विधि = ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं पाद्यम आद्या
काली देवतायै नमः। से पाद्य चरणा में दे। ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा
इदं अर्घ्यम् आद्यायै काल्यै स्वाहा से मस्तक पर अर्घ जल से दे।
ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं आचमनीयम् आद्यायै काल्यै स्वाहा।।
से आचमनी मुख में दे।

मूलमंत्र पढ़ने के बाद शिवा बलिमंत्र पढ़कर पूजन करे।

पंचबली देने के पश्चात् शिवा बली दे। (एषबलि: शिवाये नमः से पूजन करे पुष्पों को अगर चन्दन कस्तूरी से सुगन्धित करले, जैसे ऐं क्लीं सौं एष बलि: शिवायै नमः कहता जाय पूजन करता जाय। फिर प्रार्थना करे गृहण देवि महाभागे शिवे कालाग्नि रुपिणी शुभाशुभं फलं व्यक्तं ब्रूहि गृहण बलिं तव ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एष बलि: शिवाये नमः। (या ऐं क्लीं परमेश्वरी स्वाहा एष बलि: शिवायै नमः कहदो) पंचमकार से बलि देना चाहिये।

मेरी ...
आप इतने ...
मुझे काम से
डालखिया के
आपने चाहा
दर्शन कर
स्वास्थ्य का
आपका अमा०

Ho. No. 3 ...
... Lucknow
पिन PIN

आद्याशक्ति को घटमें हो चाहे यन्त्र मे स्थापित करना हो तो यह हाथ जोड़कर कहे
देवेशि भक्त सुलभे परिवार समन्विते यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं
सुस्थिराभव (क्रीं आद्ये कालिके देवि परिवारादिभिः सह इहा गच्छ इह
तिष्ठ इह सान्धेहि इह सन्निरुध्यस्व मम पूजां गृहाण) यह आवाहन मंत्र है।
प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र = आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवताया: जीव इह
स्थित:, आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवताया: सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं
क्रीं श्रीं स्वाहा आद्या काली देवताया: वांङ् मनो नयन घ्राण श्रोत्र त्वक् प्राणा:
इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा " यह तीन बार कहे। फिर कहे
आद्ये काली स्वागतं ते सुस्वागतमिदं तव। आसनं चेदमत्र त्वयास्यतां परमे
श्वरी। यह कहकर पुष्पों का आसन दे।
स्नान करावे = ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा पाद्य समर्पयामि अर्घं समर्पयामि
स्नानं समर्पयामि।। हाथ में फिर पुष्प लेकर देवी के अंगोंमें न्यास करे।
षडङ्गन्यास के मंत्र = ह्रां हृदयाय नमः, ह्रीं सिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं
कवचाय हुं, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्र: करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।
षोडश प्रकारेण पूजन करे = पाद्य - अर्घ्य - आचमनी - स्नान, वस्त्र, गहना,
इतर, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनी, अमृत, पान, तर्पण, नमस्कार
हर द्रव्य चढ़ाने की विधि = ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं पाद्यम आद्या
काली देवतायै नमः। से पाद्य चरणों में दे। ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा
इदं अर्घ्यम् आद्यायै काल्यै स्वाहा से मस्तक पर अर्घ जल से दे।
ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं आचमनीयम् आद्यायै काल्यै स्वाहा।।
से आचमनी मुख में दे।

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एष मधुपर्क: आद्यायै काल्यै स्वाहा

हों श्री क्रीं परमेश्वरी स्वाहा आचमनीयम् आद्यायै काल्यै वं स्वाहा से फिर

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं स्नानियम् आद्यायै कालिकायै निवेदयामि
स्नान करावे।

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं वसनम् आद्यायै कालिकायै निवेदयामि॥ वस्त्र दे

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एतानि भूषनानि आद्यायै कालिकायै निवेदयामि॥ गहना दे

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एषगन्धः आद्यायै काल्यै नमः से मध्यमा अनामिका से
गंध फूल चढ़ावे यानी चन्दन चढ़ावे। वौषट

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाह इदं पुष्पं आद्यायै कालिकायै निवेदयामि। फूल चढ़ावे

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा एतौ धूप दीपौ आद्यायै कालिकायै निवेदयामि। धूप दे

फिर आरती करे दस बार उतारे आरती ऊपर से नीचे तक। फिर मद्य शुद्धि

के साथ अर्पण करे ~~फिर~~ त्रिकोण चौकोण युक्त मंडल पर नैवेद्य पात्र रखदे।

नैवेद्य मद्य से प्रोक्षित (छिड़के) करे फिर फट् कहते हुऐ। हूं कहकर तर्जनी

उंगली नैवेद्य मद्य में पर घुमादे। वं कह कर धेनुमुद्रा दिखावे। फिर मूलमन्त्र जो जिसका

हो उसेसात बार अभिमन्त्रित करके देवी को अर्घ्य पात्र से जल दे। नैवेद्य दे

तब इस मन्त्र को पढ़ता जाय। हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा इदं मद्यम् इमां शुद्धिं च

आद्यायै कालिकायै निवेदियामि। पंच ग्रास अपने हाथ से भाव से खिलावे।

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय
स्वाहा कहे।

बीच में मद्य का गिलास भी मां को अर्पण करे। सब प्रकार के खाने

के पदार्थ मां को दे। और हाथ जोड़ कर कहे।

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरीस्वाहा एतत्सर्वोपकारान्वितं सिद्धान्नमिष्ट देवतायै

निवेदयामि शिवे हविरिदं जुषाण आमान्नस्थले आमान्नं।

हों श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा आचमनियम् आद्यायै कालिकायै स्वाहा निवेदियामि।

फिर श्री पात्र में रखके मद्य ~~से~~ तीन बार मां को तर्पण करे। पांच पुष्पांजलि दे।

मैं पा चुका हूं अपने कीये की सब सजा। लेलो शरारा में अब की हरबार नहीं होता
आगोश में तुम्हारे अब आ गया सुलझ कर, फिर माफ खता कर दो तकरार नहीं होता
पछताता रहा हुं सच है माशूक का नज़ारा, सैयाद की नज़र से बस एक बार होता
~~सेन्ज हसीनों का दीदार नहीं होता, एक नूर का जलवा, जो हरबार नहीं होता॥~~
~~मूर~~ वायदों पर क्यों वो खाक तसल्ली कर लें। जबकि मेरा कोई पूरा इकरार नहीं होता
सब चल दिये हैं जितने थे यारो न वतन अपने, कोई भी मुसीबत का गम रवार नहीं होता।
जब वस्ल की थि ख्वाहिश तब नाज़ से यूं बोले, हर ~~दब~~ आज़ो हवा ख्वाब हर बार नहीं होता
~~बह~~ दिल मसल के अपना खामोश चल दिये। इस भांति सनम के दिल से खिलवार नहीं होता
माना कि गुन्हगार हूँ मैं महबूब मेरे दासों पे सितम इतना सरकार नहीं होगा

हुआ है दिल ये दीवाना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
चुपके २ ग़म खाना न कुछ कहना न कुछ सुनना॥
मेरे नामें को ले जाकर, मेरे कासिद तु ये करना।
अदब से उनको दे देना, न कुछ कहना न कुछ सुनना॥
मेरे नामें को पढ़ करके, अगर कासिद खफा होवें।
न घबराना न डर जाना, न कुछ कहना न कुछ सुनना॥
रहे हमसे वही अच्छे गये जो मर मोहब्बत पर
मजे से कब्र में सोना न कुछ कहना न कुछ सुनना॥

ऐ मेरे हमदम बतादो, जल रहा है दिल ये क्यों।
दिल तोड़ कर जब चल दिये वो, आता है ~~मे~~ फिर याद क्यों॥
सब्र मैंने कर लिया स्वीकार करली जब कज़ा।
फिर मचलता और तड़फता बोल दिल नाशाद क्यों॥
है बेवफा मासूक मेरा और नज़ाकत से भरा,
जान कर कोई बतादे हम हुये बरबाद क्यों।
जब बेकशी में उम्र सारी तूने अपनी खो दी।
दीदार करने के लिये फिर, कर रहा फरियाद क्यों॥
बेकरारी का मज़ा कुछ कम नहीं मिलने से है।
जब मुहब्बत कर ही ली ~~तो~~, महबूब से तकरार क्यों।
मैं तड़फती हूं तड़फने क्यों नहीं देते सनम।

वेदर्द दिल जख्मी बना कर, अब जगाते रात क्यों।

छेड़ मत कातिल मुझे, अब चैन से रोने तो दो।
आह भरने के लिये भी रोकते हैं आप क्यों।

ऐ बोल तू नादान दिल, किस पर दिवाना हो गया।
तू हुआ जिस पर फिदा वह बिराना हो गया॥ जिसके फुरकत में पड़ा तू आह के
नारे भरे। वह बना जख्मी तुम्हे कातिल रवाना हो गया॥ जिसको करता चाह
तू, वह दिल बड़ा बेदर्द है। बेवफा को देके दिल दुश्वार पाना हो गया॥
दिलवर समझकर फंस गये हम, बेदर्द को दिल दे दिया। अब तड़फते
रात दिन, मुश्किल छुड़ाना हो गया॥ दिल ने दिल को छल लिया, दिल फांस
कोया क़ैद में, खूनी दिल लैला हुई सदमा उठाना हो गया।

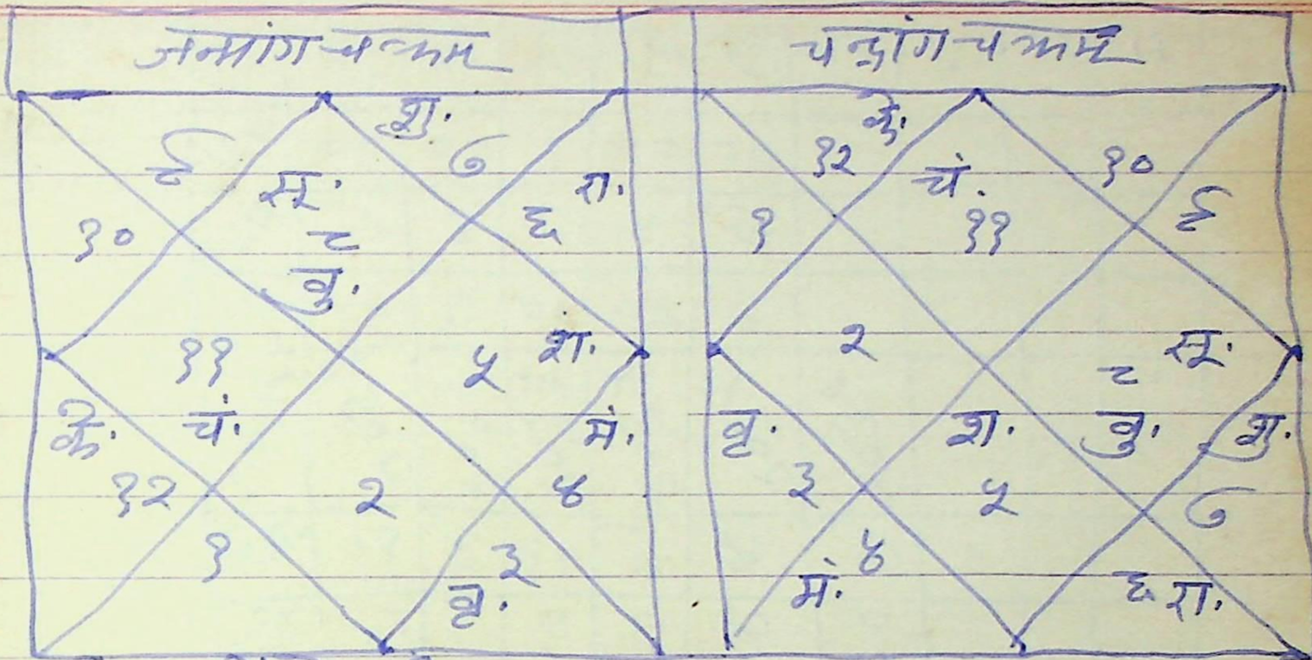
नाज़ के पाले हुऐ किस ग़म के पाले पड़ गये।
हो मुहब्बत का भला जीने के लाले पड़ गये॥
खुद न आता ना बुलाता और न लेता है खबर।
हे प्रभु हम तो किसी ज़ालिम के पाले पड़ गये॥
टीस सी उठती है अन्दर, सांस जब लेती हूं मैं,
हो गये दिल में जखम, आंखों में छाले पड़ गये॥
ऐ मेरे कम्बख्त दिल तू किस पे दीवाना हुआ,
फिर रही हैं पुतलियां होठ काले पड़ गये॥
जिसके लिये बरबाद होकर फिर रहा तू दरबदर।
वह तो कातिल चल दिया, हम तो बेगाने हो गये॥
हैं बड़े ही बेवफा मेरे सनम ऐ दोस्तों।
चैन दिल को है नहीं किसके हवाले हो गये।
मौत ही तोफे में दे दो ऐसी नफ़रत है यदो।
दुश्वार जीना हो गया हम तो अकेले हो गये॥

ध्यान मैं किसका करूं अब सर्वत्र दिखते आप हैं।
ज्ञान दीपक बुझ गया था आप तो साथी में थे।
सद्गुरु ने फिर जलाया दीप तो दिखने लगे॥
मैं समझती थी कि मंदिर और मस्जित में हि हो।
बाकी है झूठ सब पसारा, आप हम से भिन्न हैं॥
तेरी बनाई मूर्तियों से कर रही थी मैं घृणा।
अपनी बनाई मूर्तियों का कर रही थी मान मैं॥
संदेह मेरा सब मिटाकर ज्ञान उर में भर दिया।
कर दिया निर्द्वन्द्व मुझको, दे दिया कर हाथ में॥
विश्व का रचना मिटाना आपका यह खेल है।
खेल करते आप ही हैं। देखते भी आप हैं॥

सृष्टि रूपी कम्पनी के आप ही अध्यक्ष हैं
आप ही स्वर ताल इसके, आप ही सब साज हैं॥
हर अदा तुम्हीं दिखाते, विश्व के इस मंच पर।
आप ही हैं अचर चर, आप ही चैतन्य हैं॥
आप ही कर अनेकों रूप आते हो प्रभु।
बलिहार तेरी हर अदा पर है कमल दिलदार ये॥

॥ जगदीशी के पुत्र का कुन्डली अनुरुद्ध ने बनाई है।

श्री गणेशाय नमः॥ ब्रह्मा करोतु दीर्घायुः विष्णुं कुर्याश्च सम्पदाम्॥ हरो रक्षतु गात्राणि यस्यै जन्म पत्रिका॥ श्री शुभ सम्वत् विक्रमी २०३५॥ शाकः १९०० ॥ मासा नाम मासोत्तमे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथौ सप्तम्यां ७॥ गुरु वासरे घ. २२।५०॥ श्रवण नाम नक्षत्रे घ. १३।५०॥ वृद्धि नाम योगे घ. २२।२॥ ववनाम करणे घ. २२।५०॥ हिन्दी प्रविष्टे ३॥ तारीख १७।११।१९७८॥ तत्रार्कः ७।१।२।१९॥ सूर्योदयादिष्टम घ. ५८।५०।३०॥ लग्नस्पष्ट ७।३।५०।३१।३०॥ भभोग घ. ५६।५१॥ भयात घ. ३०।१५॥ एतत् समये श्रीमान पं. बृजेश कुमार जी गृहे स्वधर्म पत्नी देव्या दक्षिण कुक्षौ पुत्र रत्न मजीजनत॥ धनिष्ठा नक्षत्रस्य तृतीय चरणे जन्मः जन्म नाम गुरु प्रसादेति धेयम्॥ राशी कुम्भ स्वामी शनि योनि सिंह नाड़ी मध्य गण राक्षस॥ श्री शुभम्॥



विंशोत्तरी महादशा

अ.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रह
३	२	१८	१६	१९	१७	७	२०	६	१०	वर्ष
८	३	००	००	००	००	००	००	००	००	मास
२४	६	००	००	००	००	००	००	००	००	दिन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	संवत
७	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	राशि
१	७	७	७	७	७	७	७	७	७	अंशो

ध्रुव भौमान्तरम्

मे.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	ग्रह
				००	००	१	००	००	वर्ष
				८	४	२	४	७	मास
				३	२७	००	६	००	दिन
			२०३८	२०३५	२०३५	२०३६	२०३७	२०३७	संवत्
			७	४	८	११	३	१०	राशि
			१	४	१	१	७	७	अंश

